MUKASHAFATUL QULOOB (HINDI)

मुकाशफ़तुल कुलूब

मुतर्जम

तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की किताब "अल मुकाशफ़तुल कुब्रा" का इख़्तिसार



– : मुतर्जिम : –

तल्मीज़े आ'ला ह़ज़रत, उस्ताज़ुल उ़लमा

मौलाना मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

शो'बए तख़रीज

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ؕ اَمَّا بَعۡدُ! فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये, اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَيۡنَا حِكۡمَتَكَ وَانۡشُرۡ عَلَيۡنَا رَحۡمَتَكَ يَا ذَا الۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلۡمُسۡتَطۡرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

मुकाशफ़तुल क़ुलूब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस '**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त** (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ** करवाया है ।

किताब के हिन्दी लिपियांतर में क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुतालआ फ़रमाएं ।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़्हा व सत्र नम्बर) **मुत्तलअ** फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ـٗ	ु = ـُ	ि = ـِ	- = ـ	ी = ئ	ू = وٗ	ा = آ

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये,

इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा

तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की किताब 'अल मुकाशफ़तुल कुब्रा' का इख़्तिसार

मुकाशफ़तुल कुलूब

मुतर्जिम :- मौलाना मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

पेशकश :- मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

नाशिर

421, मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद

देहली-6, फ़ोन : 011- 23284560

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : मुकाशफ़तुल क़ुलूब
मुतर्जिम : मौलाना मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तख़रीज)
सिने इशाअ़त : मुह़र्रमुल ह़राम, सि. 1437 हि. नवम्बर 2015
नाशिर : 421, मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद देहली-6, फ़ोन : 011- 23284560
ता'दाद : 3000 (तीन हज़ार)

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁...अह़मदाबाद : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद, गुजरात-1, फ़ोन : 9327168200

❁... मुम्बई : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, टन टन पुरा इस्टेट, खड़क मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁... नागपुर : **मक्तबतुल मदीना,** सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526

❁.... अजमेर : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586

❁.... हुबली : **मक्तबतुल मदीना,** ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 09900332092

❁... हैदराबाद : **मक्तबतुल मदीना,** मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... कानपुर : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09335272252

❁... बनारस : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net
www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही"

के बीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "20 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"
(الجامع الصغیر،الحدیث:۹۳۲۶،ص۵۵۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो मदनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां '**अल्लाह**' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहा 'सरकार' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) याददाश्त वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इ़ल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस रिवायत عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَۃُ (حلیۃ الاولیاء،الحدیث:۱۰۷۵۰،ج۷،ص۳۳۵،دارالکتب العلمیۃ) या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती हैं, पर अ़मल करते हुवे इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लुटूंगा ﴾17﴿ इस ह़दीसे पाक "تَھَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी (مؤطاامام مالک،ج۲،ص۴۰۷،رقم:۱۷۳۱،دارالمعرفۃ بیروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾18﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 63) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लें ﴾19﴿ इस किताब के मुत़ालए का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾20﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ علی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴾3﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खु़द भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

पेशे लफ़्ज़

पांचवीं सदी हिजरी में जो बा कमाल मशाहीरे आस्मान इल्मो फ़ज़्ल के रोशन सितारे बन कर चमके उन में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی बहुत नुमायां और मुमताज़ हैसिय्यत के ह़ामिल थे। आप को मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फ़ुनून में महारते ताम्मा ह़ासिल थी, तसव्वुफ़ व त़रीक़त की जामेइय्यत, नुक्तए सन्जी व दक़ीक़ा रसी में अपनी मिसाल आप थे। वा'ज़ व बयान का ऐसा मलका रखते थे कि बड़े बड़े नामवर और जय्यद उ़लमा आप का बयान सुन कर हैरान रह जाते और आप की जलालते इल्मी के मो'तरिफ़ होते। तक़रीर के साथ साथ तह़रीर का भी ज़ौक़ था चुनान्चे, मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर कसीर कुतुब तह़रीर फ़रमाईं जिन में तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर आप की कुतुब को सब से ज़ियादा शोहरत व पज़ीराई ह़ासिल हुई। ज़ेरे नज़र किताब '**मुकाशफ़तुल कुलूब**' भी तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर है लेकिन येह आप की अपनी तस्नीफ़ नहीं बल्कि आप की किताब '**अल मुकाशफ़तुल कुब्रा**' का इख़्तिसार है[1] जिस में इस्लाहे़ आ'माल के ह़वाले से काफ़ी मा'लूमात हैं और मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात के तह़त आयात, अह़ादीस, अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन और मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त व ह़िकायात दर्ज हैं जिन में मौत और क़ब्रो आख़िरत की याद के बेशुमार मदनी फूल हैं। ह़दीसे पाक में है : अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बा'द के मुआ़मलात के लिये तय्यारी करे। (ترمذی، ٤/٢٠٧، الحدیث ٢٤٦٧)

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن मौत और इस दुन्या से कुच कर जाने को बहुत कसरत से याद करते और अपनी आख़िरत की फ़िक्र करते। लिहाज़ा **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें भी चाहिये कि इन बुज़ुर्गाने दीन की मुबारक मदनी फ़िक्र से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हुवे मौत और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह्न बनाएं और इस **आ़रिज़ी व फ़ानी** दुन्या पर ए'तिमाद व इत़्मीनान के बजाए आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाएं। आख़िरत की तय्यारी और दीगर अच्छी अच्छी

---

1 ......المنقذ من الضلال للغزالی (تحقیق الدکتور جمیل صلیبا والدکتور کامل عیاد)، ص ٤٠......

अगर मुकाशफ़तुल कुलूब का गहरी नज़र से जाइज़ा लिया जाए तो मह़सूस होगा कि येह इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की किसी एक किताब का इख़्तिसार नहीं है बल्कि इस के लिये आप की और आप के बा'द वालों की कुतुब से भी इस्तिफ़ादा किया गया है क्यूंकि इस में मुन्यतुल मुफ़्ती, ज़हरुल रियाज़ और इब्नुल क़य्यम वग़ैरा का ज़िक्र है और इस किताब का अन्दाज़ भी इमाम ग़ज़ाली के त़र्ज़े तह़रीर से मुख़्तलिफ़ नज़र आता है बहर ह़ाल तरग़ीब व तरहीब और पन्दो नसाएह़ के ह़वाले से इस किताब में काफ़ी मवाद है। **इल्मिय्या**

निय्यतों के साथ इस किताब को अव्वल ता आख़िर तवज्जोह से पढ़िये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो आख़िरत की फ़िक्र पैदा होगी जो नेकियों से महब्बत और गुनाहों से नफ़रत का सबब बनेगी, नीज़ अ़मल पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिये ! اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप भी अपने अन्दर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस करेंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तहरीक **'दा'वते इस्लामी'** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान साहिब की ख़्वाहिश पर मजलिसे **'अल मदीनतुल इल्मिय्या'** इस किताब को तख़रीज के साथ पेश करने की सआदत हासिल कर रही है जिस में अ़स्रे हाज़िर के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे किये गए काम की तफ़्सील कुछ इस त़रह है :

۞.....**अल मदीनतुल इल्मिय्या** के अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ इस किताब को भी ज़ेरे तख़रीज से आरास्ता करने की कोशिश की गई है और अहादीस की तख़रीज का हत्तल मक्दूर एहतिमाम किया गया है। हवाला जात बित्तफ़्सील लिखे गए हैं या'नी किताब, बाब, फ़स्ल, रक़मुल हदीस, जिल्द और सफ़्हा नम्बर के साथ (मसलन ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ماجاء فی شان الصور، ٤/١٩٥، الحدیث ٢٤٣٩) कोशिश की गई है कि अहादीस का हवाला मराजेअ़ हदीस से दिया जाए लेकिन कई मक़ामात पर बा वुजूद कोशिश के हदीस की किताब से हवाला न मिल सका तो मजबूरन दूसरी किताब से हवाला दिया गया है। बा'ज़ ऐसे मक़ामात भी हैं जहां मक्दूर भर तलाश के बा वुजूद तख़रीज न मिल सकी, वहां हाशिये में नम्बर लिख कर जगह छोड़ दी गई है ताकि आयिन्दा हवाला मिल जाने की सूरत में लिख दिया जाए और मतन व हवाशी की दोबारा फ़ोरमेशन न करना पड़े।

۞.....जिन कुतुब से तख़रीज की गई है आख़िर में उन तमाम की फ़ेहरिस्त 'माख़ज़ो मराजेअ़' के नाम से बनाई गई है और इस फ़ेहरिस्त में मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नाम मअ़ सिने वफ़ात, मुत़ाबेअ़ और सिने त़बाअ़त भी ज़िक्र कर दिये गए हैं।

۞....कई मक़ामात पर ज़रूरतन मुफ़ीद हवाशी का भी एहतिमाम किया गया है और मुतर्जिम और इल्मिय्या के हवाशी में तफ़्रीक़ के लिये इल्मिय्या के हाशिये के आख़िर में **'इल्मिय्या'** लिखा गया है।

۞.....जा बजा मुश्किल और गै़र मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं। इसी त़रह आ'लाम (या'नी बुज़ुर्गाने दीन, रिवायत करने वालों या दीगर के नामों) पर भी ए'राब का एहतिमाम किया गया है।

۞.....आयात में कुरआनी रस्मुल ख़त़ (ख़त़े उ़स्मानी) बर क़रार रखने के लिये तमाम आयात एक मख़्सूस कुरआनी सॉफ़्टवेर से Corel Draw के ज़रीए़ पेस्ट की गई हैं। और मतन व तर्जमा बत़ौरे साबिक़ आमने सामने लिखा गया है।

۞.....मतन में मुतर्जिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तर्जमा बर क़रार रखते हुवे कन्ज़ुल ईमान का ज़ौक़ रखने वालों के लिये हाशिये में **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** भी पेश किया गया है। आयात और तराजुम का तक़ाबुल **कन्ज़ुल ईमान** (मत्बूआ मक्तबतुल मदीना) से दो मर्तबा किया गया है।

۞.....जहां नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे नामी या आप के ज़िक्र के साथ दुरूदे पाक लिखने से रह गया था वहां दुरूदे पाक लिखने का एहतिमाम किया गया है नीज़ सहाबए किराम और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के नामों के साथ भी तरज़िय्या (رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) और तरह्हुम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) लिखने की तरकीब की गई है।

۞.....अ़लामाते तरक़ीम (Punctuation Marks) या'नी कोमा, फुल स्टोप, कोलन, इन्वर्टेड कोमाज़ (Inverted Commas) वग़ैरा का ज़रूरतन एहतिमाम किया गया है।

۞.....किताब को ख़ूब सूरत बनाने के लिये हेडिंग्ज़ (Headings), कुरआनी आयात, बा'ज़ इबारात, नम्बरिंग और बोर्डर वग़ैरा की तरकीब डीज़ाइनिंग सोफ़्टवेर Corel Draw के ज़रीए की गई है।

۞.....दो मरतबा पूरी किताब की प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए तख़रीज (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या) के 4 इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआदत हासिल की बिल ख़ुसूस इनायतुल्लाह गोलड़वी अ़त्तारी मदनी और अबू अ़तीक़ मुहम्मद नवीद रज़ा अ़त्तारी मदनी ने ख़ूब कोशिश की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की सई क़बूल फ़रमा कर ज़रीअ़ए नजात बनाए। इस काम में आप को जो ख़ूबियां नज़र आएं यक़ीनन वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इनायत से हैं नीज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान का सदक़ा है कि इस अन्दाज़ में येह काम हो पाया। और बा वुजूद एहतियात के जो ख़ामियां रह गईं उन्हें हमारी त़रफ़ से ना दानिस्ता कोताही पर महमूल किया जाए। क़ारिईन ख़ुसूसन उ़लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم से गुज़ारिश है अगर कोई ख़ामी आप महसूस फ़रमाएं या अपनी क़ीमती आरा और तजावीज़ देना चाहें तो हमें तहरीरी तौर पर मुत्तलअ़ फ़रमाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा के लिये काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए तख़रीज अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

मौलाना मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

विलादते बा सआ़दत

यादगारे सलफ़, इफ़्तिख़ारे ख़लफ़, उस्ताज़ुल उ़लमा मौलाना मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान बिन सरदार वली ख़ान बिन मौलाना हादी अ़ली ख़ान बिन मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान (जद्दे अमजद आ'ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान बरेलवी) رحمهُمُ الله تعالٰى की विलादते बा सआ़दत रजबुल मुरज्जब सि. 1325 हिजरी मुत़ाबिक़ अगस्त 1907 ईसवी हिन्द, बरेली शरीफ़, मह़ल्ला सौदागरां में हुई। मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने आप का तारीख़ी नाम तक़द्दुस अ़ली ख़ान 1325 हिजरी इस्तिख़राज फ़रमाया।

ता'लीम व तर्बिय्यत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इब्तिदाई ता'लीम व तर्बिय्यत नामवर असातिज़ा की सरपरस्ती में हुई और सनदे फ़राग़त आप ने दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से ह़ासिल की। आप को मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आ'ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान, मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान, सदरुश्शरीआ़ मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رحمهُمُ الله تعالٰى जैसी नामवर हस्तियों से शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उ़लूम व फ़ुनून में अपना सानी नहीं रखते थे।

बैअ़त व ख़िलाफ़त

मौलाना तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से सिलसिलए क़ादिरिय्या में बैअ़त हुवे और तमाम सलासिल में ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुवे। हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने आप को ख़ानदाने क़ादिरिय्या के अवरादो वज़ाइफ़ की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई।

दीनी ख़िदमात

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम के नाइब मोहतमिम और हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के विसाल के बा'द मोहतमिम मुक़र्रर हुवे और कमो बेश

पच्चीस साल बरेली शरीफ़ में तदरीस और दीगर इल्मी ख़िदमात सर अन्जाम देते रहे फिर पाकिस्तान तशरीफ़ ले आए। कुछ अ़र्सा बाबुल मदीना कराची में रहने के बा'द पीर जोगूठ (ज़िलअ़ ख़ैरपुर मीरस, बाबुल इस्लाम सिन्ध) तशरीफ़ ले गए। वहां मद्रसए क़ादिरिय्या का इजरा किया फिर सिने. 1952 ईसवी में जामिअ़ा राशिदिय्या का इफ़्तिताहे नव किया और इस जामिअ़ा के पहले शैख़ुल ह़दीस मुक़र्रर हुवे। उस वक़्त से ता ज़ीस्त ह़ज़रते मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जामिअ़ा राशिदिय्या में तदरीसी फ़राइज़ अन्जाम देते रहे। हज़ारों आप से फ़ैज़याब, बेशुमार राहयाब और सेंकड़ों तिश्नगाने इल्म सैराब हुवे। मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम ख़ुशतर क़ादिरी रज़वी, मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अह़मद रज़वी, बहरुल उ़लूम मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद अफ़्ज़ल रज़वी मूंगीरी और अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحِمَهُمُ اللّٰه تعالٰی आप के मश्हूर तलामिज़ा हैं।

ह़ज व ज़ियारत

सिन 1367 हिजरी में ह़ज़रते मुफ़्ती तक़द्दुस अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने बग़दाद शरीफ़, करबलाए मुअ़ल्ला व नजफ़ अशरफ़ वग़ैरा में ह़ाज़िरी दी और सिने 1368 हिजरी में पहला ह़ज हिन्द से किया। फिर पाकिस्तान से सिने 1388 हिजरी में आप ने दूसरा और सिने 1392 हिजरी में तीसरा ह़ज किया। सिने 1395 हिजरी से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसलसल हर साल माहे रमज़ान में उ़मरह व ज़ियारत की सआ़दत से बहरावर होते रहे।

वफ़ात व मदफ़न

3 रजबुल मुरज्जब सिने 1408 हिजरी मुताबिक़ 22 फ़रवरी 1988 ईसवी बरोज़ पीर दोपहर 12 बज कर 10 मिनट पर आप ने विसाल फ़रमाया। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن 'पीर जोगूठ' में आप का मज़ार मरजए ख़लाइक़ है।

आप का उ़र्स मुबारक 30 नवम्बर से यकुम दिसम्बर तक आप के मज़ार शरीफ़ 'पीर जोगूठ' में अ़क़ीदतो एह़तिराम के साथ मनाया जाता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى पांचवीं सदी हिजरी की वोह मश्हूर शख़्सिय्यत हैं जिन्हें अपने मुआसिरीन में एक नुमायां हैसिय्यत और मक़ाम हासिल है बल्कि हाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुर्रहीम इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِى (मुतवफ़्फ़ा 608 हिजरी) फ़रमाते हैं : उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़दीक हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى पांचवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद हैं।[1]

विलादते बा सआ़दत

आप का नामे नामी, इस्मे गिरामी मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद तूसी ग़ज़ाली, कुन्यत अबू हामिद और लक़ब हुज्जतुल इस्लाम है। विलादते बा सआ़दत सिने 450 हिजरी ताबिरान, ज़िल्अ़ तूस, ख़ुरासान में हुई।[2] ख़ुरासान मशरिक़ में वाक़ेअ़ एक वसीअ़ सूबा था, अब इस का एक बड़ा हिस्सा तक़्सीम हो कर कुछ अफ़ग़ानिस्तान और कुछ दीगर मुमालिक में शामिल हो चुका है।[3]

इब्तिदाई हालात

आप के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد धागे का कारोबार करते थे, इसी निस्बत से आप का ख़ानदान 'ग़ज़ाली' कहलाता है। अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबुकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاجِد बड़े नेक इन्सान थे। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से इन्हें बहुत महब्बत थी लिहाज़ा उन की बड़ी ता'ज़ीम व तौक़ीर फ़रमाते और हत्तल मक़्दूर उन पर ख़र्च करते, उन की मजालिस में हाज़िर होते और वहां ख़ौफ़े ख़ुदा से तजर्रुअ़ व ज़ारी करते और अक्सर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते कि मुझे बेटा अ़ता फ़रमा और उसे फ़क़ीह बना। जब मजालिसे वा'ज़ में हाज़िर होते तो वहां भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार होते कि मुझे बेटा अ़ता फ़रमा और उसे वाइज़ बना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन की येह दोनों दुआ़एं क़बूल फ़रमाईं।[4]

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٣٥

2 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩

3 ......اردو دائره معارفِ اسلاميه، ج٨، ص٩٠٧

4 ......طبقات الشافعية الكبرى، ج٦، ص١٩٤ واتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩

ता'लीम व तर्बिय्यत

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने इब्तिदाई ता'लीम का आग़ाज़ अपने शहर से किया जहां कुतुबे फ़िक़्ह हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद राज़कानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانِى से पढ़ीं। तक़रीबन बीस साल की उम्र में त़लबे इल्म के लिये (ईरान के मशरिक़ी शहर) जुरजान तशरीफ़ ले गए वहां हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इस्माईली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى की ख़िदमते बा बरकत में रह कर इक्तिसाबे इल्म किया और फिर अपने शहर तूस लौट आए। 473 हिजरी में (ईरान के क़दीम शहर) नैशापुर तशरीफ़ ले गए और वहां हज़रते सय्यिदुना इमामुल हरमैन इमाम अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى (मुतवफ़्फ़ा 478 हिजरी) की बारगाहे आ़ली से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़रा, मन्तिक़ और हिक्मत वग़ैरा में ख़ूब महारत ह़ासिल की और इन के विसाल के बा'द इन के मन्सब पर फ़ाइज़ हुवे।

484 हिजरी में वज़ीर निज़ामुल मुल्क ने मद्रसए निज़ामिय्या बग़दाद के शैख़ुल जामिआ़ (वाइस चान्सेलर) का ओ़हदा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को पेश किया जिसे आप ने क़बूल फ़रमाया। बग़दाद शरीफ़ में चार साल तदरीस व तस्नीफ़ में मश्ग़ूल रहने के बा'द ह़ज के इरादे से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए। अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 597 हिजरी) के क़ौल के मुत़ाबिक़ आप की मजलिसे दर्स में बड़े बड़े उ़लमाए किराम ह़ाज़िर होते, इमामुल ह़नाबिला ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ख़त्ताब मह़फ़ूज़ बिन अह़मद (मुतवफ़्फ़ा 510 हिजरी) और आ़लिमुल इराक़ व शैख़ुल ह़नाबिला अ़ली बिन अ़क़ील बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 513 हिजरी) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا जैसे जय्यद उ़लमा आप से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते। आप के बयानात सुन कर बड़े बड़े उ़लमा की अ़क़्लें दंग रह जातीं।(1)

489 हिजरी में आप दिमश्क़ पहुंचे और कुछ दिन वहां क़ियाम फ़रमाया। एक अ़र्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा। फिर दोबारा दिमश्क़ तशरीफ़ लाए और जामेए दिमश्क़ के मग़रिबी मनारे पर ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे में मश्ग़ूलिय्यत इख़्तियार की। दिमश्क़ में आप का ज़ियादा तर वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्र मक़्दमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى की ख़ानक़ाह में गुज़रता था। मुल्के शाम में दस साल क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान 'इह़याउल उ़लूम (4 जिल्दें)', 'जवाहिरुल क़ुरआन', 'याक़ूतुत्तावील' (40 जिल्दें) और 'मिश्कातुल अन्वार', वग़ैरा मश्हूर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं, इन के

---

1 ......المنتظم فی تاریخ الملوك والامم ، ج۹، ص١٦٨

इलावा कई उ़लूम व फुनून में आप की तसानीफ़ की ता'दाद सेंकड़ों में है। फिर ह़िजाज़, बग़दाद और नैशापुर के दरमियान सफ़र जारी रहा और बिल आख़िर अपने आबाई शहर तूस वापस आ कर इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और ता दमे आख़िर वा'ज़ो नसीह़त, इबादतो रियाज़त और दर्से तसव्वुफ़ में मश्ग़ूल रहे।[1]

शैख़े कामिल की बैअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने दौरे त़ालिबे इल्मी में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमज़ी तूसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 477 हिजरी) के हाथ पर (27 साल की उ़म्र में) बैअ़त की। शैख़ मौसूफ़ बहुत आ़ली मर्तबत, फ़िक़्हे शाफ़ेई के ज़बरदस्त आ़लिम और मज़ाहिबे सलफ़ से बा ख़बर थे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 417 हिजरी) के जलीलुल क़द्र शागिर्दों में से हैं।[2]

सादगी और यादे आख़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی एक बार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान तूसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की आप से मुलाक़ात हुई। इन्हों ने आप के निहायत सादा और मा'मूली लिबास को देख कर कहा : आप के पास इस के इलावा और कोई लिबास नहीं है ! आप इमामे वक़्त और पेशवाए क़ौम हैं हज़ारों लोग आप के मुरीद हैं ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने जवाब दिया : ऐसे शख़्स का लिबास क्या देखते हो जो इस दुन्या में एक मुसाफ़िर की त़रह़ मुक़ीम हो और जो इस काइनात की रंगीनियों को फ़ानी और वक़्ती जानता हो। जब वालिये दो जहां, रह़मते आ़लमियां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुन्या में मुसाफ़िर की त़रह़ रहे और कुछ मालो ज़र इकठ्ठा न किया तो मेरी क्या ह़ैसिय्यत और ह़क़ीक़त है।[3]

शोहरत व नामवरी से दूरी

एक बार आप जामेअ़ मस्जिद उमवी के सेह़न में तशरीफ़ फ़रमा थे मुफ़्तियाने किराम की एक जमाअ़त भी वहां मौजूद थी। एक देहाती आया और मुफ़्तियाने किराम की बारगाह में एक

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٩-١١ و شذرات الذهب، ج٤، ص١٤٤

2 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٢٦

3 ......مقدمه كيميائے سعادت (مترجم از مولانا محمد سعيد احمد نقشبندى) ، ص٣١

मस्अला अर्ज़ किया जिस के जवाब में सब ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, इमाम ग़ज़ाली भी उस मस्अले में ग़ौर फ़रमाने लगे, जब किसी ने भी जवाब न दिया तो देहाती पर येह बात बहुत गिरां गुज़री, येह देख कर आप ने उसे अपने पास बुलाया और उस के मस्अले का जवाब इरशाद फ़रमा दिया लेकिन वोह बजाए शुक्रिय्या अदा करने के, आप का मज़ाक़ उड़ाने लगा और बोला : जलीलुल क़द्र मुफ़्तियाने किराम ने जिस मस्अले का जवाब न दिया एक आम फ़क़ीर इस मस्अले का जवाब कैसे दे सकता है ! जब वोह लौटा तो उन मुफ़्तियाने किराम ने उस से पूछा कि क्या जवाब बताया उस ने अर्ज़ कर दिया, येह सब इमाम साहिब के पास आ गए और जब तआरुफ़ हुवा तो आप से दरख़्वास्त की, कि आप हमारे लिये एक इल्मी निशस्त मुन्अक़िद फ़रमाएं ! आप ने अगले दिन का फ़रमा दिया मगर उसी रात वहां से सफ़र पर रवाना हो गए।(1)

ख़ुद पसन्दी का ख़ौफ़

एक बार इत्तिफ़ाक़न हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي दिमश्क़ के मद्रसे 'अमीनिय्या' तशरीफ़ ले गए, वहां देखा कि एक उस्ताज़ कह रहे थे : **क़ालल ग़ज़ाली** (इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं) या'नी वोह आप के कलाम के साथ तदरीस कर रहे थे। येह देख कर आप पर ख़ुद पसन्दी में गिरिफ़्तार होने का ख़ौफ़ तारी हुवा लिहाज़ा आप ने दिमश्क़ छोड़ दिया।(2)

दुन्या से बे रग़बती

'शज़रातुज़्ज़हब' में 'ज़ादुस्सालिकीन' के हवाले से मज़्कूर है : हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र बिन अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي को लोगों के दरमियान इस हाल में पाया कि आप के हाथ में लाठी थी, पैवन्द दार लिबास ज़ेबे तन था और कन्धे से पानी का बरतन लटक रहा था और मैं देखा करता कि बग़दाद में आप के बह्रे इल्म से मुस्तफ़ीज़ होने के लिये बड़े बड़े जय्यद उ़लमा व फ़ुज़ला आप की मजलिसे दर्स में हाज़िर होते जिन की ता'दाद चार सो तक पहुंच जाती।(3)

---

1 ......طبقات الشافعية الكبرى، ج٦، ص١٩٩
2 ......طبقات الشافعية الكبرى، ج٦، ص١٩٩
3 ......شذرات الذهب، ج٤، ص١٤٦

बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 5 सफ़हा, 374 सूरए ताहा, आयत नम्बर 18 के तहत नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम राग़िब अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى ने मुहाज़रात में ज़िक्र फ़रमाया कि साहिबे हिज़्बुल बह्र, आ़रिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मैं मस्जिदे अक़्सा में मह्वे ख़्वाब था, मैं ने देखा कि मस्जिदे अक़्सा के सेहन में एक तख़्त बिछा हुवा है और लोगों का एक जम्मे ग़फ़ीर है। मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया गया कि येह हज़राते अम्बियाए किराम व रुसुले इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं जो हज़रते सय्यिदुना हुसैन हल्लाज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ज़ाहिर होने वाली एक बात पर इन की सिफ़ारिश के लिये बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे हैं। फिर मैं ने तख़्त की त़रफ़ देखा तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर जल्वा गर हैं और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं जिन में हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना नूह नजियुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं। मैं उन की ज़ियारत करने और उन का कलाम सुनने लगा। इसी दौरान हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : आप का फ़रमान है : ''عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِيْل'' या'नी मेरी उम्मत के उ़लमा बनी इस्राईल के अम्बिया की त़रह हैं।'' लिहाज़ा मुझे इन में से कोई दिखाएं। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की त़रफ़ इशारा फ़रमाया। हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से एक सुवाल किया, आप ने उस के दस जवाब अ़र्ज़ किये, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि सुवाल एक किया गया और तुम ने दस जवाब दिये तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने अ़र्ज़ की : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप से पूछा था :

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तेरे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा।

तो इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी था कि येह मेरा अ़सा है, मगर आप ने उस की कई ख़ूबियां बयान फ़रमाईं।[1]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 410, इशारतन।

हज़राते उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि गोया इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में अ़र्ज़ कर रहे हैं कि जब आप का हम कलाम बारी तआ़ला था तो आप ने वुफ़ूरे मह़ब्बत और ग़लबए शौक़ में अपने कलाम को तूल दिया ताकि ज़ियादा से ज़ियादा हम कलामी का शरफ़ ह़ासिल हो सके और इस वक़्त मुझे आप से हम कलाम होने का मौक़अ़ मिला है और कलीमे ख़ुदा से गुफ़्तगू का शरफ़ ह़ासिल हुवा है इस लिये मैं ने भी शौक़ व मह़ब्बत में कलाम को त़वील किया है।[1]

क़ाबिले फ़ख़्र हस्ती

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हुवा तो देखा कि हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना मूसा और हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى पर फ़ख़्र करते हुवे फ़रमा रहे हैं : "क्या तुम्हारी उम्मतों में ग़ज़ाली जैसा आ़लिम है।" दोनों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।"[2]

सफ़रे आख़िरत

उ़म्र के आख़िरी ह़िस्से में अगर्चे हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى का ज़ियादा तर वक़्त इ़बादत में गुज़रता और शबो रोज़ मुजाहदात व रियाज़ात में बसर करते थे मगर तस्नीफ़ व तालीफ़ का मश्ग़ला बिल्कुल तर्क न फ़रमाया। उसूले फ़िक़्ह में आप की आ'ला दर्जे की तस्नीफ़ 'अल मुस्तस्फ़ा' 504 हिजरी की तस्नीफ़ है। इस के एक बरस बा'द आप ने 55 साल की उ़म्र में बरोज़ पीर 14 जमादिल आख़िर 505 हिजरी में त़ाबिरान (तूस) में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं मदफ़ून हुवे। विरासत में इस क़दर माल छोड़ा जो आप के अहलो इ़याल के लिये काफ़ी था ह़ालांकि आप को बहुत ज़ियादा मालो ज़र पेश किया गया मगर आप ने क़बूल न किया और कभी किसी के आगे दस्ते सुवाल दराज़ न किया। अवलाद में सिर्फ़ बेटियां ही सोगवार छोड़ीं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 597 हिजरी) **अस्सुबातो इन्दल ममात** में आप के विसाल का वाक़िआ़ हज़रते सय्यिदुना अह़मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

1 ......كوثرالخيرات، ص ٤٠

2 ......النبراس شرح شرح العقائد ، ص٢٤٧ و اتحاف السادة المتّقين ، مقدمة الكتاب ، ج١، ص١٢ و تعريف الاحياء بفضائل الاحياء على هامش احياء علوم الدين ، ج٥، ص٣٦٤

(मुतवफ़्फ़ा 520 हिजरी) की ज़बानी येह लिखा है कि पीर के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی सुब्ह़ के वक़्त बिस्तर से उठे। वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी फिर कफ़न मंगवाया और आंखों से लगा कर फ़रमाया : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का हुक्म सर आंखों पर" इतना कहा और चेहरा क़िब्ला रू कर के पाऊं फैला दिये। लोगों ने देखा तो रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बा'दे विसाल एक करामत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुहि़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 638 हिजरी) अपनी किताब 'रूहु़ल क़ुदुस फ़ी मुनासह़तिन्नुफ़ुस' में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैद याबुरी इशबीली عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ القَوِی के ह़ालात लिखते हुवे बयान फ़रमाते हैं : आप का शुमार औलियाउल्लाह में होता है। एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के रद्द में अबुल क़ासिम बिन ह़मदीन की लिखी हुई किताब पढ़ रहे थे की बीनाई चली गई। आप ने उसी वक़्त बारगाहे ख़ुदावन्दी में सजदा रैज़ हो कर गिर्या व ज़ारी की और क़सम खाई कि आयिन्दा कभी भी इस किताब को न पढूंगा इसे अपने आप से दूर रखूंगा। उसी वक़्त बीनाई वापस लौट आई। येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की करामत है जो इन के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैद याबुरी इशबीली عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ القَوِی के ज़रीए ज़ाहिर हुई।(2)

गुस्ताख़े इमाम ग़ज़ाली का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुबुकी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ القَوِی (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) फ़रमाते हैं : एक फ़क़ीह ने मुझे बताया कि एक शख़्स ने फ़िक़्हे शाफ़ेई के दर्स में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی को बुरा भला कहा तो मैं बड़ा ग़मगीन हुवा, रात इसी ग़म की ह़ालत में नींद आ गई ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की ज़ियारत हुई, मैं ने बुरा भला कहने वाले शख़्स का तज़्किरा किया तो फ़रमाया : "फ़िक्र न करो वोह कल मर जाएगा।" चुनान्चे, सुब्ह़ जब मैं ह़ल्क़ए दर्स में ह़ाज़िर हुवा तो उस शख़्स को

1 ......الثبات عند الممات، ص١٧٨ وطبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج٦، ص٢١١ واتحاف السادة المتقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٤

2 ......كشف النور عن الاصحاب القبور مع الحديقة النديه، ج٢، ص٨

हश्शाश बश्शाश देखा मगर जब वोह वहां से निकला तो घर जाते हुवे रास्ते में सुवारी से गिर गया और ज़ख़्मी हालत में घर पहुंचा और सूरज गुरूब होने से पहले ही मर गया।[1]

सत्तर70 हिजाबात उबूर कर लिये

हज़रते सय्यिदुना आरिफ़ कबीर कुत्बे रब्बानी अहमद सय्याद यमनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में आस्मान के दरवाज़े खुले देखे। आस्मान से फ़िरिश्तों की एक जमाअत सब्ज़ हुल्ले (या'नी जन्नती लिबास) और सुवारी लिये उतरी। वोह एक क़ब्र के सिरहाने आ कर खड़े हो गए। उस क़ब्र वाले को बाहर निकाल कर हुल्ला पहनाया, सुवारी पर सुवार किया और एक एक कर के तमाम आस्मानों से गुज़रते गए यहां तक कि उस शख़्स ने सत्तर हिजाबात को भी उबूर कर लिया। मैं उन हिजाबात तक तो उन्हें देख सका मगर उन की इन्तिहा कहां तक थी येह न जान सका। पस जब उन के मुतअल्लिक़ पूछा तो बताया गया : ''येह इमाम ग़ज़ाली हैं।''[2]

ता'रीफ़ी कलिमात

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन यहया नैशापुरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मेरे उस्ताज़े मोहतरम हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के मक़ाम व मर्तबे को सिर्फ़ कामिल अक़्ल वाला ही पहचान सकता है।[3]

﴾2﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल हसन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के शागिर्द आरिफ़ बिल्लाह अबुल अब्बास मिरसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی सिद्दिक़िय्यते उज़्मा के मक़ाम पर फ़ाइज़ थे।[4]

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के उस्ताज़े मोहतरम इमामुल हरमैन अब्दुल मलिक बिन अब्दुल्लाह जुवैनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने एक मौक़अ पर इरशाद फ़रमाया : ग़ज़ाली, इल्म के बहरे ज़ख़्ख़ार (या'नी इल्म का मौजें मारता समन्दर) हैं।[5]

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٤ و طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج٦، ص٢١٩

2 ......تعريف الاحياء بفضائل الاحياء على هامش احياء علوم الدين ، ج٥، ص٣٦٤ و طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج٦، ص٢٥٨

3 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٣

4 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٣ وطبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج٦، ص٢٥٧

5 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب ، ج١، ص١٣

﴾4﴿.....ख़तीबे नैशापुर इमाम अबुल हसन हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माईल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَكِيْل (मुतवफ़्फ़ा 529 हिजरी) फ़रमाते हैं : इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इस्लाम और मुसलमानों के लिये हुज्जत और अइम्मए दीन के पेशवा हैं। फ़साहत व बलाग़त, अन्दाज़े बयान व तर्ज़े गुफ़्तगू और तेज़ फ़हमी व ज़हानत में इन जैसा आंखों ने नहीं देखा।[1]

﴾5﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 571 हिजरी) फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى जैसा ज़हीनो फ़तीन आंखों ने देखा न कानों ने सुना।[2]

﴾6﴿.....सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुर्रहीम इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِى (मुतवफ़्फ़ा 608 हिजरी) फ़रमाते हैं : उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى पांचवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद हैं।[3]

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى से मन्क़ूल है कि जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई हाजत हो वोह इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के वसीले से दुआ़ करे।[4]

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुबुकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) इन अल्क़ाबात के साथ ज़िक्र फ़रमाते :

الامام الجليل ابو حامد الغزالی حجة الاسلام ومحجة الدين جامع اشتات العلوم[5]

﴾9﴿.....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى (मुतवफ़्फ़ा 911 हिजरी) इन अल्फ़ाज़ से तज़किरा फ़रमाते : **الامام حجة الاسلام ولی الله ابی حامد الغزالی رضی الله عنه**[6]

﴾10﴿....मुजद्दिदे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़ख़म, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) आप का क़ौल नक़्ल करते हुवे इन अल्फ़ाज़ से याद फ़रमाते हैं : अल इमामो हुज्जतुल इस्लाम, हकीमुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)[7]

(माख़ूज़ अज़ 'इह्याउल उ़लूम' जिल्द अव्वल मत्बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

1.....مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج٣، ص١٣٧
2.....تاريخ مدينة دمشق، ج٥٥، ص٢٠٠
3.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٣٥
4.....مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج٣، ص٢٤٩
5.....تشييد الاركان على هامش احياء علوم الدين، ج٥، ص٣٧١
6.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص٨
7.....फ़तावा रज़विय्या, जि. 4, स. 528

तेरी एक नेकी हमारे पास है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन एक ऐसा शख़्स लाया जाएगा जिस के निनानवे दफ़ातिर (रजिस्टर) गुनाहों से भरे होंगे और उन की लम्बाई ह़द्दे नज़र तक होगी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : क्या तू इस में से किसी का इन्कार करता है ? क्या मेरे मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्तों ने तुझ पर कोई ज़ुल्म किया है ? वोह अ़र्ज़ करेगा नहीं मौला, फिर रब इरशाद फ़रमाएगा : क्या तेरे पास कोई उ़ज़्र है ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मेरे पास कोई उ़ज़्र भी नहीं, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : क्यूं नहीं !! तेरी एक नेकी हमारे पास मौजूद है, और आज तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा उस वक़्त एक पर्चा निकाला जाएगा जिस में :

" اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ "

लिखा होगा (जिसे उस ने ख़ुलूसे दिल के साथ पढ़ा होगा) उस पर्चे को मीज़ान में रखा जाएगा, वोह अ़र्ज़ करेगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ निनानवे दफ़्तर, जो गुनाहों से पुर हैं इन के मुक़ाबले में इस एक पर्चे की भला क्या ह़क़ीक़त है ! इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : बेशक तुझ पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा फिर वोह पर्चा एक पलड़े में और निनानवे दफ़्तर दूसरे पलड़े में रखे जाएंगे। तो येह (पर्चे वाला) पलड़ा भारी हो जाएगा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम मुबारक के बराबर कोई चीज़ नहीं हो सकती, वोह सब से भारी है।

(سنن الترمذی، کتاب الایمان،باب ماجاء فیمن یموت...الخ،الحدیث:۲٦٤٨،ج٤، ص ۲۹۰)

मुकाशफ़तुल क़ुलूब

बाब 1

ख़ौफ़ो ख़शिय्यत

आक़ाए नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता पैदा किया जिस के दोनों बाज़ूओं का दरमियानी फ़ासिला मशरिक़ो मग़रिब को घेरे हुवे है, उस का सर ज़ेरे अ़र्श है और दोनों पाउं तहतुस्सरा में हैं, रूए ज़मीन पर आबाद ख़ल्क़ के बराबर उस के पर हैं, मेरी उम्मत में से जब कोई मर्द या औ़रत मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस फ़िरिश्ते को इज़्ने इलाही होता है कि वोह अ़र्श के नीचे बह़रे नूर में ग़ोताज़न हो तो वोह ग़ोता लगाता है, जब बाहर निकल कर वोह अपने बाज़ू (पर) झाड़ता है तो उस के परों से क़तरात टपकते हैं, ज़ाते बारी तआ़ला हर क़तरे से एक फ़िरिश्ता पैदा करती है जो क़ियामत तक उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करता है।[1] एक दाना का क़ौल है कि जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह़ की बक़ा कम गुनाहों में है और ईमान की सलामती हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलातो सलाम पढ़ने में है।

इरशादे ख़ुदावन्दी है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ[2] — *ऐ ईमान वालों **अल्लाह** से डरो।*

या'नी क़ल्ब में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करो और उस की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करो।

وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ[3] — *और इन्सान देखे कि आयिन्दा के लिये आगे क्या भेजा।*

मत़लब येह है कि रोज़े जज़ा के लिये क्या अ़मल किया। मफ़्हूम इस का येह है कि सदक़ा करो और आ'माले सालिह़ा करो ताकि रुस्त-ख़ेज़ के दिन[4] इन का अज्र पाओ और अपने रब से डरते रहो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी हर अच्छी और बुरी बात को जानता है।

क़ियामत के दिन फ़िरिश्ते, ज़मीन, फ़लक, रोज़ो शब तमाम गवाही देंगे कि आदम ज़ादे ने येह काम भलाई का किया या बुराई का, इत़ाअ़त व ताबेअ़दारी की या नाफ़रमानी ह़त्ता कि इन्सान के अपने आ'ज़ा भी उस के ख़िलाफ़ गवाही देंगे, ईमानदार और मुत्तक़ी व परहेज़गार इन्सान के ह़क़

1....

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो। (پ۲۸،الحشر:۱۸)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा। (پ۲۸،الحشر:۱۸)

4.... (ر۔س۔ت۔خ۔ے۔ز) क़ियामत के दिन।

में ज़मीन गवाही देगी, चुनान्चे, ज़मीन यूं कहेगी : इस इन्सान ने मेरी पीठ पर नमाज़ पढ़ी, रोज़ा रखा, ह़ज किया, जिहाद किया। येह सुन कर ज़ाहिद व मुत्तक़ी शख़्स शादां व फ़रहां होगा और काफ़िर व ना फ़रमान के ख़िलाफ़ ज़मीन गवाही देते हुवे यूं कहेगी : इस ने मेरी पीठ पर शिर्क किया, ज़िना किया, शराब पी और ह़राम खाया अब इस के लिये हलाकत व बरबादी है, अगर अरह़मुर्राह़िमीन ने इस पर कड़ा मुह़ासबा किया। साह़िबे ईमान वोह है जो जिस्म के तमाम आ'ज़ा के साथ **अल्लाह** तआ़ला से डर रखता हो जैसा कि फ़क़ीह अबुल्लैस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सात बातों में **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ का पता चल जाता है :

﴾1﴿....उस की ज़बान ग़लत़ बयानी, ग़ीबत, चुग़ली तोहमत और फ़ुज़ूल बोलने से बची हो और **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करने, तिलावते कलामे पाक करने और दीनी उ़लूम सीखने में लगी हो।

﴾2﴿....उस के दिल से अ़दावत, बोहतान और मुसलमान भाइयों का ह़सद निकल जाए क्यूंकि ह़सद नेकियों को चाट जाता है जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़वी है : ''اَلْحَسَدُ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ ह़सद नेकियों को खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है।''[1]

जानना चाहिये कि ह़सद दिल की रज़ील तरीन[2] बीमारियों में से एक बीमारी है और दिल की बीमारियों का दरमां सिर्फ़ इ़ल्मो अ़मल से ही हो सकता है।

﴾3﴿....उस की नज़र ह़राम खाने पीने से और ह़राम लिबास वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रहे और दुन्या की त़रफ़ लालच की नज़र से न देखे बल्कि सिर्फ़ इ़ब्रत पकड़ने के लिये उस की त़रफ़ देखे और ह़राम पर तो कभी उस की निगाह भी न पड़े जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ مَّلَاَ عَيْنَهٗ مِنَ الْحَرَامِ مَلَاَ اللهُ تَعَالٰى يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَيْنَهٗ مِنَ النَّارِ[3] जिस ने अपनी आंख ह़राम से भरी **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत उस की आंख को आग से भर देगा।

﴾4﴿....उस के पेट में ह़राम ग़िज़ा न जाए, येह गुनाहे कबीरा है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

''اِذَا وَقَعَتْ لُقْمَةٌ مِّنَ الْحَرَامِ فِيْ بَطْنِ ابْنِ اٰدَمَ لَعَنَهٗ كُلُّ مَلَكٍ فِي الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ مَا دَامَتْ تِلْكَ اللُّقْمَةُ فِيْ بَطْنِهٖ وَاِنْ مَّاتَ عَلٰى تِلْكَ الْحَالَةِ فَمَاْوَاهُ جَهَنَّمُ.[4]

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، ٤/٤٧٣، الحديث ٤٢١٠

2 ....इन्तिहाई बुरी।

3 ......تذكرة الموضوعات للفتنى، ص١٨٢

4 ......

तर्जमा : बनी आदम के पेट में जब ह़राम का लुक़्मा पड़ा तो ज़मीनो आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा जब तक कि वोह लुक़्मा उस के पेट में रहेगा और अगर इसी ह़ालत में मरेगा तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा ।

﴾5﴿...जानिबे ह़राम दस्तदराज़ न करे बल्कि ह़त्तल मक्दूर उस का हाथ इत़ाअ़ते इलाही की त़रफ़ बढ़े ।

ह़ज़रते का'बुल अह़बार رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि **अल्लाह** तआ़ला ने सब्ज़ मोती (ज़बरजद) का मह़ल पैदा फ़रमाया, उस में सत्तर हज़ार घर हैं और हर घर में सत्तर हज़ार कमरे हैं, उस में वोही दाख़िल होगा जिस के सामने ह़राम पेश किया जाए और वोह सिर्फ़ ख़ौफ़े इलाही की वज्ह से उसे छोड़ दे ।

﴾6﴿....उस का क़दम **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी में न चले बल्कि सिर्फ़ उस की इत़ाअ़त व ख़ुशनूदी में रहे, आ़लिमों और नेकों की त़रफ़ ह़रकत करे ।

﴾7﴿....इ़बादत व मुजाहदा, इन्सान को चाहिये कि ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये इ़बादत करे, रियाकारी व मुनाफ़क़त से बचता रहे, अगर ऐसा किया तो येह उन लोगों में शामिल होगा जिन के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ (1)

और तेरे रब के नज़्दीक आख़िरत डरने वालों के लिये है ।

दूसरी आयत में यूं इरशाद है :

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿۵۱﴾ (2)

बेशक मुत्तक़ी अम्न वाले मक़ाम में होंगे ।

गोया ख़ुदावन्दे तआ़ला येह फ़रमा रहा है कि येही लोग (मुत्तक़ी व परहेज़गार) क़ियामत के दिन दोज़ख़ से छुटकारा पाएंगे और ईमानदार आदमी को चाहिये कि वोह बीम व रजा के दरमियान रहे, वोही **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीदवार होगा और उस से मायूस व नाउम्मीद नहीं रहेगा, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ (3)

***अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से नाउम्मीद न हो ।*

पस **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करे, बुराई के कामों से मुंह मोड़ ले और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ हमातन मुतवज्जेह हो ।

❁...❁...❁...❁...❁

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़गारों के लिये है । (پ۲۵،الزخرف:۳۵)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं । (پ۲۵،الدخان:۵۱)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** (तआ़ला) की रह़मत से नाउम्मीद न हो । (پ۲٤،الزمر:۵۳)

बाब 2

ख़ौफ़े इलाही

हज़रते अ़ल्लामा अबुल्लैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि सातवें आस्मान पर **अल्लाह** के ऐसे फ़िरिश्ते हैं कि उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने जब से पैदा किया है, बराबर सजदे में हैं और **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा हैं। क़ियामत के दिन जब वोह सजदे से सर उठाएंगे तो कहेंगे : سُبْحٰنَكَ مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ ऐ **अल्लाह** तू पाक है, हम तेरी कमा ह़क़्क़ुहू इबादत नहीं कर सके। फ़रमाने इलाही है :[1]

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩ (2)

वोह फ़िरिश्ते अपने रब से डरते हैं और जिस चीज़ का उन्हें हुक्म दिया गया है वोही करते हैं और एक लम्ह़ा भी मेरी ना फ़रमानी में नहीं गुज़ारते।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا اقْشَعَرَّ جَسَدُ الْعَبْدِ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى تَحَاتَّتْ عَنْهُ ذُنُوْبُهٗ كَمَا يَتَحَاتُّ الشَّجَرَةُ وَرَقُهَا[3]

जब कोई बन्दा ख़ौफ़े इलाही से कांपता है तो उस के गुनाह उस के बदन से ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त को हिलाने से उस के पत्ते झड़ जाते हैं।

ह़िकायत

एक नौजवान एक औ़रत की मह़ब्बत में मुब्तला हो गया, वोह औ़रत किसी क़ाफ़िले के साथ बाहर के सफ़र पर रवाना हो गई, जवान को जब मा'लूम हुवा तो वोह भी क़ाफ़िले के साथ चल पड़ा। जब क़ाफ़िला जंगल में पहुंचा तो रात हो गई, रात को उन्हों ने वहीं पड़ाव किया, जब सब लोग सो गए तो वोह नौजवान चुपके से उस औ़रत के पास पहुंचा और कहने लगा : मैं तुझ से बे इन्तिहा मह़ब्बत करता हूं और इसी लिये मैं क़ाफ़िले के साथ आ रहा हूं। औ़रत बोली : जा कर देखो कोई जाग तो नहीं रहा है ? जवान ने फ़र्ते मसर्रत से सारे क़ाफ़िले का चक्कर लगाया और

---

1 .... येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनना या पढ़ना बिल क़स्द हो या बिला क़स्द और इसी त़रह़ तर्जमे का हुक्म है। **इल्मिय्या**

2 .... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने ऊपर अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो। (پ ١٤، النحل:٥٠)

3 ......شعب الايمان ، الحادى عشرمن شعب الايمان ، باب فى الخوف من اللّٰه تعالٰى ، ١/٤٩١ ، الحديث ٨٠٣ بتغير

वापस आ कर कहने लगा कि सब लोग गाफ़िल पड़े सो रहे हैं। औरत ने पूछा : अल्लाह तआला के बारे में तेरा क्या ख़याल है ? क्या वोह भी सो रहा है ! जवान बोला : अल्लाह तो न कभी सोता है और न ही उसे कभी ऊंघ आती है। तब औरत बोली : लोग सो गए तो क्या हुवा ! अल्लाह तो जाग रहा है, हमें देख रहा है, उस से डरना हम पर फ़र्ज़ है। जवान ने जूंही येह बात सुनी, ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ गया और बुरे इरादे से ताइब हो कर घर वापस चला गया। कहते हैं कि जब वोह जवान मरा तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : सुनाओ ! क्या गुज़री ? जवान ने जवाब दिया : मैं ने अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से एक गुनाह को छोड़ा था, अल्लाह तआला ने इसी सबब से मेरे तमाम गुनाहों को बख़्श दिया।

हिकायत

'मजमउ़ल लताइफ़' में है कि बनी इस्राईल में एक कसीरुल इ़याल आ़बिद था, उसे तंगदस्ती ने घेर लिया, जब बहुत परेशान हुवा तो अपनी औरत से कहा जाओ ! किसी से कुछ मांग कर लाओ। औरत ने एक ताजिर के यहां जा कर खाने का सुवाल किया। ताजिर ने कहा : अगर तुम मेरी आरज़ू पूरी कर दो तो जो चाहो ले सकती हो। औरत बिचारी चुप चाप ख़ाली हाथ घर लौट आई। बच्चों ने जब मां को ख़ाली हाथ आते देखा तो भूक से चिल्लाने लगे और कहने लगे : अम्मी ! हम भूक से मर रहे हैं हमें कुछ खाने को दो। औरत दोबारा उसी ताजिर के हां लौट गई और खाने का सुवाल किया, ताजिर ने फिर वोही बात की जो पहले कह चुका था। औरत रज़ामन्द हो गई मगर जब येह दोनों तख़्लिय्या में पहुंचे तो औरत ख़ौफ़ से कांपने लगी, ताजिर ने पूछा : किस से डरती हो ? उस ने कहा : मैं उस रब्बे लम-यज़ल के ख़ौफ़ से लर्ज़ां हूं जिस ने हमें पैदा किया। तब ताजिर बोला जब तुम इतनी तंगदस्ती और उ़स्रत में भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखती हो तो मुझे भी अल्लाह के अ़ज़ाब से डरना चाहिये, येह कहा और औरत को बहुत सा मालो मनाल दे कर इ़ज़्ज़त के साथ रुख़्सत कर दिया।

अल्लाह तआला ने पैग़म्बरे वक़्त मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वही भेजी के फ़ुलां बिन फ़ुलां के पास जाओ और उसे मेरा सलाम कह दो और कहना कि मैं ने उस के तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया है। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ह़स्बे हुक्मे इलाही उस ताजिर के पास आए और पूछा : क्या तुम ने कोई अ़ज़ीम नेकी अन्जाम दी है जिस की वज्ह से अल्लाह तआला ने तुम्हारे तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया है। जवाब में ताजिर ने मज़्कूरए बाला सारा वाक़िआ़ कह सुनाया।

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : फ़रमाने इलाही है : "मैं अपने किसी बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ़ नहीं करता, जो शख़्स दुन्या में मेरे अ़ज़ाब से डरता है मैं उसे आख़िरत में बे ख़ौफ़ कर दूंगा लेकिन जो दुन्या में मेरे अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ रहता है, मैं उसे आख़िरत में ख़ौफ़ज़दा करूंगा।"(1) (उस पर अ़ज़ाब नाज़िल करूंगा)

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ (2) — *तुम लोगों से नहीं, मुझ से डरो*

एक और आयत में है :

فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (3) — *अगर तुम मोमिन हो तो लोगों से नहीं, मुझ से डरो।*

हज़रते उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ख़शिय्यते इलाही

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब कुरआने मजीद की कोई आयत सुनते तो ख़ौफ़ से बेहोश हो जाते, एक दिन एक तिन्का हाथ में ले कर कहा : काश ! मैं एक तिन्का होता ! कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न होता ! काश मुझे मेरी मां न जनती ! और ख़ौफ़े ख़ुदा से आप इतना रोया करते थे कि आप के चेहरे पर आंसूओं के बहने की वज्ह से दो सियाह निशान पड़ गए थे।

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يَلِجُ النَّارَ مَنْ بَكٰى مِنْ خَشْيَةِ اللهِ حَتّٰى يَعُوْدَ اللَّبَنُ فِى الضَّرْعِ (4)

तर्जमा : जो शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा से रोता है वोह जहन्नम में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा इसी त़रह़ जैसे कि दूध दोबारा अपने थनों में नहीं जाता।

'**दक़ाइक़ुल अख़्बार**' में है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा, जब उस के आ'माल तोले जाएंगे तो बुराइयों का पलड़ा भारी हो जाएगा, चुनान्चे, उसे जहन्नम में डालने का हुक्म मिलेगा, उस वक़्त उस की पलकों का एक बाल **अल्लाह** की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! तेरे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था जो **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से रोता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर जहन्नम की आग ह़राम कर देता है और मैं तेरे ख़ौफ़ से रोया था।

---

1 ......شعب الایمان ، الحادی عشرمن شعب الایمان ، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ۱/۴۸۲، الحدیث ۷۷۷

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो। (پ۶،المائدہ:۴۴)

3 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन से न डरो और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो। (پ۴،اٰل عمران:۱۷۵)

4 ......ترمذی ، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل الغبار...الخ ، ۳/۲۳۶، الحدیث ۱۶۳۹

अल्लाह तआ़ला का दरयाए रह़मत जोश में आएगा और उस शख़्स को एक अश्कबार बाल के बदले जहन्नम से बचा लिया जाएगा, उस वक़्त ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام पुकारेंगे : "फ़ुलां बिन फ़ुलां एक बाल के बदले नजात पा गया।"

'बिदायतुल हिदाया' में है कि क़ियामत के दिन जब जहन्नम को लाया जाएगा तो उस से हैबतनाक आवाज़ें निकलेंगी जिस की वज्ह से लोग उस पर से गुज़रने में घबराएंगे,

फ़रमाने इलाही है : وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا[1]

जब लोग जहन्नम के क़रीब आएंगे तो इस से सख़्त गर्मी और ख़ौफ़नाक आवाज़ें सुनेंगे जो पांच सो साल के सफ़र की दूरी से सुनाई देती होंगी, जब हर नबी नफ़्सी नफ़्सी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मती उम्मती कह रहे होंगे उस वक़्त जहन्नम से एक निहायत ही बुलन्द आग बाहर निकलेगी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की त़रफ़ बढ़ेगी, आप की उम्मत उस की मुदाफ़अ़त में कहेगी : "ऐ आग ! तुझे नमाज़ियों, सदक़ा देने वालों, रोज़ादारों और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों का वासित़ा, वापस चली जा !" मगर आग बराबर बढ़ती चली जाएगी, तब ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام येह कहते हुवे कि जहन्नम की आग उम्मते मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ बढ़ रही है, आप की ख़िदमत में पानी का एक प्याला पेश करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे : ऐ अल्लाह के नबी ! इस से आग पर छींटे मारिये। आप आग पर पानी के छींटे मारेंगे तो वोह आग फ़ौरन बुझ जाएगी, उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिब्रील से उस पानी के मुतअ़ल्लिक़ पूछेंगे, जिब्राईल कहेंगे : हुज़ूर ! येह ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाले आप के गुनहगार उम्मतियों के आंसू थे, मुझे हुक्म दिया गया कि मैं येह पानी आप की ख़िदमत में पेश करूं और आप इस से जहन्नम की आग को बुझा दें।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ़ मांगा करते थे : ऐ अल्लाह ! मुझे ऐसी आंखें अ़त़ा फ़रमा जो तेरे ख़ौफ़ से रोने वाली हों।[3]

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम हर गुरौह को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुवे हर गुरौह अपने नामए आ'माल की त़रफ़ बुलाया जाएगा। (پ۲۵، الجاثیۃ:۲۸)

2......روح البيان، الاعراف، تحت الآية: ۲۸۵/۳

3...... جامع الاحاديث، ۱۱۵/۶، الحديث ۴۸۲۳

اعینی ھلا تبکیان علی ذنبی   تناثر عمری من یدی ولا ادری

۞....ऐ मेरी दोनों आंखों ! मेरे गुनाहों पर क्यूं नहीं रोती हो ? मेरी उम्र ज़ाएअ़ हो गई और मुझे मा'लूम भी न हुवा।

हदीस शरीफ़ में है : कोई ऐसा बन्दए मोमिन नहीं जिस की आंखों से ख़ौफ़े ख़ुदा से मख्खी के पर के बराबर आंसू बहे और उस की गर्मी उस के चेहरे पर पहुंचे और उसे कभी जहन्नम की आग छूए।[1]

हज़रते मुहम्मद बिन मुन्ज़िर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते तो अपनी दाढ़ी और चेहरे पर आंसू मला करते और कहते, मैं ने सुना है कि वुजूद के जिस हिस्से पर आंसू लग जाएंगे उसे जहन्नम की आग नहीं छूएगी।

हर मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह अ़ज़ाबे इलाही से डरता रहे और अपने आप को ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से रोकता रहे, फ़रमाने इलाही है :

فَاَمَّا مَنْ طَغٰی ﴿۳۷﴾ وَ اٰثَرَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا ﴿۳۸﴾ فَاِنَّ الْجَحِیْمَ هِیَ الْمَاْوٰی ﴿۳۹﴾ وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَی النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰی ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰی ﴿۴۱﴾

पस जिस किसी ने ना फ़रमानी की और दुन्या की ज़िन्दगी को सब कुछ जाना उस का ठिकाना जहन्नम है और जो अपने रब के सामने (खडे रहने) मक़ाम से डरा और अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोक दिया तो उस की पनाहगाह जन्नत है।[2]

जो इन्सान अ़ज़ाबे इलाही से बचना चाहे और सवाब व रहमत का उम्मीदवार हो, उसे चाहिये कि दुन्यावी मसाइब पर सब्र करे, **अल्लाह** की इबादत करता रहे और गुनाहों से बचता रहे।

'ज़हरुर्रियाज़'[3] में एक हदीस है कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे तो फ़िरिश्ते उन के सामने त़रह़ त़रह़ की ने'मतें पेश करेंगे, उन के लिये फ़र्श बिछाएंगे, मिम्बर रखे जाएंगे और उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने और फल पेश किये जाएंगे, उस वक़्त जन्नती हैरान बैठे होंगे, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : ऐ मेरे बन्दो ! हैरान क्यूं हो ? येह बिहिश्त जाए हैरत नहीं है, उस

---

1 ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحزن والبکاء، ٤/٤٦٧، الحدیث ٤١٩٧ (بتغیر قلیل)

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह जिस ने सरकशी की और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी तो बेशक जहन्नम ही उस का ठिकाना है और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है। (پ٣٠، النازعات: ٣٧-٤١)

3 ......زهر الریاض

वक़्त मोमिन अ़र्ज़ करेंगे : बारे इलाहा ! तू ने एक वा'दा किया था जिस का वक़्त आ पहुंचा है, तब फ़िरिश्तों को हुक्मे इलाही होगा कि इन के चेहरों से पर्दे उठा लो ! फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : येह तेरा दीदार कैसे करेंगे हालांकि येह गुनहगार थे । उस दम फ़रमाने इलाही होगा : तुम हिजाब उठा दो ! येह ज़िक्र करने वाले, सजदा करने वाले और मेरे ख़ौफ़ से रोने वाले थे और मेरे दीदार के उम्मीदवार थे । उस वक़्त पर्दे उठा दिये जाएंगे और जन्नती अल्लाह का दीदार होते ही सजदे में गिर जाएंगे, फ़रमाने इलाही होगा : सर उठा लो येह जन्नत दारे अ़मल नहीं दारे जज़ा है और वोह अपने रब को बे कैफ़ देखेंगे, रब फ़रमाएगा :

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ يَا عِبَادِىْ فَقَدْ رَضِيْتُ عَنْكُمْ فَهَلْ رَضِيْتُمْ عَنِّىْ

मेरे बन्दो ! तुम पर सलामती हो, मैं तुम से राज़ी हूं, क्या तुम मुझ से राज़ी हो ?

जन्नती अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! हम कैसे राज़ी नहीं होंगे हालांकि तू ने हमें वोह ने'मतें दीं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी दिल में इन का तसव्वुर गुज़रा और येही इस फ़रमाने इलाही का मक़्सूद है कि अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वोह अल्लाह से राज़ी हुवे और سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ (1)

❁…❁…❁…❁…❁

जन्नत में घूमने वाला

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सहीह मुस्लिम में नक़्ल करते हैं, ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मैं ने एक शख़्स को जन्नत में घूमते हुवे देखा कि जिधर चाहता है निकल जाता है क्यूं कि उस ने इस दुन्या में एक ऐसे दरख़्त को रास्ते से काट दिया था जो कि लोगों को तक्लीफ़ देता था ।" (صَحِيح مُسلِم، ص١٤١٠، الحديث٢٦١٧)

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा । (پ٢٣، يٰسٓ:٥٨)

बाब 3

सब्र व मरज़

जो शख़्स येह चाहता है कि वोह अज़ाबे इलाही से छूट जाए, सवाब व रह़मत को पा ले और जन्नती हो जाए उसे चाहिये कि वोह अपने आप को दुन्यवी ख़्वाहिशात से रोके और दुन्या के आलाम व मसाइब पर सब्र करे, चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَاللّٰهُ یُحِبُّ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ (1) *अल्लाह सब्र करने वालों को मह़बूब रखता है ।*

सब्र की क़िस्में

सब्र की कई क़िस्में हैं : अल्लाह की इत़ाअ़त पर सब्र करना, ह़राम चीज़ों से रुक जाना, तकालीफ़ पर सब्र करना और पहले सदमे पर सब्र करना वग़ैरा ।

जो शख़्स इ़बादते इलाही पर सब्र करता है और हर वक़्त इ़बादत में मह़्व रहता है उसे क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला तीन सो ऐसे दरजात अ़त़ा करेगा जिन में हर दरजे का फ़ासिला ज़मीनो आस्मान के फ़ासिले के बराबर होगा, जो अल्लाह तआ़ला की ह़राम की हुई चीज़ों से सब्र करता है उसे छे सो दरजात अ़त़ा होंगे जिन में हर दरजे का फ़ासिला सातवें आस्मान से सातवीं ज़मीन के फ़ासिले के बराबर होगा, जो मसाइब पर सब्र करता है उस को सात सो दरजात अ़त़ा होंगे, हर दरजे का फ़ासिला तह़्तुस्सरा से अ़र्शे उला के बराबर होगा ।

ह़िकायत

ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام जब यहूद के ह़म्ले की वज्ह से शहर से बाहर निकले कि कहीं रू पोश हो जाएं और यहूद उन के पीछे भागे तो आप ने क़रीब एक दरख़्त देख कर उस से कहा : ऐ दरख़्त ! मुझे अपने अन्दर छुपा ले । दरख़्त चीर गया और आप उस में रू पोश हो गए । जब यहूद वहां पहुंचे तो शैत़ान ने उन्हें सारी बात बतला कर कहा : इस दरख़्त को आरी से दो टुकड़े कर दो, चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा ही किया और येह सिर्फ़ इस लिये हुवा कि ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ाते बारी की बजाए मज़ाहिरे क़ुदरते बारी से पनाह त़लब की थी, आप ने अपने वुजूद को मुसीबत में डाला और आप के दो टुकड़े कर दिये गए ।

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र वाले अल्लाह को मह़बूब हैं । (پ۴،اٰل عمران:۱۴۶)

हदीसे क़ुदसी में है **अल्लाह** तआला फ़रमाता है जब मेरा कोई बन्दा मसाइब में मुझ से सुवाल करता है, मैं उसे मांगने से पहले दे देता हूं और उस की दुआ को मक़्बूल कर लेता हूं, और जो बन्दा मसाइब के वक़्त मेरी[1] मख़्लूक़ से मदद मांगता है मैं उस पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर देता हूं।[2]

हज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام को उफ़ करने की मुमानअ़त

कहते हैं कि जब आरी हज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام के दिमाग़ तक पहुंची तो आप ने आह की, इरशादे इलाही हुवा : ऐ ज़करिय्या मसाइब पर पहले सब्र क्यूं नहीं किया जो अब फ़रयाद करते हो। अगर दोबारा आह मुंह से निकाली तो दफ़्तरे साबिरीन से तुम्हारा नाम ख़ारिज[3] कर दिया जाएगा तब हज़रत ने अपने होटों को बन्द कर लिया, चिर कर दो चुकड़े हो गए मगर फिर उफ़ तक न की।

इस लिये हर अ़क़्लमन्द के लिये ज़रूरी है कि वोह मसाइब पर सब्र करे और हर्फ़े शिक्वा ज़बान पर न लाए ताकि दुन्या और आख़िरत के अ़ज़ाब से नजात हासिल कर ले क्यूंकि इस दुन्या में मसाइब अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام और औलियाउल्लाह ही पर ज़ियादा वारिद होते हैं।

सूफ़िया की नज़र में मसाइब की ह़क़ीक़त

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ का क़ौल है : मसाइब आ़रिफ़ीन का चराग़, मुरीदीन की बेदारी, मोमिन की इस्लाह़ और ग़ाफ़िलों के लिये हलाकत हैं, मोमिन मसाइब पर सब्र किये बिग़ैर ईमान की ह़लावत को पा नहीं सकता। ह़दीस शरीफ़ में है :

1....दुन्यादार मख़्लूक़ से या रब को छोड़ कर अपने मातह़्त से और इसी त़रह़ किसी को ख़ुदा समझ कर मदद लेता है।

2....

3....मुह़िब्ब, मह़बूब में कोई ख़ूबी मह़बूब से जुदा नहीं चाहता, इसी त़रह़ मां-बाप अपने मह़बूब फ़रज़न्द मरीज़ को तन्दुरुस्त देखना पसन्द करते हैं चुनान्चे, दवा पिलाते वक़्त या परहेज़ करने के सिलसिले में तल्ख़ अल्फ़ाज़ से काम लेते हैं, धमकी भी देते हैं (मसलन : अगर न पियेगा तो हम बोलना बन्द कर देंगे वग़ैरा) इसी त़रह़ रब ने अपने वली (दोस्त) में सब्र की ख़ूबी शहादत के वस्फ़ के साथ देखना पसन्द फ़रमाई और सब्र की तल्क़ीन में तम्बीह बराए मह़ब्बत फ़रमाई, दूसरे : रब तआ़ला का ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام से येह फ़रमाना कि नाम ख़ारिज कर दिया जाएगा, मशरूत़ है, इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी बारहा फ़रमाया, मसलन : हुज़ूर ने रब तआ़ला की अवलाद की नफ़ी में फ़रमाया कि रब का वलद होता तो मैं सब से पहले उस की इ़बादत करता।
नुक्ता....किसी क़िस्म का ऐ़ब नबी में मानना दर अस्ल रब के इन्तिख़ाब में ऐ़ब मानना होगा कि कामिल अवसाफ़ का नबी चुना या مَعَاذَاللہ नबी का इन्तिख़ाब करते वक़्त उस के आयिन्दा ग़ैर मन्सबे नबुव्वत फ़े'ल से बे इ़ल्म रहा। इस वाक़िए़ का तफ़्सीली ह़ाल 'अवराक़े ग़म' में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

जो शख़्स रात भर बीमार रहा और सब्र कर के अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का त़ालिब हुवा तो वोह शख़्स गुनाहों से ऐसे पाक हो जाएगा जैसे कि अपनी पैदाइश के वक़्त था इस लिये जब तुम बीमार हो जाओ तो आ़फ़िय्यत की तमन्ना न करो।(1)

ह़ज़रते ज़ह्ह़ाक कहते हैं : जो शख़्स चालीस रातों में एक रात में भी गिरिफ़्तारे रन्जो अलम न हुवा हो, अल्लाह तआ़ला के यहां उस के लिये कोई ख़ैर व भलाई नहीं है।

मरीज़ बन्दए मोमिन के गुनाह नहीं लिखे जाते

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : जब बन्दए मोमिन किसी बीमारी में मुब्तला हो जाता है तो उस के बाएं शाने वाले फ़िरिश्ते से कहा जाता है कि इस के गुनाहों को लिखना बन्द कर दो, दाएं शाने वाले से कहा जाता है इस के नामए आ'माल में वोह बेहतरीन नेकियां लिखो जो इस से सरज़द हुई हैं।(2)

ह़दीस शरीफ़ में है : जब कोई बन्दा बीमार हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उस की त़रफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है कि जा कर देखो मेरा बन्दा क्या कहता है ? अगर बीमार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहता है तो फ़िरिश्ते अल्लाह की बारगाह में जा कर उस का क़ौल अ़र्ज़ करते हैं, इरशादे इलाही होता है : अगर मैं ने उस बन्दे को इस बीमारी में मौत दे दी तो उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और अगर सिह़्ह़त अ़त़ा की तो उसे पहले से भी बेहतर परवरिश करने वाला गोश्त और ख़ून दूंगा और उस के गुनाहों को मुआ़फ़ कर दूंगा।(3)

एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत

बनी इस्राईल में एक निहायत ही फ़ासिक़ो फ़ाजिर इन्सान था जो अपनी बद किरदारियों से कभी बाज़ न आता था, अहले शहर जब उस की बद कारियों से आ़जिज़ आ गए तो अल्लाह तआ़ला से उस के शर से मह़फ़ूज़ रहने की दुआ़ मांगने लगे। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य की, कि बनी इस्राईल के फ़ुलां शहर में एक बदकार जवान रहता है उसे शहर से निकाल दीजिये ताकि उस की बद कारियों की वज्ह से सारे शहर पर आग न बरसे, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام वहां तशरीफ़ ले गए और उसे उस की बस्ती से निकाल दिया, वोह क़रीब ही दूसरी

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الصبر على مطلق الامراض ، ٢/١٢٥، الجزء الثالث ، الحديث ٦٦٧٦

2 ......شعب الايمان ، السبعون من شعب الايمان ، باب فى الصب...الخ،٧/١٨٨، الحديث ٩٩٤٧

3 ...... شعب الايمان ، السبعون من شعب الايمان ، باب فى الصب...الخ، ٧/١٨٧، الحديث ٩٩٤١(بتغير قليل

बस्ती में चला गया। फिर फ़रमाने इलाही हुवा कि इसे उस बस्ती से भी निकाल दीजिये, जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को उस बस्ती से भी निकाल दिया तो उस ने एक ऐसे ग़ार पर ठिकाना बनाया जहां न कोई इन्सान था और न ही किसी चरिन्दे परन्दे का गुज़र था, क़ुर्बो जवार में न कहीं आबादी थी और न दूर दूर तक सब्ज़े का कोई पता था। उस ग़ार में आ कर वोह जवान बीमार हो गया, उस की तीमारदारी के लिये कोई शख़्स भी उस के आस पास मौजूद न था जो उस की ख़िदमत करता, वोह ज़ो'फ़ व नातुवानी से ज़मीन पर गिर पड़ा और कहने लगा काश ! इस वक़्त अगर मेरी मां मेरे पास मौजूद होती तो मुझ पर शफ़्क़त करती और मेरी इस बे कसी और बे बसी पर रोती, अगर मेरा बाप होता तो मेरी निगहबानी, निगहदाश्त और मदद करता, अगर मेरी बीवी होती तो मेरी जुदाई पर रोती, अगर मेरे बच्चे इस वक़्त मौजूद होते तो कहते, ऐ हमारे रब, आ़जिज़, गुनहगार, बदकार और मुसाफ़िर बाप को बख़्श दे जिसे पहले तो शहर बदर किया गया और फिर दूसरी बस्ती से भी निकाल दिया गया था और अब वोह ग़ार में भी हर एक चीज़ से ना उम्मीद हो कर दुन्या से आख़िरत की त़रफ़ चला है और वोह मेरे जनाज़े के पीछे रोते हुवे चलते। फिर वोह नौजवान कहने लगा : ऐ **अल्लाह** ! तू ने मुझे वालिदैन और बीवी बच्चों से तो दूर किया है मगर अपने फ़ज़्लो करम से दूर न करना, तू ने मेरा दिल अ़ज़ीज़ों की जुदाई में जलाया है, अब मेरे सरापा को मेरे गुनाहों के सबब जहन्नम की आग में न जलाना, उसी दम **अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता उस के बाप के हम शक्ल बना कर, एक हूर को उस की मां और एक हूर को उस की बीवी की हम शक्ल बना कर और ग़िलमाने जन्नत को उस के बच्चों के रूप में भेज दिया, येह सब उस के क़रीब आ कर बैठ गए और उस की शिद्दते तक्लीफ़ पर तअस्सुफ़ (अफ़्सोस) और आहो ज़ारी करने लगे। जवान उन्हें देख कर बहुत ख़ुश हुवा और इसी मसर्रत में उस का इन्तिक़ाल हो गया, तब **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य की, कि फ़ुलां ग़ार की त़रफ़ जाओ, वहां हमारा एक दोस्त मर गया है, तुम उस की तक्फ़ीन व तदफ़ीन का इन्तिज़ाम करो।

हुक्मे इलाही के ब मूजिब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब ग़ार में पहुंचे तो उन्हों ने वहां उसी जवान को मरा हुवा पाया जिस को उन्हों ने पहले शहर और फिर बस्ती से निकाला था, उस के गिर्द हूरें ता'ज़िय्यत करने वालों की त़रह़ बैठी हुई थीं। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त ! येह तो वोही नौजवान है जिसे मैं ने तेरे हुक्म से शहर और बस्ती से निकाल दिया था। रब्बुल इ़ज़्ज़त ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! मैं ने इस के बहुत ज़ियादा रोने और अ़ज़ीज़ों के फ़िराक़ में तड़पने की वज्ह से इस पर रह़्म किया है और फ़िरिश्ते को इस के बाप की और हूरो ग़िलमान को इस की मां, बीवी और बच्चों के हम शक्ल बना कर भेजा है जो ग़ुर्बत में इस की तक्लीफ़ों पर रोते हैं, जब येह मरा तो इस की बेचारगी पर ज़मीनो आस्मान वाले रोए और मैं अरह़मुर्राह़िमीन फिर क्यूं न इस के गुनाहों को मुआ़फ़ करता।

जब मुसाफ़िर, मुसाफ़िरत में इन्तिक़ाल करता है

जब किसी मुसाफ़िर पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी होता है तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है येह बेचारा मुसाफ़िर है, अपने अहलो इयाल और वालिदैन वग़ैरा को छोड़ चुका है, जब येह मरेगा तो इस पर कोई तअस्सुफ़ (अफ़्सोस) करने वाला भी न होगा, तब **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को उस के वालिदैन, अवलाद और ख़ुवैश व अक़ारिब की शक्ल में भेजता है, जब वोह उन्हें अपने क़रीब देखता है तो उन को अपने ख़ुवैश व अक़ारिब समझ कर ह़द दरजा मसरूर होता है और इसी मसर्रत में उस की रूह़ परवाज़ कर जाती है, फिर वोह फ़िरिश्ते परेशान ह़ाल हो कर उस के जनाज़े के पीछे पीछे चलते हैं और क़ियामत तक उस की मग़फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं, फ़रमाने इलाही है : اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ [(1)] **अल्लाह** अपने बन्दों पर मेहरबान है।

इब्ने अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : इन्सान का सिद्क़ व किज़्ब, उस की मुसीबत और शादमानी के वक़्त ज़ाहिर होता है, जो शख़्स शादमानी व ख़ुशह़ाली में तो **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करता है, मगर मसाइब में फ़रयाद व फ़ुग़ां करता है वोह झूटा है। अगर किसी को दो आ़लम का इ़ल्म अ़त़ा कर दिया जाए, फिर उस पर मसाइब की यलग़ार हो और वोह शिक्वा व शिकायत करने लगे तो उसे उस का येह इ़ल्मो अ़मल कोई फ़ाइदा नहीं देगा। (येह इ़ल्म बेकार है)

ह़दीसे क़ुदसी है : **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : जो मेरी क़ज़ा पर राज़ी नहीं मेरी अ़त़ा पर शुक्र नहीं करता वोह मेरे सिवा कोई और रब तलाश करे।[(2)]

ह़िकायत

वहब बिन मुनब्बेह कहते हैं : **अल्लाह** के एक नबी ने पचास बरस **अल्लाह** की इ़बादत की, तब **अल्लाह** तआ़ला ने उस नबी की त़रफ़ येह वह़्य फ़रमाई कि मैं ने तुझे बख़्श दिया है। नबी ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! मैं ने तो कोई गुनाह ही नहीं किया, बख़्शा किस चीज़ को गया ? **अल्लाह** तआ़ला ने उन की एक रग को बन्द कर दिया जिस की वज्ह से वोह सारी रात न सो सके। सुब्ह़ को जब उन के पास फ़िरिश्ता आया तो उन्हों ने रग बन्द हो जाने की शिकायत की, तब फ़िरिश्ता बोला : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है तेरी पचास बरस की इ़बादत से तेरी येह एक शिकायत अफ़्ज़ूं है। (इस इ़बादत पर तू नाज़ां था ?)

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** अपने बन्दों पर लुत़्फ़ फ़रमाता है। (پ۲۵، الشوریٰ:۱۹)

2......المعجم الكبير، ۲۲/۳۲۰، الحديث ۸۰۷

बाब 4

रियाज़त व ख़्वाहिशाते नफ़्सानी

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दुरूद पढ़ने का हुक्म

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वह्य नाज़िल फ़रमाई कि ऐ मूसा ! अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी ज़बान पर तुम्हारे कलाम से, तुम्हारे दिल में ख़यालात से, तुम्हारे बदन में तुम्हारी रूह से, तुम्हारी आंखों में नूरे बिसारत से और तुम्हारे कानों में कुव्वते समाअत से ज़ियादा क़रीब रहूं तो फिर मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद भेजो !

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ الله

फ़रमाने इलाही है :

وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ (1)

हर नफ़्स येह देखे कि उस ने क़ियामत के लिये क्या अमल किये हैं।

ऐ इन्सान ! अच्छी तरह समझ ले कि तुझे बुराई की तरफ़ ले जाने वाला तेरा नफ़्स तेरे शैतान से भी बड़ा दुश्मन है और शैतान को तुझ पर तेरी ख़्वाहिशात की बदौलत ग़लबा हासिल होता है लिहाज़ा तुझे तेरा नफ़्स झूटी उम्मीदों और धोके में डाले है, जो शख़्स बे ख़ौफ़ हुवा और ग़फ़्लत में गिरिफ़्तार हुवा, अपने नफ़्स की पैरवी करता है, उस इन्सान का हर दा'वा झूटा है, अगर तू नफ़्स की रिज़ा में इस की ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ करेगा तो हलाक हो जाएगा और अगर इस के मुहासबे से ग़ाफ़िल होगा तो बह्रे इस्यां में ग़र्क़ हो जाएगा। अगर तू इस की मुख़ालफ़त से आजिज़ आ कर इस की ख़्वाहिशात की पैरवी करेगा तो येह तुझे नारे जहन्नम की तरफ़ खींच ले जाएगा, नफ़्स की बाज़गश्त भलाई की तरफ़ नहीं है बल्कि येह मसाइब की जड़, शर्मिन्दगी की कान, इब्लीस का ख़ज़ाना और हर बुराई का ठिकाना है और इस की फ़ितना अंगेज़ियों को सिवाए आलिमे ख़ैरो शर के या'नी अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता।

फ़रमाने इलाही है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۸ (2)

और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तुम्हारे तमाम आ'माल से बा ख़बर है।

तफ़्सीरे अबिल्लैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه में है : जब कोई बन्दा तलबे आख़िरत की वज्ह से अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र करता है तो येह तफ़क्कुर उस के दिल के लिये ग़ुस्ल का काम देता

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा। (پ۲۸، الحشر:۱۸)

2..**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (پ۲۸، الحشر:۱۸)

है जैसा कि फ़रमाने नबवी है : एक घड़ी का तफ़क्कुर साल भर की इबादत से बेहतर है।[1]

लिहाज़ा हर अ़क़्लमन्द के लिये ज़रूरी है कि अपने गुज़श्ता गुनाहों की मग़फ़िरत त़लब करे, जिन चीज़ों का इक़रार करता है उन में तफ़क्कुर करे और क़ियामत के दिन के लिये तोशा बनाए, उम्मीदों को कम करे, तौबा में जल्दी करे, **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करता रहे, ह़राम चीज़ों से ए'राज़ करे और नफ़्स को सब्र पर आमादा करे, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की इत्तिबाअ़ न करे क्यूंकि नफ़्स एक बुत की त़रह़ है जो नफ़्स की इत्तिबाअ़ करता है वोह गोया बुत की इबादत करता है और जो इख़्लास से **अल्लाह** की इबादत करता है, वोह अपने नफ़्स पर जब्र करता है।

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार ने इन्जीर खाना चाहा

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक दिन बसरा के एक बाज़ार से गुज़र रहे थे कि आप को इन्जीर नज़र आए, दिल में इन्हें खाने की ख़्वाहिश हुई, दुकानदार के पास पहुंचे और कहा : मेरे इन जूतों के इवज़ इन्जीर दे दो, दुकानदार ने जूतों को पुराना देख कर कहा : इन के बदले में कुछ नहीं मिल सकता, आप येह जवाब सुन कर चल पड़े, किसी ने दुकानदार से कहा : जानते हो येह बुज़ुर्ग कौन थे ? वोह बोला : नहीं ! उस ने कहा : येह मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه थे। दुकानदार ने जब येह सुना तो अपने गुलाम को एक टोकरी इन्जीरों से भर कर दी और कहा : अगर ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तुझ से येह टोकरी क़बूल कर लें तो इस ख़िदमत के बदले तू आज़ाद है। गुलाम भागा भागा आप की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह क़बूल फ़रमाइये ! आप ने कहा : मैं नहीं लेता, गुलाम बोला : अगर आप इसे क़बूल कर लें तो मैं आज़ाद हो जाऊंगा, आप ने जवाब दिया : इस में तेरे लिये तो आज़ादी है मगर मेरे लिये हलाकत है, जब गुलाम ने इसरार किया तो आप ने फ़रमाया कि मैं ने क़सम खाई है कि दीन के इवज़ में इन्जीर नहीं खाऊंगा और मरते दम तक कभी भी इन्जीर नहीं लूंगा।

ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ी में सब्र

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मरज़े वफ़ात में इस बात की ख़्वाहिश हुई कि मैं गर्म रोटी का सरीद बना कर खाऊं जिस में शहद और दूध शामिल हो, चुनान्चे, आप के हुक्म से ख़ादिम येह तमाम चीज़ें ले कर ह़ाज़िर हुवा। आप कुछ देर इन चीज़ों को देखते रहे, फिर बोले : ऐ नफ़्स ! तू ने तीस साल मुतवातिर सब्र किया है, अब ज़िन्दगी की इस आख़िरी घड़ी में क्या सब्र नहीं कर सकता ? येह कहा और प्याला छोड़ दिया और इसी त़रह़ सब्र करते हुवे वासिल बह़क़ हो

[1] ......روح البيان، الجاثيه، تحت الآية:١٣، ٨/٤٤٠ و الجامع الصغير، ص٣٦٥ ، الحديث ٥٨٩٧ بلفظ ستين سنة

गए। ह़क़ीक़त येह है कि अल्लाह के नेक बन्दों या'नी अम्बिया, औलिया, सिद्दीक़ीन और ज़ाहिदीन के ह़ालात ऐसे ही थे। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल है कि जिस शख़्स ने अपने नफ़्स पर क़ाबू पाया वोह उस शख़्स से ज़ियादा त़ाक़तवर है जो तने तन्हा एक शहर को फ़त्ह़ कर लेता है।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि मैं अपने नफ़्स के साथ बकरियों के रेवड़ पर ऐसे एक जवान की त़रह़ हूं कि जब वोह एक त़रफ़ उन्हें इकठ्ठा करता है तो वोह दूसरी त़रफ़ फैल जाती हैं।

जो शख़्स अपने नफ़्स को फ़ना कर देता है उसे रह़मत के कफ़न में लपेट कर करामत की ज़मीन में दफ़्न किया जाता है और जो शख़्स अपने ज़मीर (क़ल्ब) को ख़त्म कर देता है उसे ला'नत के कफ़न में लपेट कर अ़ज़ाब की ज़मीन में दफ़्न किया जाता है।

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि अपने नफ़्स का त़ाअ़त व बन्दगी कर के मुक़ाबला करो ! 'रियाज़त' शब बेदारी, क़लील गुफ़्तगू, लोगों की तकालीफ़ बरदाश्त करना और कम खाने का नाम है। कम सोने से ख़यालात पाकीज़ा होते हैं, कम बोलने से इन्सान आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहता है, तकालीफ़ बरदाश्त करने से दरजात बुलन्द होते हैं और कम खाने से शहवाते नफ़्सानी ख़त्म हो जाती हैं क्यूंकि बहुत खाना दिल की सियाही और इसे गिरिफ़्तारे ज़ुल्मत करता है, भूक ह़िक्मत का नूर है और सैर होना अल्लाह तआ़ला से दूर कर देता है। फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

نَوِّرُوْا قُلُوْبَكُمْ بِالْجُوْعِ وَجَاهِدُوْا اَنْفُسَكُمْ بِالْجُوْعِ وَالْعَطَشِ وَاَدِيْمُوْا قَرْعَ بَابِ الْجَنَّةِ بِالْجُوْعِ فَاِنَّ الْاَجْرَ فِيْ ذٰلِكَ كَاَجْرِ الْمُجَاهِدِ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ عَمَلٍ اَحَبَّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ جُوْعٍ وَّ عَطَشٍ وَّ لَنْ يَّلِجَ مَلَكُوْتُ السَّمٰوٰتِ مَنْ مَلَأَ بَطْنَهٗ وَ فَقَدَ حَلَاوَةَ الْعِبَادَةِ .[1]

तर्जमा : अपने कुलूब को भूक से मुनव्वर करो अपने नफ़्स का भूक प्यास से मुक़ाबला करो और हमेशा भूक के तवस्सुत़ से जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाते रहो, भूके रहने वाले को मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के सवाब के बराबर सवाब मिलता है और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक भूके प्यासे रहने से बेहतर कोई अ़मल नहीं, आस्मान के फ़िरिश्ते उस इन्सान के पास बिल्कुल नहीं आते जिस ने अपना पेट भर कर इ़बादत का मज़ा खो दिया हो।

'मिन्हाजुल आ़बिदीन' में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का येह क़ौल मज़कूर है कि मैं जब से ईमान लाया हूं कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया ताकि मैं अपने रब की इ़बादत का मज़ा ह़ासिल कर सकूं और अपने रब के शौक़े दीदार की वज्ह से कभी सैर हो कर पानी नहीं पिया है इस लिये कि बहुत खाने से इ़बादत में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है क्यूंकि जब इन्सान ख़ूब सैर हो

---

1 ...... فتاوی حدیثیة، ۱/۱۱۷

कर खा लेता है तो उस का जिस्म गिरां और आंखें नींद से बोझल हो जाती हैं, उस के आ'ज़ाए बदन ढीले पड़ जाते हैं फिर वोह बा वुजूद कोशिश के सिवाए नींद के कुछ भी हासिल नहीं कर पाता और इस तरह वोह उस मुर्दार की मानिन्द बन जाता है जो राह गुज़र में पड़ा हो।

'**मुन्यतुल मुफ़्ती**' में है कि हज़रते लुक़्मान हकीम ने अपने बेटे से कहा : खाना और सोना कम करो क्यूंकि जो शख़्स ज़ियादा खाता और ज़ियादा सोता है वोह क़ियामत के दिन आ'माले सालिहा से ख़ाली हाथ होगा।

फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि अपने दिलों को ज़ियादा खाने पीने से हलाक न करो, जिस तरह ज़ियादा पानी से खेती तबाह हो जाती है, इसी तरह ज़ियादा खाने पीने से दिल हलाक हो जाता है।(1) नेक लोगों ने मे'दे को ऐसी हांडी से तश्बीह दी है जो उबलती रहती है और इस के बुख़ारात बराबर दिल पर पहुंचते रहते हैं, फिर इन्ही बुख़ारात की कसरत दिल को ग़लीज़ और कसीफ़ बना देती है ज़ियादा खाने से इल्मो फ़िक्र में कमी वाक़ेअ़ होती है और शिकम पुरी, फ़तानत व ज़कावत को बरबाद कर देती है।

हिकायत

हज़रते यहूया बिन ज़करिय्या عَلَيْهِمَا السَّلَام ने शैतान को देखा वोह बहुत से दाम उठाए हुवे था, आप ने पूछा : येह क्या हैं ? शैतान ने कहा : येह शहवात हैं जिन से मैं इब्ने आदम को क़ैद करता हूं। आप ने फ़रमाया : मेरे लिये भी कोई फन्दा है ? शैतान बोला : नहीं ! मगर एक रात आप ने पेट भर कर खाना खा लिया था जिस से आप को नमाज़ में सुस्ती पैदा हो गई थी। तब हज़रते यहूया عَلَيْهِ السَّلَام बोले : आयिन्दा मैं कभी भी पेट भर कर खाना नहीं खाऊंगा। शैतान बोला : अगर येह बात है तो मैं भी आयिन्दा किसी को नसीहत नहीं करूंगा।

येह उस मुक़द्दस हस्ती का हाल है जिस ने सारी उम्र में सिर्फ़ एक रात पेट भर कर खाना खाया था, उस शख़्स का क्या हाल होगा जो उम्र भर कभी भी भूका नहीं रहता और पेट भर कर खाना खाता है और इस पर वोह चाहता है कि वोह इबादत गुज़ार बन जाए।

हिकायत

हज़रते यहूया عَلَيْهِ السَّلَام ने एक रात जव की रोटी पेट भर कर खा ली और इबादते इलाही में हाज़िर न हुवे, **अल्लाह** तआला ने वही की : ऐ यहूया ! क्या तू ने इस दुन्या को आख़िरत से बेहतर समझा है या मेरे जवारे रहमत से बेहतर तू ने कोई जवार पा लिया है ? मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर तू जन्नतुल फ़िरदौस का नज़ारा कर ले और जहन्नम को देख ले तो आंसूओं के बदले ख़ून रोए और इस मुरक़्क़अ(2) की बजाए लोहे का लिबास पहने।

(1) ...... بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية، ٥/٤٥٠

(2) ...फ़क़ीरों की गुदड़ी।

बाब 5

ग़लबए नफ़्स व अ़दावते शैत़ान

हर अ़क़्लमन्द के लिये ज़रूरी है कि वोह भूका रह कर शहवात का क़ल्अ़ क़म्अ़ करे इस लिये कि भूक इस दुश्मने ख़ुदा 'नफ़्स' के लिये क़हर है। शैत़ान का वसीलए ज़फ़र येही ख़्वाहिशात और खाना पीना है। फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि शैत़ान तुम्हारे जिस्म में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है।[1] उस के इन रास्तों को भूक से बन्द करो।

बिला शुबा क़ियामत के दिन वोही शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से ज़ियादा क़रीब होगा जिस ने भूक प्यास बरदाश्त की होगी और इब्ने आदम के लिये सब से ज़ियादा बरबाद करने वाली चीज़ें पेट की ख़्वाहिशात हैं, इस पेट की बदौलत ह़ज़रते आदम और ह़व्वा علیهما السلام जन्नत से ज़िल्लत और फ़क़्रो फ़ाक़ा की ज़मीन पर उतारे गए जब कि रब्बे करीम ने इन्हें शजर (ममनूआ़) के खाने से मन्अ़ कर दिया तो इन्हों ने पेट की ख़्वाहिशात की बिना पर इसे खा लिया था, येही पेट ही ह़क़ीक़त में शहवात का मम्बअ़ और मर्कज़ है।

ह़कीमाना अक़्वाल

एक दाना का क़ौल है : जिस इन्सान पर उस का नफ़्स ग़ालिब आ जाता है वोह शहवात का क़ैदी हो जाता है और बेहूदगी का ताबेअ़ बन जाता है, उस का दिल तमाम फ़वाइद से मह़रूम हो जाता है, जिस किसी ने भी अपने आ'ज़ा की ज़मीन को शहवात से सैराब किया उस ने अपने दिल में नदामत की काश्त की, **अल्लाह** तआ़ला ने मख़्लूक़ को तीन क़िस्मों पर पैदा फ़रमाया है :

﴾1﴿...फ़िरिश्तों को पैदा फ़रमाया, इन में अ़क़्ल रखी मगर इन्हें शहवात से पाक व मुनज़्ज़ा रखा।

﴾2﴿...जानवरों को पैदा किया, इन में शहवत रखी मगर अ़क़्ल से आ़री कर दिया।

﴾3﴿...इन्सान को पैदा किया, इन में अ़क़्ल और शहवत दोनों वदीअ़त फ़रमाए।

अब जिस इन्सान की अ़क़्ल पर उस की शहवत ग़ालिब आ जाती है, वोह जानवरों से बदतर है और जिस मुसलमान की शहवात पर उस की अ़क़्ल ग़ालिब आ जाती है वोह फ़िरिश्तों से भी बेहतर है।

---

[1] ......بخاری، کتاب الاعتکاف، باب ھل یدرأ المعتکف...الخ، ۱/ ۶۷۰، الحدیث ۲۰۳۹

हिकायत

हज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं मैं लुकाम के पहाड़ में था, वहां मैं ने अनार देखे और मेरे दिल में उन्हें खाने की ख़्वाहिश हुई चुनान्चे, मैं ने एक अनार उठा कर उसे दो टुकड़े किया मगर वोह तुर्श निकला लिहाज़ा मैं ने उसे फेंक दिया और चल पड़ा चन्द क़दम आगे जा कर मैं ने एक ऐसे शख़्स को देखा जो ज़मीन पर पड़ा हुवा था और उस पर भिड़ें चिमटी हुई थीं।

मैं ने उसे सलाम कहा और उस शख़्स ने मेरा नाम ले कर सलाम का जवाब दिया। मैं ने हैरत से पूछा : आप मुझे कैसे पहचानते हैं ? उस बन्दए ख़ुदा ने जवाब दिया : जो अपने ख़ुदा को पहचान लेता है फिर उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं रहती। मैं ने कहा : तब तो तुम्हारा बारगाहे ईज़्दी में बड़ा मक़ाम है, तुम येह दुआ क्यूं नहीं करते कि जो तुम्हें चिमटी हुई हैं तुम से दूर हो जाएं।

उस ने कहा : मैं जानता हूं **अल्लाह** के हां तुम्हारा भी बड़ा मक़ाम है, तुम ने येह दुआ क्यूं न मांगी कि **अल्लाह** तआला तुझे अनार खाने की ख़्वाहिश से बचा लेता क्यूंकि भिड़ों की तक्लीफ़ दुन्यावी अ़ज़ाब है मगर अनार खाने की पादाश उख़रवी अ़ज़ाब है, येह भिड़ें तो इन्सान के जिस्म पर डसती हैं मगर ख़्वाहिशात इन्सान के दिल को डस लेती हैं। मैं येह नसीहत आमोज़ गुफ़्तगू सुन कर वहां से अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवाना हो गया।

शहवात, बादशाहों को फ़क़ीर और सब्र फ़क़ीरों को बादशाह बना देता है। आप ने हज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام और ज़ुलैख़ा का क़िस्सा नहीं पढ़ा ! यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام सब्र की बदौलत मिस्र के बादशाह हुवे और ज़ुलैख़ा ख़्वाहिशात की वज्ह से आ़जिज़ और रुस्वा हुई और बसारत से महरूम अ़जूज़ा (बुढ़िया) बन गई इस लिये कि ज़ुलैख़ा ने हज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام की महब्बत में सब्र नहीं किया था।

हज़रते अबुल हसन राज़ी ने अपने वालिद को ख़्वाब में देखा

हज़रते अबुल हसन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि मैं ने अपने वालिद को उन के इन्तिक़ाल के दो साल बा'द ख़्वाब में इस हाल में देखा कि उन के जिस्म पर जहन्नम के क़ीर(1) का लिबास था। मैं ने पूछा : अब्बा जान ! येह क्या हुवा ? मैं आप को जहन्नमियों के लिबास में देख रहा हूं ! मेरे वालिद ने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्द ! मुझे मेरा नफ़्स जहन्नम में ले गया, इस के धोके में कभी न आना !

1....तारकोल

انی ابتلیت باربع ما سلطوا　　الا لشدۃ شقوتی وعنائی

ابلیس والدنیا ونفسی والھوی　　کیف الخلاص وکلھم اعدائی

واری الھوی تدعو الیہ خواطری　　فی ظلمۃ الشھوات والاراء

﴾1﴿.....मैं उन चार दुश्मनों में घिरा हुवा हूं जो मेरी बद बख़्ती और कसरते गुनाह की वज्ह से मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं।

﴾2﴿.....शैत़ान, नफ़्स, दुन्या और ख़्वाहिशात, इन से कैसे रिहाई मिल सकती है ह़ालांकि येह चारों मेरे जानी दुश्मन हैं।

﴾3﴿.....मैं देखता हूं कि ख़ुदबीनी और शहवात की ज़ुल्मत में मेरे दिल को ख़्वाहिशात अपनी त़रफ़ बुलाती रहती हैं।

ह़ज़रते ह़ातिम असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि नफ़्स मेरा अस्त़बल है, इल्म मेरा हथयार है, नाउम्मीदी मेरा गुनाह है, शैत़ान मेरा दुश्मन है और मैं नफ़्स के साथ फ़रेब करने वाला हूं। (इस को फ़रेब में मुब्तला करता हूं)

आ़रिफ़ाना नुक्ता

एक आ़रिफ़ बिल्लाह का क़ौल है कि जिहाद की तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿.....कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद और येह जिहादे ज़ाहिरी है, फ़रमाने इलाही है :

يُجَاهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ (1)

﴾2﴿.....झूटे लोगों के साथ इल्म और दलाइल से जिहाद, फ़रमाने इलाही है :

وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ؕ (2)

﴾3﴿.....बुराइयों की त़रफ़ ले जाने वाले सरकश नफ़्स से जिहाद, फ़रमाने इलाही है :

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (3)

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे। (پ٦،المائدۃ:٥٤)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन से इस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो। (پ١٤،النحل:١٢٥)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे। (پ٢١،العنکبوت:٦٩)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी

और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : اَفْضَلُ الْجِهَادِ جِهَادُ النَّفْسِ.[1] नफ़्स के साथ जिहाद बेहतरीन जिहाद है। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِم जब जिहाद से वापस आते तो कहते : हम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की त़रफ़ लौट आए हैं और सहाबा ने नफ़्स, शैत़ान और ख़्वाहिशात से जिहाद को कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करने से इस लिये अक्बर और अ़ज़ीम कहा कि नफ़्स से जिहाद हमेशा जारी रहता है और कुफ़्फ़ार के साथ कभी कभी होता है।

दूसरी वज्ह येह है कि कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद में ग़ाज़ी अपने दुश्मन को सामने देखता रहता है मगर शैत़ान नज़र नहीं आता है और दिखाई देने वाले दुश्मन से लड़ाई ब निस्बत छुप कर वार करने वाले दुश्मन के आसान होती है।

एक वज्ह और भी है कि काफ़िर के साथ ग़ाज़ी की हमदर्दियां क़त़्ई नहीं होती जब कि शैत़ान के साथ जिहाद करने में नफ़्स और ख़्वाहिशात शैत़ान की ह़ामी कुव्वतों में शुमार होते हैं इस लिये येह मुक़ाबला सख़्त होता है।

एक बात और भी है कि अगर ग़ाज़ी काफ़िर को क़त्ल कर दे तो माले ग़नीमत और फ़त्ह़ ह़ासिल करता है और अगर शहीद हो जाए तो जन्नत का मुस्तह़िक़ बन जाता है मगर इस जिहादे अक्बर में वोह शैत़ान के क़त्ल पर क़ादिर नहीं और अगर उसे शैत़ान क़त्ल कर दे या'नी राहे रास्त से भटका दे तो बन्दा अ़ज़ाबे इलाही का मुस्तह़िक़ बन जाता है।

इसी लिये कहा गया है कि जंग के दिन जिस का घोड़ा भाग पड़े वोह काफ़िरों के हाथ आ जाता है मगर जिस का ईमान भाग जाए वोह ग़ज़बे इलाही में फंस जाता है और जो काफ़िरों के हाथ फंस जाता है उस के हाथों और पाउं में हतकड़ियां और बेड़ियां नहीं डाली जातीं, उसे भूका, प्यासा और नंगा नहीं किया जाता मगर जो ग़ज़बे इलाही का मुस्तह़िक़ हो जाए उस का मुंह काला किया जाता है, उस की मश्कें कस कर ज़न्जीरें डाल दी जाती हैं। उस के पैरों में आग की बेड़ियां डाली जाती हैं। उस का खाना, पीना और लिबास सब जहन्नम की आग से तय्यार होता है।

---

1 ......كتاب الكسب للشيبانى،ص١٨٤ و كنز العمال،كتاب الجهاد، قسم الاقوال، الباب السادس فى احكام القتلى...الخ، ١٨٤/٢، الجزء الرابع، الحديث ١١٢٥٨

बाब 6

ग़फ़्लत

ग़फ़्लत से शर्मिन्दगी बढ़ती है और ने'मत ज़ाइल होती है, ख़िदमत का जज़्बा मांद पड़ जाता है, ह़सद ज़ियादा होता है और मलामत व पशेमानी की फ़िरावानी होती है।

सब से बड़ी ह़सरत

एक नेक आदमी ने अपने उस्ताद को ख़्वाब में देखा और पूछा : आप के नज़्दीक सब से बड़ी ह़सरत कौन सी है ? उस्ताद ने जवाब दिया ग़फ़्लत की ह़सरत सब से बड़ी है।

रिवायत है कि किसी शख़्स ने ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देखा और सुवाल किया कि **अल्लाह** ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? तो उन्हों ने जवाब दिया कि **अल्लाह** ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया और फ़रमाया : ऐ झूटे दा'वेदार ! तू ने मेरी मह़ब्बत का दा'वा किया और फिर मुझ से ग़ाफ़िल रहा। (शे'र)

انت فی غفلة وقلبک ساهی ذهب العمر والذنوب کماهی

....तू ग़फ़्लत में मुब्तला है और तेरा दिल भूलने वाला है, उम्र ख़त्म हो गई और गुनाह वैसे के वैसे ही मौजूद हैं।

ह़िकायत

एक सालेह़ आदमी ने अपने बाप को ख़्वाब में देख कर पूछा : ऐ अब्बा जान ! आप कैसे हैं और क्या ह़ाल है ? बाप ने जवाब दिया : हम ने ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ारी और ग़फ़्लत ही में मर गए।

मौत के पयाम्बर

'**ज़हरुर्रियाज़**' में है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का मलकुल मौत से भाईचारा था, एक दिन मलकुल मौत ह़ाज़िर हुवे तो ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा तुम मुलाक़ात के लिये आए हो या रूह़ क़ब्ज़ करने को ? इज़्राईल ने कहा सिर्फ़ मुलाक़ात के लिये आया हूं। आप ने फ़रमाया : मुझे एक बात कहनी है। मलकुल मौत बोले : कहिये कौन सी बात है ? ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : जब मेरी मौत क़रीब आ जाए और तुम रूह़ क़ब्ज़ करने को आने वाले हो तो मुझे पहले से आगाह कर देना। मलकुल मौत ने कहा : बेहतर ! मैं अपनी आमद से पहले आप के

पास दो तीन क़ासिद भेजूंगा। जब ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का आख़िरी वक़्त आया और मलकुल मौत रूह़ क़ब्ज़ करने को पहुंचे तो आप ने कहा : तुम ने तो वा'दा किया था कि अपनी आमद से पहले मेरी त़रफ़ क़ासिद भेजोगे। इ़ज़राईल ने कहा : मैं ने ऐसा ही किया था, पहले तो आप के सियाह बाल सफ़ेद हुवे, येह पहला क़ासिद था, फिर बदन की चुस्ती व तवानाई ख़त्म हुई, येह दूसरा क़ासिद था और बा'द में आप का बदन झुक गया येह तीसरा क़ासिद था। ऐ या'क़ूब ! (عَلَيْهِ السَّلَام) हर इन्सान के पास मेरे येही तीन क़ासिद आते हैं। (शे'र)

مضی الدھروالایام والذنب حاصل   وجاء رسول الموت والقلب غافل

نعیمک فی الدنیا غرور وحسرۃ   و عیشک فی الدنیا محال وباطل

《1》.....ज़माना गुज़र गया और गुनाहों को छोड़ गया, मौत का क़ासिद आ पहुंचा और दिल (ख़ुदा से) ग़ाफ़िल ही रहा।

《2》...तेरी दुन्यावी ने'मतें धोका और फ़रेब हैं और दुन्या में तेरा हमेशा रहना मुह़ाल और किज़्ब मह़ज़ है।

शैख़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मैं एक ऐसे बीमार मर्दे सालेह़ की इ़यादत को गया जिन का शुमार मशाइख़े किबार में होता था, मैं ने उन के गिर्द उन के शागिर्दों को बैठे हुवे देखा, शैख़ अबू अ़ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह बुज़ुर्ग रो रहे थे, मैं ने कहा : ऐ शैख़ ! क्या आप दुन्या पर रो रहे हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं, मैं अपनी नमाज़ों के क़ज़ा होने पर रो रहा हूं, मैं ने कहा : आप तो इ़बादत गुज़ार शख़्स थे फिर नमाज़ें किस त़रह़ क़ज़ा हुईं ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने हर सजदा ग़फ़्लत में किया और हर सजदे से ग़फ़्लत में सर उठाया और अब ग़फ़्लत की ह़ालत में मर रहा हूं फिर एक आह भरी और येह अश्आ़र पढ़े :

تفکرت فی حشری ویوم قیامتی   واصباح خدی فی المقابر ثاویا

فریدا وحیدا بعد عز ورفعۃ   رھینا بمجرمی والتراب وسادیا

تفکرت فی طول الحساب وعرضہ   وذل مقامی حین اعطی کتابیا

لکن رجائی فیک ربی وخالقی   بانک تغفر یاالھی خطائیا

《1》.....मैं ने अपने ह़श्र, क़ियामत के दिन और क़ब्र में रहने के बारे में सोचा।

《2》.....जो इ़ज़्ज़तो वक़ार वाले वुजूद के साथ मिट्टी का रहीन होगा और मिट्टी ही उस का तक्या होगा।

《3》.....मैं ने यौमे ह़िसाब की त़वालत के बारे में सोचा और उस वक़्त की रुस्वाई का ख़याल किया जब नामए आ'माल मुझे दिया जाएगा।

﴿4﴾.....मगर ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! मेरी उम्मीदें तेरी रह़मत के साथ हैं, तू ही मेरा ख़ालिक़ और मेरे गुनाहों को बख़्शने वाला है।

मह़्ज़ दा'वा बेकार है

'**उ़यूनुल अख़्बार**' में है ह़ज़रते शफ़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोग तीन बातें मह़्ज़ ज़बानी करते हैं मगर अ़मल इस के ख़िलाफ़ करते हैं :

एक येह कि वोह कहते हैं कि हम **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे हैं लेकिन काम ग़ुलामों जैसे नहीं करते बल्कि आज़ादों की त़रह़ अपनी मरज़ी पर चलते हैं।

दूसरे : येह कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ही हमें रिज़्क़ देता है लेकिन उन के दिल दुन्या और मताए़ दुन्या जम्अ़ किये बिग़ैर मुत़मइन नहीं होते और येह उन के इक़रार के सरासर ख़िलाफ़ है।

तीसरे : कहते हैं कि आख़िर हमें मर जाना है मगर काम ऐसे करते हैं जैसे उन्हें कभी मरना ही नहीं।

ऐ मुख़ात़ब ! ज़रा सोच तो सही ! **अल्लाह** के सामने तू कौन सा मुंह ले कर जाएगा और कौन सी ज़बान से जवाब देगा ? जब वोह तुझ से हर छोटी बड़ी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करेगा। इन सुवालात के लिये अभी से अच्छा जवाब तलाश कर ले (ताकि उस वक़्त शर्मिन्दगी न उठाना पड़े)। फ़रमाने इलाही है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۸ [1]

*और **अल्लाह** से डरो बेशक तुम जो कुछ करते हो **अल्लाह** उस से आगाह है और ख़बर रखता है।*

फिर **अल्लाह** ने मोमिनों को समझाया कि वोह उस के अह़कामात को न छोड़ें और हर ह़ालत में उस की वह़दानिय्यत का इक़रार करते रहें।

इत़ाअ़ते इलाही का समरा

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि अ़र्शे इलाही के पाए पर तह़रीर है कि जो मेरी इत़ाअ़त करेगा मैं उस की बात मानूंगा, जो मुझ से मह़ब्बत करेगा मैं उसे अपना मह़बूब बनाऊंगा, जो मुझ से मांगेगा मैं उसे अ़त़ा करूंगा और जो बख़्शिश की त़लब करेगा मैं उसे बख़्श दूंगा।[2]

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (پ۲۸، الحشر:۱۸)

2......بستان الواعظین و ریاض السامعین لابن الجوزی، ۱۷ مجلس فی قوله تعالی: ان الله وملائکته...الخ، ص۲۵۶

इस फ़रमाने नबवी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की रोशनी में हर ज़ी होश और दानिशमन्द के लिये ज़रूरी है कि वोह ख़ौफ़ और भरपूर ख़ुलूस के साथ **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करता रहे और राज़ी ब क़ज़ा रहे, उस के नाज़िल कर्दा मसाइब पर सब्र करे, उस की ने'मतों का शुक्र करते हुवे कमो बेश पर क़ानेअ़ हो जाए, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जो मेरी क़ज़ा पर राज़ी, मसाइब पर साबिर नहीं और ने'मतों का शुक्र नहीं अदा करता और कमो बेश पर क़नाअ़त नहीं करता, वोह मेरे सिवा कोई और रब तलाश कर ले।

हज़रते ह़सन बसरी का एक दिल नशीं जवाब

एक शख़्स ने हज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कहा कि तअ़ज्जुब है कि मैं इ़बादत में लुत्फ़ नहीं पाता। आप ने जवाब दिया : शायद तू ने किसी ऐसे शख़्स को देख लिया है जो **अल्लाह** से नहीं डरता। ह़क़्क़े बन्दगी येह है कि **अल्लाह** की रिज़ा के लिये तमाम चीज़ों को छोड़ दिया जाए।

किसी शख़्स ने हज़रते अबी यज़ीद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कहा कि मैं इ़बादत में कैफ़ो सुरूर नहीं पाता ? उन्हों ने जवाब दिया : येह इस लिये है कि तू इ़बादत की बन्दगी करता है, **अल्लाह** की बन्दगी नहीं करता, तू **अल्लाह** की बन्दगी कर फिर देख इ़बादत में कैसा मज़ा आता है।

अल्लाह की इ़बादत या मख़्लूक़ की इ़बादत

एक शख़्स ने नमाज़ शुरूअ़ की, जब [1]"اِيَّاكَ نَعْبُدُ" पढ़ा तो उस के दिल में ख़याल आया कि मैं ख़ालिसतन **अल्लाह** ही की इ़बादत कर रहा हूं। ग़ैब से आवाज़ आई तू ने झूट बोला है तू तो मख़्लूक़ की इ़बादत करता है, तब उस ने मख़्लूक़ से क़त्ए तअ़ल्लुक़ कर लिया और नमाज़ शुरूअ़ की, जब फिर इसी आयत तक पहुंचा तो वोही दिल में गुज़रा, फिर निदा आई तू अपने माल की इ़बादत करता है, उस ने सारा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया और नमाज़ की निय्यत की, जब इसी आयत पर पहुंचा तो फिर ख़याल आया कि मैं ह़क़ीक़तन **अल्लाह** की इ़बादत करने वाला हूं, निदा आई तुम झूटे हो, तुम अपने कपड़ों की इ़बादत करते हो। उस वक़्त उस बन्दए ख़ुदा ने बदन के कपड़ों के इ़लावा सब कपड़े राहे ख़ुदा में लुटा दिये, अब जो नमाज़ में इस आयत पर पहुंचा तो आवाज़ आई कि अब तुम अपने दा'वे में सच्चे हो।[2]

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम तुझी को पूजें। (پ۱،الفاتحة:٤)

2....अ़लाइक़े दुन्या के साथ नमाज़ ख़ालिसतल्लाह ना मुमकिन है।

नसीहत पर गुलाम को आज़ाद कर दिया

'रौनकुल मजालिस' में है कि एक शख़्स की अ़बाएं गुम हो गईं और येह पता नहीं चल रहा था कि उन को कौन ले गया, जब उस शख़्स ने नमाज़ शुरूअ़ की तो उसे याद आ गया जूंही नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा गुलाम को आवाज़ दी कि जाओ फ़ुलां आदमी से अ़बाएं ले आओ। गुलाम ने कहा आप को येह कब याद आया ? उस ने कहा मुझे नमाज़ में याद आया, गुलाम ने फ़ौरन जवाब दिया तब तो आप ने नमाज़ अ़बा के लिये पढ़ी, **अल्लाह** के लिये नहीं। येह बात सुनते ही उस शख़्स ने उस गुलाम को आज़ाद कर दिया।

चुनान्चे, हर ज़ी फ़हम के लिये ज़रूरी है कि वोह दुन्या को तर्क कर दे और **अल्लाह** की इबादत करता रहे, मुस्तक़बिल के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता रहे और अपनी आख़िरत संवारता रहे जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝ (1)

जो शख़्स आख़िरत की खेती की फ़िक्र करता है तो हम उस की खेती ज़ियादा करते हैं और जो शख़्स[2] *दुन्या की खेती का इरादा करता है हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।*

या'नी उस के दिल से आख़िरत की महब्बत निकाल दी जाती है, इसी लिये हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात पर चालीस हज़ार दीनार अ़लानिय्या और चालीस हज़ार दीनार पोशीदा ख़र्च कर दिये थे यहां तक कि इन के पास कुछ भी बाक़ी न रहा।

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अहले बैत दुन्या और इस की ख़्वाहिश से मुकम्मल परहेज़ करते थे इसी लिये हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जहेज़ सिर्फ़ मेढें की एक रंगी हुई खाल और एक चमड़े का तक्या था जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी।

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं। (پ ٢٥،الشورٰی:٢٠)

2 .....आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर सिर्फ़ दुन्या ही दुन्या।

बाब 7

फ़िस्क़, निफ़ाक़ और ख़ुदा फ़रामोशी

एक औ़रत ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के पास ह़ाज़िर हुई और कहने लगी : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, मैं चाहती हूं कि उसे ख़्वाब में देख लूं, कोई ऐसी दुआ़ बतलाइये जिस से मेरी मुराद पूरी हो जाए, आप ने उसे एक दुआ़ सिखलाई, उस औ़रत ने रात में वोह दुआ़ पढ़ी और अपनी बेटी को ख़्वाब में देखा तो उस का ह़ाल येह था कि उस ने जहन्नम के तारकोल का लिबास पहन रखा था, उस के हाथों में ज़न्जीरें और पाउं में बेड़ियां थीं। औ़रत ने दूसरे दिन येह ख़्वाब आप को सुनाया, आप बहुत मग़मूम हुवे। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते ह़सन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस लड़की को जन्नत में देखा, उस के सर पर ताज था, वोह आप से कहने लगी : आप मुझे पहचानते हैं, मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं जो आप के पास आई थी और मेरी तबाह ह़ालत आप को बतलाई थी। आप ने उस से पूछा : तेरी ह़ालत में येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? लड़की ने कहा : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक सालेह़ शख़्स गुज़रा और उस ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद पढ़ने की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने हम पांच सो क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया।

नुक्ता : ग़ौर का मक़ाम है कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक शख़्स के दुरूद भेजने की बरकत से इतने बहुत से लोग बख़्शे गए, क्या वोह शख़्स जो पचास साल से हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज रहा हो, क़ियामत में उस की मग़फ़िरत नहीं होगी !

फ़रमाने इलाही है : وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ (1) गुनाह करने में तुम मुनाफ़िक़ों की त़रह़ न बन जाओ जिन्हों ने **अल्लाह** के अह़कामात को छोड़ दिया और उस के ख़िलाफ़ चलने लगे। शहवाते दुन्या से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने लगे और फ़रेब कारी की त़रफ़ माइल हो गए।

मोमिन और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मोमिन और मुनाफ़िक़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया। आप ने फ़रमाया कि मोमिन की हिम्मत नमाज़ और रोज़े की त़रफ़ रहती है और मुनाफ़िक़ की हिम्मत जानवरों की त़रह़ खाने पीने की त़रफ़ रहती है और वोह नमाज़ रोज़े की त़रफ़ मुतवज्जेह ही नहीं

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन जैसे न हो जो **अल्लाह** को भूल बैठे। (پ۲۸، الحشر:۱۹)

होता। मोमिन अल्लाह की राह में ख़र्च करने और बख़्शिश त़लब करने में मश्ग़ूल रहता है जब कि मुनाफ़िक़ ह़िर्स व हवस में मसरूफ़ रहता है, मोमिन अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी से उम्मीद नहीं लगाता और मुनाफ़िक़ अल्लाह तआ़ला के सिवा तमाम[1] मख़्लूक़ की त़रफ़ रुजूअ़ होता है, मोमिन दीन को माल से मुक़द्दम समझता है और मुनाफ़िक़ माल को दीन पर तरजीह़ देता है, मोमिन अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और मुनाफ़िक़ अल्लाह के सिवा हर चीज़ से डरता है, मोमिन नेकी करता है और अल्लाह की बारगाह में रोता है, मुनाफ़िक़ गुनाह करता है और ख़ुश होता है, मोमिन ख़ल्वत व तनहाई को पसन्द करता है, मुनाफ़िक़ भीड़ भाड़ और मेल जोल को पसन्द करता है, मोमिन बोता है और फ़स्ल की बरबादी से डरता रहता है और मुनाफ़िक़ फ़स्ल उजाड़ देने के बा'द काटने की तमन्ना रखता है। मोमिन दीन की तदबीर के साथ अच्छाइयों का हुक्म देता है, बुराइयों से रोकता है और इस्लाह़ करता है, मुनाफ़िक़ अपनी हैबत और सत़्वत के लिये फ़ितना व फ़साद बरपा करता है और नेकियों से रोकता और बुराइयों का हुक्म देता है।[2]

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

मुनाफ़िक़ मर्द और औ़रतें एक दूसरे में से हैं, नेकी से रोकते और बुराइयों का हुक्म देते हैं और अपने हाथों को बन्द करते हैं, इन्हों ने अल्लाह को भुला दिया और अल्लाह ने इन्हें भुला दिया, बिला शुबा मुनाफ़िक़ फ़ासिक़ हैं, अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतों के लिये और कुफ़्फ़ार के लिये जहन्नम की आग का वा'दा किया है येह इन्हें काफ़ी है और अल्लाह ने इन पर ला'नत की है और इन के लिये हमेशा का अ़ज़ाब है।[3]

एक और जगह इन के बारे में इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया है :

बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में जम्अ़ करने वाला है।[4]

या'नी अगर वोह अपने कुफ़्र और निफ़ाक़ पर मर जाएं।

1.....ख़ुदा को छोड़ कर उस के ग़ैर से रुजूअ़ करता है (मोमिन अल्लाह वालों से इस मा'ना कर के रुजूअ़ होता है जिस त़रह़ खम्बों से बिजली की रोशनी ह़ासिल करना कि रोशनी का तअ़ल्लुक़ बिजली घर से ही है, इस के ही फ़ैज़ को आ़म करने के वासित़े खम्बे नस्ब किये गए हैं।)

2.....

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें एक थैली के चट्टे बट्टे (एक जैसे) हैं बुराई का हुक्म दें और भलाई से मन्अ़ करें और अपनी मुठ्ठी बन्द रखें (ख़र्च न करें) वोह अल्लाह को छोड़ बैठे तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया। बेशक मुनाफ़िक़ वोही पक्के बे हुक्म (नाफ़रमान) हैं अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वा'दा दिया है जिस में हमेशा रहेंगे वोह उन्हें बस (काफ़ी) है और अल्लाह की उन पर ला'नत है और उन के लिये क़ाइम रहने वाला अ़ज़ाब है। (پ۱۰،التوبہ:٦٧،٦٨)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा। (پ٥،النساء:١٤٠)

अल्लाह तआ़ला ने इस इरशाद में इब्तिदाअन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र किया है इस लिये कि कुफ़्फ़ार से भी ज़ियादा बद बख़्त होते हैं और अल्लाह ने इन सब का ठिकाना जहन्नम क़रार दिया है। फ़रमाने इलाही है : बेशक मुनाफ़िक़ जहन्नम के सब से निचले त़बक़े में होंगे और आप किसी को उन का मददगार नहीं पाएंगे।[1]

लफ़्ज़े मुनाफ़िक़ लुग़त में نَافِقَاءُ الْيَرْبُوْع से मुश्तक़ है, कहते हैं कि जंगली चूहे (यरबूअ़) के बिल के दो सूराख़ होते हैं। एक दाख़िल होने के लिये और दूसरा सूराख़ निकलने के लिये होता है एक सूराख़ से ज़ाहिर होता है और दूसरे से भाग निकलता है, मुनाफ़िक़ को भी इस लिये मुनाफ़िक़ कहते हैं कि वोह ब ज़ाहिर तो मुसलमानों की शक्ल में होता है मगर कुफ़्र की त़रफ़ निकल जाता है।

ह़दीस शरीफ़ में है : मुनाफ़िक़ की मिसाल ऐसी नौवारिद बकरी की त़रह़ है जो दो रेवड़ों के दरमियान हो, कभी वोह इस रेवड़ की त़रफ़ भागती है और कभी उस रेवड़ की त़रफ़ दौड़ती है।[2]

या'नी किसी एक रेवड़ में नहीं ठहरती इसी त़रह़ मुनाफ़िक़ भी न तो कुल्लिय्यतन मुसलमानों में शामिल होता है और न ही काफ़िरों में।

जहन्नम के सात दरवाज़े

अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम को पैदा किया और उस के सात दरवाज़े बनाए जैसा कि फ़रमाने इलाही है : لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ[3]

उस के दरवाज़े लोहे के होंगे जिन पर ला'नत की तहें जमी हैं, उस का ज़ाहिर तांबे का और बात़िन सीसे का है, उस की गहराई में अ़ज़ाब और उस की ऊंचाई में अल्लाह की नाराज़ी है, उस की ज़मीन तांबे, शीशे, लोहे और सीसे की है, उस में रहने वालों के लिये ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं आग ही आग है, उस के त़बक़ात ऊपर से नीचे की त़रफ़ हैं और सब से निचला त़बक़ा मुनाफ़िक़ों के लिये है।

ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिब्रील से जहन्नम की ता'रीफ़ और गर्मी के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया : जिब्रील ने जवाब दिया : अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बक़े में हैं और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (پ٥، النساء:١٤٥)

2.....مسلم، کتاب صفات المنافقین واحکامھم، ص ١٤٩٨، الحدیث١٧-(٢٧٨٤)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस के सात दरवाज़े हैं।

को पैदा किया और उसे हज़ार साल तक दहकाया तो वोह सुर्ख़ हो गया, फिर हज़ार साल दहकाया तो सफ़ेद हो गया, जब मज़ीद एक हज़ार साल तक दहकाया गया तो वोह बिल्कुल सियाह व तारीक हो गया। उस रब की क़सम जिस ने आप को नबिय्ये बरहक़ बना कर भेजा है अगर जहन्नमियों का एक कपड़ा भी दुन्या में ज़ाहिर हो जाए तो तमाम लोग फ़ना हो जाएं, अगर जहन्नम के पानी का एक डोल दुन्या के पानियों में मिला दिया जाए तो जो भी चखे, वोह मर जाए और जहन्नम की ज़न्जीरों का एक टुकड़ा जिस का ज़िक्र अल्लाह तआला ने यूं फ़रमाया है : فِىۡ سِلۡسِلَةٍ ذَرۡعُهَا سَبۡعُوۡنَ ذِرَاعًا [1] हर टुकड़े की लम्बाई मशरिक़ो मग़रिब के तूल के बराबर है, अगर उसे दुन्या के किसी बड़े से बड़े पहाड़ पर रख दिया जाए तो वोह पिघल जाएगा और अगर किसी जहन्नमी को जहन्नम से निकाल कर दुन्या में लाया जाए तो इस की बदबू से तमाम मख़्लूक़ फ़ना हो जाए।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रील से कहा : येह बतलाओ कि जहन्नम के दरवाज़े क्या हमारे दरवाज़ों जैसे हैं? जिब्रील ने अ़र्ज़ की : नहीं हुज़ूर! वोह मुख़्तलिफ़ तृबक़ात में बने हुवे हैं, कुछ ऊपर और कुछ नीचे हैं और एक दरवाज़े का दरमियानी फ़ासिला सत्तर साल का है, हर दरवाज़ा पहले दरवाज़े से सत्तर गुना ज़ियादा गर्म है। आप ने उन दरवाज़ों में रहने वालों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो जिब्रील ने जवाब दिया : सब से निचले का नाम 'हाविया' है और उस में मुनाफ़िक़ीन हैं।

जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ فِى الدَّرۡكِ الۡاَسۡفَلِ مِنَ النَّارِ‌ۚ [3]

दूसरे तृबक़े का नाम 'जहीम' है और उस में मुशरिक हैं। तीसरे का नाम 'सक़र' है और उस में साबी हैं चौथे का नाम 'लज़ा' है और उस में इब्लीस और उस के पैरूकार मजूसी हैं, पांचवें का नाम 'हुतमह' है और उस में यहूद हैं, छटे का नाम 'सईर' है और उस में नसारा हैं, फिर जिब्रील ख़ामोश हो गए। आप ने पूछा : ऐ जिब्रील! क्या तुम मुझे सातवें तृबक़े में रहने वालों के मुतअ़ल्लिक़ नहीं बताओगे? जिब्रील ने अ़र्ज़ की हुज़ूर मत पूछिये, आप ने फ़रमाया बतलाओ तो

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है। (پ۲۹،الحآقّۃ:۳۲)

2 ......شعب الایمان ، التاسع والاربعون من شعب الایمان ، باب فی طاعة...الخ، ۳۳/۶ ، الحدیث ۷۴۲۰ بالتقدیم و التاخیر

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे तृबक़े में हैं। (پ۵،النساء:۱۴۵)

सही, तब जिब्रील ने कहा : इस तबक़े में आप के वोह उम्मती हैं जो गुनाहे कबीरा के मुर्तकिब हुवे और बिग़ैर तौबा किये मर गए।[1]

रिवायत

जब येह आयत [2] وَ اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا नाज़िल हुई हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के बारे में इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा हुवे और बहुत ज़ियादा अश्कबार हुवे।[3] लिहाज़ा जो शख़्स भी **अल्लाह** की सख़्त गिरिफ़्त को और उस के क़हर को जानता है उसे चाहिये कि बहुत डरता रहे और नफ़्स की लग़्ज़िशों पर रोता रहे क़ब्ल इस के कि उन मसाइब को झेले, उस दहशत नाक मक़ाम को देखे, उस की पर्दा दरी की जाए, उसे मुन्तक़िमे हक़ीक़ी के सामने पेश किया जाए और उसे जहन्नम में जाने का हुक्म हो।

मरने के बा'द अफ़्सोस

कितने ऐसे बूढ़े हैं जो जहन्नम में फ़रयादें करते हैं। कितने जवान हैं जो जवानी के ज़ियाअ़ को याद कर के आहो बुका करते हैं। कितनी ऐसी औ़रतें हैं जो गुज़श्ता ज़िन्दगी की बद आ'मालियों को याद कर के चिल्लाती हैं दर आं हाल येह कि[4], उन के अजसाम और चेहरे सियाह हो चुके हैं, उन की कमरें टूट चुकी हैं, न उन के बड़ों की इ़ज़्ज़त की जाती है और न ही छोटों पर रह़्म किया जाता है और न उन की औ़रतों की पर्दापोशी की जाती है।

ऐ **अल्लाह** ! हमें आग, आग के अ़ज़ाब और हर उस काम से बचा जो हमें आग की त़रफ़ ले जाए और अपनी रह़मत के तुफ़ैल हमें नेकों के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमा। ऐ अ़ज़ीज़ ! ऐ ग़फ़्फ़ार ! ऐ **अल्लाह** ! हमारे ऐ़बों को ढांप ले, हमें ख़ौफ़ से नजात दे, हमें लग़्ज़िशों से बचा और अपने सामने शर्मिन्दगी से मह़फ़ूज़ रख ! يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

1 ......المعجم الاوسط، ٧٨/٢، الحديث ٢٥٨٣ و تاريخ مدينه دمشق، ٢١٧/٣٥ ماخوذًا

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो। (پ١٦، مريم:٧١)

3 .....

4 .....दर आं ह़ाल येह कि, या'नी उन की ह़ालत येह है कि

बाब 8

तौबा

गुनाहों से तौबा हर मुसलमान मर्द और औ़रत पर वाजिब है, फ़रमाने इलाही है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا[1] *ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से पुख़्ता तौबा (तौबतन्नसूह़) करो ।*

एक और मक़ाम पर इरशादे इलाही है :

وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ نَسُوا اللّٰهَ[2] *तुम उन लोगों की त़रह़ न हो जाओ जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया ।*

उस की भेजी हुई किताबों को पसे पुश्त डाल दिया, गोया उन्हों ने अपने ह़ाल पर रह़्म नहीं किया और अपने आप को गुनाहों से नहीं बचाया और आख़िरत के लिये कोई नेकी नहीं की । फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात पसन्द करता है अल्लाह तआ़ला उस से मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और जो अल्लाह तआ़ला से मिलना ना पसन्द करता है अल्लाह तआ़ला उस से मिलना ना पसन्द फ़रमाता है ।[3]

फ़रमाने इलाही है :

اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾[4] *येही लोग नाफ़रमान, वा'दा शिकन, रह़मत व बख़्शिश और राहे हिदायत से दूर हैं ।*

फ़ासिक़ की क़िस्में

फ़ासिक़ की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ फ़ासिके काफ़िर ﴾2﴿ फ़ासिके फ़ाजिर ।

फ़ासिके काफ़िर वोह है जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं रखता हिदायत को छोड़ कर गुमराही का त़ालिब होता है । जैसा कि

फ़रमाने इलाही है : فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ[5]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए । (پ ۲۸، التحریم: ۸)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन जैसे न हो जो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) को भूल बैठे । (پ۲۸، الحشر:۱۹)

3 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب من احب لقاء اللّٰہ...الخ، ۴/ ۲۴۹، الحدیث ۶۵۰۸

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही फ़ासिक़ हैं । (پ۲۸، الحشر:۱۹)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अपने रब के हुक्म से निकल गया । (پ۱۵، الکھف: ۵۰)

फ़ासिक़े फ़ाजिर वोह है : जो शराब पीता है, माले ह़राम खाता है, बदकारियां करता है, इबादत को छोड़ कर गुनाहों में ज़िन्दगी बसर करता है मगर अल्लाह तआ़ला को वाहिद मानता है और उस के साथ शरीक नहीं ठहराता। इन दोनों में फ़र्क़ येह है कि फ़ासिक़ काफ़िर की बख़्शिश मौत से पहले पहले कलिमए शहादत और तौबा के बिग़ैर नामुमकिन है और फ़ासिक़ फ़ाजिर की मग़फ़िरत मौत से पहले तौबा और पशेमानी के ज़रीए मुमकिन है, इस लिये कि हर वोह गुनाह जिस का तअ़ल्लुक़ ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या से है उस की मग़फ़िरत मुमकिन है और हर वोह गुनाह जिस की बुन्याद तकब्बुर और ख़ुद बीनी है[1] उस की मग़फ़िरत नामुमकिन है। शैत़ान की ना फ़रमानी की वज्ह भी येही तकब्बुर और ख़ुदबीनी थी।

पस ऐ इन्सान ! तेरे लिये ज़रूरी है कि मरने से पहले अपने गुनाहों से तौबा कर ले शायद कि अल्लाह तआ़ला तेरे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ[2]

अल्लाह वोह है जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और उन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस से कोई गुनाह सरज़द न हुवा हो।[3]

ह़िकायत

एक जवान था वोह जब भी कोई गुनाह करता तो उसे अपने दफ़्तर में लिख लेता था, एक दफ़्आ़ उस ने कोई गुनाह किया, जब लिखने के लिये दफ़्तर खोला तो देखा उस में इस आयत के सिवा कुछ भी नहीं लिखा हुवा था :

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ[4]

अल्लाह तआ़ला उन की बुराइयों को नेकियों में तब्दील करता है।

शिर्क की जगह ईमान, बदकारी की जगह बख़्शिश, गुनाह की जगह इ़स्मत और नेकूकारी लिख दी जाती है।

---

1 .....यहां तकब्बुर से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने से तकब्बुर करना है या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान न लाए और अपने कुफ़्र पर अड़ा रहे। **इ़ल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है। (پ۲۵،الشوری:۲۵)

3 .....ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر التوبة، ٤/٤٩١، الحديث ٤٢٥٠

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा। (پ۱۹،الفرقان:۷۰)

एक जवान की शर्मिन्दगी

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे, आप ने एक जवान को देखा जो कपड़ों के नीचे शराब की बोतल छुपाए चला आ रहा था, आप ने पूछा : ऐ जवान ! इस बोतल में क्या लिये जा रहे हो ? जवान बहुत शर्मिन्दा हुवा कि मैं कैसे कहूं इस बोतल में शराब है ? उस वक़्त उस जवान ने दिल ही दिल में दुआ़ मांगी : ऐ **अल्लाह** ! मुझे हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रू बरू शर्मिन्दगी और रुस्वाई से बचा ! मेरे ऐ़ब को ढांप ले, मैं फिर कभी शराब नहीं पियूंगा। जवान ने हज़रते उ़मर को जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन ! येह सिर्का है, आप ने फ़रमाया : मुझे दिखाओ तो सही ! चुनान्चे, आप ने देखा तो वोह सिर्का था।

ऐ इन्सान ! ज़रा ग़ौर कर, एक बन्दा बन्दे के डर से ख़ुलूसे दिल से ताइब हुवा तो **अल्लाह** ने उस की शराब को सिर्के में तब्दील कर दिया, इसी त़रह़ अगर कोई गुनहगार अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर तौबा कर लेता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की ना फ़रमानियों की शराब को फ़रमां बरदारी के सिर्के में तब्दील कर देता है (जैसा कि उस जवान के मुआ़मले में हुवा जो अपनी बुराइयां अपने दफ़्तर में लिख लेता था)।

हि़कायत

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े इ़शा पढ़ कर बाहर निकला, रास्ते में मुझे एक औ़रत मिली, उस ने मुझ से पूछा : मैं ने एक गुनाह कर लिया है, क्या मैं तौबा कर सकती हूं ? मैं ने पूछा तू ने कौन सा गुनाह किया है ? औ़रत बोली : मैं ने ज़िना किया था और जब उस ज़िना से बच्चा पैदा हुवा तो मैं ने उसे क़त्ल कर दिया। मैं ने कहा : तू तबाह हो गई, तेरे लिये कोई तौबा नहीं है। वोह औ़रत बे होश हो कर गिर पड़ी और मैं अपनी राह चल दिया। तब मेरे दिल में ख़याल आया, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछे बिग़ैर येह बात क्यूं कह दी। चुनान्चे, मैं आप की ख़िदमत में आया और सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने बहुत बुरा किया, क्या तुम ने येह आयत नहीं पढ़ी !

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـہًا اٰخَرَ (1) *और वोह लोग जो नहीं पुकारते **अल्लाह** के साथ किसी और ख़ुदा को !*....इलख़्

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : जूंही मैं ने येह बात सुनी मैं उस औ़रत की तलाश में निकला और हर किसी से पूछने लगा : मुझे उस औ़रत का पता बतलाओ। जिस ने मुझ से मस्अला

1..**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते। (پ۱۹، الفرقان:۶۸)

पूछा था, यहां तक कि बच्चे मुझे पागल समझने लगे, बिल आख़िर मैं ने उस औ़रत को तलाश कर ही लिया और उसे येह आयत सुनाई जब मैं فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ[1] तक सुना चुका तो वोह ख़ुशी से दीवानी हो गई और कहने लगी : मैं ने अपना बाग़ अल्लाह और रसूल के लिये बख़्श दिया ।[2]

उ़त्बा का अ़जीब वाक़िआ़

उ़तबतुल ग़ुलाम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) जिस की फ़ितना अंगेज़ी और शराब नोशी की दास्तानें मशहूर थीं, एक दिन ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस में आया, उस वक़्त ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه आयत[3] اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ की तफ़्सीर बयान कर रहे थे, या'नी क्या मोमिनों के लिये वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह से डरें ।

आप ने इस आयत की ऐसी तशरीह़ की, कि लोग रोने लगे, एक जवान मजलिस में खड़ा हो गया और कहने लगा ऐ बन्दए मोमिन ! क्या मुझ जैसा फ़ासिक़ो फ़ाजिर भी अगर तौबा कर ले तो अल्लाह तआ़ला क़बूल फ़रमाएगा ? आप ने फ़रमाया : हां, अल्लाह तआ़ला तेरे गुनाहों को मुआ़फ़ कर देगा, जब उ़त्बतुल ग़ुलाम ने येह बात सुनी तो उस का चेहरा ज़र्द पड़ गया और कांपते हुवे चीख़ मार कर बेहोश हो गया, जब उसे होश आया तो ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस के क़रीब आ कर येह शे'र पढ़े :

ایا شابا لرب العرش عاصی اتدری ماجزاء ذوی المعاصی
سعیر للعصاة لها زفیر وغیظ یوم یؤخذ بالنواصی
فان تصبر علی النیران فاعصه والا کن عن العصیان قاصی
وفیما قد کسبت من الخطایا رهنت النفس فاجهد فی الخلاصی

1.....وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ से ले कर یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ तक तीनों आयात का तर्जमा यूं है : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की अल्लाह ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा । (پ۱۹،الفرقان:۷۰)

2.....کتاب التوابین للمقدسی، ص۱۰٤ و بحر العلوم لابی اللیث السمرقندی، ۲/٥٤٦

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिये । (پ۲۷،الحدید:۱٦)

﴾1﴿.....ऐ अल्लाह के नाफ़रमान जवान ! जानता है ना फ़रमानी की सज़ा क्या है ?
﴾2﴿...ना फ़रमानों के लिये पुर शोर जहन्नम है और ह़श्र के दिन अल्लाह तआ़ला की सख़्त नाराज़ी है।
﴾3﴿...अगर तू नारे जहन्नम पर राज़ी है तो बेशक गुनाह करता रह, वरना गुनाहों से रुक जा।
﴾4﴿...तू ने अपने गुनाहों के बदले अपनी जान को रह्न रख दिया है, उस को छुड़ाने की कोशिश कर।

उ़त्बा ने फिर चीख़ मारी और बेहोश हो गया, जब होश आया तो कहने लगा : ऐ शैख़ ! क्या मुझ जैसे बद बख़्त की रब्बे रह़ीम तौबा क़बूल कर लेगा ? आप ने कहा : दरगुज़र करने वाला रब ज़ालिम बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है, उस वक़्त उ़त्बा ने सर उठा कर रब से तीन दुआ़एं कीं :

﴾1﴿......ऐ अल्लाह ! अगर तू ने मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ और मेरी तौबा को क़बूल कर लिया है तो ऐसे ह़ाफ़िज़े और अ़क़्ल से मेरी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमा कि मैं कुरआने मजीद और उ़लूमे दीन में से जो कुछ भी सुनूं, उसे कभी फ़रामोश न करूं।
﴾2﴿......ऐ अल्लाह ! मुझे ऐसी आवाज़ इनायत फ़रमा कि मेरी क़िराअत को सुन कर सख़्त से सख़्त दिल भी मोम हो जाए।
﴾3﴿......ऐ अल्लाह ! मुझे रिज़्के ह़लाल अ़त़ा फ़रमा और ऐसे त़रीक़े से दे जिस का मैं तसव्वुर भी न कर सकूं।

अल्लाह ने उ़त्बा की तीनों दुआ़एं क़बूल कर लीं, उस का ह़ाफ़िज़ा और फ़हम व फ़िरासत बढ़ गई और जब वोह कुरआन की तिलावत करता तो हर सुनने वाला गुनाहों से ताइब हो जाता था और उस के घर में हर रोज़ एक प्याला शोरबे का और दो रोटियां (रिज़्के ह़लाल से) पहुंच जातीं, और किसी को मा'लूम नहीं था कि येह कौन रख जाता है और उ़त्बा गुलाम की सारी ज़िन्दगी ऐसा ही होता रहा और येह उस शख़्स का ह़ाल है जिस ने अल्लाह तआ़ला से लौ लगाई। اِنَّ اللّٰہَ لَا یُضِیۡعُ اَجۡرَ مَنۡ اَحۡسَنَ عَمَلًا बेशक अल्लाह तआ़ला नेक अ़मल करने वालों के अज्र को ज़ाएअ़ नहीं करता।

सुवाल : किसी आ़लिम से पूछा गया कि जब बन्दा तौबा करता है तो क्या उसे अपनी तौबा के मक़्बूल या ग़ैरे मक़्बूल होने का पता चल जाता है ?

जवाब : आ़लिम ने जवाब दिया : ऐसी मुकम्मल बात तो नहीं अलबत्ता कुछ निशानियां हैं जिन से तौबा की क़बूलिय्यत का पता चलता है, वोह अपने आप को गुनाहों से पाक रखता है, उस के दिल से ख़ुशी ग़ाइब हो जाती है, हर दम अल्लाह को मौजूद समझने लगता है, नेकों के क़रीब और बुरों से दूर रहने लगता है, दुन्या की थोड़ी सी ने'मत को अ़ज़ीम और आख़िरत के लिये कसीर नेकियों को भी क़लील समझता है, अपने दिल को हर वक़्त फ़राइज़े ख़ुदावन्दी में मस्रूफ़ और अपनी ज़बान को बन्द रखता है, हमेशा अपने गुज़श्ता गुनाहों पर ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है और ग़म और परेशानी को अपने लिये लाज़िम कर लेता है।

बाब 9

महब्बत

कहते हैं कि एक आदमी ने जंगल में एक सूरते बद को देख कर पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : मैं तेरा बुरा अ़मल हूं, उस आदमी ने पूछा : तुझ से नजात की भी कोई सूरत है ? उस ने जवाब दिया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना। जैसा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : मेरे ऊपर दुरूद पुल सिरात़ के लिये नूर है, जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन अस्सी मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के अस्सी साल के गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है।(1)

दुरूद न भेजने वाले से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ए'राज़

एक आदमी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजता था, एक रात उस ने ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, आप ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, उस आदमी ने अ़र्ज़ किया कि क्या हुज़ूर मुझ से नाराज़ हैं इस लिये तवज्जोह नहीं फ़रमाई ? आप ने जवाब दिया : नहीं ! मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं हूं, अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर मुझे कैसे नहीं पहचानते ह़ालांकि उ़लमा कहते हैं कि आप अपने उम्मतियों को उन की मां से भी ज़ियादा पहचानते हैं। आप ने फ़रमाया : उ़लमा ने सच कहा है लेकिन तू ने मुझे दुरुद भेज कर अपनी याद नहीं दिलाई, मेरा कोई उम्मती मुझ पर जितना दुरूद भेजता है मैं उसे उतना ही पहचानता हूं, उस शख़्स के दिल में येह बात बैठ गई और उस ने रोज़ाना एक सो मरतबा दुरूद पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, कुछ मुद्दत बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से फिर ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा, आप ने फ़रमाया : "मैं अब तुझे पहचानता हूं और मैं तेरी शफ़ाअ़त करूंगा।" इस लिये कि वोह रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुह़िब्ब बन गया था। फ़रमाने इलाही है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ......الآية (2)

*ऐ रसूल इन से कह दीजिये कि अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी (इत़ाअ़त) करो **अल्लाह** तआ़ला तुम को दोस्त रखेगा।*

---

1 ......الجامع الصغير، ص ٣٢٠، الحديث ٥١٩١

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ٣،اٰل عمران: ٣١)

इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने का'ब बिन अशरफ़ और उस के साथियों को दा'वते इस्लाम दी तो वोह कहने लगे : हम तो **अल्लाह** तआ़ला के बेटों की त़रह़ हैं और उस से बहुत मह़ब्बत करते हैं। तब **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : "उन से कह दीजिये अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला से मह़ब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबाअ़ करो।" मैं **अल्लाह** का रसूल हूं मैं तुम्हारी त़रफ़ उस का पैग़ाम पहुंचाने वाला और तुम्हारे लिये **अल्लाह** की हु़ज्जत बन कर आया हूं मेरी इत्तिबाअ़ करोगे तो "**अल्लाह** तुम्हें मह़बूब बनाएगा और तुम्हारे गुनाहों को मुआ़फ़ कर देगा वोह ग़फ़ूर और रह़ीम है।"

मोमिनों की मह़ब्बत **अल्लाह** के साथ येह है कि वोह उस के अह़काम पर अ़मल करें, उस की इ़बादत करें और उस की रिज़ा के त़लबगार रहें और **अल्लाह** तआ़ला की मोमिनों के साथ मह़ब्बत येह है कि वोह उन की ता'रीफ़ करे उन्हें सवाब अ़त़ा फ़रमाए, उन के गुनाहों को मुआ़फ़ करे और उन्हें अपनी रह़मत से हु़स्ने तौफ़ीक़, इ़फ़्फ़त व इ़स्मत अ़त़ा फ़रमाए।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इह़याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं : जो शख़्स चार चीज़ों के बिग़ैर चार चीज़ों का दा'वा करता है वोह झूटा है :

﴾1﴿......जो जन्नत की मह़ब्बत का दा'वा करता है मगर नेकी नहीं करता।

﴾2﴿......जो शख़्स नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का दा'वा करता है मगर उ़लमा और सुलह़ा को दोस्त नहीं रखता।

﴾3﴿......जो आग से डरने का दा'वा करता है मगर गुनाह नहीं छोड़ता।

﴾4﴿......जो शख़्स **अल्लाह** की मह़ब्बत का दा'वा करता है मगर तकालीफ़ की शिकायत करता है जैसा कि

ह़ज़रते राबिआ़ फ़रमाती हैं :

تعصی الالہ وانت تظھر حبہ   ھذا لعمری فی القیاس بدیع

لو کان حبک صادقا لاطعتہ   ان المحب لمن یحب مطیع

﴾1﴿......तू **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी करता है ह़ालांकि बज़ाहिर तू मह़ब्बते ख़ुदावन्दी का दा'वेदार है, मुझे ज़िन्दगी की क़सम ! येह अनोखी बात है।

﴾2﴿......अगर तेरी मह़ब्बत सच्ची होती तो तू उस की इत़ाअ़त करता क्यूंकि मुह़िब्ब जिस से मह़ब्बत करता है उस की इत़ाअ़त करता है।

(और मह़ब्बत की अ़लामत मह़बूब की मुवाफ़क़त करने और उस के ख़िलाफ़ न करने में है)

हज़्रते शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से महब्बत का दा'वा

एक जमाअ़त हज़्रते शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आई और वोह लोग कहने लगे : हम तुम से महब्बत करते हैं, आप ने उन्हें देख कर पथ्थर मारे तो वोह लोग भाग खड़े हुवे, आप ने पूछा : अगर तुम वाक़ेई मुझ से महब्बत करते थे तो मेरी तरफ़ से दी गई इतनी सी तक्लीफ़ पर क्यूं भाग गए हो ? फिर शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : अहले महब्बत ने उल्फ़त का प्याला पिया तो उन पर येह वसीअ़ ज़मीन और शहर तंग हो गए, उन्हों ने **अल्लाह** को ऐसे पहचाना जैसे पहचानने का हक़ है वोह उस की अ़ज़मत में सरगर्दां और उस की कुदरत में हैरान हैं, उन्हों ने महब्बत का जाम पिया और उस की उल्फ़त के समन्दर में डूब गए और उस की बारगाह में मुनाजात से शीरिनी हासिल की, फिर आप ने येह शे'र पढ़ा :

ذکر المحبة یا مولای أسکرنی　　　وهل رأیت محبا غیر سکران

۞......ऐ मौला तेरी महब्बत की याद ने मुझे मदहोश कर दिया, क्या तू ने किसी ऐसे मुहिब्ब को देखा है जो मदहोश न हो ।

कहते हैं कि ऊंट जब मस्त हो जाता है तो चालीस दिन तक घास वग़ैरा नहीं खाता और अगर उस पर पहले से दूगना बोझ लाद दिया जाए तब भी उसे उठा लेता है इस लिये कि जब उस का दिल महबूब की याद में तड़पता हो तो उसे न चारे की ख़्वाहिश होती है न ही वोह भारी बोझ उठाने से घबराता है, जब ऊंट अपने महबूब की याद में अपनी ख़्वाहिशात को छोड़ देता है और भारी बोझ उठा लेता है तो क्या तुम ने भी कभी **अल्लाह** तआ़ला की रज़ाजूई के लिये अपनी नाजाइज़ ख़्वाहिशात को छोड़ा है । कभी खाना पीना बन्द किया है ? कभी अपने वुजूद पर बारे गिरां डाला है ? अगर तुम ने इन मज़्कूरए बाला उमूर में से कोई काम नहीं किया तो तुम्हारा दा'वा झूटा है जो तुम्हें न दुन्या में फ़ाइदा देगा न आख़िरत में, न मख़्लूक़ के नज़्दीक फ़ाइदा मन्द है न ख़ालिक़ के हुज़ूर में ।

हज़्रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ وَجْهَهٗ फ़रमाते हैं : जो जन्नत का उम्मीदवार हुवा उस ने नेकियों में जल्दी की, जो जहन्नम से डरा उस ने ख़ुद को नाजाइज़ ख़्वाहिशात से रोक दिया और जिसे मौत का यक़ीन आ गया उस ने लज़्ज़ाते दुन्या को ख़त्म कर दिया ।

हज़्रते इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से महब्बत के बारे में सुवाल किया गया तो आप ने कहा : महब्बत नाम है इरादों को ख़त्म कर देने, तमाम सिफ़तों और हाजतों को मुर्दा कर देने और अपने वुजूद को इशारात के समन्दर में ग़र्क़ कर देने का ।

बाब 10

इश्क़ो महब्बत

महब्बत की ता'रीफ़

महब्बत नाम है पसन्दीदा चीज़ की त़रफ़ मैलाने त़ब्अ़ का । अगर येह मैलान शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो इसे इश्क़ कहते हैं । इस में ज़ियादती होती रहती है यहां तक कि आ़शिक़ महबूब का बन्दए बे दाम बन जाता है और मालो दौलत उस पर क़ुरबान कर देता है । ज़ुलेख़ा की मिसाल ले लीजिये जिस ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की महब्बत में अपना हुस्न और मालो दौलत क़ुरबान कर दिया, ज़ुलैख़ा के पास सत्तर ऊंटों के बोझ के बराबर जवाहिर और मोती थे जो इश्क़े यूसुफ़ में निसार कर दिये, जब भी कोई येह कह देता कि मैं ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देखा है तो वोह उसे बेश क़ीमत हार दे देती यहां तक कि कुछ भी बाक़ी न रहा, उस ने हर चीज़ का नाम यूसुफ़ रख छोड़ा था और फ़र्ते महब्बत में यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के सिवा सब कुछ भूल गई थी, जब आस्मान की त़रफ़ देखती तो उसे हर सितारे में यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का नाम नज़र आता था ।

कहते हैं कि जब ज़ुलैख़ा ईमान लाई और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ौजिय्यत में दाख़िल हुई तो सिवाए इबादतो रियाज़त और तवज्जोह इलल्लाह के उसे कोई काम न था, अगर यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام उसे दिन को अपने पास बुलाते तो कहती रात को आऊंगी और रात को बुलाते तो दिन का वा'दा करती । यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ज़ुलैख़ा ! तू तो मेरी महब्बत में दीवानी थी ! जवाब दिया : येह उस वक़्त की बात है कि जब मैं आप की महब्बत की माहिय्यत से वाक़िफ़ न थी, अब मैं आप की महब्बत की ह़क़ीक़त पहचान चुकी हूं इस लिये अब मेरी महब्बत में तुम्हारी शिर्कत भी गवारा नहीं । ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** ने इस बात का हुक्म फ़रमाया है और मुझे बतलाया है कि तेरे बत़्न से **अल्लाह** तआ़ला दो बेटे पैदा करेगा और दोनों को नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा, ज़ुलैख़ा ने कहा : अगर हुक्मे ख़ुदावन्दी है और इस में ह़िक्मते इलाही है तो मैं सरे तस्लीम ख़म करती हूं ।

मजनूं ने अपना नाम लैला बतलाया

मजनूं से किसी ने पूछा : तेरा नाम क्या है ? बोला : लैला ! एक दिन उस से किसी ने कहा : क्या लैला मर गई ? मजनूं ने जवाब दिया : लैला नहीं मरी वोह तो मेरे दिल में है और मैं ही लैला हूं, एक दिन जब मजनूं का लैला के घर से गुज़र हुवा तो वोह सितारों को देखता हुवा गुज़रने

लगा, किसी ने कहा : नीचे देखो शायद तुम्हें लैला नज़र आ जाए। मजनूं बोला : मेरे लिये लैला के घर के ऊपर चमकने वाले सितारे की ज़ियारत ही काफ़ी है।

महब्बत की इब्तिदा और इन्तिहा

जब ह़ज़रते मन्सूर ह़ल्लाज को क़ैद में अठ्ठारह दिन गुज़र गए तो ह़ज़रते शिब्ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन के पास जा कर दरयाफ़्त किया : ऐ मन्सूर ! महब्बत क्या है ? मन्सूर ने जवाब दिया : आज नहीं कल येह सुवाल पूछना। जब दूसरा दिन हुवा और इन को क़ैद से निकाल कर मक़्तल की त़रफ़ ले गए तो वहां मन्सूर ने शिब्ली को देख कर कहा : शिब्ली ! महब्बत की इब्तिदा जलना और इन्तिहा क़त्ल हो जाना है।

इशारा

जब मन्सूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निगाहे ह़क़ बीन ने इस ह़क़ीक़त को पहचान लिया कि اَنَّ كُلَّ شَیْءٍ مَا خَلَا اللّٰہِ بَاطِلٌ **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात के सिवा हर शै बातिल है और ज़ाते इलाही ही ह़क़ है, तो वोह अपने नाम तक को भूल गए लिहाज़ा जब इन से सुवाल किया गया कि तुम्हारा नाम क्या है ? तो जवाब दिया : मैं ह़क़ हूं।(1)

---

(1).....इस ज़िम्न में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, बाब : आदाबे त़आ़म, सफ़्ह़ा 421 पर फ़रमाते हैं : इन के बारे में मश्हूर है कि इन्हों ने اَنَا الْحَق या'नी मैं ह़क़ (खुदा) हूं" कहा था। इस ग़लत फ़हमी का रद्द करते हुवे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन को अ़वाम 'मन्सूर' कहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी हुसैन। (आप) अकाबिरे अहले ह़ाल से थे। इन की एक बहन इन से बदरजहा मर्तबए विलायत व मा'रिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िरे शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही में मसरूफ़ होतीं। एक दिन इन की आंख खुली बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, इन को वस्वसा गुज़रा। दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे, वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे, आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याक़ूत का जाम उतरा और उन के दहने मुबारक (या'नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्हों ने पीना शुरूअ़ किया, इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने'मत (मुझे) न मिले, बे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम की थोड़ा मेरे लिये छोड़ दो, उन्हों ने एक जुरआ़ (या'नी एक घूंट) छोड़ दिया, इन्हों ने पिया, इस के पीते ही हर जड़ी बूटी हर दरो दीवार से इन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए ? इन्हों ने कहना शुरूअ़ किया, "اَنَا لَاَحَق" (اَنَا-لَ-اَحَق) या'नी बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या'नी ह़क़दार) हूं। लोगों के सुनने में आया اَنَا الْحَق (या'नी मैं ह़क़ हूं) वोह (लोग) दा'वए खुदाई समझे, और येह (या'नी खुदाई का दा'वा) कुफ़्र है और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुर्तद्द है और मुर्तद्द की सज़ा क़त्ल है।" (फ़तावा रज़विय्या जि. 26, स. 400).........(**इल्मिय्या**)

'मुन्तहा' में है कि महब्बत का सिद्क़ तीन चीज़ों में ज़ाहिर होता है, मुहिब्ब, महबूब की बातों को सब की बातों से अच्छा समझता है, उस की मजलिस को तमाम मजालिस से बेहतर समझता है और उस की रिज़ा को औरों की रिज़ा पर तरजीह देता है।

कहते हैं कि इश्क़ पर्दा दरी करने वाला और राज़ों का इफ़्शा करने वाला है और वज्द ज़िक्र की शीरीनी के वक़्त रूह का ग़लबए शौक़ का बार उठाने से आजिज़ हो जाता है यहां तक कि अगर वज्द की हालत में इन्सान का कोई उज़्व भी काट लिया जाए तो उसे महसूस तक नहीं होगा।

हिकायत

एक आदमी दरयाए फ़ुरात में नहा रहा था, उस ने सुना कि कोई शख़्स येह आयत पढ़ रहा है :

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ (1) *ऐ मुजरिमो ! आज अ़लाहिदा हो जाओ।*

येह सुनते ही वोह तड़पने लगा और डूब कर मर गया।

मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : मैं ने बसरा में एक बुलन्द मक़ाम पर खड़े हुवे एक नौजवान को देखा जो लोगों से कह रहा था कि जो आ़शिक़ों की मौत मरना चाहे उसे इस त़रह़ मरना चाहिये (क्यूंकि इश्क़ में मौत के बिग़ैर कोई लुत्फ़ नहीं है) इतना कहा और वहां से खुद को गिरा दिया, लोगों ने जब उसे उठाया तो वोह दम तोड़ चुका था। हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि तसव्वुफ़ अपनी पसन्द को तर्क कर देने का नाम है।

हिकायत

'ज़हरुर्रियाज़' में है : हज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : एक दिन मैं ख़ानए का'बा में दाख़िल हो गया, मैं ने वहां सुतून के क़रीब एक बरह्ना नौजवान मरीज़ को पड़े देखा जिस के दिल से रोने की आवाज़ें निकल रही थीं, मैं ने उस के क़रीब जा कर उसे सलाम किया और पूछा : तुम कौन हो ? उस ने कहा : मैं एक ग़रीबुल वत़न आ़शिक़ हूं। मैं उस की बात समझ गया और मैं ने कहा : मैं भी तेरी त़रह़ हूं, वोह रो पड़ा, उस का रोना देख कर मुझे भी रोना आ गया। उस ने मुझे देख कर कहा : तुम क्यूं रो रहे हो ? मैं ने कहा : इस लिये कि तेरा और मेरा मरज़ एक है। उस ने चीख़ मारी और उस की रूह परवाज़ कर गई। मैं ने उस पर अपना कपड़ा डाला और कफ़न

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आज अलग फुट जाओ ऐ मुजरिमो। (پ۲۳، یٰسٓ:۵۹)

लेने चला आया। जब मैं कफ़न ले कर वापस पहुंचा तो वोह जवान वहां नहीं था। मेरे मुंह से बे साख़्ता سُبْحٰنَ اللّٰہ निकला, तब मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी जो कह रहा था : ऐ ज़ुन्नून ! उस की ज़िन्दगी में शैतान उसे ढूंडता था मगर न पा सका, मालिके दोज़ख़ ने उसे ढूंडा मगर न पा सका, रिज़्वाने जन्नत उसे तलाश के बावुजूद न पा सका, मैं ने पूछा वोह फिर कहां गया ? जवाब आया :

فِیْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِیْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۵۵﴾ (1)

अपने इश्क़, कसरते इबादत और ता'जीले तौबा की वज्ह से वोह अपने क़ादिर रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर पहुंच गया है।

आशिक़ की पहचान

एक शैख़ से आशिक़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया उन्हों ने कहा : आशिक़ मेल मिलाप से दूर, तन्हाई पसन्द, ग़ौरो फ़िक्र में डूबा हुवा और चुप चाप रहता है जब उसे देखा जाए वोह नज़र नहीं आता, जब बुलाया जाए तो सुनता नहीं, जब बात की जाए तो समझता नहीं और जब उस पर कोई मुसीबत आ जाए तो ग़मगीन नहीं होता, वोह भूक की परवा और बरहनगी का एहसास नहीं रखता, किसी की धमकियों से मरऊ़ब नहीं होता, वोह तन्हाई में अल्लाह तआ़ला से इल्तिजाएं करता है, उस की रहमत से उन्स व महब्बत रखता है, वोह दुन्या के लिये दुन्या वालों से नहीं झगड़ता।

हज़रते अबू तुराब बख़्शी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इश्क़ की अ़लामत में येह चन्द शे'र कहे हैं :

لَا تخدعن فللحبيب دلائل ولديه من تحف الحبيب وسائل

منها تنعمه بمر بلائه وسروره فی كل ما هو فاعل

فالمنع منه عطية مقبولة والفقر اكرام و بر عاجل

ومن الدلائل ان ترى فی عزمه طوع الحبيب وان الح العاذل

ومن الدلائل ان يرى متبسما والقلب فيه من الحبيب بلابل

ومن الدلائل ان يرى متفهما لكلام من يخطى لديه السائل

ومن الدلائل ان يرى متقشفا متحفظا من كل ما هو قائل

---

(1)....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सच की मजलिस में अ़ज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर। (پ۲۷،القمر:۵۵)

﴾1﴿......तू धोका न दे क्यूंकि महबूब के पास दलाइल और आशिक़ के पास महबूब के तोहफ़ों के वसाइल हैं।

﴾2﴿......एक अलामत येह है कि वोह अपनी तल्ख़ आज़माइश से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है और महबूब जो करता है वोह उस पर ख़ुश होता है।

﴾3﴿......उस की तरफ़ से मन्अ करना भी अतिय्या है और फ़क्र उस के लिये इज़्ज़त अफ़्ज़ाई और एक फ़ौरी नेकी है।

﴾4﴿......एक अलामत येह है कि वोह महबूब की इताअत का पुख़्ता इरादा रखता है अगर्चे उसे मलामत करने वाले मलामत करें।

﴾5﴿......एक अलामत येह है कि तुम उसे मुस्कुराता हुवा पाओगे अगर्चे उस के दिल में महबूब की तरफ़ से आग सुलग रही होती है।

﴾6﴿......एक अलामत येह है कि तुम उसे ख़ताकारों की गुफ़्तगू समझता हुवा पाओगे।

﴾7﴿......और एक अलामत येह है कि तुम उसे हर उस बात का हिफ़ाज़त करने वाला पाओगे, जिसे वोह कहता है।

हिकायत

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक जवान के क़रीब से गुज़रे जो बाग़ को पानी दे रहा था, उस ने आप से कहा : **अल्लाह** से दुआ कीजिये ! **अल्लाह** तआला मुझे एक ज़र्रा अपने इश्क़ का अता फ़रमा दे। आप ने फ़रमाया : एक ज़र्रा बहुत बड़ी चीज़ है तुम उस के तहम्मुल की इस्तिताअत नहीं रखते, कहने लगा : अच्छा ! आधे ज़र्रे का सुवाल कीजिये ! हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रब तआला से सुवाल किया : ऐ **अल्लाह** ! इसे आधा ज़र्रा अपने इश्क़ का अता फ़रमा दे। उस के हक़ में येह दुआ कर के आप वहां से रवाना हो गए।

काफ़ी मुद्दत के बा'द आप फिर उसी रास्ते से गुज़रे और उस जवान के मुतअल्लिक़ सुवाल किया। लोगों ने कहा : वोह तो दीवाना हो गया है और कहीं पहाड़ों की तरफ़ निकल गया है। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रब से दुआ की : ऐ **अल्लाह** ! मेरी उस जवान से मुलाक़ात करा दे, पस आप ने देखा वोह एक चट्टान पर खड़ा आस्मान की तरफ़ देख रहा था। आप ने उसे सलाम कहा : मगर वोह ख़ामोश रहा। आप ने कहा : मुझे नहीं जानते ? मैं ईसा हूं। **अल्लाह** तआला ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य की, कि ऐ ईसा ! जिस के दिल में मेरी महब्बत का आधा ज़र्रा मौजूद हो वोह इन्सानों की बात कैसे सुनेगा ? मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर इसे आरी से दो टुकड़े भी कर दिया जाए तो इसे महसूस न होगा।

जो शख़्स तीन बातों का दा'वा करता है और ख़ुद को इन तीन चीज़ों से पाक नहीं रखता तो उस का दा'वा बातिल है :

﴾1﴿......जो शख़्स ज़िक्रे ख़ुदा की ह़लावत को पाने का दा'वा करता है मगर दुन्या से भी मह़ब्बत रखता है।

﴾2﴿......जो अपने आ'माल में इख़्लास का दा'वा करता है मगर लोगों से अपनी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई का ख़्वाहिशमन्द है।

﴾3﴿....जो अपने ख़ालिक़ की मह़ब्बत का दा'वा करता है मगर अपने नफ़्स को ज़लील नहीं करता।

फ़रमाने नबवी है कि मेरी उम्मत पर अ़न क़रीब ऐसा ज़माना आने वाला है, जब वोह पांच चीज़ों से मह़ब्बत करेंगे और पांच चीज़ों को भूल जाएंगे :

﴾1﴿......दुन्या से मह़ब्बत रखेंगे....................आख़िरत को भूल जाएंगे।

﴾2﴿......माल से मह़ब्बत रखेंगे और..............यौमे ह़िसाब को भूल जाएंगे।

﴾3﴿......मख़्लूक़ से मह़ब्बत रखेंगे मगर..........ख़ालिक़ को भूल जाएंगे।

﴾4﴿......गुनाहों से मह़ब्बत रखेंगे मगर............तौबा को भूल जाएंगे।

﴾5﴿......मकानों से मह़ब्बत रखेंगे और............क़ब्र को भूल जाएंगे।

ह़ज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक जवान को नसीह़त करते हुवे कहा : ऐ जवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाले, कितने जवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा को मुअख़्ख़र और अपनी उम्मीदों को त़वील कर दिया, मौत को भुला दिया और येह कहते रहे कि कल तौबा कर लेंगे, परसों तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत में मलकुल मौत आ गया और वोह अन्धेरी क़ब्र में जा सोए, उन्हें न माल ने, न ग़ुलामों ने, न अवलाद ने और न ही मां बाप ने कोई फ़ाइदा दिया।

फ़रमाने इलाही है कि

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾ (1)

उस दिन अम्वाल व अवलाद कुछ फ़ाइदा न देंगे।

ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! हमें मौत से पहले तौबा की तौफ़ीक़ दे, हमें ख़्वाबे ग़फ़्लत से होशयार फ़रमा दे और सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर। (پ۱۹، الشعراء:۸۸،۸۹)

मोमिन की ता'रीफ़ येह है कि वोह हर घड़ी तौबा करता रहे और अपने गुज़श्ता गुनाहों पर शर्मिन्दा रहे, थोड़ी सी मताए दुन्या पर राज़ी रहे, दुन्यावी मशाग़िल को भूल कर आख़िरत की फ़िक्र करे और खुलूसे क़ल्ब से अल्लाह तआला की इबादत करता रहे।

एक बख़ील मुनाफ़िक़

एक मुनाफ़िक़ इन्तिहाई बख़ील था, उस ने अपनी बीवी को क़सम दी कि अगर तू ने किसी को कुछ दिया तो तुझ पर तलाक़ है। एक दिन एक साइल उधर आ निकला और उस ने खुदा के नाम पर सुवाल किया, औरत ने उसे तीन रोटियां दे दीं, वापसी में उसे वोही बख़ील मिल गया और पूछा : तुझे येह रोटियां किस ने दी हैं? साइल ने उस के घर के मुतअ़ल्लिक़ बताया कि मुझे वहां से मिली हैं। बख़ील तेज़ क़दमों से घर की तरफ़ चल पड़ा और घर पहुंच कर बीवी से बोला : मैं ने तुझे क़सम नहीं दी थी कि किसी साइल को कुछ नहीं देना! बीवी बोली : साइल ने अल्लाह के नाम पर सुवाल किया था लिहाज़ा मैं रद्द न कर सकी।

कन्जूस ने जल्दी से तन्नूर भड़काया, जब तन्नूर सुर्ख़ हो गया तो बीवी से कहा : उठ अल्लाह के नाम पर तन्नूर में दाख़िल हो जा! औरत खड़ी हो गई और अपने ज़ेवरात ले कर तन्नूर की तरफ़ चल पड़ी, कन्जूस चिल्लाया कि ज़ेवरात तो यहीं छोड़ जा। औरत ने कहा : आज मेरा महबूब से मुलाक़ात का दिन है, मैं उस की बारगाह में बन संवर कर जाऊंगी और जल्दी से तन्नूर में घुस गई। उस बद बख़्त ने तन्नूर को बन्द कर दिया। जब तीन दिन गुज़र गए तो उस ने तन्नूर का ढकना उठा कर अन्दर झांका मगर येह देख कर हैरान रह गया कि औरत अल्लाह तआला की कुदरत से उस में सहीह व सालिम बैठी हुई थी। हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी : क्या तुझे इल्म नहीं कि आग हमारे दोस्तों को नहीं जलाती।

हज़रते आसिया का ईमान

हज़रते आसिया رضی اللہ تعالٰی عنہا ने अपना ईमान अपने शोहर फ़िरऔन से छुपाया था, जब फ़िरऔन को इस का पता चला तो उस ने हुक्म दिया कि इसे गूना-गूं अज़ाब दिये जाएं ताकि हज़रते आसिया ईमान को छोड़ दें लेकिन हज़रते आसिया साबित क़दम रहीं, तब फ़िरऔन ने मींखें मंगवाईं और इन के जिस्म पर मींखें गड़वा दीं और फ़िरऔन कहने लगा : अब भी वक़्त है ईमान को छोड़ दो मगर हज़रते आसिया ने जवाब दिया तू मेरे वुजूद पर क़ादिर है लेकिन मेरा दिल मेरे रब की पनाह में है, अगर तू मेरा हर उ़ज़्व काट दे तब भी मेरा इश्क़ बढ़ता जाएगा।

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का वहां से गुज़र हुवा, आसिया ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : मेरा रब मुझ से राज़ी है या नहीं ? हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ आसिया ! आस्मान के फ़िरिश्ते तेरे इन्तिज़ार में हैं और अल्लाह तआ़ला तेरे कारनामों पर फ़ख्र फ़रमाता है, सुवाल कर तेरी हर हाजत पूरी होगी। आसिया ने दुआ़ मांगी : ऐ मेरे रब मेरे लिये अपने जवारे रह़मत में जन्नत में मकान बना दे, मुझे फ़िरऔन, उस के मज़ालिम और ज़ालिम लोगों से नजात अ़ता फ़रमा।

हज़रते सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : आसिया को धूप में अ़ज़ाब दिया जाता था, जब लोग लौट जाते तो फ़िरिश्ते अपने परों से आप पर साया किया करते थे और वोह अपने जन्नत वाले घर को देखती रहती थीं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि जब फ़िरऔन ने हज़रते आसिया को धूप में लिटा कर चार मींखें इन के जिस्म में गड़वाईं और इन के सीने पर चक्की के पाट रख दिये गए तो हज़रते आसिया ने आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर अ़र्ज़ की :

رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ [1]

ऐ मेरे रब मेरे लिये अपने जवारे रह़मत में जन्नत में मकान बना (आख़िर तक)

हज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं अल्लाह तआ़ला ने इस दुआ़ के तुफ़ैल आसिया को फ़िरऔन से बा इ़ज़्ज़त रिहाई अ़ता फ़रमाई और इन को जन्नत में बुला लिया जहां वोह ज़ी ह़यात की त़रह़ खाती पीती हैं।

इस ह़िकायत से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि मसाइब और तकालीफ़ में अल्लाह की पनाह मांगना, उस से इल्तिजा करना और रिहाई का सुवाल करना मोमिनीन और सालिह़ीन का त़रीक़ा है।

1.....आयते मुबारका यूं है : رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۱﴾
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फ़िरऔन और उस के काम से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श। (پ۲۸،التحریم:۱۱)

बाब 11

इताअ़ते इलाही व महब्बते इलाही व महब्बते रसूल

फ़रमाने इलाही है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (1)

फ़रमा दे ऐ नबी ! अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबाअ़ करो अल्लाह तुम्हें महबूब रखेगा।

अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़म फ़रमाए अच्छी त़रह़ समझ लो कि बन्दे के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत उन की इताअ़त और उन के अह़कामात की पैरवी है और अल्लाह तआ़ला के लिये बन्दों की महब्बत रह़मत और बख़्शिश का नुज़ूल है।

जब बन्दा येह बात समझ लेता है कि कमालाते ह़क़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये हैं और मख़्लूक़ के कमालात भी ह़क़ीक़त में अल्लाह ही के कमालात हैं और अल्लाह ही के अ़त़ा कर्दा हैं तो उस की महब्बत अल्लाह के साथ और अल्लाह के लिये हो जाती है येही चीज़ इस बात का तक़ाज़ा करती है कि बन्दा अल्लाह की इताअ़त करे और जिन बातों का वोह इक़रार करता है इन उमूर से इस महब्बत में इज़ाफ़ा हो, इसी लिये महब्बत को इताअ़त के इरादों का नाम दिया गया है और इस को इख़्लास, इबादत और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ के साथ मशरूत़ किया गया है।

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि कुछ लोगों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हम रब तआ़ला से महब्बत करते हैं, तब येह आयते करीमा नाज़िल हुई या'नी इताअ़ते रसूल महब्बते इलाही का मूजिब है।

ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बुलन्द मक़ाम कैसे अ़त़ा हुवा ?

ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि मैं नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदारे बहजते असरार से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा, आप ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : बिशर ह़ाफ़ी ! जानते हो

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा। (پ۳،اٰلِ عمران:۳۱)

अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारे हम-अ़स्रों से बुलन्द मक़ाम क्यूं दिया है ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं **या रसूलल्लाह** ! आप ने फ़रमाया : इस लिये कि तुम नेकों की ख़िदमत करते हो, दोस्तों को नसीह़त करते हो, मेरी सुन्नत और अहले सुन्नत से मह़ब्बत रखते हो और दोस्तों से हुस्ने सुलूक रवा रखते हो।

फ़रमाने नबवी है : जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह क़ियामत के दिन मेरे साथ होगा।(1)

'**शरअ़तुल इस्लाम**' और '**आसारे मश्हूरा**' में है कि जब मज़्हब में फ़ित्ने पैदा हो जाएं और मख़्लूक़ में परागन्दगी रू नुमा हो जाए उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल पैरा होने का सवाब सो शहीदों के अज्र के बराबर है।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी तमाम उम्मत जन्नत में जाएगी मगर जिस ने इन्कार किया। अ़र्ज़ की गई हुज़ूर ! इन्कार किस ने किया ? आप ने फ़रमाया : जिस ने मेरी इत्तिबाअ़ की वोह जन्नत में जाएगा जिस ने मेरी नाफ़रमानी की उस ने गोया इन्कार किया।(3) हर वोह अ़मल जो मेरे त़रीक़े के मुत़ाबिक़ नहीं वोह गुनाह है।

एक आ़रिफ़े बा सफ़ा का इरशाद है : अगर तू किसी शैख़ को हवा में उड़ता हुवा या पानी पर चलता हुवा या आग वग़ैरा खाता हुवा देखे लेकिन वोह अ़मलन **अल्लाह** के किसी फ़र्ज़ या नबी की किसी सुन्नत का तारिक हो तो वोह झूटा है। उस का दा'वए मह़ब्बत बात़िल है और येह उस की करामत नहीं इस्तिद्राज(4) है।

ह़ज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि कोई शख़्स भी **अल्लाह** तक उस की तौफ़ीक़ के बिग़ैर नहीं पहुंचा और **अल्लाह** तक पहुंचने का रास्ता मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा व इत्तिबाअ़ है।

ह़ज़रते अह़मद अल ह़वारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि इत्तिबाए़ सुन्नत के बिग़ैर हर अ़मल बात़िल है।

'**शरअ़तुल इस्लाम**' में फ़रमाने नबवी है कि जिस ने मेरी सुन्नत को ज़ाएअ़ किया उस पर मेरी शफ़ाअ़त ह़राम है।(5)

---

1 ......ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، ٤/٣٠٩، الحدیث ٢٦٨٧

2 ...... روح البیان، البقرة، تحت الآیة: ١٢٣، ١/٢٢١

3 ......بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب و السنة، باب الاقتداء...الخ، ٤/٤٩٩، الحدیث ٧٢٨٠

4 .....वोह ख़िर्क़े आ़दत जो किसी ग़ैर मुस्लिम से सरज़द हो।

5 ......روح البیان، النساء، تحت الآیة: ٦٥، ٢/٢٣١

अल्लाह का दीवाना आशिक़

एक शख़्स ने एक दीवाने से एक ऐसा अमल सरज़द होते देखा जो ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ था वोह हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में पहुंचा और वाक़िआ़ कह सुनाया : आप ने कहा : **अल्लाह** के बहुत से उ़श्शाक़ हैं, कुछ छोटे हैं कुछ बड़े, कुछ अ़क़्लमन्द हैं और कुछ दीवाने हैं, जिस शख़्स को तुम ने देखा है वोह **अल्लाह** का आ़शिक़ दीवाना है।

हिकायत

हज़रते जुनैद कहते हैं कि हमारे शैख़ सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बीमार हो गए हमें उन की बीमारी के अस्बाब का पता नहीं चल रहा था, किसी ने हमें एक हकीमे हाज़िक़ का पता बतलाया हम उन का क़ारूरा उस हकीम के पास ले गए, वोह हकीम कुछ देर तवज्जोह से उसे देखता रहा फिर बोला : येह किसी आ़शिक़ का क़ारूरा नज़र आता है। येह सुनते ही मैं बेहोश हो गया और बोतल मेरे हाथ से गिर गई जब मैं ने सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वापस आ कर वाक़िआ़ बतलाया तो उन्हों ने तबस्सुम फ़रमाया और फ़रमाया : इसे **अल्लाह** समझे ! उस ने येह कैसे मा'लूम कर लिया ? मैं ने पूछा : क्या महब्बत के असरात पेशाब में भी ज़ाहिर होते हैं। आप ने फ़रमाया : हां।

हज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : जब तुझ से पूछा जाए तू **अल्लाह** से महब्बत करता है तो चुप हो जा क्यूंकि अगर तू नफ़ी में जवाब देगा तो येह कुफ़्र होगा और अगर हां कहेगा तो तेरे अन्दर आ़शिक़ों जैसी कोई सिफ़त ही मौजूद नहीं है (इस त़रह़ तू झूटा समझा जाएगा) पस ख़ामोशी इख़्तियार कर के नाराज़ी से बच जा।

हज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के दोस्त को दोस्त रखता है वोह **अल्लाह** को दोस्त रखता है, और जो **अल्लाह** तआ़ला के एह़तिराम करने वाले का एह़तिराम करता है वोह **अल्लाह** का एह़तिराम करता है।

हज़रते सह्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : हुब्बे ख़ुदा की निशानी हुब्बे क़ुरआन है हुब्बे ख़ुदा और हुब्बे क़ुरआन की निशानी हुब्बे नबी है और हुब्बे नबी की निशानी नबी की सुन्नत से महब्बत है और हुब्बे सुन्नत की निशानी आख़िरत की महब्बत है, आख़िरत की महब्बत दुन्या से बुग़्ज़ का नाम है और दुन्या के बुग़्ज़ की निशानी मा'मूली माले दुन्या पर राज़ी होना और आख़िरत के लिये दुन्या को ख़र्च करना है।

हज़रते अबुल हसन जुन्जानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है : इबादत की बुन्याद तीन चीज़ें हैं : आंख, दिल, ज़बान। आंख इब्रत के लिये, दिल ग़ौरो फ़िक्र के लिये और ज़बान सच्चाई का गहवारा और ज़िक्रो तस्बीह के लिये हो, चुनान्चे फ़रमाने इलाही है :

اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿۴۱﴾ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ (1)

*तुम **अल्लाह** का बहुत ज़ियादा ज़िक्र करो और सुब्हो शाम उस की तस्बीह बयान करो।*

हिकायत

हज़रते अब्दुल्लाह और अहमद बिन हर्ब رَحِمَهُمَا الله एक जगह गए, अहमद बिन हर्ब ने वहां खुश्क घास का एक टुकड़ा काटा, हज़रते अब्दुल्लाह ने जनाबे अहमद बिन हर्ब से कहा : तुझे पांच चीज़ें हासिल हो गईं, तेरे इस फ़े'ल से तेरा दिल **अल्लाह** की तस्बीह से ग़ाफ़िल हुवा, तू ने अपने नफ़्स को **अल्लाह** के ज़िक्र के मासिवा कामों की आदत डाली, तू ने अपने नफ़्स के लिये एक रास्ता बना दिया जिस में वोह तेरे पीछे पड़ेगा, तू ने उसे **अल्लाह** की तस्बीह से रोका और क़ियामत के लिये अपने नफ़्स को रब के सामने एक हुज्जत दे दी।

हज़रते शैख़ सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : मैं ने शैख़ जुरजानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पिसे हुवे सत्तू देखे, मैं ने पूछा : आप सत्तू के इलावा और कुछ क्यूं नहीं खाते ? उन्हों ने जवाब दिया : मैं ने खाना चबाने और सत्तू पीने में सत्तर[70] तस्बीहों का अन्दाज़ा लगाया है, चालीस साल हुवे मैं ने रोटी खाई ही नहीं ताकि इन तस्बीहों का वक़्त ज़ाएअ़ न हो।

हज़रते सहल बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पन्दरह दिन में सिर्फ़ एक मरतबा खाते और जब माहे रमज़ान आता तो महीने में सिर्फ़ एक मरतबा खाते। बा'ज़ अवक़ात तो वोह सत्तर दिनों तक भी कुछ न खाते, जब आप खाना खाते तो कमज़ोर हो जाते और जब भूके रहते तो क़वी हो जाते थे।

हज़रत अबू हम्माद अल अस्वद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तीस बरस का'बे के मुजाविर रहे मगर किसी ने उन्हें खाते पीते नहीं देखा और न ही वोह एक लम्हा **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हुवे।

हिकायत

हज़रते अम्र बिन उबैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तीन कामों के इलावा कभी घर से बाहर न निकलते। नमाज़े बा जमाअत के लिये, मरीज़ों की इयादत के लिये और जनाज़ों में शिर्कत के लिये, और वोह

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** को बहुत याद करो और सुब्हो शाम उस की पाकी बोलो। (پ۲۲،الاحزاب:۴۱،۴۲)

फ़रमाते हैं : मैं ने लोगों को चोर और रहज़न पाया है, उम्र एक उम्दा जोहर है जिस की क़ीमत का तसव्वुर नहीं किया जा सकता लिहाज़ा इस से आख़िरत के लिये ख़ज़ाना तय्यार करना चाहिये और आख़िरत के त़लबगार के लिये ज़रूरी है कि वोह दुन्या में रियाज़त करे ताकि उस का ज़ाहिर और बातिन एक हो जाए, ज़ाहिरो बातिन पर मुकम्मल इख़्तियार ह़ासिल किये बिग़ैर ख़ज़ाने का संभालना मुश्किल है।

हज़रते शिबली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि इब्तिदाए रियाज़त में जब मुझे नींद आती तो मैं आंखों में नमक की सलाई लगाता, जब नींद ज़ियादा तंग करती तो मैं गर्म सलाई आंखों में फेर लेता।

हज़रते इब्राहीम बिन ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : मेरे वालिदे मोह़तरम को जब नींद आने लगती तो वोह दरया के अन्दर तशरीफ़ ले जाते और **अल्लाह** की तस्बीह़ करने लगते जिसे सुन कर दरया की मछलियां इकठ्ठी हो जातीं और वोह भी तस्बीह़ करने लगतीं।

हज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रब से दुआ मांगी : मेरी रात की नींद उड़ा दे **अल्लाह** ने इन की दुआ क़बूल की और इन्हें चालीस बरस तक नींद न आई, इस त़रह़ तमाम रातें इन्हों ने इबादत में बसर कीं।

हज़रते ह़सन ह़ल्लाज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने जिस्म को टख़्नों से घुटनों तक तेरह जगहों से बेड़ियों में जकड़ रखा था और इसी ह़ालत में वोह दिन रात में एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल अदा करते थे।

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इब्तिदाए ह़ाल में बाज़ार में जाते और अपनी दुकान खोल कर उस के आगे पर्दा डाल देते और चार सो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के दुकान बंद कर के घर वापस आ जाते।

हज़रते ह़बशी बिन दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चालीस साल इशा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी।

लिहाज़ा हर मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह बा वुज़ू रहे, जब बे वुज़ू हो जाए तो फ़ौरन वुज़ू कर के दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करे, हर मजलिस में क़िब्ला रू बैठे, हुज़ूरे दिल और मुराक़बा के साथ येह तसव्वुर करे कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने मुवाजहा शरीफ़ में बैठा है, तह़म्मुल और बुर्दबारी को अपने अफ़्आ़ल में लाज़िम रखे, दुख झेले मगर बुराई का बदला बुराई से न दे, गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करता रहे, ख़ुदबीनी और रिया के क़रीब न जाए क्यूंकि ख़ुद बीनी शैत़ान की सिफ़त है, अपने आप को ह़क़ारत से और नेक लोगों को एह़तिराम से देखे इस लिये कि जो शख़्स नेकों के एह़तिराम को नहीं जानता **अल्लाह** तआ़ला उसे इन की सोह़बत से मह़रूम कर देता है और जो शख़्स इबादत की हुरमत व अ़ज़मत को नहीं जानता **अल्लाह** तआ़ला उस के दिल से इबादत की शीरीनी निकाल लेता है।

हज़रते फुज़ैल बिन अयाज़ से एक सुवाल

हज़रते फुज़ैल बिन अयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : ऐ अबू अ़ली ! आदमी नेक कब होता है ? फ़रमाया : जब उस की निय्यत में नसीह़त, दिल में ख़ौफ़, ज़बान पर सच्चाई और उस के आ'ज़ा से आ'माले सालिह़ा का सुदूर होता है।

अल्लाह तआ़ला ने शबे मे'राज नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया : ऐ अह़मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अगर आप को तमाम लोगों से ज़ियादा परहेज़गार बनना पसन्द है तो दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत कीजिये। आप ने अ़र्ज़ की : इलाहल आ़लमीन ! दुन्या से बे रग़बती कैसे हो ? फ़रमाने इलाही हुवा : दुन्या के माल से ब क़दरे ज़रूरत खाने पीने और पहनने की चीज़ें ले लीजिये और बस ! कल के लिये ज़ख़ीरा न कीजिये और हमेशा मेरा ज़िक्र करते रहिये। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ज़िक्र पर दवाम कैसे हो ? जवाब मिला : लोगों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार कीजिये, नमाज़ को और भूक को अपनी ग़िज़ा बनाइये।[1]

फ़रमाने नबवी है : दुन्या से किनारा कशी जिस्मो जान की ताज़गी है और दुन्या की रग़बत में ग़म व अन्दोह की फ़िरावानी है।[2]

दुन्या की मह़ब्बत हर बुराई की जड़ है और किनारा कशी हर ख़ैरो बरकत की बुन्याद है।

दिले बीमार का इलाज

एक सालेह़ शख़्स का एक जमाअ़त के पास से गुज़र हुवा, वहां एक मुआ़लिज बीमारियों और दवाइयों का ज़िक्र कर रहा था। सालेह़ जवान ने पूछा : ऐ जिस्मों के मुआ़लिज ! क्या तेरे पास दिलों का भी इलाज है ? वोह बोला : हां बताओ ! दिल में क्या बीमारी है ? सालेह़ जवान ने कहा : गुनाहों की ज़ुल्मत ने इसे सख़्त कर दिया है। मुआ़लिज ने कहा : इस का इलाज सुब्ह़ो शाम गिर्या व ज़ारी, इस्तिग़फ़ार, रब्बे ग़फ़ूर की इत़ाअ़त में सई और अपने गुनाहों पर मा'ज़िरत त़लबी है, दवा तो येह है, शिफ़ा रब के पास है, वोह सालेह़ जवान इतना सुनते ही बे ह़ाल हो गया और कहने लगा : तुम वाक़ेई एक अच्छे त़बीब हो, तुम ने ला जवाब इलाज बतलाया मुआ़लिज ने कहा : येह उस दिल का इलाज है जो ताइब हो कर अपने रब के हुज़ूर आ गया हो।

---

1 ......

2 ......شعب الايمان ، الحادى والسبعون من شعب الايمان ، باب فى الزهد...الخ، ٧/٣٤٧، الحديث ١٠٥٣٦ و ٧/٣٢٣، الحديث ١٠٤٥٨

दो आक़ाओं की ख़िदमत

एक शख़्स ने एक ग़ुलाम ख़रीदा, ग़ुलाम ने कहा : ऐ मालिक ! मेरी तीन शर्तें हैं :

﴾1﴿......जब नमाज़ का वक़्त आए तो मुझे उस के अदा करने से न रोकना।

﴾2﴿......दिन को मुझ से जो चाहो काम लो मगर रात को नहीं।

﴾3﴿......मुझे ऐसा कमरा दो जिस में मेरे सिवा कोई न आए।

मालिक ने तीनों शर्तें मन्ज़ूर करते हुवे कहा : घर में रहने के लिये कोई कमरा पसन्द कर लो ! ग़ुलाम ने एक ख़राब सा कमरा पसन्द कर लिया, मालिक बोला : तू ने ख़राब कमरा क्यूं पसन्द किया ? ग़ुलाम ने जवाब दिया : ऐ मालिक ! येह ख़राब कमरा अल्लाह के यहां चमन है चुनान्चे, वोह दिन को मालिक की ख़िदमत करता और रात को अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल हो जाता।

एक रात उस का मालिक वहां से गुज़रा तो उस ने देखा कमरा मुनव्वर है, ग़ुलाम सजदे में है और उस के सर पर एक नूरानी क़िन्दील मुअ़ल्लक़ है और वोह आहो ज़ारी करते हुवे कह रहा है : "या इलाही ! तू ने मुझ पर मालिक की ख़िदमत वाजिब कर दी है और मुझ पर येह ज़िम्मेदारी न होती तो मैं सुब्हो शाम तेरी इबादत में मश्ग़ूल रहता, ऐ अल्लाह ! मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा ले।" मालिक सारी रात उस की इबादत देखता रहा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई, क़िन्दील बुझ गई और कमरे की छत ह़स्बे साबिक़ हमवार हो गई वोह वापस लौटा और अपनी बीवी को सारा माजरा सुनाया।

जब दूसरी रात हुई तो वोह अपनी बीवी को साथ ले कर वहां पहुंच गया, वहां देखा तो ग़ुलाम सजदे में था और नूरानी क़िन्दील रोशन थी, वोह दोनों दरवाज़े पर खड़े हो गए, और सारी रात उसे देख कर रोते रहे, जब सुब्ह़ हुई तो उन्हों ने ग़ुलाम को बुला कर कहा : हम ने तुझे अल्लाह के नाम पर आज़ाद कर दिया है ताकि तू फ़राग़त से उस की इबादत कर सके, ग़ुलाम ने अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ उठाए और कहा :

ياصاحب السر ان السر قد ظهرا

ولا اريد حيوتى بعد ما اشتهرا

۞.....ऐ साहिबे राज़ ! राज़ ज़ाहिर हो गया, अब मैं इस इफ़्शाए राज़ और शोहरत के बा'द ज़िन्दगी नहीं चाहता। फिर कहा : ऐ इलाही ! मुझे मौत दे दे। और गिर कर मर गया।

वाक़ेई सालेह, आशिक़ और तालिबे मौला लोगों के हालात ऐसे ही थे।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दोस्त की फ़रमाइश

'ज़हरुर्रियाज़' में है कि मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक अज़ीज़ दोस्त था, एक दिन आप से कहने लगा : ऐ मूसा ! मेरे लिये दुआ कर दीजिये कि **अल्लाह** तआला मुझे अपनी मा'रिफ़त अता फ़रमाए। आप ने दुआ की, **अल्लाह** तआला ने आप की दुआ क़बूल फ़रमाई और वोह दोस्त आबादी से किनारा कश हो कर पहाड़ों में वुहूश के साथ रहने लगा।

जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे न पाया तो रब तआला से इल्तिजा की : इलाही ! मेरा वोह दोस्त कहां गया ? रब तआला ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! जो मुझे सहीह मा'नों में पहचान लेता है वोह मख़्लूक़ की दोस्ती कभी पसन्द नहीं करता (इस लिये उस ने तुम्हारी और मख़्लूक़ की दोस्ती को तर्क कर दिया है।)

हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते ईसा और यह्या عَلَيْهِمَا السَّلَام इकट्ठे बाज़ार में जा रहे थे एक औरत ने इन्हें ज़ोर से हटाया, हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : रब की क़सम ! मुझे इस का पता ही नहीं चला, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : سُبْحٰنَ الله आप का बदन तो मेरे साथ है मगर दिल कहां है ? हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : ऐ ख़ाला के बेटे ! अगर मेरा दिल एक लम्हा भी ग़ैरे ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ हो जाए तो मैं समझता हूं मैं ने अपने रब को पहचाना ही नहीं।[1]

कहा गया है सच्ची मा'रिफ़त येह है कि इन्सान दुन्या व आख़िरत को छोड़ कर **अल्लाह** तआला का ही हो जाए और शराबे महब्बत का ऐसे जाम पिये कि **अल्लाह** तआला का दीदार किये बिग़ैर होश में न आए, ऐसा शख़्स ही हिदायत याब है।

۞...۞...۞...۞...۞

1.....

बाब 12

शैतान और इस का अ़ज़ाब

फ़रमाने इलाही है :

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْكٰفِرِیْنَ [1]

*पस अगर तुम ने **अल्लाह** और उस के रसूल की इत़ाअ़त से ए'राज़ किया तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें नहीं बख़्शेगा, न ही तुम्हारी तौबा क़बूल करेगा।*

जैसे कुफ़्र और तकब्बुर की वज्ह से शैतान की तौबा क़बूल न हुई और अपनी ग़लती का इक़रार करने, शर्मिन्दा होने और अपने नफ़्स को मलामत करने की वज्ह से आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा **अल्लाह** तआ़ला ने क़बूल फ़रमा ली।

अगर्चे क़ौले सह़ीह़ के मुत़ाबिक़ आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़क़ीक़तन कोई गुनाह नहीं किया था क्यूंकि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام नबुव्वत से सरफ़राज़ होने से क़ब्ल और बा'द हर ह़ाल में गुनाहों से पाक होते हैं लेकिन सूरत गुनाह की सी थी लिहाज़ा ह़ज़रते आदम व ह़व्वा عليهما السلام ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ किया :

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا٘ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ۝۲۳ [2]

आदम عَلَيْهِ السَّلَام अपनी ग़लती पर शर्मसार हुवे, **अल्लाह** की रह़मत के उम्मीदवार हुवे और तौबा में जल्दी की जैसा कि फ़रमाने इलाही है : "मेरी रह़मत से नाउम्मीद न हो।"[3]

लेकिन शैतान ने अपनी ग़लती को तस्लीम न किया, पशेमान न हुवा, अपने नफ़्स को मलामत न की, तौबा में जल्दी न की और तकब्बुर की वज्ह से रह़मते ख़ुदावन्दी से नाउम्मीद हो गया चुनान्चे, आज भी जिस किसी की कैफ़िय्यत इब्लीस की त़रह़ होगी उस की तौबा क़बूल नहीं होगी

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** को ख़ुश नहीं आते काफ़िर। (پ۳، اٰل عمران:۳۲)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुवे। (پ۸، الاعراف:۲۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की रह़मत से नाउम्मीद न हो। (پ۲۴، الزمر:۵۳)

मगर जो आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ करेगा उस की तौबा क़बूल हो जाएगी, क्यूंकि हर वोह गुनाह जिस का तअ़ल्लुक़ ख़्वाहिशाते इन्सानी से है, उस की बख़्शिश मुमकिन है और जिस गुनाह का तअ़ल्लुक़ तकब्बुर व खुदबीनी से हो उस की बख़्शिश की उम्मीद नहीं की जा सकती, शैत़ान की ग़लत़ी येही थी और आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़त़ा ख़्वाहिशे नफ़्स से थी।

हिकायत

एक मरतबा शैत़ान ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया और कहने लगा : आप को **अल्लाह** तआ़ला ने रसूल बनाया है और आप से कलाम फ़रमाता है। आप ने फ़रमाया : हां ! मगर तुम कौन हो और क्या कहना चाहते हो ? कहने लगा : मैं शैत़ान हूं, **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल कीजिये कि तेरी मख़्लूक़ तुझ से तौबा की त़ालिब है, **अल्लाह** तआ़ला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वह्य की, फ़रमाया : इस से कहो कि हम ने तेरी दरख़्वास्त को क़बूल किया मगर एक शर्त़ के साथ कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र पर जा कर सजदा कर ले, जब तू सजदा कर लेगा मैं तेरी तौबा क़बूल कर लूंगा और तेरे गुनाहों को मुआ़फ़ कर दूंगा।

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जब शैत़ान को येह बतलाया तो वोह ग़ुस्से से सुर्ख़ हो गया और अज़ राहे किब्र व ग़ुरूर कहने लगा : ऐ मूसा ! मैं ने तो आदम को जन्नत में सजदा नहीं किया तो अब उन की क़ब्र को कैसे सजदा कर लूं ?

रिवायत

शैत़ान को जहन्नम में शदीद अ़ज़ाब दे कर पूछा जाएगा : तू ने अ़ज़ाब को कैसा पाया ? जवाब देगा : बहुत सख़्त ! उसे कहा जाएगा : आदम रियाज़े जन्नत में हैं उन्हें सजदा कर ले और गुज़श्ता आ'माल पर मा'ज़िरत, ताकि तेरी बख़्शिश हो जाए, मगर शैत़ान सजदा करने से इन्कार कर देगा, फिर उस पर आ़म जहन्नमियों की निस्बत सत्तर हज़ार गुना ज़ियादा अ़ज़ाब भेजा जाएगा।

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** तआ़ला हर लाख साल बा'द शैत़ान को आग से निकाल कर उसे आदम को सजदे का हुक्म देगा मगर वोह बराबर इन्कार करता रहेगा और उसे बार बार जहन्नम में डाला जाता रहेगा।(1)

पस अगर तुम इब्लीस से नजात ह़ासिल करना चाहते हो तो रब्बे करीम के दामने रह़मत से चिमट जाओ और उसी से पनाह मांगो। जब क़ियामत का दिन होगा, शैत़ान के लिये आग की कुरसी रखी जाएगी, वोह उस पर बैठेगा, तमाम शैत़ान और काफ़िर वहां जम्अ़ हो जाएंगे शैत़ान

(1) ......تفسیر روح البیان، البقرة، تحت الآیة:٣٤، ١/١٠٥

गधे की त़रह़ चीख़ते हुवे कहेगा : ऐ जहन्नमियो ! तुम ने अपने रब के वा'दे को कैसा पाया ? सब कहेंगे : बिल्कुल सच पाया। फिर वोह कहेगा : मैं आज के दिन **अल्लाह** की रह़मत से नाउम्मीद हो गया हूं। तब **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से फ़िरिश्तों को हुक्म होगा कि इस पर इस की पैरवी करने वालों पर आग के डन्डे बरसाओ, पस वोह कभी भी वहां से निकलने का हुक्म नहीं सुनेंगे (हमेशा वहां रहेंगे)।

एक रिवायत है : शैत़ान को क़ियामत के दिन लाया जाएगा और उस के गले में ला'नत का त़ौक़ पहना कर आग की कुरसी पर बिठाया जाएगा। **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम के फ़िरिश्तों को हुक्म देगा : इस की कुरसी को जहन्नम में धकेल दो मगर वोह कोशिश के बा वुजूद ऐसा नहीं कर सकेंगे, तब जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को अस्सी हज़ार फ़िरिश्तों के साथ उसे धकेलने का हुक्म मिलेगा मगर वोह भी बे बस हो जाएंगे, फिर इस्राफ़ील फिर इ़ज़्राईल को फ़िरिश्तों की अस्सी हज़ार की जमाअ़त के साथ हुक्म मिलेगा मगर वोह भी नहीं धकेल सकेंगे। इरशादे बारी होगा : अगर मेरे पैदा कर्दा फ़िरिश्तों से दुगने फ़िरिश्ते भी आ जाएं तो भी इसे नहीं हिला सकेंगे क्यूंकि इस के गले में ला'नत का त़ौक़ पड़ा हुवा है (इस के बोझ के बाइ़स येह यहां से जुम्बिश नहीं कर सकता)।

मुख़्तलिफ़ आस्मानों पर शैत़ान के नाम

शैत़ान का नाम पहले आस्मान पर आ़बिद, दूसरे पर ज़ाहिद, तीसरे पर आ़रिफ़, चौथे पर वली, पांचवें पर मुत्तक़ी, छटे पर ख़ाज़िन, सातवें पर अ़ज़ाज़ील और लौह़े मह़फ़ूज़ पर इब्लीस था, वोह अपनी आ़क़िबत से बे फ़िक्र था।

जब उसे ह़ज़रते आदम को सजदा करने का हुक्म मिला तो कहने लगा : ऐ **अल्लाह** ! तू ने इसे मुझ पर फ़ज़ीलत दे दी ह़ालांकि मैं इस से बेहतर हूं, तू ने मुझे आग से और इसे मिट्टी से पैदा किया है, ख़ुदावन्दे तआ़ला ने फ़रमाया : मैं जो चाहता हूं वोह करता हूं। शैत़ान ने अपने आप को आदम عَلَيْهِ السَّلَام से बेहतर समझा और नंगो तकब्बुर की वज्ह से आदम से मुंह फेर कर खड़ा हो गया। जब फ़िरिश्ते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा कर के उठे तो उन्हों ने देखा कि शैत़ान ने सजदा नहीं किया तो वोह दोबारा सजदए शुक्र में गिर गए लेकिन शैत़ान उन से बे तअ़ल्लुक़ खड़ा रहा और उसे अपने इस फ़े'ल पर कोई पशेमानी न हुई, तब **अल्लाह** तआ़ला ने उस की सूरत मस्ख़ कर दी ख़िन्ज़ीर की त़रह़ लटका हुवा मुंह, सर ऊंट के सर की त़रह़, सीना बड़े ऊंट की कोहान जैसा, उन के दरमियान चेहरा ऐसे जैसे बन्दर का चेहरा, आंखें खड़ी, नथने हजाम के कूज़े जैसे खुले हुवे, होंट बेल के होंटों की त़रह़ लटके हुवे, दांत ख़िन्ज़ीर की त़रह़ बाहर निकले हुवे और दाढ़ी

में सिर्फ़ सात बाल, इसी सूरत में उसे जन्नत से नीचे फेंक दिया गया बल्कि आस्मानो ज़मीन से जज़ाइर की त़रफ़ फेंक दिया गया, वोह अब अपने कुफ़्र की वज्ह से ज़मीन पर छुपे छुपे आता है और क़ियामत तक के लिये ला'नत का मुस्तहि़क़ बन गया है। शैत़ान कितना ख़ूब सूरत, ह़सीन, कसीरुल इ़ल्म, कसीरुल इ़बादत, मलाइका का सरदार, मुक़र्रिबीन का सरख़ील था मगर उसे कोई चीज़[1] **अल्लाह** के ग़ज़ब से न बचा सकी, बेशक इस में अ़क़्लमन्दों के लिये इ़ब्रत है।

एक रिवायत में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने शैत़ान की गिरिफ़्त की तो जिब्राईल व मीकाईल रोने लगे, रब ने फ़रमाया : क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! तेरी गिरिफ़्त के ख़ौफ़ से रोते हैं। इरशाद हुवा : इसी त़रह़ मेरी गिरिफ़्त से रोते रहना।[2]

अवलादे आदम पर शैत़ान का ग़लबा

शैत़ान ने **अल्लाह** से कहा : ऐ **अल्लाह** ! तू ने मुझे जन्नत से निकाला तो आदम के सबब अब मुझे अवलादे आदम पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमा ! रब तआ़ला ने फ़रमाया : मैं ने तुझे अम्बिया के सिवा, जिन की इ़स्मत मुसल्लम है, आदम की अवलाद पर ग़लबा दिया। शैत़ान बोला कुछ और ! रब ने फ़रमाया : जितनी आदम की अवलाद होगी उतनी ही तेरी अवलाद होगी। शैत़ान बोला : कुछ और ! ख़ुदावन्दे कौनैन ने फ़रमाया : मैं ने उन के सीनों को तेरा मस्कन बनाया तू उन में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करेगा। अ़र्ज़ की : कुछ और ! फ़रमाने इलाही हुवा : अपने सुवार और प्यादा मददगारों से इमदाद मांग कर उन्हें माले ह़राम की कमाई पर आमादा करना, उन्हें अय्यामे हैज़ वग़ैरा में मुजामअ़त से अवलादे ह़राम का ह़क़दार बनाना और ह़राम कारी के अस्बाब मुहय्या करना, उन्हें मुशरिकाना नाम ता'लीम करना जैसे अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा वग़ैरा, उन्हें गन्दी गुफ़्तगू, बुरे अफ़्आ़ल और झूटे मज़ाहिब के ज़रीए़ गुमराह करना, उन्हें झूटी तसल्लियां देना जैसे मा'बूदाने बात़िला की शफ़ाअ़त, आबाओ अजदाद की करामतों पर फ़ख़्र, त़वील उम्मीदों के ज़रीए़ तौबा में ताख़ीर वग़ैरा और येह सब कुछ तहदीद के त़ौर पर था जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ (3) *तुम जो चाहो, करो।*

1.....किब्र, मुनाज़रा, हुज्जत, मुवाहि़दिय्यत।

2.....اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِیْدٌ (मुतर्जम) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तेरे रब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है। (پ۳۰، البروج:۱۲)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो जी में आए करो। (پ۲۴،حم السجدة:۴۰)

आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! तू ने मेरी अवलाद पर इब्लीस को मुसल्लत् कर दिया, अब इस से रिहाई तेरी रह्मत के बिग़ैर कैसे होगी ! रब ने फ़रमाया : तेरे हर एक फ़रज़न्द के साथ मैं मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते बनाऊंगा। अर्ज़ की : अभी कुछ और ! फ़रमाने इलाही हुवा : एक नेकी का सवाब उन्हें दस गुना मिलेगा। अर्ज़ की : अभी कुछ और ! फ़रमाने इलाही हुवा : उन के आख़िरी सांस तक उन की तौबा क़बूल करूंगा। अर्ज़ की, कि कुछ और अता फ़रमा ! फ़रमाने इलाही हुवा : उन के लिये बख़्शिश आम कर दूंगा, मैं बे नियाज़ हूं, आदम عَلَيْهِ السَّلَام बोले : ऐ मेरे रब ! येह काफ़ी है।

शैतान ने कहा : ऐ **अल्लाह** ! तू ने आदम की अवलाद में नबी बनाए, उन पर किताबें नाज़िल कीं, मेरे रसूल और किताबें क्या हैं ? जवाब आया : काहिन तेरे रसूल और गुदी हुई खालें तेरी किताबें, तेरी हदीसें झूट, तेरा क़ुरआन शे'र[1] तेरे मुअज़्ज़िन बाजे, तेरी मस्जिद बाज़ार, तेरा घर हम्माम ख़ाने, तेरा खाना वोह जिस पर मेरा[2] नाम न लिया गया हो, तेरा पीना शराब और औरतें तेरा जाल हैं।

अच्छा गुमान इबादत है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ या'नी हुस्ने ज़न उम्दा इबादत से है। (ابوداود، ٤/٣٨٨، الحديث ٤٩٩٣)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मतालिब बयान करते हुवे लिखते हैं : या'नी मुसलमानों से अच्छा गुमान करना, उन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक इबादत है।

(मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह, 6/621)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बद गुमानी का मरज़ आम है इस से बचना चाहिये और मुसलमान के बारे में अच्छा गुमान कर के सवाब कमाना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बद गुमानी से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

1.....गन्दे, वाहियात और इस्लाम की मुख़ालफ़त में अश्आर।
2.....जिस जानवर पर ज़ब्ह के वक़्त **अल्लाह** का नाम न लिया जाए।

बाब 13

अमानत

फ़रमाने इलाही है :

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا (1)

अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर अमानत पेश की वोह उसे संभालने के लिये आमादा न हुवे ।

उन्हें ख़ौफ़ हुवा कि वोह इस अमानत का ह़क़ अदा न कर सकेंगे और अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ होंगे या उन्हें ख़यानत का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा । इस आयते करीमा में अमानत के मा'ना ऐसी इबादत और फ़राइज़ हैं जिन की अदाएगी और अ़दमे अदाएगी से सवाब व अ़ज़ाब वाबस्ता और मुतअ़ल्लिक़ है ।

क़ुरत़ुबी का क़ौल है : अमानत दीन की तमाम शराइत़ व इबादात का नाम है । येह जमहूर का क़ौल है और क़ौले सह़ीह़ है, इस की तफ़्सील में कुछ इख़्तिलाफ़ है । इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ौल है : येह माल की अमानत है जैसे अमानत रखा हुवा माल वग़ैरा । इन से येह भी मरवी है कि फ़राइज़ में सब से अहम माल की अमानत है ।

अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ौल है कि ग़ुस्ले जनाबत अमानत है । इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का क़ौल है कि सब से पहले अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की शर्मगाह को पैदा किया और फ़रमाया येह अमानत है जो मैं तुझे दे रहा हूं, इसे बे राह रवी से बचाना, अगर तू ने इस की ह़िफ़ाज़त की तो मैं तेरी ह़िफ़ाज़त करूंगा, लिहाज़ा शर्मगाह अमानत है, कान अमानत है, ज़बान अमानत है, पेट अमानत है, हाथ और पैर अमानत हैं और जिस में अमानत नहीं उस का ईमान नहीं ।

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है : जब अमानत आस्मानों, ज़मीन और पहाड़ों पर पेश की गई, तो येह तमाम मज़ाहिरे काइनात और जो कुछ इन में है, सख़्त बे चैन हो गए । अल्लाह तआ़ला ने इन से फ़रमाया : अगर तुम अच्छे अ़मल करोगे, तो तुम को अज्र मिलेगा और अगर बुरे काम करोगे तो मैं अ़ज़ाब दूंगा तो इन्हों ने इस के उठाने से इन्कार कर दिया ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो इन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया । (پ ٢٢، الاحزاب:٧٢)

मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने आदम عَلَیْهِ السَّلَام को पैदा किया और इस पर अमानत पेश की और येही कहा गया तो उन्हों ने कहा : मैं इस बार को उठाता हूं।

येह बात समझ लीजिये कि ज़मीनो आस्मान और पहाड़ो को अमानत लेने न लेने का इख़्तियार दिया गया था, उन्हें मजबूर नहीं किया गया था, अगर उन के लिये ज़रूरी क़रार दिया गया होता तो ला मह़ाला उन्हें येह बारे अमानत उठाना पड़ता।

क़फ़्फ़ाल वग़ैरा का क़ौल है कि इस आयत में "عَرَضْ" से एक मिसाल दी गई है कि ज़मीनो आस्मान और पहाड़ों पर इन की बे पनाह जसामत के बा वुजूद शरीअ़ते मुत़हहरा के अह़कामात की ज़िम्मेदारी अगर इन पर डाली जाती तो येह अ़ज़ाब व सवाब की वज्ह से इन पर गिरां गुज़रती क्यूंकि येह तक्लीफ़ ही ऐसी मोहतम बिश्शान है कि ज़मीनो आस्मान और पहाड़ों का आ़जिज़ आ जाना ऐन मुमकिन है मगर इसे इन्सान ने क़बूल कर लिया चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है : وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ[1] आदम عَلَیْهِ السَّلَام पर उस वक़्त येह अमानत पेश की गई जब कि मीसाक़ के वक़्त उन की अवलाद को उन की सुल्ब से नन्ही मुन्ही सूरतों में निकाला गया तो आदम ने येह बारे अमानत क़बूल कर लिया, फ़रमाने इलाही है : اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۙ[2] इन्सान ने इस बारे अमानत को उठा कर अपने आप पर ज़ुल्म किया और वोह इस बारे गिरां का अन्दाज़ा न कर सका।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का क़ौल है : येह अमानत आदम عَلَیْهِ السَّلَام पर पेश की गई और फ़रमान हुवा इसे मुकम्मल तौ़र पर ले लो, अगर तुम ने इत़ाअ़त की तो तुम्हें बख़्श दूंगा, अगर ना फ़रमानी की तो अ़ज़ाब दूंगा, आदम عَلَیْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : इलाहल आ़लमीन ! मैं ने इसे मुकम्मल तौ़र पर क़बूल किया और उसी दिन अ़स्र से रात तक का वक़्त ही गुज़रा था कि उन्हों ने शजरए (ममनूआ़) को खा लिया। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अपनी रह़मत में ले लिया। आदम عَلَیْهِ السَّلَام ने तौबा की और सिराते़ मुस्तक़ीम पर गामज़न हो गए।

अमानत के मा'ना

अमानत ईमान से मुश्तक़ है, जो शख़्स अमानते ख़ुदावन्दी की ह़िफ़ाज़त करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के ईमान का मुह़ाफ़िज़ होता है, फ़रमाने नबवी है : उस का ईमान नहीं जिस में अमानत नहीं और उस का दीन नहीं जिस में अ़हद की पासदारी नहीं।[3]

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आदमी ने उठा ली। (پ۲۲، الاحزاب:۷۲)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है। (پ۲۲، الاحزاب:۷۲)

3......شعب الایمان ، الباب الثانی والثلاثون من شعب الایمان ، باب فی الایفاء...الخ، ٤/٧٨، الحدیث ٤٣٥٤

एक शाइर कहता है :

تبا لمن رضى الخيانة مهيعا　　وازور عن صون الامانة جانبه

رفض الديانة والمروة فاغتدى　　تترى عليه من الز مان مصائبه

《1》......ख़ुदा उस को हलाक करे जो ख़ियानत को अपनी पनाह गाह बनाए और अमानत की हिफ़ाज़त से पहलू तही करे।

《2》.....उस ने दियानत व मुरव्वत को ख़ैरबाद कह दिया तो उस पर ज़माने के पे दर पे मसाइब आने लगे।

दूसरा शाइर कहता है :

اخلق بمن رضى الخيانة شيمة　　ان لايرى الا صريع حوادث

مازالت الارزاء ينزل بؤ سها　　ابدا بغادر ذمة اوناكث

《1》......जो ख़यानत को अपनी आ़दत बना ले वोह इस लाइक़ है कि ह़वादिसे ज़माना का शिकार हो जाए।

《2》......जो शख़्स बद अ़हदी या अ़हद शिकनी करता है, उस पर मुसलसल मसाइब नाज़िल होते रहते हैं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी उम्मत उस वक़्त तक भलाई पर रहेगी, जब तक वोह अमानत को माले ग़नीमत और सदक़े को तावान न समझे।"[1]

आप का फ़रमान है : "जिस ने तुझे अमीन बनाया उस को अमानत लौटा दे और जिस ने तेरे साथ ख़यानत की उस के साथ ख़यानत न कर।"[2]

बुख़ारी व मुस्लिम ने इस को रिवायत किया है : "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं, जब वोह बात करता है झूट बोलता है, वा'दा करता है तो ख़ल्फ़े अ़हद करता है, अमीन बनाया जाए तो ख़ियानत करता है।[3] या'नी जब कोई उसे किसी बात का राज़दार बनाता है तो दूसरे लोगों को बतला देता है या अमानत लौटाने से इन्कार कर देता है या अमानत का तह़फ़्फ़ुज़ नहीं कर पाता या उसे अपने इस्ति'माल में लाता है वग़ैरा। हिफ़्ज़े अमानत मुक़र्रब फ़िरिश्तों, अम्बियाए किराम और नेक बन्दों की सिफ़त है, फ़रमाने इलाही है :

---

1 ...... كنز العمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال...الخ، ٢/٣٠، الجزء الثالث، الحديث ٥٥٠١

2 ......ابوداود، كتاب الاجارة، باب فى الرجل ياخذ حقه...الخ ، ٣/٤٠٤، الحديث ٣٥٣٤

3 ...... بخارى ، كتاب الايمان، باب علامة المنافق، ١/٢٤، الحديث ٣٣

إِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ[1] *अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है तुम अमानतें उन के मालिकों को लौटाओ ।*

मुफ़स्सिरीने किराम कहते हैं : इस आयते करीमा में बहुत से अह़कामे शरई मौजूद हैं और इस का ख़िताब उ़मूमी तौ़र पर तमाम वालियों (हाकिमों) से है, इस लिये वालियों के लिये ज़रूरी है कि मज़्लूम के साथ इन्साफ़ करें, इज़्हारे हक़ से न रुकें क्यूंकि येह उन के पास अमानत है, उ़मूमी तौ़र पर तमाम मुसलमानों और ख़ुसूसी तौ़र पर यतीमों के माल की हिफ़ाज़त करें ।

उ़लमा के लिये लाज़िम है कि वोह लोगों को दीनी अह़कामात की ता'लीम दें क्यूंकि उ़लमा ने इस बारे अमानत को उठाने का अ़हद किया है । बाप के लिये लाज़िम है कि वोह अपनी अवलाद के साथ हुस्ने सुलूक करे और इसे अच्छी ता'लीम दे क्यूंकि येह उस के पास अमानत है । फ़रमाने नबवी है :

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَّ كُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ[2] तुम में से हर एक हाकिम है और हर एक अपनी रिआ़या के बारे में जवाब देह है । (पस तुम से तुम्हारी रइय्यत के बारे में सुवाल किया जाएगा ।)

'**ज़हरुर्रियाज़**' में है क़ियामत के दिन एक इन्सान को **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में पेश किया जाएगा, ख़ुदावन्द عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तू ने फ़ुलां शख़्स की अमानत वापस की थी ? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : नहीं ! रब तआ़ला हुक्म देगा और फ़िरिश्ता उसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाएगा । वहां वोह जहन्नम की गहराई में उस अमानत को रखा हुवा देखेगा, वोह उस अमानत की त़रफ़ गिरेगा और सत्तर साल के बा'द वहां पहुंचेगा, फिर वोह अमानत उठा कर ऊपर आएगा, जब वोह जहन्नम के किनारे पर पहुंचेगा तो उस का पाउं फिसल जाएगा और वोह फिर जहन्नम की गहराई में गिर जाएगा । इसी त़रह़ वोह गिरता रहेगा और चढ़ता रहेगा यहां तक कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से उसे रब्बे ज़ुल जलाल की रह़मत ह़ासिल हो जाएगी और अमानत का मालिक उस से राज़ी हो जाएगा ।

क़र्ज़ के सिवा शहीद का हर गुनाह मुआ़फ़ हो जाता है

ह़ज़रते सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि हम नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते वाला में ह़ाज़िर थे कि एक जनाज़ा लाया गया ताकि नमाज़ अदा की जाए हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो । (پ٥، النساء:٥٨)

2.....بخاری کتاب الجمعة، باب الجمعة فی القری والمدن، ١/٣٠٩، الحديث ٨٩٣، ملخصًا

ने पूछा : इस पर कोई क़र्ज़ है ? अ़र्ज़ किया गया : हां या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) ! आप ने फिर पूछा : इस ने कुछ छोड़ा है ? अ़र्ज़ की गई : तीन दीनार, तब आप ने नमाज़ पढ़ाई। एक और जनाज़ा लाया गया, आप ने पूछा : क्या इस पर क़र्ज़ है ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! नहीं, आप ने नमाज़ पढ़ाई, फिर तीसरा जनाज़ा लाया गया, आप ने पूछा : क्या इस पर क़र्ज़ है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ किया : जी हां या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : इस ने कुछ माल भी छोड़ा है ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह नहीं, उस वक़्त आप ने सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) से इरशाद फ़रमाया : तुम इस की नमाज़ पढ़ लो, लेकिन आप ने नहीं पढ़ी।[1]

ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : एक जवान ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : अगर मैं राहे खुदा में शाकिरो साबिर, ईमान और उम्मीदे सवाब ले कर आगे बढ़ता हुवा शहीद हो जाऊं तो **अल्लाह** तआ़ला मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ कर देगा ? आप ने फ़रमाया : हां ! जब वोह जवान ख़िदमत से रुख़्सत हो गया तो आप ने उसे बुला कर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला क़र्ज़ के सिवा शहीद के हर गुनाह को मुआ़फ़ कर देता है।[2]

मिल कर खाने की फ़ज़ीलत

एक ही दस्तरख़्वान पर मिल कर खाने वालों को मुबारक हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह बात सब से ज़ियादा पसन्द है कि वोह बन्दए मोमिन को बीवी बच्चों के साथ दस्तरख़्वान पर बैठ कर खाता देखे, क्यूंकि जब सब दस्तरख़्वान पर जम्अ़ होते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को रह़मत की निगाह से देखता है और जुदा होने से पहले पहले उन सब को बख़्श देता है। (تنبیہ الغافلین، ص۳۴۳)

---

1 ......بخاری، کتاب الحوالات، باب ان احال دین المیت...الخ، ۲/۷۲، الحدیث ۲۲۸۹ (بالتقدیم والتاخیر)

2 ......شرح السنة، کتاب البیوع، باب التشدید فی الدین، ۴/۳۵۰، الحدیث ۲۱۳۷ (راوی ابوقتادہ)

बाब 14

नमाज़ में खुशूअ़ व खुज़ूअ़

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡنَ هُمۡ فِیۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ (1) *वोह मोमिन नजात पाएंगे जो अपनी नमाज़ खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के साथ अदा करते हैं।*

उ़लमा ने फ़रमाया है कि खुशूअ़ दो मा'नों में मुस्ता'मल है : बा'ज़ उ़लमा ने इसे अफ़्आ़ले क़ल्ब में शुमार किया है जैसे डर, ख़ौफ़, इम्बिसात़ वग़ैरा और बा'ज़ ने इसे आ'ज़ाए ज़ाहिरी के अफ़्आ़ल में शुमार किया है जैसे इत़मीनान से खड़ा होना, बे तवज्जोगी और बे परवाई से बचना वग़ैरा। खुशूअ़ के मा'ना में एक येह भी इख़्तिलाफ़ है कि येह नमाज़ के फ़राइज़ में से है या फ़ज़ाइल में से, जो इसे फ़राइज़े नमाज़ से समझते हैं इन की दलील येह ह़दीस है :

لَيْسَ لِعَبْدٍ مِنْ صَلٰوتِهِ اِلَّا مَا عَقَلَ (2) बन्दे के लिये नमाज़ में वोही कुछ है जिसे वोह अच्छी त़रह समझता है। और फ़रमाने इलाही है : (3) وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكۡرِیۡ ﴿۱۴﴾ और ग़फ़्लत ज़िक्र के मुख़ालिफ़ है जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

وَلَا تَكُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِیۡنَ ﴿۲۰۵﴾ (4) *तुम ग़ाफ़िलीन में से न बनो।*

(इस दलील को इन्हों ने फ़राइज़े नमाज़ में शुमार किया है)

बैहक़ी ने मुह़म्मद बिन सीरीन رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से येह रिवायत नक़्ल की है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब नमाज़ अदा फ़रमाते तो आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते, तब येह आयत(5) नाज़िल हुई।(6) अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इस रिवायत में इतना इज़ाफ़ा किया है कि आप को खुशूअ़ का हुक्म

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं। (پ۱۸، المؤمنون:۱،۲)

2.....فيض القدير شرح الجامع الصغير، حرف الراء، ۴/۲۱، تحت الحديث ۴۴۰۵

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख। (پ۱۶، طٰہٰ:۱۴)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ग़ाफ़िलों में न होना। (پ۹، الاعراف:۲۰۵)

5.....या'नी बाब की इब्तिदा में ज़िक्र कर्दा आयत :

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡنَ هُمۡ فِیۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ ۔ (پ۱۸، المؤمنون:۱،۲)

6.....

दिया गया चुनान्चे, इस के बा'द से आप ने अपनी चश्महाए मुक़द्दस को सजदागाह पर मरकूज़ फ़रमा दिया।(1)

हाकिम और बैहक़ी ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ पढ़ते तो आस्मान की तरफ़ नज़र फ़रमाते, जिस पर येह आयत नाज़िल हुई, तब आप ने अपने सरे अक़्दस को झुका लिया।(2)

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : पांच नमाज़ों की मिसाल ऐसी है जैसे तुम में से किसी के घर के सामने एक बड़ी नहर बहती हो और वोह उस में रोज़ाना पांच मरतबा गुस्ल करता हो तो क्या उस के जिस्म पर मेल रहेगा ?(3) लिहाज़ा जब हुज़ूरे क़ल्ब और ख़ुशूअ से नमाज़ पढ़ी जाए तो इन्सान कबीरा गुनाहों के इलावा तमाम गुनाहों से पाक हो जाता है, बिग़ैर ख़ुशूअ के नमाज़ रद्द कर दी जाती है। फ़रमाने नबवी है : जिस ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और उस के दिल में किसी क़िस्म का दुन्यावी ख़याल नहीं आया तो उस के गुज़श्ता तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(4) (हुज़ूरे क़ल्ब से अगर नमाज़ अदा की)

फ़रमाने नबवी है : नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत, हज का हुक्म, तवाफ़ व मनासिके हज का हुक्म **अल्लाह** तआला के ज़िक्र के लिये दिया गया है, अब अगर इन की अदाएगी के वक़्त दिल में ज़िक्रे ख़ुदा की अज़मत व हैबत न हो तो इस इबादत की कोई क़ीमत नहीं।(5)

फ़रमाने नबवी है : जिसे नमाज़ ने फ़ोहूश और बुरे कामों से नहीं रोका वोह **अल्लाह** तआला से दूर ही होता जाएगा।(6)

हज़रते बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : ऐ इन्सान ! अगर तू अपने मालिक के हुज़ूर बिग़ैर इज़्न के हाज़िर होना और बिग़ैर किसी तर्जुमान के गुफ़्तगू करना चाहता है तो उस के

---

1 ......المصنف لعبد الرزاق ، كتاب الصلاة ، باب رفع الرجل بصره الى السماء، ٢/١٦٥، الحديث ٣٢٦٧

2 ......المستدرك للحاكم ، كتاب التفسير ، باب شرح معنى الخشوع ، ٣/١٥٣، الحديث ٣٥٣٥

3 ......مسلم ، كتاب المساجد...الخ، باب المشى الى الصلاة...الخ، ص ٣٣٦، الحديث٢٨٣ـ (٦٦٧) و ٢٨٤ـ (٦٦٨)

4 .....इन अल्फ़ाज़ के साथ हमें हदीस नहीं मिली अलबत्ता बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में तहिय्यतुल वुज़ू से मुतअ़ल्लिक़ येह फ़ज़ीलत बयान हुई है जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है :

مَنْ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوئِى هٰذَا ، ثُمَّ صَلّٰى رَكْعَتَيْنِ،لَايُحَدِّثُ فِيْهِمَا نَفْسَهُ،غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

(بخارى،كتاب الوضوء، باب الوضوء ثلاثا ثلاثا، ١/٧٨، الحديث ١٥٩)

5 ......ابوداود، كتاب المناسك ، باب فى الرمل ، ٢ /٢٦٠، الحديث ١٨٨٨ و قوت القلوب، ج٢،ص ١٦٢

6 ......المعجم الكبير، ١١/٤٦، الحديث ١١٠٢٥

दरबार में दाख़िल हो जा, पूछा गया : येह कैसे होगा ? इन्हों ने जवाब दिया : वुज़ू को मुकम्मल कर ले, फिर मस्जिद में चला जा अब तू **अल्लाह** के दरबार में आ गया, अब बिग़ैर किसी तर्जुमान के गुफ़्त्गू कर।

हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इरशाद है : हम और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आपस में बातें करते थे, जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो **अल्लाह** तआला की अज़मत की वज्ह से हम ऐसे हो जाते जैसे एक दूसरे को पहचानते भी नहीं।(1)

फ़रमाने नबवी है : **अल्लाह** तआला उस नमाज़ की तरफ़ नहीं देखता जिस में इन्सान का दिल उस के बदन के साथ शामिले इबादत नहीं होता।(2)

हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो काफ़ी फ़ासिले से उन के दिल की धड़कन सुनी जाती, हज़रते सईद तनोख़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब नमाज़ पढ़ते तो उन के आंसू उन के चेहरे और दाढ़ी पर गिरते रहते। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आदमी को देखा तो हालते नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेल रहा था। आप ने फ़रमाया : अगर इस के दिल में ख़ुशूअ होता तो इस के आ'ज़ा पुर सुकून होते।(3)

हज़रते अली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़

जब नमाज़ का वक़्त आता तो हज़रते अली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे का रंग मुतग़य्यिर हो जाता और आप पर लर्ज़ा तारी हो जाता, पूछा गया : ऐ अमीरल मोमिनीन ! आप को क्या हो गया है ? आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला की उस अमानत की अदाएगी का वक़्त आ गया जिसे **अल्लाह** तआला ने आस्मानो ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया था मगर उन्हों ने मा'ज़ूरी ज़ाहिर कर दी थी और मैं ने इसे उठा लिया।

रिवायत है कि जब अली बिन हुसैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) वुज़ू करते तो उन का रंग मुतग़य्यिर हो जाता , घर वाले कहते : आप को वुज़ू के वक़्त क्या तक्लीफ़ लाहिक़ हो जाती है ? आप जवाब देते : जानते नहीं हो मैं किस की बारगाह में हाज़िर होने की तय्यारी कर रहा हूं।

हज़रते हातिमे असम्म से उन की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया, उन्हों ने कहा : जब नमाज़ का वक़्त आ जाता है, मैं पूरी तरह वुज़ू कर के उस जगह आ जाता हूं जहां मैं

1 ...... فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۳/۱۱٤، تحت الحدیث ۲۸۲۱

2 ...... الترغیب والترھیب، کتاب الصلاۃ، الترھیب من عدم اتمام الرکوع ...الخ، ۱/۲٤٤، الحدیث ۷۷۳ و روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ:٤۳، ۱/۱۲۲ وطبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ٦/۲۹٤

3 ...... کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی...الخ، مکروھات متفرقۃ، ۷/۹٤، الجزء الثامن، الحدیث ۲۲۵۲۰

नमाज़ पढ़ना चाहता हूं, जब मेरे आ'ज़ा पुर सुकून हो जाते हैं तो मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं। उस वक़्त का'बे को अपने सामने, पुल सिरात़ को क़दमों के नीचे, जन्नत को दाएं, दोज़ख़ को बाएं, मलकुल मौत को पीछे और इस नमाज़ को अपनी आख़िरी नमाज़ समझ कर ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान खड़ा हो जाता हूं दिल से तस्दीक़ करते हुवे तक्बीर कहता हूं, ठहर ठहर कर तिलावत करता हूं, तवाज़ोअ़ के साथ रुकूअ़ करता हूं, ख़ुशूअ़ के साथ सजदा करता हूं, बाईं रान पर बैठता हूं, बाएं पैर को बिछाता और दाएं को खड़ा करता हूं और सरापा ख़ुलूस बन जाता हूं मगर येह नहीं जानता कि मेरी नमाज़ क़बूल हुई या नहीं।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ौल है : ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ की दो रक्अ़तें सियाह दिल वाले की सारी रात की इ़बादत से बेहतर हैं।

फ़रमाने नबवी है : आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत के कुछ ऐसे लोग होंगे जो मस्जिदों में ह़ल्क़ा बना कर बैठेंगे, दुन्या और दुन्या की मह़ब्बत का ज़िक्र करते रहेंगे, उन की मजालिस में न बैठना अल्लाह तआ़ला को उन की कोई ज़रूरत नहीं है।(1)

नमाज़ में चोरी

हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम को बद तरीन चोर बताऊं ? सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर वोह कौन हैं ? आप ने फ़रमाया : वोह नमाज़ चुराने वाले हैं। अ़र्ज़ किया गया : हुज़ूर नमाज़ में चोरी कैसे होती है ? आप ने फ़रमाया : वोह रुकूअ़ और सजदा सह़ीह़ त़ौर पर नहीं करेंगे।(2)

फ़रमाने नबवी है : क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। अगर नमाज़ें पूरी होंगी तो हिसाब आसान हो जाएगा, अगर नमाज़ें कुछ कम होंगी तो

(1) ......المعجم الكبير، ١٩٩/١٠، الحديث ١٠٤٥٢

(2) ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابی قتادة الانصاری، ٣٨٦/٨، الحديث ٢٢٧٠٥ (عن ابی قتاده)

अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : अगर मेरे बन्दे के कुछ नवाफ़िल हों तो उन से इन नमाज़ों को पूरा कर दो ।(1)

फ़रमाने नबवी है : बन्दे के लिये दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ से बेहतर कोई और इन्आ़म नहीं है ।(2)

हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करते तो आप का जिस्म कांपने लगता और दांत बजने लगते । आप से इस बारे में पूछा गया तो आप ने कहा : अमानत की अदाएगी और फ़र्ज़ पूरा करने का वक़्त क़रीब आ गया है और मैं नहीं जानता कि इसे कैसे अदा करूंगा !

हिकायत

हज़रते ख़लफ़ बिन अय्यूब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नमाज़ में थे कि उन्हें किसी जानवर ने काट लिया और ख़ून बहने लगा मगर उन्हें मह़सूस न हुवा यहां तक कि इब्ने सईद बाहर आए और उन्हों ने आप को बताया और ख़ून आलूद कपड़ा धोया, पूछा गया : आप को जानवर ने काट लिया और ख़ून भी बहा मगर आप को मह़सूस न हुवा ? आप ने जवाब दिया : उसे कैसे मह़सूस होगा जो अल्लाह ذُوالْجَلَال के सामने खड़ा हो, उस के पीछे मलकुल मौत हो, बाईं त़रफ़ जहन्नम और क़दमों के नीचे पुल सिरात़ हो ।

हज़रते अ़म्र बिन ज़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जलीलुल क़द्र आ़बिद और ज़ाहिद थे, उन के हाथ में एक ऐसा ज़ख़्म पड़ गया कि अत़िब्बा ने कहा : इस हाथ को काटना पड़ेगा । आप ने कहा : काट दो, अत़िब्बा ने कहा : आप को रस्सियों से जकड़े बिग़ैर ऐसा करना ना मुमकिन है, आप ने कहा : ऐसा न करो बल्कि जब मैं नमाज़ शुरूअ़ करूं, तब काट लेना चुनान्चे, जब आप ने नमाज़ शुरूअ़ की तो आप का हाथ काट लिया गया मगर आप को मह़सूस भी न हुवा ।

❁...❁...❁...❁...❁

1 ......ابو داود ، کتاب الصلاۃ ، باب قول النبی کل صلاۃ...الخ، ۱/۳۲۹، الحدیث ۸٦٤ (بتغیر قلیل و ملخصًا)

2 ......المعجم الکبیر ، ۸/۱۵۱، الحدیث ۷٦۵٦

बाब 15

اَمر بِالْمَعْرُوْف وَنَهٰى عَنِ الْمُنْكَر

(नेकी करने और बुराई से बचने का हुक्म)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब कोई बन्दा मुझ पर एक मरतबा दुरूद भेजता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की सांसों से एक सफ़ेद बादल पैदा करता है, फिर उस बादल को बहूरे रह़मत से इस्तिफ़ादा करने का हुक्म मिलता है, इस के बा'द उसे बरसने का हुक्म मिलता है, उस का जो क़त़रा ज़मीन पर पड़ता है उस से **अल्लाह** तआ़ला सोना, जो पहाड़ों पर पड़ता है उस से चांदी पैदा करता है और जो क़त़रा किसी काफ़िर पर पड़ता है उसे ईमान की दौलत अ़त़ा होती है।[1]

फ़रमाने इलाही है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ط[2]

हज़रते कल्बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि इस आयत में उम्मते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम दूसरी उम्मतों पर फ़ज़ीलत का बयान है और उम्मते इस्लामिय्या अ़लल इत़लाक़ तमाम उमम से बेहतर है और दीगर उम्मतों की ब निस्बत इस की इब्तिदा व इन्तिहा दोनों बेहतर हैं अगर्चे ज़ाती त़ौर पर कुछ हस्तियां बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत व कमाल की मालिक थीं जैसे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस मौजूद हैं।

اُخْرِجَتْ का मा'ना है : जमीअ़ अवक़ात में लोगों के नफ़अ़ और ख़ैर ख़्वाही के लिये मुमताज़ हैसिय्यत दे कर उन्हें भेजा गया। फ़रमाने बारी है :

---

1 .....

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो। (پ ٤، اٰل عمران: ١١٠)

تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ जुम्ला मुस्तानिफ़ा है, इस में येह बयान किया गया है कि उम्मते इस्लामिय्या की फ़ज़ीलत इस लिये है कि वोह नेकी का हुक्म देते हैं, बुराई से रोकते हैं और **अल्लाह** पर ईमान रखते हैं, अगर वोह इस रास्ते से हट जाएं तो उन की फ़ज़ीलत बाक़ी नहीं रहेगी, वोह काफ़िरों से जिहाद करते हैं ताकि वोह इस्लाम ले आएं, इस लिये उन्हें ग़ैरों पर तरजीह़ दी गई, फ़रमाने नबवी है : "बेहतरीन इन्सान वोह है जो लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाता है और बद तरीन इन्सान वोह है जो लोगों को नुक़्सान पहुंचाता है।[1]

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ वोह **अल्लाह** की तौह़ीद की तस्दीक़ करते हैं और इस पर साबित क़दम रहते हैं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत का इक़रार करते हैं क्यूंकि जिस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत को न माना, उस ने **अल्लाह** तआ़ला को नहीं माना, इस लिये कि वोह हुज़ूर को अ़ता कर्दा मो'जिज़ा-बयां आयात को **अल्लाह** की त़रफ़ से नहीं समझता है।

फ़रमाने नबवी है : तुम में से जो कोई किसी बुराई को देखे उसे चाहिये कि कुव्वते बाज़ू से मिटा दे अगर इस की त़ाक़त न हो तो ज़बान से, अगर येह भी न कर सके तो इसे दिल में बुरा समझे और येह कमज़ोर तरीन ईमान है।"[2] या'नी येह ईमान वालों का कमज़ोर तरीन फ़े'ल है।

बा'ज़ ने येह कहा है : हाथों से बुराई का ख़त्म करना ह़ाकिमों के लिये, ज़बान से बुराई के ख़िलाफ़ जिहाद करना उ़लमा के लिये और दिल में बुरा समझना अ़वाम के लिये है।

बा'ज़ का क़ौल है : जो शख़्स जिस कुव्वत का मालिक हो उसे वोही कुव्वत उस के मिटाने में सर्फ़ करनी चाहिये और बुराई को मिटाना चाहिये। फ़रमाने इलाही है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ[3]

यहां "تَعَاوَنُوْا" से मुराद नेकी की तरग़ीब देना, नेकी के रास्तों को आसान करना और शरो फ़साद को ह़स्बे त़ाक़त बन्द करने की कोशिश करना है।

---

1 ......كنز العمال ،كتاب المواعظ والرقائق...الخ ، قسم الاقوال...الخ، ٨/٥٤، الجزء السادس عشر، الحديث ٤٤١٤٧
والموطاء لامام مالك ، ٢/٤٠٤ ، الحديث١٧١٩

2 ......مسلم ، كتاب الايمان، باب بيان كون النهى عن...الخ، ص ٤٤، الحديث ٧٨ـ (٤٩)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न करो। (پ٦،المائدة:٢)

एक ह़दीस शरीफ़ में इरशाद हुवा : जिस ने किसी ख़िलाफ़े सुन्नत बात पैदा करने वाले को झिड़क दिया अल्लाह तआ़ला उस के दिल को ईमान व इत़्मीनान से भर देगा और जो ऐसे शख़्स की तौहीन[1] करता है अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन बे ख़ौफ़ कर देगा और जिस ने नेकी का हुक्म दिया और बुराइयों से रोका वोह ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला, उस की किताब और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़लीफ़ा है।[2]

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है : अ़न क़रीब एक ऐसा वक़्त आने वाला है कि लोगों को नेकी का हुक्म देने वाले और बुराइयों से रोकने वाले मोमिन से, गधे का लाशा ज़ियादा पसन्दीदा होगा।

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! उस शख़्स का "बदला" क्या होगा जिस[3] ने अपने भाई को बुलाया, उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराइ से रोका ? रब ने फ़रमाया : उस के हर कलिमे के बदले साल की इ़बादत लिख दी जाती है और मेरी रह़मत को उसे जहन्नम में जलाते हुवे शर्म आती है।

ह़दीसे क़ुदसी है : रब तआ़ला फ़रमाता है : ऐ इन्सान ! उस जैसा न बन जो तौबा में ताख़ीर करता है, उम्मीदें त़वील रखता है और बिग़ैर किसी अ़मल के आख़िरत की त़रफ़ लौटता है, बातें नेकों की करता, अ़मल मुनाफ़िक़ों जैसा करता है, अगर उसे दिया जाए तो क़नाअ़त नहीं करता, अगर न दिया जाए तो सब्र नहीं करता, वोह दूसरों को बुराइयों से रोकता है मगर खुद नहीं रुकता।[4]

अख़ीर ज़माने के बारे में हुज़ूर का इरशाद

इस जगह एक ह़दीस बयान करना मुनासिब है, ह़दीस बयान करने से पहले इस के रावी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया है कि क़सम खुदा की ! आस्मान पर से गिरना मेरे वासित़े आसान है लेकिन हुज़ूर की त़रफ़ से कोई झूटी बात मन्सूब करना बहुत मुश्किल है, फिर ह़दीस

1.....मज़हब में बिदअ़ती वोह शख़्स है जो नए मज़हब का बानी या पैरू हो, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन खुद करे या तौहीन करने वालों का पैरू हो, इसी त़रह़ दीगर गुमराहियों का बानी हो या पैरू हो।

2.....येह काम उ़लमा और अहले इ़ल्म का है जाहिल का नहीं।

كنز العمال، كتاب الاخلاق...الخ، قسم الاقوال...الخ، ٢/٣٨، الجزء الثالث، الحديث ٥٥٩٦ و حلية الاولياء، ٨/٢١٧(١١٩٢٩) و مسند الشهاب، ١/٣١٨ و فردوس الاخبار، ٢/٢٩٨، الحديث ٦٢٤٣

3.....मुसलमान होना शर्त़ है।

4......كنز العمال، كتاب المواعظ والرقائق...الخ، قسم الاقوال...الخ، ٨/٨٦، الجزء السادس عشر، الحديث:٤٤٢٢٢ و فيه هذا قول على رضى الله عنه

बयान फ़रमाई : मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि अख़ीर ज़माने में नौ उम्र और कम समझ लोगों की एक जमाअ़त[1] निकलेगी, बातें ब ज़ाहिर अच्छी कहेंगे लेकिन ईमान उन के ह़ल्क़ से नीचे नहीं उतरेगा, वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है, पस तुम उन्हें जहां पाना क़त्ल कर देना कि क़ियामत के दिन उन के क़त्ल के लिये बड़ा अज्रो सवाब है।[2] (بخاری، ج۲،ص۲۲٤)

मोमिन के लिये ज़रूरी है कि दूसरों को नेकी का हुक्म देते वक़्त ख़ुद भी अ़मल करे

फ़रमाने नबवी है कि मैं ने मे'राज की रात ऐसे आदमी देखे जिन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे, मैं ने जिब्रील से पूछा : येह कौन लोग हैं? उन्हों ने कहा येह आप की उम्मत के ख़त़ीब हैं जो लोगों को नेकी का हुक्म करते हैं मगर अपने आप को भूल जाते हैं।[3] फ़रमाने इलाही है :

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (۴۴) [4]

क्या तुम नेकी का लोगों को हुक्म देते हो और अपने आप को भुलाते हो ह़ालांकि तुम क़ुरआन पढ़ते हो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते।

लिहाज़ा मोमिनों के लिये ज़रूरी है कि वोह नेकी का हुक्म दें बुराइयों से रोकें मगर अपने आप को भी न भूलें जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ [5]

मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं नेकी का हुक्म करते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ अदा करते हैं

---

1 .....ऐसी जमाअ़त से बचना चाहिये जिन की निशानी ना समझ लोग और इन के हमराह नौजवान भी होंगे और तब्लीग़ के नाम पर गश्त करते होंगे, उस जमाअ़त की अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने अपनी किताब 'तब्लीग़ी जमाअ़त' के आख़िर में 15 ह़दीसों की रोशनी में निशान देही फ़रमाई है।

2 ...... بخاری، کتاب استتابة المرتدین...الخ، باب قتل الخوارج...الخ، ٤/٣٨٠، الحدیث ٦٩٣٠

3 ......مسند امام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، ٤/٤٦١، الحدیث ١٣٤٢٠

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ह़ालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं। (پ۱،البقرة:٤٤)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं। भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें और नमाज़ क़ाइम रखें। (پ۱۰،التوبة:۷۱)

इस आयत में अल्लाह ने मोमिनों की येह सिफ़त बयान की वोह नेकी का हुक्म देते हैं। अब जो नेकी का हुक्म देना बन्द कर दे वोह इस ममदूह जमाअ़त में से नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला ने उन क़ौमों की मज़म्मत की है जिन्हों ने امر بالمعروف को छोड़ दिया था चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ (1)

हज़रते अबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है इन्हों ने कहा : नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना नहीं तो अल्लाह तआ़ला तुम पर ऐसा हाकिम मुक़र्रर कर देगा जो तुम्हारे बुज़ुर्गों का एह़तिराम नहीं करेगा, तुम्हारे बच्चों पर रह़्म नहीं करेगा, तुम्हारे बड़े बुलाएंगे लेकिन उन की बात नहीं मानी जाएगी, वोह मददगार त़लब करेंगे मगर उन की मदद नहीं की जाएगी और वोह बख़्शिश त़लब करेंगे मगर उन्हें नहीं बख़्शा जाएगा।(2)

उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा رضی اللہ تعالٰی عنہا से मरवी है : हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने क़रिया वालों पर अ़ज़ाब भेजा, उन में अस्सी हज़ार ऐसे भी थे जिन्हों ने अम्बिया की त़रह़ नेक अ़मल किये थे, पूछा गया : येह कैसे हुवा ? आप ने फ़रमाया : वोह अल्लाह के लिये (अल्लाह की नाफ़रमानी के सिलसिले में) किसी को बुरा नहीं समझते थे और न ही वोह नेकी का हुक्म देते और बुराइयों से रोकते थे।(3)

ज़मीन पर शुहदा से बुलन्द मर्तबा मुजाहिदीन

हज़रते अबू ज़र गिफ़्फ़ारी رضی اللہ تعالٰی عنہ कहते हैं कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से दरयाफ़्त किया : मुशरिकीन से लड़ने के इलावा कोई और भी जिहाद है ? हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : हां ऐ अबू बक्र ! अल्लाह की ज़मीन पर ऐसे मुजाहिदीन रहते हैं जो शुहदा से अफ़्ज़ल हैं, ज़मीन पर चलते फिरते हैं, रिज़्क़ पाते हैं अल्लाह तआ़ला मलाइका में उन पर फ़ख़्र करता है, उन के लिये जन्नत संवारी जाती है जैसे उम्मे सलमह

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आपस में एक दूसरे को न रोकते, ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे। (پ٦،المائدة:٧٩)

2......الكشف والبيان، ١٢٣/٣ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية، ٢٤٨/٣

3......تفسير روح البيان، ال عمران تحت الآية:١٠٤، ٧٤/٢ وطبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٣٢١/٦

को नबी (صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये संवारा गया। सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा हुज़ूर वोह कौन लोग हैं? आप ने फ़रमाया वोह नेकी का हुक्म करने वाले, बुराइयों से रोकने वाले, **अल्लाह** के लिये दुश्मनी और **अल्लाह** के लिये महब्बत करने वाले हैं।

फिर फ़रमाया : मुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, ऐसा शख़्स जन्नत में तमाम बालाख़ानों से ऊपर, यहां तक कि शुहदा के बालाख़ानों से भी ऊपर एक बालाख़ाने में होगा हर बालाख़ाने के तीन दरवाज़े होंगे, याकूत और सब्ज़ ज़ुमर्रुद के, हर दरवाज़े पर रोशनी होगी। तीन सो पाक दामन हूरों से उन की शादी की जाएगी, जब वोह किसी एक हूर की तरफ़ मुतवज्जेह होगा, वोह कहेगी : तुम्हें वोह दिन याद है जब तुम ने नेकी का हुक्म दिया था और बुराई से रोका था ? दूसरी कहेगी : आप को वोह जगह याद है जहां आप ने نہی عن المنکر और امر بالمعروف किया था ?[1]

रिवायत है कि **अल्लाह** तआला ने मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : तुम ने कभी मेरे लिये भी अमल किया है ? मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अर्ज़ किया : या **अल्लाह** ! मैं ने तेरे लिये नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, सदक़ात दिये, तेरे आगे सजदे किये, तेरी हम्द की, तेरी किताब को पढ़ा और तेरा ज़िक्र करता रहा।

रब तआला ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! नमाज़ तेरी दलील, रोज़ा तेरे लिये ढाल, सदक़ा तेरे लिये साया, तस्बीह तेरे लिये जन्नत में दरख़्त, किताब की क़िराअत तेरे लिये जन्नत में हूर व कुसूर और मेरा ज़िक्र तेरा नूर है। बता तू ने मेरे लिये क्या अमल किया है ?

मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अर्ज़ की : ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! मुझे बता ! वोह कौन सा अमल है जो मैं तेरे लिये करूं ? रब ने फ़रमाया : तू ने कभी मेरी वज्ह से किसी से महब्बत की ? तू ने मेरी वज्ह से कभी किसी से दुश्मनी रखी ? तब मूसा عَلَیْہِ السَّلَام समझ गए कि सब से अच्छा अमल **अल्लाह** के लिये महब्बत और **अल्लाह** के लिये दुश्मनी[2] रखना है।

हज़रते अबू उबैदा बिन अल जर्राह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : मैं ने सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) **अल्लाह** की बारगाह में कौन से शहीद की ज़ियादा इज़्ज़त है ? आप ने फ़रमाया : वोह जवान जो ज़ालिम हाकिम के सामने गया

1......احیاء علوم الدین، ۲/۳۸۲ و طبقات الشافیة الکبری، ٦/۳۲۱

2...**अल्लाह** और उस के हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त से दोस्ती और उन के गुस्ताख़ से दुश्मनी बेहतरीन अमल है।

और उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका और इसी पादाश में उसे क़त्ल कर दिया गया और अगर उसे क़त्ल नहीं किया गया तो वोह जब तक ज़िन्दा रहेगा उस के गुनाह नहीं लिखे जाएंगे।[1]

हज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में सब से अफ़्ज़ल शहीद वोह शख़्स है जो ज़ालिम ह़ाकिम के पास गया, उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका और इसी वज्ह से उसे क़त्ल कर दिया गया, ऐसे शहीद का ठिकाना जन्नत में हज़रते ह़म्ज़ा और हज़रते जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के दरमियान होगा।[2]

अल्लाह तआ़ला ने हज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह्‌य की, कि मैं तुम्हारी उम्मत के चालीस हज़ार नेकों और साठ हज़ार बुरों को हलाक करने वाला हूं। हज़रते यूशअ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : नेकों का क्या क़ुसूर है ? रब ने फ़रमाया : इन्हों ने मेरे दुश्मनों को दुश्मन नहीं समझा और येह बाहम मेल मिलाप से रहते रहे।

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं हम ने कहा : या रसूलल्लाह ! क्या हमें नेकी का, उस वक़्त हुक्म करना चाहिये जब हम मुकम्मल त़ौर पर नेकियों पर अ़मल करें और बुराइयों से उस वक़्त रोकना चाहिये जब हम मुकम्मल त़ौर पर बुराइयों से किनारा कश हो जाएं ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम नेकियों का हुक्म देते रहो अगर्चे तुम मुकम्मल त़ौर पर अ़मल न कर सको, तुम बुराइयों से रोकते रहो अगर्चे तुम ब तमाम व कमाल उस से किनारा कश न हो सके हो।[3]

एक सालेह़ शख़्स ने अपने बेटों को नसीह़त की, कि जब तुम में से कोई नेकी का हुक्म देना चाहे तो उसे चाहिये कि अपने नफ़्स को सब्र का आ़दी बनाए और **अल्लाह** से सवाब की उम्मीद रखे क्यूंकि जो शख़्स **अल्लाह** पर ए'तिमाद करता है वोह कभी तकालीफ़ में मुब्तला नहीं होता।

...

1 ......مسند البزار، ٤/١١٠، الحديث ١٢٨٥ و مسند الشاميين للطبرانی، ٤/٣٥٦، الحديث ٣٥٤١ و بريقة محمودية فی شرح طريقة محمدية، ٣/٢٥٠

2 ......جامع الاحاديث، ٢/٦٧، الحديث ٣٩٤١، ملخصًا

3 ......المعجم الاوسط ، ٥/٧٧، الحديث ٦٦٢٨

बाब 16

अ़दावते शैत़ान

हर मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह उ़लमा और सुलह़ा से मह़ब्बत रखे, उन की मह़फ़िलों में बैठता रहे, जो कुछ न जानता हो वोह उन से पूछता रहे, उन की नसाएह़ से बहर अन्दोज़ होता रहे बुरे कामों से गुरेज़ां रहे और शैत़ान को अपना दुश्मन समझे जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ (1) *बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है उसे दुश्मन ही बनाओ (या'नी अल्लाह की इ़बादत कर के) ।*

या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत कर के उस से दुश्मनी रखो और **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी में उस की पैरवी न करो और सिद्क़े दिल से हमेशा अपने अ़क़ाइदो आ'माल का उस से तह़फ़्फ़ुज़ करो, जब तुम कोई काम करो तो अच्छी त़रह़ समझ लो क्यूंकि बसा अवक़ात आ'माल में रिया दाख़िल हो जाता है और बुराइयां अच्छी नज़र आती हैं, येह सब शैत़ान की वज्ह से होता है लिहाज़ा उस के ख़िलाफ़ **अल्लाह** से मदद त़लब करते रहो ।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे सामने एक लकीर खींची और फ़रमाया : येह **अल्लाह** का रास्ता है, फिर आप ने उस लकीर के दाएं बाएं कुछ और लकीरें खींचीं और फ़रमाया : येह शैत़ान के रास्ते हैं जिन के लिये वोह लोगों को बुलाता रहता है और आप ने येह आयए करीमा तिलावत की :

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ (2)

ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे लिये शैत़ान के कसीर रास्तों को बयान फ़रमाया (ताकि हम उस के फ़रेब में न आएं) ।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसे दुश्मन समझो । (پ۲۲،فاطر:٦)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो कि तुम्हें उस की राह से जुदा कर देंगी । (پ۸،الانعام:۱۵۳) مسند احمد ، مسند عبداللہ بن مسعود، ۲/۱۳۲، الحدیث ٤١٤٢.

शैतान के वस्वसे का अन्जाम

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि बनी इस्राईल के एक ज़ाहिद को शैतान ने राहे रास्त से हटाने के लिये येह चाल चली कि एक लड़की को पेट की बीमारी में मुब्तला कर दिया और उस के घर वालों के दिलों में ख़याल डाल दिया कि इस बीमारी का इलाज ज़ाहिद के सिवा कहीं भी मुमकिन नहीं है चुनान्चे, वोह लोग ज़ाहिद के पास आए मगर उस ने लड़की को अपने साथ रखने से इन्कार कर दिया लेकिन उन की बार बार की गुज़ारिशात पर उस का दिल पसीज गया और उस ने लड़की को इलाज के लिये अपने पास ठहरा लिया, जब भी वोह लड़की ज़ाहिद के पास जाती, शैतान उसे इन्तिहाई ख़ुशनुमा अन्दाज़ में पेश करता यहां तक कि ज़ाहिद के क़दम डग मगा गए और उस ने लड़की से मुबाशरत की जिस से लड़की को ह़म्ल रह गया। अब शैतान ने उस के दिल में वसवसा पैदा किया कि येह तो बहुत बुरी बात हुई, मेरे ज़ोहदो इत्तिक़ा पर हर्फ़ आ गया लिहाज़ा उसे क़त्ल कर के दफ़्न कर देना चाहिये, जब उस के घर वाले पूछने को आएंगे तो कह दूंगा वोह मर गई है चुनान्चे, शैतान के बहकावे में आ कर ज़ाहिद ने उस लड़की को क़त्ल कर के दफ़्न कर दिया, उधर लड़की के घर वालों के दिलों में शैतान ने येह ख़याल डाल दिया कि उसे ज़ाहिद ने क़त्ल कर के दफ़्न कर दिया लिहाज़ा वोह ज़ाहिद के पास आए और लड़की के मुतअ़ल्लिक़ पूछ गछ की, ज़ाहिद ने कहा : वोह मर गई है लेकिन उन लोगों ने अपने वस्वसे के मुताबिक़ ज़ाहिद पर सख़्ती की और उस से इक़रार करा लिया कि उस ने लड़की को क़त्ल किया है, उन्हों ने उसे पकड़ लिया और क़िसास में क़त्ल करने लगे। तब शैतान ज़ाहिर हुवा और ज़ाहिद से बोला : मैं ने उसे पेट की बीमारी में मुब्तला किया था और मैं ने ही उस के घर वालों के दिलों में तेरे जुर्म का ख़याल डाला था, अब तू मेरा कहना मान ले, मैं तुझे बचा लूंगा। ज़ाहिद ने पूछा : क्या करूं ? शैतान बोला : मुझे दो सजदे कर ले, चुनान्चे, ज़ाहिद ने जान बचाने के लिये शैतान को सजदा कर लिया, अब शैतान येह कहता हुवा वहां से चल दिया कि मैं तेरे इस फ़े'ल से बरी हूं, जैसा कि फ़रमाने इलाही है कि

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ (1)

शैतान की तरह़ जिस ने इन्सान से कहा कुफ़्र कर जब उस ने कुफ़्र किया तो शैतान ने कहा मैं तुझ से बरी हूं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शैतान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं। (پ٢٨،الحشر:١٦)

......شعب الایمان ، الباب السابع والثلاثون...الخ، باب فی تحریم الفروج ، ٣٧٢/٤، الحدیث٥٤٤٩ والدرالمنثور،

پ ٢٨ ، الحشر، تحت الآیة ١٥ ، ١١٨/٨ بتغیر قلیل

शैतान का गुमराह कुन सुवाल

शैतान ने इमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से पूछा : तेरा उस ज़ात के मुतअल्लिक़ क्या ख़याल है जिस ने मुझे जैसे चाहा पैदा किया और जो चाहा मुझ से कराया, इस के बा'द वोह मुझे चाहे तो जन्नत में भेज दे और चाहे तो जहन्नम में भेज दे, क्या ऐसा करने वाला आदिल है या ज़ालिम ? इमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने कुछ तवक्कुफ़ के बा'द जवाब दिया : ऐ शख़्स ! अगर उस ने तुझे तेरी मन्शा के मुताबिक़ पैदा किया तो वाक़ेई तू मज़लूम है और अगर उस ने तुझे अपने इरादए क़ुदरत के तहत पैदा किया तो फिर उस की मरज़ी है जो करे, शैतान शर्म से पानी पानी हो गया और कहने लगा : येही सुवाल कर के मैं ने सत्तर हज़ार आबिदों को ज़लालत व गुमराही के ग़ार में धकेल दिया है ।

इन्सानी क़ल्ब एक क़ल्आ है

इन्सानी क़ल्ब की मिसाल एक क़ल्आ जैसी है और शैतान एक दुश्मन है जो क़ल्ए पर हम्ला कर के उस पर क़ब्ज़ा जमाना चाहता है क़ल्ए की हिफ़ाज़त दरवाज़ों को बन्द किये बिग़ैर और तमाम रास्तों और रख़्नों की निगरानी के बिग़ैर ना मुमकिन है और येह फ़रीज़ा वोही सर अन्जाम दे सकता है जो इन रास्तों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो लिहाज़ा दिल को शैतानी वसाविस की यलग़ार से महफ़ूज़ रखना हर अक़्लमन्द के लिये ज़रूरी ही नहीं बल्कि एक फ़र्ज़े ऐन है चूंकि शैतान की यलग़ार का मुक़ाबला उस वक़्त तक ना मुमकिन है, जब तक उस की तमाम गुज़रगाहों से वाक़िफ़िय्यत न हो लिहाज़ा इन गुज़रगाहों से वाक़िफ़िय्यत अव्वलीन ज़रूरत है और येह गुज़रगाहें इन्सान ही की पैदाकर्दा होती हैं जैसे ग़ुस्सा और शहवत क्यूंकि ग़ुस्सा अक़्ल को ख़त्म कर देता है लिहाज़ा जब अक़्ल मांद पड़ जाती है तो शैतानी लश्कर इन्सान पर ज़बरदस्त हम्ला कर देता है, जूंही इन्सान ग़ज़बनाक होता है, शैतान उस से ऐसे खेलता है जैसे बच्चा गेंद से खेलता है ।

एक बन्दए ख़ुदा ने शैतान से पूछा : येह बतला तू इन्सान पर कैसे क़ाबू पा लेता है ? शैतान ने कहा : मैं उसे ग़ुस्सा और शहवत के वक़्त ज़ेर करता हूं ।

शैतान के रास्तों में एक रास्ता हिर्स और हसद का भी है क्यूंकि हिर्स इन्सान को अन्धा और बहरा कर देती है लिहाज़ा शैतान इस फ़ुरसत को ग़नीमत समझते हुवे तमाम बुराइयों को हरीस के सामने हसीन अन्दाज़ में पेश करता है और वोह उसे ख़ूबियां समझ कर क़बूल करता चला जाता है ।

किश्तये नूह़ में शैत़ान की सुवारी

रिवायत है कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे ख़ुदावन्दी पहले हर जिन्स का एक एक जोड़ा किश्ती में सुवार किया और ख़ुद भी सुवार हुवे तो आप ने एक अजनबी बुड्ढे को देख कर पूछा तुम्हें किस ने किश्ती में सुवार किया है ? उस ने कहा : मैं इस लिये आया हूं कि आप के साथियों के दिलों पर क़ब्ज़ा कर लूं, उस वक़्त उन के दिल मेरे साथ और बदन आप के साथ होंगे।

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** के दुश्मन ! ऐ मलऊ़न ! निकल जा ! इब्लीस बोला : ऐ नूह़ ! पांच चीज़ें ऐसी हैं जिन से मैं लोगों को गुमराही में डालता हूं, तीन तुम्हें बतलाऊंगा और दो नहीं बतलाऊंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य की : आप कहें कि मुझे तीन से आगाही की ज़रूरत नहीं तू मुझे सिर्फ़ वोही दो बतला दे। शैत़ान बोला : वोह दो ऐसी हैं जो मुझे कभी झूटा नहीं करतीं और न ही कभी नाकाम लौटाती हैं और इन्हीं से मैं लोगों को तबाही के दहाने पर ला खड़ा करता हूं। इन में से एक ह़सद है और दूसरी ह़िर्स है, इसी ह़सद की वज्ह से तो मैं रांदए दरगाह और मलऊ़न हुवा हूं और ह़िर्स के बाइ़स आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ममनूआ़ चीज़ की ख़्वाहिश पैदा हुई और मेरी आरज़ू पूरी हो गई।

शैत़ान का एक रास्ता इन्सान का पेट भरा होना है अगर्चे वोह रिज़्क़े ह़लाल से ही भरा गया हो क्यूंकि पेट का भर जाना शहवतों को बर अंगेख़्ता करता है और शैत़ान का येही हथयार है।

पेट भर कर खाना भी इन्सान को शैत़ान के फन्दे में फंसाता है

रिवायत है कि ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मरतबा शैत़ान को देखा वोह बहुत से फन्दे उठाए हुवे था। आप ने पूछा : येह क्या हैं ? शैत़ान ने जवाब दिया : येह वोह फन्दे हैं जिन से मैं इन्सान को फांसता हूं। आप ने पूछा : कभी मुझ पर भी तू ने फन्दा डाला है ? शैत़ान ने कहा : आप जब भी सैर हो कर खा लेते हैं मैं आप को ज़िक्रो नमाज़ से सुस्त कर देता हूं। आप ने पूछा : और कुछ : कहा : बस ! तब आप ने क़सम खाई कि मैं आयिन्दा कभी सैर हो कर नहीं खाऊंगा, शैत़ान ने भी जवाबन क़सम खाई, मैं भी आयिन्दा किसी मुसलमान को नसीह़त नहीं करूंगा।(1)

1 ......شعب الایمان، التاسع والثلاثون...الخ، الفصل الثانی فی ذم کثرۃ الاکل، ٥/٤١، الحدیث ٥٧٠٠ (بتغیر قلیل)

शैतान का एक रास्ता मालो मताए दुन्या पर फ़रेफ़्तगी है क्यूंकि शैतान जब इन्सान का दिल उन चीज़ों की तरफ़ माइल देखता है तो उन्हें और ज़ियादा हसीन अन्दाज़ में उस के सामने पेश करता है और इन्सान को हमेशा मकानात की ता'मीर, सक़्फ़ व दरोबाम की आराइश व ज़ैबाइश में उलझाए रखता है और उसे ख़ूब सूरत लिबास, अच्छी अच्छी सुवारियों और तवील उम्र की झूटी उम्मीदों में मुब्तला कर देता है और जब कोई इन्सान उस मन्ज़िल पर पहुंच जाता है तो फिर उस की राहे ख़ुदा पर वापसी दुश्वार हो जाती है क्यूंकि वोह एक उम्मीद के बा'द दूसरी उम्मीद बढ़ाता चला जाता है यहां तक कि उस का वक़्ते मुक़र्रर आ जाता है और वोह इसी शैतानी रास्ते पर गामज़न रहते और ख़्वाहिशात की तक्मील करते हुवे इस नापाएदार दुन्या से उठ जाता है। (نَعُوْذُ بِاللّٰه)

शैतान के ग़लबे का एक रास्ता लोगों से उम्मीदें रखना है, हज़रते सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि शैतान हज़रते अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने आया और कहने लगा : मैं तुम को एक बात बताता हूं, इसे याद रखना उन्हों ने कहा : मुझे तेरी किसी नसीहत की ज़रूरत नहीं है, शैतान ने कहा : तुम सुनो तो सही ! अगर अच्छी बात हो तो याद रखना वरना छोड़ देना, बात येह है कि **अल्लाह** तआला के सिवा किसी इन्सान से अपनी आरज़ूओं का सुवाल न करना और येह देखना कि ग़ुस्से में तुम्हारी क्या हालत होती है क्यूंकि मैं ग़ुस्से की हालत में ही इन्सान पर क़ाबू पाता हूं।

शैतान का एक रास्ता साबित क़दमी का इन्सान में फ़ुक़दान और जल्दबाज़ी की तरफ़ इस का मैलान है, फ़रमाने नबवी है : जल्दबाज़ी शैतानी फ़े'ल है और तहम्मुल और बुर्दबारी **अल्लाह** का अतिय्या है।[(1)]

जल्दबाज़ी में इन्सान को शैतान ऐसे तरीक़े से बुराई पर माइल करता है कि इन्सान महसूस ही नहीं करता। रिवायत है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई तो शैतान के तमाम शागिर्द उस के यहां जम्अ हुवे और कहने लगे : आज तमाम बुत सरनिगूं हो गए हैं, शैतान ने कहा : मा'लूम होता है कि कोई अज़ीम हादिसा रू नुमा हुवा है, तुम यहीं ठहरो मैं मा'लूम करता हूं, चुनान्चे, उस ने मशरिक़ो मग़रिब का चक्कर लगाया मगर कुछ भी पता न चला, यहां तक कि वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की जाए विलादत पर पहुंचा और येह देख कर हैरान रह गया कि मलाइका हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को घेरे हुवे हैं, वोह वापस अपने शागिर्दों के पास पहुंचा और कहने लगा कि गुज़श्ता शब एक नबी की विलादत हुई है, मैं हर बच्चे की विलादत के वक़्त मौजूद होता हूं मगर मुझे इन की पैदाइश का क़त्ई इल्म नहीं हुवा लिहाज़ा इस रात के बा'द बुतों की इबादत ख़त्म हो जाएगी इस लिये अब इन्सान पर जल्दबाज़ी और ला परवाई के वक़्त हम्ला करो (इन हथयारों से काम लो)।

1 ......شعب الايمان ، الثالث والثلاثون...الخ ، ٤/٨٩ ، الحديث ٤٣٦٧

एक रास्ता ज़र और ज़मीन का है क्यूंकि जो चीज़ इन्सान की ह़ाजत से ज़ाइद हो वोह शैत़ान का मसकन बन जाती है । ह़ज़रते साबित अल बुनानी رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को मबऊ़स फ़रमाया तो शैत़ान ने अपने शागिर्दों से कहा : आज कोई अहम वाक़िआ़ रूनुमा हुवा है, जाओ देखो तो क्या माजिरा है ? वोह सब तलाश में निकले मगर नाकाम लौट कर कहने लगे हमें तो कुछ भी मा'लूम न हो सका, शैत़ान ने कहा : तुम ठहरो मैं तुम्हें आ कर बताता हूं, शैत़ान ने वापस आ कर बतलाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने (ह़ज़रते) मुह़म्मद (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم) को मबऊ़स फ़रमाया है । चुनान्चे, शैत़ान ने अपने तमाम शागिर्दों चेलों को सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के पीछे लगाया कि इन लोगों को गुमराह करें मगर वापस जा कर कहते : ऐ उस्ताद ! हम ने आज तक ऐसी नाकामी का मुंह नहीं देखा, जब येह नमाज़ शुरूअ़ करते हैं तो हमारा सब किया धरा ख़ाक में मिल जाता है । तब शैत़ान ने कहा : घबराओ नहीं अभी कुछ और इन्तिज़ार करो, अ़न क़रीब इन पर दुन्या अरजां व फ़रावां हो जाएगी और उस वक़्त हमें अपनी उम्मीदें पूरा करने का ख़ूब मौक़अ़ मिल जाएगा ।

रिवायत है कि ह़ज़रते ईसा علیہ السلام एक दिन पथ्थर से टेक लगाए हुवे थे, शैत़ान का वहां से गुज़र हुवा, उस ने कहा : ऐ ईसा ! (علیہ السلام) तुम ने दुन्या को मरग़ूब समझा है ? ईसा علیہ السلام ने उसे पकड़ लिया और उस की गुद्दी में मुक्का रसीद कर के फ़रमाया : येह ले जा, येह तेरे लिये दुन्या है ।

एक रास्ता फ़क़्रो फ़ाक़ा का डर और बख़ीली है क्यूंकि येह चीज़ें इन्सान को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से रोकती हैं और उसे मालो दौलत जम्अ़ करने और अ़ज़ाबे अलीम की दा'वत देती हैं । बुख़्ल का सब से बड़ा नुक़्सान येह होता है कि बख़ील मालो दौलत ह़ासिल करने के लिये बाज़ारों के चक्कर लगाता रहता है जो कि शैत़ान की आमाज गाहें हैं (शैत़ान इन्हीं जगहों पर घात लगाए बैठा होता है) ।

एक रास्ता मज़हब से नफ़रत, ख़्वाहिशात की पैरवी, अपने मुख़ालिफ़ीन से बुग़्ज़ व ह़सद और इन्हें ह़क़ारत से देखना है और येह चीज़ ख़्वाह वोह आ़बिद हो या फ़ासिक़ सब को हलाक कर देती है । ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ का इरशाद है कि शैत़ान ने कहा : मैं ने उम्मते मुह़म्मद صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को गुनाहों की भूल भुलय्यों में भटकाया मगर उन्हों ने इस्तिग़फ़ार से मुझे

शिकस्त दे दी, तब मैं उन्हें ऐसे गुनाहों की त़रफ़ ले गया जिन के लिये वोह कभी इस्तिग़फ़ार नहीं करते और वोह इन की नाजाइज़ ख़्वाहिशात हैं और मलऊ़न की येह बात ह़क़ीक़तन सदाक़त पर मब्नी है क्यूंकि आ़म तौ़र पर लोग येह नहीं समझ सकते कि येह ख़्वाहिशात ही अस्ल में गुनाहों की त़रफ़ रागिब करती हैं लिहाज़ा वोह अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करें।

एक रास्ता मुसलमानों के बारे में बद गुमानी का है लिहाज़ा इस से और बद बख़्तों की तोहमतों से बचना चाहिये, अगर आप कभी किसी ऐसे इन्सान को देखें जो लोगों के ऐ़ब ढूंडता है और बद गुमानियां फैलाता है तो समझ लीजिये कि वोह शख़्स ख़ुद ही बद बात़िन है और येह अम्र उस की बद बात़िनी के इज़्हार का एक त़रीक़ा है लिहाज़ा हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह शैत़ान के दाख़िले के इन तमाम रास्तों को मसदूद कर दे और अल्लाह तआ़ला की याद से अपने दिल को एक मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ बना ले।

दारुन्नदवा में शैत़ान का क़ुरैश को मश्वरा

इब्ने इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत है, कि जब क़ुरैशे मक्का ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) को हिजरत करते और मुतअ़द्दिद क़बाइल के लोगों को मुसलमान होते देखा तो इन्हें येह ख़त़रा लाह़िक़ हुवा कि कहीं हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हिजरत न कर जाएं और वहां एक ज़बरदस्त जमाअ़त अपनी ह़िमायत में तय्यार कर के हमें शिकस्त न दे दें चुनान्चे, येह लोग दारुन्नदवा में जम्अ़ हुवे, दारुन्नदवा क़ुसय बिन किलाब का मकान था येह दारुन्नदवा इस लिये कहलाता था कि यहां क़ुरैश अपने तमाम अहम उमूर सर अन्जाम देते और मन्सूबे तय्यार करते थे, इस दारुन्नदवा में चालीस साला क़ुरैशी के इलावा कोई और शख़्स या कम उ़म्र क़ुरैशी दाख़िल नहीं हो सकता था।

येह सब लोग अबू जह्ल के साथ हफ़्ते के रोज़ जम्अ़ हुवे इस लिये हफ़्ते को धोके और फ़रेब का दिन कहा गया है, इन लोगों के साथ इब्लीस भी शरीके मुशावरत होता था, इस मलऊ़न के शामिल होने का वाक़िआ़ यूं है कि जब क़ुरैशे मक्का दारुन्नदवा के दरवाज़े पर पहुंचे तो इन्हों ने देखा कि एक बा वक़ार बुढ्ढा खुरदरा सा कम्बल ओढ़े खड़ा है। एक रिवायत येह है कि त़ेलसान की रेशमी चादर ओढ़े हुवे था, इन्हों ने पूछा : आप कौन हैं ? कहने लगा : मैं शैख़े नज्दी हूं, तुम ने जो इरादा किया है मैं ने वोह सुन लिया है और मैं इस लिये आया कि तुम्हारी गुफ़्तगू सुनूं और मश्वरे और नसीह़तें करूं।

चुनान्चे, येह सब लोग अन्दर दाख़िल हो गए और बाहम मश्वरा होने लगा। एक रिवायत है कि सो आदमी थे और दूसरी रिवायत में है कि पन्दरह आदमी थे। अबुल बख़्तरी (जो ग़ज़्वए

बद्र के दिन मारा गया था) ने मश्वरा दिया : मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लोहे के एक क़ल्ए़ में बन्द कर दो और उस वक़्त का इन्तिज़ार करो जब उन का अन्जाम भी पहले शोअ़रा जैसा हो जाए। शैख़े नज्दी ने कहा : येह बात ग़लत़ है, ब ख़ुदा ! अगर तुम उन्हें आहिनी दरवाज़े के पीछे भी बन्द कर दो तो वोह वहां से निकल कर अपने अस्ह़ाब के हां पहुंच जाएंगे।

अबुल अस्वद रबीआ़ बिन अ़म्र अल आ़मिरी ने राए दी कि मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जिला वत़न कर दो, येह जहां भी जाए हमें कोई परवा नहीं, बस हमारे शहरों में न रहे। शैख़े नज्दी ने इस राए को मुस्तरद करते हुवे कहा : क्या तुम ने मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की अच्छी बातें, उन की शीरीं बयानी और लोगों का उन पर परवाना वार निसार होना नहीं देखा ? अगर तुम उन को जिला वत़न कर के मुत़मइन हो गए तो येह तुम्हारी सब से बड़ी ग़लत़ी होगी, वोह किसी और क़बीले में चले जाएंगे और अपनी सह़र बयानी से लोगों को अपना फ़रेफ़्ता बना लेगा और अपने मो'तक़िदीन की एक अ़ज़ीम जमइय्यत के साथ तुम पर ग़लबा ह़ासिल कर लेगा, तुम्हारी येह शानो शौकत ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ मिट जाएगी और वोह तुम्हारे साथ जो चाहेंगे करेंगे, कोई और राए दो।

अबू जह्ल ने कहा : मेरे ज़ेह्न में एक ऐसी राए है जो किसी ने भी नहीं दी, वोह येह है कि हर क़बीले से एक साह़िबे ह़सब व नसब बहादुर लिया जाए और येह सब मिल कर यक्बारगी मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तल्वारों से भरपूर वार करें और उन को क़त्ल कर दें, हमारी भी जान छूट जाएगी और बनू अ़ब्दे मनाफ़ तमाम क़बाइल का मुक़ाबला करने से तो रहे वोह सिर्फ़ दियत ले लेंगे जिसे तमाम क़बाइल बाहम अदा कर देंगे, शैख़े नज्दी मलऊ़न इस राए पर फड़क उठा और कहने लगा : अब हुई बात !

चुनान्चे, मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर येह राए मान ली गई और सब लोग घरों को चल दिये, इधर ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के नबी ! आप उस बिस्तर पर इस्तिराह़त न फ़रमाएं जिस पर आप हमेशा आराम फ़रमाते हैं। जब रात हुई क़ुरैश के जवान काशानए नबुव्वत के गिर्द मन्डलाने लगे और उस वक़्त का इन्तिज़ार करने लगे कि आप बाहर आएं और वोह यक्बारगी ह़म्ला कर दें, ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बिस्तर पर उस शब सुलाया और उन पर सब्ज़ रंग की एक चादर डाल दी जो बा'द में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुआ़ और ई़दैन के मौक़ओं पर ओढ़ा करते थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले शख़्स थे जिन्हों ने जान बेच कर ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त की थी, चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इन अश्आ़र में अपने एह़सासात का इज़्हार किया है :

﴾1﴿......मैं ने अपनी जान के बदले उस ख़ैरे ख़ल्क़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त की जो अल्लाह की ज़मीन पर सब से बेहतर है और जो हर त़वाफ़ करने वाले, ह़जरे अस्वद को चूमने वाले से बेहतरीन है।

﴾2﴿......रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ुरैशे मक्का के फ़रेब का अन्देशा हुवा तो इन को रब्बे ज़ुल जलाल ने उन के फ़रेब से बचा लिया।

﴾3﴿....और रसूले ख़ुदा ने ग़ार में निहायत सुकून के साथ अल्लाह की हिफ़ाज़त में रात बसर की।

﴾4﴿......जब कि मैं क़ुरैशे मक्का के रू बरू सोया हुवा था और इस त़रह़ मैं ख़ुद को अपने क़त्ल व क़ैद होने पर आमादा किये हुवे था। (तर्जमए अश्आ़रे ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم)

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरैश के उन नौजवानों को अन्धा कर दिया और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरैश के जियालों पर मिट्टी डालते हुवे, येह आयत तिलावत करते हुवे बाहर निकल गए : فَاَغْشَیْنٰهُمْ فَهُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ ⑨ [1]

इस ह़ाल में एक शख़्स वहां आया और उस ने उन लोगों से पूछा : यहां क्या कर रहे हो ? उन्हों ने कहा : हम मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुन्तज़िर हैं, उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! वोह तुम्हारे सरों पर मिट्टी डालते हुवे निकल गए हैं और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ज़लीलो रुस्वा किया है, अब तुम यहां खड़े क्या कर रहे हो ? अब जो उन्हों ने अपने सरों को हाथ लगाया तो सब के सरों में मिट्टी पड़ी हुई थी और वोह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादर ओढ़े सोता देख कर एक दूसरे से येही कहते रहे कि ख़ुदा की क़सम ! येह मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सो रहे हैं, यहां तक कि सुब्ह़ हो गई और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बिस्तर से उठे, उन को देख कर येह लोग बहुत शर्मिन्दा हुवे और कहने लगे : उस शख़्स ने वाक़ेई सच कहा था, इसी वाक़िए पर येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ [2]

और जब कुफ़्फ़ारे मक्का आप के साथ फ़रेब कर रहे थे कि वोह आप को सख़्त ज़ख़्मी या क़त्ल कर दें।

لا تجزعن فبعد العسر تيسر　　وكل شيء له وقت وتقدير

وللمقدر في احوالنا نظر　　وفوق تدبيرنا لله تدبير

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता। (پ۲۲، یس:۹)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द (क़ैद) कर लें या शहीद कर दें। (پ۹،الانفال:۳۰) السيرة النبوية لابن هشام، هجرة الرسول،ص ۱۹۱-۱۹۳ بتغير قليل

﴾1﴿......घबराओ नहीं, हर मुश्किल के बा'द आसानी होती है और हर चीज़ एक वक़्ते मुक़र्रर तक रहती है।

﴾2﴿......मुक़द्दर हम से ज़ियादा बा ख़बर है और हमारी तदबीरों पर **अल्लाह** की तदबीर ग़ालिब रहती है।

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाने बारी :

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ﴿۸۰﴾ [1]

की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने नबिय्ये करीम को हिजरत की इजाज़त मरहमत फ़रमाई और हज़रते जिब्रील ने आप से कहा कि आप हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपनी हिजरत का साथी मुन्तख़ब करें।

हाकिम की रिवायत है : हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (हज़रते) जिब्रील से पूछा : मेरे साथ कौन हिजरत करे ? तो उन्हों ने कहा : हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़[2] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हिजरत के मुतअ़ल्लिक़ बतलाया और फ़रमाया : तुम मेरे बा'द यहीं रहना और लोगों की अमानतें वापस कर के आना।[3]

बैते सिद्दीक़े अक्बर में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़िलाफ़े मा'मूल तशरीफ़ लाना

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हम घर में बैठे हुवे थे और दोपहर का वक़्त था, और त़बरानी ने हज़रते अस्मा की रिवायत नक़्ल की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का में दो मरतबा सुब्ह़ और शाम हमारे घर तशरीफ़ लाया करते थे मगर उस दिन ज़वाल के वक़्त तशरीफ़ लाए, मैं ने अपने वालिद अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जा कर कहा : अब्बा जान ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज ख़िलाफ़े मा'मूल चेहरे पर कपड़ा लपेटे तशरीफ़ लाए हैं। हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : ब ख़ुदा ! हुज़ूर किसी अहम काम के लिये इस वक़्त तशरीफ़ लाए हैं, हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि हुज़ूर इजाज़त ले कर अन्दर तशरीफ़ लाए। हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप के लिये चारपाई ख़ाली कर दी। जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हो गए तो आप ने फ़रमाया : इन दोनों को बाहर भेज दिया जाए। सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर !

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और यूं अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर ले जा और मुझे अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۸۰)

2......المستدرك للحاكم، كتاب الهجرة، باب هجرة ابی بكر...الخ،۳/۵۳۸، الحديث ۴۳۲۵

3......السيرة النبوية لابن هشام،ص۱۹۴

येह आइशा और अस्मा आप ही का घराना है। एक रिवायत येह है कि उन्हों ने कहा : हुज़ूर मुत्मइन रहें, येह मेरी बेटियां हैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया मुझे रब्बे ज़ुल जलाल ने हिजरत की इजाज़त दी है और तुम मेरे साथ रहोगे। आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं : अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه येह बात सुनते ही शिद्दते जज़्बात से रो पड़े और अर्ज़ की : हुज़ूर ! मेरी इन सुवारियों में से एक सुवारी पसन्द फ़रमा लीजिये। आप ने फ़रमाया : मैं क़ीमतन लूंगा।[1]

एक रिवायत में है आप ने फ़रमाया : चाहो तो एक मेरे हाथ बेच दो।[2] आप ने क़ीमत दे कर इस लिये सुवारी हासिल की ताकि आप को हिजरत की मुकम्मल फ़ज़ीलत हासिल हो जाए और जानो माल की क़ुरबानी से इस की इब्तिदा हो। हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : हम ने जल्दी जल्दी सामाने सफ़र दुरुस्त किया।[3] एक रिवायत है हम ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये बेहतरीन सामाने सफ़र बांधा और उसे एक थैले में डाला।[4]

सफ़रे हिजरत में ज़ादे राह

वाक़िदी की रिवायत है कि ज़ादे राह में एक भुनी हुई बकरी थी, हज़रते अस्मा ने अपनी कमर का पटका फाड़ा और उस से थैले का मुंह बांध दिया इसी लिये हज़रते अस्मा को 'ज़ातुन्निताक़ैन' कहते हैं।[5]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीन रातें ग़ारे सौर में गुज़ारीं,[6] इस ग़ार में चूंकि सौर बिन अब्दे मनात आ कर ठहरा था, इसी लिये इसे ग़ारे सौर कहा जाता है।

रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रात के वक़्त मकान की पिछली खिड़की से निकल कर ग़ार की तरफ़ रवाना हुवे थे, रास्ते में अबू जहल आ रहा था मगर **अल्लाह** ने उसे अन्धा कर दिया और आप ख़ैरिय्यत से गुज़र गए। अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا कहती हैं : हज़रते अबू बक्र पांच हज़ार दिरहम साथ ले कर गए थे।[7]

---

1 ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرۃ النبی و اصحابہ ...الخ، ۲/۵۹۱، الحدیث۳۹۰۵ ملتقاً ملخصا و المعجم الکبیر، ۲۴/۱۰۶، الحدیث ۲۸۴ بتغیر

2 ......المعجم الکبیر، ۲۴/۱۰۶، الحدیث ۲۸۴ بتغیر

3 ......بخاری ، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرۃ النبی و اصحابہ ...الخ، ۲/۵۹۳، الحدیث ۳۹۰۵، ملخصاً

4 ......مسند احمد ۱۰/۶، الحدیث:۲۵۶۸۴

5 ...... بخاری ، کتاب الجهادو السیر، باب حمل الزاد فی الغزو، ۲/۳۰۴، الحدیث ۲۹۷۹.(ملخصا)

6 ......بخاری ، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم... الخ، ۲/۵۹۳، الحدیث ۳۹۰۵ ، ملخصاً

7 ......السیرۃ النبوۃ لابن ہشام ، باب ہجرۃ الرسول صلی اللّٰہ علیہ وسلم ، ص ۱۹۴، ۱۹۵ ملتقتا و الخصائص الکبری، باب ما وقع فی الهجرۃ...الخ، ۱/۳۰۵

सुब्ह जब कुरैश ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न पाया तो इन्हों ने मक्का के चारों तरफ़ तलाश किया और हर तरफ़ सुराग़ रसां दौड़ाए, जो लोग ग़ारे सौर की तरफ़ जा रहे थे, उन्हों ने आप के निशाने क़दम तलाश कर लिये और ग़ारे सौर की तरफ़ चल पड़े मगर जब ग़ार के क़रीब पहुंचे तो निशान ख़त्म हो गए, कुरैश हुज़ूर की हिजरत से बहुत ख़फ़ा थे और उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तलाश करने वाले के लिये सो ऊंट का इन्आम मुक़र्रर कर दिया था।(1)

हज़रते क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि जबले सबीर ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : आप मेरी पीठ से उतर जाएं, मुझे डर है कि कहीं लोग आप को शहीद न कर दें और मुझे अ़ज़ाब न दिया जाए, ग़ारे हिरा ने इल्तिजा की : हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे यहां तशरीफ़ लाइये।(2)

रिवायत है कि जूंही हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मइय्यत में ग़ारे सौर में दाख़िल हुवे, **अल्लाह** तआ़ला ने ग़ार के दरवाज़े पर एक झाड़ी पैदा कर दी जिस ने इन हज़रात को कुफ़्फ़ार की नज़रों से ओझल कर दिया, हुक्मे ख़ुदावन्दी से मकड़े ने ग़ार के दहाने पर जाला तन दिया और जंगली कबूतरों ने अपना घोसला बना दिया।(3) येह सब कुछ कुफ़्फ़ारे मक्का को ग़ार की तलाशी से बाज़ रखने के लिये किया गया, इन दो जंगली कबूतरों को **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसी बे मिसाल जज़ा दी कि आज तक ह़रम में जितने कबूतर हैं वोह इन्ही दो की अवलाद हैं, जैसे इन्हों ने **अल्लाह** के नबी की हिफ़ाज़त की थी वैसे ही **अल्लाह** तआ़ला ने भी ह़रम में इन के शिकार पर पाबन्दी आ़इद कर दी है।

कुरैश के नौजवान डन्डे, लाठियां और तल्वारें संभाले चारों तरफ़ फैल गए जिन में से कुछ ग़ार की तरफ़ जा निकले, उन्हों ने वहां कबूतरों का घोंसला और उस में अन्डे देखे तो वापस लौट गए और कहने लगे हम ने ग़ार के दहाने पर कबूतरों का घोंसला और उस में अन्डे रखे देखे हैं, अगर वहां कोई दाख़िल होता तो ला महाला कबूतर उड़ जाते, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की येह बातें सुनीं और समझ गए कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुशरिकीन को ना काम लौटाया है, किसी ने कहा : ग़ार में जा कर देखो तो सही ! जवाब में उमय्या बिन ख़लफ़ ने कहा : ग़ार में घुसने की कोई ज़रूरत नहीं है, तुम्हें ग़ार के मुंह पर मकड़ी का जो जाला नज़र आता है वोह तो

1 ......السيرة الحلبية ٢/٥٣-٥٠ ماخوذا

2 ......الشفاء بتعريف حقوق المصطفے، الباب الرابع...الخ، فصل ومثل هذا...الخ، ١/٢٠٢

3 ......الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر خروج رسول الله...الخ، ١/١٧٧

मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की पैदाइश से भी पहले का है, अगर वोह इस में दाख़िल होते तो येह जाला और अन्डे टूट जाते।[1] येह ह़क़ीक़त में क़ौमे क़ुरैश का मुक़ाबले में शिकस्त देने से भी बड़ा मो'जिज़ा था। ग़ौर कीजिये मत़्लूब कैसे कामयाब और तलाश करने वाले कैसे गुमराह हुवे। मकड़ी ने जुस्त्जू का दरवाज़ा बन्द कर दिया और ग़ार का दहाना ऐसा बन गया कि सुराग़ रसानों के क़दम लड़खड़ा गए और नाकाम वापस लौटे और मकड़ी को ला ज़वाल सआ़दत मुयस्सर आई, इब्ने नक़ीब ने ख़ूब कहा है : (अश्आ़र)

﴾1﴿......रेशम के कीड़ों ने ऐसा रेशम बुना जो हुस्न में यक्ता है।

﴾2﴿......मगर मकड़ी इन से लाखों दरजे बेहतर है इस लिये कि उस ने ग़ारे सौर में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऊपर ग़ार के दहाने पर जाला बुना था।

बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जब हम ग़ार में थे मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर येह अपने क़दमों की त़रफ़ देखें तो यक़ीनन हमें देख लेंगे। आप ने फ़रमाया : अबू बक्र ! तुम्हारा उन दो के बारे में क्या ख़याल है जिन के साथ तीसरा ख़ुदा है।[2]

बा'ज़ सीरत निगारों ने लिखा है कि जब अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह ख़दशा ज़ाहिर किया तो आप ने फ़रमाया : अगर येह लोग इधर से दाख़िल होंगे तो हम उधर से निकल जाएंगे, सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ग़ार में निगाह की तो दूसरी त़रफ़ एक दरवाज़ा नज़र आया जिस के साथ एक बह़्रे नापैदा कनार बह रहा था और उस ग़ार के दरवाज़े पर एक कश्ती बंधी हुई थी।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान होना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की दिली आरज़ू थी

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं मुझे येह ख़बर पहुंची है कि जब अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार की त़रफ़ जा रहे थे तो ह़ज़रते अबू बक्र कभी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आगे चलते और कभी पीछे चलते, हुज़ूर ने पूछा : ऐसा क्यूं करते हो ? इन्हों ने जवाब दिया : जब मुझे तलाश करने वालों का ख़याल आता है तो मैं आप के पीछे हो जाता हूं और जब घात में बैठे हुवे दुश्मनों का ख़याल आता है तो आगे आगे चलने लगता हूं, मबादा आप को कोई तक्लीफ़ पहुंचे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या

1 ......المرجع السابق والسيرة الحلبية ، باب عرض رسول الله... الخ، ٢/ ٥١

2 ......بخاری کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللّٰه علیه وسلم،باب مناقب المجاجرین وفضلهم ٢/ ٥١٧، الحدیث ٣٦٥٣

3 ......البداية والنهاية ، باب هجرة رسول الله...الخ ، ٢/ ٥٦٦

तुम ख़त्रे की सूरत में मेरे आगे मरना पसन्द करते हो ? अ़र्ज़ की : रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! मेरी येही आरज़ू है।(1) (سُبْحٰنَ اللہ ! سُبْحٰنَ اللہ)

जब ग़ार के क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : हुज़ूर ठहरिये ! मैं ग़ार को साफ़ करता हूं और अन्दर पहुंच कर हाथों से टटोल टटोल कर ग़ार को साफ़ करना शुरूअ़ किया जहां कहीं कोई सूराख़ नज़र आता वहां कपड़ा फाड़ कर उस को बन्द कर देते यहां तक कि सारा कपड़ा ख़त्म हो गया और एक सूराख़ बाक़ी रह गया, वहां आप ने अपने पाउं का अंगूठा रख दिया ताकि कोई चीज़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न दे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार में दाख़िल हुवे और अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में सर रख कर सो गए। ह़ज़रते अबू बक्र को उस सूराख़ से सांप ने डस लिया मगर आप ने पैर को जुम्बिश न दी कि मबादा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख खुल जाए और आप की नींद में ख़लल पड़े। शिद्दते तक्लीफ़ से आप के आंसू हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर पड़े तो हुज़ूर की आंख खुल गई, पूछा : अबू बक्र ! क्या बात है ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! सांप ने डस लिया है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लुआ़बे दहन लगाया तो ज़हर का असर जाता रहा।(2)

ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क्या ख़ूब कहा है : (अश्आ़र)

रेशम के कीड़ों से रेशम ह़ासिल कर के उ़म्दा क़िस्म का लिबास तय्यार किया जाता है लेकिन मकड़ी को इस बारे में ज़ियादा फ़ख़्र व मुबाहात ह़ासिल है क्यूंकि उस ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वासिते ग़ारे सौर पर जाला बुना था।(3)

---

1 ......دلائل النبوة للبیهقی، باب خروج النبی...الخ، ۲/۴۷۶، ۴۷۷ (بتغیر قلیل وبلا حسن).

2 ......مشکاۃالمصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر رضی اللّٰہ عنہ، ۲/۴۱۷، الحدیث ۶۰۳۴ و تاریخ مدینۃ دمشق، ۳۰/۸۰

3 .....हमारे पेशे नज़र 'मुकाशफ़तुल क़ुलूब' के दो मत्बूओं में इस मक़ाम पर येह अश्आ़र हैं :

و ثانی اثنین فی الغار المنیف و قد   طاف العدو به اذ صاعد الجبلا

و کان حب رسول اللہ قد علموا   من الخلائق لم یعدل به بدلا

﴿1﴾......उस बा मुक़द्दर ग़ार में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जब दुश्मन पहाड़ पर चढ़ रहे थे।

﴿2﴾....और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم येह जानते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब हैं, और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में किसी का रुत्बा इन के बराबर नहीं। इसी किताब के सफ़ह़ा नम्बर 122 पर इब्ने नक़ीब के अश्आ़र का तर्जमा और इस सफ़ह़ा के तर्जमे का मज़्मून एक जैसा है लिहाज़ा हो सकता है कि मुतर्जम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास 'मुकाशफ़तुल क़ुलूब' का जो नुस्ख़ा हो उस में साबिक़ा अश्आ़र कुछ अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ यहां दोबारा लिखे हों और इन्हों ने इन्ही का तर्जमा किया हो। واللّٰہ تعالٰی اعلم- **इल्मिय्या** (**बक़ाया ह़ाशिया अगले सफ़ह़ा पर**) =

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जुमा'रात के दिन मक्का से हिजरत की, तीन रातें ग़ारे सौर में गुज़ार कर यकुम रबीउ़ल अव्वल शबे दो शम्बा को वहां से रवाना हुवे और 12 रबीउ़ल अव्वल को मदीनए त़य्यिबा पहुंचे।

'**ज़करिय्या**' नाम का एक मश्हूर ज़ाहिद गुज़रा है, शदीद बीमारी के बा'द जब उस पर सकरात का आ़लम त़ारी हुवा तो उस के दोस्त ने उसे कलिमे की तल्क़ीन की मगर उस ने मुंह दूसरी त़रफ़ फेर लिया, दोस्त ने दूसरी मरतबा तल्क़ीन की लेकिन उस ने इधर उधर मुंह फेर लिया। जब उस ने तीसरी मरतबा तल्क़ीन की तो उस ज़ाहिद ने कहा : मैं नहीं कहता, दोस्त येह सुनते ही बेहोश हो गया। कुछ देर बा'द जब ज़ाहिद को कुछ इफ़ाक़ा हुवा, उस ने आंखें खोलीं और पूछा : तुम ने मुझ से कुछ कहा था ? उन्हों ने कहा : हां, मैं ने तुम को कलिमे की तल्क़ीन की थी मगर तुम ने दो मरतबा मुंह फेर लिया और तीसरी मरतबा कहा : "मैं नहीं कहता" ज़ाहिद ने कहा : बात येह है कि मेरे पास शैत़ान पानी का प्याला ले कर आया और दाईं त़रफ़ खड़ा हो कर मुझे वोह पानी दिखाते हुवे कहने लगा तुम्हें पानी की ज़रूरत है ? मैं ने कहा : हां ! कहने लगा : कहो ! ईसा **अल्लाह** के बेटे हैं। मैं ने मुंह फेर लिया तो दूसरे रुख़ की त़रफ़ से आ कर कहने लगा : मैं ने फिर मुंह फेर लिया। जब उस ने तीसरी मरतबा "ईसा **अल्लाह** के बेटे हैं" कहने को कहा तो मैं ने कहा : मैं नहीं कहता, इस पर वोह पानी का प्याला ज़मीन पर पटख़ कर भाग गया। मैं ने तो येह अल्फ़ाज़ शैत़ान से कहे थे, तुम से तो नहीं कहे थे और फिर कलिमए शहादत का ज़िक्र करने लगा।

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि किसी ने **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल किया : मुझे इन्सानी दिल में शैत़ान की जगह दिखा दे, ख़्वाब में उस ने शीशे की त़रह़ साफ़ शफ़्फ़ाफ़ एक इन्सानी जिस्म देखा जो अन्दर बाहर से यक्सां नज़र आ रहा था, शैत़ान को देखा वोह उस इन्सान के बाएं कन्धे और कान के दरमियान मेंडक की सूरत में बैठा हुवा था और अपनी त़वील सूंड से उस के दिल में वस्वसे डाल रहा था। जब वोह इन्सान **अल्लाह** का ज़िक्र करता तो वोह फ़ौरन ही पीछे हट जाता।

ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! ख़त्मुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़ुफ़ैल हमें शैत़ाने मर्दूद के तसल्लुत़ से बचा, हमें ह़ासिद ज़बान से नजात बख़्श और अपने ज़िक्रो शुक्र की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा। (آمین بجاہِ سَیِّدِالْمُرْسَلِیْن صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم)

(**बक़ाया ह़ाशिया**) = इन अश्आ़र से मुतअ़ल्लिक़ इब्ने अ़साकिर की एक रिवायत में है कि एक मरतबा सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : क्या तुम ने अबू बक्र की शान में भी कुछ लिखा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हां या रसूलल्लाह, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सुनाओ। तो ह़ज़रते ह़स्सान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येही अश्आ़र अ़र्ज़ किये। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर इस क़दर मुस्कुराए कि दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हुवे और इरशाद फ़रमाया : ह़स्सान तुम ने सच कहा, वोह ऐसे ही हैं जैसे तुम कहते हो। (تاریخ مدینہ دمشق لابن عساکر، ج۳۰، ص۹۱) **इल्मिय्या**

बाब 17

अमानत और तौबा

फ़ज़ीलते दुरूदे पाक

हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तवाफ़े का'बा करते हुवे एक ऐसे जवान को देखा जो क़दम क़दम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ रहा था। सुफ़्यान सौरी कहते हैं : मैं ने कहा : ऐ जवान ! तुम तस्बीह व तहलील छोड़ कर सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ ही पढ़ रहे हो ? क्या इस की कोई ख़ास वज्ह है ? जवान ने पूछा : आप कौन हैं ? मैं ने जवाब दिया : सुफ़्यान सौरी ! उस ने कहा : अगर आप का शुमार अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों में न होता तो मैं कभी भी आप को येह राज़ न बताता ! हुवा यूं कि मैं अपने बाप के हमराह हज के इरादे से निकला, रास्ते में एक जगह मेरा बाप सख़्त बीमार हो गया, मैं ने बहुत कोशिश की मगर उसे मौत से न बचा सका, मौत के बा'द उन का चेहरा सियाह हो गया, मैं ने "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن" पढ़ कर उन का चेहरा ढक दिया, इसी ग़म की कैफ़िय्यत में मेरी आंखें बोझल हो गईं और मुझे नींद आ गई। ख़्वाब में मैं ने एक ऐसे हसीन को देखा जो हुस्न में बे मिसाल था, उस का लिबास नफ़ासत का आईनादार था और उस के वुजूदे मसऊद से ख़ुश्बू की लपटें उठ रही थीं, वोह नाज़ुक ख़िरामी के साथ आया और मेरे बाप के चेहरे से कपड़ा हटा कर हाथ से चेहरे की तरफ़ इशारा किया मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो गया जब वोह वापस तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं ने दामन थाम कर अ़र्ज़ की : अल्लाह तआ़ला ने आप के तुफ़ैल इस ग़रीबुल वत़नी में मेरे बाप की आबरू रख ली, आप कौन हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं साहिबे कुरआन अल्लाह का नबी मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूं (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)। तेरा बाप अगर्चे बहुत गुनहगार था मगर मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता था, जब इस पर मुसीबत नाज़िल हो गई तो इस ने मुझ से मदद तलब की और मैं हर उस शख़्स का जो मुझ पर कसरत से दुरूद भेजता है, फ़रयाद रस हूं। जवान ने कहा : इस के बा'द अचानक मेरी आंख खुल गई, मैं ने देखा मेरे बाप का चेहरा सफ़ेद हो चुका था।(1)

---

1 ...... روح البیان، پ ۲۲، الاحزاب تحت الآیة ۵۶، ۷/۲۲۵

हज़रते अम्र बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अबू जा'फ़र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुझ पर दुरूद भेजना भूल गया, उस ने जन्नत का रास्ता खो दिया।[1]

अमानत की ता'रीफ़

'**अमानत**' अम्न से माख़ूज़ है और कोई शख़्स हक़ को छोड़ कर मामून नहीं रहता, अमानत की ज़िद ख़ियानत है जो ख़ून से मुश्तक़ है जिस का मा'ना है कम करना, क्यूंकि जब तुम किसी चीज़ में ख़ियानत करोगे तो उस में कमी वाक़ेअ़ हो जाएगी।

अमानत के बारे में इरशादाते नबवी

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि धोका, फ़रेब और ख़ियानत, जहन्नमियों का शेवा है।[2]

मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि जिस ने लोगों के साथ मुआ़मलात में ज़ुल्म नहीं किया और उन से झूटी बातें नहीं कहीं, उस की मुरादें मुकम्मल हो गईं, अ़दालत ज़ाहिर हो गई और उस से भाईचारा रखना ज़रूरी हो गया।[3]

एक आ'राबी, क़ौम की ता'रीफ़ में कहता है : वोह अमीन हैं किसी के साथ धोका नहीं करते, किसी मुसलमान की हुरमत को पामाल नहीं करते और उन के ज़िम्मे किसी का हक़ बाक़ी नहीं है, वोह बेहतरीन क़ौम हैं।

आ'राबी के ममदूह़ीन गुज़र चुके हैं, अब तो इन्सानी लिबास में भेड़िये फिरते हैं, जैसे किसी ने कहा है :

بمن يثق الا نسان فيما ينوبه　　ومن اين للحرالكريم صحاب

وقدصارهذا الناس الا اقلهم　　ذئابا على اجسادهن ثياب

﴾1﴿......उस शख़्स के लिये जो इन्सान पर उस की इनाबतों के बा वुजूद भरोसा करता है तो फिर इ़ज़्ज़त दार आज़ाद शख़्स के लिये ठिकाना कहां रहेगा।

﴾2﴿......चन्द लोगों को छोड़ कर बाक़ी सब इन्सानी लिबास में भेड़िये हैं।

एक और शाइ़र कहता है :

ذهب الذين يقال عند فراقهم　　ليت البلاد وما بها تتصدع

۞......वोह लोग चले गए जिन के फ़िराक़ में कहा जाता था, काश ! येह शहर वीरान हो जाते और क़ियामत आ जाती।

---

1 ...... ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، ١/٤٩٠، الحديث ٩٠٨

2 ......المستدرك للحاكم كتاب الاهوال، باب تحشرهذه الامة...الخ،٥/٨٣٣، الحديث ٨٨٣١

3 ......فردوس الاخبار، ٢/٢٧٣، الحديث ٥٩٥٤

हज़रते हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है, हुज़ूर صلَّی اللہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया कि अन क़रीब अमानत उठा ली जाएगी, लोग बाहम तिजारत करेंगे मगर अमीन कोई नहीं होगा यहां तक कि कहा जाएगा : फ़ुलां क़बीले में फ़ुलां आदमी अमीन है,(1) या'नी अमीन आदमी ढूंडने से भी नहीं मिलेगा।

तौबा का वुजूब

तौबा का वुजूब आयाते कुरआनी और अहादीस से साबित है, फ़रमाने इलाही है :

وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾(2)

इस आयत में **अल्लाह** तआला ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि वोह तौबा करें ताकि उन को फ़लाह मयस्सर हो। दूसरी आयत में है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا(3)

लफ़्ज़े नसूह "नस्ह" से माख़ूज़ है जिस के मा'ना हैं ख़ालिसतन **अल्लाह** के लिये तौबा करना जो तमाम उ़यूब से पाक हो।

तौबा की फ़ज़ीलत **अल्लाह** तआला के इस फ़रमान से साबित होती है :

اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَیُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴿۲۲۲﴾(4)

*बेशक **अल्लाह** तआला तौबा करने वालों और पाक रहने वालों को महबूब रखता है।*

और फ़रमाने नबी صلَّی اللہُ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وسلَّم है, तौबा करने वाला **अल्लाह** का दोस्त है, और तौबा करने वाला उस इन्सान की तरह है जिस ने कोई गुनाह न किया हो।(5)

तौबा के बारे में इरशादाते नबविय्या

फ़रमाने नबवी है कि रहमते खुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज़ियादा मसर्रत होती है जो हलाकत ख़ैज़ ज़मीन में अपनी सुवारी पर खाने पीने का सामान लादे सफ़र कर रहा हो और

---

1 ......بخاری ، کتاب الرقاق، باب رفع الامانة ، ٤/٢٤٦، الحدیث ٦٤٩٧ ملتقطاً

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ। (پ١٨،النور:٣١)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाए। (پ٢٨،التحریم:٨)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है, बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। (پ٢،البقرة:٢٢٢)

5 ......سنن الکبری، ١٠/٢٥٩، الحدیث ٢٠٥٦١ ونوادر الأصول فی أحادیث الرسول صلی اللّٰه علیه وسلم، ٢/٣٤٩

वहां आराम की ग़रज़ से रुक जाए, वोह सर रखे तो उसे नींद आ जाए, जब सो कर उठे तो उस की सुवारी मअ़ सामान के ग़ाइब हो और वोह उस की जुस्तजू में निकले यहां तक कि शिद्दते गर्मी और प्यास से बदहाल हो कर उसी जगह वापस आ जाए जहां वोह पहले सोया था और मौत के इन्तिज़ार में अपने बाज़ू का तक्या बना कर लैट जाए, अब जो वोह जागा तो उस ने देखा कि उस की सुवारी मअ़ सामान उस के क़रीब मौजूद है। अल्लाह तआ़ला को बन्दे की तौबा से उस सुवारी वाले शख़्स से भी ज़ियादा ख़ुशी होती है जिस का सामान जागने के बा'द उस को मिल गया है।[1]

हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई तो फ़िरिश्तों ने उन्हें मुबारक बाद पेश की, जिब्रील व मीकाईल عَلَیْہِمَا السَّلَام हाज़िर हुवे और कहा : ऐ आदम ! आप ने तौबा कर के अपनी आंखों को ठन्डा कर लिया। आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : अगर इस तौबा की क़बूलिय्यत के बा'द रब से फिर सुवाल करना पड़ा तो क्या होगा ? अल्लाह तआ़ला ने आदम عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई कि ऐ आदम ! तू ने अपनी अवलाद को मह़नत और दुख तक्लीफ़ का वारिस बनाया और हम ने उन्हें तौबा बख़्शी, जो भी मुझे पुकारेगा मैं तेरी त़रह़ उस की पुकार को सुनूंगा, जो मुझ से मग़फ़िरत का सुवाल करेगा मैं उसे ना उम्मीद नहीं करूंगा क्यूंकि मैं क़रीब हूं, दुआ़ओं को क़बूल करने वाला हूं, मैं तौबा करने वालों को उन की क़ब्रों से इस त़रह़ उठाऊंगा कि वोह हंसते मुस्कुराते हुवे आएंगे, उन की दुआ़एं मक़्बूल होंगी।

फ़रमाने नबवी है : अल्लाह तआ़ला का दस्ते रह़मत रात के गुनहगारों के लिये सुब्ह़ तक और दिन के गुनहगारों के लिये रात तक दराज़ रहता है उस वक़्त तक कि जब मग़रीब से सूरज तुलूअ़ होगा और तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।[2] (या'नी क़ियामत तक अल्लाह तआ़ला बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि अगर तुम ने आस्मान के बराबर गुनाह कर लिये और फिर शर्मिन्दा हो कर तौबा कर ली तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तौबा क़बूल कर लेगा।[3]

---

1 ......مسلم كتاب التوبة، باب فى الحض...الخ، ص ١٤٦٨، الحديث ٣ـ (٢٧٤٤)ملخصاً

2 ......مسلم كتاب ، التوبة، باب قبول التوبة...الخ، ص ١٤٧٥، الحديث ٣١ـ (٢٧٥٩)

3 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، با ب ذكر التوبة، ٤/٤٩٠، الحديث ، ٤٢٤٨، بتغير قليل

फ़रमाने नबवी है, आदमी गुनाह करता है फिर उसी गुनाह के सबब जन्नत में दाख़िल होता है पूछा गया : हुज़ूर वोह कैसे ? आप ने फ़रमाया : गुनाह के बा'द फ़ौरन उस की आंखें बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अश्कबार हो जाती हैं ।(1)

फ़रमाने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि नदामत गुनाहों का कफ़्फ़ारा है ।(2)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है : गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने कोई गुनाह न किया हो ।(3)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक हबशी हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं ख़ताएं करता हूं, क्या मेरी तौबा क़बूल होगी ? आप ने फ़रमाया : हां ! वोह कुछ दूर जा कर वापस लौट आया और दरयाफ़्त किया कि जब मैं गुनाह करता हूं तो **अल्लाह** तआ़ला देखता है ? आप ने इरशाद फ़रमाया : हां ! हबशी ने इतना सुनते ही एक चीख़ मारी और उस की रूह़ परवाज़ कर गई ।(4)

ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक तौबा क़बूल होगी

रिवायत है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने इब्लीस को मलऊन क़रार दिया तो उस ने क़ियामत तक के लिये मोहलत मांगी, **अल्लाह** ने उसे मोहलत दे दी तो वोह कहने लगा : मुझे तेरे इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक इन्सान की ज़िन्दगी का रिश्ता क़ाइम रहेगा मैं उसे गुनाहों पर उक्साता रहूंगा, रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया : मुझे अपने इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उन की ज़िन्दगी की आख़िरी सांसों तक उन के गुनाहों पर तौबा का पर्दा डालता रहूंगा ।(5)

फ़रमाने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : नेकियां गुनाहों को इस त़रह़ दूर ले जाती हैं जैसे पानी मेल को बहा ले जाता है(6) (दूर कर देता है) ।

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि येह आयत : فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِیْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ (7) उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई जो गुनाह करता फिर तौबा कर लेता फिर गुनाह करता और फिर तौबा कर लेता था ।

1 ......كتاب الزهد لابن المبارك ، باب ماجاء في الخشوع والخوف، ص ٥٢، الحديث ١٦٢

2 ......شعب الايمان ، السابع والاربعون من...الخ ، باب في معالجة...الخ، ٣٨٨/٥، الحديث ٧٠٣٩

3 ......ابن ماجه ، كتاب الزهد ، باب ذكر التوبة ، ٤٩١/٤، الحديث ٤٢٥٠

4 ......طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ٣٥٦/٦ و احياء علوم الدين، ١٧/٤

5 ......شعب الايمان ، السابع والاربعون...الخ، باب في معالجة كل ذنب...الخ، ٣٩٩/٥، الحديث ٧٠٧٠

6 ......كشف الخفاء، ١٩٦/١، تحت الحديث:٦٦٣ والفتوحات المكية، ٤١٦/٨ وطبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ٣٥٦/٦

7 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है । (پ١٥، بنى اسرائيل:٢٥)

हज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : रब्बे ज़ुल जलाल का इरशाद है : गुनहगारों को बिशारत दे दो, अगर वोह तौबा करें तो मैं क़बूल कर लूंगा, सिद्दीक़ीन को मुतनब्बेह कर दीजिये अगर मैं ने आ'माल का वज़्न किया तो उन्हें अ़ज़ाब से कोई नहीं बचा सकता।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का इरशाद है : जो गुनाहों की याद में पशेमान हो गया और उस का दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप गया, उस के गुनाहों को मह़्व कर दिया जाता है।

बाबे तौबा कभी बन्द नहीं होता

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : मैं गुनाह कर के इन्तिहाई शर्मिन्दा हूं, मेरे लिये तौबा है? आप ने मुंह फेर लिया, जब दोबारा उस शख़्स की त़रफ़ देखा तो आप की आंखों से आंसू रवां थे, फ़रमाया : जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, खोले भी जाते हैं और बन्द भी किये जाते हैं सिवाए बाबे तौबा के, वोह कभी भी बन्द नहीं होता और इसी काम के लिये उस पर एक फ़िरिश्ता मामूर है। अ़मल करता रह और रब की रह़मत से ना उम्मीद न हो।

रिवायत है कि बनी इस्राईल में से एक जवान शख़्स ने बीस साल मुतवातिर **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत की, फिर बीस साल गुनाहों में बसर किये, एक मरतबा आईना देखा तो उसे दाढ़ी में बुढ़ापे के आसार नज़र आए, वोह बहुत ग़मगीन हुवा और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में गुज़ारिश की : ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! मैं ने बीस साल तेरी इ़बादत की, फिर बीस साल गुनाहों में बसर किये, अब अगर मैं तेरी त़रफ़ लौट आऊं तो मुझे क़बूल कर लेगा? उस ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी, वोह कह रहा था : तू ने हम से मह़ब्बत की, हम ने तुझे मह़बूब बनाया, तू ने हमें छोड़ दिया हम ने तुझे छोड़ दिया, तू ने गुनाह किये हम ने मोहलत दे दी, अब अगर तू हमारी बारगाह में लौटेगा तो हम तुझे शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शेंगे।(1)

तौबा के बारे में सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब बन्दा तौबा करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा क़बूल कर लेता है, मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते उस के माज़ी के गुनाहों को भूल जाते हैं, उस के आ'ज़ाए जिस्मानी उस की ख़त़ाओं को भूल जाते हैं, ज़मीन का वोह टुकड़ा जिस पर उस ने गुनाह किया है और आस्मान का वोह हिस्सा जिस के नीचे उस ने गुनाह किया है उस के गुनाहों को भूल जाते हैं, जब वोह क़ियामत के दिन आएगा तो उस के गुनाहों पर गवाही देने वाला कोई नहीं होगा।(2)

---

1 ......روح البیان ، پ ۱۰، التوبة ، تحت الآية ٦، ٣/٣٨٩

2 ......كنز العمال، كتاب التوبة ، قسم الاقوال...الخ، ٨٧/٢، الجزء الرابع، الحديث ١٠١٧٥ ماخوذا

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ की पैदाइश से चार हज़ार बरस क़ब्ल अ़र्श के चारों त़रफ़ लिख दिया गया था कि وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى (1) *जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किये मैं उसे बख़्शने वाला हूं।*

सग़ीरा और कबीरा तमाम गुनाहों से तौबा फ़र्ज़े ऐन है क्यूंकि सग़ीरा गुनाहों पर इस्रार उन्हें कबीरा गुनाह बना देता है। फ़रमाने इलाही है :

وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ (2)

तौबए नसूह़ येह है कि इन्सान ज़ाहिरो बात़िन से तौबा करे और आयिन्दा गुनाह न करने का अ़ज़्मे समीम करे, जो शख़्स ज़ाहिरी त़ौर पर तौबा करता है उस की मिसाल ऐसे मुर्दार की है जिस पर रेशम व कम ख़्वाब की चादरें डाल दी गई हों, और लोग उसे ह़ैरत व इस्ति'जाब से देख रहे हों, जब उस से चादरें हटा ली जाएं तो लोग मुंह फेर कर चल दें, इसी त़रह़ लोग इ़बादते रियाई करने वालों को तअ़ज्जुब की निगाह से देखते रहते हैं लेकिन क़ियामत का दिन होगा तो इन के फ़रेब का पर्दा चाक कर दिया जाएगा और फ़िरिश्ते मुंह फेर कर चल देंगे चुनान्चे, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है।(3)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : क़ियामत के दिन बहुत से लोग ऐसे होंगे जो खुद को ताइब समझ कर आएंगे मगर उन की तौबा क़बूल नहीं हुई होगी इस लिये कि उन्हों ने तौबा के दरवाज़े को शर्मिन्दगी से मुस्तह़्कम नहीं किया होगा,(4) तौबा के बा'द गुनाह न करने का अ़ज़्म नहीं किया होगा, मज़ालिम को अपनी इमकानी त़ाक़त तक दफ़्अ़ नहीं किया होगा और आसान उमूर के जवाज़ के सिलसिले में जो काम उन्हों ने किये हैं और उन से त़लबे मग़्फ़िरत में उन्हों ने कोई एहतिमाम नहीं किया और उन के लिये येह बात आसान है कि **अल्लाह** तआ़ला उस से राज़ी हो जाए। गुनाहों को भूल जाना बहुत ख़त़्रनाक बात है, हर अ़क़्लमन्द के लिये ज़रूरी है कि वोह अपने नफ़्स का मुह़ासबा करता रहे और अपने गुनाहों को न भूले।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा। (پ١٦، طہ:٨٢) فردوس الاخبار، ٢/٣٤٠، الحديث ٦٧٠٨

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें। (پ٤، آلِ عمران:١٣٥)

3......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص١٣٨٧، الحديث ٣٣- (٢٥٦٤)

4......شعب الايمان ، السابع والاربعون من شعب الايمان باب فی معالجة كل ذنب...الخ، ٥/٤٣٦، الحديث ٧١٧٩

يـاايها المذنب المحصى جرائمه　　لاتنس ذنبک واذكر منه ماسلفا

وتـب الى اللّٰه قبل الموت وانزجرا　　ياعاصيا واعترف ان كنت معترفا

﴾1﴿......ऐ गुनाहों को शुमार करने वाले मुजरिम ! अपने गुनाहों को मत भूल और गुज़श्ता ग़लतियों को याद करता रह।

﴾2﴿......मौत से पहले **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ कर ले, गुनाहों से रुक जा और ग़लतियों का ए'तिराफ़ कर ले।

फ़क़ीह अबुल्लैस رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ एक मरतबा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रोते हुवे ह़ाज़िर हुवे, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उ़मर ! क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! दरवाज़े पर खड़े हुवे जवान की गिर्या व ज़ारी ने मेरा जिगर जला दिया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उसे अन्दर बुलाओ ! जब जवान ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने पूछा : ऐ जवान ! तुम किस लिये रो रहे हो ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर मैं अपने गुनाहों की कसरत और रब्बे ज़ुल जलाल की नाराज़ी के ख़ौफ़ से रो रहा हूं। आप ने पूछा : क्या तू ने शिर्क किया है ? कहा : नहीं या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡکَ وَسَلَّم), आप ने दोबारा पूछा : क्या तू ने किसी को ना ह़क़ क़त्ल किया है ? अ़र्ज़ किया : नहीं या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡکَ وَسَلَّم) ! आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर तेरे गुनाह सातों आस्मानों, ज़मीनों और पहाड़ों के बराबर हों तब भी **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मत से बख़्श देगा।

जवान बोला : या रसूलल्लाह ! मेरा गुनाह इन से भी बड़ा है, आप ने फ़रमाया : तेरा गुनाह बड़ा है या कुरसी ? अ़र्ज़ की : मेरा गुनाह, आप ने फ़रमाया : तेरा गुनाह बड़ा है या अ़र्शे इलाही ? अ़र्ज़ की : मेरा गुनाह, आप ने फ़रमाया तेरा गुनाह बड़ा है या रब्बे ज़ुल जलाल ! अ़र्ज़ की रब्बे ज़ुल जलाल बहुत अ़ज़ीम है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बिला शुबा जुर्मे अ़ज़ीम को रब्बे अ़ज़ीम ही मुआ़फ़ फ़रमाता है। फिर आप ने फ़रमाया : तुम मुझे अपना गुनाह तो बतलाओ, अ़र्ज़ की : हुज़ूर मुझे आप के सामने अ़र्ज़ करते हुवे शर्म आती है, आप ने फ़रमाया : कोई बात नहीं तुम बतलाओ ! अ़र्ज़ की : हुज़ूर मैं सात साल से कफ़न चोरी कर रहा हूं, अन्सार की एक लड़की फ़ौत हो गई तो मैं उस का कफ़न चुराने जा पहुंचा, मैं ने क़ब्र खोद कर कफ़न ले

लिया और चल पड़ा, कुछ ही दूर गया था कि मुझ पर शैतान ग़ालिब आ गया और मैं उलटे क़दम वापस पहुंचा और लड़की से बदकारी की। मैं गुनाह कर के अभी चन्द ही क़दम चला था कि लड़की खड़ी हो गई और कहने लगी : ऐ जवान ख़ुदा तुझे ग़ारत करे तुझे उस निगहबान का ख़ौफ़ नहीं आया जो हर मज़लूम को ज़ालिम से उस का हक़ दिलाता है, तू ने मुझे मुर्दों की जमाअ़त से बरह्ना कर दिया और दरबारे ख़ुदावन्दी में नापाक कर दिया है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह सुना तो फ़रमाया : दूर हो जा ! ऐ बद बख़्त ! तू नारे जहन्नम का मुस्तहिक़ है।

जवान वहां से रोता हुवा और अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करता हुवा निकल गया। जब उसे इसी ह़ालत में चालीस दिन गुज़र गए और उस ने आस्मान की त़रफ़ निगाह की और कहा : ऐ मुह़म्मद व आदम व इब्राहीम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के रब ! अगर तू ने मेरे गुनाह को बख़्श दिया है तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबा को मुत्तलअ़ फ़रमा वगरना आस्मान से आग भेज कर मुझे जला दे और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा ले। उसी वक़्त ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और कहा : आप का रब आप को सलाम कहता है और पूछता है कि मख़्लूक़ को तुम ने पैदा किया है ? आप ने फ़रमाया : नहीं बल्कि मुझे और तमाम मख़्लूक़ को अल्लाह ने पैदा किया है और उसी ने रिज़्क़ दिया है, तब जिब्रील ने कहा : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं ने जवान की तौबा क़बूल कर ली है। पस हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवान को बुला कर उसे तौबा की क़बूलिय्यत का मुज़्दा सुनाया।[1]

एक दर्द अंगेज़ तौबा

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में एक शख़्स ऐसा था जो अपनी तौबा पर कभी क़ाइम नहीं रहता था, जब भी वोह तौबा करता उसे तोड़ देता यहां तक कि उसे इस ह़ाल में बीस साल गुज़र गए। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी की, मेरे उस बन्दे को कह दो मैं तुझ से सख़्त नाराज़ हूं, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस आदमी को अल्लाह का पैग़ाम दिया तो वोह बहुत ग़मगीन हुवा और बयाबानों की त़रफ़ निकल गया, वहां जा कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! तेरी रह़मत जाती रही या मेरे गुनाहों ने तुझे दुख दिया ? तेरी बख़्शिश के ख़ज़ाने ख़त्म हो गए या बन्दों पर तेरी निगाहे करम नहीं रही ? तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र से कौन सा गुनाह बड़ा है ? तू करीम है, मैं बख़ील हूं, क्या मेरा बुख़्ल तेरे करम पर ग़ालिब आ गया है ? अगर तू ने अपने बन्दों को अपनी रह़मत से मह़रूम कर दिया तो वोह किस के दरवाज़े पर

[1]......الكشف والبيان للثعلبى، ٢٣٣/٨

जाएंगे ? अगर तू ने उन्हें रांदए दरगाह कर दिया तो वोह कहां जाएंगे ? ऐ रब्बे क़ादिरो क़हहार ! अगर तेरी बख़्शिश जाती रही और मेरे लिये अज़ाब ही रह गया है तो तमाम गुनाहगारों का अज़ाब मुझे दे दे, मैं उन पर अपनी जान क़ुरबान करता हूं। **अल्लाह** तआला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : जाओ और मेरे बन्दे से कह दो कि तू ने मेरे कमाले क़ुदरत और अफ़्वो दर गुज़र की हक़ीक़त को समझ लिया है, अगर तेरे गुनाहों से ज़मीन पुर हो जाए तब भी मैं बख़्श दूंगा।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि **अल्लाह** तआला को गुनहगार तौबा करने वाले की आवाज़ से ज़ियादा महबूब और कोई आवाज़ नहीं है, जब वोह **अल्लाह** कह कर बुलाता है तो रब तआला फ़रमाता है : मैं मौजूद हूं, जो चाहे मांग ! मेरी बारगाह में तेरा रुत्बा मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों के बराबर है, मैं तेरे दाएं, बाएं, ऊपर हूं और तेरी धड़कन से ज़ियादा क़रीब हूं, ऐ फ़िरिश्तो ! तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया।(1)

हज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा है : **अल्लाह** तआला के बहुत से ऐसे बन्दे हैं जिन्हों ने ख़ताओं के पौदे लगाए, इन्हें तौबा का पानी दिया और हसरतो नदामत का फल खाया, वोह दीवानगी के बिग़ैर दीवाने कहलाए और बिग़ैर किसी मशक़्क़त के लज़्ज़तें हासिल कीं, वोह लोग **अल्लाह** और उस के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मा'रिफ़त रखने वाले फ़सीहो बलीग़ हज़रात हैं और अदीमुन्नज़ीर हैं, उन्हों ने महब्बत के जाम पिये और मसाइब पर सब्र करने की दौलत से माला माल हुवे फिर आलमे मलकूत में उन के दिल ग़मज़दा हो गए और आलमे जबरूत के हिजाबात की सैर ने उन के अफ़कार को जिला बख़्शी, उन्हों ने नदामत के ख़ैमों में बसेरा किया, अपनी ख़ताओं के सहीफ़ों को पढ़ा और गिर्या व ज़ारी में मश्ग़ूल हो गए, यहां तक कि वोह अपनी परहेज़गारी की बदौलत ज़ोहद के आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ हुवे उन्हो ने तर्के दुन्या की तल्ख़ी को शीरीं समझा और सख़्त बिस्तरों को इन्तिहाई नर्म जाना ताआंकि उन्हों ने राहे नजात और सलामती की बुन्यादों को पा लिया, उन की अरवाह को बिहिश्त के बाग़ों में जगह मिली और अबदी ज़िन्दगी के मुस्तहिक़ क़रार पाए, उन्हों ने आहो बुका की ख़न्दक़ों को पाट दिया और ख़्वाहिशात की पुलों को उबूर कर गए यहां तक कि वोह इल्म के हमसाए हुवे और हिक्मत व दानाई के तालाब से सैराब हुवे, वोह फ़हमो फ़िरासत की किश्तियों में सुवार हुवे, उन्हों ने सलामती के दरया में नजात की दौलत से क़ल्ए बनाए और राहत के बाग़ात और इज़्ज़तो करामत के ख़ज़ानों के मालिक बन गए।

(1)......كنز العمال، كتاب التوبة، قسم الاقوال...الخ ٢/٩٥، الجزء الرابع، الحديث١٠٢٧٦ ماخوذا

बाब 18

फ़ज़ीलते रह़्म

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जन्नत में रह़्म करने वाला ही दाख़िल होगा, सह़ाबए किराम ने कहा : हम सब रह़्म करने वाले हैं, आप ने फ़रमाया : रह़ीम वोह नहीं जो अपने आप पर रह़्म करे बल्कि रह़ीम वोह है जो अपने आप पर और दूसरों पर रह़्म करे।[1]

रह़्म की ह़क़ीक़त

अपने आप पर रह़्म करने का मत़लब येह है कि ख़ुलूसे दिल से इबादत कर के गुनाहों से किनारा कश हो कर और तौबा कर के अपने वुजूद को **अल्लाह** के अ़ज़ाब से बचाए, दूसरों पर रह़्म येह है कि किसी मुसलमान को तक्लीफ़ न दे।

फ़रमाने हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से लोग मह़फ़ूज़ रहें[2] और वोह जानवरों पर रह़्म करे, उन से उन की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ काम ले।

हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : एक शख़्स सफ़र में जा रहा था कि उसे रास्ते में सख़्त प्यास लगी, उसे क़रीब ही एक कूंआं नज़र आया, जब कूंएं से पानी पी कर चला तो देखा एक कुत्ता प्यास के मारे ज़बान बाहर निकाले पड़ा है, उसे ख़याल आया कि इसे भी मेरी त़रह़ प्यास लगी होगी, वोह वापस गया, मुंह में पानी भर कर कुत्ते के पास आया और उसे पिला दिया, **अल्लाह** तआ़ला ने मह़ज़ इसी रह़्म की बदौलत उस के गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया।

सह़ाबए किराम ने सुवाल किया : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) जानवरों पर शफ़्क़त करने से भी हमें सवाब मिलता है? आप ने फ़रमाया : हर ज़ी रूह़ पर शफ़्क़त का अज्र मिलता है।[3]

---

1 ......شعب الایمان، الخامس والسبعون...الخ، باب فی رحم الصغیر...الخ ۷/۴۷۸، الحدیث ۱۱۰۵۹

2 ......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تفاضل الاسلام...الخ، ص ۴۱، الحدیث ۶۵-(۴۱)

3 ......بخاری، کتاب المظالم والغصب، باب الابار علی الطرق...الخ، ۲/۱۳۳، الحدیث ۲۴۶۶

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : एक रात हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गश्त लगा रहे थे कि आप का गुज़र एक क़ाफ़िले से हुवा, आप को अन्देशा लाहिक़ हुवा कहीं कोई उन का सामान न चुरा ले, रास्ते में इन्हें हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले और उन्हों ने पूछा : अमीरुल मोमिनीन ! इस वक़्त कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ? आप ने फ़रमाया : एक क़ाफ़िला क़रीब उतरा है, मुझे डर है कहीं कोई चोर उन का सामान न ले जाए, चलो उन की निगहबानी करें, येह दोनों हज़रात क़ाफ़िले के क़रीब जा कर बैठ गए और सारी रात पहरा देते रहे यहां तक कि सुब्ह हो गई, हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आवाज़ दी ऐ क़ाफ़िले वालो ! नमाज़ के लिये उठो ! जब क़ाफ़िले में जाग हो गई तो येह हज़रात वापस लौटे ।

पस हमारे लिये ज़रूरी है कि हम सहाबए किराम के नक़्शे क़दम पर चलें, अल्लाह तआ़ला ने उन की ता'रीफ़ में इरशाद फ़रमाया : رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ (1) वोह मुसलमानों पर बल्कि तमाम मख़्लूक़ पर रहम करने वाले हैं यहां तक कि ज़िम्मी काफ़िर भी उन की निगाहे शफ़्क़त से महरूम न रहे ।

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बुढ्ढे ज़िम्मी को लोगों के दरवाज़ों पर भीक मांगते हुवे देखा तो फ़रमाया हम ने तेरे साथ इन्साफ़ नहीं किया, जवानी में तुझ से जिज़्या लेते रहे और बुढ़ापे में तुझे दर बदर ठोकरें खाने को छोड़ दिया, आप ने उसी वक़्त बैतुल माल से उस का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया ।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : मैं ने एक सुब्ह हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा एक वादी में ऊंट पर सुवार चले जा रहे हैं, मैं ने पूछा : अमीरुल मोमिनीन कहां जा रहे हैं ? आप ने फ़रमाया : सदक़े के ऊंटों में से एक ऊंट गुम हो गया है । उसे तलाश कर रहा हूं, मैं ने कहा आप ने बा'द में आने वाले ख़ुलफ़ा को मुश्किल में डाल दिया है, हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में कहा : ऐ अबुल हसन ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मुझे मलामत न करो, रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस ने मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरहक़ बना कर भेजा, अगर दरयाए फ़ुरात के किनारे एक साला भेड़ का बच्चा भी मर जाए तो क़ियामत के दिन उस के बारे में मुआख़ज़ा होगा क्यूंकि उस अमीर की कोई इ़ज़्ज़त नहीं जिस ने मुसलमानों को हलाक कर दिया और न ही उस बदबख़्त का कोई मक़ाम है जिस ने मुसलमानों को ख़ौफ़ज़दा किया ।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आपस में नर्म दिल । (پ۲۶،الفتح:۲۹)

रहम के बारे में इरशादाते नबविय्या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मेरी उम्मत के लोग जन्नत में नमाज़ रोज़ों की कसरत से नहीं बल्कि दिलों की सलामती, सख़ावत और मुसलमानों पर रहम करने की बदौलत दाख़िल होंगे ।(1)

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : रहम करने वालों पर **अल्लाह** तआला रहम करता है तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आस्मान वाला तुम पर रहम फ़रमाएगा ।(2)

फ़रमाने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो किसी पर रहम नहीं करता, उस पर रहम नहीं किया जाता जो किसी को नहीं बख़्शता उसे नहीं बख़्शा जाता ।(3)

हज़रते मालिक बिन अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम पर मुसलमानों के चार हुकूक़ हैं अपने मोहसिन की इमदाद करो गुनाहगार के लिये मग़फ़िरत तलब करो मरीज़ की इयादत करो और तौबा करने वाले को दोस्त रखो ।(4)

रिवायत है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** तआला से सुवाल किया : ऐ **अल्लाह** ! तू ने मुझे किस वज्ह से सफ़ी बनाया है ? रब तआला ने फ़रमाया : मख़्लूक़ पर तेरे रहम करने की वज्ह से ।

हज़रते अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बच्चों से चिड़या ख़रीद कर उन्हें छोड़ देते और फ़रमाते जाओ आज़ादी की ज़िन्दगी बसर करो ।

फ़रमाने नबवी है कि रहमत, शफ़्क़त और महब्बत में तमाम मुसलमान एक जिस्म की त़रह हैं, जब जिस्म का कोई उ़ज़्व तक्लीफ़ में मुब्तला हो जाता है तो सारा जिस्म उस दर्द और तक्लीफ़ में मुब्तला हो जाता है ।(5)

हिकायत

बनी इस्राईल पर सख़्त क़ह़त़ का ज़माना था, एक आ़बिद का रैत के टीले से गुज़र हुवा तो उस के दिल में ख़याल आया काश येह रैत का टीला आटे का टीला होता और मैं इस से बनी

1 ......شعب الایمان ، الرابع والسبعون...الخ ، باب فی الجود والسخاء، ۷/۴۳۹، الحدیث ۱۰۸۹۲، ۱۰۸۹۳

2 ......ترمذی، کتاب البروالصلة ، باب ماجاء فی رحمة المسلمین، ۳/۳۷۱، الحدیث ۱۹۳۱

3 ......مسند احمد، مسندالکوفین، ۷/۷۱، الحدیث ۱۹۲۶۴

4 ......فردوس الاخبار، ۱/۲۱۵، الحدیث ۱۵۰۲ بتغیر قلیل (عن انس بن مالک)

5 ......مسلم، کتاب البروالصلة والاداب، با ب تراحم المؤمنین...الخ، ص ۱۳۹۶ الحدیث ۶۶ـ (۲۵۸۶)

इस्राईल के पेट भरवाता, **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इस्राईल के नबी की त़रफ़ वह़ी भेजी, मेरे उस बन्दे से कह दो कि तुझे इस टीले के बराबर बनी इस्राईल को आटा खिलाने से जितना सवाब मिलता हम ने तुम्हारी इस निय्यत की बदौलत ही उतना सवाब दे दिया है, इसी लिये फ़रमाने नबवी है, मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

हि़कायत

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा कहीं जा रहे थे, आप ने शैत़ान को देखा, एक हाथ में शहद और दूसरे में राख लिये चला जा रहा था, आप ने पूछा : ऐ दुश्मने ख़ुदा ! येह शहद और राख तेरे किस काम आती है ? शैत़ान ने कहा : शहद ग़ीबत करने वालों के होटों पर लगाता हूं ताकि वोह और आगे बढ़ें, राख यतीमों के चेहरों पर मलता हूं ताकि लोग इन से नफ़रत करें।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब यतीम को दुख दिया जाता है तो उस के रोने से **अल्लाह** तआ़ला का अ़र्श कांप जाता है, और रब्बे ज़ुल जलाल फ़रमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! इस यतीम को जिस का बाप मनो मिट्टी तले दफ़्न हो चुका है, किस ने रुलाया है ?[2]

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस ने यतीम के लिबास व त़आ़म की ज़िम्मेदारी ले ली, **अल्लाह** तआ़ला ने उस के लिये जन्नत को वाजिब कर दिया।[3]

'**रौज़तुल उ़लमा**' में है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام खाने से पहले मील दो मील का चक्कर लगा कर मेहमानों को तलाश किया करते थे। एक मरतबा ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो पड़े, पूछा गया : आप क्यूं रोए ? आप ने फ़रमाया : एक हफ़्ता हो गया, मेरे हां कोई मेहमान नहीं आया, शायद **अल्लाह** तआ़ला मुझ से ख़ुश नहीं है।

फ़रमाने नबवी है : जो किसी भूके को फ़ी सबीलिल्लाह खाना खिलाता है उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है[4] और जिस ने किसी भूके से खाना रोक लिया **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उस शख़्स से अपना फ़ज़्लो करम रोक लेगा और अ़ज़ाब देगा।[5]

---

1 ......شعب الايمان، الخامس والاربعون...الخ، باب فى اخلاص العمل...الخ، ٣٤٣/٥، الحديث ٦٨٥٩

2 ......فردوس الاخبار، ٥٠٧/٢، الحديث: ٨٥٥٧

3 ......شرح السنة، كتاب البروالصلة ، باب ثواب كافل اليتيم ، ٤٥٢/٦، الحديث ٣٣٥١.ملخصا

4 ......ابن عساكر ٢٧٠/١٢ و كنز العمال، ٩٧/١٦، الحديث ٤٤٢٧٢ بتغيير الالفاظ

5 ......

सख़ी, अल्लाह के क़रीब और जहन्नम से दूर होता है

फ़रमाने नबवी है : सख़ी **अल्लाह** तआ़ला, जन्नत और लोगों के क़रीब होता है और जहन्नम से दूर होता है, बख़ील **अल्लाह** तआ़ला, जन्नत और लोगों से दूर होता है और जहन्नम से क़रीब होता है।(1)

फ़रमाने नबवी है कि जाहिल सख़ी, **अल्लाह** तआ़ला को आ़बिद बख़ील से ज़ियादा पसन्द है।(2)

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन चार शख़्स बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे, आ़लिमे बा अ़मल, हाजी जिस ने हज के बा'द मौत तक गुनाहों का इर्तिकाब न किया, शहीद जो **अल्लाह** के कलिमे को बुलन्द करने के लिये मैदाने जंग में मारा गया, सख़ी जिस ने माले हलाल कमाया और **अल्लाह** की रिज़ाजूई में ख़र्च कर दिया, येह लोग एक दूसरे से इस बात पर झगड़ेंगे कि जन्नत में पहले कौन दाख़िल होता है।(3)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** ने अपने बा'ज़ बन्दों को मालो दौलत से माला माल कर दिया ताकि वोह लोगों को फ़ाइदा पहुंचाते रहें जो शख़्स फ़ाइदा पहुंचाने में पसो पेश करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की दौलत किसी और को दे देता है।(4)

फ़रमाने नबवी है : सख़ावत बिहिश्त का एक दरख़्त है जिस की शाख़ें ज़मीन पर झुकी हुई हैं जिस ने उस की किसी शाख़ को थाम लिया वोह उसे जन्नत में ले जाएगी।(5)

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : सब्र और सख़ावत।(6)

हज़रते मिक़्दाम बिन शुरीह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने वालिद और अपने जद से रिवायत करते हैं, इन के दादा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि मुझे ऐसा अ़मल बतलाइये जो मुझे जन्नत का मकीन बना दे। आप ने फ़रमाया : मग़फ़िरत के अस्बाब में से खाना खिलाना, सलाम करना और ख़ुश अख़्लाक़ी है।(7)

---

1 ......شعب الایمان، الرابع والسبعون...الخ ، باب فی الجود و السخاء ، ٤٢٨/٧، الحدیث١٠٨٤٨

2 ......المرجع السابق 3 ...... روح البیان،الانفال، تحت الآیة:٤، ٣١٤/٣

4 ......المعجم الاوسط ، ٤٦/٤، الحدیث ٥١٦٢

5 ......شعب الایمان الرابع والسبعون...الخ، باب فی الجود و السخاء ٤٣٤/٧، الحدیث ١٠٨٧٥

6 ......شعب الایمان ، السبعون من شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب ، ١٢٢/٧ الحدیث ٩٧١٠

7 ......المعجم الکبیر ١٨٠/٢٢، الحدیث ٤٦٩ و ٤٧٠

बाब 19

नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में है : एक दिन जिब्रीले अमीन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और कहा : मैं ने आस्मानों पर एक ऐसा फ़िरिश्ता देखा जो तख़्त नशीन था और सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते सफ़ बस्ता उस की ख़िदमत में हाज़िर थे, उस के हर सांस से **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है, अभी अभी मैं ने उसे शिकस्ता परों के साथ क़ोहे क़ाफ़ में रोते हुवे देखा है, जब उस ने मुझे देखा तो कहा तुम **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर मेरी सिफ़ारिश करो। मैं ने पूछा : तेरा जुर्म क्या है ? उस ने कहा : मे'राज की रात जब मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी गुज़री तो मैं तख़्त पर बैठा रहा, ता'ज़ीम के लिये खड़ा नहीं हुवा, इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस जगह इस अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया है। जिब्रीले अमीन ने कहा : मैं ने **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में रो रो कर उस की सिफ़ारिश की, **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से फ़रमाया : तुम इस से कहो कि येह मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे, चुनान्चे, उस फ़िरिश्ते ने आप पर दुरूद भेजा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस की इस लग़िज़िश को मुआ़फ़ कर दिया और उस के नए पर भी पैदा फ़रमा दिये।(1)

क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ के बारे में पूछा जाएगा

रिवायत है कि क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे की नमाज़ें देखी जाएंगी, अगर उस की नमाज़ें मुकम्मल हुईं तो नमाज़ों समेत उस के सारे आ'माल क़बूल कर लिये जाएंगे, अगर नमाज़ें ना मुकम्मल हुईं तो नमाज़ों समेत उस के तमाम आ'माल रद्द कर दिये जाएंगे।(2) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : फ़र्ज़ नमाज़ तराज़ू की तरह है, जिस ने इन्हें पूरा किया वोह कामयाब रहा।(3) हज़रते यज़ीदुर्रक़ाशी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नमाज़ इस तरह बराबर होती थी जैसे वोह तुली हुई हो।(4)

---

1 ......

2 ......المعجم الاوسط، ١/٥٠٤، الحديث ١٨٥٩ ماخوذاً

3 ......الزهد لابن المبارك، ص ٤١٩، الحديث ١١٩٠

4 ......المرجع السابق، باب ماجاء في فضل العبادة، ص ٣٤، الحديث ١٠٣

फ़रमाने नबवी है : मेरी उम्मत के दो आदमी नमाज़ पढ़ेंगे, उन के रुकूअ़ सुजूद एक जैसे होंगे मगर उन की नमाज़ों में ज़मीन आस्मान का फ़र्क़ होगा, एक में ख़ुशूअ़ होगा और दूसरी बिग़ैर ख़ुशूअ़ होगी ।[1]

फ़रमाने नबवी है : अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस बन्दे पर नज़रे रह़मत नहीं डालेगा जिस ने रुकूअ़ और सजदे के दरमियान अपनी पीठ को सीधा नहीं किया ।[2]

फ़रमाने नबवी है : जिस ने वक़्त पर नमाज़ पढ़ी, वुज़ू सह़ीह़ किया और रुकूअ़ व सुजूद को ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से पायए तक्मील तक पहुंचाया उस की नमाज़ सफ़ेद और बर्राक़ सूरत में आस्मानों की त़रफ़ जाती है और कहती है : ऐ बन्दे ! जैसे तू ने मेरी मुह़ाफ़ज़त की इसी त़रह़ अल्लाह तआ़ला तुझे मह़फ़ूज़ रखे लेकिन जिस ने नमाज़ वक़्त पर न पढ़ी न वुज़ू सह़ीह़ किया और अपने रुकूअ़ व सुजूद को ख़ुशूअ़ से आरास्ता न किया, उस की नमाज़ काली सियाह शक्ल में ऊपर जाती है और कहती है जैसे तू ने मुझे ख़राब किया अल्लाह तआ़ला तुझे भी ख़राब करे, यहां तक कि उसे पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस के मुंह पर मारा जाता है ।[3]

बद तरीन शख़्स नमाज़ का चोर है

फ़रमाने नबवी : "बद तरीन आदमी नमाज़ का चोर है ।"[4]

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : नमाज़ एक पैमाना है जिस ने इसे पूरा कर दिया वोह कामयाब हुवा और जिस ने इस में कमी की उस के लिये अ़ज़ाब है । बा'ज़ उ़लमा का क़ौल है नमाज़ी ताजिर की त़रह़ है ताजिर को उसी माल से नफ़अ़ मिलता है जो ख़ालिस हो, इसी त़रह़ नमाज़ी की इबादत भी फ़राइज़ को अदा किये बिग़ैर सूदमन्द नहीं होती ।

ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के वक़्त फ़रमाते : लोगो ! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये जो आग जलाई है उठो उसे नमाज़ के ज़रीए बुझा दो ।

---

1 ......كشف الخفاء،خاتمة يختم بها الكتاب، ٣٧٦/٢

2 ......مسند احمد ، مسند ابی ھریرة ٦١٧/٣ ، الحديث ١٠٨٠٣

3 ......شعب الايمان باب الحادی و العشرين...الخ، تحسين الصلاة...الخ ١٤٣/٣، الحديث ٣١٤٠ ، ليس بتمام

4 ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابی قتادہ انصاری ٣٨٦/٨، الحديث ٢٢٧٠٥

फ़रमाने नबवी है : नमाज़ सुकून और तवाज़ोअ़ के साथ है,[1] जो अपनी नमाज़ के बाइस फ़ोहूश और बुरे कामों से न रुका, अल्लाह तआ़ला से उस की दूरी बढ़ती जाती है[2] पस ग़ाफ़िल की नमाज़ उसे बुराइयों से नहीं रोकती है।

फ़रमाने नबवी है : बहुत से नमाज़ी ऐसे हैं जिन को नमाज़ों से दुख और तक्लीफ़ के बिग़ैर कुछ हासिल नहीं होता।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : बन्दे का नमाज़ में वोही हिस्सा है जिसे वोह कामिल तवज्जोह से पढ़ता है।[4]

अहले मा'रिफ़त कहते हैं : नमाज़ चार चीज़ों का नाम है, इल्म से आग़ाज़, हया के साथ क़ियाम, ता'ज़ीम से अदाएगी और ख़ौफ़े ख़ुदा के साथ इस का इख़्तिताम। बा'ज़ मशाइख़ का क़ौल है : जिस का दिल नमाज़ की हक़ीक़त को न समझता हो उस की नमाज़ फ़ासिद है।

फ़रमाने रसूले मक्बूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जन्नत में **'अफ़्यह़'** नाम की एक नहर है जिस में ज़ा'फ़रान से पैदा की हुई हूरें मोतियों के साथ दिल बहलाती रहती हैं और सत्तर हज़ार ज़बानों में अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ करती रहती हैं, इन की आवाज़ें ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام के लह़्न से ज़ियादा शीरीं हैं, वोह कहती हैं हम उन के लिये हैं जो ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ से नमाज़ें पढ़ते हैं, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : मैं ऐसे नमाज़ी को अपने जवारे रह़मत में जगह दूंगा और उसे शरफ़े दीदार बख़्शूंगा जो ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ से नमाज़ अदा करता है।[5]

नमाज़ किस त़रह अदा की जाए

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी की : ऐ मूसा ! जब तू दिल शिकस्ता हो कर मुझे याद करता है तो मैं तुझे याद करता हूं, कामिल इत़्मीनान और ख़ुशूअ़ से मेरा ज़िक्र किया कर, अपनी ज़बान को दिल का मुत़ीअ़ बना, मेरी बारगाह में अ़ब्दे ज़लील की त़रह़ हाज़िरी दे, ख़ौफ़ज़दा दिल से मुझे पुकार और सच्चाई की ज़बान से मुझे बुलाता रह।

---

1 ...... سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ما جاء فی التخشع فی الصلاۃ، ۱/۳۹۵، الحدیث ۳۸۵

2 ......المعجم الکبیر ۱۱/۴۶، الحدیث ۱۱۰۲۵

3 ......ابن ماجه، کتاب الصیام، باب ماجاء فی الغیبة...الخ، ۲/۳۲۰، الحدیث ۱۶۹۰ ماخوذًا وملخصًا

4 ......طبقات الشافیة الکبری للسبکی، ۶/۲۹۴ و المغنی عن حمل الاسفار للعراقی، ۱/۱۶۷، الحدیث ۶۷۴

5 ......

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई कि अपनी उम्मत के गुनहगारों से कह दो ! मेरा ज़िक्र न करें मैं ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि जो मुझे याद करेगा, मैं उसे याद करूंगा, येह जब मुझे याद करते हैं तो मैं उन पर ला'नत करता हूं।

ऐ अरबाबे होश ! येह तो उन लोगों का ह़ाल है जो गुनहगार हैं मगर यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं, उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जो बदकार भी हैं और यादे ख़ुदा से भी ग़ाफ़िल हैं।

बा'ज़ सह़ाबा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم का क़ौल है : इन्सान नमाज़ में जिस क़दर सुकून व इत़्मीनान और लज़्ज़त व सुरूर ह़ासिल करता है, उसी क़दर क़ियामत के दिन वोह पुर सुकून होगा।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को देखा वोह नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेल रहा था, आप ने फ़रमाया : अगर इस के दिल में ख़ुशूअ़ होता तो इस के आ'ज़ा में इस का ज़ुहूर होता[1] (दाढ़ी से इस त़रह़ शग़्ल करने से ज़ाहिर है कि उस के दिल में ख़ुशूअ़ नहीं है) आप ने फ़रमाया : जिस के दिल में ख़ुशूअ़ नहीं उस की नमाज़ राएगां है।[2]

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ अदा करने वालों की सिफ़ात

अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ रखने वालों की ता'रीफ़ मुतअ़द्दिद आयात में की है, फ़रमाने इलाही है :

فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ [3] عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ [4] عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ [5]

किसी ने ख़ूब कहा है : "नमाज़ी तो बहुत हैं मगर ख़ुशूअ़ से नमाज़ अदा करने वाले कम हैं, ह़ाजी बहुत हैं लेकिन नेक सीरत कम हैं, परन्दे बहुत हैं मगर बुलबुलें कम हैं और आ़लिम बहुत है मगर आ़मिल कम हैं।"

नमाज़े सह़ीह़

"सह़ीह़ नमाज़" ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और इन्किसारी का नाम है और येही क़बूलिय्यते नमाज़ की अ़लामत है क्यूंकि जैसे जवाज़े नमाज़ की शराइत़ हैं इसी त़रह़ क़बूलिय्यते नमाज़ की

---

1 ......كنزالعمال ، كتاب الصلوة ، مكروهات متفرقه ، ٤/٩٤، الجزء الثامن ، الحديث : ٢٢٥٢٥

2 .....येह ह़दीस हमें नहीं मिली अलबत्ता ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक क़ौल यूं है : "من لم يخشع فسدت صلاته"। (قوت القلوب، ٢/١٦١)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी नमाज़ में गिड़ गिडाते हैं। (پ١٨، المؤمنون:٢)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं। (پ٧،الانعام: ٩٢)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं। (پ٢٩، المعارج: ٢٣)

भी शराइत़ हैं, जवाज़ की शराइत़ फ़राइज़ का अदा करना और क़बूलिय्यते नमाज़ की शराइत़ में ख़ुशूअ़ और तक़्वा सरे फ़ेहरिस्त हैं चुनान्चे, इरशादे रब्बानी है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ [1]

तक़्वा के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे इलाही है :

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۲۷﴾ [2]

फ़रमाने नबवी है : जिस ने कामिल ख़ुशूअ़ से दो रक्अ़त नमाज़ अदा की, वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे पैदाइश के दिन पाक था ।[3]

नमाज़ अन्धेरे में पढ़ी जाए

हक़ीक़त येह है कि नमाज़ में दिल ख़याලाते फ़ासिदा की वज्ह से सह़ीह़ मा'नों में नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं हो पाता लिहाज़ा इन ख़यालात से नजात ह़ासिल करना ज़रूरी है । नजात के कई त़रीक़े हैं एक येह भी है कि अन्धेरे में नमाज़ पढ़ी जाए या ऐसी जगह नमाज़ पढ़ी जाए जहां कामिल सुकूत हो, नीचे रंगीन फ़र्श न हो और नमाज़ी मुनक़्क़श कपड़े न पहने हो क्यूंकि इन चीज़ों पर जूंही नज़र पड़ती है इन्सान उधर मुतवज्जेह होता है, चुनान्चे, ह़दीस शरीफ़ में है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू जहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के भेजे हुवे मुनक़्क़श कुर्ते में नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के फ़ौरन बा'द उतार कर वापस भेज दिया और फ़रमाया : इस ने अभी मुझे नमाज़ में अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह कर दिया ।[4]

एक मरतबा नए जूते पहन कर आप ने नमाज़ पढ़ी, नमाज़ के बा'द आप ने उसे उतार दिया और वोही पुराने जूते पहन लिये और फ़रमाया : मैं नमाज़ में इस की त़रफ़ देख कर मश्ग़ूल हो गया ।[5]

---

1. **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं । (پ۱۸، المؤمنون: ۱،۲)
2. **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है । (پ۶، المائدة: ۲۷)
3. ......المعجم الاوسط، ۳۷۹/۴، الحدیث ۶۳۰۶
4. ......بخاری کتاب الصلاة، باب اذا صلی فی ثوب له...الخ، ۱۴۹/۱، الحدیث ۳۷۳
5. ......الزهد لابن مبارك، باب فضل المشی...الخ، ص ۱۳۵، الحدیث ۴۰۲

मर्दों के लिये सोने के ज़ेवरात की हुरमत से पहले आप एक दिन सोने की अंगूठी पहन कर मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने उसे उतार कर फेंक दिया और फ़रमाया : येह मुझे अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करती है।[1]

हज़रते अबू तलहा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक मरतबा अपने बाग़ में नमाज़ पढ़ी, अचानक एक परन्दा उड़ा और वोह दरख़्तों से निकलने की राह तलाश करने लगा। हज़रते अबू तलहा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने तअज्जुब से येह मन्ज़र देखा तो वोह अदा शुदा रक्अ़तों की ता'दाद भूल गए, आप हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की बारगाह में हाज़िर हुवे और इस आज़माइश का ज़िक्र करते हुवे कहने लगे : ऐ **अल्लाह** के रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم मैं ने बाग़ **अल्लाह** की राह में दे दिया है, अब आप जैसे चाहें इसे ख़र्च करें।[2]

एक और शख़्स ने हज़रते उस्मान رضی اللہ تعالٰی عنہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में अपने उस बाग़ में जो खजूरों से लदा हुवा था, नमाज़ पढ़ी तो उस की नज़र खजूरों के फल देखने में ऐसी उलझी कि उसे रक्अ़तों की ता'दाद याद न रही, नमाज़ ख़त्म कर के वोह हज़रते उस्मान رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास आया और कहने लगा : मैं ने इस बाग़ को **अल्लाह** के नाम पर बख़्श दिया है, इसे **अल्लाह** के रास्ते में ख़र्च कर दीजिये। हज़रते उस्मान رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वोह बाग़ पचास हज़ार रूपे में फ़रोख़्त कर दिया।

अस्लाफ़े किराम में से बा'ज़ हज़रात का इरशाद है कि नमाज़ में चार चीज़ें इन्तिहाई बुरी हैं, किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह होना, मुंह पर हाथ फेरना, कंकरियां साफ़ करना और गुज़रगाह पर नमाज़ शुरूअ़ कर देना।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तरफ़ मुतवज्जेह रहता है

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दे की तरफ़ मुतवज्जेह रहता है जब तक वोह अपनी तवज्जोह नमाज़ से नहीं हटाता।[3]

हज़रते अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ जब नमाज़ में खड़े होते तो ऐसा मा'लूम होता था जैसे कोई मीख़ गड़ी हुई है। बा'ज़ हज़रात इतने सुकून से रुकूअ़ करते कि परन्दे उन्हें पथ्थर समझ कर उन की पीठ पर बैठ जाते।

1 ......المعجم الكبير، ١٢/٣٢ ، الحديث ١٢٤٠٨

2 ......السنن الكبرى للبيقى ، كتاب الصلوة ، باب من نظر فى صلاته...الخ،٢/٤٩٢، الحديث ٣٨٧٣

3 ......ابوداود، كتاب الصلاة ، باب الالتفات فى الصلاة ، ١/٣٤٤ ، الحديث٩٠٩

ज़ौके़ सलीम भी इस बात का तक़ाज़ा करता है कि जब दुन्यावी शानो शौकत वाले इन्सानों के हुज़ूर लोग इन्तिहाई ता'ज़ीम से हाज़िर होते हैं तो उस बादशाहों के बादशाह के हुज़ूर तो ब त़रीके़ औला ता'ज़ीम व तकरीम से हाज़िर होना चाहिये।

'तौरात' में मरकूम है : ऐ इन्सान ! मेरी बारगाह में रोते हुवे हाज़िरी देने से न घबरा मैं (तेरा ख़ुदा) तेरे दिल से भी ज़ियादा क़रीब हूं और हर जगह मेरा नूर जल्वा फ़िगन है।

रिवायत है : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिम्बर पर फ़रमाया : ह़ालते इस्लाम में इन्सान बूढ़ा हो जाता है मगर उस की नमाज़ कामिल नहीं होती। पूछा गया : वोह कैसे ? फ़रमाया : दिल में ख़ुशूअ़ न आया, इन्किसारी पैदा न हुई और नमाज़ में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ हमातन मुतवज्जेह न बना। (तो फिर नमाज़ कैसे कामिल हुई ?)

अबुल आ़लिया رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस आयत اَلَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ के मा'ना दरयाफ़्त किये गए, उन्हों ने कहा : येह उस शख़्स के बारे में है जो नमाज़ में भूल जाता है और उसे येह पता नहीं चलता कि उस ने दो रक्अ़त पढ़ी है या तीन ?

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि येह इरशादे इलाही उस शख़्स के बारे में है जो नमाज़ को भूल जाता है यहां तक कि उस का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे फ़राइज़ को अदा किये बिग़ैर मुझ से रिहाई नहीं पा सकेंगे।(1)

अवलाद को कम अ़क़्ली से बचाने का नुस्ख़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िफ़ाज़त निशान है : "जो शख़्स दस्तरख़्वान से खाने के गिरे हुवे टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राख़ी की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की अवलाद और अवलाद की अवलाद कम अ़क़्ली से मह़फ़ूज़ रहती है।"

(كنز العمال ١٥/١١١ الحديث ٤٠٨١٥)

---

(1) الزهد لابن المبارك، باب فضل ذكر الله عزوجل، ص ٣٦٥، الحديث ١٠٣٢

बाब 20

ग़ीबत व चुग़ली

ग़ीबत पर वईद

खुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में ग़ीबत की मज़म्मत करते हुवे ग़ीबत करने वालों को मुर्दार का गोश्त खाने वाले कहा चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ[1]

एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में से कोई अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसन्द करता है।

फ़रमाने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का खून, माल और इ़ज़्ज़त ह़राम है।[2]

इरशादे नबवी है कि अपने आप को ग़ीबत से बचाओ क्यूंकि ग़ीबत ज़िना से बदतर है, क्यूंकि ज़ानी गुनाह के बा'द तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला क़बूल कर लेता है मगर ग़ीबत का गुनाह उस वक़्त तक मुआ़फ़ नहीं होता जब तक कि जिस की ग़ीबत की जाए वोह मुआ़फ़ न कर दे।[3]

कहते हैं : ग़ीबत करने वाले की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस ने एक मिन्जनीक़ लगाई और वोह उस मिन्जनीक़ के ज़रीए़ दाएं बाएं नेकियां फेंक रहा है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जो किसी मुसलमान भाई की बुराई चाहते हुवे ग़ीबत करता है, अल्लाह तआ़ला उसे यौमे क़ियामत जहन्नम के पुल पर उस वक़्त तक खड़ा

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा। (پ٢٦،الحجرات:١٢)

2 ......مسلم ، كتاب البر والصلة والاداب ، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص ١٣٨٦، الحديث ٣٢-(٢٥٦٤)

3 ......شعب الايمان ، الرابع والاربعون...الخ ، باب فى تحريم اعراض الناس، ٥/٣٠٦، الحديث ٦٧٤١ و جامع الاحاديث، ٣/٣٩٠ ، الحديث ٩٣١٠

करेगा कि जो कुछ उस ने कहा था, निकल जाए।(1)

फ़रमाने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ग़ीबत येह है कि तू अपने भाई की उस चीज़ का ज़िक्र करे जिसे वोह ना पसन्द करता है(2) ख़्वाह उस के बदन का कोई ऐब हो, नसब का ऐब हो, उस के क़ौलो फ़े'ल या दीनो दुन्या का ऐब हो यहां तक कि उस के कपड़ों और सुवारी में भी कोई ऐब निकालेगा तो येह ग़ीबत होगी।

बा'ज़ मुतक़द्दिमीन का क़ौल है : येह कहना भी कि फ़ुलां का कपड़ा लम्बा या छोटा है, ग़ीबत है चे जाएकि उस की ज़ात के नक़्स गिने जाएं। (तो उस ग़ीबत का क्या ठिकाना)

एक छोटे क़द की औरत किसी काम के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुई, जब वोह वापस चली गई तो हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : उस का क़द कितना छोटा था, आप ने फ़रमाया : आइशा ! तुम ने उस की ग़ीबत की है।(3)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अपने आप को ग़ीबत से बचाओ क्यूंकि इस में तीन मुसीबतें हैं : ग़ीबत करने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती, उस की नेकियां ना मक़्बूल होती हैं और उस पर गुनाहों की यूरिश (यलग़ार) होती है।(4)

चुग़ुल ख़ोर का अन्जाम

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन बद तरीन आदमी दो चेहरों वाला चुग़ुल ख़ोर होगा जो आप के पास और चेहरा ले कर आता है, दूसरे के पास और चेहरा ले कर जाता है(5) और फ़रमाया जो दुन्या में चुग़ुल ख़ोरी करता है क़ियामत के दिन उस के मुंह से आग की दो ज़बानें नज़र आएंगी।(6)

---

1 ......ابوداود، کتاب الادب، باب من ردعن مسلم غیبة، ٤/٣٥٤، الحدیث٤٨٨٣

2 ...... مسلم ، کتاب البروالصلة والاداب، باب تحریم الغیبة، ص ١٣٩٧، الحدیث ٧٠، (٢٥٨٩)

3 ......مسند احمد ، ٤٦٣/٩، الحدیث ٢٥١٠٣ وشعب الایمان، الرابع والاربعون...الخ ، باب ٣١٣/٥،الحدیث ٦٧٦٧

4 ......

5 ......بخاری، کتاب الادب، باب ما قیل فی ذی الوجھین، ١١٥/٤، الحدیث٦٠٥٨

6 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی ذی الوجھین، ٣٥٢/٤، الحدیث٤٨٧٣

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।[1]

हिक्मत

अल्लाह तआ़ला ने तमाम जानवरों के मुंह में ज़बान पैदा की है मगर मछली को ज़बान नहीं दी गई, इस की वज्ह येह है कि जब हुक्मे खुदावन्दी से फ़िरिश्तों ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा किया और इब्लीस, रजीम हो कर मस्ख़ शुदा सूरत में ज़मीन पर फेंक दिया गया तो वोह समन्दरों की त़रफ़ गया तो उसे सब से पहले मछली नज़र आई जिसे उस ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ का क़िस्सा सुनाया और येह भी बतलाया कि वोह बहूरो बर के जानवरों का शिकार करेगा, तो मछली ने तमाम दरयाई जानवरों तक ह़ज़रते आदम की कहानी कह सुनाई बईं वज्ह उसे **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बान के शरफ़ से महरूम कर दिया।

चुग़ल ख़ोर की सज़ा

ह़ज़रते अ़म्र बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मदीनए त़य्यिबा में एक शख़्स रहता था जिस की बहन मदीने के नवाह़ में रहती थी, वोह बीमार हो गई तो येह शख़्स उस की तीमार दारी में लगा रहा लेकिन वोह मर गई तो उस शख़्स ने उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया, आख़िर जब उसे दफ़्न कर के वापस आया तो उसे याद आया कि वोह रक़म की एक थैली क़ब्र में भूल आया है। उस ने अपने एक दोस्त से मदद त़लब की। दोनों ने जा कर उस की क़ब्र खोद कर थैली निकाल ली। तो उस ने दोस्त से कहा : ज़रा हटना ! मैं देखूं तो सही मेरी बहन किस ह़ाल में है ? उस ने लह़्द में झांक कर देखा तो वोह आग से भड़क रही थी, वोह वापस चुप चाप चला आया और मां से पूछा : मेरी बहन में क्या कोई ख़राब आ़दत थी ? मां ने कहा : तेरी बहन की आ़दत थी वोह हमसायों के दरवाज़ों से कान लगा कर उन की बातें सुनती थी और चुग़ुल ख़ोरी किया करती थी। पस उस शख़्स को मा'लूम हो गया कि अ़ज़ाब का सबब क्या है, पस जो शख़्स अ़ज़ाबे क़ब्र से बचना चाहता है उसे चाहिये कि वोह ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी से परहेज़ करे।

ह़ज़रते अबुल्लैस बुख़ारी का एक वाक़िआ़

ह़ज़रते अबुल्लैस बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज के लिये घर से रवाना हुवे और दो दीनार जेब में डाल लिये, रवाना होते वक़्त क़सम खाई कि अगर मैं ने मक्कए मुकर्रमा को जाते या घर वापस

[1] ......مسلم ، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم النميمة ، ص ٦٦، الحديث١٦٨ـ (١٠٥)

आते हुवे किसी की ग़ीबत की तो येह दो दीनार अल्लाह के नाम पर सदक़ा कर दूंगा। आप मक्का शरीफ़ तक गए और घर वापस आए मगर दीनार इसी त़रह़ उन की जेब में मह़फ़ूज़ रहे, उन से ग़ीबत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उन्हों ने जवाब दिया : मैं एक मरतबा की ग़ीबत को सो मरतबा के ज़िना से बद तरीन समझता हूं।

ह़ज़रते अबू ह़फ़्स अल कबीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि मैं किसी इन्सान की ग़ीबत करने को माहे रमज़ान के रोज़े न रखने से बदतर समझता हूं, फिर फ़रमाया : जिस ने किसी आ़लिम की ग़ीबत की तो क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर लिखा हुवा होगा, येह अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद है।

फ़रमाने नबवी है : मे'राज की रात मेरा ऐसी क़ौम पर गुज़र हुवा जो अपने नाख़ुनों से अपने चेहरों को छील रहे थे और मुर्दार खा रहे थे, मैं ने जिब्रीले अमीन से पूछा कि : येह कौन लोग हैं ? जिब्रील ने कहा : येह वोह लोग हैं जो दुन्या में लोगों का गोश्त खाते रहे हैं।[1] (या'नी ग़ीबत करते रहे हैं)

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है : रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! ग़ीबत, लुक़्मे के पेट में पहुंचने से भी जल्द तर, मोमिन के दीन में रख़्ना डाल देती है।

ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के हम सफ़र थे और उन के लिये खाना तय्यार करते थे, एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने खाने की कोई चीज़ न पाई जिसे तय्यार कर के वोह खा सकें, ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने इन्हें हुज़ूर की ख़िदमत में भेजा कि जा कर देखो वहां कुछ मौजूद है ? उन्हों ने वापस आ कर बतलाया कि वहां कुछ नहीं है, इस पर उन्हों ने कहा : अगर तुम फ़ुलां कूंएं की त़रफ़ जाते तो उस का पानी भी ख़ुश्क हो जाता, तब येह आयत नाज़िल हुई :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا[2] *या'नी एक दूसरे की ग़ीबत न करो।*

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो दुन्या में अपने भाई का गोश्त खाता है क़ियामत के दिन उस के सामने मुर्दा भाई का गोश्त रखा

1 ......ابو داود، کتاب الادب، باب فی الغيبة، ٤/٣٥٣، الحديث ٤٨٧٨

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। (پ٢٦،الحجرات:١٢)

जाएगा और कहा जाएगा : जिसे तू ज़िन्दा खाता था अब मुर्दा को भी खा और वोह उसे खाएगा।" फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا (1) *क्या तुम में से कोई येह पसन्द करता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए।*

ग़ीबत की बदबू अब क्यूं मह़सूस नहीं होती

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है चूंकि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में ग़ीबत बहुत कम की जाती थी इस लिये इस की बदबू आती थी मगर अब ग़ीबत इतनी आ़म हो गई कि मश्शाम इस की बदबू के आ़दी हो गए हैं कि वोह इसे मह़सूस ही नहीं कर सकते। इस की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स चमड़े रंगने वालों के घर में दाख़िल हो तो वोह उस की बदबू से एक लम्ह़ा भी नहीं ठहर सकेगा मगर वोह लोग वहीं खाते पीते हैं और उन्हें बू मह़सूस ही नहीं होती क्यूंकि उन के मश्शाम (नाक) इस क़िस्म की बू के आ़दी हो चुके हैं और येही ह़ाल अब इस ग़ीबत की बदबू का है।

ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : मैं ने किसी किताब में पढ़ा है, जो शख़्स ग़ीबत से तौबा कर के मरा वोह जन्नत में सब से आख़िर में दाख़िल होगा और जो ग़ीबत करते करते मर गया वोह जहन्नम में सब से पहले जाएगा, फ़रमाने इलाही है :

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾ (2) *हर पीठ पीछे बुराइयां करने वाले और तेरी मौजूदगी में बुराइयां करने वाले के लिये जहन्नम का गढ़ा है।*

येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुसलमानों के सामने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुसलमानों की बुराइयां किया करता था, इस आयत का शाने नुज़ूल तो ख़ास है मगर इस की वई़द आ़म है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए। (پ٢٦،الحجرات:١٢) المعجم الاوسط،١/٤٥٠،الحديث ١٦٥٦، ليس ذكر الآية

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे पीठ पीछे बदी करे। (پ٣٠،الهُمزة:١)

ग़ीबत ज़िना से भी बदतर है

रसूले मक्बूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अपने आप को ग़ीबत से बचाओ, येह ज़िना से भी बदतर है, पूछा गया : येह ज़िना से कैसे बदतर है ? तो आप ने फ़रमाया : आदमी ज़िना कर के तौबा कर लेता है, अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है मगर ग़ीबत करने वाले को जब तक वोह शख़्स जिस की ग़ीबत की गई हो, मुआ़फ़ न करे, उस की तौबा क़बूल नहीं होती।[(1)]

लिहाज़ा हर ग़ीबत करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर शर्मिन्दा हो कर तौबा करे ताकि अल्लाह के करम से फ़ैज़याब हो कर फिर उस शख़्स से मा'ज़िरत करे जिस की उस ने ग़ीबत की थी ताकि ग़ीबत के अन्धयारों से रिहाई ह़ासिल हो।

फ़रमाने नबवी है कि जो अपने मुसलमान भाई की ग़ीबत करता है अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस का मुंह दुबर की त़रफ़ फेर देगा,[(2)]

इस लिये हर ग़ीबत करने वाले पर लाज़िम है कि वोह उस मजलिस से उठने से पहले अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी मांग ले और जिस शख़्स की ग़ीबत की है उस तक बात पहुंचने से क़ब्ल ही रुजूअ़ कर ले क्यूंकि ग़ीबत के वहां तक पहुंचने से पहले जिस की ग़ीबत की गई हो, अगर तौबा कर ली जाए तो तौबा क़बूल हो जाती है मगर जब बात उस शख़्स तक पहुंच जाए तो जब तक वोह खुद मुआ़फ़ न करे तौबा से गुनाह मुआ़फ़ नहीं होता और इसी त़रह़ शादीशुदा औ़रत पर ज़िना का मस्अला है, जब तक उस का शोहर मुआ़फ़ न करे, तौबा क़बूल नहीं होगी, रहा नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात का मुआ़मला तो क़ज़ा अदा किये बिग़ैर इन की भी तौबा क़बूल नहीं होती। وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم

❁...❁...❁...❁...❁

---

1 ......المعجم الاوسط للطبرانی، ٥/٦٣، الحديث ٦٥٩٠ و جامع الاحاديث، ٣/٣٩٠، الحديث ٩٣١٠

2 ......كنز العمال، ٣/٢٣٥، الحديث ٨٠٣٦

बाब 21

ज़कात

ज़कात अदा न करने वाले पर अज़ाब

फ़रमाने इलाही :

وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ[1] *और वोह लोग जो ज़कात अदा करने वाले हैं।*

हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है : हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : जो शख़्स, अपने मालो दौलत का हक़ अदा नहीं करता क़ियामत के दिन उस के पहलू और पीठ जहन्नम के सख़्त गर्म पथ्थरों से दाग़ी जाएगी और उस का जिस्म वसीअ़ कर दिया जाएगा और जब कभी उस की ह़रारत में कमी आएगी उस को बढ़ा दिया जाएगा और दिन उस के लिये त़वील कर दिया जाएगा जिस की मिक्दार पचास हज़ार साल होगी यहां तक कि बन्दों के आ'माल का फ़ैसला होगा फिर वोह जन्नत की त़रफ़ अपना रास्ता इख़्तियार करेगा,[2]

फ़रमाने इलाही है :

وَالَّذِیْنَ یَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا یُنْفِقُوْنَهَا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ۙ یَّوْمَ یُحْمٰى عَلَیْهَا فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ[3]

और जो लोग सोना चांदी जम्अ़ करते हैं और इसे राहे ख़ुदा में ख़र्च नहीं करते उन्हें अ़ज़ाबे अलीम की ख़ुश ख़बरी दे दो जिस दिन उन के माल को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा और इस से उन के पहलूओं, पेशानियों और पीठों को दाग़ा जाएगा कि येह है जो कुछ तुम ने जम्अ़ किया था अब अपने जम्अ़ कर्दा माल का मज़ा चखो।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं। (پ۱۸،المؤمنون:٤)

2.....مسلم كتاب الزكاة، باب اثم مانع الزكاة ، ص ٤٨١، الحديث ٢٤ـ (٩٨٧)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे **अल्लाह** (عزوجل) की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर इस से दाग़ेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का। (پ۱۰،التوبة:٣٤،٣٥)

क़ियामत के दिन "फ़ुक़रा" अग़निया के लिये बाइसे हलाकत होंगे

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन फ़ुक़रा, अग़निया के लिये हलाकत का सबब बनेंगे, जब वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : ऐ **अल्लाह** ! इन्हों ने हमारे हुक़ूक़ ग़सब कर के हम पर ज़ुल्म किया था। रब फ़रमाएगा : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज मैं तुम्हें अपने जवारे रह़मत में जगह दूंगा और इन्हें अपनी रह़मत से दूर कर दूंगा, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी :

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿۲۴﴾ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾ (1)

अग़निया के माल में साइल और फ़क़ीर का एक मुअ़य्यन ह़क़ है।

फ़रमाने नबवी है : मे'राज की रात मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा जिन्हों ने आगे पीछे चीथड़े लगाए हुवे थे और जहन्नम का थोहड़, ऐलवा और बदबू दार घास जानवरों की त़रह़ खा रहे थे। मैं ने पूछा : जिब्रील येह कौन हैं ? जिब्रील ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर येह वोह लोग हैं जो अपने माल का सदक़ा (ज़कात) नहीं देते थे। **अल्लाह** तआ़ला ने नहीं बल्कि इन्हों ने ख़ुद ही अपने आप पर ज़ुल्म किया है।(2)

अ़जीबो ग़रीब ह़िकायत

ताबेई़न رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की एक जमाअ़त ह़ज़रते अबी सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ियारत के लिये आई, जब उन लोगों को वहां बैठे कुछ देर हो गई तो ह़ज़रते अबी सिनान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : हमारा एक हमसाया फ़ौत हो गया है, चलो ता'ज़िय्यत के लिये उस के भाई के पास चलें, मुह़म्मद यूसुफ़ अल फ़िरयाबी कहते हैं : हम आप के साथ रवाना हो गए और उस के भाई के पास पहुंचे तो देखा वोह बहुत आहो बुका कर रहा था। हम ने उसे काफ़ी तसल्लियां दीं, सब्र की तल्क़ीन

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिन के माल में एक मा'लूम ह़क़ है उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो मह़रूम रहे। (پ۲۹،المعارج:۲۴،۲۵) ......المعجم الاوسط، ۳/۳۴۹، الحدیث ۴۸۱۳

2 ......الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرۃ السابعة والثامنة والعشرون بعد المائة، ترک الزکاۃ، ۱/۳۲۵ والتذکرۃ للقرطبی، باب مایکون منه عذاب القبر...الخ، فصل قال علماؤنا، باب منه، ص ۱۳۴

की मगर उस की गिर्या व ज़ारी बराबर जारी रही। हम ने कहा : क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हर शख़्स को आख़िर मर जाना है? वोह कहने लगा : येह सहीह है मगर मैं अपने भाई के अज़ाब पर रोता हूं। हम ने पूछा : क्या अल्लाह तआला ने तुम्हें ग़ैब से तुम्हारे भाई के अज़ाब की ख़बर दी है? कहने लगा : नहीं बल्कि हुवा यूं कि जब सब लोग मेरे भाई को दफ़्न कर के चल दिये तो मैं वहीं बैठा रहा, मैं ने उस की क़ब्र से आवाज़ सुनी वोह कह रहा था आह! वोह मुझे तन्हा छोड़ गए और मैं अज़ाब में मुब्तला हूं, मेरी नमाज़ें और रोज़े कहां गए? मुझ से बरदाश्त न हो सका, मैं ने उस की क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी ताकि देखूं मेरा भाई किस हाल में है? जूंही क़ब्र खुली! मैं ने देखा उस की क़ब्र में आग दहक रही है और उस की गर्दन में आग का तौक़ पड़ा हुवा है मगर मैं महब्बत में दीवाना वार आगे बढ़ा और उस तौक़ को उतारना चाहा, जिस को हाथ लगाते ही मेरा येह हाथ उंगलियों समेत जल गया है।

हम ने देखा वाक़ेई उस का हाथ बिल्कुल सियाह हो चुका था, उस ने सिलसिलए कलाम जारी रखते हुवे कहा : मैं ने उस की क़ब्र पर मिट्टी डाली और वापस लौट आया। अब अगर मैं न रोऊं तो और कौन रोएगा? हम ने पूछा : तेरे भाई का कोई ऐसा काम भी था जिस के बाइ़स उसे येह सज़ा मीली? उस ने कहा : वोह अपने माल की ज़कात नहीं देता था। हम बे साख़्ता पुकार उठे कि येह इस फ़रमाने इलाही की तस्दीक़ है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ (1)

और जो लोग हमारे फ़ज़्ल से अ़ता कर्दा माल में बुख़्ल करते हैं वोह इसे अपने लिये बेहतर न समझें बल्कि येह उन के लिये मुसीबत है अ़न क़रीब क़ियामत के दिन उन्हे तौक़ पहनाया जाएगा।

तेरे भाई को क़ियामत से पहले ही अ़ज़ाब दे दिया गया।

हज़रते मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल फ़िरयाबी कहते हैं : हम वहां से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबी हज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में आए और उन्हें सारा माजिरा सुना कर दरयाफ़्त किया कि यहूदो नसारा मरते हैं मगर उन के साथ कभी ऐसा

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है। अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा। (پ٤،اٰلِ عمران:١٨٠)

इत्तिफ़ाक़ नहीं देखा गया, इस की क्या वज्ह है ? इन्हों ने फ़रमाया : इस में कोई शक नहीं कि वोह दाइमी अ़ज़ाब में हैं मगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें इब्रत ह़ासिल करने के लिये मुसलमानों की येह ह़ालतें दिखाता है ।

फ़रमाने इलाही है :

فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ عَمِیَ فَعَلَیْهَا ؕ وَ مَاۤ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿۱۰۴﴾ (1)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : ज़कात न देने वाले अल्लाह तआ़ला के यहां यहूदो नसारा की त़रह़ हैं, उ़श्र न देने वाले मजूस की त़रह़ और जो लोग ज़कात और उ़श्र न दें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और फ़िरिश्तों की ज़बान से मलऊ़न क़रार पाए और उन की गवाही ना मक़्बूल है ।(2)

और फ़रमाया : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिस ने ज़कात और उ़श्र अदा किया और उस के लिये भी ख़ुश ख़बरी है जिस पर क़ियामत और ज़कात का अ़ज़ाब नहीं है । जिस शख़्स ने अपने माल की ज़कात अदा की अल्लाह तआ़ला ने उस से अ़ज़ाबे क़ब्र को उठा लिया, उस पर जहन्नम को ह़राम कर दिया, उस के लिये बिग़ैर ह़िसाब के जन्नत वाजिब कर दी और उसे क़ियामत के दिन प्यास नहीं लगेगी ।(3)

तीन सो दरजात की बुलन्दी

ह़दीसे मुबारक में है : "जिस ने मुसीबत पर सब्र किया यहां तक कि उस (मुसीबत) को अच्छे सब्र के साथ लौटा दिया, अल्लाह तबारक व तआ़ला उस के लिये तीन सो दरजात लिखेगा, हर एक दरजे के माबैन (या'नी दरमियान) ज़मीनो आस्मान का फ़ासिला होगा ।"

(الجامع الصغير للسيوطی ،ص۳۱۷، الحديث ۵۱۳۷)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को और मैं तुम पर निगहबान नहीं । (پ۷، الانعام:۱۰۴)

2 .....

3 .....

बाब 22

ज़िना

फ़रमाने इलाही है :

وَالَّذِیۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ (1)

वोह ह़राम और बदकारियों से अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

एक और आयत में इरशादे रब्बानी है :

وَلَا تَقۡرَبُوا الۡفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَمَا بَطَنَ (2)

या'नी छोटे बड़े ज़ाहिर पोशीदा किसी भी गुनाह के क़रीब मत जाओ।

या'नी न ही किसी बड़ी बे ह़याई का इर्तिकाब करो जैसा कि ज़िना और न छोटी का जैसा कि ग़ैर मह़रम को छूना, देखना वग़ैरा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुबारक है, हाथ ज़िना करते हैं, पैर ज़िना करते हैं और आंखें ज़िना करती हैं, फ़रमाने इलाही है :

قُلۡ لِّلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَغُضُّوۡا مِنۡ اَبۡصَارِهِمۡ وَیَحۡفَظُوۡا فُرُوۡجَهُمۡ ؕ ذٰلِكَ اَزۡكٰى لَهُمۡ ؕ (3)

मोमिनों से कह दीजिये अपनी आंखें बन्द कर लें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान मर्दों और औरतों को हुक्म दिया है कि वोह ह़राम की त़रफ़ न देखें और अपनी शर्मगाहों को इर्तिकाबे ह़राम से मह़फ़ूज़ रखें।

अल्लाह तआ़ला ने मुतअ़द्दिद आयात में ज़िना की हुरमत बयान फ़रमाई है, एक जगह इरशादे रब्बानी है :

وَمَنۡ یَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ یَلۡقَ اَثَامًا ﴿ۙ۶۸﴾. (4)

जो शख़्स ज़िना करता है उसे असाम में डाला जाएगा।

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं। (پ۱۸،المؤمنون:۵)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बे ह़याइयों के पास न जाओ जो इन में खुली हैं और जो छुपी। (پ۸،الانعام:۱۵۱)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें येह इन के लिये बहुत सुथरा है। (پ۱۸،النور:۳۰)

4....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा। (پ۱۹،الفرقان:۶۸)

असाम के मुतअ़ल्लिक़ कहा गया है कि जहन्नम की एक वादी है। बा'ज़ उ़लमा ने कहा है कि वोह जहन्नम का एक ग़ार है, जब उस का मुंह खोला जाएगा तो उस की शदीद बदबू से जहन्नमी चीख़ उठेंगे।

ज़िना में छे मुसीबतें हैं

बा'ज़ सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मरवी है : ज़िना से बचो ! इस में छे मुसीबतें हैं जिन में से तीन का तअ़ल्लुक़ दुन्या से है और तीन का आख़िरत से। दुन्या में रिज़्क़ कम हो जाता है, ज़िन्दगी मुख़्तसर हो जाती है और चेहरा मस्ख़ हो जाता है, आख़िरत में ख़ुदा की नाराज़ी, सख़्त पुरसिश और जहन्नम में दाख़िल होना है।

रिवायत है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़ानी की सज़ा के बारे में पूछा तो रब तआ़ला ने फ़रमाया : मैं उसे आग की ज़िरह पहनाऊंगा। वोह ऐसी वज़नी है कि अगर बहुत बड़े पहाड़ पर रख दी जाए तो वोह भी रेज़ा रेज़ा हो जाए। कहते हैं : इब्लीस को हज़ार बदकार मर्दों से एक बदकार औ़रत ज़ियादा पसन्द होती है।

'मसाबीह़' में इरशादे रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब बन्दा ज़िना करता है तो उस का ईमान निकल कर उस के सर पर छतरी की त़रह़ मुअ़ल्लक़ रहता है और जब वोह इस गुनाह से फ़ारिग़ हो जाता है तो उस का ईमान फिर लौट आता है।[1]

किताबे इक़्नाअ़ में फ़रमाने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : अल्लाह तआ़ला के नज़दीक नुत़्फ़े को ह़राम कारी में सर्फ़ करने से बड़ा कोई गुनाह नहीं है[2] और लिवात़त ज़िना से भी बदतर है, जैसा कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जन्नत की ख़ुश्बू पांच सो साल के सफ़र की दूरी से आएगी मगर लूत़ी इस से मह़रूम रहेगा।[3]

अम्रद एक फ़ित्ना है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا घर से बाहर बैठे थे कि एक ह़सीन लड़का (अम्रद) आता हुवा नज़र आया आप दौड़ कर घर में घुस गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया, कुछ

1 ......ترمذی،کتاب الایمان، باب ماجاء لا یزنی الزانی...الخ ، ٤/٢٨٣، الحدیث ٢٦٣٤ و مشکاۃ المصابیح، ١/٣٢، الحدیث ٦٠

2 موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الورع ، باب الورع فی الفرج، ١/٢١٩، الحدیث ١٣٧

3 ......اللآلی المصنوعۃ فی الأحادیث الموضوعۃ للسیوطی، ٢/١٦٨

देर बा'द पूछा : फ़ितना चला गया या नहीं ? लोगों ने कहा : चला गया । तब आप बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : फ़रमाने नबवी है : इन की त़रफ़ देखना, गुफ़्तगू करना और इन के पास बैठना ह़राम है ।(1)

ह़ज़रते क़ाज़ी इमाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : मैं ने बा'ज़ मशाइख़ से सुना है कि औ़रत के साथ एक शैत़ान और ह़सीन लड़के के साथ अठ्ठारह शैत़ान होते हैं ।

रिवायत है कि जिस ने शहवत के साथ लड़के को बोसा दिया वोह पांच सो साल जहन्नम में जलेगा(2) और जिस ने किसी औ़रत का बोसा लिया उस ने गोया सत्तर बाकिरा ख़वातीन के साथ ज़िना किया और जिस ने किसी बाकिरा औ़रत से ज़िना किया उस ने गोया सत्तर हज़ार शादीशुदा औ़रतों से ज़िना किया ।

'रौनकु़त्तफ़ासीर' में कल्बी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : सब से पहले लिवात़त इब्लीस ने शुरूअ़ की, वोह लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम में एक ह़सीनो जमील लड़के की सूरत में आया और लोगों को अपनी त़रफ़ माइल किया यहां तक कि लिवात़त उन लोगों की आ़दत बन गई, जो भी मुसाफ़िर आता वोह उस से बद फ़े'ली करते । ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इस फ़े'ले बद से रोका **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाया और अ़ज़ाबे ख़ुदावन्दी से डराया तो वोह कहने लगे : अगर तुम सच्चे हो तो जाओ अ़ज़ाब ले आओ ! ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ़ मांगी : जिस के जवाब में उन पर पथ्थरों की बारिश हुई, हर पथ्थर पर एक आदमी का नाम लिखा हुवा था और वोह उस आदमी को आ कर लगा, **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है :

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ(3)

क़ौमे लूत़ के एक ताजिर का वाक़िआ़

ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम का एक ताजिर मक्का में ब ग़रज़े तिजारत आया उस के नाम का पथ्थर वहीं पहुंच गया मगर फ़िरिश्तों ने येह कह कर रोक दिया कि येह **अल्लाह** का ह़रम है

1.....بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية، ٤/٦٦

2.....बिऐनिही इन अल्फ़ाज़ के साथ हमें ह़दीस नहीं मिली अलबत्ता "اللآلى المصنوعة" की एक रिवायत में पांच सो साल की जगह हज़ार साल के अ़ज़ाब का तज़्किरा है, जिस में अल्फ़ाज़ यूं हैं :

من قبل غلاما بشهوة عذبه الله فى النار ألف سنة(اللآلى المصنوعة للسيوطى،٢/١٦٨)

और इमाम सुयूत़ी ने इसे मौज़ूअ़ कहा है । وَاللهُ تَعَالٰی اَعلم

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो निशान किये हुवे तेरे रब के पास हैं । (پ١٢، هود: ٨٣)

चुनान्चे, चालीस दिन येह पथ्थर ह़रम के बाहर ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहा यहां तक कि वोह शख़्स तिजारत से फ़ारिग़ हो कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से बाहर निकला और वोह पथ्थर उसे जा लगा जिस से वोह हलाक हो गया। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने तमाम अहले ख़ाना को ले कर बस्ती से निकल गए, और फ़रमाया : कोई मुड़ कर न देखे। जब क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल हुवा तो इन की बीवी ने आवाज़ें सुन कर पीछे देखा और कहा : हाए मेरी क़ौम ! जिस की पादाश में उसे भी एक पथ्थर लगा और वोह हलाक हो गई। मुजाहिद कहते हैं : जब सुब्ह़ क़रीब हुई तो ह़ज़रते जिब्रील ने उन बस्तियों को परों पर उठा लिया और इतनी बुलन्दी तक ले गए कि आस्मान के फ़िरिश्तों ने उन के कुत्तों को भोंकता और मुर्ग़ों की बांगों को सुन लिया, उस वक़्त येह बस्तियां उलट दी गईं, सब से पहले उन के मकानात गिरे, फिर वोह ख़ुद औंधे मुंह ज़मीन पर आ रहे और उन पर पथ्थर बरसाए गए।

कहते हैं कि येह पांच शहर थे जिन में सब से बड़ा सदूम का शहर था, इन शहरों की आबादी चार लाख थी, **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें सूरए बराअत में मोतफ़िकात के नाम से याद किया है।

मज़ाक़ उड़ाने का अ़ज़ाब

जब किसी मुसलमान का मज़ाक़ उड़ाने को जी चाहे तो ख़ुदारा इस रिवायत पर ग़ौर फ़रमा लिया कीजिये जिस में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, शहनशाहे अबरार, सरकारे वाला तबार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, साह़िबे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "क़ियामत के रोज़ लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के सामने जन्नत का एक दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा कि आओ ! आओ ! तो वोह बहुत ही बे चैनी और ग़म में डूबा हुवा उस दरवाज़े के सामने आएगा मगर जैसे ही दरवाज़े के पास पहुंचेगा वोह दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। फिर जन्नत का एक दूसरा दरवाज़ा खुलेगा और उस को पुकारा जाएगा कि आओ ! चुनान्चे, येह बे चैनी और रन्जो ग़म में डूबा हुवा उस दरवाज़े के पास जाएगा तो वोह दरवाज़ा भी बन्द हो जाएगा। इसी त़रह़ उस के साथ मुआ़मला होता रहेगा यहां तक कि जब दरवाज़ा खुलेगा और पुकार पड़ेगी तो वोह नहीं जाएगा।

(موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت، ۷/۱۸۳، رقم ۲۸۷)

बाब 23

हुकूके वालिदैन और सिलए रेहमी

फ़रमाने इलाही है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ (1)

अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।

फ़रमाने इलाही है :

فَهَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ تُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ۝ (2)

तो क्या तुम्हारे येह ढंग नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो तुम ज़मीन पर फ़ितना व फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते क़त्अ कर दो। येह वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ने ला'नत फ़रमाई जिन्हें हक़ के सुनने से बहरा और हक़ के देखने से अन्धा कर दिया।

फ़रमाने इलाही है :

الَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ (3)

जो अल्लाह से किये हुवे वा'दे को तोड़ते हैं और जिस चीज़ के मिलाने का रब ने हुक्म दिया है उस से क़त्ए तअल्लुक़ करते हैं और ज़मीन में फ़साद मचाते हैं वोह नुक़्सान में हैं।

फ़रमाने इलाही है : जो लोग अहदे ख़ुदावन्दी को तोड़ते हैं और जिस चीज़ के मिलाने का रब तआला ने हुक्म दिया है उस से क़त्ए तअल्लुक़ करते हैं उन के लिये ला'नते ख़ुदावन्दी और बड़ा ठिकाना है।(4)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो। (پ٤،النساء:١)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन्हें हक़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं। (پ٢٦،محمد:٢٢،٢٣)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो अल्लाह के अहद को तोड़ देते हैं पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं। (پ١،البقرة:٢٧)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो अल्लाह का अहद उस के पक्के होने के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़त्अ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा घर। (پ١٣،الرعد:٢٥)

नबिय्ये अक्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशादात

सहीहैन में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** तआला मख़्लूक़ की पैदाइश से फ़ारिग़ हो गया तो क़राबत ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : मैं तुझ से क़त्ए़ रेह़्मी की पनाह चाहती हूं, रब तआला ने फ़रमाया : क्या तू इस बात पर राज़ी है कि जिस ने तुझ से तअ़ल्लुक़ जोड़ा, मैं उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ूंगा और जिस ने तुझ से क़त्अ़ कर लिया मैं उसे क़त्अ़ कर दूंगा। उस ने कहा : मैं राज़ी हूं। फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने فَهَلْ عَسَيْتُمْ (الآية) पढ़ी।[1]

हज़रते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बग़ावत और क़त्ए़ रेह़्मी दो ऐसे गुनाह हैं जिन पर दुन्या और आख़िरत में अ़ज़ाब दिया जाता है।[2]

सहीहैन में है कि क़त्ए़ रेह़्मी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।[3]

मुस्नदे अह़मद में है : इन्सानों के आ'माल हर जुमा'रात को पेश किये जाते हैं मगर क़त्ए़ रेह़्मी करने वाले का कोई अ़मल मक़्बूल नहीं होता।[4]

बैहक़ी से रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام पन्दरहवीं शा'बान की रात को मेरे पास आए और कहा : आज की रात **अल्लाह** तआला बनू कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर गुनहगारों को बख़्श देता है मगर मुशरिक, कीना परवर, क़त्ए़ रेह़्म, तकब्बुर से अपने तहबन्द को घसीट कर चलने वाला, वालिदैन का नाफ़रमान और शराबी को नहीं बख़्शा जाता।[5]

इब्ने ह़ब्बान से मरवी है : तीन आदमी जन्नत में नहीं जाएंगे : शराबी, क़ातेए़ रेह़्म, जादूगर।[6]

---

1 ......مسلم، کتاب البر و الصلة و الآداب ، باب صلة الرحم...الخ، ص ١٣٨٣، الحديث ١٦ـ (٢٥٥٤)

2 ......ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب٥٧، ٤/٢٢٩، الحديث ٢٥١٩ عن ابی بکره

3 ......بخاری، کتاب الادب ، باب اثم القاطع، ٤/٩٧، الحديث ٥٩٨٤

4 ......مسند احمد، مسند ابی هريرة، ٣/٥٣٢، الحديث ١٠٢٧٦

5 ......شعب الايمان، الباب الثالث و العشرون،باب فی الصيام...الخ، ماجاء فی ليلة النصف من شعبان...الخ، ٣/٣٨٤، الحديث ٣٨٣٧

6 ......صحيح ابن حبان، کتاب الاشربة، باب اداب الشرب، فصل فی الاشربة، ٥/٣٦٦، الجزء السابع، الحديث ٥٣٢٢

मुस्नदे अहमद, इब्ने अबिद्दुन्या और बैहक़ी से मरवी है : इस उम्मत के कुछ लोग खाने पीने और लह्वो लइब में रातें गुज़ारेंगे, जब सुब्ह होगी तो इन की सूरतें मस्ख़ हो जाएंगी, इन्हें ज़मीन में धंसा दिया जाएगा, सुब्ह को लोग एक दूसरे से कहेंगे : फ़ुलां ख़ानदान ज़मीन में धंस गया है, फ़ुलां मुअ़ज़्ज़ अपने घर के साथ ज़मीन में ग़र्क़ हो गया है, इन की शराब नोशी, सूद ख़ोरी, क़त्ए रेहमी, नाच गाने पर फ़रेफ़्तगी और रेशमी लिबास पहनने की वज्ह से इन पर क़ौमे लूत़ की त़रह पथ्थरों की बारिश होगी और क़ौमे आ़द की त़रह उन पर हलाकत खेज़ आंधियां भेजी जाएंगी जिन से वोह अपने क़बाइल समेत हलाक हो जाएंगे।[1]

त़बरानी ने औसत़ में ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काशानए नबुव्वत से बाहर तशरीफ़ लाए, हम लोग इकठ्ठे बैठे हुवे थे, आप ने हमें देख कर फ़रमाया : ऐ मुसलमानो ! **अल्लाह** से डरो और सिलए रेह़मी करो क्यूंकि सिलए रेह़मी का सवाब बहुत जल्द मिलता है, ज़ुल्म व ज़ियादती से बचो क्यूंकि उस की गिरिफ़्त बहुत जल्द होती है, वालिदैन की नाफ़रमानी से बचो, जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार साल के फ़ासिले से आएगी मगर वालिदैन का नाफ़रमान इस से मह़रूम रहेगा, क़राबत न रखने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर से इज़ार घसीटने वाला, इस से मह़रूम रहेंगे।[2]

अस्बहानी से मरवी है : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बैठे हुवे थे, आप ने फ़रमाया : क़ात़ेए रेह़म हमारी मजलिस में न बैठे, मजलिस में से एक जवान उठ कर ख़ाला के हां चला गया, उन के दरमियान कोई तनाज़ुआ़ था जिस की उस ने मुआ़फ़ी मांगी। दोनों ने एक दूसरे को मुआ़फ़ कर दिया और वोह दोबारा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में बैठ गया, आप ने फ़रमाया : उस क़ौम पर रह़मते ख़ुदावन्दी का नुज़ूल नहीं होता जिस में क़ात़ेए रेह़म मौजूद हो।[3]

इस की ताईद इस रिवायत से होती है जिस में मरवी है : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस सुना रहे थे। आप ने कहा कि हर क़ात़ेए रेह़म हमारी मह़फ़िल से उठ जाए। एक जवान उठ कर अपनी ख़ाला के हां गया जिस से उस का दो साल पुराना झगड़ा

---

1 ......شعب الایمان، التاسع والثلاثون...الخ، باب فی المطاعم والمشارب، ١٦/٥ الحديث ٥٦١٤

2 ......المعجم الاوسط، ١٨٧/٤، الحديث ٥٦٦٤

3 ......تاريخ مدينه دمشق، ١٦٦/٢٠

था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए तो उस जवान से ख़ाला ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है, आप ने फ़रमाया : जिस क़ौम में क़ातेए रेहम हो, उस पर अल्लाह की रहमत का नुज़ूल नहीं होता।(1)

तबरानी में आ'मस की रिवायत है : हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सुब्ह महफ़िल में बैठे हुवे थे, इन्हों ने कहा : मैं क़ातेए रेहम को अल्लाह की क़सम देता हूं कि वोह यहां से उठ जाए ताकि हम अल्लाह तआला से मग़फ़िरत की दुआ करें क्यूंकि क़ातेए रेहम पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं।(2) (अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो हमारी दुआ क़बूल नहीं होगी)

सहीहैन में है : क़राबत और रिश्तेदारी अ़र्शे ख़ुदा से मुअ़ल्लक़ है और कहती है : जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह उसे मिलाए और जिस ने मुझ से क़तए तअ़ल्लुक़ किया अल्लाह तआला उस से क़तए तअ़ल्लुक़ करे।(3)

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना। आप फ़रमा रहे थे : अल्लाह तआला फ़रमाता है : मैं अल्लाह हूं, मैं रहमान हूं, मैं ने रेहम को पैदा किया और इसे अपने नाम से मुश्तक़ किया, जिस ने सिलए रेहमी की मैं उसे अपनी रहमत से मिलाऊंगा और जिस ने क़तए रेहमी की मैं उसे अपनी रहमत से दूर कर दूंगा।(4)

मुस्नदे अहमद में रिवायत है कि सब से बड़ा सूद मुसलमान के माल को नाहक़ खाना है और क़राबत व सिलए रेहमी अल्लाह तआला के नाम की एक शाख़ है, जिस ने सिलए रेहमी न की अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देता है।(5)

सहीह इब्ने हब्बान में है : रेहम रब्बे ज़ुल जलाल की एक अ़ता है, रेहम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ रब ! मुझ पर ज़ुल्म हुवा, मुझे बुरा कहा गया, मुझे क़तअ़ किया गया, रब तआला ने फ़रमाया : जो तुझे मिलाएगा मैं उसे अपनी रहमत से मिलाऊंगा, जो तुझे काटेगा मैं उसे अपनी रहमत से दूर कर दूंगा।(6)

---

1 ......الادب المفرد، ص ٢٦، الحديث ٦١-٦٣

2 ......المعجم الكبير، ٩/١٥٨، الحديث ٨٧٩٣

3 ......مسلم، كتاب البر و الصلة و الاداب، باب صلة الرحم...الخ، ص ١٣٨٣، الحديث ١٧- (٢٥٥٥)

4 ......ترمذی، كتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی قطيعة الرحم، ٣/٣٦٣، الحديث ١٩١٤

5 ......مسند احمد، مسند سعيد بن زيد...الخ، ١/٤٠٢، الحديث ١٦٥١

6 ......صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب صلة الرحم وقطعها، ١/٣٣٥، الحديث ٤٤٥ بالتقديم و التاخير

बज़्ज़ार ने रिवायत की है : रह्म (क़राबत व रिश्तेदारी) अ़र्शे खुदा से चिमटी हुई अ़र्ज़ करती है : ऐ **अल्लाह** ! जिस ने मुझे मिलाया तू उसे मिला, जिस ने मुझे काटा तू उस से तअ़ल्लुक़ मुन्क़तअ़ फ़रमा ! रब तआ़ला ने फ़रमाया : मैं ने तेरा नाम अपने नाम रह़मान और रह़ीम से मुश्तक़ किया है जिस ने तुझे मिलाया मैं उसे अपनी रह़मत से मिलाऊंगा, जिस ने तुझ से तअ़ल्लुक़ मुन्क़तअ़ किया मैं उस से रह़मत को मुन्क़तअ़ कर लूंगा।(1)

बज़्ज़ार की रिवायत है : तीन चीज़ें अ़र्शे खुदा से लटकी हुई हैं, क़राबत कहती है : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरे साथ हूं, कभी तुझ से जुदा न होऊंगी, अमानत कहती है : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरे साथ हूं, मैं तेरी रह़मत से कभी जुदा न होऊंगी, ने'मत कहती है : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी रह़मत से जुदाई नहीं चाहती, मेरा इन्कार न किया जाए।(2)

बैहक़ी की रिवायत है : ख़ल्लत या सरिश्त अ़र्श के दरवाज़ों से मुअ़ल्लक़ है जब कि रह्म में तश्कीक वाक़ेअ़ हो जाए और गुनाहों पर अ़मल बढ़ जाए और अह़कामे इलाहिय्या पर अ़मल न करने पर जुरअत पैदा हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला सरिश्त को भेजता है जो उस के क़ल्ब पर ह़ावी हो जाती है और इस के बा'द उस को गुनाहों का शुऊ़र बाक़ी नहीं रहता।(3)

सह़ीह़ैन में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है वोह अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे, सिलए रेह़्मी करे और अच्छी बात करे या चुप रहे। एक और रिवायत है : जो शख़्स त़वील उ़म्र और फ़राख़िये रिज़्क़ की तमन्ना रखता है उसे चाहिये वोह सिलए रेह़्मी करे।(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जो शख़्स फ़राख़िये रिज़्क़ और उ़म्रे त़वील को पसन्द करता है वोह सिलए रेह़्मी करे।(5)

---

1 ......البحر الزخار المعروف بمسند البزار، ١١٦/١٣، الحديث ٦٤٩٥

2 ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، حديث ثوبان، ١١٧/١٠، الحديث : ٤١٨١

3 ......شعب الايمان، السابع والاربعون...الخ، فصل فى الطبع...الخ، ٤٤٣/٥، الحديث ٧٢١٣-٧٢١٤

4 ......بخارى، كتاب الادب، باب اكرام الضيف...الخ، ١٣٦/٤، الحديث ٦١٣٨، وباب من بسط له...الخ، ص ٩٧، الحديث ٥٩٨٦

5 ......بخارى، كتاب الادب، باب من بسط له...الخ، ٩٧/٤، الحديث ٥٩٨٥

मज़ीद फ़रमाया : अपना नसब याद करो ताकि रिश्तेदारों को पहचान सको, इस लिये कि रिश्तेदारों से मैल मिलाप में ख़ानदान की महब्बत बढ़ती है, मालो दौलत ज़ियादा होती है और उम्र तवील हो जाती है।[1]

बज़्ज़ार और हाकिम की रिवायत है : जो शख़्स येह तमन्ना रखता हो कि उस की उम्र तवील हो, रिज़्क़ में कुशादगी हो और बुरी मौत से बच जाए वोह अल्लाह से डरे और सिलए रेहमी करे।[2]

हाकिम और बज़्ज़ार की रिवायत है : फ़रमाने नबवी है, तौरात में मरक़ूम है कि जो उम्र तवील और ज़ियादतिये रिज़्क़ का ख़्वाहिशमन्द हो वोह सिलए रेहमी करे।[3]

अबू या'ला ने बनू ख़सअ़म के एक शख़्स से रिवायत की है : उस ने कहा : मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, आप उस वक़्त सहाबए किराम के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ने पूछा : आप ने रसूले ख़ुदा होने का दा'वा किया है ? आप ने फ़रमाया : हां ! मैं ने पूछा : ऐ नबिय्यल्लाह ! मुझे बताइये कौन सा अ़मल अल्लाह तआ़ला को ज़ियादा पसन्द है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह के साथ ईमान लाना। मैं ने पूछा : फिर ? फ़रमाया : सिलए रेहमी ! मैं ने पूछा : और कौन सा अ़मल अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा ना पसन्द है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक ठहराना। मैं ने पूछा : इस के बा'द ? फ़रमाया : क़त्ए रेहमी ! मैं ने पूछा : फिर ? आप ने फ़रमाया : बुराइयों की तरग़ीब देना और नेकी से रोकना।[4]

बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊंटनी पर सुवार सहाबए किराम के साथ सफ़र में जा रहे थे कि एक बदवी ने आ कर आप की ऊंटनी की मुहार पकड़ ली और कहा : हुज़ूर ! मुझे ऐसा अ़मल बतलाइये जो जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे। आप ठहर गए और सहाबए किराम की तरफ़ देख कर फ़रमाया : येह शख़्स हिदायत याब हो गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बदवी से फ़रमाया कि अपना सुवाल दोहराओ, उस के दोहराने पर आप ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला को वहदहू ला शरीक जान कर उस की इबादत कर, नमाज़ पढ़, ज़कात दे और सिलए रेहमी कर और अब मेरी ऊंटनी की मुहार छोड़ दे। जब बदवी चला गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर येह इन बातों पर अ़मल करता रहा तो जन्नत में जाएगा।[5]

---

1 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی تعلیم النسب، ۳/۳۹۴، الحدیث ۱۹۸۶

2 ......المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلة، باب احاديث صلة الرحم،۵/۲۲۲، الحديث ۷۳۶۲

3 ......المرجع السابق، الحديث ۷۳۶۱ ملخصا

4 ......مسند ابی یعلی، حدیث رجل من خثعم، ۶/۵۵،الحدیث ۶۸۰۴

5 ......مسلم،کتاب الایمان، باب بیان الایمان الذی یدخل...الخ، ص ۲۶، الحدیث ۱۴۔ (۱۳) و ۱۲۔ (۱۳)

त़बरानी की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : एक क़ौम ऐसी है कि **अल्लाह** तआ़ला उस के शहरों को आबाद करता है, उस के माल को बढ़ाता है और जब से उन्हें पैदा किया है कभी नाराज़ी की निगाह से उन्हें नहीं देखा। पूछा गया : वोह क्यूं ? आप ने फ़रमाया : उस क़ौम की सिलए रेह़्मी की वज्ह से।(1) (या'नी वोह क़ौम सिलए रेह़्मी करती है)

सिलए रेह़्मी के बारे में चन्द अह़ादीसे मुबारका

"मुस्नदे अह़मद" की रिवायत है : जिसे नर्मी दी गई उसे दीनो दुन्या की भलाई से ह़िस्सा दिया गया, अच्छी हमसाएगी और ह़ुस्ने ख़ुल्क़ का नतीजा शहरों की आबादी और उ़म्रों की दराज़ी है।(2)

अबुश्शैख़, इब्ने ह़ब्बान और बैहक़ी की रिवायत है कि सह़ाबए किराम ने सुवाल किया : या रसूलल्लाह ! सब से बेहतर इन्सान कौन सा है ? आप ने फ़रमाया : रब से ज़ियादा डरने वाला, ज़ियादा सिलए रेह़्मी करने वाला और नेकियों का हुक्म देने वाला, बुराइयों से रोकने वाला।(3)

त़बरानी की रिवायत है : ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मुझे मेरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द अच्छी चीज़ों की वसिय्यत फ़रमाई है और वोह येह हैं : मैं अपने से ऊपर वाले को नहीं बल्कि नीचे वाले को देखूं, मैं यतीमों से मह़ब्बत रखूं और इन से क़रीब रहूं, मैं सिलए रेह़्मी करूं अगर्चे रिश्तेदार पीठ फेर जाएं, **अल्लाह** तआ़ला के मुआ़मले में किसी से न डरूं, सच्ची बात अगर्चे तल्ख़ हो मैं कहता रहूं, لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कसरत से पढ़ता रहूं क्यूंकि येह जन्नत का ख़ज़ाना है।(4)

"सह़ीह़ैन" की रिवायत है : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किये बिग़ैर अपनी लौंडी आज़ाद कर दी। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के यहां तशरीफ़ लाए तो इन्हों ने कहा : या रसूलल्लाह ! आप को मा'लूम है मैं ने अपनी लौंडी को आज़ाद कर दिया है ? आप ने फ़रमाया : वाक़ेई ? अ़र्ज़ की : जी हां। आप ने फ़रमाया : अगर तुम वोह लौंडी अपने ख़ालाज़ाद को दे देतीं तो तुम्हें बहुत ज़ियादा सवाब मिलता।(5)

---

1 ......المعجم الكبير ١٢/٦٧، الحديث ١٢٥٥٦

2 ......مسند احمد، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ٩/٥٠٤، الحديث ٢٥٣١٤ ملخصا

3 ......شعب الايمان، السادس و الخمسون...الخ، باب فى صلة الارحام، ٦/٢٢٠، الحديث ٧٩٥٠ مكرر

4 ...... صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان، باب صلة الرحم وقطعها، ١/٣٣٧، الحديث ٤٥٠ المساكين مكان اليتمى

5 ......بخارى، كتاب الهبة... الخ، باب هبة المرأة لغير زوجها...الخ، ٢/١٧٣، الحديث ٢٥٩٢

'इब्ने हब्बान' और 'हाकिम' की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स हाज़िर हुवा और कहा कि मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है, तौबा की कोई सूरत बतलाइये ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : तेरी मां ज़िन्दा है ? कहा : "नहीं ।" आप ने फिर पूछा : तुम्हारी ख़ाला ज़िन्दा है ? अ़र्ज़ की : हां या रसूलल्लाह ! फ़रमाया : "जाओ ! और उस की ख़िदमत करो ।"[1] (येही सिलए रेह़्मी है)

बुख़ारी वग़ैरा में है : सिलए रेह़्मी येह नहीं कि मिलने जुलने वाले रिश्तेदारों से मेल मिलाप बर क़रार रखे बल्कि सिलए रेह़्मी येह है कि जो रिश्तेदार तअ़ल्लुक़ात मुन्क़त़अ़ कर चुके हों उन से भी मेल मिलाप बर क़रार रखे ।[2]

तिर्मिज़ी की रिवायत है : उन लोगों से न बनो जो कहते हैं अगर लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी भलाई करेंगे और अगर वोह हम पर ज़ियादती करेंगे तो हम भी ज़ियादती करेंगे बल्कि तुम इस बात के आ़दी बनो कि अगर लोग तुम्हारे साथ भलाई करें तो भलाई करो और अगर वोह ज़ियादती करें तो तुम ज़ियादती न करो ।[3]

मुस्लिम की रिवायत है एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मैं रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ता हूं मगर वोह मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ते हैं, मैं उन से भलाई करता हूं, वोह मेरी बुराई करते हैं, मैं उन से ह़िल्म व बुर्दबारी का सुलूक करता हूं, वोह मुझे ख़ात़िर में नहीं लाते, आप ने फ़रमाया : अगर तेरी बातें सच्ची हैं तो तू ने एक दूर दराज़ रास्ते को तै कर लिया और जब तक तू इस आ़दत पर क़ाइम रहेगा **अल्लाह** तआ़ला तेरा ह़ामी व नासिर होगा ।[4]

त़बरानी, इब्ने ख़ुज़ैमा और ह़ाकिम की रिवायत है कि सब से बेहतरीन सदक़ा कीना परवर रिश्तेदार को कुछ देना है,[5] हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान का भी येही मत़लब है कि وَتَصِلُ مَنْ قَطَعَکَ जो रिश्तेदार तुझ से तअ़ल्लुक़ मुन्क़त़अ़ कर ले तू उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ ।[6]

---

1 ......صحیح ابن حبان ، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین...الخ، ۱/ ۳۳۰، الحدیث ۴۳۶

2 ......بخاری، کتاب الادب، باب لیس الواصل بالمکافیء، ۴/ ۹۸، الحدیث ۵۹۹۱

3 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الاحسان والعفو، ۳/ ۴۰۵، الحدیث ۲۰۱۴

4 ......مسلم کتاب البر والصلة والآداب، باب صلة الرحم... الخ، ص ۱۳۸۴، الحدیث ۲۲ ـ (۲۵۵۸)

5 ......المعجم الکبیر، ۴/ ۱۳۸، الحدیث ۳۹۲۳

6 ......المعجم الکبیر ، ۲۰/ ۱۸۸، الحدیث ۴۱۳ والترغیب والترهیب ، کتاب البر والصلة وغیرهما، الترهیب فی صلة الرحم...الخ، ۳/ ۲۷۴، الحدیث ۳۸۵۸

बज़्ज़ाज़, हाकिम और त़बरानी की रिवायत है कि जिस में येह तीन सिफ़ात पाई जाएंगी उस का हिसाब इन्तिहाई आसान होगा, सहाबा ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर वोह कौन सी हैं ? फ़रमाया : जो तुझे मह़रूम रखे तू उसे देता रह, जो तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ता रह और जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसे मुआ़फ़ करता रह, तेरा ठिकाना जन्नत में होगा ।(1)

अहमद की रिवायत है, ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और आप का दस्ते अक़्दस थाम कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे बेहतरीन आ'माल बतलाइये । आप ने फ़रमाया : "उ़क़्बा ! क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह़मी कर, जो तुझे मह़रूम करे उसे अ़त़ा कर और जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दे ।"(2)

ह़ाकिम की रिवायत में है, जो दराज़िये उ़म्र और फ़राख़िये रिज़्क़ की आरज़ू रखता हो, वोह सिलए रेह़मी करे ।(3)

त़बरानी की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोगो ! मैं तुम को दुन्या और आख़िरत की बेहतरीन आ़दतें बतलाता हूं, तुम तअ़ल्लुक़ात मुन्क़त़अ़ करने वाले रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी करते रहो, जो तुम को मह़रूम रखे, उसे देते रहो और जो ज़ियादती करे उसे मुआ़फ़ करते रहो ।(4)

त़बरानी की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वालों से सिलए रेह़मी कर, मह़रूम करने वाले को अ़त़ा कर और जिस ने तुझे गालियां दीं उस से दरगुज़र कर ।(5)

---

1 ......المعجم الاوسط، ٤/١٨، الحديث ٥٠٦٤

2 ......مسند احمد مسند الشاميين، حديث عقبة بن عامر الجهنى، ٦/١٤٨، الحديث ١٧٤٥٧ والترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة وغيرهما، الترغيب فى صلة الرحم...الخ، ٣/٢٧٤، الحديث ٣٨٦٠

3 ......المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلة، باب احاديث صلة الرحم ٥/٢٢٤، الحديث ٧٣٦٧

4 ......المعجم الكبير، ١٧/٢٦٩، الحديث ٧٣٩ بتغير قليل

5 ......المعجم الكبير، ٢٠/١٨٨، الحديث ٤١٣

बज़्ज़ाज़ की रिवायत है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम्हें वोह बातें न बतलाऊं जिन से दरजात बुलन्द होते हैं। त़बरानी की रिवायत में है, मैं तुम्हें उस चीज़ की ख़बर न दूं जिस से अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त देता है और दरजात बुलन्द करता है ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : ज़रूर बतलाइये या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! आप ने फ़रमाया : जो तुम से ए'राज़ करे उस से दर गुज़र करो, जिस ने तुम पर ज़ुल्म किया उसे मुआ़फ़ कर दो, जिस ने तुम को मह़रूम किया उसे अ़त़ा करो और जिस ने तअ़ल्लुक़ात ख़त्म किये उस से तअ़ल्लुक़ात उस्तुवार करो।[1]

इब्ने माजा[2] की रिवायत है कि सब आ'माल से जल्दी अज्र पाने वाली चीज़ एह़सान और सिलए रेह़मी है या'नी एह़सान और सिलए रेह़मी से ज़ियादा जल्द अज्र और किसी अ़मल का नहीं मिलता और सब आ'माल से जल्दी अ़ज़ाब लाने वाली चीज़ ज़ुल्म व ज़ियादती और क़त़ए रह़मी है।[3]

त़बरानी की रिवायत है : झूट, क़त़ए रेह़मी और ख़ियानत का मुर्तकिब इस लाइक़ होता है कि अल्लाह तआ़ला उसे दुन्या में भी अ़ज़ाब दे और आख़िरत में भी सज़ा का मुस्तह़िक़ गरदाने और सब आ'माल से जल्दी अज्र सिलए रेह़मी का मिलता है अगर्चे उस घर के लोग गुनहगार होते हैं मगर सिलए रेह़मी की वज्ह से उन का माल भी ख़ूब बढ़ता है और उन की अवलाद भी ब कसरत होती है।[4]

गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर

अबू दावूद शरीफ़ की ह़दीस में है : "जिस ने गुस्से को ज़ब्त़ कर लिया ह़ालांकि वोह इसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे ले ले।" (ابوداود،٤/٣٢٥،الحديث٤٧٧٧)

1......الترغيب والترهيب ، كتاب البر والصلة وغيرهما ، الترغيب فى صلة الرحم...الخ ٣/٢٧٥، الحديث ٣٨٦٣

2....सिह़ाह़ सित्ता में से एक सह़ीह़ का नाम जिस के जामेअ़ "इब्ने माजा" हैं और इन्ही के नाम से इस को सुनने इब्ने माजा कहा जाता है, पूरा नाम मुह़म्मद बिन यज़ीद बिन माजा है, मुतवफ़्फ़ा सिने 273 हिजरी।

3......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البغى، ٤/٤٧٤، الحديث: ٤٢١٢

4......كنزالعمال ، كتاب الاخلاق، الباب الاول...الخ ، صلة الرحم...الخ، ٢/١٥٠، الجزء الثالث ، الحديث ٦٩٨٣

बाब 24

वालिदैन से हुस्ने सुलूक

'सहीहैन' में हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : **अल्लाह** तआ़ला को कौन सा अ़मल ज़ियादा महबूब है ? फ़रमाया : नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना, मैं ने कहा : इस के बा'द ! आप ने फ़रमाया : वालिदैन से हुस्ने सुलूक, मैं ने पूछा : फिर कौन सा अ़मल महबूब है ? आप ने फ़रमाया : जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह।[1]

'मुस्लिम' की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : बेटा बाप का हक़ अदा नहीं कर सकता यहां तक कि वोह बाप को गुलाम पाए और उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दे। (जब भी वोह हक़्क़े अबुव्वत अदा नहीं कर सकता)[2]

'मुस्लिम' की रिवायत है : एक शख़्स ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मैं आप के हाथ पर **अल्लाह** की रिज़ाजूई में हिजरत और जिहाद की बैअ़त करता हूं, आप ने पूछा : तेरे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ? अ़र्ज़ की : दोनों ज़िन्दा हैं, आप ने फ़रमाया : जा और वालिदैन की ख़िदमत कर ![3]

अबू या'ला और त़बरानी की रिवायत है : एक आदमी आप की ख़िदमत में आया और कहा : मैं जिहाद की तमन्ना रखता हूं मगर चन्द मजबूरियों की बिना पर मा'ज़ूर हूं। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है ? अ़र्ज़ की : मेरी मां ज़िन्दा है। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** से तौफ़ीक़ मांग कर मां से हुस्ने सुलूक करता रह, तुझे हज, उ़मरह और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का सवाब मिलेगा।[4]

त़बरानी में है एक आदमी ने जिहाद की तमन्ना ज़ाहिर की तो आप ने पूछा : तेरी मां ज़िन्दा है ? उस ने कहा : मेरी मां ज़िन्दा है, आप ने फ़रमाया : मां के क़दमों को पकड़, जन्नत पा लेगा।[5]

---

1 ......مسلم کتاب الایمان، باب بیان کون الایمان...الخ، ص ٥٨، الحدیث ١٣٧۔(٨٥)

2 ......مسلم ، کتاب العتق ، باب فضل عتق الوالد ، ص ٨١٢، الحدیث ٢٥۔ (١٥١٠)

3 ......مسلم، کتاب البر والصلة والاداب، باب بر الوالدین...الخ ، ص ١٣٨٠، الحدیث ٦۔ (٢٥٤٩)

4 ......المعجم الاوسط، ٢/١٧٠، الحدیث ٢٩١٥

5 ......المعجم الکبیر، ٨/٣١١، الحدیث ٨١٦٢

इब्ने माजा की रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कि अवलाद पर वालिदैन के क्या हुक़ूक़ हैं ? आप ने फ़रमाया : वोह तेरी जन्नत और जहन्नम हैं।(1)

इब्ने माजा, निसाई(2) और हाकिम की रिवायत है : एक आदमी ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरा जिहाद करने का इरादा है, आप से मश्वरा लेने आया हूं। आप ने फ़रमाया : तेरी मां ज़िन्दा है ? अ़र्ज़ की : हां या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! आप ने फ़रमाया : मां से हुस्ने सुलूक कर, जन्नत मां के क़दमों के पास है।(3)

एक रिवायत में है कि आप ने पूछा : तेरे वालिदैन हैं ? उस ने कहा : हां। आप ने फ़रमाया : उन की ख़िदमत कर, जन्नत उन के क़दमों में है।(4)

तिर्मिज़ी में है : हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक शख़्स ने आ कर कहा : मेरी मां मुझे बीवी को त़लाक़ देने का कहती है, आप ने फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : आप ने फ़रमाया : वालिदैन जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है, चाहे तो इसे ज़ाएअ़ कर दे और चाहे तो इस की हिफ़ाज़त कर।(5)

इब्ने ह़ब्बान की रिवायत है : एक आदमी ने हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से शिकायत की, कि मेरा बाप पहले तो मुझे शादी करने को कहता रहा और अब कहता है कि अपनी बीवी को त़लाक़ दे दो, आप ने फ़रमाया : न मैं तुझे वालिदैन की नाफ़रमानी के लिये कहता हूं और न ही बीवी को त़लाक़ देने के लिये कहता हूं, मैं तुम्हें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई ह़दीस सुनाता हूं, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बाप जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है, तेरी मरज़ी है, इस की हिफ़ाज़त कर या इसे छोड़ दे।(6)

सुनने अरबआ,(7) इब्ने ह़ब्बान और तिर्मिज़ी ने कहा : येह ह़दीस ह़सने सह़ीह़ है, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहते हैं : मेरे निकाह़ में एक औ़रत थी जिसे मैं बहुत पसन्द

1 ......ابن ماجه ، كتاب الادب ، باب برالوالدين ، ٤/١٨٦، الحديث ٣٦٦٢

2 .....सिह़ाह़ सित्ता में से एक सह़ीह़ जो अपने जामेअ़ के नाम पर मश्हूर है, इमाम निसाई का नाम अह़मद बिन शोऐ़ब है, मुतवफ़्फ़ा सिने 303 हिजरी।

3 ......سنن النسائی، کتاب الجهاد، باب الرخصة فی التخلف لمن له والدة، ص ٥٠٤، الحديث ٣١٠١

4 ......المعجم الكبير، ٢/٢٨٩، الحديث ٢٢٠٢

5 ......ترمذی ، کتاب البروالصلة ، باب ماجاء من الفصل فی رضا الوالدین، ٣/٣٥٩، الحديث ١٩٠٦

6 ......صحيح ابن حبان ، كتاب البر والاحسان، باب حق الوالدين، ١/٣٢٦،الحديث ٤٢٦

7 .....अह़ादीस के वोह चार मजमूए़ जो सुनन के नाम से मश्हूर हैं या'नी अबू दावूद, इब्ने माजा, निसाई और सुनने तिर्मिज़ी।

करता था मगर मेरा बाप उसे अच्छा नहीं समझता था, मेरे बाप ने कहा : उसे तलाक़ दे दो तो मैं ने इन्कार कर दिया, मेरे बाप ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जा कर वाक़िआ़ सुनाया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि बीवी को तलाक़ दे दो।[1]

मुस्नदे अह़मद में रिवायत है कि जो दराज़िये उ़म्र और फ़राख़िये रिज़्क़ की तमन्ना रखता हो वोह वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करे और सिलए रेह़मी करे।[2]

अबू या'ला और ह़ाकिम की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : जिस ने वालिदैन से हुस्ने सुलूक किया उसे मुबारक हो कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस की उ़म्र बढ़ा दी।[3]

इब्ने माजा, इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : आदमी गुनाहों के सबब रिज़्क़ से मह़रूम हो जाता है, दुआ़ तक़्दीर को लौटा देती है और हुस्ने ख़ुल्क़ उ़म्र को दराज़ी अ़ता करता है।[4]

तिर्मिज़ी की एक रिवायत है : दुआ़ क़ज़ा को लौटा देती है और हुस्ने सुलूक उ़म्र को दराज़ कर देता है।[5]

ह़ाकिम की रिवायत है : दूसरे लोगों की औ़रतों से दरगुज़र करो, तुम्हारी औ़रतों से दरगुज़र किया जाएगा, अपने वालिदैन से हुस्ने सुलूक करो तुम्हारी अवलाद तुम से हुस्ने सुलूक करेगी।[6]

त़बरानी की रिवायत है : अपने वालिदैन से हुस्ने सुलूक करो, तुम्हारी अवलाद तुम से हुस्ने सुलूक करेगी और तुम दरगुज़र करो तुम्हारी औ़रतें भी दरगुज़र करेंगी।[7]

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस की नाक ग़ुबार आलूद हो, उस की नाक ग़ुबार आलूद हो, उस की नाक ग़ुबार आलूद हो, अ़र्ज़ किया गया : किस की या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : जिस ने वालिदैन को या किसी एक को

---

1 ......ترمذی، کتاب الطلاق واللعان، باب ماجاء فی الرجل یسأله...الخ، ۲/۴۰۳، الحدیث۱۱۹۳ و صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین، ۱/۳۲۷،الحدیث ۴۲۸

2 ......مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ۴/۴۵۸،الحدیث ۱۳۴۰۰

3 ......المستدرك للحاكم، كتاب البروالصلة، باب من بر والديه...الخ، ۵/۲۱۳، الحديث ۷۳۳۹

4 ......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب العقوبات، ۴/۳۶۹،الحديث ۴۰۲۲ باالتقديم و التاخير

5 ......ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء لا یرد القدر الا الدعاء، ۴/۵۵، الحدیث ۲۱۴۶

6 ......المستدرك للحاكم كتاب البروالصلة، باب بروا آباء كم...الخ، ۵/۲۱۳، الحديث ۷۳۴۰

7 ......المعجم الاوسط، ۱/۲۸۵، الحدیث ۱۰۰۲

बुढ़ापे में पाया और जन्नत में न गया या उन्हों ने इसे जन्नत में दाख़िल न किया। (वालिदैन को हुस्ने सुलूक से राज़ी न किया)[1]

तृबरानी की ह़दीस है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और फ़रमाया : "आमीन आमीन आमीन", फिर फ़रमाया : जिब्रील आए और उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! जिस ने अपने वालिदैन में से किसी एक को पाया और उस से हुस्ने सुलूक न किया और मर गया तो वोह जहन्नम में गया, अल्लाह उसे दूर करे, आप आमीन कहें ! तो मैं ने आमीन कही, फिर जिब्रील ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! जिस ने माहे रमज़ान को पाया और गुनाह बख़्शवाए बिग़ैर मर गया तो वोह जहन्नम में गया, अल्लाह ने उसे दूर कर दिया, आप आमीन कहें ! तो मैं ने आमीन कही, फिर जिब्रील ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! जिस शख़्स के सामने आप का ज़िक्र हुवा और उस ने आप पर दुरूद न भेजा और मर गया तो वोह जहन्नम में गया, अल्लाह ने उसे अपनी रह़मत से दूर कर दिया, कहिये ! आमीन, तो मैं ने आमीन कही।[2]

इब्ने ह़ब्बान की रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : जिस ने अपने मां-बाप या उन में से किसी एक को पाया और उन से हुस्ने सुलूक न किया और वोह मर गया तो जहन्नम में गया, अल्लाह उसे अपनी रह़मत से दूर करे, मैं ने आमीन कही।[3]

ह़ाकिम वग़ैरा की रिवायत के आख़िर में है कि वोह रह़मत से दूर हो गया जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को बुढ़ापे की ह़ालत में पाया और उन्हों ने उसे जन्नत में नहीं पहुंचाया, मैं ने आमीन कही।[4]

तृबरानी की एक रिवायत येह है कि जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को पाया और उन से हुस्ने सुलूक न किया वोह अल्लाह की रह़मत से दूर हुवा और ग़ज़बे ख़ुदा का मुस्तह़िक़ बना, मैं ने आमीन कही।[5]

अह़मद की रिवायत है, जिस ने किसी ग़ुलाम मुसलमान को आज़ाद किया, वोह जहन्नम से आज़ाद हो गया और जिस ने अपने वालिदैन में से किसी एक को पाया फिर भी उस की बख़्शिश न हुई, अल्लाह उसे रह़मत से दूर कर दे।[6]

---

1 ......مسلم، کتاب البر والصلة والاداب، باب رغم من أدرك...الخ، ص ١٣٨١، الحديث ٩- (٢٥٥١)

2 ......المعجم الكبير، ٢/٢٤٣، الحديث ٢٠٢٢ و ١٢/٦٥، الحديث ١٢٥٥١

3 ......صحيح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدين، ١/٣١٥، الحديث ٤١٠

4 ......المستدرك للحاكم ، كتاب البر والصلة ، باب لعن الله العاق...الخ ٥/٢١٣، الحديث ٧٣٣٨

5 ......المعجم الكبير، ١٢/٦٦، الحديث ١٢٥٥١

6 ......مسند احمد ، مسند الكوفيين ، حديث ابى بن مالك و مالك بن عمرو القشيرى ، ٧/٢٨، الحديث ١٩٠٥٢ و ١٩٠٤٩

'सहीहैन' की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : या रसूलल्लाह ! लोगों में कौन महब्बत करने के ज़ियादा लाइक़ है ? आप ने फ़रमाया : मां ! पूछा : फिर कौन ? फ़रमाया : मां ! पूछा गया : फिर कौन ? फ़रमाया : मां ! जब चौथी बार पूछा गया : तो आप ने फ़रमाया : बाप ![1]

सहीहैन में हज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहदे मुबारक में मेरी मुशरिका मां मेरे पास आई तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज़ किया कि मेरी बे दीन मां आई है ! मैं इस से क्या सुलूक करूं ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने सुलूक करो ।[2]

इब्ने हब्बान और हाकिम की रिवायत है : आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** की रिज़ा वालिद की रिज़ा में है या वालिदैन की रिज़ा में है और **अल्लाह** की नाराज़ी वालिद या वालिदैन की नाराज़ी में है ।[3]

तबरानी की एक रिवायत है : वालिद या वालिदैन की इताअत में **अल्लाह** की इताअत है और वालिद या वालिदैन की ना फ़रमानी में **अल्लाह** की ना फ़रमानी है ।[4]

बज़्ज़ाज़ की एक रिवायत है, आप ने फ़रमाया : वालिदैन की रिज़ा में रब की रिज़ा है और वालिदैन की नाराज़ी में **अल्लाह** की नाराज़ी है ।[5]

तिर्मिज़ी, इब्ने हब्बान और हाकिम से मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की, कि मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है, मेरे लिये तौबा है ? आप ने फ़रमाया : तेरी मां है ? अर्ज़ की : नहीं ! फिर आप ने फ़रमाया : तेरी ख़ाला है ? अर्ज़ की : हां ! फ़रमाया : जाओ ! और ख़ाला से हुस्ने सुलूक करो ![6]

---

1 ......مسلم ، كتاب البر والصلة والاداب ، باب بر الوالدين...الخ، ص ۱۳۷۸، الحديث ۱ ـ (۲۰٤۸)

2 ......بخارى، كتاب الهبة...الخ، باب الهدية للمشركين ۱۸۲/۲، الحديث ۲٦۲۰

3 ......صحيح ابن حبان، كتاب البروالاحسان، باب حق الوالدين، ۳۲۸/۱، الحديث ٤۳۰ و مستدرك، ۲۱۰/٥، الحديث ۷۳۳۱

4 ......المعجم الاوسط، ٦۱٤/۱، الحديث ۲۲٥٥

5 ......البحرالزخار المعروف بمسند البزار، ۳۷٦/٦، الحديث ۲۳۹٤ بذكر الوالد مكان الوالدين

6 ......ترمذى، كتاب البروالصلة ، باب فى برالخالة، ۳٦۲/۳، الحديث ۱۹۱۱

अबू दावूद और इब्ने माजा में मरवी है कि एक शख़्स ने पूछा : या रसूलल्लाह ! वालिदैन की मौत के बा'द इन से नेकी करने की कोई सूरत है ? आप ने फ़रमाया : इन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करो, इन के वा'दों को पूरा करो, इन के रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ रखो और इन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करो ।[1]

इब्ने ह़ब्बान की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि उस जवान ने कहा : येह कितनी उ़म्दा और जामेअ़ बात है, आप ने फ़रमाया : जाओ और इस पर अ़मल करो ।[2]

इमामे मुस्लिम से रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما मक्का की त़रफ़ जा रहे थे, रास्ते में उन्हें बदवी मिला, आप ने उसे अपने गधे पर सुवार किया और अपनी पगड़ी उतार कर उसे दे दी। इब्ने दीनार ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला आप पर रह़्म करे येह बदवी लोग तो मा'मूली सी अ़त़ा से ख़ुश हो जाते हैं, आप ने फ़रमाया : इस का बाप मेरे बाप का दोस्त था और मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से सुना है कि आप ने फ़रमाया : बेहतरीन नेकी बेटे का अपने बाप के दोस्तों को अ़ज़ीज़ रखना है ।[3]

सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान में ह़ज़रते अबू बरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि मैं मदीने में आया तो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما मेरे यहां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : जानते हो मैं तुम्हारे पास क्यूं आया हूं ? मैं ने कहा : नहीं। उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को फ़रमाते हुवे सुना है कि जो शख़्स क़ब्र में सोए हुवे बाप से नेकी चाहता है वोह उस के दोस्तों से हुस्ने सुलूक करे, मेरे बाप उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ और तुम्हारे बाप में भाईचारा था मैं इस लिये ह़ाज़िर हुवा हूं ।[4]

तीन नौजवान और नेक आ'माल

सह़ीह़ैन और दूसरी कुतुबे अह़ादीस में मरवी है कि अगले वक़्तों में तीन आदमी तलाशे मुआ़श के लिये सफ़र में निकले, रास्ते में उन्हें बारिश ने आ लिया और वोह भाग कर एक ग़ार में

1 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی برالوالدین ، ٤/٤٣٤، الحدیث ٥١٤٢

2 ......صحیح ابن حبان کتاب البروالاحسان، باب حق الوالدین ، ١/٣٢٤، الحدیث ٤١٩

3 ......مسلم ، کتاب البر والصلة والاداب، باب فضل صلة اصدقاء...الخ ، ص ١٣٨٢، الحدیث ١١ـ (٢٥٥٢)

4 ......صحیح ابن حبان کتاب البروالاحسان، باب حق الوالدین ، ١/٣٢٩، الحدیث ٤٣٣

छुप गए, अचानक एक चट्टान लुढ़क कर ग़ार के मुंह पर आ कर रुक गई और ग़ार का मुंह बन्द हो गया, उन्हों ने आपस में येह तै किया कि हर एक अपने अच्छे आ'माल को याद कर के दुआ़ मांगे ताकि येह चट्टान हट जाए, एक और रिवायत के लफ़्ज़ येह हैं : उन्हों ने एक दूसरे से कहा : ज़रा सोचो और कोई ऐसा अ़मल याद करो जो तुम ने **अल्लाह** की रिज़ाजूई में किया हो और उस अ़मल को वासित़ा बना कर इस चट्टान से नजात की दुआ़ मांगो, एक और रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : चट्टान गिरने की वज्ह से ग़ार का निशान मिट गया, **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता हम कहां हैं, **अल्लाह** तआ़ला से अपने बेहतरीन अ़मल को सामने रखते हुवे दुआ़ करें, तब उन में से एक ने कहा : इलाहल आ़लमीन ! मेरे वालिदैन बूढ़े थे, मैं उन से पहले शाम को किसी बच्चे को दूध नहीं पिलाया करता था। एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा, मैं किसी काम से चला गया, जब मैं वापस आया तो वोह सो चुके थे, मैं ने दूध दोहा और सारी रात दूध ले कर सिरहाने खड़ा रहा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई और मेरे बच्चे सारी रात भूके सोते रहे, ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! मैं ने येह सब कुछ तेरी रज़ाजूई के लिये किया था, अब तू येह चट्टान हम से हटा दे इस दुआ़ के बा'द चट्टान इतनी हट गई कि सूरज की रोशनी अन्दर आने लगी।(1)

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : मेरे छोटे बच्चे थे, मैं जब बकरियां चरा कर वापस आता तो दूध दोह कर पहले वालिदैन को पिलाता फिर बच्चों को देता। एक मरतबा मुझे ज़रूरी काम के लिये जाना हुवा, वापसी उस वक़्त हुई जब मेरे वालिदैन सो चुके थे, मैं ने ह़स्बे मा'मूल दूध निकाला और ले कर वालिदैन के सिरहाने खड़ा हो गया और बच्चे मेरे क़दमों में पड़े दूध त़लब करते रहे मगर मैं ने वालिदैन को दूध पिलाए बिग़ैर इन्हें दूध देना मुनासिब न समझा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई। ऐ **अल्लाह** ! अगर मेरा येह अ़मल तेरी रज़ाजूई में था तो इस चट्टान को हटा दे कि हम आस्मान को देख सकें। चट्टान इतनी हट गई कि उन्हें आस्मान नज़र आने लगा। दूसरे ने चचाज़ाद बहन से ज़िना से बाज़ रहने का ज़िक्र किया और तीसरे ने मज़दूर की उजरत की अमानत दारी का ज़िक्र किया यहां तक कि चट्टान मुकम्मल त़ौर पर हट गई और वोह बाहर निकल गए।(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الاجارۃ ، باب من استاجر اجیرا...الخ، ٢/٦٦، الحدیث ٢٢٧٢، و مسلم کتاب الرقاق ، باب قصة اصحاب الغار...الخ، ص ١٤٦٥، الحدیث ١٠٠ ـ (٢٧٤٣) ملخصًا

2 ......المرجع السابق

बाब 25

ज़कात और बुख़्ल

फ़रमाने इलाही है :

जो लोग अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा माल में बुख़्ल करते हैं वोह इसे अपने लिये बेहतर न समझें बल्कि येह उन के लिये मुसीबत है अ़न क़रीब बुख़्ल कर्दा माल से क़ियामत के दिन उन को तौक़ पहनाए जाएंगे।[1]

फ़रमाने इलाही है :

उन मुशरिकीन के लिये हलाकत है जो ज़कात नहीं अदा करते।[2]

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ज़कात न देने वालों को मुशरिक कहा है।

फ़रमाने नबवी है : जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता, क़ियामत के दिन उस का माल गन्जे सांप की शक्ल में उस की गर्दन में झूल रहा होगा।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पांच बातों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगी

फ़रमाने नबवी है : ऐ गुरौहे मुहाजिरीन ! पांच बलाएं ऐसी हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ मैं अल्लाह तआ़ला से तुम्हारे लिये पनाह मांगता हूं : जब किसी क़ौम में खुल्लम खुल्ला बदकारियां होती हैं तो अल्लाह तआ़ला उन पर ऐसे मकरूहात नाज़िल करता है जो पहले किसी पर नाज़िल नहीं होते। जब कोई क़ौम नाप तोल में कमी करती है तो उन पर तंगदस्ती, क़हत़ साली और ज़ालिम हाकिम मुसल्लत़ कर दिया जाता है, जब कोई क़ौम अपने मालों की ज़कात नहीं देती उन्हें खुश्क साली घेर लेती है, अगर ज़मीन पर चोपाए न हों तो कभी उन पर बारिश न बरसे।

1.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी, हरगिज़ इसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा। (پ٤، اٰل عمران:١٨٠)

2.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़राबी है शिर्क वालों को, वोह जो ज़कात नहीं देते। (پ٢٤، حٰمۤ السجدہ:٦، ٧)

3.....ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب جاء فى منع الزكاة، ٢/٣٦٩، الحديث ١٧٨٤

जब कोई क़ौम **अल्लाह** और उस के रसूल के अ़हद को तोड़ देती है तो उस पर उस के दुश्मन मुसल्लत़ हो जाते हैं जो उन से उन का मालो दौलत छीन लेते हैं और जिस क़ौम के फ़रमांरवा किताबुल्लाह से फ़ैसला नहीं करते, उन के दिलों में एक दूसरे से ख़ौफ़ पैदा हो जाता है।[(1)]

फ़रमाने नबवी है : "**अल्लाह** तआ़ला बख़ील की ज़िन्दगी और सख़ी की मौत को ना पसन्द फ़रमाता है।"[(2)]

फ़रमाने नबवी है : "दो आ़दतें मोमिन में जम्अ़ नहीं हो सकतीं, बुख़्ल और बद खुल्क़ी।"[(3)]

फ़रमाने नबवी है : "**अल्लाह** तआ़ला ने क़सम खाई है कि बख़ील को जन्नत में नहीं भेजेगा।"[(4)]

फ़रमाने नबवी है : "बुख़्ल से बचो ! जिस क़ौम में बुख़्ल आ जाता है वोह लोग ज़कात नहीं देते, सिलए रेह़्मी नहीं करते और नाह़क़ ख़ून रेज़ियां करते हैं।"[(5)]

फ़रमाने नबवी है : **अल्लाह** तआ़ला ने रकाकत और शो'लापन को पैदा किया और उसे माल और बुख़्ल से ढांप दिया।[(6)]

ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالیٰ عنہ से बुख़्ल के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया : आप ने फ़रमाया : बुख़्ल येह है कि इन्सान राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को माल का ज़ियाअ़ और माल जम्अ़ करने को ख़ूबी समझे, बुख़्ल की बुन्याद, अवलाद और माल की मह़ब्बत, फ़क़्रो फ़ाक़ा का ख़ौफ़ और तूले अमल है।

ह़दीस शरीफ़ में है : बेशक अवलाद बुज़दिल और बख़ील बना देने वाली है।[(7)]

बा'ज़ आदमी ऐसे हैं जो अपने माल की ज़कात की अदाएगी और अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च करने को अच्छा नहीं समझते उन की मह़ब्बत रूपिया जम्अ़ करने और इसे संभाल कर रखने में होती है ह़ालांकि वोह जानते हैं कि उन्हें एक दिन मर जाना है।

1......شعب الایمان، باب الثانی والعشرين...الخ، باب فی الزکاۃ ، ۱۹۷/۳، الحدیث ۳۳۱٤

2......کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الثانی فی الأخلاق والأفعال...الخ، ۱۸۰/۲، الجزء الثالث، الحدیث ۷۳۷۳

3......ترمذی ، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی البخل، ۳۸۷/۳، الحدیث ۱۹٦۹

4......تاریخ مدینه دمشق، ۳۷۳/۵۷

5......کنزالعمال ، کتاب الاخلاق، ۱۸۲/۲، الجزء الثالث، الحدیث ۷٤۰۱

6......المرجع السابق ، ص ۱۸۳، الحدیث ۷٤۰۷

7...येह ह़दीस शरीफ़ यहां लिखने से रह गई थी, "मुकाशफ़तुल कुलूब" (अ़रबी) में इस मक़ाम पर येह ह़दीस मौजूद है : " اِنَّ الْوَلَدَ مَجْبَنَةٌ مَبْخَلَةٌ " (مسند احمد، حدیث یعلی بن مرة الثقفی، ۱۷۸/٦، الحدیث: ۱۷۵۷۳) लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने इस ह़दीस का तर्जमा यहां लिख दिया है। **इ़ल्मिय्या**

इन बख़ीलों के बारे में एक शाइर का क़ौल है :

اخی ان من الرجال بھیمۃ	فی صورۃ الرجل اللبیب المبصر
فطن بکل مصیبۃ فی مالہ	فاذااصیب بدینہ لم یشعر

﴾1﴿......ऐ भाई ! अ़क्लमन्द लोगों की शक्ल में बहुत से जानवर भी होते हैं।

﴾2﴿......जो अपने माल की हर ऊंच नीच को जानते हैं लेकिन अगर उन का दीन चला जाए तो उन्हें मह़सूस भी नहीं होता।

एक और शाइर कहता है

البخل داء دوی لایلیق بذی	مروءۃ ولا عقل ولا دین
من اثر البخل عن وفر وعن جدۃ	فقد لعمری اضحی وھو مغبون
یابوس من منع الدارین حقھما	فباء دنیاہ بعد الدین بالدون

﴾1﴿...बुख़्ल ऐसी बीमारी है जो किसी बा मुरुव्वत, अ़क्लमन्द और दीनदार के लाइक़ नहीं।

﴾2﴿...जिस ने मालो दौलत ह़ासिल कर के बुख़्ल किया मुझे ज़िन्दगी की क़सम वोह धोके में रहा।

﴾3﴿...हाए अफ़्सोस ! जिस ने दुन्या व आख़िरत के हुक़ूक़ अदा न किये उस ने ह़क़ीर चीज़ के बदले अपने दीन के बा'द दुन्या भी बेच डाली।

एक और शाइर कहता है :

اذا المال لم ینفع صدیقا ولم یصب	قریبا ولم یجبر بہ حال معدم
فعقباہ ان تحتازہ کف وارث	وللباخل المورث عقبی التندم

﴾1﴿......जब माल किसी दोस्त को नफ़्अ़ न पहुंचाए, किसी अ़ज़ीज़ के काम न आए और किसी तंगदस्त की ह़ाजत रवाई न करे।

﴾2﴿......तो अन्जाम येह होगा कि माल तो वारिस के हथ्थे चढ़ेगा और बख़ील क़ियामत की शर्मिन्दगी अपने साथ ले जाएगा।

ह़ज़रते बिश्र का क़ौल है कि बख़ील की मुलाक़ात मूजिबे मलाल और उसे देखना दिल की संगीनी में इज़ाफ़ा करता है, अ़रब एक दूसरे को बुख़्ल और बुज़दिली पर शर्म दिलाया करते थे। शाइर कहता है :

انفق ولا تخش اقلالا فقد قسمت	علی العباد من الرحمن ارزاق
لاینفع البخل مع دنیا مولیۃ	ولایضر مع الاقبال انفاق

﴾1﴿......ख़र्च करता रह और कमी का ख़ौफ़ न कर, अल्लाह तआ़ला ने बन्दों के रिज़्क़ बांट दिये हैं।
﴾2﴿......दुन्या से जाते हुवे बुख़्ल कोई फ़ाइदा न देगा और सख़ावत कोई नुक़्सान न पहुंचाएगी।

एक और शाइ़र का क़ौल है :

اری الناس خلان الجواد فلا اری　　بخیلا له فی العالمین خلیل

وانی رایت البخل یزری باھله　　فاکرمت نفسی ان یقال بخیل

﴾1﴿......मैं ने लोगों को अहले सख़ा का दोस्त पाया है मगर दो आ़लम में बख़ील का किसी को दोस्त नहीं देखा।
﴾2﴿......मैं ने देखा है कि बुख़्ल बख़ीलों को ज़लीलो ख़्वार करता है लिहाज़ा मैं ने बुख़्ल से किनारा कशी कर ली।

बख़ील की ज़िल्लत के लिये इतना ही काफ़ी है कि वोह दूसरे के लिये माल जम्अ़ करता है, ख़र्च करने से तक्लीफ़ महसूस करता है और इस की फ़िरावानी से लुत्फ़ अन्दोज़ नहीं होता ऐसे आदमियों के लिये ह़ज़रते वकीअ़ का क़ौल है :

لئیم لایزال یلم وقرا　　لوارثه ویدفع عن حماه

ککلب الصید یمسک وھو طاو　　فریسته لیا کلھا سواه

﴾1﴿.....बख़ील हमेशा उस के वारिसों के लिये माल इकठ्ठा करता है और उस की ह़िफ़ाज़त करता है।
﴾2﴿......शिकारी कुत्ते की त़रह़ है जो भूका होने के बा वुजूद शिकार की ह़िफ़ाज़त करता है ताकि उसे दूसरे खाएं।

एक ज़रबुल मसल है कि बख़ील के माल की आने वाले वारिस को ख़ुश ख़बरी दे दो। इमाम अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है : मैं बख़ील का फ़ैसला नहीं कर सकता क्यूंकि वोह अपने बुख़्ल की वज्ह से अपने ह़क़ से ज़ियादा लेने की कोशिश करता है और ऐसा आदमी अमानतदार नहीं होता।

इब्लीसे लईन बुख़्ल को पसन्द करता है

ह़ज़रते यह़्या علیہ السلام ने पूछा : तुझे कौन सा आदमी पसन्द, कौन सा ना पसन्द है ? इब्लीस ने कहा : मुझे मोमिन बख़ील पसन्द है मगर गुनहगार सख़ी पसन्द नहीं ? आप ने पूछा : वोह क्यूं ? इब्लीस ने कहा : इस लिये कि बख़ील को तो उस का बुख़्ल ही ले डूबेगा मगर फ़ासिक़ सख़ी के मुतअ़ल्लिक़ मुझे येह ख़त़रा है कहीं अल्लाह तआ़ला उस के गुनाहों को उस की सख़ावत के बाइ़स मुआ़फ़ न फ़रमा दे। फिर इब्लीस जाते हुवे कहता गया कि अगर आप यह़्या पैग़म्बर न होते तो मैं (राज़ की येह बातें) कभी न बतलाता।

बाब 26

तूले अमल

उम्मीदों का सहारा और फ़रमाने नबवी

फ़रमाने नबवी है कि मैं तुम पर दो चीज़ों के तसल्लुत से डरता हूं : तूले अमल या'नी लम्बी उम्मीदें और ख़्वाहिशात की पैरवी। बे शुबा तवील उम्मीदें आख़िरत की याद भुला देती हैं और ख़्वाहिशात की पैरवी हक़ व सदाक़त से रोक देती है।(1)

फ़रमाने नबवी है कि मैं तीन शख़्सों के लिये तीन चीज़ों का ज़ामिन हूं : दुन्या में हमातन ग़र्क़ दुन्या के हरीस और बख़ील के लिये दाइमी फ़क्र, दाइमी मश्ग़ूलिय्यत और दाइमी ग़म मुक़द्दर किया गया है।(2)

हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिम्स वालों से कहा : तुम्हें शर्म नहीं आती तुम ऐसे मकानात बनाते हो जिन में तुम्हें नहीं रहना, ऐसी उम्मीदें रखते हो जिन्हें नहीं पा सकते और ऐसा सामान जम्अ करते हो जिसे अपने मसरफ़ में नहीं लाते। तुम से पहली उम्मतों ने आलीशान इमारतें बनवाईं, बहुत मालो दौलत जम्अ किया और तवील तरीन उम्मीदें रखीं मगर उन की उम्मीदें फ़रेब निकलीं और उन का जम्अ कर्दा माल बरबाद और उन की इमारतें क़ब्रें बन गईं।(3)

हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : अगर तुम अपने दोस्त से आरज़ूए मुलाक़ात रखते हो तो पैवन्द लगा कपड़ा पहनो, पुराना जूता इस्ति'माल करो, उम्मीदें कम करो और पेट भर कर न खाओ।

हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बेटे शीस عَلَیْہِ السَّلَام को पांच बातों की वसिय्यत की और फ़रमाया : अपनी अवलाद को भी येही वसिय्यत करना, आरिज़ी दुन्या पर मुतमइन न होना ! मैं जाविदानी जन्नत में मुतमइन था, **अल्लाह** तआला ने मुझे वहां से निकाल दिया। औरतों की ख़्वाहिशात पर काम न करना ! मैं ने अपनी बीवी की ख़्वाहिश पर शजरे ममनूआ खा लिया और शर्मिन्दगी उठाई। हर एक काम करने से पहले उस का अन्जाम सोच लो ! अगर मैं अन्जाम सोच लेता तो जन्नत से न निकाला जाता। जिस काम से तुम्हारा दिल मुतमइन न हो उस काम को न करो

(1)......شعب الایمان، الحادی و السبعون من شعب الإیمان، فصل فیما بلغنا عن الصحابة...الخ، ۷/۳۶۹، الحدیث ۱۰۶۱۳

(2)......فردوس الاخبار، ۱/۴۵، الحدیث ۱۳۳

(3)......تاریخ مدینه دمشق، ۴۷/۱۳۳

क्यूंकि जब मैं ने शजरे ममनूआ़ खाया तो मेरा दिल मुत़मइन नहीं था मगर मैं उस के खाने से बाज़ न रहा। काम करने से पहले मश्वरा कर लिया करो क्यूंकि अगर मैं फ़िरिश्तों से मश्वरा कर लेता तो मुझे येह तक्लीफ़ न उठानी पड़ती।

मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : मुझ से अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि सुब्ह़ को शाम की फ़िक्र न करो और शाम को दूसरी सुब्ह़ की फ़िक्र न करो, मौत से पहले ज़िन्दगी को, बीमारी से पहले तंदुरुस्ती को ग़नीमत समझो क्यूंकि पता नहीं कल तुम्हारा क्या ह़ाल होगा।

अल्लाह तआ़ला से कमा ह़क़्क़ुहू शर्म करो

हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम से फ़रमाया : क्या तुम सब जन्नत में जाने की तमन्ना रखते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हां ! आप ने फ़रमाया : उम्मीदें कम करो और अल्लाह तआ़ला से कमा ह़क़्क़ुहू शर्म करो। सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हम अल्लाह से शर्म करते हैं। आप ने फ़रमाया : ह़या वोह नहीं जो तुम समझते हो, ह़या येह है कि तुम क़ब्रों और इन की तकालीफ़ को याद करो, पेट को ह़राम से मह़फ़ूज़ रखो, दिमाग़ को बुरे ख़यालात की आमाजगाह न बनाओ और जो शख़्स आख़िरत की इ़ज़्ज़त चाहता है वोह दुन्यावी ज़ीनतों को तर्क कर दे, येही ह़क़ीक़ी शर्म है और इसी से बन्दा अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करता है।(1)

फ़रमाने नबवी है : इस उम्मत की अव्वलीन नेकी ज़ोहद और यक़ीन है और इस की हलाकत का आख़िरी सबब बुख़्ल और झूटी उम्मीदें हैं।(2)

इरशादाते सह़ाबा

ह़ज़रते उम्मे मुन्ज़िर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है : एक मरतबा हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को लोगों के पास आए और फ़रमाया : ऐ लोगो ! अल्लाह से शर्म करो : सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : किस त़रह़ या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : तुम वोह कुछ जम्अ़ करते हो जो खाते नहीं, वोह उम्मीदें रखते हो जो पा नहीं सकते और ऐसे मकानात बनाते हो जिन में तुम्हें हमेशा नहीं रहना है।(3)

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक माह के क़र्ज़ पर एक सो दीनार में लौंडी ख़रीदी। जब हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुना तो फ़रमाया : तुम्हें तअ़ज्जुब नहीं हुवा ! उसामा ने एक माह के क़र्ज़ पर लौंडी ख़रीदी है, इस की

---

1 ......الزهد لابن المبارك، باب العرب من الخطايا والذنوب، ص ١٠٧، الحديث ٣١٧

2 ......كنزالعمال ، كتاب الاخلاق، ٢/١٨١، الجزء الثالث، الحديث ٧٣٨٠

3 ......شعب الايمان، الحادى و السبعون من شعب الإيمان، ٧/٣٥٤، الحديث ١٠٥٦٢

उम्मीदें बहुत त़वील हैं। रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! मैं आंखें खोलता हूं तो मुझे इतनी उम्मीद नहीं होती कि पलकें एक दूसरे से मिलेंगी या अल्लाह तआ़ला इस से पहले मेरी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा लेगा, मैं तो निगाह उठाने के बा'द निगाह की वापसी की उम्मीद नहीं रखता, लुक़्मा मुंह में डाल कर उसे चबाने तक ज़िन्दगी की उम्मीद नहीं रखता फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अगर तुम अ़क़्लमन्द हो तो अपने आप को मुर्दों में शामिल समझो, रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम पर एक वक़्त मुक़र्रर (मौत) आएगा जिस को तुम टाल नहीं सकोगे।"(1)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिट्टी से मस्ह़ फ़रमा लेते, मैं अ़र्ज़ करता : ह़ुज़ूर पानी क़रीब है आप फ़रमाते क्या ख़बर मैं पानी तक पहुंच सकूं या न पहुंच सकूं।(2)

रिवायत है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन लकड़ियां लीं, एक को सामने, दूसरी को पहलू में और तीसरी को दूर नस्ब फ़रमाया और फ़रमाया : जानते हो ! येह क्या है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और उस का रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) बेहतर जानते है। फ़रमाया : "येह इन्सान है, येह मौत है और वोह इन्सान की उम्मीदें हैं, आदमी उम्मीदों के पीछे भागता है मगर रास्ते में उसे मौत आ लेती है।"(3)

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक वाक़िआ़

मरवी है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बैठे हुवे थे और एक बूढ़ा फावड़े से ज़मीन खोद रहा था, आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगी : ऐ अल्लाह ! इस से ज़िन्दगी की उम्मीद छीन ले। बूढ़े ने फाऊड़ा रख दिया और लैट गया, जब कुछ देर गुज़र गई तो आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की इसे इस की उम्मीदें लौटा दे। बूढ़ा खड़ा हो गया और फाऊड़े से ज़मीन खोदने लगा तो आप ने इस का सबब पूछा : तो वोह कहने लगा : काम करते हुवे मेरे दिल में ख़याल आया कि मैं अब बूढ़ा हो गया हूं, कब तक येह काम करता रहूंगा लिहाज़ा मैं ने फावड़ा रख दिया और लैट गया, कुछ देर बा'द मेरे दिल में ख़याल आया तुझे ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये ज़रूर कुछ न कुछ करना चाहिये चुनान्चे, मैं फावड़ा संभाल कर फिर खड़ा हो गया और काम करने लगा।

1 ......تاریخ مدینہ دمشق، ۷۵/۸
2 ......مسند احمد، مسند عبداللہ بن العباس... الخ، ۶۱۸/۱، الحدیث ۲۶۱۴
3 ......مسند احمد ، مسند ابی سعید الخدری، ۳۷/۴، الحدیث ۱۱۱۳۲

बाब 27

इबादत गुज़ारी व तर्के हराम

ताअ़त के मा'ना : फ़राइज़ की अदाएगी, ह़राम चीज़ों से परहेज़ और हुदूदे शरअ़ पर कारबन्द होना है। ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाने इलाही : وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا[1] के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं : "इस का मत़लब येह है कि बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की इबादत व इत़ाअ़त करता रहे।"

ताअ़त की ह़क़ीक़त

ताअ़त की ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त, ख़ौफ़े ख़ुदा, **अल्लाह** तआ़ला से उम्मीद हमा वक़्त **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ होना है, वोह बन्दा जो इन अवसाफ़ से ख़ाली होता है वोह ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकता लिहाज़ा इत़ाअ़त उस वक़्त तक सह़ीह़ नहीं होती जब तक कि बन्दा **अल्लाह** की मा'रिफ़त और उस बे मिस्ल, बे मिसाल क़ादिर व ख़ालिक़ रब्बे ज़ुल जलाल की तमाम सिफ़तों पर ईमान नहीं लाता।

एक बदवी ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से अ़र्ज़ की, कि तुम ने **अल्लाह** को देखा है उस की इबादत करते हो ? आप ने फ़रमाया : हां ! देख कर इबादत करता हूं। पूछा : वोह कैसे ? आप ने फ़रमाया : वोह आंखों के नूर से नहीं दिल के इदराक से देखा जाता है, उसे ह़वास नहीं पा सकते, वोह अपनी ला ता'दाद निशानियों से पहचाना जाता है, बे अन्दाज़ा अवसाफ़ से मौसूफ़ है, वोह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, वोह आस्मानो ज़मीन का मालिक है और उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं है। बदवी बे साख़्ता कह उठा : **अल्लाह** जानता है कि उसे किस घराने में अपना रसूल भेजना है।

बात़िनी इल्म क्या है ?

एक आ़रिफ़ से बात़िनी इल्म के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया : उन्हों ने कहा : वोह **अल्लाह** तआ़ला का राज़ है जिसे वोह अपने दोस्तों के दिलों में डाल देता है और किसी फ़िरिश्ते और इन्सान को इस की ख़बर तक नहीं होती।

ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : इन्हों ने कहा : अगर इन्सान एक दाने के बराबर **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत पर यक़ीन ह़ासिल करे तो वोह हवा पर उड़े और पानी पर

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल। (پ۲۰،القصص:۷۷)

चले, पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी मा'रिफ़त के इदराक पर इन्सान के इक़रारे आ़जिज़ाना को ईमान क़रार दिया और अ़ता कर्दा ने'मतों पर इन्सान के शुक्र न कर सकने के ए'तिराफ़ को शुक्र क़रार दिया है।

हज़रते महमूद अल वर्राक़ के अश्आ़र हैं :

اذا كان شكرى نعمة اللّٰه نعمة	على له فى مثلها يجب الشكر
فكيف بلوغ الشكر الا بفضله	وان طالت الايام واتصل العمر
اذا مس بالسراء عم سرورها	وان مس بالضراء اعقبها الاجر
وما منهما الا له فيه نعمة	تضيق لها الاوهام والبرو البحر

﴾1﴿......जब कि अल्लाह तआ़ला की ने'मतों पर मेरा शुक्र करना भी अल्लाह की एक ने'मत है जिस पर शुक्र वाजिब है।

﴾2﴿......पस मैं कैसे उस के करम के बिग़ैर शुक्रिया अदा कर सकता हूं अगर्चे मुझे बहुत त़वील ज़िन्दगी भी दे दी जाए।

﴾3﴿......जब इन्सान को ख़ुशी मिलती है तो मसर्रतें आ़म हो जाती हैं और जब कोई दुख पहुंचता है तो इस के बा'द उसे बेहतरीन अज्र मिलता है।

﴾4﴿......हर ख़ुशी और ग़मी में अल्लाह तआ़ला की ऐसी ने'मत पोशीदा है जो बह़रो बर में नहीं समा सकती।

जब मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी ह़ासिल हो जाए तो बन्दगी का इक़रार लाज़िमी है और जब ईमान दिल में जा गुज़ीं हो जाए, रब तआ़ला की त़ाअ़त वाजिब हो जाती है।

ईमान की दो क़िस्में हैं : ज़ाहिर और बात़िन, ज़बान से इक़रार को ज़ाहिर और दिल से तस्दीक़ को बात़िन कहते हैं। क़ुर्बे ख़ुदावन्दी और इ़बादत व इत़ाअ़त में मोमिनों के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं मगर ईमान में सब बराबर के शरीक हैं। जो मोमिन तवक्कुल, इख़्लास और अल्लाह की रज़ाजूई में जितना हिस्सा रखता है उसी क़दर उस का मर्तबा बुलन्द होता है।

इख़्लास येह है कि बन्दा अल्लाह तआ़ला से अपने आ'माल के अज्र का त़ालिब न हो, इस लिये कि जो शख़्स सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से इ़बादत करता है उस का इख़्लास मुकम्मल नहीं होता क्यूंकि उस ने तो अपनी भलाई के लिये इ़बादत की है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि बुरे कुत्ते की त़रह़ न बनो जो डर के मारे काम करता है, न ही बुरे मज़दूर की त़रह़ बनो जो उजरत के बिग़ैर काम ही नहीं करता।[1]

[1]......حلية الاولياء، ٤/٥٦، الحديث ٤٧٣١ (بالعبد مكان الكلب)

फ़रमाने इलाही है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ [1]

और बा'ज़ लोगों से वोह है जो किनारे पर अल्लाह की इबादत करता है अगर उसे भलाई मिले तो वोह मुत़मइन हो जाता है और अगर उसे आज़माइश पड़े तो अपने मुंह वापस पलट जाए दुन्या और आख़िरत को ख़सारे में दिया ।

अगर अल्लाह तआ़ला आ'माल पर अज्र न देता तब भी उस के एह़सानात और इन्आ़मात इतने हैं कि हम पर उस की इबादत और इत़ाअ़त ज़रूरी थी चे जाएकि उस का हुक्म भी हो और अज्र का वा'दा भी हो ।

'तवक्कुल' येह है कि इन्सान ह़ाजतमन्दी के वक़्त अल्लाह तआ़ला पर ए'तिमाद करे, ज़रूरत के वक़्त उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करे और मसाइब के नुज़ूल में इत़्मीनाने क़ल्ब और कामिल सुकून का सुबूत फ़राहम करे क्यूंकि मुतवक्किल आदमी ख़ूब जानता है कि मसाइब का वुरूद अल्लाह ही की त़रफ़ से है, वोह ख़ैरो शर के हर काम को बाप बेटे, मालो दौलत की त़रफ़ से नहीं ख़ालिक़े काइनात की त़रफ़ से समझते हैं और किसी भी ह़ालत में अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और पर ए'तिमाद नहीं करते चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ [2]

जो अल्लाह पर तवक्कुल रखता है पस अल्लाह उसे काफ़ी है ।

'रिज़ा' का मा'ना येह है कि इन्सान अल्लाह के जारीकर्दा उमूर को मुस्कुराते हुवे क़बूल करे ।

बा'ज़ उ़लमा का कौल है कि अल्लाह की बारगाह में सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स है जो उस की रिज़ा पर राज़ी है, हुकमा का क़ौल है कि बहुत सी मसर्रतें बीमारी होती हैं और बहुत सी बीमारियां शिफ़ा होती हैं । किसी शाइर का क़ौल है :

كم نعمة مطوية	لك بين انياب النوائب
و مسرة قد اقبلت	من حيث ترتقب المصائب
فاصبر على حدثان دهرك	فالامور لها عواقب
ولكل كرب فرجة	ولكل خالصة شوائب

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी मुंह के बल पलट गए दुन्या और आख़िरत दोनों का घाटा । (پ۱۷،الحج:۱۱)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है । (پ۲۸،الطلاق:۳)

﴾1﴿......कितनी ने'मतें ऐसी हैं जो मसाइब से घिरी हुई हैं।

﴾2﴿......और कितनी मसर्रतें ऐसी हैं जो मसाइब की त़रह़ नाज़िल हुईं।

﴾3﴿......ख़ुशी और ग़म दोनों में सब्र कर क्यूंकि हर काम का एक अन्जाम होता है।

﴾4﴿......हर ग़म के बा'द ख़ुशी है और हर ख़ूबी में बुराई पोशीदा है।

हमारे लिये येह इरशादे रब्बानी काफ़ी है कि

"तुम किसी चीज़ को ना पसन्द करते हो ह़ालांकि वोह तुम्हारे लिये बेहतर होती है।"[1]

बन्दे की इ़बादत और त़ाअ़त हुब्बे दुन्या तर्क किये बिग़ैर ना मुकम्मल रहती है।

एक दानिश्वर का क़ौल है कि बेहतरीन नसीह़त वोह है जो दिल पर कोई ह़िजाब न रहने दे और येह ह़िजाबात दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात हैं (या'नी इस नसीह़त से तमाम दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात दिल से मुन्क़त़अ़ हो जाएं।) एक और ह़कीमाना मक़ूला है कि दुन्या एक लम्ह़ा है, इसे त़ाअ़त व बन्दगी में गुज़ार दे। अबुल वलीद अल बाजी का क़ौल है :

اذا کنت اعلم علما یقینا   بان جمیع حیاتی کساعة

فلم لا اکون ضنینا بها   واجعلها فی صلاح وطاعة

﴾1﴿...जब तुम ख़ूब अच्छी त़रह़ जानते हो कि तुम्हारी ज़िन्दगी एक साअ़त से ज़ियादा नहीं।

﴾2﴿...तो तुम इसे एह़तियात़ से क्यूं ख़र्च नहीं करते इसे त़ाअ़त व इ़बादत में क्यूं बसर नहीं करते।[2]

एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं मौत को ना पसन्द करता हूं। आप ने फ़रमाया : तेरा माल वग़ैरा है ? अ़र्ज़ की : जी हां। आप ने फ़रमाया : माल को पहले भेज दो कि आदमी अपने माल के साथ होगा।[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो। (پ۲،البقرة:۲۱۶)

2.....इन अश्आ़र का तर्जमा यूं होना चाहिये :

﴾1﴿......जब मैं ख़ूब अच्छी त़रह़ जानता हूं कि मेरी ज़िन्दगी एक साअ़त से ज़ियादा नहीं।

﴾2﴿.....तो मैं इसे एह़तियात़ से क्यूं ख़र्च नहीं करता इसे त़ाअ़त व इ़बादत में क्यूं बसर नहीं करता।

हो सकता है मुतर्जिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास मुकाशफ़तुल क़ुलूब का जो नुस्ख़ा हो उस में येह अश्आ़र ह़ाज़िर के सीग़े के साथ हों। واللّٰہ تعالٰی اعلم **इ़ल्मिय्या**

3.....الزهد لابن مبارك، باب فی طلب الحلال،ص۲۲٤، الحديث ٦٣٤

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का इरशाद है कि तीन चीज़ों में भलाई है : बोलने, देखने और चुप रहने में।

जिस का बोलना ज़िक्रे खुदा नहीं वोह बोलना "लग्व" है,

जिस का देखना इब्रत की निगाह से नहीं वोह देखना "सह्वो निस्यान" है और

जिस की ख़ामोशी अपने अन्जाम पर ग़ौर करने के लिये नहीं उस की ख़ामोशी "बेकार" है क्यूंकि "तफ़क्कुर" ही से दुन्यावी मैलान ख़त्म होता है, पसन्दीदा चीज़ों की तमन्ना मुरझा जाती है और इन्सान ग़ौरो फ़िक्र का आदी हो जाता है।

इन्सान को हराम चीज़ों की तरफ़ निगाह नहीं डालनी चाहिये क्यूंकि नज़र एक ऐसा तीर है जो ख़ता नहीं होता और येह एक ज़बरदस्त कुव्वत है।

फ़रमाने नबवी है : नज़र शैतान के तीरों में से एक तीर है, जिस ने ख़ौफ़े खुदा की वज्ह से इसे हराम से बचा लिया, अल्लाह तआला उसे ऐसा ईमान अता करेगा जिस की लज़्ज़त वोह अपने दिल की गहराइयों में महसूस करेगा।[1]

हुकमा का क़ौल है : जिस ने अपनी निगाह को आवारा छोड़ दिया उस ने बे इन्तिहा शर्मिन्दगी उठाई, येह आज़ाद निगाही इन्सान को बे नक़ाब कर देती है, उसे ज़लीलो ख़्वार करती है और जहन्नम में तवील मुद्दत तक रहने को उस पर वाजिब कर देती है, अपनी नज़र की हिफ़ाज़त कर ! अगर तू ने इसे आवारा छोड़ दिया तो बुराइयों में घिर जाएगा और अगर तू ने इस पर क़ाबू पा लिया तो तमाम आ'ज़ाए बदन तेरे मुतीअ हो जाएंगे।

अफ़्लातून से पूछा गया कि दिल के लिये ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ कान है या आंख ? उस ने कहा : येह दोनों दिल के लिये परन्दे के दो परों की तरह हैं, वोह इन्हीं की कुव्वत से उड़ता है, जब इन में कोई पर टूट जाता है तो वोह उड़ने में बहुत दुश्वारी महसूस करता है।

हज़रते मुहम्मद बिन ज़्व का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने हर ज़ी अक़्ल के लिये येह सज़ा रख दी है कि वोह हर उस चीज़ के देखने पर मजबूर होता है जिस से वोह नफ़रत करता है।

एक ज़ाहिद ने किसी शख़्स को देखा, वोह एक लड़के से हंसी मज़ाक़ कर रहा था, ज़ाहिद ने उस से कहा : ऐ अक़्ल के अन्धे ! तुझे किरामन कातिबीन और मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों से भी शर्म

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب الزهد فى الدنيا... الخ، ٥/٤٤٦، الحديث ٧٩٤٥

नहीं आती जो तेरे आ'माल लिख कर इन्हें महफ़ूज़ करते जा रहे हैं और तेरी इन बुराइयों के गवाह बन रहे हैं और तेरी ऐसी पोशीदा बुराइयों से वाक़िफ़िय्यत हासिल कर रहे हैं जिन को तू लोगों के सामने करने से घबराता है।

काज़ियुल अरजानी कहते हैं :

★.....ऐ मेरी दो आंखो ! तुम ने ग़लत़ निगाही से काम ले कर मेरे दिल को बहुत बुरी जगह पर ला खड़ा किया है।

★....ऐ मेरी आंखो ! मेरे दिल को गुमराह करने से रुक जाओ, तुम दो हो कर एक को क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हो।

हज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ का फ़रमान है कि आंखें शैत़ान का जाल हैं आंख सरीउ़ल असर उ़ज़्व है और बहुत ही जल्द शिकस्त खा जाता है, जिस किसी ने अपने आ'ज़ाए बदन को **अल्लाह** तआ़ला की इबादत में इस्ति'माल किया, उस की उम्मीद बर आई, और जिस ने अपने आ'ज़ाए बदन को ख़्वाहिशात के पीछे लगा दिया, उस के आ'माल बात़िल हो गए।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की नसाएह़

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने कहा है : ईमान की ह़क़ीक़त रसूलों की लाई हुई किताबों की तस्दीक़ को कहा जाता है जो कुरआन की तस्दीक़ करता है इस के अह़कामात पर अ़मल करता है उसे जहन्नम से नजात मिल गई।

जो ह़राम कर्दा चीज़ों से किनारा कश हुवा वोह तौबा पर माइल हुवा, जिस ने रिज़्के़ ह़लाल खाया वोह मुत्तक़ी बन गया, जिस ने फ़राइज़ को अन्जाम दिया उस का इस्लाम मुकम्मल हो गया, जिस ने ज़बान को रास्त गो बनाया वोह हलाकत से बच गया, जिस ने जु़ल्म को ना पसन्द किया वोह क़िसास से बच गया, जिस ने सुनन को अदा किया, उस के आ'माल पाकीज़ा हो गए और जिस ने ख़ुलूस से **अल्लाह** की इबादत की उस के आ'माल मक़्बूल हो गए।

हज़रते अबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है : इन्हों ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم से अ़र्ज़ किया : मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ! आप ने फ़रमाया : "पाकीज़ा हुनर इख़्तियार कर, नेक अ़मल कर, **अल्लाह** से हर दिन का रिज़्क़ त़लब करता रह और अपने आप को मुर्दों में शुमार कर।[1]

---

1 ......ادب الدنیا والدین، ۱/۱۴۸ ملخصًا

और हर इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वोह अपने नेक आ'माल पर न इतराए क्यूंकि येह आ'माल के लिये एक अ़ज़ीम हलाकत है, ऐसा आदमी अ़मल कर के अल्लाह तआ़ला पर एह़सान धरता है ह़ालांकि उसे येह इल्म नहीं होता कि उस का अ़मल मक़्बूल हुवा या नहीं, ऐसे गुनाह जिन के बा'द नदामत और पशेमानी हो उस इ़बादत से अच्छे हैं जिस में तकब्बुर और रिया शामिल हो।

फ़रमाने इलाही है :

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ یَكُوْنُوْا یَحْتَسِبُوْنَ (1)

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत का मत़लब येह है कि वोह नेक अ़मल कर के इतराया करते थे, आख़िरत में उन की वोह नेकियां बुराइयों की शक्ल में ज़ाहिर होंगी। एक बुज़ुर्ग जब येह आयत पढ़ते तो फ़रमाया करते कि दिखावे की इ़बादत करने वालों के लिये हलाकत है और फ़रमाने इलाही : "अल्लाह की इ़बादत में किसी को शरीक न कर"(2) से भी बा'ज़ उ़लमा ने रिया की शिर्कत मुराद ली है।

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सब से आख़िर में कुरआने मजीद की येह आयत नाज़िल हुई :

وَاتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ (3)

और डरो उस दिन से जिस में तुम अल्लाह की त़रफ़ लौटाए जाओगे फिर हर नफ़्स को अपने आ'माल का पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा।

मुह़म्मद बिन बशीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

مضى امسک الادنی شهيدا معدلا — ويومک هذا بالفعال شهيد

فان تک بالامس اقترفت اساءة — فثن باحسان وانت حميد

ولا ترج فعل الخير منک الى غد — لعل غدا يأتى وانت فقيد

---

(1).....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी। (پ۲۴،الزمر:۴۷)

(2).....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे। (پ۱۶،الکهف:۱۱۰)

(3).....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा। (پ۳،البقرة:۲۸۱)

﴾1﴿......तेरा कसीर वक़्त गुज़र चुका, इस बक़िय्या थोड़े को काम में ला इस त़रह़ कि तू आ़दिल गवाह हो और तेरे येह अफ़्आ़ल तेरी नेक ख़स्लतों की शहादत देंगे ।

﴾2﴿......अगर तू ने गुज़श्ता दिनों में बुराइयां इकठ्ठी कर ली हैं तो अब नेकियां कर, तू नेक बख़्त हो जाएगा ।

﴾3﴿......अच्छी बात को कल पर न डाल, शायद कल आए और तू न हो ।

تعجل الذنب بما تشتهی　　　وتامل التوبة فی قابل

والموت یاتی بعد ذا غفلة　　　ما ذلک فعل الحازم العاقل

﴾1﴿......बुरी ख़्वाहिशात को जल्द पूरा करता है और तौबा को कल पर डाल देता है ।

﴾2﴿......इसी ग़फ़्लत में मौत आ जाएगी, येह अ़क़्लमन्दों का काम नहीं है ।

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को नसाएह़

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : तीन चीज़ें मोमिन की परहेज़गारी पर दलालत करती हैं : "न पाने की सूरत में बेहतरीन तवक्कुल" "पा लेने की सूरत में बेहतरीन रिज़ा" और "ख़त्म हो जाने की सूरत में बेहतरीन सब्र ।"

एक ह़कीम का क़ौल है कि जिस ने मसाइब पर सब्र किया उस ने मक़्सूद को पा लिया । शाइ़र कहता है :

علیک بالصبر ان نابتک نائبة　　　من الزمان ولا ترکن الی الجزع

وان تعرضت الدنیا بزینتها　　　فالصبر عنها دلیل الخیر والورع

فجاهد النفس قسرا فیهما ابدا　　　تلق الذی ترتجیه غیر ممتنع

﴾1﴿......अगर तुझ पर ज़माना कोई मुसीबत नाज़िल करे तो सब्र कर, आहो फ़ुग़ां न कर ।

﴾2﴿......अगर दुन्या अपने तमाम तर ह़ुस्न के बा वुजूद तुझ से मुंह फेर ले तो सब्र कर क्यूंकि तक़्वा और नेकी की निशानी है ।

﴾3﴿......अपने नफ़्स को सब्र और तक़्वा पर मजबूर कर फिर तू हर उस फ़ज़ीलत को पा लेगा जिस की तू तमन्ना रखता है ।

दूसरा शाइ़र कहता है :

الصبر مفتاح مايرجى ولم يزل دائما يعين
فاصبر وان طالت الليالى فربما ساعد الحزون
وربما نيل باصطبار ماقيل هيهات لايكون

﴾1﴿......सब्र हुसूले मक़्सूद की किलीद है और एक दाइमी मददगार है।

﴾2﴿......अगर दुख की रात त़वील हो जाए तो सब्र कर क्यूंकि अकसर देखा गया है दुख का अन्जाम मसर्रत होता है।

﴾3﴿......और बसा अवक़ात सब्र करने वाले को सब्र करने के बा'द पछताना नहीं पड़ता ?

एक और शाइ़र कहता है :

الصبر اوثق عروة الايمان ومجنة من نزغه الشيطان
الصبر فيه عواقب محمودة والطيش فيه عواقب الخسران
فاذالقيت من الزمان ملمة وكذاك فينا عادة الازمان
فتدرع الصبر الجميل تيقنا ان التصبر رائد الرضوان

﴾1﴿....सब्र ईमान की मज़्बूत़ रस्सी और शैत़ानी वसाविस के लिये ढाल है।

﴾2﴿....सब्र का अन्जाम बेहतरीन और गुस्से का अन्जाम बद तरीन होता है।

﴾3﴿....अगर तुझे ज़माना कोई दुख दे तो समझ ले कि शुरूअ़ ही से ऐसा होता है।

﴾4﴿....इस यक़ीने मुह़कम के साथ सब्र की ज़िरह पहन ले कि सब्र खुशनूदिये खुदा का बाइ़स है।

और सब्र की कई अक़्साम हैं, पाबन्दी से फ़राइज़े खुदावन्दी का अदा करना और इन के बेहतरीन अवक़ात का ख़याल रखना, इ़बादत पर सब्र, दोस्तों और हमसायों की ज़ियादतियों पर सब्र, मरज़ पर सब्र, फ़क़्र पर सब्र, गुनाहों, नाजाइज़ ख़्वाहिशात, शैत़ानी वसाविस और आ'ज़ाए जिस्मानी को ग़ैर ज़रूरी कामों में इस्ति'माल करने से सब्र वग़ैरा।

बाब 28

ज़िक्रे मर्ग

फ़रमाने नबी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : كَثِّرُوْا مِنْ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ[1] लज़्ज़तों को मिटाने वाली (या'नी मौत) को बहुत याद करो। इस फ़रमान में येह इशारा है कि इन्सान मौत को याद कर के दुन्यावी लज़्ज़तों से किनारकश हो जाए ताकि उसे बारगाहे रबूबिय्यत में मक़्बूलिय्यत हासिल हो।

मौत को याद करने वाला शहीदों के साथ उठाया जाएगा

फ़रमाने नबवी है : अगर तुम्हारी तरह जानवर मौत को जान लेते तो इन में कोई मोटा जानवर खाने को न मिलता।[2]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : या रसूलल्लाह ! किसी का हश्र शहीदों के साथ भी होगा ? आप ने फ़रमाया : हां ! जो शख़्स दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करता है वोह शहीद के साथ उठाया जाएगा।[3]

इस फ़ज़ीलत का सबब येह है कि मौत की याद दुन्या से दिल उचाट कर देती है और आख़िरत की तय्यारी पर उक्साती है लेकिन मौत को भूल जाना इन्सान को दुन्यावी ख़्वाहिशात में मुन्हमिक कर देता है।

फ़रमाने नबवी है कि "मौत मोमिन के लिये एक तोहफ़ा है"[4] इस लिये कि मोमिन दुन्या में क़ैदख़ाने जैसी ज़िन्दगी बसर करता है, उसे अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की और शैतान की मुदाफ़अ़त करना पड़ती है और येह चीज़ किसी मोमिन के लिये अ़ज़ाब से कम नहीं मगर मौत उसे इन मसाइब से नजात दिलाती है लिहाज़ा येह उस के लिये तोहफ़ा है।

फ़रमाने नबवी है कि मौत मुसलमान के लिये कफ़्फ़ारा है।[5] मुसलमान से मुराद वोह मोमिने कामिल है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। उस में मोमिनों के

1 ......ترمذی، کتاب الزھد ، باب ماجاء فی ذکر الموت، ٤/١٣٨، الحدیث ٢٣١٤
2 ......شعب الایمان، الحادی و السبعون من...الخ، باب فی الزھدوقصرالامل ، ٧/٣٥٣، الحدیث ١٠٥٥٧
3 ......بریقة محمودیة فی شرح طریقة محمدیة ، ٢/١١٦و المغنی عن حمل الأسفار، ٢/١٢٠٠و قوت القلوب، ٢/٤٣
4 ......شعب الایمان، السبعون من شعب الایمان، فصل فی ذکر ما فی الاوجاع...الخ، ٧/١٧١،الحدیث ٩٨٨٤
5 ......المرجع السابق، الحدیث ٩٨٨٦

अख़्लाक़े ह़सना पाए जाएं और वोह हर कबीरा गुनाह से बचता हो, ऐसे शख़्स की मौत उस के सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है और फ़राइज़ की अदाएगी उसे गुनाहों से मुनज़्ज़ा व पाक कर देती है।

ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ऐसी मजलिस से गुज़रे जिस में लोग ज़ोर ज़ोर से हंस रहे थे। आप ने फ़रमाया : अपनी मजलिस में लज़्ज़तों को फ़ना कर देने वाली चीज़ का ज़िक्र करो ! पूछा गया : हुज़ूर वोह क्या है ? आप ने इरशाद फ़रमाया : "वोह मौत है।"(1)

ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मौत को कसरत से याद करो, इस से गुनाह ख़त्म हो जाते हैं और दुन्या से बे रग़बती बढ़ती है।"(2)

फ़रमाने नबवी है कि मौत जुदाई डालने के लिये काफ़ी है।(3)

आप ने मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि मौत सब से बड़ा नासेह़ है।(4)

एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आप ने ऐसी जमाअ़त को देखा जो हंस हंस कर बातें कर रहे थे। आप ने फ़रमाया : मौत को याद करो ! रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, जो मैं जानता हूं अगर वोह तुम्हें मा'लूम हो जाए तो कम हंसो और ज़ियादा रोओ।(5)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़फ़िल में एक मरतबा एक शख़्स की बहुत ता'रीफ़ की गई। आप ने फ़रमाया : क्या वोह मौत को याद करता है ? अ़र्ज़ किया गया कि हम ने कहीं नहीं सुना। तब आप ने फ़रमाया कि फिर वोह ऐसा नहीं है जैसा तुम ख़याल करते हो।(6)

---

1 ......كتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا، ٥/٤٢٣، الحديث ٩٥ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقى، ١/١٦٧، الحديث ٦٧٤

2 ...... كنزالعمال، كتاب الموت، الباب الاول فى ذكر الموت وفضائله، ٨/٢٣١، الجزء الخامس عشر، الحديث ٤٢٠٩١

3 ......المرجع السابق، ص ٢٣٣، الحديث ٤٢١٠٨ ملخصاً

4 ......شعب الايمان، الحادى والسبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ ٧/٣٥٣، الحديث ١٠٥٥٦

5 ......كتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا، ٥/٤٢٣، الحديث ٩٦ و المطالب العالية للعسقلانى، ٧/٥٧٤، الحديث ٣١٤٥ و إتحاف الخيرة المهرة للبوصيرى، ١٠/٧١، الحديث ٩٦١٦

6 ......الزهد لابن المبارك، باب ذكر الموت، ص ٩٠، الحديث ٢٦٥

बुज़ुर्गाने दीन के इरशादात

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہما से मरवी है कि मैं दसवां शख़्स था जो (एक दिन) हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم की मजलिस में हाज़िर था, एक अन्सारी जवान ने पूछा : या रसूलल्लाह ! सब से ज़ियादा बा इज़्ज़त और होशयार कौन है ? आप ने फ़रमाया : जो मौत को बहुत याद करता है और इस के लिये ज़बरदस्त तय्यारी करता है वोह होशयार है और ऐसे ही लोग दुन्या और आख़िरत में बा इज़्ज़त होते हैं।[1]

हज़रते हसन رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का क़ौल है कि मौत ने दुन्या को ज़लील कर दिया है इस में किसी अक़्लमन्द के लिये मसर्रत ही नहीं है। हज़रते रबीअ़ बिन ख़ैसम का क़ौल है कि मोमिन के लिये मौत का इन्तिज़ार सब इन्तिज़ारों से बेहतर है। मज़ीद फ़रमाया कि एक दाना ने अपने दोस्त को लिखा : "ऐ भाई ! उस जगह जाने से पहले जहां आरज़ू के बा वुजूद भी मौत नहीं आएगी (उस जगह) मौत से डर और नेक अ़मल कर।"

इमाम इब्ने सीरीन की महफ़िल में जब मौत का तज़्किरा किया जाता तो उन का हर उ़ज़्व सुन हो जाता था। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ का दस्तूर था हर रात उ़लमा को जम्अ़ करते, मौत, क़ियामत और आख़िरत का ज़िक्र करते हुवे इतना रोते कि मा'लूम होता जैसे जनाज़ा सामने रखा है।

हज़रते इब्राहीम अल तैमी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का क़ौल है कि मुझे मौत और **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िरी की याद ने दुन्या की लज़्ज़तों से ना आश्ना कर दिया है। हज़रते का'ब رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि जिस ने मौत को पहचान लिया उस से तमाम दुन्या के दुख-दर्द ख़त्म हो गए।

हज़रते मुतर्रिफ़ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का क़ौल है कि मैं ने ख़्वाब में देखा : कोई शख़्स बसरा की मस्जिद के वस्त में खड़ा कह रहा था कि मौत की याद ने ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के जिगर टुकड़े टुकड़े कर दिये, रब की क़सम ! तुम इन्हें हर वक़्त बे चैन पाओगे।

हज़रते अशअ़स رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है, हम जब भी हज़रते हसन رضی اللہ تعالیٰ عنہ की ख़िदमत में हाज़िर होते, वहां जहन्नम, क़ियामत और मौत का ज़िक्र सुनते।

1 ......المعجم الاوسط، ٥/٣١، الحديث ٦٤٨٨

हज़रते उम्मुल मोमिनीन सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक औरत ने हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अपनी संगदिली की शिकायत की तो उन्हों ने कहा : मौत को याद किया करो, तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा, उस ने ऐसा ही किया और उस का दिल नर्म हो गया, वोह हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप का शुक्रिय्या अदा किया।

मौत के ज़िक्र पर ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की हालत

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام जब मौत का ज़िक्र सुनते तो उन के जिस्म से ख़ून के क़त्रे गिरने लगते। हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام जब मौत और क़ियामत का ज़िक्र करते तो उन की सांस उखड़ जाती और बदन पर लर्ज़ा त़ारी हो जाता, जब रह़मत का ज़िक्र करते तो उन की ह़ालत संभल जाती। हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है : मैं ने जिस अ़क़्लमन्द को देखा उस को मौत से लर्ज़ां और ग़मगीन पाया।

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक आ़लिम से कहा : मुझे नसीह़त करो, उन्हों ने कहा : "तुम ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद मौत से नहीं बच सकते, तुम्हारे आबाओ अजदाद में आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर आज तक हर किसी ने मौत का जाम पिया है, अब तुम्हारी बारी है। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह सुना तो बहुत देर तक रोते रहे।

हज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने घर के एक गोशे में क़ब्र खोद रखी थी और दिन में कई मरतबा इस में जा कर सोते और हमेशा मौत का ज़िक्र करते हुवे कहते : अगर मैं एक लम्ह़ा भी मौत की याद से ग़ाफ़िल हो जाऊं तो सारा काम बिगड़ जाए।

हज़रते मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : इस मौत ने दुन्यादारों से उन की दुन्या छीन ली है पस **अल्लाह** तआ़ला से ऐसी ने'मतों का सुवाल करो जो दाइमी हैं।

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़म्बसा से कहा : "मौत को अकसर याद किया करो ! अगर तुम फ़राख़ दस्त हो तो येह तुम को तंगदस्त कर देगी और अगर तुम तंगदस्त हो तो येह तुम को हमेशा की फ़राख़ दस्ती अ़त़ा कर देगी।"

हज़रते अबू सुलैमान अद्दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : मैं ने उम्मे हारून से पूछा कि तुझे मौत से मह़ब्बत है ? वोह बोली : नहीं ! मैं ने पूछा : क्यूं ? तो उस ने कहा : मैं जिस शख़्स की

ना फ़रमानी करती हूं उस से मुलाक़ात की तमन्ना कभी नहीं करती, मौत के लिये मैं ने कोई काम नहीं किया लिहाज़ा इसे कैसे महबूब समझूं ?

हज़रते अबू मूसा तमीमी कहते हैं कि मश्हूर शाइर फ़रज़्-दक़ की बीवी का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के जनाज़े में बसरा की मुक़्तदिर हस्तियां शरीक हुईं जिन में हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه भी मौजूद थे, आप ने फ़रमाया : ऐ अबू फ़रास ! तू ने इस दिन के लिये क्या तय्यारी की है ? उस ने कहा : साठ साल से मुतवातिर अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत का इक़रार कर रहा हूं, जब उसे दफ़्न कर दिया गया तो फ़रज़्-दक़ ने उस की क़ब्र पर खड़े हो कर कहा :

اخاف وراء القبر ان لم تعافنی ... اسد من القبر التهابا و اضيقا

اذا جاءنی يوم القيامة قائد ... عنيف وسواق يسوق الفرزدقا

لقد خاب من اولاد ادم من مشی ... الی النار مغلول القلادة ارزقا

﴾1﴿......ऐ अल्लाह ! अगर तू मुझे मुआ़फ़ कर दे, मैं क़ब्र के फ़शार और शो'लों से ख़ाइफ़ हूं।

﴾2﴿....जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक संगदिल हैबतनाक फ़िरिश्ता फ़रज़्-दक़ को हंकाएगा।

﴾3﴿....बिला शुबा नस्ले आदम का वोही शख़्स रुस्वा हुवा जिसे तौक़ पहना कर जहन्नम में भेजा गया।

क़ुबूर के ह़सरत आगीं क़त्बात

अहले क़ुबूर के लिये बा'ज़ शो'रा ने कुछ इब्रत आगीं अश्आ़र कहे हैं :

قف بالقبور وقل علی ساحاتها ... من منكم المغمور فی ظلماتها

ومن المكرم منكم فی قعرها ... قد ذاق برد الامن من روعاتها

اما السكون لذی العيون فواحد ... لا يستبين الفضل فی درجاتها

لو جاوبوک لاخبروک بالسن ... تصف الحقائق بعد من حالاتها

اما المطيع فنازل فی روضة ... يفضی الی ما شاء من دوحاتها

والمجرم الطاغی بها متلقب ... فی حضرة ياوی الی حياتها

وعقارب تسعی اليه فروحه ... فی شدة التعذيب من لدغاتها

﴿1﴾......क़ब्रों के सेहनों (क़ब्रिस्तान) में खड़ा हो कर इन से पूछ तुम में से कौन तारीकी में डूबा हुवा है।

﴿2﴾......और कौन इस की गहराई में बा इ़ज़्ज़त तौ़र पर अम्नो सुकून में है।

﴿3﴾......आंख वालों के लिये एक ही सुकून है और मरातिब का तफ़ावुत दिखाई नहीं देता।

﴿4﴾......अगर वोह तुझे जवाब दें तो अपनी ज़बाने ह़ाल से ह़ालात की ह़क़ीक़त यूं बयान करेंगे।

﴿5﴾......जो मुत़ीअ़ और फ़रमां बरदार था वोह जन्नत के बाग़ों में जहां चाहता है सैर करता है।

﴿6﴾......और बद बख़्त मुजरिम सांपों के मसकन वाले एक गढ़े में तड़प रहा है।

﴿7﴾......उस की त़रफ़ बिच्छू दौड़ दौड़ कर बढ़ रहे हैं और उस की रूह़ इन की वज्ह से सख़्त अ़ज़ाब में है।

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं क़ब्रिस्तान से येह शे'र पढ़ता हुवा गुज़रा :

اتيت القبور فناديتها　　فاين المعظم والمحتقر

واين المدل بسلطانه　　واين المزكى اذا مافتخر

﴿1﴾......मैं ने क़ब्रिस्तान में आ कर पुकारा कि इ़ज़्ज़त दार और फ़क़ीर कहां है ?

﴿2﴾......अपनी पाक दामनी पर फ़ख़्र करने वाला और बादशाहे वक़्त कहां है ?

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे सुवालात का क़ब्रों से येह जवाब आया :

تفانوا جميعا فما مخبر　　وماتوا جميعا ومات الخبر

تروح وتغدو بنات الثرى　　فتمحوا محاسن تلك الصور

فياسائلي عن اناس مضوا　　اما لك فيما ترى معتبر

﴿1﴾......सब फ़ना हो गए, कोई ख़बर देने वाला नहीं रहा, सब के सब मर गए इन के निशान भी मिट गए।

﴿2﴾......सुब्ह़ होती है और शाम होती और इन की ह़सीन सूरतें मिट्टी बिगाड़ती चली जाती है।

﴿3﴾......ऐ गुज़रे हुवों के मुतअ़ल्लिक़ पूछने वाले ! क्या तू ने इन क़ब्रों से इ़ब्रत ह़ासिल की है ?

एक और क़ब्र पर लिखा हुवा था :

تناجيک احداث وهن صموت　　وسکانها تحت التراب خفوت

ايا جامع الدنيا لغير بلاغه　　لمن تجمع الدنيا وانت تموت

﴾1﴿......वोह क़ब्रें जिन के रहने वाले मनों मिट्टी के नीचे ख़ामोश पड़े हैं, ज़बाने ह़ाल से तुझे येह कह रहे हैं।

﴾2﴿......ऐ लोगों के लिये दुन्या जम्अ़ करने वाले ! तुझे तो मर जाना है फिर येह दुन्या तू किस के लिये जम्अ़ करता है ?

इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि मैं क़ब्रिस्तान से गुज़रा, एक क़ब्र पर लिखा था :

يمر اقاربی جنبات قبری　　کان اقاربی لم يعرفونی

ذووالميراث يقتسمون مالی　　وما يالون ان جحدوا ديونی

وقد اخذوا سهامهم وعاشوا　　فيا لله اسرع مانسونی

﴾1﴿......मेरे रिश्तेदार मेरी क़ब्र के पहलू से अन्जान बन कर गुज़र जाते हैं।[1]

﴾2﴿......उन्हों ने मेरा माल तो तक़्सीम कर लिया मगर मेरा क़र्ज़ न उतारा।

﴾3﴿......अपने अपने हिस्से ले कर वोह ख़ुश हैं, हाए अफ़्सोस ! वोह मुझे कितनी जल्दी भूल गए हैं !

एक और क़ब्र पर येह लिखा था :

ان الحبيب من الاحباب مختلس　　لايمنع الموت بواب ولا حرس

فکيف تفرح بالدنيا ولذتها　　يامن يعد عليه اللفظ والنفس

اصبحت ياغافلا فی النقص منغمسا　　وانت دهرک فی اللذات منغمس

لايرحم الموذاجهل لغرته　　ولاالذی کان منه العلم يقتبس

کم اخرس الموت فی قبر وقفت به　　عن الجواب لسانا ما به خرس

قد کان قصرک معمورا له شرف　　فقبرک اليوم فی الاجداث مندرس

﴾1﴿......मौत ने दोस्त को दोस्तों की महफ़िल से उचक लिया और कोई दरबान, चौकीदार उसे न बचा सका।

﴾2﴿......वोह दुन्यावी आसाइशों से कैसे ख़ुश हो सकता है जिस की हर बात और हर सांस को गिना जाए।

﴾3﴿......ऐ ग़ाफ़िल ! तू नुक़्सान में सरगर्म है और तेरी ज़िन्दगी ख़्वाहिशात में डूबी हुई है।

1.....दबा के क़ब्र में सब चल दिये दुआ़ न सलाम　　ज़रा सी देर में क्या हो गया ज़माने को !

﴾4﴿......मौत किसी जाहिल पर जहालत के बाइस और किसी आ़लिम पर इ़ल्म के सबब रह़्म नहीं करती।

﴾5﴿......मौत ने कितने बोलने वालों को क़ब्रों में गूंगा बना दिया वोह जवाब ही नहीं दे सकते।

﴾6﴿......कल तेरा मह़ल इ़ज़्ज़त से मा'मूर था और आज तेरी क़ब्र का निशान भी मिट गया है।

एक और क़ब्र पर लिखा था :

﴾1﴿......जब मेरे दोस्तों की क़ब्रें ऊंट की कोहानों की त़रह़ बुलन्द और बराबर हो गईं तो मुझे मा'लूम हुवा।

﴾2﴿......अगर्चे मैं रोया और मेरे आंसू बहने लगे मगर उन की आंखें इसी त़रह़ ठहरी रहीं (उन्हों ने आंसू नहीं बहाए)।

एक त़बीब की क़ब्र पर लिखा हुवा था :

قد قلت لما قال لی قائل — قد صار لقمان الی رمسه
فاین من یوصف من طبه — وحذقه فی الماء مع جسه
هیهات لایدفع عن غیره — من کان لایدفع عن نفسه

﴾1﴿......जब किसी ने मुझ से पूछा तो मैं ने कहा कि लुक़्मान जैसा त़बीब व दानिशमन्द भी अपनी क़ब्र में जा सोया।

﴾2﴿......कहां है वोह जिस की तिब्ब में शख़्सिय्यत मुसल्लम थी और उस जैसा कोई माहिर न था।

﴾3﴿......जो अपने आप से मौत को न टाल सका वोह दूसरों से मौत को कैसे टालता।

एक और क़ब्र पर लिखा हुवा था :

یاایها الناس کان لی امل — قصر بی عن بلوغه الاجل
فلیتق اللّٰہ ربه رجل — امکنه فی حیاته العمل
ما انا وحدی نقلت حیث تری — کل الی مثله سینتقل

﴾1﴿......ऐ लोगो ! मेरी बहुत सी तमन्नाएं थीं मगर मौत ने उन्हें पूरा करने की मोहलत न दी।

﴾2﴿......**अल्लाह** से डर और अपनी ज़िन्दगी में नेक अ़मल कर।

﴾3﴿......मैं अकेला यहां नहीं आया बल्कि हर किसी को यहां आना है।

बाब 29

आस्मानों का ज़िक्र और दूसरे मुबाहिस

रिवायत है कि अल्लाह तआला ने सब से पहले जोहर को पैदा किया, जब उस पर हैबत की निगाह डाली तो वोह पिघल गया और ख़ौफ़े ख़ुदा से कांपने लगा जिस से वोह पानी बन गया, फिर अल्लाह तआला ने उस पर निगाहे रह़मत डाली तो आधा पानी जम गया जिस से अ़र्श बनाया गया, अ़र्श कांपने लगा तो उस पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ लिख दिया जिस से वोह साकिन हो गया मगर पानी को इसी त़रह़ छोड़ दिया गया जो क़ियामत तक मौजज़न रहेगा।

फ़रमाने इलाही है :

وَّ كَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ [1] *अल्लाह का अ़र्श पानी पर था।*

तख़्लीक़े काइनात

फिर जब पानी में तलात़ुम ख़ेज़ मौजें पैदा हुईं जिन से तह ब तह धुवें के बादल उठे और झाग पैदा हुई और इस से ज़मीनो आस्मान बनाए गए जो एक दूसरे से जुड़े हुवे थे फिर इन दोनों के दरमियान अल्लाह तआला ने हवा को पैदा किया जिस के दबाव से ज़मीनो आस्मान के त़बक़े एक दूसरे से अ़लाह़िदा हो गए[2] चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَ هِیَ دُخَانٌ [3]

अहले ह़िक्मत कहते हैं : अल्लाह तआला ने आस्मानों को धुवें से इस लिये पैदा फ़रमाया कि धुवां बाहम पैवस्त होता है और बुलन्दियों पर जा कर ठहरता है, बुख़ारात से इस लिये पैदा नहीं फ़रमाया कि वोह वापस लौट जाते हैं, येह अल्लाह तआला के इ़ल्मो ह़िक्मत

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस का अ़र्श पानी पर था। (پ۱۲، هود:۷)

2 ......تفسیر روح البیان، الانبیاء تحت الآیۃ:۳۰، ۵/۴۷۱

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर आस्मान की त़रफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धुवां था। (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۱۱)

का अदना करिश्मा है, फिर इरशादे नबवी के मुताबिक़ **अल्लाह** तआला ने पानी की तरफ़ नज़रे रहमत की तो वोह जम गया।[1]

आस्मानों के नाम और इन के रंग

ज़मीन और आस्माने दुन्या का और हर आस्माने दुन्या से दूसरे आस्मान का बो'द और मसाफ़त पांच सो साल के सफ़र की दूरी के बराबर है और इसी तरह हर आस्मान का अपना अपना हज्म है, कहते हैं कि पहला आस्मान दूध से भी ज़ियादा सफ़ेद है मगर कोहे क़ाफ़ की सब्ज़ी की वज्ह से येह हरा नज़र आता है, इस आस्मान का नाम **रक़ीआ़** है।

۞......दूसरे आस्मान का नाम **फ़ीदूम** या **माऊ़न** है और वोह ऐसे लोहे का है जिस से रोशनी की शुआ़एं फूटी पड़ती हैं।

۞......तीसरे आस्मान का नाम **मल्कूत** या **हारयून** है और वोह तांबे का है।

۞......चौथे आस्मान का नाम ज़ाहिरा है और वोह आंखों में ख़ीरगी पैदा करने वाली सफ़ेद चांदी से बना है।

۞......पांचवें आस्मान का नाम **मज़ीना** या **मसहिरा** है और वोह सुर्ख़ सोने का है।

۞......छटे आस्मान का नाम **ख़ालिसा** है और वोह चमकदार मोतियों से बनाया गया है।

۞......सातवें आस्मान का नाम **लाबिया** या **दामिआ़** है, वोह सुर्ख़ याक़ूत का है और उसी में बैतुल मा'मूर है।

बैतुल मा'मूर के चार सुतून हैं : एक सुर्ख़ याक़ूत का, दूसरा सब्ज़ ज़बरजद का, तीसरा सफ़ेद चांदी का और चौथा सुर्ख़ सोने का है। बैतुल मा'मूर की इमारत सुर्ख़ अ़क़ीक़ की है हर रोज़ वहां सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दाख़िल होते हैं और एक मरतबा दाख़िल हो जाते हैं फिर क़ियामत तक उन्हें दोबारा दाख़िले का मौक़अ़ नहीं मिलेगा।

क़ौले मो'तबर येह है कि ज़मीन आस्मान से अफ़्ज़ल है क्यूंकि येह अम्बिया का मौलद व मदफ़न है और ज़मीन के सब तबक़ात में बेहतर ऊपर वाला तबक़ है जिस पर ख़ल्क़े ख़ुदा आबाद और नफ़्अ़ अन्दोज़ होती है।

---

[1]......تفسیر روح البیان، الانبیاء تحت الآیة:٣٠، ٥/٤٧١

सात सितारे और हर सितारे का आस्मान

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि आस्मानों में सब से ज़ियादा अफ़्ज़ल कुरसी है जिस की छत अ़र्शे इलाही से मिली हुई है, सात सितारों के इलावा तमाम फ़ाइदा बख़्श सितारे इसी आस्मान में हैं, सात सितारों की तफ़्सील येह है :

۞...... "**ज़ुहल**" जो शम्बा के दिन का सितारा है, सातवें आस्मान में है।

۞......"**मुश्तरी**" जो पंजशम्बा का सितारा है, छटे आस्मान में है।

۞......सेह शम्बा का सय्यारा "**मरीख़**" पांचवें आस्मान में है।

۞......यक शम्बा का सय्यारा "**शम्स**" चौथे आस्मान में है।

۞......जुमुआ का सय्यारा "**ज़ुहरा**" तीसरे आस्मान में है।

۞......चहार शम्बा का सय्यारा "**अ़तारद**" दूसरे आस्मान में है।

۞......और दो शम्बा का सय्यारा "**क़मर**" पहले आस्मान में है।

नुक्ता......

अल्लाह तआला की कुदरते कामिला ने आस्मानो ज़मीन की सन्अ़त में बे इन्तिहा अ़जाइबात वहां दीअ़त किये हैं हालांकि सारे आस्मान धुवें से बनाए गए हैं मगर किसी में एक दूसरे की मुशाबहत नहीं पाई जाती, आस्मान से पानी बरसाया, उस से मुख़्तलिफ़ सब्ज़ियां और फल उगाए जिन के ज़ाइक़े और रंग जुदा जुदा हैं, हिक्मते इलाही के ब मूजिब वोह एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर लज़ीज़ हैं, आदम علیہ السلام की अवलाद में मुख़्तलिफ़ अक़्साम बनाएं, कोई सफ़ेद है कोई सियाह, कोई ख़ुश और कोई उदास, कोई मोमिन कोई काफ़िर, कोई आ़लिम और कोई जाहिल है हालांकि सब आदम علیہ السلام की नस्ल से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।

۞...۞...۞...۞...۞

बाब 30

अ़र्श, कुरसी, फ़िरिश्तगाने मुक़र्रब, रिज़्क़ व तवक्कुल

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ (1)

उस की कुरसी आस्मानों और ज़मीन को इह़ात़ा किये हुवे है।

कुरसी से मुराद इल्मे इलाही है या मुल्के ख़ुदावन्दी या फिर मश्हूर आस्मान का नाम है।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि कुरसी एक मोती है जिस की लम्बाई अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता, ह़दीस में है कि सातों आस्मान और ज़मीन कुरसी के सामने ऐसे हैं जैसे वसीअ़ सह़रा में एक ह़ल्क़ा पड़ा हो।[2]

मज़ीद फ़रमाया कि आस्मान कुरसी में हैं और कुरसी अ़र्शे इलाही के सामने है।[3]

ह़ज़रते इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सूरज कुरसी के नूर का सत्तरवां ह़िस्सा है और अ़र्शे इलाही ह़िजाबाते इलाही के नूर का सत्तरवां ह़िस्सा है।[4]

मरवी है कि अ़र्श और कुरसी के उठाने वाले फ़िरिश्तों के माबैन सत्तर हज़ार नूर के और सत्तर हज़ार ज़ुल्मत के पर्दे ह़ाइल हैं, हर पर्दा पांच सो साल का सफ़र है, अगर येह पर्दे न होते तो ह़ामिलीने कुरसी ह़ामिलीने अ़र्श के नूर से जल जाते।[5]

अ़र्श एक नूरानी शै है जो कुरसी से ऊपर है और एक अ़लाह़िदा वुजूद रखता है मगर इस क़ौल से ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इख़्तिलाफ़ है।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस की कुरसी में समाए हुवे हैं आस्मान और ज़मीन। (پ۳،البقرۃ:۲۵۵)

2 ......نظم الدرر فی تناسب الآیات والسور لبرھان الدین، ۶/۵۱ و البدایۃ والنھایۃ لابن کثیر ۱/۳۹ و تفسیر روح البیان، البقرۃ تحت الآیۃ:۲۵۵، ۱/۴۰۴

3 ......الاسماء والصفات للبیھقی، باب ما جاء فی العرش والکرسی، ص۳۷۵ والبدایۃ والنھایۃ، ۱/۳۹

4 ......الدر المنثور، تحت الآیۃ:۲۰، ۸/۳۵۰ و الکتاب العظمۃ للاصبھانی، ذکر عرش الرب تبارک وتعالی و کرسیہ...الخ، ص۹۷، الحدیث ۲۵۲

5 ......تاریخ مدینہ دمشق، ۷۱/۳۴۲، ۳۴۴ و الکتاب العظمۃ للاصبھانی، ذکر حملۃ العرش...الخ، ص۱۷۲، الحدیث ۴۸۵

अ़र्शे इलाही की साख़्त

अ़र्शे इलाही की बनावट के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं बा'ज़ कहते हैं : सुर्ख़ याक़ूत का है या सब्ज़ मोती का है बा'ज़ की राए है कि सफ़ेद मोती से बनाया गया है, अल्लाह तआ़ला ही इस की ह़क़ीक़त को बेहतर जानता है।

फ़लकियात के माहिरीन इसे नवां आस्मान, फ़लके आ'ला, फ़लकुल अफ़लाक और फ़लके अत़लस कहते हैं। इस में कोई सितारा वग़ैरा नहीं है, क़दीम हैअत दानों के बक़ौल तमाम सितारे आठवें आस्मान में हैं जिस को वोह फ़लकुल बुरूज और अहले शरअ़ कुरसी कहते हैं।

अ़र्शे इलाही मख़्लूक़ात की छत है, कोई चीज़ उस के दाइरे से बाहर नहीं निकल सकती, वोह बन्दों के इल्मो इदराक और मत़लूब की इन्तिहा है, अल्लाह तआ़ला ने उसे ''अ़ज़ीम'' क़रार दिया है चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ ﱙ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ۠ (1)

पस अगर वोह फिर जाएं तो कहिये कि मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी पर मेरा भरोसा है और वोह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी तौरैत में मुतवक्किल था और क्यूं न होता, आप से बढ़ कर मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी का शनासा और कौन है ? आप मुवह्ह़िदीन के सरदार और आ़रिफ़ीने कामिलीन के रहनुमा हैं, तवक्कुल की ह़क़ीक़त आप पर रोज़े रोशन की त़रह़ इयां थी।

तवक्कुल की ह़क़ीक़त

तवक्कुल का मत़लब येह नहीं है कि अस्बाब से क़त़ए नज़र कर लिया जाए जैसा कि कुछ लोगों का ख़याल है बल्कि तवक्कुल अस्बाब के साथ साथ होता है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमा दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है। (پ۱۱، التوبہ: ۱۲۹)

एक बदवी ने पूछा : मैं ऊंट का पैर बांध कर, या खुला छोड़ कर तवक्कुल करूं ? आप ने फ़रमाया : ऊंट का पाउं बांध दे और तवक्कुल कर **अल्लाह** पर ।(1)

फ़रमाने नबवी है कि अगर तुम, **अल्लाह** पर तवक्कुल करने की ह़क़ीक़त को पा लेते तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें परन्दों की त़रह़ रिज़्क़ देता जो सुब्ह़ भूके उठते हैं और शाम को पेट भरे होते हैं ।(2)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी के दरमियान सुवालो जवाब

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی की मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मुलाक़ात हुई, इब्राहीम ने पूछा : ऐ शक़ीक़ बल्ख़ी ! तुम ने येह बुलन्द मर्तबा कैसे पाया ? ह़ज़रते शक़ीक़ ने जवाब दिया कि एक मरतबा मेरा एक बयाबान से गुज़र हुवा, वहां मैं ने एक ऐसा परन्दा पड़ा देखा जिस के दोनों बाज़ू टूट गए थे । मेरे दिल में येह वस्वसा पैदा हुवा कि देखूं तो सही इसे कैसे रिज़्क़ मिलता है, मैं वहां बैठ गया, कुछ देर बा'द एक परन्दा आया जिस की चोंच में एक टिड्डी थी और उस ने वोह परन्दे के मुंह में डाल दी । मैं ने दिल में सोचा कि वोह राज़िक़े काइनात एक परन्दे के ज़रीए़ दूसरे परन्दे का रिज़्क़ पहुंचा देता है, मेरा रिज़्क़ भी मुझे हर हालत में पहुंचा सकता है लिहाज़ा मैं ने सब कारोबार छोड़ दिये और इबादत में मसरूफ़ हो गया ।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : ऐ शक़ीक़ ! तुम ने मजबूर व मा'ज़ूर परन्दा बनना पसन्द किया और तन्दुरुस्त परन्दा बनना पसन्द न किया कि तुम को मक़ामे बुलन्द नसीब होता, क्या तुम ने येह फ़रमाने नबवी नहीं सुना कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है,(3) मोमिन तो हमेशा बुलन्दिये दरजात की तमन्ना करता है ता आंकि वोह अबरार की सफ़ में जगह पाता है ।

ह़ज़रते शक़ीक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह सुनते ही ह़ज़रते इब्राहीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हाथों को चूमा और कहा : बेशक आप मेरे उस्ताद हैं ।

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ٦٠، ٤/٢٣٢، الحدیث ٢٥٢٥

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب فی التوکل علی اللہ، ٤/١٥٤، الحدیث ٢٣٥١

3 ......بخاری، کتاب الزکاة، باب لاصدقة الا...الخ، ١/٤٨٢، الحدیث ١٤٢٧

तवक्कुले ह़क़ीक़ी क्या है ?

जब इन्सान रिज़्क़ के हुसूल के अस्बाब मुहय्या कर ले तो अस्बाब की बजाए अपना नसबुल ऐन उस ख़ालिके़ काइनात को बनाए जो ह़क़ीक़त में रोज़ी रसां है, साइल जो कश्कोल ले कर गदागरी करता रहता है वोह कश्कोल को नहीं बल्कि हमेशा देने वाले सख़ी की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता है।

फ़रमाने नबवी है : "जो शख़्स अपने आप को सब से ज़ियादा ग़नी बनाना चाहता है वोह अपने माल से ज़ियादा इन्आ़मे ख़ुदावन्दी पर नज़र रखे।"(1)

तवक्कुले ह़क़ीक़ी की एक मिसाल

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा मरअ़शी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कई साल तक ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत की थी। एक मरतबा लोगों ने इन से पूछा कि तुम ह़ज़रते इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सोह़बत का कोई अ़जीब वाक़िआ़ सुनाओ ! इन्हों ने कहा कि एक बार हम मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ जा रहे थे, रास्ते में हमारा ज़ादे राह ख़त्म हो गया हम कूफ़ा की एक वीरान मस्जिद में इक़ामत गुज़ीं हुवे, ह़ज़रते इब्राहीम ने मुझे देख कर फ़रमाया : तुम भूक से निढाल नज़र आते हो, मैं ने कहा : हां, मुझे शिद्दत की भूक लग रही है। आप ने मुझ से क़लम दवात मंगवाई और काग़ज़ पर "بِسْمِ اللّٰه" के बा'द लिखा हर ह़ालत में ऐ रब्बे ज़ुल जलाल तू ही हमारा मक़्सूद और हर काम में तू ही मल्जा है, फिर येह अश्आ़र लिखे :

انا حامد انا شاكر انا ذاكر ‏ ‏ ‏ انا جائع انا ضائع انا عارى

هى ستة و انا و الضمين لنصفها ‏ ‏ ‏ فكن الضمين لنصفها يا بارى

مدحى لغيرک لهب نار خضتها ‏ ‏ ‏ فاجر عبيدک من دخول النار

﴾1﴿....मैं तेरी ह़म्द करने वाला, शुक्र करने वाला और ज़िक्र करने वाला हूं, मैं भूका, ख़स्ताह़ाल और बरहना हूं।

﴾2﴿....ऐ अल्लाह ! तीन बातों का मैं ज़ामिन हूं और बक़िय्या तीन की ज़मानत तू क़बूल फ़रमा ले।

﴾3﴿....तेरे सिवा किसी और की सना मेरे लिये आग से कम नहीं है, अपने बन्दे को उस आग से बचा ले।

(1)......مستدرك للحاكم، كتاب الادب، ٣٨٤/٥، الحديث ٧٧٧٩ و مسند الشهاب للقضاعى، ٢٣٤/١، الحديث ٣٦٨ وجامع العلوم والحكم لابن رجب ، تحت الحديث الحادى والثلاثون ص٣٦٦ و تاريخ مدينه دمشق ، ١٣٣/٥٥

और मुझ से फ़रमाया : दिल में किसी ग़ैर का ख़याल न लाना, जो आदमी तुम्हें सब से पहले नज़र आए येह रुक्आ़ दे देना। सब से पहला शख़्स जो मुझे मिला वोह एक ख़च्चर सुवार था, मैं ने वोह रुक्आ़ उस को दे दिया, उस ने पढ़ा और रोने लगा, फिर पूछा : इस रुक्ए़ का कातिब कहां है? मैं ने कहा : फ़ुलां वीरान मस्जिद में बैठा है। येह सुनते ही उस ने मुझे एक थैली दी जिस में छे सो दीनार थे, बा'द में मुझे एक और शख़्स मिला, मैं ने उस से ख़च्चर सुवार के बारे में पूछा : तो उस ने कहा कि वोह नसरानी था, मैं ने वापस आ कर ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को सारा वाक़िआ़ सुनाया। आप ने फ़रमाया : ज़रा ठहरो वोह अभी आ जाएगा। कुछ देर के बा'द वोह नसरानी आ गया और ह़ज़रते इब्राहीम के सर को चूमने लगा और मुसलमान हो गया।

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ की एक कुव्वत

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ामिलीने अ़र्श (फ़िरिश्तों) को पैदा फ़रमाया और उन्हें अ़र्श को उठाने का हुक्म दिया मगर वोह न उठा सके, **अल्लाह** तआ़ला ने हर फ़िरिश्ते के साथ सात आस्मानों के फ़िरिश्तों के बराबर फ़िरिश्ते पैदा किये, फिर उन्हें अ़र्श उठाने का हुक्म दिया मगर वोह न उठा सके, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने हर फ़िरिश्ते के साथ सातों आस्मानों और ज़मीनों के फ़िरिश्तों के बराबर फ़िरिश्ते पैदा फ़रमाए और उन्हें अ़र्श उठाने का हुक्म दिया मगर वोह फिर भी न उठा सके, तब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : तुम لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहो, जब उन्हों ने येह कहा तो अ़र्शे इलाही को उठा लिया मगर उन के क़दम सातवीं ज़मीन में हवा पर जम गए। जब उन्हों ने मह़सूस किया कि हमारे क़दम हवा पर हैं और नीचे कोई ठोस चीज़ मौजूद नहीं है तो उन्हों ने अ़र्शे इलाही को मज़बूती से थाम लिया और لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ने में मह़्व हो गए ताकि वोह इन्तिहाई पस्तियों पर गिरने से मह़फ़ूज़ रहें अब वोह अ़र्श को उठाए हुवे हैं और अ़र्शे इलाही उन्हें थामे हुवे हैं बल्कि इन तमाम को कुदरते इलाही संभाले हुवे है।

रिवायत है कि जो शख़्स सुब्ह़ो शाम सात मरतबा :

حَسْبِیَ اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّاھُوَ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ पढ़ता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के तमाम अ़ज़ाइम को पूरा कर देता है।(1)

एक रिवायत में है कि उस के दुन्या व आख़िरत के तमाम काम पूरे हो जाते हैं।

---

(1) ......ابو داود، کتاب الادب، باب ما یقول اذا أصبح، ٤/٤١٦، الحدیث ٥٠٨١

बाब 31

तर्के दुन्या व मज़म्मते दुन्या

कुरआने मजीद में दुन्या की मज़म्मत और दुन्या से तवज्जोह हटा कर आख़िरत की जानिब माइल करने के लिये बे शुमार आयात हैं बल्कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की बिअ्सत का सबब येही चीज़ थी, कुरआने मजीद की आयात इतनी मश्हूर हैं कि यहां इन के ज़िक्र से सिर्फ़ नज़र कर के सिर्फ़ बा'ज़ अहादीस के ज़िक्र पर ही इक्तिफ़ा करता हूं।

मज़म्मते दुन्या में चन्द अहादीस

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक मुर्दा बकरी के पास से गुज़र हुवा। आप ने फ़रमाया : क्या येह बकरी अपने मालिक को पसन्द है ? सहाबए किराम ने अर्ज़ की : इस की बदबू ही की वज्ह से तो यहां फेंक दिया गया है। आप ने फ़रमाया : ब खुदा ! दुन्या **अल्लाह** तआला के हां इस मुर्दा बकरी से भी ज़ियादा बे वक़ार है, अगर **अल्लाह** तआला के हां दुन्या का मक़ाम मच्छर के पर के बराबर भी होता तो कोई काफ़िर इस दुन्या से एक घूंट भी पानी न पी सकता।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।(2)

मज़ीद फ़रमाया : दुन्या मलऊन है, इस की हर वोह चीज़ मलऊन है जो **अल्लाह** के लिये न हो।(3)

हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दुन्या से महब्बत की उस ने आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाया और जिस ने आख़िरत से महब्बत की उस ने दुन्या को दर ख़ौरे ए'तिना न समझा, तुम फ़ानी दुन्या पर बाक़ी रहने वाली चीज़ों को तरजीह दो।(4)

फ़रमाने नबवी है कि दुन्या की महब्बत हर बुराई की बुन्याद है।(5)

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب مثل الدنيا، ٤/٤٢٧، الحديث ٤١١٠، ٤١١١

2 ......مسلم، كتاب الزهد والرقاق، ص ١٥٨٢، الحديث ١ـ (٢٩٥٦)

3 ......شعب الايمان، الحادى والسبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ ٧/٣٤٢، الحديث ١٠٥١٢

4 ......مسند احمد، مسند الكوفيين، حديث ابى موسىٰ الاشعرى، ٧/١٦٥، الحديث ١٩٧١٧

5 ......شعب الايمان، الحادى والسبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ، ٧/٣٣٨، الحديث ١٠٥٠١

हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अश्कबारी

हज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर बैठे हुवे थे, आप ने पानी मंगवाया तो पानी और शहद हाज़िर किया गया, आप जब इसे मुंह के क़रीब ले गए तो बे इख़्तियार रोने लगे, यहां तक कि पास बैठे हुवे सब सहाबए किराम भी रोने लगे, कुछ देर बा'द आप ने फिर पीने का इरादा फ़रमाया मगर शहद और पानी देख कर दोबारा रोने लग गए यहां तक कि सहाबए किराम ने ख़याल किया कि शायद हम इस गिर्या की वज्ह दरयाफ़्त नहीं कर सकेंगे, जब आप ने अपने आंसू साफ़ किये तो सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : ऐ ख़लीफ़तुर्रसूल ! आप के रोने का बाइस क्या था ? आप ने फ़रमाया : एक मरतबा मुझे रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही का शरफ़ नसीब हुवा, आप अपने जिस्मे मुबारक से किसी नज़र न आने वाली चीज़ को रफ़्अ़ फ़रमा रहे थे, मैं ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! आप किस चीज़ को हटा रहे हैं ? आप ने फ़रमाया : मेरे पास अभी दुन्या आई थी, मैं ने उसे कहा : मुझ से दूर रहो ! वोह लौट गई है और येह कह गई है कि आप ने मुझ से किनारा कशी फ़रमा ली है मगर बा'द में आने वाले ऐसा नहीं कर सकेंगे।[1]

फ़रमाने नबवी है कि ऐसे इन्सान पर इन्तिहाई तअ़ज्जुब है जो बिहिश्त पर ईमान रखते हुवे दुन्या के हुसूल में सरगर्म है।[2]

दुन्या की एक तमसील

मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक नज़ीला (कूड़े के ढेर) के क़रीब खड़े हुवे और फ़रमाया : दुन्या की त़रफ़ आइये, आप ने एक पुराना चिथड़ा और बोसीदा हड्डी दस्ते मुबारक में ले कर फ़रमाया : येह दुन्या है।[3]

इस तमसील से इस अम्र की त़रफ़ इशारा था कि दुन्या की ज़ीनत इस चिथड़े की त़रह़ पुरानी हो जाएगी और चलते फिरते इन्सान की हड्डियां इस हड्डी की त़रह़ बोसीदा हो जाएंगी।

---

1 ..... **आई है बे हया मेरा ईमान लूटने　　दुन्या खड़ी है दौलते दुन्या लिये हुवे**

...... شعب الایمان، الحادی و السبعون...الخ ، باب فی الزهد...الخ، ٧/٣٤٣، الحديث ١٠٥١٨

2 ......شعب الایمان، الحادی و السبعون...الخ ، باب فی الزهد...الخ، ٧/٣٤٨، الحديث ١٠٥٣٩

3 ......شعب الایمان، الحادی و السبعون...الخ ، باب فی الزهد...الخ، ٧/٣٢٧، الحديث ١٠٤٧١

फ़रमाने नबवी है : दुन्या सब्ज़ (खुश आयिन्द) और शीरीं है, अल्लाह तआला ने तुम्हें अपना ख़लीफ़ा बना कर भेजा है और वोह तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर है। बनी इस्राईल पर जब दुन्या फ़राख़ कर दी गई तो उन्हों ने अपनी तमाम तर कोशिशें ज़ेवरात, कपड़ों, औरतों और इत्रियात के लिये वक़्फ़ कर दी थीं (और उन का अन्जाम तुम ने देख लिया)।(1)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है कि दुन्या को मा'बूद बना कर उस के बन्दे न बन जाओ, अपना ख़ज़ाना उस ज़ात के यहां जम्अ़ करो जो किसी की कमाई को ज़ाएअ़ नहीं करता, दुन्यावी ख़ज़ानों के लिये तो ख़ौफ़े हलाकत होता है मगर जिस के ख़ज़ाने ख़ुदा के यहां जम्अ़ हों वोह कभी तबाह नहीं होंगे।

आप ने मज़ीद फ़रमाया : ऐ मेरे हवारियो ! मैं ने दुन्या को औंधे मुंह डाल दिया है तुम मेरे बा'द कहीं इसे गले न लगा लेना, दुन्या की सब से बड़ी बुराई येह है कि इस में आदमी अल्लाह का नाफ़रमान बन जाता है और इसे छोड़े बिग़ैर आख़िरत की भलाई ना मुमकिन है दुन्या में दिलचस्पी न लो, इसे इब्रत की निगाह से देखो और बा ख़बर रहो, दुन्या की महब्बत हर बुराई की अस्ल है और एक लम्हे की ख़्वाहिशे नफ़्सानी अपने पीछे तवील पशेमानी छोड़ जाती है और फ़रमाया कि दुन्या तुम्हारे लिये सुवारी बनाई गई और तुम इस की पुश्त पर सुवार हो गए तो अब बादशाह और औरतें तुम्हें इस से न उतार दें, रहा बादशाहों का मुआमला तो उन से दुन्या की वज्ह से मत झगड़ो, वोह तुम्हारी दुन्या और तुम्हारी पसमांदा चीज़ों को तुम्हें वापस न करेंगे, रही औरतें तो उन के सौमो सलात से होशयार रहो।

मज़ीद फ़रमाया : दुन्या तालिब भी है और मतबूल भी है, जो ख़ुशनूदिये ख़ुदा का तालिब होता है दुन्या उस की तालिब रहती है और उसे रिज़्क़ बहम पहुंचाती है और जो दुन्या का तालिब होता है उसे आख़िरत तलब करती है और मौत उसे गुद्दी से पकड़ कर ले जाती है।

हज़रते मूसा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को अपनी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा ना पसन्द येही दुन्या है, अल्लाह ने इसे जब से पैदा फ़रमाया है कभी नज़रे रहमत से नहीं देखा।(2)

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، ۵/۲۸، الحدیث ۲۰

2 ......شعب الایمان، الحادی والسبعون...الخ، باب فی الزھد...الخ، ۷/۳۳۸، الحدیث ۱۰۵۰۰

रिवायत है कि ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمَا السَّلَام एक मरतबा अपने तख़्त पर कहीं जा रहे थे, परन्दे आप पर साया कर रहे थे, इन्सान और जिन्नात आप के दाएं बाएं बैठे थे, बनी इस्राईल के एक आ़बिद ने देख कर कहा : ऐ सुलैमान ! ब ख़ुदा ! अल्लाह ने आप को मुल्के अ़ज़ीम दिया है। आप ने येह सुन कर फ़रमाया कि बन्दए मोमिन के नामए आ'माल में दर्ज सिर्फ़ एक तस्बीह़ मेरी तमाम सल्त़नत से बेहतर है क्यूंकि येह सब फ़ानी है मगर तस्बीह़ बाक़ी रहने वाली है।

फ़रमाने नबवी है : तुम्हें माल की कसरत ने मश्ग़ूल रखा है, इन्सान कहता है मेरा माल, मेरा माल, मगर अपने माल में, जो तू ने खाया वोह ख़त्म हो गया, जो पहना वोह पुराना हो गया, जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया वोही बाक़ी रहेगा।[1]

फ़रमाने नबवी है : "दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो, उस का माल है जिस का कोई माल न हो, बे वुक़ूफ़ ही इसे जम्अ़ करता है, बे इल्म ही इस के लिये झगड़ता है ना समझ ही इस के लिये दुश्मनी और ह़सद करता है और बे यक़ीन ही इस के ह़ुसूल की कोशिश करता है।"[2]

फ़रमाने नबवी है : जिस की सब से बड़ी तमन्ना ह़ुसूले दुन्या है, अल्लाह तआ़ला के यहां उस का कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह तआ़ला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत़ कर देता है, दाइमी ग़म, दाइमी मश्ग़ूलिय्यत, दाइमी फ़क्र और कभी न पूरी होने वाली आरज़ूएं।[3]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : मुझ से ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुझे दुन्या की ह़क़ीक़त दिखलाऊं ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां या रसूलल्लाह ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा हाथ पकड़ कर मुझे मदीने की एक वादी में ले गए जहां कूड़ा पड़ा था और उस में गन्दगी, चीथड़े और इन्सान के सर की बोसीदा हड्डियां थीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! येह सर भी तुम्हारे सरों की त़रह़ ह़रीस थे और इन में तुम्हारी त़रह़ बहुत आरज़ूएं थी मगर आज येह ख़ाली हड्डियां बन चुकी हैं, जिन पर खाल भी नहीं रही और अ़न क़रीब येह मिट्टी हो जाएंगे, येह गन्दगी इन के खानों के रंग हैं जिन्हें इन्हों ने कमा कमा कर खाया, आज लोग इन से मुंह फेर कर गुज़रते हैं, येह पुराने चीथड़े जो कभी इन के मल्बूसात थे, आज हवा इन्हें उड़ाए फिरती है और येह इन की सुवारियों की हड्डियां हैं जिन पर सुवार हो कर येह शहर शहर घूमा करते थे, जो इस

1 ......مسلم، كتاب الزهد والرقاق، ص ١٥٨٢، الحديث٣ـ (٢٩٥٨) والورع لابن حنبل، باب ذكر النعيم، ص١٨٨

2 ......شعب الايمان، الحادى والسبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ ٣٧٥/٧، الحديث ١٠٦٣٨

3 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب الزهد، ٩٢/٢ الجزء الثالث، الحديث٦٢٦٩

दर्दनाक अन्जाम पर रोना पसन्द करता हो उसे रोना चाहिये।" हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत रोए।[1]

रिवायत है कि जब आदम عَلَیْہِ السَّلَام को ज़मीन पर उतारा गया तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : तबाही के लिये इमारतें बनाओ और मौत के लिये बच्चे पैदा करो।

हज़रते दावूद बिन हिलाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के सहीफ़ों में मरक़ूम है कि ऐ दुन्या ! तू "नेकूकारों" की नज़र में अपनी तमाम तर ज़ैबो ज़ीनत के बा वुजूद बे वक़ार है, मैं ने उन के दिलों में तेरी अ़दावत और तुझ से बे तवज्जोगी रख दी है, मैं ने तुझ जैसी बे वक़ार कोई और चीज़ नहीं पैदा की, तेरी हर अदा झूटी और फ़ानी है, मैं ने तेरी पैदाइश के वक़्त फ़ैसला फ़रमा दिया था कि न तू किसी के पास हमेशा रहेगी और न ही वोह हमेशा रहेगा, अगर्चे तुझे पाने वाला कितना ही बुख़्ल करता रहे, नेकूकारों के लिये मेरी बिशारत है, जिन के दिल मेरी रिज़ा पर राज़ी हैं और जिन के दिल सिद्क़ व इस्तिक़ामत का गहवारा हैं, उन के लिये खुश ख़बरी है कि जब वोह क़ब्रों से गुरौह दर गुरौह उठेंगे तो मैं उन्हें येह जज़ा दूंगा कि उन के आगे नूर होगा और फ़िरिश्ते उन्हें घेरे हुवे उन की तमन्नाओं के मर्कज़ या'नी बिहिश्त में पहुंचाएंगे।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : दुन्या ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ है। इसे **अल्लाह** तआ़ला ने जब से पैदा फ़रमाया है कभी नज़रे रह़मत से नहीं देखा, क़ियामत के दिन दुन्या बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करेगी : मुझे अपने दोस्तों के मुक़द्दर में लिख दे। रब फ़रमाएगा : मैं दुन्या में इस मिलाप को ना पसन्द करता था और आज भी इसे ना पसन्द करता हूं।[2]

हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की हैरानी व सर गर्दानी

मरवी है कि जब हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ममनूआ़ शजर से खा लिया तो इन्हें पेट में गिरानी महसूस हुई हालांकि जन्नत की ने'मतों में येह बात नहीं है। हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام क़ज़ाए ह़ाजत के लिये चारों त़रफ़ हैरान फिर रहे थे कि **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से फ़िरिश्ता ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : आदम ! हैरान क्यूं फिर रहे हो ? आप ने फ़रमाया : मैं अपने पेट की गिरानी ख़त्म

1 ......المستطرف لشهاب الدين،الباب الثالث والثمانون فی ذکرالدنيا واحوالها...الخ، ٤٩٤/٢، والبحر المديد لابن عجيبة، ٢٣٧/٤

2 ......قوت القلوب، ٤٠٧/١ و طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٣٤٥/٦ مختصرا

करना चाहता हूं, फ़िरिश्ता बोला : इस गिरानी को कहां डालोगे ? जन्नत के फ़र्श पर, तख़्तों पर, दरख़्तों के साये में, जन्नत की नहरों के किनारों पर ? जन्नत में इन चीज़ों की कोई जगह नहीं, आप दुन्या में चले जाएं।

फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि क़ियामत के दिन ऐसे लोग आएंगे जिन के आ'माले ह़सना तहामा के पहाड़ों के बराबर होंगे, मगर उन्हें जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने पूछा : वोह नमाज़-रोज़ा अदा करने वाले होंगे ? फ़रमाया : हां ! वोह रोज़ादार और रात का एक हिस्सा इबादत में गुज़ारने वाले होंगे मगर वोह दुन्या के दिलदादह होंगे।[1]

फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : बन्दए मोमिन दो ख़ौफ़ों के दरमियान रहता है, आ'माले गुज़श्ता पर फ़िक्रमन्द रहता है और आने वाले वक़्त के लिये परेशान रहता है कि **अल्लाह** तआ़ला की क़ज़ा व क़द्र में मेरे लिये क्या मरक़ूम है। बन्दा अपनी ज़िन्दगी से अपने लिये भलाई पैदा करे, अपनी दुन्या से आख़िरत को संवारे, ह़यात से मौत को और जवानी से बुढ़ापे को आरास्ता करे क्यूंकि दुन्या तुम्हारे लिये और तुम आख़िरत के लिये बनाए गए हो, रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, मौत के बा'द बन्दे के लिये और कोई तक्लीफ़ देह चीज़ नहीं है और दुन्या के बा'द बिहिश्त या दोज़ख़ के सिवा कोई और ठिकाना नहीं है।[2]

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है कि जिस त़रह़ एक बरतन में आग और पानी जम्अ़ नहीं हो सकते इसी त़रह़ एक दिल में दुन्या और आख़िरत की मह़ब्बत जम्अ़ नहीं हो सकती।

मरवी है कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा कि आप ने तो बहुत त़वील उ़म्र पाई है, येह फ़रमाएं कि आप ने दुन्या को कैसा पाया ? आप ने फ़रमाया : "दुन्या एक सराए है जिस के दो दरवाज़े हैं, एक दरवाज़े से दाख़िल हुवा और दूसरे दरवाज़े से मैं निकल गया।"

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा गया कि आप अपनी रिहाइश के लिये घर क्यूं नहीं बनाते ? आप ने फ़रमाया : गुज़श्ता लोगों के येह पुराने मकान मेरी रिहाइश के लिये बहुत हैं।

---

1 ......فردوس الاخبار، ٥/٤٩٨ ، الحديث ٨٨٧٥ و الزهد وصفت الزاهدين لابن عربی، ١/٦٩، الحديث ١٣١ وحلية الاولياء، سالم مولى ابی حذيفة ، ١/٢٣٣، الحديث ٥٧٥

2 ......شعب الايمان ، الحادی والسبعون...الخ، باب فی الزهد...الخ ، ٧/٣٦٠، الحديث ١٠٥٨١

फ़रमाने नबवी है कि दुन्या से डरो, येह हारूत व मारूत से भी ज़ियादा जादूगर है।(1)

हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : कौन है जो अल्लाह तआला से अन्धेपन का नहीं बल्कि बसारत का सुवाल करता है? बा ख़बर हो जाओ ! जो दुन्या की त़रफ़ माइल हो गया और इस से बे इन्तिहा उम्मीदें रखने लगा उस का दिल अन्धा हो गया और जिस ने दुन्या से किनारा कशी कर ली और इस से कोई मख़्सूस उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला ने उसे नूरे बसीरत अ़ता फ़रमा दिया, वोह ता'लीम के बिग़ैर इल्म और तलाश के बिग़ैर हिदायत याब हो गया। तुम्हारे बा'द एक क़ौम आएगी जिन की सल्त़नत की बुन्याद क़त्ल और जोरो जफ़ा पर होगी, जिन की अमीरी व तमव्वुल बुख़्ल व तकब्बुर से भरपूर होगी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के सिवा उन्हें किसी चीज़ से महब्बत नहीं होगी। ख़बरदार तुम में से कोई अगर वोह वक़्त पाए और मालदारी की क़ुव्वत रखते हुवे फ़क़्र पर राज़ी हो जाए, महब्बत पा सकने के बा वुजूद उन से अ़दावत पर राज़ी रहे और रिज़ाए इलाही में इ़ज़्ज़त ह़ासिल कर सकने के बा वुजूद तवाज़ोअ़ से ज़िन्दगी बसर करे तो अल्लाह तआला उसे पचास सिद्दीक़ों का दरजा देगा।(2)

मरवी है कि एक मरतबा हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام सख़्त बारिश में घिर गए, आप को पनाह तलाश करते हुवे एक ख़ैमा नज़र आया, जब क़रीब पहुंचे तो देखा कि उस में एक औ़रत बैठी हुई है, वापस लौटे तो पहाड़ का एक ग़ार नज़र आया, वहां जा कर देखा तो एक शेर खड़ा था। आप ने उस पर हाथ रखा और अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! तू ने हर चीज़ का ठिकाना बनाया है, मगर मेरा कोई ठिकाना नहीं है। रब तआला ने फ़रमाया : तेरा ठिकाना मेरी रह़मत है, मैं क़ियामत के दिन अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा कर्दा सो हूरों से तेरा अ़क़्द करूंगा और तेरी दा'वते वलीमा चार हज़ार साल जारी रहेगी, हर साल के दिन दुन्या की ज़िन्दगी के बराबर होंगे और निदा करने वाला मेरे फ़रमान से निदा करेगा : ऐ दुन्या से किनारा कशी करने वालो ! आओ और ज़ाहिदे आ'ज़म ईसा बिन मरयम (عَلَیْہِ السَّلَام) की शादी देखो।

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का फ़रमान है कि त़ालिबे दुन्या के लिये हलाकत हो, वोह दुन्या को कैसे छोड़ कर मरेगा जिस की सारी तवज्जोह, ए'तिमाद और भरोसा इसी दुन्या पर है, येह लोग

1 ......شعب الایمان ، الحادی والسبعون...الخ، باب فی الزهد...الخ، ٣٣٩/٧، الحديث ١٠٥٠٤

2 ......شعب الایمان ، الحادی والسبعون...الخ، باب فی الزهد...الخ، ٣٦٠/٧، الحديث ١٠٥٨٢

अपनी नापसन्दीदा चीज़ (मौत) का कैसे मुक़ाबला करेंगे जो इन्हें महबूब चीज़ों से जुदा कर देगी और जिस के बारे में इन को पहले से ही बता दिया गया था, हलाक हो वोह शख़्स जिस की तमाम तर कोशिशें हुसूले दुन्या के लिये हैं, जिस के आ'माल गुनाहों पर मुश्तमिल हैं वोह कल क़ियामत के दिन अपने गुनाहों से कैसे रिहाई पाएगा ?

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य की : ऐ मूसा ! तुम्हारा ज़ालिमों के घर से क्या तअ़ल्लुक़ ? तुम अपनी तवज्जोह और तअ़ल्लुक़ इस दुन्या से जो बहुत बुरा घर है, हटा लो, येह सिर्फ़ उसी के लिये अच्छी है जो इस में रह कर अपने ख़ालिक़ को राज़ी कर लेता है, ऐ मूसा ! मैं हर मज़्लूम को ज़ालिम से उस का ह़क़ दिलाऊंगा।

सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्सार से ख़िताब

मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बह़रैन भेजा, वोह वहां से मालो दौलत ले कर आए, जब अन्सार को उन की आमद की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह सब सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ाज़िर हुवे, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखा तो हुज़ूर ने मुस्कुरा कर फ़रमाया : शायद तुम्हें अबू उ़बैदा के माल ले कर आने की ख़बर मिल गई है। उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : "तुम्हें मुबारक हो ! रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! मुझे तुम्हारे बारे में फ़क्रो फ़ाक़ा का ख़ौफ़ नहीं है बल्कि मैं उस वक़्त से डरता हूं जब तुम पर पहली उम्मतों की त़रह़ दुन्या फ़राख़ हो जाएगी और तुम इस में पहली उम्मतों की त़रह़ मश्ग़ूल हो कर हलाक हो जाओगे।[1]

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं अक्सर इस बात का अन्देशा करता हूं जब **अल्लाह** तआ़ला तुम पर येह दुन्या अपनी तमाम फ़ितना सामानियों के साथ फ़राख़ कर देगा।"[2]

फ़रमाने नबवी है : अपने दिलों को दुन्या की याद में न लगाओ।[3] आप ने दुन्या की याद से मन्अ़ कर दिया है चे जाएकि इन्सान अपनी तमाम तर तवज्जोह इसी पर मरकूज़ कर दे।

---

1 ......بخاری، کتاب الجزیة والموادعة، باب الجزیة والموادعة...الخ ۲/۳۶۳، الحدیث ۳۱۵۸

2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب مایحذرمن...الخ، ۴/۲۲۶، الحدیث ۶۴۲۷

3 ......شعب الایمان، الحادی والسبعون...الخ، باب فی الزھد...الخ ۷/۳۶۱، الحدیث ۱۰۵۸۴

बे गौरो कफ़न ना'शें

हज़रते अम्मार बिन सईद رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हज़रते ईसा علیہ السلام का एक ऐसी बस्ती से गुज़र हुवा जिस के मकीन मुख़्तलिफ़ अत़राफ़ और रास्तों पर मुर्दा पड़े हुवे थे। आप ने अपने ह़वारियों से फ़रमाया : येह लोग अल्लाह तआला की नाराज़ी का शिकार हैं वरना इन्हें ज़रूर दफ़्न किया जाता। ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : हम चाहते हैं कि हमें इन के ह़ालात का पता चल जाए, हज़रते ईसा علیہ السلام ने रब तआला से दुआ मांगी तो रब्बे जुल जलाल ने फ़रमाया : जब रात आ जाए तो इन से पूछना, येह अपनी हलाकत का सबब बताएंगे। जब रात हुई तो हज़रते ईसा علیہ السلام ने कहा : ऐ बस्ती वालो ! एक आवाज़ आई : लब्बैक या रूह़ल्लाह ! आप ने पूछा : तुम्हारी येह ह़ालत क्यूं है और इस अ़ज़ाब के नुज़ूल का बाइ़स क्या है ? जवाब आया : हम ने आ़फ़िय्यत की ज़िन्दगी गुज़ारी और जहन्नम के मुस्तह़िक़ क़रार पाए, इस लिये कि हम दुन्या से मह़ब्बत रखते थे और गुनहगारों की पैरवी किया करते थे। आप ने पूछा : तुम्हें दुन्या से कैसी मह़ब्बत थी ? जवाब आया : जैसे मां को बच्चे से मह़ब्बत होती है, जब हमारे पास दुन्या आ जाती हम निहायत मसरूर होते और जब दुन्या चली जाती तो हम निहायत ग़मगीन हो जाते। आप ने फ़रमाया : क्या वज्ह है कि सिर्फ़ तू ही जवाब दे रहा है और तेरे बाक़ी साथी ख़ामोश हैं ? जवाब मिला : त़ाक़तवर पुर हैबत फ़िरिश्तों ने इन को आग की लगामें डाली हुई है। आप ने फ़रमाया : फिर तू कैसे जवाब दे रहा है ? जवाब मिला : मैं इन में रहता ज़रूर था मगर इन जैसी बद आ'मालियां नहीं करता था, जब अ़ज़ाबे इलाही आया तो मैं भी इस की लपेट में आ गया, अब मैं जहन्नम के किनारे पर लटका हुवा हूं, क्या ख़बर इस से नजात पाता हूं या इस में गिर जाता हूं। हज़रते ईसा علیہ السلام ने ह़वारियों को फ़रमाया : नमक से जव की रोटी खाना, फटा पुराना कपड़ा पहनना और कूड़े के ढेर पर सो जाना, दुन्या और आख़िरत की भलाई के लिये बहुत उ़म्दा है।

हज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की अ़ज़बा नामी ऊंटनी थी जो तेज़ रफ़्तारी में सब से उ़म्दा थी, एक दफ़्आ़ एक बदवी की ऊंटनी इस से आगे निकल गई जिस की वज्ह से सहाबा को बहुत अफ़्सोस हुवा, आप ने फ़रमाया : येह क़ानूने क़ुदरत है कि हर कमाल को ज़वाल नसीब होता है।(1)

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ٤/٢٤٨، الحدیث ٦٥٠١

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "कौन है जो समन्दर की लहरों पर इमारत बनाए ! येह दुन्या इसी त़रह़ है तुम इसे जाए क़रार न बनाओ ।

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा गया : हमें एक ऐसी चीज़ बतलाइये जिस के सबब **अल्लाह** तआ़ला हमें मह़बूब बना ले, फ़रमाया : तुम दुन्या से अ़दावत रखो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें मह़बूब रखेगा ।

हज़रते अबुद्दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते और दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ देते ।[1]

हज़रते अबुद्दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का मुसलमानों से ख़ित़ाब

हज़रते अबुद्दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम जानते तो आबादी छोड़ कर वीरान टीलों की त़रफ़ निकल जाते और अपने को रियाज़त में मश्ग़ूल करते, गिर्या व ज़ारी करते और ज़रूरी सामान के इलावा तमाम मालो मताअ़ छोड़ देते, लेकिन दुन्या तुम्हारे आ'माल की मालिक बन गई है और दुन्या की उम्मीदों ने तुम्हारे दिल से आख़िरत की याद मिटा कर रख दी है, और तुम (इस के लिये) जाहिलों की त़रह़ सरगर्दां हो, तुम में से बा'ज़ लोग जानवरों से भी बदतर हैं, जो अपनी ख़्वाहिशात में अन्धे बन कर अन्जाम की फ़िक्र नहीं करते, तुम सब "दीनी भाई" होते हुवे एक दूसरे से मह़ब्बत नहीं करते हो और न ही एक दूसरे को नसीह़त करते हो, तुम्हारे ख़ुबसे बात़िन ने तुम्हारे रास्ते जुदा कर दिये हैं, अगर तुम सिरात़े मुस्तक़ीम पर चलते तो ज़रूर बाहम मह़ब्बत करते, तुम दुन्यावी उमूर में तो बाहम मश्वरे करते हो मगर आख़िरत के उमूर में मश्वरा नहीं करते और तुम उस ज़ात से मह़ब्बत नहीं रखते जो तुम्हें मह़बूब रखता है और तुम्हें आख़िरत की भलाई की त़रफ़ ले जाना चाहता है ।

येह सब इस लिये है कि तुम्हारे दिलों में ईमान कमज़ोर पड़ चुका है, अगर तुम आख़िरत की भलाई और बुराई पर यक़ीन रखते जैसे दुन्यावी ऊंच नीच पर यक़ीन रखते हो तो तुम दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ देते क्यूंकि आख़िरत तुम्हारे आ'माल की मालिक है । अगर तुम येह कहो कि हम पर दुन्या की मह़ब्बत ग़ालिब है तो येह तुम्हारा उ़ज़्र लंग है क्यूंकि तुम मुक़र्ररा मीआ़द पर आने वाली आख़िरत पर इस दुन्या को तरजीह़ दे रहे हो और अपने जिस्म को उन कामों से दुख दर्द

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب تمثيل آخر للدنيا، ٥/٤٥٧، الحديث ٧٩٧٥

झेलने पर मजबूर कर रहे हो जिन्हें तुम कभी भी नहीं पा सकते, तुम बड़े ना हन्जार हो, तुम ईमान की ह़क़ीक़त को पहचानते ही नहीं। अगर तुम्हें मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाई हुई किताब (कुरआने मजीद) में शक है तो हमारे पास आओ ! हम तुम्हारी ऐसे नूर की त़रफ़ राहनुमाई करेंगे जिस से तुम्हारे दिल मुत़्मइन हो जाएं, ब ख़ुदा ! तुम कम अ़क़्ली का बहाना बना कर जान नहीं छुड़ा सकते क्यूंकि दुन्यावी उमूर में तुम साइबुर्राए हो और इन्हें ब ख़ूबी सर अन्जाम दे रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है ! तुम मा'मूली सी दुन्या पर ख़ुश हो जाते हो और मा'मूली से दुन्यावी नुक़्सान पर इन्तिहाई रन्जीदा हो जाते हो, तुम्हारे चेहरे और ज़बानें दुख की मुज़्हिर है और तुम इसे मुसीबत कहते हो और तुम दुन्या पर गुनाहों से आलूदा ज़िन्दगी बसर करते हो और दीन के अक्सर अह़कामात को नज़र अन्दाज़ कर देते हो और इस से न तुम्हारे चेहरों पर शिकन आती है और न ही तुम्हारी ह़ालत में कोई तग़य्युर पैदा होता है। ऐसा मा'लूम होता है जैसे **अल्लाह** तआ़ला तुम से बरी हो, तुम बाहम मह़ब्बत रखते हो, मगर **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर ह़ाज़िरी को अपनी बद आ'मालियों की वज्ह से बहुत बुरा समझते हो, तुम ख़ाइन बन गए और उम्मीदों के पीछे दौड़ने लगे और मौत का इन्तिज़ार ख़त्म कर दिया। मैं **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगता हूं : वोह मुझे तुम से अ़लाहिदगी बख़्शे और मुझे अपने मह़बूब की ख़िदमत में पहुंचा दे। अगर तुम में नेक बनने की तड़प है तो मैं तुम्हें बहुत कुछ बता चुका, **अल्लाह** तआ़ला से ने'मतों का सुवाल करो, बहुत आसानी से पा लोगे, मैं अपने और तुम्हारे लिये **अल्लाह** से दुआ़ मांगता हूं।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक नासिह़ाना इरशाद

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों से फ़रमाया : जिस त़रह़ दुन्यादार दुन्या की चाहत में मा'मूली से दीन पर राज़ी हैं तुम भी दीन की सलामती के लिये मा'मूली सी दुन्या पर राज़ी हो जाओ।

इसी मौज़ूअ़ पर किसी शाइर ने कहा है :

اری رجالا بادنی الدین قد قنعوا　　وما اراهم رضوا فی العیش بالدون

فاستغن با لدین عن دنیا الملوک کما　　استغنی الملوک بدنیاهم عن الدین

﴾1﴿......मैं ने लोगों को देखा है वोह थोड़े से दीन पर राज़ी हो गए मगर थोड़ी सी दुन्या पर राज़ी नहीं हुवे।

﴾2﴿......जिस त़रह़ दुन्यादार दुन्या के बदले दीन से बे नियाज़ हो गए हैं तू भी दीन के बदले दुन्या से बे नियाज़ हो जा।

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ दुन्या को सोने चांदी के लिये तलब करने वाले ! तर्के दुन्या बहुत उम्दा चीज़ है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे बा'द तुम पर दुन्या आएगी और तुम्हारे ईमान को ऐसे खा जाएगी जैसे आग लकड़ियों को खा जाती है।

दुन्या की महब्बत सब से बड़ा गुनाह है

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की तरफ़ वह्य की : ऐ मूसा ! दुन्या की महब्बत में मश्गूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है।

रिवायत है कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام एक रोते हुवे शख़्स के पास से गुज़रे, जब आप वापस हुवे तो वोह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारी तआला से अर्ज़ किया : या **अल्लाह** ! तेरा बन्दा तेरे ख़ौफ़ से रो रहा है, **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया : मूसा ! अगर आंसू के रास्ते इस का दिमाग़ बाहर निकल आए और इस के उठे हुवे हाथ टूट जाएं तब भी मैं इसे नहीं बख़्शूंगा कि येह दुन्या से महब्बत रखता है।

हज़रते अली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि जिस शख़्स में छे आदतें पाई जाती हैं, वोह नारे जहन्नम से दूर और जन्नत का मत्लूब है :

﴾1﴿......**अल्लाह** को पहचान कर उस की इबादत की।

﴾2﴿......शैतान को पहचान कर उस की मुख़ालफ़त की।

﴾3﴿......हक़ को पहचान कर उस की इत्तिबाअ़ की।

﴾4﴿......बातिल को पहचान कर उस से इजतिनाब किया।

﴾5﴿......दुन्या को पहचान कर उसे तर्क कर दिया। और

﴾6﴿......आख़िरत को पहचान कर उस का तलबगार रहा।

हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि **अल्लाह** तआला ने उन लोगों पर रहम फ़रमाया जिन के पास दुन्या अमानत के तौर पर आई और उन्हों ने इसे ख़ियानत के बिग़ैर लौटा दिया और **अल्लाह** की बारगाह में बहुत सिबुक बार रवाना हुवे।

मज़ीद फ़रमाया : जो तुझे दीन की तरफ़ रग़बत दिलाए उसे क़बूल कर ले और जो तुझे दुन्या की तरफ़ रग़बत दिलाए, उसे उस के गले में डाल दे। (क़बूल न कर)

दुन्या एक गहरा समन्दर है

हज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने बेटे को वसिय्यत की, कि येह दुन्या बहुत गहरा समन्दर है, इस में बहुत लोग ग़र्क़ हो गए हैं, इस से गुज़रने के लिये ख़ौफ़े ख़ुदा की किश्ती बना, जिस में भर्राव ईमाने ख़ुदावन्दी का हो और इसे तवक्कुल के रास्तों पर चला ताकि नजात पा जाए वरना नजात की कोई सूरत नहीं है।

हज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि मैं इस इरशादे रब्बानी :

"बिला शुबा हम ने ज़मीन की चीज़ों को ज़मीन के लिये ज़ीनत बना दिया है ताकि आज़माएं कौन अच्छे अ़मल करता है और हम इन चीज़ों को बन्जर ना क़ाबिले ज़राअ़त बनाने वाले हैं।"(1)

मैं बहुत ग़ौरो फ़िक्र करता हूं। एक ह़कीम का क़ौल है कि तुझे दुन्या में जो कुछ मिला है तुझ से पहले भी कुछ लोग इस के मालिक बने थे और तेरे बा'द भी और लोग इस के मालिक बनेंगे, तेरे लिये दुन्या में सुब्ह़ो शाम की रोटी है, इस रोटी के लिये ख़ुद को हलाकत में न डाल, दुन्या से रोज़ा रख और आख़िरत पर इफ़्त़ार कर, दुन्या का माल ख़्वाहिशात हैं और इन का मनाफ़ेअ़ नारे जहन्नम है।

किसी राहिब से ज़माने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया, उस ने जवाब दिया : येह जिस्मों को पुराना करता है, उम्मीदें बढ़ाता है, मौत को क़रीब करता है और आरज़ूओं को दूर कर देता है। दुन्या वालों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उस ने कहा : जिस ने दुन्या को पा लिया वोह दुख में मुब्तला हुवा और जिस ने इसे न पाया वोह मुसीबत में घिर गया इसी लिये कहा गया है :

ومن يحمد لدنيا بعيش يسره　　فسوف لعمری عن قليل يلومها

اذا ادبرت كانت على المرء حسرة　　وان اقبلت كانت كثيرة همومها

﴾1﴿......जो दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत के सबब इस की ता'रीफ़ करता है, मुझे ज़िन्दगी की क़सम अ़न क़रीब वोह इसे बुरा भला कहेगा।

﴾2﴿......जब दुन्या चली जाती है तो ह़सरत छोड़ जाती है और जब आती है तो बहुत से ग़म साथ ले कर आती है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि इन्हें आज़माएं, इन में किस के काम बेहतर हैं और बे शक जो कुछ इस पर है, एक दिन हम इसे पट पर (चटियल, बेकार) मैदान कर छोड़ेंगे। (پ۱۵، الکھف : ۸،۷)

एक दाना का क़ौल है : "दुन्या थी और मैं नहीं था, येह दुन्या रहेगी और मैं नहीं रहूंगा, मैं इस की परवा नहीं करता हूं क्यूंकि इस की ज़िन्दगी क़लील है, इस की सफ़ा में भी कदूरत है, इस में रहने वाले इस के ज़ाइल होने, मुसीबत के नाज़िल होने और मौत के आने से सख़्त ख़ौफ़ज़दा रहते हैं।"

एक और दाना का क़ौल है : दुन्या इन्सान को उस की मन्शा के मुताबिक़ नहीं मिलती, या तो ज़ियादा मिलती है या फिर कम। हज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है : तुम दुन्या की ने'मतों को देखो वोह अपनी बुराई की वज्ह से हमेशा नालाइक़ों के पास ही होती हैं।

हज़रते अबू सुलैमान अद्दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि जब किसी तालिबे दुन्या को दुन्या मिलती है तो वोह ज़ियादा की तमन्ना करता है और जब किसी तालिबे आख़िरत को आख़िरत का अज्र मिलता है तो वोह ज़ियादा की तमन्ना करता है, न उस की तमन्ना ख़त्म होती है और न इस की तमन्ना ख़त्म होती है।

एक शख़्स ने हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दुन्या की महब्बत का शिकवा किया और येह भी बतलाया कि मेरा कोई घर नहीं है। आप ने कहा : जो कुछ तुम को **अल्लाह** ने दिया है इस में से सिर्फ़ रिज़्क़े हलाल ले लो और इसे सहीह मसरफ़ में ख़र्च करो, इस तरह तुम को दुन्या की महब्बत कोई नुक़्सान नहीं देगी और आप ने येह इस लिये फ़रमाया कि अगर तू ने अपने नफ़्स को इस से लगाया तो येह तुझे ऐसी तक्लीफ़ में डाल देगी कि तू दुन्या से तंग हो जाएगा और इस से निकलने की कोशिश करेगा।

हज़रते यहया बिन मुआज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि दुन्या शैतान की दुकान है, इस में से कुछ न लो, अगर तुम ने कुछ ले लिया तो शैतान तलाश करता हुवा तुम तक पहुंच जाएगा।

ख़ालिस सोने पर ख़ज़फ़ रेज़े को तरजीह किस तरह हो सक्ती है ?

हज़रते फुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि अगर दुन्या मिट जाने वाले सोने और आख़िरत बाक़ी रहने वाली ठीकरी की होती, तब भी फ़ानी चीज़ पर बाक़ी रहने वाली चीज़ को तरजीह देना मुनासिब होता चे जाएकि येह दुन्या ठीकरी है और आख़िरत ख़ालिस सोना है मगर हम ने फिर भी दुन्या को पसन्द कर लिया है।

हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि तलबे दुन्या से बचो, मैं ने सुना है जो शख़्स दुन्या की तौक़ीर करता है, क़ियामत के दिन उसे बारगाहे ख़ुदावन्दी में खड़ा कर के कहा जाएगा : येह उस चीज़ की इज़्ज़त करता था जिसे **अल्लाह** ने ज़लील पैदा किया था।

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है : इस दुन्या में हर शख़्स बतौरे मेहमान है और यहां की हर चीज़ मुस्तआर है, मेहमान आख़िर कूच कर जाता है और मुस्तआर चीज़ वापस करनी पड़ती है।

इसी मौज़ूअ पर एक और शाइर ने इस तरह इज़्हारे ख़याल किया है :

وما المال والاهلون الا وديعة ولابد يوما ان ترد الودائع

﴾1﴿......येह माल और अवलाद मुस्तआर चीज़ें हैं इन्हें एक दिन यक़ीनन वापस करना है।

हज़रते राबिआ رحمة الله تعالى عليها के यहां इन के साथी जम्अ हुवे और दुन्या की मज़म्मत का ज़िक्र छेड़ दिया। आप ने कहा : चुप हो जाओ ! दुन्या का ज़िक्र न करो ! शायद तुम्हारे दिलों के किसी गोशे में दुन्या की महब्बत ज़रूर मौजूद है क्यूंकि जिस शख़्स को जिस चीज़ से महब्बत हो जाती है वोह अक्सर उस का ज़िक्र करता है।

हज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से दुन्या के बारे में सुवाल किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया :

نرقع دنيانا بتمزيق ديننا فلا ديننا يبقى ولا ما نرقع

فطوبى لعبد اثر الله ربه وجاد بدنياه لما يتوقع

﴾1﴿......हम ने दुन्या के लिये दीन को पारा पारा कर दिया मगर न दुन्या मिली और न दीन बाक़ी रहा।

﴾2﴿......वोह बन्दा ख़ुश नसीब होता है जिस ने **अल्लाह** की तरफ़ तवज्जोह की और दुन्या को बेहतर आख़िरत की उम्मीद में सर्फ़ कर दिया।

एक और शाइर कहता है :

ارى طالب الدنيا وان طال عمره ونال من الدنيا سرورا وانعما

كبان بنى بنيانه فاقامه فلما استوى ما قد بناه تهدما

﴾1﴿......दुन्या के तलबगार की अगर्चे तवील उम्र हो और उसे हर क़िस्म का ऐशो नशात मुयस्सर हो।

﴾2﴿......मगर मैं इसे उस शख़्स जैसा समझता हूं जिस ने एक इमारत बनाई और वोह इमारत मुकम्मल होते ही ज़मीन बोस हो गई हो।

एक और शाइर कहता है :

هب الدنيا تساق اليك عفوا اليس مصير ذاك الى انتقال

وما دنياك الا مثل فيء اظلك ثم اذن بالزوال

﴾1﴿......येह दुन्या आख़िर किसी और की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाएगी, इसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे, तुझे बख़्शिश से हम किनार करा देगी।

﴾2﴿......तेरी दुन्या साए की त़रह् है, कुछ देर तेरे ऊपर साया गुस्तर रहेगी और फिर ढल जाएगी।

हज़रते लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा : ऐ बेटे ! दुन्या को आख़िरत के लिये बेच दे दोनों त़रफ़ से नफ़्अ़ उठाएगा और आख़िरत को दुन्या के लिये न बेच कि दोनों त़रफ़ से नुक़्सान में रहेगा।

हज़रते मुत़र्रिफ़ बिन शिख़्ख़ीर رحمۃ اللہ تعالی علیہ का क़ौल है कि बादशाहों के ऐशो निशात़ और नर्मो नाज़ुक लिबास को न देखो बल्कि येह देखो कि वोह दुन्या से कितनी जल्दी जा रहे हैं और कैसा बुरा ठिकाना उन को मिलेगा।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالی عنہما का क़ौल है, अल्लाह तआ़ला ने दुन्या के तीन हिस्से किये हैं, एक हिस्सा मोमिन के लिये, दूसरा मुनाफ़िक़ के लिये और तीसरा हिस्सा काफ़िर का है। मोमिन इसे ज़ादे राह बनाता है, मुनाफ़िक़ ज़ैबो ज़ीनत करता है और काफ़िर इस से नफ़्अ़ अन्दोज़ होता है।

बा'ज़ सालिह़ीन का क़ौल है कि दुन्या मुर्दार है, जो इसे ह़ासिल करना चाहता है वोह कुत्तों की ज़िन्दगी बसर करने पर तय्यार है, इसी लिये कहा गया है :

ياخاطب الدنيا الى نفسها　　تنح عن خطبتها تسلم

ان التى تخطب غدارة　　قريبة العرس من الماتم

﴾1﴿....ऐ दुन्या को अपने क़रीब बुलाने वाले ! तू इसे न बुला, सलामत रहेगा।

﴾2﴿....जिस फ़रेबी को तुम अपने पास बुला रहे हो वोह हैबतनाक और गुनाह से मा'मूर चीज़ है।

हज़रते अबुद्दरदा رضی اللہ تعالی عنہ का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला के यहां दुन्या की बे क़द्री इस लिये है कि हर गुनाह इसी में परवान चढ़ता है और इस से किनारा कशी किये बिग़ैर अल्लाह तआ़ला की ने'मतों को नहीं पाया जा सकता, इसी लिये कहा गया है :

اذا امتحن الدنيا لبيب تكشفت　　له عن عدو فى ثياب صديق

﴾1﴿......जब अ़क़्लमन्द ने दुन्या को जांचा तो इसे दोस्त के लिबास में एक दुश्मन नज़र आया।

इसी मौज़ूअ़ पर चन्द अश्आर येह भी है :

ياراقد الليل مسرورا باوله　　ان الحوادث قد يطرقن اسحارا

افنى القرون التى كانت منعمة　　كر الجديدين اقبالا و ادبارا

كم قد ابادت صروف الدهر من ملک	قد كان في الدهر نفاعا و ضرارا
يامن يعانق دنيا لا بقاء له	يمسي و يصبح في دنياه صفارا
هلا تركت من الدنيا معانقة	حتى تعانق في الفردوس ابكارا
ان كنت تبغي جنان الخلد تسكنها	فينبغي لک ان لا تامن النارا

﴾1﴿...ऐ अव्वल रात में खुश खुश सोने वाले ! हवादिसाते ज़माना कभी रात के आख़िरी हिस्से में भी नाज़िल होते हैं।

﴾2﴿...दिन रात की गर्दिश ने उन सदियों को भी फ़ना कर दिया जो ख़ुशहाली में बे मिसाल थीं।

﴾3﴿...गर्दिशे दौरां ने ऐसे कितने मुल्कों को वीरान कर दिया जो ज़माने में सुख-दुख देने वाले थे।

﴾4﴿...ऐ फ़ानी दुन्या को गले लगाने वाले ! तू सुब्हो शाम सफ़र में है (फिर गले लगाने से क्या फ़ाइदा ?)

﴾5﴿...तू ने दुन्या से तअ़ल्लुक़ ख़त्म क्यूं नहीं किया ताकि जन्नतुल फ़िरदौस में इफ़्फ़त मआब हूरों से हम आग़ोश हो सकता।

﴾6﴿...अगर तू जन्नत में सुकूनत का ख़्वाहिश मन्द है तो तुझे नारे जहन्नम से बे ख़ौफ़ नहीं होना चाहिये।

हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया गया तो शैतान अपने लश्कर के पास आया, उन्हों ने शैतान से कहा : एक नबी मबऊ़स हुवा है और इस के साथ उस की उम्मत भी है। शैतान ने पूछा : क्या वोह लोग दुन्या को पसन्द करते हैं ? उन्हों ने कहा : हां। शैतान ने कहा : फिर तो कोई परवा नहीं, अगर वोह बुतों को नहीं पूजते तो न पूजें, हम उन्हें तीन बातों में फंसाएंगे : दूसरे की चीज़ ले लेना, ग़ैर पसन्दीदा जगहों पर ख़र्च करना और लोगों के हुक़ूक़ अदा न करना येही तीन चीज़ें तमाम बुराइयों की बुन्याद हैं।[1]

एक आदमी ने हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दुन्या की ता'रीफ़ पूछी : आप ने फ़रमाया : मैं उस घर की क्या ता'रीफ़ करूं जिस का सिह्हत मन्द अस्ल में बीमार, जिस का बे ख़ौफ़ पशेमान, जिस का मुफ़्लीस ग़मगीन, जिस का मालदार मसाइब में मुब्तला हो और जिस के हलाल का हिसाब हो, हराम पर अ़ज़ाब हो और मश्कूक पर मलामत हो। येही बात आप से दूसरी मरतबा पूछी गई तो आप ने फ़रमाया : वज़ाहत से बयान करूं या मुख़्तसर जवाब दूं ? अ़र्ज़ किया गया : मुख़्तसरन फ़रमाइये ! आप ने फ़रमाया : इस के माले हलाल का हिसाब है और हराम पर अ़ज़ाब है।

---

❶......شعب الايمان، الحادى و السبعون من شعب الإيمان، باب فى الزهد و قصر الأمل، ٣٣٨/٧، الحديث ١٠٥٠٢

हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि ज़बर दस्त जादूगर से बचो जो उलमा के दिलों पर भी जादू चला लेती है और फ़रमाया गया : वोह जादूगर **दुन्या** है।

दुन्या किस सूरत में मुज़ाहमत करती है

हज़रते अबू सुलैमान अद्दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि जब दिल में आख़िरत का तसव्वुर बसा हुवा हो तो दुन्या इस से मुज़ाहमत करती है और जब दिल में दुन्या का तसव्वुर जा गुज़ीं हो तो आख़िरत कोई मुज़ाहमत नहीं करती इस लिये कि आख़िरत के तसव्वुरात करीमाना हैं और दुन्यावी वसाविस इन्तिहाई जाहिलाना हैं और येह बहुत बड़ी बात है। हमारे ख़याल में इस सिलसिले में जनाबे सय्यार बिन अल हकम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बात ज़ियादा दानिशमन्दाना है, इन्हों ने कहा है : दुन्या और आख़िरत दोनों दिल में जम्अ़ होती हैं फिर इन में जो ग़ालिब आ जाए दूसरा फ़रीक़ उस का ताबेअ़ बन जाता है।

दुन्या का ग़म बढ़ता है तो आख़िरत का ग़म कम हो जाता है

हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इरशाद है : तुम जिस क़दर दुन्या के लिये ग़मगीन होते हो उसी क़दर आख़िरत का ग़म कम हो जाता है और जिस क़दर आख़िरत का ग़म खाते हो इसी क़दर दुन्या का ग़म मिट जाता है, आप का येह क़ौल हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस इरशाद से माख़ूज़ है कि दुन्या और आख़िरत दो सोकनें हैं, एक को जितना राज़ी करोगे, दूसरी उतनी ही नाराज़ होगी।

हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है : ब ख़ुदा ! रब ने ऐसी क़ौमें भी पैदा की हैं जिन के सामने येह दुन्या मिट्टी की तरह बे वक़ार थी, उन्हें दुन्या के आने जाने की कोई परवाह नहीं थी चाहे वोह इस के पास हो या उस के पास हो।

किसी ने हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने माल दिया है, वोह इस से राहे ख़ुदा में देता है और सिलए रेह़मी करता है, क्या ऐसा शख़्स तलाशे मआ़श करे ताकि कुछ और दुन्या हासिल करे ? आप ने फ़रमाया : नहीं, अगर सारी दुन्या उसी के दामन में सिमट आए तब भी उस के लिये बस एक दिन की रोज़ी होगी।

हज़रते फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि अगर मुझे सारी दुन्या कस्बे हलाल की सूरत में मिल जाए मगर आख़िरत की भलाई इस में न हो तो मैं इस से इस तरह दामन बचा के निकल जाऊंगा जैसे तुम मुर्दार से दामन बचा के निकल जाते हो।

जब ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ शाम की ममलुकत में दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते अबू उ़बैदा رضی اللہ تعالٰی عنہ एक ऊंटनी पर आप के इस्तिक़्बाल के लिये ह़ाज़िर हुवे जिस की नकील रस्सी की थी, सलाम व दुआ़ के बा'द ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ इन के ख़ैमे में तशरीफ़ लाए, वहां ऊंट के पालान, तल्वार और ढाल के इ़लावा कुछ नहीं था, ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने पूछा : कोई और सामान भी है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हमारे आराम के लिये येही कुछ काफ़ी नहीं है ?

ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि दुन्या की मह़ब्बत में डूब कर बनी इस्राईल ने **अल्लाह** عزوجل की इ़बादत को छोड़ कर बुतों की इ़बादत शुरूअ़ की थी।

ह़ज़रते सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि बदन के लिये दुन्यावी ग़िज़ा ह़ासिल करो और दिल के लिये उख़रवी ग़िज़ा की तलाश करो।

ह़ज़रते वह्ब رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है, मैं ने एक किताब में पढ़ा है कि दुन्या, अ़क़्लमन्दों के लिये माले ग़नीमत और जाहिलों के लिये सामाने ग़फ़्लत है, उन्हों ने इस की ह़क़ीक़त न जानी यहां तक कि दुन्या से कूच कर गए, जब वहां उन पर इस की ह़क़ीक़त मुन्कशिफ़ हुई तो उन्हों ने वापसी का सुवाल किया जो ना मन्ज़ूर हुवा।

ह़ज़रते लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा : ऐ बेटे ! अगर तू ने दुन्या से बे तवज्जोगी बरती और आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह रहा तो ऐसे घर के क़रीब पहुंच गया जो इस घर से ब-दरजहा बेहतर है।

ह़ज़रते सईद बिन मसऊ़द رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि जब तुम किसी ऐसे शख़्स को देखो जिस की दुन्या बढ़ रही हो और आख़िरत कम हो रही हो मगर वोह इस बात पर राज़ी हो तो समझ लो कि वोह शख़्स फ़रेब ख़ुर्दा है कि उस की सूरत मस्ख़ की जा रही है और उसे मह़सूस भी नहीं हो रहा है।

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मिम्बर पर खड़े हो कर फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मैं ने तुम जैसी क़ौम नहीं देखी, जिस चीज़ से ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم किनारा कश रहे तुम उस में मगन हो, ब ख़ुदा नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم पर ऐसे तीन दिन कभी नहीं गुज़रे कि इन पर इन के माल से ज़ियादा क़र्ज़ न हो।

ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने येह आयत : فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا [1] पढ़ कर फ़रमाया कि जानते हो येह किस का फ़रमान है ? येह ख़ालिक़े दुन्या, मालिके दुन्या रब तआ़ला का फ़रमान है। ख़ुद को दुन्या में मश्ग़ूलिय्यत से बचाओ ! दुन्या में बहुत से शग़्ल हैं, अगर इन्सान दुन्या के किसी शग़्ल का दरवाज़ा खोल देता है तो उस पर दुन्या के दस और दरवाज़े ख़ुद ब ख़ुद वा हो जाते हैं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी। (پ۲۱، لقمٰن:۳۳)

मज़ीद फ़रमाया कि इन्सान कितना मिस्कीन है, एक ऐसे घर पर राज़ी हो गया है जिस के ह़लाल का ह़िसाब होगा और ह़राम पर अ़ज़ाब ! अगर वोह कसबे ह़लाल से दुन्या ह़ासिल करता है तो क़ियामत के दिन उस से इस का ह़िसाब लिया जाएगा और अगर माले ह़राम खाता है तो अ़ज़ाब में मुब्तला होगा, इन्सान माल को कम समझता है मगर अफ़्सोस कि अ़मल को कम नहीं समझता, दीनी मुसीबत पर ख़ुश होता है और दुन्यावी मुसीबत पर फ़रयाद व फ़ुग़ां करता है।

ह़ज़रते ह़सन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को एक ख़त़ लिखा जिस में बा'द अज़् तस्लीमात तह़रीर फ़रमाया कि तुम आख़िरी इन्सान हो जिन्हों ने मौत का प्याला पिया। आप ने जवाब में लिखा : बा'द अज़् तस्लीम गोया तुम दुन्या में कभी नहीं रहे और हमेशा आख़िरत में रहे हो। (या'नी मेरी त़रह़ दुन्या में तुम भी रहते हो और मौत का प्याला तुम को भी पीना है)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि दुन्या में आना आसान है मगर इस से निकलना सख़्त मुश्किल है।

बा'ज़ सूफ़िया का क़ौल है कि उस शख़्स पर इन्तिहाई तअ़ज्जुब है जो मौत को ह़क़ समझते हुवे भी मसरूर है ! जहन्नम को यक़ीनी समझते हुवे भी हंसता है ! दुन्या की हलाकतों को देखते हुवे भी मुत़मइन है ! तक़्दीरे ख़ुदा को यक़ीनी समझते हुवे भी ग़मगीन है !

ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास नजरान का एक ऐसा शख़्स आया जिस की उ़म्र दो सो साल थी, आप ने पूछा : तू ने दुन्या को कैसा पाया ? कहने लगा : बुरी भी है भली भी है, दिन के बदले दिन और रात के बदले रात, इस की बुराई और भलाई बराबर रहती है, बच्चा पैदा होता और इसे हलाक करने वाला हलाक कर देता है अगर नई मख़्लूक़ पैदा न होती रहती तो मख़्लूक़ बहुत पुरानी और वीरान वीरान सी हो जाती और अगर हलाक करने वाला न होता तो येह दुन्या मख़्लूक़ से भर जाती और अपनी तमाम तर वुस्अ़त के बा वुजूद तंग हो जाती। आप ने फ़रमाया : कुछ मांगना हो तो मांगो, उस ने जवाब दिया : मेरी गुज़श्ता उ़म्र लौटा दीजिये या अजले मुक़र्ररा को टाल दीजिये, आप ने फ़रमाया : येह चीज़ें तो मेरे दाइरए इख़्तियार में नहीं हैं, उस शख़्स ने जवाब दिया फिर आप से मुझे कुछ और मांगना नहीं है।

ह़ज़रते दावूद त़ाई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि ऐ इन्सान ! तू उम्मीदों को पा कर ख़ुश हो रहा है ह़ालांकि तेरी अजल क़रीब आ गई है और तू ने नेक आ'माल में ताख़ीर की है, गोया येह तेरे नहीं किसी और के काम आते।

हज़रते बिशर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि जो शख़्स **अल्लाह** से दुन्या मांगता है वोह गोया **अल्लाह** की बारगाह में बहुत देर तक हिसाब के लिये ठहरने का सुवाल करता है।

हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि दुन्या में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो तुझे मसरूर करे मगर **अल्लाह** तआ़ला ने इस में एक ऐसी सिफ़त भी रख दी है जो तुझे बुरी मा'लूम होगी।

हज़रते हसन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हर इन्सान दिल में तीन हसरतें ले कर मरता है एक येह कि वोह अपने जम्अ़ कर्दा माल से सैर होता और वोह सैर नहीं हुवा, दूसरे येह कि अपनी उम्मीदों को पायए तक्मील तक पहुंचाता मगर न पहुंचा सका और तीसरे येह कि वोह आख़िरत के लिये नेक अ़मल भेजता और न भेज सका।

एक बन्दए मोमिन से किसी ने कहा कि मैं ने "ग़ना" को पा लिया है। उस ने कहा : जिस ने खुद को दुन्या की ग़ुलामी से आज़ाद कर लिया, ह़क़ीक़ी मालदारी उसी ने पाई। (या'नी ग़ना को पाने का दा'वा वोही कर सकता है)

हज़रते अबू सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि दुन्या की ख़्वाहिशात से वोही रुकता है जिस के दिल में आख़िरत की फ़िक्र होती है। हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमान है कि हम ने महब्बते दुन्या में एक दूसरे से सुल्ह कर ली है, हम में से कोई किसी को न हुक्म देता है, न मन्अ़ करता है हालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें इस चीज़ का हुक्म नहीं फ़रमाया, क्या ख़बर हम किस क़िस्म के अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे।

हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि दुन्या की मा'मूली सी महब्बत भी आख़िरत से काफ़ी बे तवज्जोगी पैदा कर देती है।

हज़रते हसन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि दुन्या की बे क़द्री करो, येह अपनी बे क़द्री करने वालों पर बहुत आसान है। मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे की बेहतरी का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या का अ़तिय्या देता है, जब वोह ख़त्म हो जाती है तो और दे देता है और जब बन्दा दुन्या को ह़क़ीर समझने लगता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बे अन्दाज़ा मालो दौलत दे देता है।

एक सालेह अपनी दुआ़ में कहा करते थे कि ऐ आस्मानों को ज़मीन पर गिरने से रोकने वाले ! मुझ से दुन्या को रोक ले। (मुझे दुन्या न दे)

हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि क़ियामत के दिन ऐसे शख़्स भी होंगे जिन्हों ने ज़िन्दगी के दिन रोज़ों में और रातें इबादत में गुज़ारी होंगी, राहे ख़ुदा में मालो दौलत ख़र्च किया होगा, राहे ख़ुदा में जिहाद किया होगा और मुन्करात से अपना दामन बचाया होगा मगर उन के बारे में कहा जाएगा : येह वोह हैं जिन्हों ने रब की हक़ीर कर्दा चीज़ को बहुत बड़ा समझा था और रब की बा अ़ज़मत चीज़ों को इन्हों ने हक़ीर समझा था, ज़रा सोचो तो सही हम में कितने ऐसे हैं जो इस मुसीबत में मुब्तला नहीं हैं, इलावा अज़ीं गुनाहों के कोहे गिरां का बार भी हमारी गर्दनों पर मौजूद है।

हज़रते अबू हाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि दुन्या और आख़िरत दोनों के हुसूल में दुश्वारियां हैं। फ़र्क़ येह है कि आख़िरत के हुसूल में आप किसी को मददगार नहीं पाएंगे मगर दुन्या के हुसूल में जब भी किसी चीज़ की जानिब हाथ बढ़ाओगे तो दूसरे बद बख़्त को अपने से पहले मौजूद पाओगे।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जब से दुन्या को पैदा किया है वोह ज़मीनो आस्मान के दरमियान पुराने मश्कीज़े की तरह लटकी हुई है और इसी तरह क़ियामत तक लटकती रहेगी, जब वोह **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल करती है ऐ **अल्लाह** ! तू ने मुझे क्यूं ना पसन्द फ़रमाया है ? तो रब्बे करीम फ़रमाता है : ऐ नाचीज़ ख़ामोश रह !

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि जब दुन्या की महब्बत और गुनाहों ने दिल को अपना शिकार बना लिया है, अब इस में भलाई कैसे पहुंच सकती है ?

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : जिस शख़्स का दिल किसी दुन्यावी चीज़ से ख़ुश हो गया वोह दानाई से हट गया और जिस ने दुन्यावी ख़्वाहिशात को अपने पैरों तले रौंद दिया, शैतान उस के साए से भी भागता है और जिस का इल्म ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आ गया, हक़ीक़त में वोही ग़ालिब है।

दुन्या से महब्बत रखने वाले को आख़िरत नफ़्अ़ नहीं देती

हज़रते बिश्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा गया कि फ़ुलां आदमी मर गया है, आप ने फ़रमाया : उस ने दुन्या को जम्अ़ किया और आख़िरत को ज़ाएअ़ कर दिया। लोगों ने कहा : वोह तो येह येह नेकियां किया करता था। आप ने फ़रमाया : "जिस के दिल में दुन्या की महब्बत हो, उसे नेकी नफ़्अ़ नहीं पहुंचाती।

एक सालेह का क़ौल है कि दुन्या हम से नफ़रत करती है मगर हम उस के पीछे भागते हैं, अगर वोह भी हम से महब्बत करती होती तो ख़ुदा जाने हमारा क्या हाल होता !

तर्के दुन्या व तालिबे दुन्या

एक दाना से पूछा गया कि दुन्या किस की है ? कहा : जिस ने इसे छोड़ दिया, पूछा गया : आख़िरत किस की है ? फ़रमाया : जिस ने इसे तलब किया। एक और दाना का क़ौल है कि दुन्या एक वीरान घर है और वोह दिल दुन्या से भी ज़ियादा वीरान है जो इस की जुस्तजू में सरगर्दां है, जन्नत एक आबाद घर है वोह दिल जन्नत से भी ज़ियादा आबाद है जो इसे तलब करता है।

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की अपने भाई को नसीहत

हज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه दुन्या में हक़ गो इन्सानों में से थे, इन्हों ने अपने भाई को ख़ौफ़े ख़ुदा की नसीहत की और फ़रमाया : ऐ भाई ! येह दुन्या लग़्ज़िश की जगह और रुस्वा करने वाला घर है, इस की आबादी वीरानी की तरफ़ और इस में रहने वाले क़ब्रों की तरफ़ जा रहे हैं, इस की क़लील चीज़ भी जुदा होने वाली है, इस का तमव्वुल मुफ़्लिसी की तरफ़ रवां दवां है, इस की कसरत क़िल्लत है और इस की मुफ़्लिसी में मालदारी है, **अल्लाह** की तरफ़ तवज्जोह कर और उस के अ़ताकर्दा रिज़्क़ पर राज़ी हो जा, जन्नत को दुन्या में गिरवी न रख क्यूंकि तेरी ज़िन्दगी ढलता हुवा साया और गिरती हुई दिवार है लिहाज़ा अ़मल ज़ियादा कर और उम्मीदें कम कर दे।

हज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक शख़्स से कहा कि तू ख़्वाब के एक दिरहम को या बेदारी के एक दीनार को अच्छा समझता है ? उस ने कहा : बेदारी के एक दीनार को अच्छा समझता हूं। आप ने फ़रमाया : तू झूट कहता है क्यूंकि दुन्या के साथ तेरी महब्बत ख़्वाब की महब्बत है और आख़िरत के साथ महब्बत बेदारी की महब्बत है।

हज़रते इस्माईल बिन इयाश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि हमारे दोस्त दुन्या को ख़िन्ज़ीर का नाम दिया करते थे और कहते थे कि हम से दूर रह ! अगर उन्हों ने दुन्या के लिये इस से बुरा नाम पाया होता तो ज़रूर इस का नाम वोही रखते।

हज़रते का'ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है : तुम ने दुन्या से इतनी महब्बत की है कि इसे पूजने लगे हो।

हज़रते यहूया बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि दाना तीन हैं :

﴾1﴿......जिस ने दुन्या को छोड़ने से पहले दुन्या को तर्क कर दिया।

﴾2﴿......क़ब्र में जाने से पहले उसे बना लिया और

﴾3﴿......बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में ह़ाज़िरी से पहले उसे राज़ी कर लिया।

मज़ीद फ़रमाया कि दुन्या की तमन्ना ही इन्सान को अल्लाह की "इ़बादत" से रोक देती है चे जाएकि इन्सान सरापा दुन्या ही का हो जाए (तो क्या ह़ाल होगा)।

ह़ज़रते बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि जो शख़्स दुन्या के साथ दुन्या से बे परवाई बरतना चाहता है, वोह शख़्स आग को भूसे से बुझा रहा है (कि इस से तो आग और भड़केगी)।

ह़ज़रते बुन्दार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि जब तू दुन्या से किनारा कशी की बातें करने वाले दुन्यादारों को देखे तो समझ लेना कि येह शैत़ान के मुरीद हैं। मज़ीद फ़रमाया : जो दुन्या की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा उस के शो'ले (ह़िर्स) ने इसे राख कर दिया, जो आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा उस के शो'लों ने इसे कुन्दन का एक टुकड़ा बना दिया और जिस ने रब तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ किया उस की वह़दत की आग ने इसे बे मिसाल हीरा बना दिया।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इरशाद है : दुन्या की छे चीज़ें हैं :

﴾1﴿......खाने की ﴾2﴿......पीने की ﴾3﴿......पहनने की

﴾4﴿......सुवार होने की ﴾5﴿......शादी करने की और ﴾6﴿......सूंघने की।

۞......सब से बेहतर खाने की चीज़ शहद है और वोह मख्खी का लुआ़ब है।

۞......पीने की सब से उ़म्दा चीज़ पानी है और इस में सब अच्छे बुरे शरीक हैं।

۞......पहनने की सब से उ़म्दा चीज़ रेशम है और वोह कीड़े का बुना हुवा है।

۞......सब से बेहतर सुवारी घोड़े की है और इसी पर इन्सान को क़त्ल किया जाता है।

۞......शादी के लिये औ़रत उ़म्दा चीज़ है मगर येह मह़ले मुबाशरत के सिवा कुछ नहीं। औ़रत की सब से उ़म्दा चीज़ (चेहरे) को संवारा और सब से बुरी चीज़ (फ़र्ज) को चाहा जाता है।

۞......सूंघने वाली चीज़ों में मुश्क सब से उ़म्दा है और येह ख़ून होता है।

बस ? समझ लो कि दुन्या क्या चीज़ है !!!

۞...۞...۞...۞...۞

बाब 32

मज़म्मते दुन्या

बा'ज़ तारिकीने दुन्या का कहना है : नेक अ़मल करने में पेश पेश रहो, अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, झूटी उम्मीदों में न पड़ो, मौत को न भूलो और दुन्या से रग़बत न रखो क्यूंकि येह फ़रेबी और मक्कार है जिस ने धोका दे कर राहे ख़ुदा से दूर कर दिया, इस की झूटी उम्मीदों ने तुम्हें आज़माइश में डाल दिया और येह तुम्हारे सामने इन्तिहाई ह़सीन शक्ल (बहरूप) में बे पर्दा दुल्हन बन कर आती है, आंखें इसे देखती हैं, दिल इस पर फ़िदा हैं और रूहें इस की फ़रेफ़्ता हैं मगर इस ने कितने आ़शिक़ों को क़त्ल कर दिया और अपने परवानों को ज़िल्लत व रुस्वाई के गढ़ों में धकेल दिया है ? तुम इसे निगाहे ह़क़ीक़त बीन से देखो तो मा'लूम होगा, येह मसाइब का घर है, इस के ख़ालिक़ ने भी इस की मज़म्मत की है, इस का हर नया पुराना हो जाता है, इस की सल्त़नत ख़त्म हो जाती है, इस का मुअ़ज़्ज़ज़ ज़लील हो जाता है, इस की कसरत क़िल्लत में तब्दील हो जाती है, इस की मह़ब्बत फ़ना हो जाती है, इस की भलाई गुज़र जाती है, अल्लाह तुम पर रह़मत करे, ग़फ़्लत से जागो, इस की मीठी नींद से बेदार हो जाओ क़ब्ल इस के कि कहा जाए : फ़ुलां बीमार है या उसे जान के लाले पड़े हैं, कोई ऐसी दवा या ऐसा त़बीब है जो उसे शिफ़ा दे ? फिर त़बीब बुलाया जाए और वोह तेरी ज़िन्दगी के बारे में ना उम्मीदी का इज़्हार करे, फिर कहा जाए कि फ़ुलां ने अपनी दौलत का ह़िसाब लगा कर वसिय्यत कर दी है, फिर कहा जाए : उस की ज़बान बन्द हो गई और वोह अपने अ़ज़ीज़ों से बात नहीं कर सकता और हमसायों को नहीं पहचान सकता है, उस वक़्त तेरी पेशानी पर पसीने के क़त़रे उभर आएं, तेरी आहो बुका सुनाई दे, मौत पर तेरा यक़ीन रासिख़ हो जाए, तेरी निगाह टिकटिकी बांध कर देखने लगे, तेरे अन्देशे सच साबित हों, तेरी ज़बान गुंग हो जाए, तेरे अ़ज़ीज़ रोने लगें और तुझ से कहा जाए : वोह तेरा फ़ुलां बेटा है, येह तेरा फ़ुलां भाई है मगर तू उन से गुफ़्तगू न कर सके, तेरी ज़बान पर मोहर लग जाए, तू इसे हिला न सके फिर तुझ पर मौत त़ारी हो, तेरे तमाम आ'ज़ा से रूह़ निकाली जाए और इसे आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाए, उस वक़्त तेरे भाई तुझ पर जम्अ़ हो जाएं, तेरे लिये कफ़न लाया जाए, फिर तुझे नहला कर कफ़न पहनाया जाए, तेरी तमाम उम्मीदें मुन्क़त़अ़ हो जाएं और तेरे दुश्मन सुकून का सांस लें, तेरे अहले ख़ाना तेरे माल की त़रफ़ मुतवज्जेह हों और तू अपने आ'माल की सज़ा पाने के लिये तन्हा रह जाए।

एक ज़ाहिद की एक बादशाह को नसीहतें

किसी तारिके दुन्या ने एक बादशाह से कहा कि दुन्या की मज़म्मत और इसे छोड़ देने का लोगों में सब से ज़ियादा मुस्तहिक़ वोह शख़्स है जो मालदार है और दौलत के बलबूते पर अपने काम अन्जाम दे रहा है, हो सकता है इस के माल पर कोई आफ़त नाज़िल हो कर इसे मोहताज कर दे या कोई आफ़त इस की जम्अ़ कर्दा पूंजी और इस के दरमियान तफ़रक़ा डाल दे या कोई बादशाह इस के मालो दौलत को पामाल करता हुवा गुज़र जाए या कोई तक्लीफ़ इस के जिस्म में सरायत कर जाए या दुन्या की कोई जान से प्यारी चीज़ इसे दोस्तों की नज़रों में गिरा दे और बईं तौर पर भी दुन्या लाइक़े मज़म्मत है कि येह जो कुछ देती है वापस ले लेती है, येह एक ही वक़्त में दो दो आदमियों से महब्बत करती है, येह हंसने वालों पर हंसती और रोने वालों पर रोती है, देते वक़्त वापसी का तक़ाज़ा भी कर देती है, आज मालदारों के सर पर ताज रखती है और कल उसे मिट्टी में छुपा देती है, चाहे जाने वाला इसी के ग़म में मर गया हो और ज़िन्दा इसी के लिये ज़िन्दा हो, येह हर जाने वाले के वारिस के गले मिल जाती है और किसी तग़य्युर व तबद्दुल की परवाह नहीं करती।

हज़रते हसन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ के इरशादात

हज़रते हसन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को लिखा कि येह दुन्या कूच की जगह है, ठहरने का मक़ाम नहीं है, हज़रते आदम علیہ السلام को आज़माइश के तौर पर इस पर उतारा गया था इस लिये अमीरुल मोमिनीन इस से दूर दूर रहिये। इस दुन्या का तोशा इस को छोड़ देना, इस की सरमाया दारी फ़क्रो फ़ाक़ा है, हर वक़्त अपने चाहने वालों को क़त्ल करती रहती है, इज़्ज़त वाले को ज़लील और मालदार को फ़क़ीर बना देती है, येह ज़हर है जिसे इन्सान बे ख़बरी में खा कर मौत से हमकिनार हो जाता है, इस में जराहत का इलाज करने वाले मजरूह की तरह तवील दुख से बचने के लिये कुछ देर सब्र कीजिये और तवील बीमारी से बचने के लिये कुछ लम्हों तक इलाज की शिद्दत बरदाश्त कीजिये और इस फ़रेबी धोकेबाज़ से जो ख़ूब बन ठन कर जल्वानुमा हुई है और मक्र का जाल फैलाए हुवे है, झूटी उम्मीदों की फ़िरावानी साथ लाई है और एक ऐसी दुल्हन का अन्दाज़ अपनाए है जिसे आंखें देखना चाहती हैं, जिस के दिल शैदाई हैं और जानें इस पर फ़िदाई हैं और येह तमाम चाहने वालों को ख़त्म करती चली आई है और मिटाती चली जाएगी, क्या कोई अ़क्लमन्द इस से नसीहत हासिल नहीं करता ?

जब इस का कोई आ़शिक़ इसे पा लेता है तो वोह गुमराह हो जाता है और इस से कामिल शग़फ़ के बाइस अपनी आख़िरत को भी भूल जाता है यहां तक कि उस के क़दम डगमगा जाते हैं और वोह दाइमी ह़सरत में गिरिफ़्तार हो जाता है, उस पर मौत की सख़्तियां और दुख त़ारी होते हैं, कमाह़क़्क़ुहु न पाने की ह़सरत और मत़लूब तक रसाई ह़ासिल न कर सकने का अफ़्सोस उसे और ज़ियादा दुखी बना देता है, उस की रूह़ शदीद दुख के आ़लम में बिग़ैर किसी ज़ादे राह के निकलती है और उस के क़दम कहीं नहीं टिकते। अमीरल मोमिनीन ! इस से बचते रहिये क्यूंकि दुन्यादार जब इस की मसर्रत में डूब जाता है तो वोह इसे दुख में मुब्तला कर देती है, इस में नुक़्सान पाने वाला फ़रेब ज़दा है, इस में नफ़्अ़ पाने वाला दोहरा फ़रेब ख़ुर्दा है क्यूंकि इस की वुस्अ़त मसाइब तक जा पहुंची है, इस का वुजूद आमादए फ़ना है, इस की ख़ुशी दुखों में लिपटी हुई है, जो इस का हो जाता है वोह वापस नहीं लौटता और अन्जाम से बे ख़बर रहता है इस की उम्मीदें झुटी, तमन्नाएं बात़िल, इस का साफ़ गदला, इस की ऐ़श मुख़्तसर है, इन्सान अगर ग़ौर करे तो वोह इस के ख़त़रात में घिरा हुवा है, इस की ने'मतें पुर ख़त़र और इस के अलम हौलनाक हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने इस की तम्बीह की है और नसीह़त फ़रमाई है, **अल्लाह** के हां इस की कोई क़द्र नहीं और न **अल्लाह** तआ़ला ने इस पर कभी रह़मत की नज़र डाली है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हु़ज़ूर में इस के ख़ज़ाने और इन की कुन्जियां पेश की गईं मगर आप ने क़बूल करने से इन्कार कर दिया क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के यहां इस की ह़ैसिय्यत मच्छर के पर से भी कम है, अगर आप इसे क़बूल फ़रमा लेते तब भी **अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ानों में कोई फ़र्क़ न आता, देखना ! कहीं इस की मह़ब्बत में हुक्मे ख़ुदा की मुख़ालफ़त न हो, इस की उल्फ़त में **अल्लाह** की नाराज़ी न हो और इसे इस के मालिक की मन्शा के मुख़ालिफ़ मक़ाम न मिले। **अल्लाह** तआ़ला ने इसे बत़ौरे आज़्माइश मोमिनों से फेर दिया और अपने दुश्मनों की फ़रेफ़्तगी की वज्ह से इन्हें दौलत से मालामाल कर दिया, जो बे वुक़ूफ़ इसे पा लेता है वोह समझता है कि शायद **अल्लाह** ने इसे इ़ज़्ज़त दे दी है और येह भूल जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने शिकमे मुबारक पर पथ्थर बांधे थे।

मज़म्मते दुन्या में एक और ह़दीसे क़ुदसी

ह़दीसे क़ुदसी है : **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि जब तू दौलतमन्दी को अपनी जानिब आता देखे तो समझ लेना कि किसी गुनाह की सज़ा आ रही है और

जब फ़क्रो फ़ाक़ा को देखे तो कह खुश आमदीद, क्यूंकि येह नेकों की अलामत है। ऐ लोगो ! अगर चाहो तो ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नक़्शे क़दम पर चलो जो फ़रमाया करते थे कि भूक मेरी खाल, ख़ौफ़ मेरी आदत, सौफ़ मेरा लिबास, सरमा में सूरज की किरनें मेरी आग, चांद मेरा चराग़, दो पाउं मेरी सुवारी और ज़मीन की सब्ज़ियां मेरी गिज़ा हैं, न सुब्ह मेरे पास कुछ होता है और न शाम को कुछ होता है मगर दुन्या में मुझ से बढ़ कर कोई ग़नी नहीं है।(1)

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा और हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام को फ़िरऔन की तरफ़ भेजा तो फ़रमाया : उस की दुन्यावी शानो शौकत से ख़ौफ़ज़दा न होना वोह मेरी इजाज़त के बिग़ैर न बोल सकता है, न सांस ले सकता है और न ही पलक झपक सकता है क्यूंकि उस की पेशानी मेरे हाथ में है और दुन्या से उस की नफ़्अ़ अन्दोज़ी तुम को तअ़ज्जुब में न डाले, येह चीज़ दुन्या की रौनक़ है और बे वुक़ूफ़ों की ज़ीनत, अगर मैं चाहूं तो तुम्हें ऐसी जाहो हश्मत और दुन्यावी क़द्रो मन्ज़िलत दे कर भेजूं कि फ़िरऔन देखते ही अपने इज्ज़ का इक़रार कर ले लेकिन मैं ने तुम से दुन्या को पोशीदा कर लिया है और तुम्हारी तवज्जोह इस से हटा दी है क्यूंकि मैं अपने दोस्तों को दुन्यावी ने'मतों से दूर कर देता हूं जैसे मेहरबान गडर्या अपनी बकरियों को हलाकत खेज़ चरागाहों से दूर रखता है और मैं उन्हें दुन्या के फ़रेब से बचाता हूं जैसे चरवाहा अपने ऊंटों को ख़तरनाक जगहों से बचाता है, येह उन की हिक़ारत के लिये नहीं है बल्कि इस लिये है कि वोह मेरी बख़्शी हुई इज़्ज़त से पूरा हिस्सा पा लें, मैं अपने दोस्तों को इन्किसारी, ख़ौफ़, दिलों के खुशूअ़ व खुज़ूअ़ और तक़्वा से मुज़य्यन करता हूं जिन का असर उन के जिस्मों पर नुमायां होता है, येही उन का लिबास है, येही उन का ज़ाहिर और येही उन का बातिन है, येही उन की मतलूबा नजात, तमन्नाएं, क़ाबिले फ़ख़्र इज़्ज़त और पहचान है, जब तुम उन से मिलो, नर्म बरताव करो और उन के लिये दिल और ज़बान को सरापा तवाज़ोअ़ बनाओ और याद रखो ! जिस ने मेरे किसी दोस्त को ख़ौफ़ज़दा किया उस ने मुझे जंग की दा'वत दी और मैं क़ियामत के दिन उस पर ग़ज़बनाक होऊंगा।

हज़रते अली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक दिन खुतबा दिया और फ़रमाया : बा ख़बर रहो ! तुम मरने वाले हो, मौत के बा'द फिर उठाए जाओगे और अपने आ'माल की जज़ा व सज़ा पाओगे, तुम्हें दुन्या की ज़िन्दगी धोके में मुब्तला न कर दे, येह मसाइब में लिपटी हुई, नापाएदारी में मश्हूर, धोके से मौसूफ़ और इस की हर चीज़ ज़वाल पज़ीर है, येह अपने चाहने वालों में डोल की तरह है, हमेशा एक हालत में नहीं रहती, इस में उतरने वाला मसाइब से नहीं बच सकता, कभी तो येह

(1) ......حلية الاولياء، ابراهيم بن عبدالله، ٣٤٢/٦، الحديث ٨٨٤٥ و فردوس الاخبار، ١٧٥/٣، الحديث ٤٤٦٩ و تاريخ مدينه دمشق، ١٤٧/٦١ مختصرا

अपने चाहने वालों पर ख़ुशी व मसर्रत बिखेरती है और कभी ग़म व अन्दोह से हम किनार कर देती है, इस की ह़ालतें मुख़्तलिफ़ हैं, येह अदलती बदलती रहती है, इस में आराम क़ाबिले मज़म्मत और वुस्अ़ते माल नापाएदार है, येह अपने बसने वालों को तीरों की त़रह़ कमान से निकाल कर निशानों पर मारती रहती है और उन्हें मौत से हम किनार करती रहती है।

हर किसी की मौत का वक़्त मुक़र्रर है और हर शख़्स को पूरा रिज़्क़ दिया जाता है और ऐ बन्दगाने ख़ुदा ! बा ख़बर रहो, तुम उस रास्ते के राही हो जिस पर तुम से पहले त़वील उ़म्रों वाले गुज़र चुके हैं, वोह तुम से ज़ियादा त़ाक़तवर, बेहतरीन कारीगर और उ़म्दा यादगारें छोड़ने वाले थे मगर दुन्या के इन्क़िलाब में उन की आवाज़ें ख़ामोश हो गईं, उन के जिस्म बोसीदा, शहर वीरान और यादगारें मिट गईं और मज़बूत़ मह़ल्लात और मसर्रत के बदले में उन्हें पथ्थरों के तक्ये मिले और पथ्थरों से तय्यार शुदा क़ब्रें उन का मदफ़न बनीं, उन के ठिकाने क़रीब हैं लेकिन उन के मकीन दूर के हैं, वोह अपने क़बीलें से अ़लाहि़दा और अहले मह़ल्ले से बे परवा हैं, उन का आबादी से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, अ़ज़ीज़ों और पड़ोसियों के क़रीब होते हुवे भी उन का बाहम कोई मेल मिलाप नहीं है और मेल मिलाप हो भी कैसे सकता है ? उन्हें मसाइब की चक्कियों ने पीस दिया है और नमनाक मिट्टी और पथ्थर उन्हें खा गए हैं, वोह चन्द रोज़ा ज़िन्दगी गुज़ार कर मर गए, उन की ख़ुशह़ाली क़िस्सए पारीना बन गई, उन की मौत पर उन के अ़ज़ीज़ रोए और वोह मिट्टी के नीचे जा सोए, उन्हों ने दुन्या से कूच किया, अब उन्हें वापस नहीं आना है, अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! गोया वोह एक हुक्म से जो क़ाइल की ज़बान से निकल चुका, अब लौट कर किस त़रह़ आ सकता है और उन के सामने क़ियामत के दिन तक आ़लमे बरज़ख़ है गोया तुम भी वैसे ही हो जैसे वोह हो चुके, वोही दुख, वोही क़ब्र में तन्हाई है, तुम उन क़ब्रों के गिरवी हो और उन्हीं में तुम्हें रहना है, तुम पर क्या बीतेगी अगर तुम उन बातों को देख लो जब क़ब्रें खोलीं जाएंगी, दिलों के राज़ सामने होंगे और तुम आ'माल की जज़ा ह़ासिल करने के लिये रब तआ़ला के ह़ुज़ूर खड़े होंगे, गुज़श्ता गुनाहों पर तुम्हारे जिगर फटने को होंगे, तमाम पर्दे हट जाएंगे और तमाम गुनाह और राज़ की बातें तुम्हारे सामने होंगी, तब हर एक को उस के आ'माल का बदला दिया जाएगा।

फ़रमाने इलाही है : "ताकि बुरे अपनी बुराइयों की सज़ा और नेक अपनी अच्छाइयों की जज़ा पाएं।"(1)

मज़ीद फ़रमाया कि "नामए आ'माल रखे जाएंगे हर नेक व बद इसे देखेगा।"(2)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ताकि बुराई करने वालों को उन के किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत अच्छा सिला अ़त़ा फ़रमाए। (پ۲۷، النجم:۳۱)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नामए आ'माल रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि इस के लिखे से डरते होंगे। (پ۱۵، الکھف:٤٩)

रब्बे ज़ुल जलाल हमें और आप को अपने अह्कामात पर अ़मल पैरा होने और अपने दोस्तों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ दे ताकि हम उस की रह्मत के तुफ़ैल ख़ुल्दे बरीं को ह़ासिल कर लें, बिला शुबा वोह ह़मीदो मजीद है।

बा'ज़ दानाओं का क़ौल है कि दिन तीर और लोग निशाने हैं। ज़माना हर दिन एक तीर फेंकता है और तुझे दिन रात की गर्दिश के फ़रेब में मुब्तला कर देता है, यहां तक कि तेरे तमाम अज्ज़ा बोसीदा हो जाते हैं, मरूरे अय्याम में तेरी बक़ा और सलामती ना मुमकिन है, अगर तुझे अपने ऊपर गुज़रे ह़वादिसाते ज़माना की ख़बर लग जाए जिन्हों ने तेरे वुजूद को नुक़्सान में डाला है तो तुझे हर आने वाला दिन ख़ौफ़ज़दा कर दे और एक एक लम्ह़ा तुझ पर भारी हो जाए लेकिन अल्लाह तआ़ला की तदबीर हर तदबीर से बाला है, उस ने इन्सानों को दुन्यावी लज़्ज़तों की मिठास में डाल दिया है ह़ालांकि येह दुन्या ह़न्ज़ल (तुम्मा) से भी ज़ियादा तल्ख़ बनाई गई है। हर मद्दाह़ इस की ज़ाहिरी शानो शौकत की वज्ह से इस के उ़यूब समझने में नाकाम रहा है और हर वाइ़ज़ इस के अ़जाइबात को बढ़ा चढ़ा कर बयान करता है, ऐ अल्लाह ! हमें नेकी की हिदायत दे। आमीन !

किसी दाना से दुन्या और बक़ा के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया : उस ने कहा : इस का वक़्फ़ा चश्मे ज़दन जितना है क्यूंकि जो वक़्त गुज़र गया है वोह वापस नहीं आएगा और मुस्तक़्बिल का तुझे इ़ल्म ही नहीं है, हर दिन गुज़श्ता रात की ख़बर सुनाता है और लम्ह़ात के गुज़रने की दास्तान बयान करता है, ह़वादिसाते ज़माना इन्सान को मुतवातिर तग़य्युर और नुक़्सान से हम किनार करते रहते हैं, ज़माना जमाअ़तों को मुन्तशिर और परा गन्दा कर देता है और दौलत को मुन्तक़िल करता रहता है, उम्मीदें त़वील और ज़िन्दगी थोड़ी है और अल्लाह ही की त़रफ़ हर काम को रुजूअ़ होना है।

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का ख़ुत़बा

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ख़ुत़बे में फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम एक ख़ास मक़्सद के लिये पैदा किये गए हो, अगर तुम इस की तस्दीक़ करते हो तो तुम बे वुक़ूफ़ हो क्यूंकि तुम्हारे आ'माल वैसे नहीं हैं और अगर तुम इसे झुटलाते हो तो हलाकत में पड़ गए हो, तुम्हें इस दुन्या में हमेशा नहीं रहना है बल्कि एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होना है, ऐ बन्दगाने ख़ुदा ! तुम ऐसे घर में रहते हो जिस का खाना गले में फन्दा है और जिस का पीना उच्छू लगना है, अगर तुम एक ने'मत के ह़ुसूल में ख़ुश होते हो तो दूसरी ने'मत की जुदाई तुम्हें मग़मूम कर देती है, उस घर को पहचानो जिस की त़रफ़ तुम को लौटना है और जिस में तुम को हमेशा रहना है, फिर आप रोते हुवे मिम्बर से उतर आए।

हज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने ख़ुत़बे में फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला से डरने और दुन्या को छोड़ने की वसिय्यत करता हूं, दुन्या तुम्हें छोड़ने वाली है मगर तुम उस से चिमटे हुवे हो, वोह तुम्हारे अजसाम बोसीदा करती जा रही है और तुम उसे नया करने की फ़िक्र में हो, तुम्हारी मिसाल एक मुसाफ़िर की है, दुन्या में तुम सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार करने आए हो जिस त़रह़ मुसाफ़िर को सफ़र के दरमियान आराम नहीं होता और वोह शबो रोज़ तै मनाज़िल के लिये क़दम मारता चला जाता है, इसी त़रह़ दुन्या में क़रार नहीं लेना चाहिये और शबो रोज़ आ'माले सालेहा के क़दमों से सफ़रे आख़िरत तै करना चाहिये।

बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन की अजल क़रीब आ गई और कुछ ऐसे हैं जिन की ज़िन्दगियों में से अभी एक ही दिन बाक़ी है, इसे तलाश करने वाला इस की तमन्ना में इसे छोड़ जाता है लिहाज़ा इस के दुख तक्लीफ़ पर वावेला मत करो क्यूंकि येह सब चीज़ें अ़न क़रीब ख़त्म होने वाली हैं, इस के मालो दौलत पर ख़ुशी न मनाओ क्यूंकि येह अ़न क़रीब ज़ाइल हो जाएगी, त़ालिबे दुन्या पर ह़ैरानगी है कि वोह दुन्या तलाश कर रहा है और मौत उस की तलाश में है, वोह मौत से ग़ाफ़िल है मगर मौत उस से ग़ाफ़िल नहीं है।

अरबाबे त़रीक़त का दुन्या के हुसूल में त़रीक़ए कार

हज़रते मुह़म्मद बिन अल हुसैन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि जब अहले इल्मो फ़ज़्ल, साह़िबे अदबो मा'रिफ़त लोगों को मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्या की मज़म्मत की है, वोह उस के ह़ुज़ूर में इन्तिहाई ज़लील चीज़ है और वोह इसे अपने दोस्तों के लिये पसन्द नहीं करता और ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلّم ने इस से किनारा कशी पसन्द फ़रमाई है और सह़ाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم को इस के फ़रेब से बचने की ताकीद की तो अहले इल्म ह़ज़रात ने इस से दरमियानी ह़िस्सा लिया, बाक़ी को **अल्लाह** की राह में बांट दिया, वोह क़ुव्वते ला-यमूत(1) पर राज़ी हो गए और बाक़ी को छोड़ दिया, उन्हों ने मा'मूली कपड़ों से तन ढांपा, मा'मूली ग़िज़ा से भूक मिटाई और दुन्या को फ़ानी और आख़िरत को बाक़ी समझते हुवे वोह दुन्या से एक सुवार का ज़ादे राह ले कर चले, उन्हों ने दुन्या को वीरान और आख़िरत को आबाद कर लिया और वोह सरापा आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए जिस के मुतअ़ल्लिक़ उन्हें यक़ीन था कि वोह अ़न क़रीब इसे पा लेंगे और वोह दिली त़ौर पर आख़िरत की त़रफ़ कूच कर गए जिस के मुतअ़ल्लिक़ उन्हें कामिल यक़ीन था कि वोह अ़न क़रीब अपने जिस्मों समेत उधर ही जाएंगे जहां वोह त़वील ने'मतें ह़ासिल करेंगे और मसाइब से उन्हें कोई वासित़ा नहीं होगा और सब कुछ **अल्लाह** की तौफ़ीक़ से होगा जिस की पसन्द उन्हों ने अपनी पसन्द और जिस की ना पसन्दीदगी को उन्हों ने ना पसन्द समझ लिया है।

1.....इस क़दर ख़ूराक जिस से ज़िन्दगी क़ाइम रहे। (उर्दू लुग़त, 14/359)

बाब 33

फ़ज़ीलते क़नाअ़त

फ़क़ीर के लिये ज़रूरी है कि वोह क़ानेअ़ हो, मख़्लूक़ात से उम्मीदें वाबस्ता न करे, उन के अम्वाल पर निगाह न रखे और न ही मालो दौलत के हुसूल में ह़रीस हो, येह उस वक़्त मुमकिन है जब इन्सान ब क़दरे ज़रूरत अपने खाने पीने पहनने और रिहाइश की चीज़ों पर मुत़्मइन हो जाए और हर मा'मूली चीज़ पर इक्तिफ़ा करे और अपनी उम्मीदें एक दिन या एक माह से ज़ियादा त़वील न करे, क्यूंकि कसरत की त़लब और तूले अमल से क़नाअ़त का मफ़्हूम ख़त्म हो जाता है और इन्सान ह़िर्स और लालच में मुब्तला हो जाता है, फिर येही त़म्अ़ और लालच उसे बद अख़्लाक़ी और बुराइयों पर आमादा करते हैं जिन से इन्सान की अच्छी आ़दात तबाह हो जाती हैं और ह़िर्स व त़म्अ़ उस की फ़ित़रते सानिया बन जाते हैं।

इन्सान के पेट को क़ब्र की मिट्टी ही भरती है

फ़रमाने नबवी है : अगर इन्सान को सोने की दो वादियां भी मिल जाएं तो वोह तीसरी की तमन्ना करेगा, इन्सान के पेट को क़ब्र की मिट्टी ही पुर करती है और अल्लाह तआ़ला तौबा करने वाले की तौबा को क़बूल फ़रमा लेता है।(1)

ह़ज़रते अबू वाक़िदी अल्लैसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल होती तो हम ब ग़रज़े ता'लीम ह़ाज़िर होते, एक मरतबा हम ह़ाज़िर हुवे तो आप ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : हम ने मालो दौलत नमाज़ व ज़कात की अदाएगी के लिये दिया है, अगर इन्सान को सोने की एक वादी मिल जाए तो वोह दूसरी की तमन्ना करेगा अगर दूसरी मिल जाए तो तीसरी की आरज़ू करेगा, इन्सान के पेट को क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है और अल्लाह तआ़ला हर तौबा करने वाले की तौबा क़बूल कर लेता है।(2)

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : सूरए बराअत जैसी एक और सूरत भी नाज़िल हुई थी जो बा'द में उठा ली गई, उस में था कि अल्लाह तआ़ला इस दीन की ऐसी क़ौमों से इमदाद करवाएगा जिन के लिये भलाई में कोई ह़िस्सा नहीं होगा और अगर इन्सान को

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب ما یتقی من فتنۃ المال، ٤/٢٢٩، الحدیث ٦٤٣٨

2 ......شعب الایمان، الحادی و السبعون...الخ، باب فی الزھد...الخ، ٧/٢٧١، الحدیث ١٠٢٧٧

दौलत की दो वादियां दे दी जाएं तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा, इन्सान का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भरेगी और अल्लाह तआला तौबा करने वाले की तौबा को क़बूल करता है।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : दो भूके कभी सैर नहीं होते, इल्म का भूका और दौलत का भूका।(2)

फ़रमाने नबवी है कि इन्सान बूढ़ा हो जाता है मगर दो चीज़ें जवान हो जाती हैं, हिर्स और दौलत की महब्बत।(3)

चूंकि येह ख़स्लत इन्सान को गुमराह कर देती है इस लिये अल्लाह तआला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़नाअत की ता'रीफ़ फ़रमाई है, चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है कि उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो इस्लाम के रास्ते पर चला और ज़िन्दगी की मा'मूली गुज़रान पर क़नाअत कर ली।(4)

फ़रमाने नबवी है : क़ियामत के दिन हर अमीर और फ़क़ीर येह तमन्ना करेगा कि इसे दुन्या में मा'मूली गिज़ा मुयस्सर आती।(5)

फ़रमाने नबवी है कि तवंगरी माल की कसरत से नहीं है बल्कि हक़ीक़ी मालदारी दिल की बे परवाई है।(6) (تونگری بہ دل است نہ بہ مال)

दुन्या की बहुत जुस्तजू मत करो

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिर्स और दुन्या की बहुत जुस्तजू करने से मन्अ फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगो ! अच्छे तरीक़े से रिज़्क़ हासिल करो क्यूंकि बन्दे को वोही कुछ मिलता है जो उस की क़िस्मत में लिख दिया गया है और कोई इन्सान अपना रिज़्क़ ख़त्म किये बिग़ैर दुन्या से नहीं जाएगा।(7)

1 ......مشكل الآثار للطحاوى، الجزء الثانى، ١/٢٨٧، الحديث٢١٦٧-٢١٧٢

2 ......شعب الايمان ، الحادى و السبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ، ٧/٢٧١، الحديث ١٠٢٧٩

3 ......مسلم كتاب الزكاة، باب كراهة الحرص على الدنيا، ص ٥٢١، الحديث ١١٣-(١٠٤٦) و١١٥-(١٠٤٧) ماخوذاً

4 ......ترمذى، كتاب الزهد ، باب ماجاء فى الكفاف...الخ، ٤/١٥٦، الحديث ٢٣٥٦

5 ......ابن ماجه،كتاب الزهد، باب القناعة، ٤/٤٤٢، الحديث ٤١٤٠

6 ......بخارى، كتاب الرقاق ، باب الغنى غنى النفس، ٤/٢٣٣، الحديث ٦٤٤٦

7 ......سنن الكبرى للبيهقى،كتاب البيوع، باب الإجمال فى طلب الدنيا...الخ،٥/٤٣٤، الحديث١٠٤٠٣ - ١٠٤٠٥ و شعب الايمان للبيهقى ، ٧/٢٨٨، الحديث ١٠٣٣٨

मरवी है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रब्बे जलील से सुवाल किया : तेरा कौन सा बन्दा ज़ियादा ग़नी है ? इरशादे रब्बानी हुवा : जो मेरे अ़ता कर्दा रिज़्क़ पर क़नाअ़त करता है, फिर पूछा : आ़दिल कौन है ? रब तआ़ला ने फ़रमाया : जो अपने आप से इन्साफ़ करता है ।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रूहुल क़ुदुस ने मुझे ख़बर दी है कि कोई शख़्स दुन्या से अपना रिज़्क़ पूरा किये बिग़ैर नहीं जाएगा लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला से डरो और रिज़्क़े ह़लाल ह़ासिल करो ।(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मुझे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुझे भूक लगे तो एक रोटी और पानी का पियाला तेरे लिये काफ़ी है और दुन्या की मज़ीद ख़्वाहिश हलाकत है ।(3)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मुझे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : परहेज़गार बन ! तू सब से बड़ा आ़बिद होगा, क़नाअ़त कर ! तू सब से बड़ा शुक्र गुज़ार होगा, जो अपने लिये पसन्द करता है वोही दूसरों के लिये पसन्द कर ! तू मोमिन होगा ।(4)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लालच से मन्अ़ फ़रमाया है चुनान्चे, ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक बदवी ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मुझे एक मुख़्तसर नसीह़त कीजिये ! आप ने फ़रमाया : हर नमाज़ को ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ समझ कर पढ़ ! कोई ऐसी बात न कर जिस पर कल मा'ज़िरत करनी पड़े और लोगों के माल से उम्मीद न रख ।(5)

ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक अल अशजई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हम सात, आठ या नव आदमी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बैठे हुवे थे, आप ने फ़रमाया : तुम रसूलुल्लाह की बैअ़त नहीं करते ? चुनान्चे, हम ने हाथ बढ़ा कर बैअ़त की, हम में से किसी ने पूछा : या रसूलल्लाह ! आप ने हम से किस चीज़ की बैअ़त ली ? आप ने फ़रमाया : येह कि **अल्लाह** की इबादत करो, उसे ला शरीक समझो, पांच नमाज़ें पढ़ो, सुनो और इत़ाअ़त करो, एक बात आप ने

---

1 ......الزهد لهناد ، باب المتحابين، ١/٢٧٧، الحديث ٤٨٩ و تاريخ مدينه دمشق، ٦١/١٣٩

2 ......شرح السنة ، كتاب الرقاق، باب التوكل على الله ، ٧/٣٣٠، الحديث ٤٠٠٦، ملخصاً

3 ......شعب الايمان، الحادى والسبعون...الخ، باب فى الزهد...الخ، ٧/٢٩٥، الحديث ١٠٣٦٦

4 ......ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب الورع والتقوى، ٤/٤٧٦، الحديث ٤٢١٧

5 ......مسند احمد، حديث ابى ايوب الانصارى ، ٩/١٣٠، الحديث ٢٣٥٥٧

आहिस्ता की, फिर फ़रमाया : और लोगों से किसी चीज़ का सुवाल न करो। रावी कहते है कि हम में से कुछ ऐसे भी थे जिन का अगर ताज़ियाना गिर जाता तो वोह किसी से उठा कर देने का सुवाल न करते।[1]

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है : तम्अ़ का तर्क, फ़क्र और लोगों से ना उम्मीदी ग़ना है, जो लोगों के मालो दौलत से ना उम्मीद रहता है वोह सब से बे परवा हो जाता है।

किसी दाना से मालदारी के मा'ना पूछे गए तो उस ने जवाब दिया कि मुख़्तसर उम्मीदें और मा'मूली गुज़रान पर राज़ी होने का नाम ग़ना है, इसी लिये कहा गया है :

العیش ساعات تمر و خطوب ایام تکر
اقنع بعیشک ترضه واترک هواک تعیش حر
فلرب حتف ساقه ذهب و یاقوت و در

《1》...ऐश की सिर्फ़ चन्द घड़ियां हैं और कारहाए नुमायां अन्जाम देने के लिये वक़्त कम है।
《2》...तू क़नाअ़त कर उस ऐश पर जो तुझ को ह़ासिल है और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को छोड़ कर आज़ाद हो जा और ऐश की ज़िन्दगी बसर कर।
《3》...बहुत से वोह लोग जिन को मौत आई वोह सोना चांदी और लअ्लो जवाहिर छोड़ कर मर गए।

हज़रते मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुश्क रोटी पानी में भिगो कर खाते और कहते : जो इस पर क़नाअ़त कर ले वोह किसी का मोह़ताज नहीं होगा।

बेहतरीन दौलत

हज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि तुम्हारे लिये बेहतरीन दौलत वोह है जो तुम्हारे क़ब्ज़े में नहीं है और क़ब्ज़े में आई हुई दौलत में वोह बेहतरीन दौलत है जो तुम्हारे हाथ से निकल गई है।

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : हर दिन एक फ़िरिश्ता पुकार कर कहता है कि ऐ इन्सान ! गुमराह करने वाले बहुत से माल से वोह मा'मूली माल बेहतर है जो तुझे ज़िन्दा रहने में मदद दे।

हज़रते सुमैत़ बिन अ़जलान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का फ़रमान है कि ऐ इन्सान तेरा बालिश्त भर पेट तुझे जहन्नम में न ले जाए। किसी दाना से पूछा गया : तेरा माल क्या है ? उस ने कहा : ज़ाहिर में पाकीज़गी, बात़िन में नेकी और लोगों से ना उम्मीदी।

---

1 ......مسلم، کتاب الزکاۃ، باب کراهة المسألة للناس، ص ۵۱۹، الحدیث ۱۰۸ـ (۱۰۴۳)

मरवी है कि रब्बे जुल जलाल ने इन्सान से फ़रमाया : अगर तुझे सारी दुन्या मिल जाती तब भी तुझे इस दुन्या से दो वक़्त की ख़ूराक मिलती, अब जब कि मैं ने दुन्या से तुझे सिर्फ़ ख़ूराक दी है और इस का हिसाब दूसरों पर रख दिया है तो मैं ने येह तुझ पर एह़सान किया है।(1)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : जब तुम कोई ह़ाजत त़लब करो तो थोड़ी मांगो, इतना न मांगो कि दूसरे पर वबाल बन जाओ क्यूंकि जो कुछ तुम्हारा नसीब है वोह तुम्हें ज़रूर मिलेगा।

बनू उमय्या के एक ह़ाकिम ने ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ ख़त़ लिखा जिस में उन से किसी ज़रूरत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया ताकि वोह इसे पूरी कर दें। अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब में लिखा, मैं ने अपनी ज़रूरतें अपने मालिक की बारगाह में पेश की हुई हैं, जिन को वोह पूरा कर देता है, ख़ुश हो जाता हूं और जिन को वोह रोक देता है उस से क़नाअ़त कर लेता हूं।

किसी दाना से पूछा गया कि कौन सी चीज़ दाना के लिये बाइसे ख़ुशी और दुख दूर करने का सामान है? दाना ने जवाब दिया कि दाना के लिये सब से बड़ी ख़ुशी नेक अ़मल और ग़म दूर करने में उस के मददगार **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी रहना है।

एक दाना का क़ौल है : मैं ने लोगों में सब से ग़मज़दा ह़ासिद को, सब से बेहतरीन ज़िन्दगी वाला क़नाअ़त पसन्द को, सब से ज़ियादा मसाइब पर सब्र करने वाला लालची को, सब से ज़ियादा ख़ुश तारिके दुन्या को और सब से ज़ियादा पशेमान ह़द से तजावुज़ करने वाला आ़लिम को पाया है। इसी मौज़ूअ़ पर कहा गया है :

ارفه ببال فتى امسى على ثقة ان الذى قسم الارزاق يرزقه

فالعرض منه مصون لا يدنسه والوجه منه جديد ليس يخلقه

ان القناعة من يحلل بساحتها لم يلق فى دهره شيئا يورقه

《1》......जब जवान इस बात पर मुकम्मल ए'तिमाद करता है कि राज़िक़े मुत़लक़ उसे ज़रूर रिज़्क़ देगा।

《2》......तो उस की इ़ज़्ज़त मैली नहीं होती और न ही उस का चेहरा कभी पुराना होता है।

《3》......जो शख़्स क़नाअ़त इख़्तियार कर लेता है उसे कभी किसी चीज़ की परवाह नहीं हुई और उस पर कभी दुख का साया नहीं पड़ता।

---

(1)......اتحاف السادة المتقين ، كتاب ذم البخل...الخ ، ٧٠١/٩ و الكشكول لبهاء الدين العاملى ، ١٦٣/٢

एक और शाइ़र कहता है :

حتی متی انا فی حل و ترحال — وطول سعی وادبار واقبال

ونـازح الدار لا انفک مغتربا — عن الاحبة لايدرون ماحالی

بمشرق الارض طورا ثم مغربها — لايخطر الموت من حرصی علی بالی

ولـو قنعت اتانی الرزق فی دعة — ان القنوع الغنی لاکثرة المال

﴾1﴿......कब तक मैं इस त़रह़ सफ़र करता रहूंगा और ज़बरदस्त जिद्दो जहद और येह आमदो रफ़्त जारी रखूंगा ?

﴾2﴿......मैं घर से दूर हमेशा दोस्तों से पोशीदा रहता हूं, उन्हें मेरे ह़ालात का इ़ल्म नहीं होता।

﴾3﴿......मैं कभी मशरिक़ में होता हूं और कभी मग़रिब में, ह़िर्स का ग़लबा यूं है कि मेरे दिल में कभी मौत का ख़याल ही नहीं आता।

﴾4﴿......अगर मैं क़नाअ़त करता तो ख़ुशह़ाली की ज़िन्दगी बसर करता क्यूंकि ह़क़ीक़ी तवंगरी क़नाअ़त में है कसरते मालो दौलत तवंगरी नहीं है।

ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का इरशाद

ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का इरशाद है कि क्या मैं तुम्हें न बतलाऊं कि मैं **अल्लाह** तआ़ला के माल से क्या कुछ लेना ह़लाल समझता हूं ? सुनो ! सर्दी और गर्मी के लिये दो चादरें और इस के इ़लावा मुझे ह़ज, उ़मरह और ग़िज़ा के लिये क़ुरैश के मा'मूली जवान की शिकम सैरी के बक़दर ग़िज़ा की फ़राहमी। लोगो ! मैं मुसलमानों से आ'ला और अरफ़अ़ नहीं हूं, ब ख़ुदा मैं नहीं जानता कि इतना लेना भी जाइज़ है या नहीं ? गोया आप इतनी सी मिक़्दार में भी शक फ़रमा रहे थे कि कहीं येह क़नाअ़त के दाइरे से ख़ारिज तो नहीं है ?

एक बदवी ने अपने भाई को ह़िर्स से रोकते हुवे कहा : तुम दुन्या के त़ालिब हो और उस चीज़ के मत़लूब हो जो कभी टल नहीं सकती, तुम ऐसी चीज़ को तलाश कर रहे हो जो पहले ही तुम्हारी हो चुकी है, गोया कि ग़ाइब चीज़ तुम्हारे सामने और ह़ाज़िर चीज़ तुम से मुन्तक़िल होने वाली है, शायद तुम ने किसी ह़रीस को मह़रूम और किसी तारिके दुन्या को रिज़्क़ पाते हुवे नहीं देखा है, इसी मौज़ूअ़ पर किसी शाइ़र ने कहा है :

اراک یزیدک الاثراء حرصا — علی الدنیا کانک لا تموت

فهل لک غایة ان صرت یوما — الیها قلت حسبی قد رضیت

﴾1﴿......मैं देख रहा हूं कि तेरा तमव्वुल तेरे हि़र्स को बढ़ा रहा है गोया कि तू नहीं मरेगा।

﴾2﴿......कभी तू अपनी हि़र्स से रुक कर येह भी कहेगा कि बस मुझे येह काफ़ी है और मैं इस क़दर पर राज़ी हूं।

एक ह़रीस को सबक़

ह़ज़रते शा'बी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि एक आदमी ने चन्डोल (चिड़या) को शिकार किया, चिड़या ने कहा : तुम मेरा क्या करोगे ? उस आदमी ने कहा : ज़ब्ह़ कर के खाऊंगा, चिड़या ने कहा : ब ख़ुदा ! मेरे खाने से तुम्हारा पेट नहीं भरेगा, मैं तुम्हें तीन ऐसी बातें बताऊंगी, जो मेरे खाने से कहीं बेहतर हैं, एक तो मैं तुम को इस क़ैद की ह़ालत में ही बताऊं, दूसरी दरख़्त पर बैठ कर और तीसरी पहाड़ पर बैठ कर बताऊंगी।

आदमी ने कहा : चलो ठीक है पहली बात बताओ ! चिड़या ने कहा : याद रखो गुज़री बात पर अफ़्सोस न करना, आदमी ने उसे छोड़ दिया, जब वोह दरख़्त पर जा कर बैठ गई तो आदमी ने कहा : दूसरी बात बताओ ! चिड़या ने कहा : ना मुमकिन बात को मुमकिन न समझना। फिर वोह उड़ कर पहाड़ पर जा बैठी और कहने लगी : ऐ बद नसीब ! अगर तू मुझे ज़ब्ह़ कर देता तो मेरे पोटे से बीस मिस्क़ाल के दो मोती निकलते, येह सुन कर वोह शख़्स अफ़्सोस से अपने होंट कांटते हुवे कहने लगा कि अब तीसरी बात बता दे ! चिड़या बोली : तुम ने तो पहली दो को भुला दिया है, अब तीसरी बात किस लिये पूछते हो ? मैं ने तुम से कहा था कि गुज़श्ता बात पर अफ़्सोस न करना और ना मुमकिन चीज़ को मुमकिन न समझना, मैं तो अपने गोश्त, ख़ून और परों समेत भी बीस मिस्क़ाल की नहीं हूं चे जाएकि मेरे पोटे में बीस बीस मिस्क़ाल के दो मोती हों, येह कहा और वोह उड़ गई।

येह इन्सान के इन्तिहाई ह़रीस होने की मिसाल है क्यूंकि वोह भी लालच में ना मुमकिन को मुमकिन समझते हुवे राहे ह़क़ से भटक जाता है।

ह़ज़रते इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है : उम्मीदें तेरे दिल का जाल और पैरों की बेड़ियां हैं, दिल से उम्मीदें निकाल दे, तेरे पाउं बेड़ियों से आज़ाद हो जाएंगे।

हि़र्स की मज़म्मत

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद अल यज़ीदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि मैं ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद के हां आया तो वोह एक ऐसे काग़ज़ को पढ़ रहा था, जिस पर आबे ज़र से कुछ लिखा हुवा था,

ख़लीफ़ा ने जब मुझे देखा तो मुस्कुरा दिया। मैं ने कहा : अमीरल मोमिनीन ! कोई ख़ास बात है ? कहा : मैं ने बनू उमय्या के ख़ज़ाने में येह दो शे'र पाए जो मुझे बहुत अच्छे लगे हैं और मैं ने इन में एक और शे'र का इज़ाफ़ा कर दिया है :

اذا سد باب عنک من دون حاجة	فدعه لاخری ینفتح لک بابها
فان قراب البطن یکفیک ملؤه	ویکفیک سوات الامور اجتنابها
ولا تک مبذالا لعرضک واجتنب	رکوب المعاصی یجتنبک عقابها

﴾1﴿......जब तेरी हाजत रवाई का दरवाज़ा तुझ पर बन्द हो जाए तो रुक जा, कोई और तेरी हाजत रवाई कर देगा।

﴾2﴿......पेट का बन्दा होना इस के भरने के लिये काफ़ी है और काम की बुराइयों से बचने के लिये इन से इजतिनाब ज़रूरी है।

﴾3﴿......और अपने मक़्सद को हासिल करने के लिये रकीक हरकतें मत कर और इर्तिकाबे मआसी से परहेज़ कर जिस की वज्ह से तू सज़ा से महफ़ूज़ हो जाएगा।

इल्म इन्सान को हिर्स और गदायाने इकराम से महफ़ूज़ रखता है

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि उलमा के इल्म हासिल कर लेने के बा'द कौन सी चीज़ उन के दिलों से इल्म निकाल लेती है ? हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : लालच, हिर्स और लोगों के आगे हाथ फैलाना। किसी शख़्स ने हज़रते फुज़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस क़ौल की तशरीह चाही तो इन्हों ने जवाब दिया कि इन्सान लालच में जब किसी चीज़ को अपना मत़लूब व मक़्सूद बना लेता है तो उस का दीन रुख़्सत हो जाता है। हिर्स येह है कि इन्सान कभी इस चीज़ की और कभी उस चीज़ की त़लब में रहता है यहां तक कि वोह सब कुछ हासिल करना चाहता है और कभी इस मक़्सद के हुसूल के लिये तेरा साबिक़ा मुख़्तलिफ़ लोगों से पड़ेगा, जब वोह तेरी ज़रूरतें पूरी करेंगे तो तेरी नाक में नकील डाल कर जहां चाहेंगे ले जाएंगे, वोह तुझ से अपनी इ़ज़्ज़त चाहेंगे और तू रुस्वा हो जाएगा और इसी महब्बते दुन्या के बाइ़स जब भी तू उन के सामने से गुज़रेगा तो उन्हें सलाम करेगा और जब वोह बीमार होंगे, तू इ़यादत को जाएगा और येह तेरे तमाम अफ़्आ़ल ख़ुदा की रिज़ा के लिये नहीं होंगे। तेरे लिये बहुत अच्छा होता अगर तू उन लोगों का मोहताज न होता।

बाब 34

फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि इस उम्मत के सब से बेहतरीन लोग फ़ुक़रा हैं और सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले कमज़ोर लोग हैं।[1]

फ़रमाने नबवी है : मेरी दो बातें हैं, जो इन्हें पसन्द करता है वोह मुझे पसन्द करता है जो इन्हें बुरा समझता है वोह मुझे बुरा समझता है, फ़क़्र और जिहाद।[2]

येह दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो

मरवी है कि जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और कहा : अल्लाह तआ़ला आप को सलाम फ़रमाता है और फ़रमाता है कि अगर आप चाहें तो मैं पहाड़ सोने का बना दूं ! जो आप के साथ साथ रहे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द लम्हे ख़ामोश रहने के बा'द फ़रमाया कि जिब्रील ! येह दुन्या तो उस का घर है जिस का कोई घर न हो, येह उस की दौलत है जिस के पास कोई दौलत न हो और इसे वोही जम्अ़ करता है जो बे वुक़ूफ़ हो। जिब्रील बोले : ऐ अल्लाह के नबी ! अल्लाह तआ़ला आप को इसी हक़ व सदाक़त पर क़ाइम रखे।

मरवी है कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام असनाए सफ़र में एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो कम्बल लपेटे सो रहा था, आप ने उसे जगा कर फ़रमाया : ऐ सोने वाले उठ ! और अल्लाह को याद कर ! उस शख़्स ने कहा : तुम मुझ से और क्या चाहते हो कि मैं ने दुन्या को दुन्यादारों के लिये छोड़ दिया है। आप ने फ़रमाया : तो फिर ऐ मेरे दोस्त ! सो जा।

अल्लाह अपने महबूब बन्दे के दिल से दुन्या की महब्बत निकाल देता है

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام एक ऐसे शख़्स के क़रीब से गुज़रे जो ईंट का तक्या बनाए, कम्बल में लिपटा हुवा ज़मीन पर सो रहा था और उस की दाढ़ी और तमाम चेहरा गुबार आलूद हो रहा था।

---

1 ......فردوس الاخبار، ۲/۱۸۳، الحدیث ۲۹۲۱

2 ......طبقات الشافیة الکبری للسبکی، ۶/۳۶۶ و بریقة محمودیة فی شرح طریقة محمدیة، ۳/۳۹

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब तआ़ला ! तेरा येह बन्दा दुन्या में बरबाद हो गया। **अल्लाह** तआ़ला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य की और फ़रमाया : तुम्हें पता नहीं ! जब मैं किसी बन्दे पर अपने करम के दरवाज़े मुकम्मल त़ौर पर खोल देता हूं, उस से दुन्या की उल्फ़त ख़त्म कर देता हूं।

हज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक मेहमान आया मगर आप के पास उस की मेज़बानी के लिये कुछ न था, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़ैबर के एक यहूदी के पास भेजा और फ़रमाया : उसे कहो कि रजबुल मुरज्जब के चांद तक हमें क़र्ज़ या उधार में आटा दे दे। मैं उस यहूदी के पास गया तो उस ने कहा : कोई चीज़ गिरवी रखो तब आटा मिलेगा। मैं ने आप को ख़बर दी तो आप ने इरशाद फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मैं ज़मीनो आस्मान का अमीन हूं, अगर वोह क़र्ज़ या उधार में आटा दे देता तो मैं ज़रूर वापस करता, लो मेरी येह ज़िरह ले जाओ और उस के पास गिरवी रख दो। जब मैं ज़िरह ले कर निकला तो आप की तसल्ली के लिये येह आयत नाज़िल हुई :

لَا تَمُدَّنَّ عَیۡنَیۡكَ اِلٰی مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ (1)

और ऐ सुनने वाले उस की त़रफ़ अपनी आंखें न लगा जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों (ज़न व शोहर) को बरतने के लिये दी है जीती दुन्या की ताज़गी।

फ़रमाने नबवी है कि फ़क़्र मोमिन के लिये घोड़े के मुंह पर ह़सीन बालों से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत है।[2]

फ़रमाने नबवी है कि जिस का जिस्म तन्दुरुस्त, दिल मुत़मइन है और उस के पास एक दिन की ग़िज़ा मौजूद है तो गोया उसे (काइनात की) सारी दौलत मिल गई है।[3]

हज़रते का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : जब तू फ़क़्र को आता देखे तो कहना ख़ुश आमदीद ! ऐ नेकों के लिबास !

दीनदार शिकार न कर सका और दुन्यादार ने ख़ूब शिकार किया

हज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : **अल्लाह** तआ़ला के एक नबी का साह़िले दरया से गुज़र हुवा, वहां उन्हों ने देखा कि एक शख़्स मछलियों का शिकार कर रहा है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने उन के कुछ जोड़ों को बरतने को दी। (پ۱۴،الحجر:۸۸) مسند البزار، مسند ابی رافع مولی...الخ،۹/۳۱۵،الحدیث ۳۸۶۳

2.....المعجم الکبیر، ۷/۲۹۵، الحدیث ۷۱۸۱

3.....ترمذی ، کتاب الزھد، باب ۳۴، ۴/۱۵۵، الحدیث ۲۳۵۳

उस ने **अल्लाह** तआ़ला का नाम ले कर दरया में जाल डाला मगर कोई मछली न फंसी। फिर उन्ही नबी का गुज़र एक दूसरे शख़्स के पास से हुवा जो मछलियों का शिकार कर रहा था, उस ने शैत़ान का नाम ले कर अपना जाल फेंका, जब जाल खींचा तो वोह मछलियों से भरा निकला। **अल्लाह** के नबी ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ आ़लिमुल ग़ैब ! इस में क्या राज़ है ? **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि मेरे नबी को उन दो शख़्सों का मक़ामे आख़िरत दिखलाओ, जब उन्हों ने पहले शख़्स का **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर इ़ज़्ज़त व वक़ार और दूसरे शख़्स की बे हुरमती देखी तो बे साख़्ता कह उठे : इलाहल आ़लमीन ! मैं तेरी तक़्सीम पर राज़ी हूं।

फ़रमाने नबवी है : मैं ने जन्नत को देखा उस में अक्सर फ़ुक़रा थे, मैं ने जहन्नम को देखा उस में अक्सर मालदार औ़रतें थीं।[1]

एक रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त किया : मालदार कहां हैं ? तो मुझे बतलाया गया उन्हें मालदारी ने गिरिफ़्तार कर रखा है।[2]

एक दूसरी ह़दीस में है : मैं ने जहन्नम में अक्सर औ़रतों को देख कर कहा : ऐसा क्यूं है ? तो मुझे बतलाया गया येह इन की सोने और ख़ुश्बूओं से मह़ब्बत की वज्ह से है।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "फ़क़्र" दुन्या में मोमिन के लिये तोह़फ़ा है।[4]

एक रिवायत में है : अम्बियाए किराम में सब से आख़िर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत में दाख़िल होंगे क्यूंकि वोह दुन्यावी दौलत और इस की शाही रखते थे और सह़ाबा में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने तमव्वुल की वज्ह से सब से आख़िर में जन्नत में जाएंगे।[5] दूसरी ह़दीस में है कि मैं ने उन्हें (ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को) घुटनों के बल जन्नत में दाख़िल होते देखा।[6]

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल है कि मालदार बहुत दुश्वारी के साथ जन्नत में दाख़िल होगा।

---

1 ...... مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص ، ٥٨٢/٢، الحديث ٦٦٢٢
2 ......قوت القلوب ، ٤٠٤/١
3 ......قوت القلوب ، ٤١٦/٢ وكشف الخفاء، ٣٥٥/١، الحديث١٢٨٦
4 ......فردوس الاخبار، ٣٠٥/١، الحديث ٢٢١٩
5 ......المعجم الاوسط ، ١٣٩/٣، الحديث ٤١١٢ ماخوذاً ليس ذكر عبد الرحمن بن عوف
6 ......المعجم الكبير، ١٢٩/١، الحديث ٢٦٤

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मरवी है : आप ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** तआ़ला किसी इन्सान से महब्बत करता है तो उसे आज़माइश में डाल देता है और जब किसी से बहुत ज़ियादा महब्बत करता है तो उस के लिये ज़ख़ीरा कर देता है। पूछा गया : हुज़ूर ज़ख़ीरा कैसे होता है ? आप ने फ़रमाया : उस इन्सान के माल और अवलाद में से कुछ बाक़ी नहीं रहता।[1]

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब तू "फ़क्र" को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह पाए तो उसे "ख़ुश आमदीद" कह और "ऐ नेकों की अ़लामत" कह कर उस का ख़ैर मक्दम कर और जब तुम मालो दौलत को अपनी त़रफ़ आता देखो तो कहो, दुन्या में मुझे येह किसी गुनाह की जल्दी सज़ा मिल रही है।[2]

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने **अल्लाह** तआ़ला से अ़र्ज़ किया : इलाही ! मख़्लूक़ में तेरे दोस्त कौन से हैं ताकि मैं उन से महब्बत करूं, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : फ़क़ीर और फ़क्र।

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का फ़रमान है : मैं फ़क्र को दोस्त रखता हूं और मालदारी से नफ़रत करता हूं और आप को "ऐ मिस्कीन" कह कर बुलाया जाना सब नामों से अच्छा लगता।

जब अ़रब के सरदारों और मालदारों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : आप अपनी मजलिस में एक दिन हमारे लिये और एक दिन उन फ़ुक़रा के लिये मुतअ़य्यन कीजिये, पस वोह हमारे दिन में न आएं और हम उन के दिन में नहीं आएंगे। फ़ुक़रा से इन की मुराद ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते सलमान, ह़ज़रते सुहैब, ह़ज़रते अबू ज़र, ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत, ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर, ह़ज़रते अबू हुरैरा और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के फ़ुक़रा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात को मान लिया क्यूंकि उन फ़ुक़रा के लिबास से इन दौलत मन्दों को बदबू आती थी, उन फ़ुक़रा के लिबास ऊन के थे और पसीना आने की सूरत में उन के कपड़ों से जो बू आती थी वोह अक़रअ़ बिन ह़ाबिस अत्तमीमी, उ़यैना बिन ह़िस्न अल फ़ज़ारी, अ़ब्बास बिन मिरदास अस्सामी और दीगर अग़नियाए अ़रब को बहुत चीं-बह-जबीं कर दिया करती थी चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस बात पर रिज़ामन्दी के बाइ़स क़ुरआने मजीद की येह आयात नाज़िल हुई :

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفراسة ٤٦/٦، الجزء الحادى عشر، الحديث ٣٠٧٩٠ (راوى ابوعقبه خولانى)

2 ......فردوس الاخبار،١٧٥/٣،الحديث٤٤٦٩وحلية الاولياء، ابراهيم بن عبدالله، ٣٤٢/٦،الحديث٨٨٤٥

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَاۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا۝۲۸ وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْیُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ (1)

एक रोज़ ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की इजाज़त त़लब की, उस वक़्त आप के पास एक कुरैशी सरदार बैठा हुवा था,(2) आप को इब्ने उम्मे मक्तूम की आमद पसन्दीदा मा'लूम नहीं हुई, तब **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयात नाज़िल फ़रमाईं :

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤىۙ۝۱ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰىؕ۝۲ وَ مَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّهٗ یَزَّكّٰۤىۙ۝۳ اَوْ یَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰىؕ۝۴ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰىۙ۝۵ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰىؕ۝۶ (3)

उस ने तेवरी चढ़ाई और मुंह मोड़ लिया जब उस के पास नाबीना आया और किस चीज़ ने तुम्हें येह मा'लूम कराया कि शायद वोह पाक हो जाता या नसीह़त सुनता पस उसे नसीह़त फ़ाइदा देती जो शख़्स बे परवाई करता है तुम उस की ख़ात़िर इसे रोकते हो।

यहां नाबीना से मुराद ह़ज़रते इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बे परवा शख़्स से मुराद वोह कुरैशी सरदार है जो हुज़ूर की ख़िदमत में आया हुवा था।

दुन्या के ना मुराद बन्दे का क़ियामत में ए'ज़ाज़

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है : क़ियामत के दिन एक बन्दे को लाया जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला उस से इस त़रह़ मा'ज़िरत करेगा जैसे दुन्या में एक शख़्स दूसरे से मा'ज़िरत

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ो शाम अपने रब को पुकारते हैं, उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें, क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार (ज़ीनत) चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया और फ़रमा दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे। (پ۱۵،الکھف:۲۸،۲۹)

ابن ماجه، کتاب الزھد،باب مجالسة الفقراء،٤/٤٣٥، الحدیث٤١٢٧و الدرالمنثور،٣/٢٧٣

2..... सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस सरदार को दा'वते इस्लाम दे रहे थे।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा इस पर कि उस के पास वोह नाबीना ह़ाज़िर हुवा और तुम्हें क्या मा'लूम शायद वोह सुथरा हो, या नसीह़त ले तो उसे नसीह़त फ़ाइदा दे वोह जो बे परवाह बनता है, तुम उस के तो पीछे पड़ते हो। (پ۳۰،عبس:۱-۶)...... ترمذی، کتاب التفسیر ، باب ومن سورة عبس، ٥/٢١٩،الحدیث ٣٣٤٢

करता है और अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : मुझे मेरी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! मैं ने तुझ से दुन्या को तेरी बे क़द्री की वज्ह से नहीं फेरा था बल्कि उस इ़ज़्ज़त और करामत के सबब जो मैं ने तेरे लिये तय्यार की थी तुझे दुन्या से मह़रूम रखा, ऐ मेरे बन्दे ! लोगों की उन जमाअ़तों में जाओ, जिस किसी ने भी मेरी रिज़ामन्दी की ख़ातिर तुझे खिलाया, पिलाया या लिबास पहनाया, उस का हाथ पकड़ लो ! वोह तुम्हारा है। लोग उस दिन पसीने में ग़र्क़ होंगे और वोह सफ़ों को चीरता हुवा उन को तलाश कर के जन्नत में ले जाएगा।[1]

फ़ुक़रा के पास दौलत है

फ़रमाने नबवी है कि फ़ुक़रा को पहचानो और उन से भलाई करो, उन के पास दौलत है। पूछा गया कि हुज़ूर कौन सी दौलत है ? आप ने फ़रमाया : जब क़ियामत का दिन होगा, अल्लाह तआ़ला उन से फ़रमाएगा जिस ने तुम्हें खिलाया पिलाया हो या कपड़ा पहनाया हो उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में ले जाओ।[2]

फ़रमाने नबवी है कि जब मैं (शबे मे'राज) जन्नत में गया तो मैं ने अपने आगे ह़रकत की आवाज़ सुनी, मैं ने देखा तो वोह बिलाल थे,[3] मैं ने जन्नत की बुलन्दियों पर देखा, वहां मुझे अपनी उम्मत के फ़ुक़रा और उन की अवलादें नज़र आईं, मैं ने नीचे देखा तो मालदार नज़र आए और औ़रतें कम थीं, मैं ने सबब पूछा तो बतलाया गया कि औ़रतों को सोने और रेशम ने जन्नत से मह़रूम कर दिया है और मालदारों को उन के त़वील ह़िसाबात ने ऊपर नहीं जाने दिया।[4] मैं ने अपने सह़ाबा को तलाश किया तो मुझे अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ नज़र न आए, कुछ देर बा'द वोह रोते हुवे आए, मैं ने पूछा : तुम मुझ से क्यूं पीछे रह गए ? तो अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा : मैं बहुत दुख झेल कर आप की ख़िदमत में पहुंचा हूं, मैं तो समझ रहा था कि शायद मैं आप को नहीं देख पाऊंगा।

1 ......تفسير روح البيان ، الزخرف تحت الآية: ٤٥، ٣٧٥/٨

2 ......تاريخ مدينة دمشق، ٩٩/١٤

3 ......مسلم، كتاب الفضائل، فضائل الصحبة، باب من فضائل ام سليم...الخ، ص١٣٣٣، الحديث ٢٤٥٧

4 ......كنز العمال ، قسم الاقوال، كتاب الفضائل، ذكر الصحبة...الخ، ٣٠١/٦، الجزء الحادى عشر، الحديث ٣٣١٦٤ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقى، ١٠٨٧/٢، الحديث ٣٩٣٧

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ साबिक़ीने अव्वलीन मुसलमानों में से थे, हुज़ूर के जांनिसार और उन दस हज़रात में से थे जिन्हें हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत दी है[1] और उन मालदारों में से थे जिन के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मगर जिस ने माल को ऐसे ऐसे ख़र्च किया[2] इन्हें भी मालदारी ने इतनी मुसीबत में मुब्तला कर दिया !

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जिस के पास माल व मनाले दुन्या से कुछ नहीं था, आप ने फ़रमाया : अगर इस का नूर तमाम दुन्या वालों में तक़्सीम किया जाए तो पूरा हो जाएगा ।[3]

जन्नत के बादशाह

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क्या मैं जन्नती बादशाहों के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हें बताऊं ? अ़र्ज़ की गई : फ़रमाइये । आप ने फ़रमाया : हर वोह शख़्स जिसे कमज़ोर व नातुवां समझा गया, गुबार आलूद परेशान बालों वाला, वोह फटी पुरानी चादरों वाला, जिसे कोई ख़ातिर में नहीं लाता है, अगर वोह **अल्लाह** की क़सम खा ले तो **अल्लाह** तआ़ला उस की क़सम को ज़रूर पूरा करता है ।[4]

हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का आ़लमे ग़ुर्बत

हज़रते इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से हुस्ने ज़न रखते थे, एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ इमरान ! तुम्हारा मेरे नज़दीक एक ख़ास मक़ाम है, क्या तुम मेरी बेटी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इयादत को चलोगे ? मैं ने कहा : "मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! ज़रूर चलूंगा" चुनान्चे, हम रवाना हो गए और हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दरवाज़े पर पहुंचे, आप ने दरवाज़ा खट-खटाया और सलाम के बा'द अन्दर आने की इजाज़त तलब फ़रमाई । हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : तशरीफ़ लाइये ! आप ने

1. ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن...الخ، ٥/٤١٦،الحدیث ٣٧٦٨
2. مسلم،کتاب الزکاة، الترغیب فی الصدقة، ص٤٩٦، الحدیث ٢٣ـ (٩٤)،٣٣ـ (٩٤) وعمدة القاری،کتاب الزکاة، باب اتقوا النار ولو بشق تمرة،٦/٣٧٩، تحت الحدیث ١٤١٥ و لطائف المعارف لابن رجب،المجلس الثالث فیما یقوم مقام الحج...الخ،ص ٢٤١
3. طبقات الشافیة الکبری للسبکی،٦/٣٦٧ وتذکرة الموضوعات للفتنی، ص١٧٨ وشعب الایمان، الحادی والسبعون من شعب الإیمان، باب فی الزهد و قصر الأمل، ٧/٣٣٢، الحدیث١٠٤٨٦
4. ابن ماجه، کتاب الزهد ، باب من لایؤبه به، ٤/٤٢٩، الحدیث ٤١١٥

फ़रमाया : मेरे साथ एक और शख़्स भी है, पूछा गया : हुज़ूर दूसरा कौन है ? आप ने फ़रमाया : इमरान ! हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं : रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया मैं सिर्फ़ एक चादर से तमाम जिस्म छुपाए हुवे हूं। आप ने दस्ते अक़्दस के इशारे से फ़रमाया : तुम ऐसे ऐसे पर्दा कर लो, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : इस त़रह़ मेरा जिस्म तो ढक जाता है मगर सर नहीं छुपता, आप ने उन की त़रफ़ एक पुरानी चादर फेंकी और फ़रमाया : तुम इस से सर ढांप लो, इस के बा'द आप घर में दाख़िल हुवे और सलाम के बा'द पूछा : बेटी कैसी हो ? हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर मुझे दोहरी तक्लीफ़ है, एक बीमारी की तक्लीफ़ और दूसरे भूक की तक्लीफ़ ! मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे खा कर भूक मिटा सकूं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सुन कर अश्कबार हो गए और फ़रमाया : बेटी घबराओ नहीं, रब की क़सम ! मेरा रब के यहां तुम से ज़ियादा मर्तबा है मगर मैं ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है, अगर मैं **अल्लाह** तआ़ला से मांगूं तो मुझे ज़रूर खिलाए मगर मैं ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी है। फिर आप ने हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के कन्धे पर हाथ रख कर फ़रमाया : "ख़ुश हो जाओ तुम जन्नती औ़रतों की सरदार हो !" उन्हों ने पूछा : हज़रते आसिया और मरयम कहां होंगी ? आप ने फ़रमाया : आसिया अपने ज़माने की औ़रतों की और तुम अपने ज़माने की औ़रतों की सरदार हो, तुम जन्नत के ऐसे मह़ल्लात में रहोगी जिस में कोई ऐ़ब, कोई दुख और कोई तक्लीफ़ नहीं होगी। फिर फ़रमाया : अपने चचाज़ाद के साथ ख़ुश रहो, मैं ने तुम्हारी शादी दुन्या और आख़िरत के सरदार के साथ की है।(1)

रूपिया जम्अ़ करने वाले पर चार मुसीबतों का नुज़ूल

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब लोग फ़ुक़रा से दुश्मनी रखें, दुन्यावी शौकत व ह़श्मत का इज़्हार करें और रूपिया जम्अ़ करने पर ह़रीस हो जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला उन पर चार मुसीबतें नाज़िल फ़रमाता है : क़ह़त़ साली, ज़ालिम बादशाह, ख़ाइन ह़ाकिम और दुश्मनों की हैबत।(2)

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक दिरहम वाले से दो दिरहम वाले का ह़िसाब ज़ियादा होगा।(3)

---

1 ......مشکل الآثار للطحاوی ، باب بیان ماروی عن رسول اللہ فی افضل بناتہ...الخ، ۱/۳٦، الجزء الاول، الحدیث ۱۰۱

2 ......المستدرک للحاکم ، کتاب الرقاق، باب الحسب المال...الخ، ٥/٤٦۳، الحدیث ۷۹۹۳(العلماء مکان فقراء)

3 ......شعب الایمان، الحادی والسبعون...الخ، فصل فیما بلغنا عن الصحابة...الخ، ۷/۳۷۷، الحدیث ۱۰٦٤۷(عن ابی ذر)

हज़रते सईद बिन आमिर की गिर्या व ज़ारी का बाइस

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सईद बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक हज़ार दीनार भेजे, हज़रते सईद अपने घर में इन्तिहाई ग़मज़दा हालत में दाख़िल हुवे, इन की बीवी ने पूछा : कोई ख़ास बात हो गई है ? बोले : बहुत अहम बात हो गई है, फिर फ़रमाया : **"मुझे कोई पुराना दूपट्टा दे दो," फिर उसे फाड़ कर उस के टुकड़े किये और दीनारों की पोटलियां बना कर तक़्सीम कर दीं**[1] और नमाज़ के लिये खड़े हुवे और सुब्ह तक रो रो कर इबादत करते रहे फिर फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : मेरी उम्मत के फ़ुक़रा मालदारों से पांच सो साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे यहां तक कि अगर कोई मालदार आदमी इन की जमाअ़त में शामिल होगा तो उसे हाथ पकड़ कर बाहर निकाल दिया जाएगा।[2]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि तीन आदमी बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे : वोह शख़्स जिस ने कपड़े धोने का इरादा किया मगर उस के दूसरे पुराने कपड़े नहीं थे जिन्हें पहन कर वोह कपड़े धो ले। जो शख़्स चूलहे पर दो-दो हांडियां नहीं चढ़ाता और जिस को पीने की दा'वत दे कर उस से येह न पूछा : तुम क्या पियोगे ?[3]

हज़रते सुफ़्यान सौरी को फ़ुक़रा से बे पायां महब्बत थी

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की महफ़िल में एक फ़क़ीर आया तो आप ने उसे फ़रमाया : आगे आ जाओ ! अगर तुम मालदार होते तो मैं तुम्हें आगे बढ़ने की इजाज़त न देता, इन की फ़ुक़रा से बे पायां महब्बत देख कर इन के मालदार दोस्त येह तमन्ना करते कि काश हम भी फ़क़ीर होते।

हज़रते मवमल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि मैं ने हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मजलिस में फ़क़ीर से ज़ियादा बा इ़ज़्ज़त और मालदार से ज़ियादा ज़लील किसी को नहीं देखा।

---

1 .....येह इबारत "मुझे कोई पुराना दूपट्टा..........पोटलियां बना कर तक़्सीम कर दीं" यहां महज़ूफ़ थी शायद कातिब से रह गई होगी, हम ने अ़रबी मतन देख कर इस का तर्जमा यहां शामिल कर दिया है। **इ़ल्मिय्या**

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ان فقراء...الخ، ٤/١٥٨، الحدیث ٢٣٦١ و کنز العمال ، قسم الاقوال، کتاب الزکاۃ، الباب الثالث فی فضل الفقر...الخ٣/٢٠٣، الجزء الخامس،الحدیث ١٦٦٢١

3 ......کنزالعمال ، کتاب الاخلاق ،حرف الزاء الزھد، ٢/٧٦، الجزء الثالث، الحدیث ٦٠٧٥

एक दानिशमन्द का क़ौल है कि इन्सान जितना तंगदस्ती से डरता है, अगर उतना जहन्नम से डरता तो दोनों से नजात पा लेता और जितनी इसे दौलत से महब्बत है अगर जन्नत से इसे इतनी महब्बत होती तो दोनों को पा लेता जितना ज़ाहिर में लोगों से डरता है अगर उतना बातिन में **अल्लाह** तआला से डरता तो दोनों जहानों में सईद शुमार होता।

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का क़ौल है कि जो मालदार की इज़्ज़त और फ़क़ीर की तौहीन करता है, वोह मलऊन है।

हज़रते लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुवे कहा कि बोसीदा कपड़ों की वज्ह से किसी को हक़ीर न समझो क्यूंकि इस का और तुम्हारा रब एक है।

हज़रते यह्या बिन मुआज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि फ़ुक़रा से तुम्हारी महब्बत रसूलों की सिफ़ात में से एक सिफ़त है, इन की मजालिस में आना नेकों की और इन की दोस्ती से दूर भागना मुनाफ़िक़ों की अलामत है।

बा'ज़ कुतुबे साबिक़ा में मरक़ूम था कि **अल्लाह** तआला ने अपने बा'ज़ अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام पर वही की, कि मेरी दुश्मनी से डरो, अगर मैं ने तुझे दुश्मन बना लिया तो तू मेरी आंख से गिर जाएगा और मैं तुझ पर मालो दौलत की बारिश करूंगा (या'नी मालो दौलत की फ़िरावानी **अल्लाह** तआला के यहां बे क़द्री की मूजिब है।)

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास हज़रते मुआविय्या, इब्ने आमिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) और कुछ दूसरे लोगों ने एक लाख दिरहम भेजे, आप ने सब को एक ही दिन में तक़्सीम कर दिया हालांकि आप की ओढ़नी पर पैवन्द लगे हुवे थे, आप की लौंडी ने कहा कि आप रोज़े से हैं अगर आप मुझे एक दिरहम दे देतीं तो मैं गोश्त ले आती और आप इफ़्तार करतीं, आप ने येह सुन कर फ़रमाया : तुम मुझे पहले बता देतीं तो मैं एक दिरहम तुम्हें दे देती।

हज़रते आइशा को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को वसिय्यत फ़रमाई : अगर तुम मुझ से मुलाक़ात की ख़्वाहिश मन्द हो तो फ़ुक़रा जैसी ज़िन्दगी बसर करना, दौलत मन्दों की महफ़िलों से अलाहिदा रहना और ओढ़नी को पैवन्द लगाए बिग़ैर न उतारना।(1)

---

1 ...... ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی ترقیع الثوب، ۳/۳۰۲، الحدیث ۱۷۸۷

एक शख़्स ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में दस हज़ार दिरहम लाया और बड़ी आ़जिज़ी से इन्हें क़बूल करने की दरख़्वास्त की। आप ने इन्कार कर दिया और फ़रमाया : क्या तुम दस हज़ार दिरहम के बदले फ़ुक़रा के दफ़्तर से मेरा नाम काटना चाहते हो बख़ुदा ! मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।

फ़रमाने नबवी है : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो इस्लाम पर चला और उस ने मा'मूली गुज़रान पर क़नाअ़त कर ली।[1]

फ़रमाने नबवी है : ऐ फ़ुक़रा तुम दिल की गहराइयों से **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी रहो, तुम्हें फ़क़्र का सवाब मिलेगा वगरना नहीं।[2]

पहला क़ानेअ़ और दूसरा राज़ी ब रिज़ाए इलाही है, इस का मत़लब येह भी हो सकता है कि ह़रीस को फ़क़्र का सवाब नहीं मिलेगा मगर बा'ज़ अह़ादीस से येह ज़ाहिर होता है कि उसे फ़क़्र का सवाब मिलेगा। अ़न क़रीब हम इस की मुकम्मल बह़्स करेंगे।

शायद अ़दमे रिज़ा से येह मुराद है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के इस से माल रोक लेने को बुरा समझता है और बहुत से त़ालिबे दुन्या ऐसे हैं जो दिल में कभी भी **अल्लाह** तआ़ला का मुन्किर होना पसन्द नहीं करते लिहाज़ा इन की त़लब में कोई बुराई नहीं है लेकिन अव्वलुज़्ज़िक्र बात आ'माल को तबाह कर देती है जिस में **अल्लाह** तआ़ला के दौलत न देने को बुरा समझा जाता है।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हर चीज़ की एक किलीद होती है और जन्नत की चाबी फ़ुक़रा और मसाकीन की मह़ब्बत है। अपने सब्र की वज्ह से वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला के क़रीब होंगे।

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला को वोह बन्दा सब से ज़ियादा मह़बूब है जो फ़क़ीर हो, **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी हो और उस के अ़त़ाकर्दा रिज़्क़ पर क़नाअ़त करे।[3]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : ऐ **अल्लाह** ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के घराने की ख़ूराक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ हो[4] और फ़रमाया : क़ियामत के दिन कोई फ़क़ीर

---

1 ......ترمذی ، کتاب الزهد باب ماجاء فی الکفاف...الخ، ۱۵۶/۴، الحدیث۲۳۵۶

2 ......فردوس الاخبار، ۴۷۵/۲، الحدیث ۸۲۴۲ و کنزالعمال، کتاب الزکاة،الباب الثالث فی فضل الفقر...الخ، ۲۰۷/۳، الجزء السادس، الحدیث۱۶۶۵۱

3 ......طبقات الشافعیة الکبری للسبکی، ۳۶۸/۶ و کنز العمال، قسم الاقوال،کتاب الاخلاق ،حرف القاف، القناعة و الاستغناء...الخ، ۱۵۸/۲، الجزء الثالث، الحدیث ۷۰۸۸و المعجم الکبیر للطبرانی ، ۲۴۲/۱۸، الحدیث۶۰۷

4 ......مسلم ،کتاب الزکاة، باب فی الکفاف و القناعة، ص ۵۲۴، الحدیث ۱۲۶ـ (۱۰۵۵)

और मालदार ऐसा नहीं होगा जो येह तमन्ना न करे कि मुझे दुन्या में ख़ूराक के मुताबिक़ ही रिज़्क़ दिया जाता।[1]

अल्लाह तआला ने हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वही की, कि मुझे शिकस्ता दिलों के यहां तलाश करना, आप ने पूछा : वोह कौन लोग हैं ? रब तआला ने फ़रमाया : वोह सच्चे फ़ुक़रा हैं।

फ़रमाने नबवी है कि राज़ी ब रिज़ा फ़क़ीर से ज़ियादा कोई फ़ज़ीलत वाला नहीं है।[2]

फ़रमाने नबवी है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा कि मख़्लूक़ में मेरे दोस्त कहां हैं ? फ़िरिश्ते पूछेंगे या अल्लाह ! वोह कौन हैं ? रब तआला फ़रमाएगा : वोह मुसलमान फ़ुक़रा हैं जो मेरी अ़ता पर क़ानेअ़ थे और मेरी रिज़ा पर राज़ी थे, उन्हें जन्नत में दाख़िल करो ! चुनान्चे, लोग अभी अपने हिसाब में सरगर्दां होंगे कि वोह लोग जन्नत में खा पी रहे होंगे।[3]

येह तो क़नाअ़त गुज़ीं और अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी होने वालों का तज़किरा है, اِنْ شَآءَ الله अ़न क़रीब ज़ाहिदों का ज़िक्र भी उन के फ़ज़ाइल में आएगा।

क़नाअ़त और रज़ाए इलाही

"क़नाअ़त" और "रिज़ा" के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं, येह बात ख़ूब ज़ेह्न नशीन कर लें कि क़नाअ़त की ज़िद "हिर्स व तम्अ़" है।

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का फ़रमान है कि तम्अ़, तंगदस्ती और क़नाअ़त मालदारी है जो लोगों से तम्अ़ नहीं रखता और क़नाअ़त कर लेता है वोह लोगों से बे परवा कर दिया जाता है।

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हर रोज़ एक फ़िरिश्ता अ़र्श से मुनादी करता है, ऐ इन्सान ! गुमराह करने वाले ज़ियादा माल से किफ़ायत करने वाला थोड़ा माल बेहतर है।

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि हर इन्सान की अ़क़्ल में कमज़ोरी होती है, जब उस के पास मालो दौलत ज़ियादा आने लगता है तो वोह बहुत ख़ुश होता है मगर रात दिन की गर्दिश जो उस की उ़म्र कम कर रही है, उसे ग़मज़दा नहीं करती। अफ़्सोस ! ऐ इन्सान ! तुझे माल की ज़ियादती कोई फ़ाइदा नहीं देगी जब कि तेरी उ़म्र बराबर कम होती जा रही है।

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب القناعة، ٤/٤٤٢، الحديث ٤١٤٠

2 ......طبقات الشافعية الكبرى للسبكى،٦/٣٦٨ و المغنى عن حمل الاسفار للعراقى، ٢/١٠٩٠، الحديث ٣٩٣٧

3 ......طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ٦/٣٦٨

ग़ना क्या है ?

एक दाना से ग़ना के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उस ने जवाब दिया कि क़लील उम्मीदें और मा'मूली रिज़्क़ पर राज़ी रहना।

रिवायत है कि ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुरासान के उमरा में से थे, एक मरतबा वोह मह़ल से बाहर निकले तो उन्हें मह़ल के क़रीब एक आदमी नज़र आया जिस के हाथ में एक रोटी थी जिसे खा कर वोह सो गया, उन्हों ने अपने एक ग़ुलाम से कहा : जब येह शख़्स बेदार हो तो इसे मेरे पास लाना, चुनान्चे, उस के बेदार होने के बा'द उसे लाया गया तो उन्हों ने पूछा : ऐ जवान ! तू भूका था और एक रोटी से सैर हो गया ? उस शख़्स ने कहा : हां ! फिर पूछा : तुम्हें नींद ख़ूब आई ? वोह बोला : हां ! आप ने दिल में सोचा मैं आयिन्दा दुन्या के ह़ुसूल में सरगर्दां नहीं फिरूंगा, नफ़्से इन्सानी तो एक रोटी पर भी क़नाअ़त कर लेता है।

एक शख़्स ने आ़मिर बिन अ़ब्दुल क़ैस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इस ह़ालत में देखा कि वोह नमक के साथ साग खा रहे थे। उस शख़्स ने कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! क्या तू इतनी सी चीज़ पर राज़ी है ? आप ने फ़रमाया : मैं तुम्हें बतलाऊं, जो इतनी सी दुन्या पर राज़ी हो जाता है उसे किस चीज़ की ख़ुश ख़बरी मिलती है ? फिर फ़रमाया : "जो दुन्या पर राज़ी हो जाता है उसे आख़िरत नहीं मिलती और जो दुन्या से तर्के तअ़ल्लुक़ कर लेता है उसे आख़िरत मिलती है।"

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुश्क रोटी पानी में भिगो कर नमक से खा लेते और फ़रमाते : जो दुन्या में इतनी मिक़्दार पर राज़ी हो जाता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं रहता।

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसे लोगों पर ला'नत की है जो उस के तक़्सीम कर्दा रिज़्क़ पर राज़ी नहीं हुवे, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ (1)

और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जिस चीज़ का तुम से वा'दा किया जाता है आस्मानों और ज़मीन के रब की क़सम वोह ह़क़ है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक येह कुरआन ह़क़ है। (پ٢٦،الذّٰرِيٰت،٢٢،٢٣)

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मरतबा लोगों में बैठे हुवे थे कि आप की बीवी ने आ कर कहा : तुम इन के साथ बैठे हुवे हो और घर में आटे की चुटकी और पानी का घूंट तक नहीं है ! आप ने फ़रमाया : तुम्हें पता नहीं हमारे सामने दुश्वार गुज़ार घाटियां हैं इन से वोही नजात पाएगा जिस का बोझ हल्का होगा। जब आप की बीवी ने येह सुना तो चुप चाप घर में वापस चली गईं।

हज़रते ज़ुन्नून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि बे सब्र भूका कुफ़्र के बहुत क़रीब होता है।

एक दाना से पूछा गया कि तेरी दौलत क्या है ? उस ने जवाब दिया : ज़ाहिरी सफ़ाई, दिल में नेकी और लोगों से ना उम्मीदी।

रिवायत है कि **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ साबिक़ा आस्मानी किताबों में फ़रमाया है : ऐ इन्सान ! अगर तुझे सारी दुन्या की दौलत मिल जाती तब भी तुझे दो वक़्त की रोटी ही मयस्सर आती, अब जब कि मैं ने तुझे गिज़ा दे दी है और इस का हिसाब और के ज़िम्मे लगा दिया है तो येह मैं ने तुझ पर एह़सान किया है।

क़नाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ एक शाइ़र ने कहा है :

اضرع الی اللّٰہ لا تضرع الی الناس　　　واقنع بیاس فان العز فی الیاس

واستغن عن ذی قربی وذی رحم　　　ان الغنی من استغنی عن الناس

﴾1﴿......**अल्लाह** से मांग, लोगों से न मांग, इन से ना उम्मीद हो कर क़नाअ़त को अपना क्यूंकि लोगों से ना उम्मीद होने ही में इ़ज़्ज़त है।

﴾2﴿......हर अ़ज़ीज़ और यगाने से बे परवा हो जा, क्यूंकि लोगों से बे नियाज़ी ही मालदारी है,

एक और शाइ़र कहता है :

یاجامعا مانعا و الدھر یرمقہ　　　مقدر ای باب منہ یغلقہ

مفکرا کیف تاتیہ منیتہ　　　اغادیا ام بھا یسری فتطرقہ

جمعت مالا فقل لی ھل جمعت لہ　　　یاجامع المال ایاما تفرقہ

المال عندک مخزون لوارثہ　　　ماالمال مالک الا یوم تنفقہ

ارفہ ببال فتی یغدو علی ثقۃ　　　ان الذی قسم الارزاق یرزقہ

فالعرض منہ مصون لایدنسہ　　　والوجہ منہ جدید لیس یخلقہ

ان القناعۃ من یحلل بساحتھا　　　لم یلق فی ظلھا ھما یورقہ

《1》......ऐ मालो दौलत को जम्अ़ करने वाले ! ज़माना हर किसी का मुक़द्दर देखता है, तू इस के किस किस दरवाज़े को बन्द करेगा ?

《2》......इस फ़िक्र में कि किस किस त़रह़ उम्मीदें पूरी होंगी, क्या इस के साथ कोई दुश्वारी है या आसानी पस तू इस को छोड़ देगा।

《3》......ऐ माल के जम्अ़ करने वाले ! तू ने दौलत इकट्ठी कर ली, मुझे येह बतला तू ने इसे ख़र्च करने के लिये अपने दिन भी इकट्ठे कर लिये हैं ? (क्या तुझे ज़िन्दगी पर भरोसा है)

《4》......दौलत तेरे पास वारिसों का ख़ज़ाना है, राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले माल के सिवा तेरा कोई माल नहीं है।

《5》......जब जवान इस बात पर ए'तिमाद करता है कि जिस ज़ात ने तक़्सीमे अरज़ाक़ किया है उसे भी रिज़्क़ देगा।

《6》......तब उस की इ़ज़्ज़त मह़फ़ूज़ हो जाती है, कभी उस पर मेल नहीं आता, और न ही उस का चेहरा कभी पुराना होता है।

《7》......जो शख़्स क़नाअ़त को पा लेता है उस पर कभी दुख का साया नहीं पड़ता।

क़र्ज़ की अदाएगी

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى कीमियाए सआ़दत में नक़्ल करते हैं : जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी त़रह़ अदा कर दूंगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ़ करते हैं कि उस का क़र्ज़ अदा हो जाए। (انظر اتحاف السادة للزبیدی، ج٦، ص٤٠٩) और अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की ह़ालत में हो या सो रहा हो उस के ज़िम्मे गुनाह लिखा जाता रहेगा (गोया हर ह़ाल में गुनाह का मीटर चलता ही रहेगा) और हर सूरत में उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पड़ती रहेगी। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की ह़ालत में भी उस के साथ रहता है, अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनहगार है। अगर क़र्ज़ के बदले ऐसी चीज़ दे जो क़र्ज़ ख़्वाह को ना पसन्द हो तब भी देने वाला गुनहगार होगा और जब तक उसे राज़ी नहीं करेगा इस ज़ुल्म के जुर्म से नजात नहीं पाएगा क्यूंकि उस का येह फ़े'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं। (کیمیائے سعادت،ج١،ص٣٣٦)

बाब 35

अल्लाह के सिवा किसी और को अपना वली बनाना और क़ियामत का मैदान

कुफ़्फ़ार से मेल मिलाप न रखो

फ़रमाने इलाही है : وَلَا تَرْكَنُوْۤا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ [(1)]

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है : अहले लुग़त इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि "रुकून" मुत़्लक़ मैलान और तवज्जोह का नाम है, चाहे वोह मैलान मा'मूली हो या ज़ियादा। अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि यहां रुकून से मुराद छुपाना है या'नी उन के कुफ़्र का इन्कार न करना। इकरमा का क़ौल है : रुकून से मुराद है उन कुफ़्फ़ार से नेकी न करो, आयत के ज़ाहिरी मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार और बदकार मुसलमानों से बाहम मेल मिलाप न रखो।

ह़ज़रते नैशापूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी तफ़्सीर में रक़म त़राज़ हैं : मुह़क़्क़िक़ीन का क़ौल है कि जिस रुकून से मन्अ़ किया गया है वोह है कुफ़्फ़ार के कुफ़्र को अच्छा समझना, उन के त़रीक़े कार को ख़ूब जानना और दूसरों के सामने उन की ता'रीफ़ करना और गुमराही के कामों में उन का शरीके कार बनना है, हां अगर उन के मज़ालिम के सद्देबाब और नफ़्अ़ अन्दोज़ी की वज्ह से उन से मेल मिलाप बढ़ाता है तो इस में कोई ह़रज नहीं है लेकिन मेरा ज़मीर येह कहता है कि त़लबे मआ़श के लिये उन से मेल मिलाप की रुख़्सत है मगर तक़्वा का तक़ाज़ा येह है कि उन से बिल्कुल अ़लाह़िदगी की जाए, क्या **अल्लाह** तआ़ला बन्दे की मुश्किलात में उसे काफ़ी नहीं है ?

मैं कहता हूं कि इमामे नैशापूरी का क़ौल बिल्कुल सह़ीह़ है। आज के दौर में तो ख़ुसूसी त़ौर पर इस बात की ज़रूरत है कि उन से तअ़ल्लुक़ात न रखे जाएं क्यूंकि नेकी का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना इस धोके और फ़रेबकारी के दौर में ना मुमकिन है[(2)] और जब कि उन का ज़ुल्म इस अन्दाज़ पर आ गया है कि उन से बाहम तअ़ल्लुक़ हलाकत में डाल सकता है तो तुम्हारा उस

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़ालिमों की त़रफ़ न झुको कि तुम्हें आग छूएगी। (پ۱۲،ھود: ۱۱۳)

2.....क़ारिईने किराम मुलाह़ज़ा फ़रमाएं कि पांचवीं छटी सदी हिजरी की ह़ालत येह थी। मज़ीद देखिये मुक़द्दमा तारीख़ुल ख़ुलफ़ा अज़ शम्स बरेलवी

शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जो उन ज़ालिमों और सरकशों से ज़बरदस्त महब्बत करता है, उन की शराब नोशी और हराम कारी की महाफ़िल में शरीक होता है और उन के तक़ाज़ाए दोस्ती को पूरा करता है और उन के तर्ज़े मुआशरत में घुल मिल जाता है, उन का सा लिबास पहन कर ख़ुश होता है और उन की ज़ाहिरी और फ़ानी रौनक़ को बेहतर समझता है और उन की मुआशी ख़ुशहाली पर रश्क करता है, हालांकि अगर हक़ीक़त में देखा जाए तो येह सब चीज़ें एक दाने से भी हक़ीर और मच्छर के पर से भी ज़ियादा बे वक़ार हैं चे जाएकि इन्सान दिल की गहराइयों से उन्हें चाहने लगे, चाहने वाला और जिसे चाहा गया है दोनों बे वक़ार हैं।

फ़रमाने नबवी है कि इन्सान अपने दोस्त के दीन पर होता है, तुम येह देखो कि तुम्हारा दोस्त कौन है ?[1]

मन्क़ूल है कि अच्छे साथी की मिसाल **अ़त्तार** जैसी है, अगर वोह इत्र नहीं देगा लेकिन तुम इत्र की ख़ुश्बू से महरूम नहीं रहोगे और हर बुरे साथी की मिसाल लुहार की है अगर्चे वोह तुझे नहीं जलाएगा मगर उस की धौंकनी का धुवां तुम तक ज़रूर पहुंचेगा[2] (और कपड़ों को कसीफ़ कर देगा और तनफ़्फ़ुस को भी गज़न्द पहुंचाएगा)।

अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना वली बनाना

फ़रमाने इलाही है कि उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने **अल्लाह** के सिवा अपने और मददगार बना लिये हैं मकड़ी के घर की सी मिसाल है (जो बहुत ही बूदा और कमज़ोर होता है)।[3]

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने किसी दौलत मन्द की उस की दौलत की वज्ह से ता'ज़ीम की उस का एक तिहाई[4] ईमान ज़ाएअ़ हो गया।[5]

फ़रमाने नबवी है : जब किसी फ़ासिक़ की ता'रीफ़ की जाती है तो **अल्लाह** तआला सख़्त नाराज़ होता है और अ़र्शे इलाही कांप जाता है।[6]

1......ترمذی، کتاب الزھد، باب ٤٥، ٤/١٦٧، الحدیث ٢٣٨٥

2......ابوداود، کتاب الادب، باب من یؤمر ان یجالس، ٤/٣٤٠، الحدیث ٤٨٢٩

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन की मिसाल जिन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और मालिक बना लिये हैं मकड़ी की तरह है उस ने जाले का घर बनाया। (پ٢٠، العنکبوت: ٤١)

4...यहां किताबत की ग़लती से यूं लिखा था कि ''उस का दो हिस्से ईमान ज़ाएअ़ हो गया'' जब कि ''मुकाशफ़तुल कुलूब'' (अ़रबी) और दीगर कुतुब में ह़दीस के अल्फ़ाज़ यूं हैं : "ذهب ثلث دينه" या'नी उस का एक तिहाई ईमान ज़ाएअ़ हो गया लिहाज़ा हम ने तर्जमे में अस्ल के मुताबिक़ तसहीह कर दी है। **इल्मिय्या**

5......طبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ٤/٣٣١ وشعب الایمان، السبعون من شعب الإیمان، باب فی الصبر، ٧/٢١٣، الحدیث ١٠٠٤٥

6......شعب الایمان، الباب الرابع والثلاثون...الخ، ٤/٢٣٠، الحدیث ٤٨٨٦

फ़रमाने इलाही है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ[1]

या'नी हम क़ियामत के मैदान में तमाम इन्सानों को उन के इमाम के साथ बुलाएंगे ।

मुफ़स्सिरीने किराम का इमाम के तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और आप के रुफ़क़ा इमाम से मुराद नामए आ'माल लेते हैं,

चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ[2]

और जिस शख़्स को दाएं हाथ में किताब दी जाएगी ।

हज़रते ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि इमाम से मुराद रुत्बे की किताबें हैं और लोगों को "ऐ तौरात वाले !", "ऐ इन्जील वाले !" और "ऐ क़ुरआन वाले !" कह कर बुलाया जाएगा ।

हज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि इमाम से मुराद नबी है । लोगों को यूं बुलाया जाएगा : ऐ इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की इत्तिबाअ़ करने वालो आओ ! ऐ मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की इत्तिबाअ़ करने वालो आओ ! ऐ ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की इत्तिबाअ़ करने वालो आओ ! और ऐ मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने वालो आओ !

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि इमाम से मुराद इमामे अ़स्र है जिस के रोकने से वोह रुक जाते थे और जिस के हुक्म पर वोह अ़मल करते थे ।

हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ को जम्अ़ फ़रमाएगा तो हर ख़ाइन को झन्डा दिया जाएगा और कहा जाएगा : येह फ़ुलां बिन फ़ुलां की ख़ियानत का झन्डा है ।[3]

तिर्मिज़ी वग़ैरा में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया : "लोगों में से एक आदमी को बुलाया जाएगा, उस के दाएं हाथ में नामए आ'माल दिया जाएगा, उस के जिस्म को साठ हाथ लम्बा कर के उस के सर पर चमकदार मोतियों का ताज रखा जाएगा, उस का चेहरा इन्तिहाई रोशन होगा, फिर वोह अपने दोस्तों की त़रफ़ जाएगा जो उसे दूर से देख कर कहेंगे : इस के मर्तबे में इज़ाफ़ा फ़रमा और हमें भी

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे । (پ۱۵، بنی اسرائیل:۷۱)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह जो अपना नामए आ'माल दाहिने हाथ में दिया जाएगा । (پ۲۹، الحاقۃ:۱۹)

3 ......مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب تحريم الغدر، ص ۹۵۵، الحدیث۹۔ (۱۷۳۵)

ऐसा ही मक़ाम इनायत फ़रमा। जब वोह उन के पास आएगा तो कहेगा कि तुम्हें खुश ख़बरी हो, तुम में से हर एक को येही मक़ाम मिलेगा और काफ़िर का मुंह काला कर के उस का क़द आदम عَلَيْهِ السَّلَام के क़द के बराबर साठ हाथ कर दिया जाएगा और उसे ज़ुल्मत का ताज पहनाया जाएगा, वोह अपने साथियों के पास आएगा वोह उसे देख कर कहेंगे : ऐ अल्लाह ! हम इस के शर से पनाह चाहते हैं और हमें ऐसे अन्जाम से बचा, वोह उन के पास आएगा तो वोह कहेंगे : ऐ अल्लाह ! इसे रुस्वा कर। तब काफ़िर कहेगा कि अल्लाह तआला ने तुझे अपनी रहमत से दूर कर दिया, तुम में से हर एक के साथ येही सुलूक किया जाएगा।(1)

फ़रमाने इलाही है :

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ (2)

जब ज़मीन ज़लज़ले से हिलाई जाएगी और वोह अपने बोझ निकाल डालेगी।

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि ज़मीन नीचे से हिलेगी और इस के पेट में जितने मुर्दे और दफ़ीने हैं, सब को बाहर निकाल देगी।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी :

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ (3)

उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें बयान करेगी।

और फ़रमाया : जानते हो इस की ख़बरें क्या हैं ? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) बेहतर जानते हैं, आप ने फ़रमाया : वोह हर मर्द और हर औ़रत के हर उस अ़मल की गवाही देगी जो उस की पुश्त पर किया गया है।(4)

तबरानी की हदीस है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ज़मीन पर गुनाह करने से परहेज़ करो क्यूंकि वोह तुम्हारी मां है और जो शख़्स भी इस पर कोई अ़मल करता है वोह उस की (क़ियामत के दिन) ख़बर देगी।(5)

---

1 ...... ترمذی، کتاب التفسیر، ٥/٩٢، الحدیث ٣١٤٧

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब ज़मीन थर थरा दी जाए जैसा इस का थर थराना ठहरा है और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे। (پ٣٠، الزلزال:١،٢)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी। (پ٣٠،الزلزال:٤).

4 ......ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب٧، ٤/١٩٤، الحدیث ٢٤٣٧

5 ......المعجم الكبير، ٥/٦٥، الحدیث ٤٥٩٦

बाब 36

नफ़्खे़ सूर, ह़श्रे अजसाद व बा'से बा'दल मौत

फ़रमाने नबवी है : मैं कैसे सुकून पाऊं जब कि साहि़बे सूर या'नी ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام ने सूर मुंह में लिया हुवा है, पेशानी झुकाई हुई है और कान अल्लाह तआ़ला के फ़रमान पर मुतवज्जेह कर रखे हैं कि उसे कब सूर फूंकने का हुक्म मिले और वोह सूर फूंकें।[1]

नफ़्खे़ सूर

ह़ज़रते मक़ातिल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि सूर एक बूक़ या क़रना की त़रह़ है जिसे ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام बिगुल की त़रह़ अपने मुंह में लिये हुवे हैं, इस सूर की गोलाई आस्मानो ज़मीन की चौड़ाई (गोलाई) के बराबर है, ह़ज़रते इस्राफ़ील टिकटिकी बांधे अ़र्श की त़रफ़ देख रहे हैं कि उन्हें कब सूर फूंकने का हुक्म होता है, जब पहली मरतबा सूर फूंका जाएगा तो शिद्दते इज़्तिराब से जिब्राईल, मीकाईल, इस्राफ़ील और इ़ज़्राईल के सिवा ज़मीनो आस्मान के सब जानदार हलाक हो जाएंगे फिर इ़ज़्राईल को हुक्म होगा और वोह उन तीनों फ़िरिश्तों की रूह़ भी क़ब्ज़ कर लेगा, इस के बा'द इ़ज़्राईल को भी फ़ना से हम किनार कर दिया जाएगा यहां तक कि नफ़्खे़ सूर को चालीस साल गुज़र जाएंगे, तब अल्लाह तआ़ला इस्राफ़ील को ज़िन्दा करेगा और वोह उठ कर दोबारा सूर फूंकेंगे चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾ [2]

फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा पस अचानक वोह अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे और दोबारा ज़िन्दा होना देख रहे होंगे।

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ماجاء فی شان الصور، ٤/١٩٥، الحدیث ٢٤٣٩

2 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा, जभी वोह देखते हुवे खड़े हो जाएंगे। (پ٢٤،الزمر:٦٨)

फ़रमाने नबवी है कि जब से इस्राफ़ील को पैदा किया गया है सूर उस के मुंह में है और वोह एक क़दम आगे और एक क़दम पीछे रखे हुक्मे खुदावन्दी के इन्तिज़ार में है।[1]

होशयार हो जाओ और सूर फूंके जाने के वक़्त से डरो ! उस वक़्त में लोगों की ज़िल्लत और रुस्वाई और आ़जिज़ी का तसव्वुर करो जब कि दूसरी मरतबा सूर फूंक कर उन्हें खड़ा किया जाएगा और वोह अपने मुतअ़ल्लिक़ अच्छा या बुरा फ़ैसला सुनने के मुन्तज़िर होंगे और ऐ इन्सान ! तू भी उन की ज़िल्लत व परेशानी में बराबर का शरीक होगा बल्कि अगर तू दुन्या में आसूदा हा़ल और दौलत मन्द है तो जान ले कि उस दिन दुन्या के बादशाह तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा ज़लील और ह़क़ीर होंगे और वोह च्यूंटियों की त़रह़ पामाल होंगे, उस वक़्त जंगलों और पहाड़ों से दरिन्दे सर झुकाए क़ियामत की हैबत से सहमे हुवे अपनी सारी दरिन्दगी और वह़शत भूल कर लोगों में घुल मिल जाएंगे, येह दरिन्दे अपने किसी गुनाह के सबब नहीं बल्कि सूर की ख़ौफ़नाक आवाज़ की शिद्दत की वज्ह से ज़िन्दा हो जाएंगे और इन्हें लोगों से ख़ौफ़ और वह़शत तक मह़सूस नहीं होगी, चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝ (2) *और जब वह़शी जानवर उठाए जाएंगे।*

फिर शैत़ान और सख़्त ना फ़रमान अपनी ना फ़रमानी और सरकशी के बा'द अल्लाह तआ़ला के हु़ज़ूर हा़ज़िर होने के लिये इन्तिहाई ज़िल्लत से इस फ़रमाने इलाही की ताईद में हा़ज़िर होंगे :

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝ (3) *पस क़सम है तेरे रब की हम उन्हें शैत़ानों के साथ इकठ्ठा करेंगे फिर उन्हें जहन्नम के इर्द गिर्द ज़ानूओं के बल गिरे हुवे हा़ज़िर करेंगे।*

ज़रा सोचो ! उस वक़्त तुम्हारा क्या हा़ल होगा ! और जब लोग क़ब्र से उठाने के बा'द नंगे पैर और नंगे बदन मैदाने क़ियामत में जो एक साफ़ शफ़्फ़ाफ़ ज़मीन होगी जिस में कोई कजी और टीला नहीं होगा, आएंगे, उस पर न कोई टीला होगा कि इन्सान इस के पीछे ओझल हो जाए

1 ......الكتاب العظمة للاصبهانى، صفة اسرافيل...الخ، ص١٣٧، الحديث ٣٨٨ و موسوعة ابن ابى الدنيا ،كتاب الاهوال، ١٥٦/٦، الحديث ٥٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब वह़शी जानवर जम्अ़ किये जाएं। (پ٣٠،التكوير:٥)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें और शैत़ानों सब को घेर लाएंगे और उन्हें दोज़ख़ के आस पास हा़ज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे। (پ١٦، مريم:٦٨)

और न ही कोई घाटी होगी जिस में इन्सान छुप जाए बल्कि वोह हमवार ज़मीन होगी जिस पर लोग गुरौह दर गुरौह लाए जाएंगे, बेशक रब्बे जुल जलाल अ़ज़ीम कुदरतों का मालिक है जो रूए ज़मीन के गोशे गोशे से तमाम मख़्लूक़ को एक ही मैदान में सूर फूंकने के वक़्त जम्अ़ फ़रमाएगा, दिल इस लाइक़ है कि उस दिन बेक़रार हों और आंखें ख़ौफ़ ज़दा हों।

अहवाले क़ियामत के बारे में इरशादाते नबविय्या

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि क़ियामत के दिन लोग एक चटयल मैदान में खड़े किये जाएंगे जो हर क़िस्म के दरख़्तों, ऊंचे नीचे टीलों और इमारतों से पाक होगा।[1] और येह ज़मीन दुन्या की ज़मीन जैसी नहीं होगी बल्कि येह सिर्फ़ नाम की ही ज़मीन है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ (2)

उस दिन ज़मीन और आस्मान दूसरे रूप में बदल दिये जाएंगे।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का क़ौल है कि उस ज़मीन में कमी बेशी की जाएगी, उस के दरख़्त, पहाड़, वादियां, दरया सब ख़त्म कर दिये जाएंगे और उसे अ़काज़ी चमड़े की त़रह खींचा जाएगा (जिस त़रह कच्चे चमड़े को खींचते हैं) वोह बिल्कुल चटयल मैदान होगा जिस पर न किसी को क़त्ल किया गया होगा और न ही उस पर कोई गुनाह हुवा होगा और आस्मानों के सूरज, चांद और सितारे ख़त्म कर दिये जाएंगे।

ऐ नातुवां इन्सान ! ज़रा सोच तो सही कि उस दिन की हौलनाकी और शिद्दत कितनी अ़ज़ीम होगी जब कि लोग उस मैदान में जम्अ़ होंगे, तमाम सितारे बिखर जाएंगे और सूरज व चांद की रोशनी ज़ाइल होने की वज्ह से ज़मीन अन्धेरे में डूब जाएगी और इसी हालत में आस्मान अपनी उस तमाम अ़ज़्मत के बा वुजूद फट जाएगा, वोह आस्मान जिस का हज्म पान सो बरस का सफ़र और जिस के अत़राफ़ व अकनाफ़ पर मलाइका तस्बीह में मश्गूल हैं, उस के फटने की हैबतनाक आवाज़ तेरी कुव्वते समाअ़त पर ज़बरदस्त ख़ौफ़ छोड़ जाएगी और आस्मान ज़र्दी माइल पिघली हुई चांदी की त़रह बह जाएगा और सुर्ख़ी माइल तेल जैसा हो जाएगा, आस्मान झड़ी हुई राख की त़रह, पहाड़ रूई के गालों की त़रह होंगे और बरहना पा लोग वहां बिखरे हुवे होंगे। फ़रमाने नबवी है कि लोग नंगे पैर नंगे बदन उठेंगे और अपने पसीने में कान की लौ तक ग़र्क़ होंगे।

---

1 ......مسلم، كتاب صفة القيامة...الخ، باب فى البعث والنشور...الخ، ص ١٥٠٠، الحديث ٢٨ ـ (٢٧٩٠)

1 ...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन उस ज़मीन के सिवा और आस्मान। (پ١٣، ابراهيم:٤٨)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! कैसा इब्रतनाक मन्ज़र होगा कि हम एक दूसरे को नंगा देखेंगे ! आप ने फ़रमाया : किसी को किसी का होश नहीं होगा ।[1]

उस दिन लोग नंगे होंगे मगर कोई किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होगा क्यूंकि लोग मुख़्तलिफ़ सूरतों में चल रहे होंगे, बा'ज़ लोग पेट के बल और बा'ज़ मुंह के बल चलेंगे, उन्हें किसी की त़रफ़ तवज्जोह करने का होश ही नहीं होगा ।

क़ियामत के दिन की तीन ह़ालतें

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोग तीन ह़ालतों में होंगे : सुवार, पैदल और मुंह के बल चलने वाले, एक शख़्स ने पूछा कि मुंह के बल कैसे चलेंगे ? आप ने फ़रमाया : जो पैरों पर चला सकता है वोह मुंह के बल चलाने पर भी क़ादिर है ।[2]

आदमी की त़बीअ़त में इन्कार का माद्दा बहुत है जिस चीज़ को देख नहीं पाता है उस का इन्कार कर देता है चुनान्चे, अगर इन्सान सांप को पेट के बल इन्तिहाई बर्क़ रफ़्तारी से दौड़ता हुवा न देखता तो येह बात कभी तस्लीम न करता कि पेट के बल दौड़ा और चला जा सकता है, जिन्हों ने पैरों पर किसी को चलते हुवे नहीं देखा होगा उन के लिये येह बात इन्तिहाई ह़ैरत अंगेज़ होगी कि इन्सान सिर्फ़ पैरों पर चलता है लिहाज़ा तुम दुन्यावी क़ियास से काम लेते हुवे उख़रवी अ़जाइबात का इन्कार न करो, पस इस पर क़ियास कर लो कि अगर तुम ने दुन्या के अ़जाइबात न देखे होते और तुम्हें इन के मुतअ़ल्लिक़ बताया जाता तो तुम तस्लीम करने से इन्कार कर देते ।

ज़रा अपने दिल में येह सोचो कि जब तुम नंगे, ज़लीलो रुस्वा, ह़ैरानो परेशान अपने मुतअ़ल्लिक़ अच्छे या बुरे फ़ैसले के मुन्तज़िर होगे तब तुम्हारी क्या ह़ालत होगी !

अ़र्सए मह़शर की कैफ़िय्यत

मख़्लूक़ के इज़्दिहाम और भीड़ भाड़ के मुतअ़ल्लिक़ ज़रा ख़याल करो कि अ़र्सए मह़शर में ज़मीनो आस्मान की तमाम मख़्लूक़ फ़िरिश्ते, जिन्न, इन्सान, शैत़ान, जानवर, दरिन्दे, परन्दे सब जम्अ़ होंगे, फिर सूरज निकलेगा, उस की गर्मी पहले से दुगनी होगी और उस की ह़िद्दत में मौजूदा

---

1 ......المعجم الكبير، ٢٤/٣٤، الحديث ٩١

2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، ٥/٩٦، الحديث ٣١٥٣

कमी दूर हो जाएगी, सूरज लोगों के सरों पर एक कमान के फ़ासिले के बराबर आ जाएगा, उस वक़्त अ़र्शे इलाही के साए के सिवा कहीं साया नहीं होगा और उस के साए में अबरार होंगे, सूरज की शदीद तमाज़त की वज्ह से हर जानदार शदीद दुख और बे पनाह मुसीबत में होगा, लोग एक दूसरे को हटाएंगे ताकि इज़्दिहाम कम हो, उस वक़्त लोग **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर हाज़िरी के ख़याल से इन्तिहाई शर्मिन्दा और ज़लीलो रुस्वा होंगे उस वक़्त सूरज की गर्मी, सांसों की गर्मी, दिलों में पशेमानी की आग और ज़बरदस्त ख़ौफ़ व हिरास त़ारी होगा और हर एक बाल से पसीना बहना शुरूअ़ होगा, यहां तक कि वोह क़ियामत के मैदान में पानी की त़रह़ भर जाएगा और उन के जिस्म ब क़दरे गुनाह पसीने में डूबे होंगे बा'ज़ घुटनों तक, बा'ज़ कमर तक, बा'ज़ कानों की लौ तक और बा'ज़ सरापा पसीने में ग़र्क़ होंगे।

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोग **अल्लाह** की बारगाह में खड़े होंगे यहां तक कि बा'ज़ लोग कानों तक पसीने में डूबे हुवे होंगे।[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत में लोगों का पसीना सत्तर हाथ ऊंचा हो जाएगा और उन के कानों तक पहुंच जाएगा।[2] इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।

एक और रिवायत है कि लोग चालीस बरस बराबर आस्मान की जानिब टिकटिकी बांधे देखते रहेंगे और शदीद तक्लीफ़ की वज्ह से पसीना उन के मुंह तक पहुंचा हुवा होगा।[3]

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि क़ियामत के दिन सूरज लोगों के इन्तिहाई क़रीब होगा, लोगों को शदीद पसीना आएगा चुनान्चे, बा'ज़ लोग टख़्नों तक, बा'ज़ आधी पिन्डली तक, बा'ज़ घुटनों तक, बा'ज़ रानों तक, बा'ज़ कमर तक, बा'ज़ मुंह तक (और आप ने हाथ के इशारे से बतलाया कि उन्हें पसीने की लगाम लगी होगी) और बा'ज़ लोग पसीने में डूब जाएंगे और आप ने सर की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।[4]

---

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب یوم یقوم الناس...الخ، ٣/٣٧٤، الحدیث ٤٩٣٨

2 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب قول اللّٰہ تعالٰی الا یظن...الخ، ٤/٢٥٥، الحدیث ٦٥٣٢

3 ......المعجم الکبیر، ٩/٣٦١، الحدیث ٩٧٦٤

4 ......مسند احمد ، مسند الشامیین، حدیث عقبۃ بن عامر الجھنی، ٦/١٤٦، الحدیث ١٧٤٤٤

ऐ नातुवां इन्सान ! ज़रा क़ियामत के रोज़ के पसीने और दुख दर्द को याद कर और सोच इन में ऐसे लोग भी होंगे जो कहेंगे : ऐ अल्लाह ! हमें इस मुसीबत से नजात दे अगर्चे तू हमें जहन्नम भेज दे और तू भी उन्ही में से एक होगा और तुझे मा'लूम नहीं कि तू कहां तक पसीने में ग़र्क़ होगा।

हर वोह इन्सान जिस का हज, जिहाद, रोज़ा, नमाज़, किसी भाई की हाजत रवाई, नेकी के हुक्म और बुराइयों से मन्अ करने के सिलसिले में पसीना नहीं बहा है, क़ियामत के दिन शर्मिन्दगी और ख़ौफ़ की वज्ह से उस का पसीना बहेगा और शदीद रन्जो अलम होगा। (उस से ऐसा काम सरज़द नहीं हुवा है)

अगर इन्सान जहालत और फ़रेब से किनारा कश हो कर सोचे तो उसे मा'लूम होगा कि इबादात में सख़्ती बरदाश्त करना, क़ियामत के तवील, सख़्त और शदीद दिन के इन्तिज़ार और पसीने (के अज़ाब) से बहुत ही आसान है।

एक लाख बन्दों की शफ़ाअत करने वाला

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जिल्द 23 सफ़हा 122 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते अबुल मवाहिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते थे कि मैं ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअत करोगे। मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) मैं कैसे इस क़ाबिल हुवा ? इरशाद फ़रमाया : इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर इस का सवाब मुझे नज़्र कर देते हो। (الطبقات الکبری للشعرانی، ص ۱۰۱)

सवाब नज़्र करने का तरीक़ा येह है कि पढ़ते वक़्त सवाब नज़्र करने की दिल में निय्यत कर ले या पढ़ने से क़ब्ल या बा'द ज़बान से भी कह ले कि इस दुरूद शरीफ़ का सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़्र करता हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बाब 37

मख़्लूक़ के फ़ैसले

मुफ़्लिस कौन है ?

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जानते हो मुफ़्लिस कौन है ? हम ने कहा : मुफ़्लिस वोह है जिस के पास रूपिया पैसा और मालो मनाल न हो । आप ने फ़रमाया : नहीं, मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरा का सवाब लिये हुवे आएगा मगर उस ने किसी को गाली, किसी की ग़ीबत, किसी को ना ह़क़ क़त्ल, किसी पर ज़ुल्म और किसी का माल खाया होगा, उस की तमाम नेकियां उन लोगों में तक़्सीम कर दी जाएंगी, जब उस की नेकियां ख़त्म हो जाएंगी तो दूसरों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे और उसे जहन्नम में डाला जाएगा ।(1)

ऐ इन्सान ! ज़रा सोच ! उस दिन तेरी क्या ह़ालत होगी ! तेरे पास कोई ऐसी नेकी नहीं है जिसे तू ने रिया और शैत़ान के वस्वसों से पाक हो कर किया होगा, अगर तू ने त़वील मुद्दत में एक ख़ालिस नेकी ह़ासिल कर ली है तो वोह भी क़ियामत में तेरे दुश्मन ले जाएंगे शायद तू ने अपने नफ़्स का मुह़ासबा करते हुवे देखा होगा कि अगर्चे तू सारी रात इबादत में और तमाम दिन रोज़ों में गुज़ारता है मगर तेरी ज़बान मुसलमानों की ग़ीबत से नहीं रुकती और तेरी नेकियां बरबाद हो जाती हैं, दीगर बुराइयां जैसे ह़राम की चीज़ें खाना, माले मश्कूक हज़्म कर जाना और मुकम्मल त़ौर पर इबादते इलाही न कर सकने की कोताही से तू कैसे ओ़हदा बर आ हो सकता है । जब कि उस दिन हर बे सींग वाली बकरी को सींग वाली बकरी से बदला दिलाया जाएगा ।

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो बकरियों को आपस में सींग मारते हुवे देख कर फ़रमाया : अबू ज़र ! जानते हो येह ऐसा क्यूं कर रही हैं ? मैं ने कहा : नहीं । आप ने फ़रमाया : लेकिन अल्लाह तआ़ला जानता है कि वोह क्यूं एक दूसरे को सींग मार रही हैं और वोह क़ियामत के दिन इन का फ़ैसला फ़रमाएगा ।(2)

---

1 ......مسند احمد ، مسند ابی ہریرۃ ، ۳/۱٦۹، الحدیث ۸۰۳۵

2 ......مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی ذرالغفاری ، ۸/۱۰۰، الحدیث ۲۱٤۹٤

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआने करीम की आयत :

وَمَا مِنۡ دَآبَّۃٍ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا طٰٓئِرٍ یَّطِیۡرُ بِجَنَاحَیۡہِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمۡثَالُکُمۡ (1) *ज़मीन के तमाम जानवर और तमाम परन्दे तुम्हारी त़रह़ एक उम्मत है।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ जानवर, दरिन्दे, परन्दे वग़ैरा उठाए जाएंगे और हर किसी को इन्साफ़ दिया जाएगा यहां तक कि बे सींग वाली बकरी को सींग वाली से बदला दिलाया जाएगा और फिर कहा जाएगा : तुम मिट्टी हो जाओ ! उस वक़्त येह सुन कर हर काफ़िर येह पुकार उठेगा कि "काश मैं भी मिट्टी होता" (یٰلَیۡتَنِیۡ کُنۡتُ تُرٰبًا)(2)

ऐ नातुवां इन्सान ! उस वक़्त जब कि तेरा नामए आ'माल नेकियों से ख़ाली होगा तू सख़्त दुख में मुब्तला हो कर कहेगा : मेरी नेकियां कहां हैं ? और तुझ से कहा जाएगा कि वोह तेरे दुश्मनों के नामए आ'माल में मुन्तक़िल हो गई हैं। उस वक़्त तू अपने नामए आ'माल को बुराइयों से भरा हुवा पाएगा जिन से बचने के लिये तू ने दुन्या में इन्तिहाई कोशिश की थी और रन्जो ग़म उठाया था, तब तू कहेगा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तो येह गुनाह नहीं किये थे, तो तुझे कहा जाएगा कि येह उन लोगों की बुराइयां तेरे हिस्से में आई हैं जिन की तू ने ग़ीबत की, गालियां दीं और उन से लैन दैन, हमसाएगी, गुफ़्तगू, मुबाह़सों और दीगर मुआ़मलात में तू ने बद सुलूकी की थी।

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैत़ान जज़ीरतुल अ़रब में बुत परस्ती से ना उम्मीद हो गया है लेकिन वोह अ़न क़रीब तुम्हारे बुरे अफ़्आ़ल से राज़ी हो जाएगा और येही बद आ'मालियां तबाह करने वाली हैं, जहां तक हो सके ज़ियादतियों से बचो क्यूंकि क़ियामत के दिन एक ऐसा इन्सान भी आएगा जिस की नेकियां पहाड़ों की त़रह़ होंगी और वोह येह समझेगा कि मैं अ़न क़रीब नजात पा जाऊंगा मगर बराबर इन्सान आते जाएंगे और कहेंगे : ऐ अल्लाह ! इस ने हम पर ज़ुल्म किया था। रब फ़रमाएगा : "इस की नेकियां मिटा दो !" यहां तक कि उस की कोई नेकी बाक़ी नहीं बचेगी, येह ऐसा ही है जैसे कुछ लोग सफ़र में एक सह़रा में उतरे, उन के पास लकड़ियां नहीं थीं, वोह इर्द गिर्द फैल गए और उन्हों ने लकड़ियां इकठ्ठी कीं मगर आग जलाने से पहले ही वहां से चल दिये, येही ह़ाल गुनाहों का है।(3)

जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परन्द कि अपने परों उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें। (پ۷، الانعام:۳۸)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हाए मैं किसी त़रह़ ख़ाक हो जाता। (پ۳۰،النبا:۴۰)

3.....شعب الایمان ، السابع والاربعون...الخ، فصل فی محقرات الذنوب، ۵/۴۵۵، الحدیث ۷۲۶۳

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَّإِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ (1)

तो ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) हम दुन्या में एक दूसरे के साथ जो ज़ियादतियां करते हैं वोह लौटाई जाएंगी ? आप ने फ़रमाया : हां ! ताकि हर मज़्लूम को उस का ह़क़ दिलाया जाए । ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ब ख़ुदा येह बात बहुत अ़ज़ीम है ।"(2) ऐसा अ़ज़ीम दिन जिस में किसी क़दम को नहीं बख़्शा जाएगा और न ही किसी थप्पड़ से दर गुज़र किया जाएगा ता आंकि हर मज़्लूम को ज़ालिम से उस का ह़क़ दिलाया जाएगा ।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन लोगों को बरह्ना, ग़ुबार आलूद, ख़ाली हाथ उठाएगा, फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा (और येह आवाज़ क़रीब व दूर यक्सां सुनी जाएगी) कि मैं बादशाह हूं, हर शख़्स को उस के आ'माल के मुत़ाबिक़ बदला देने वाला हूं, कोई जन्नती जन्नत में और कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में बिग़ैर बदले दिये न जाएगा । हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : हुज़ूर बदला कैसे दिया जाएगा लोग तो बरह्ना और ख़ाली हाथ होंगे ! आप ने फ़रमाया : नेकियों और गुनाहों के साथ बदले दिये और लिये जाएंगे(3) लिहाज़ा **अल्लाह** से डरो ! लोगों के माल छीन कर, उन की इ़ज़्ज़तें पामाल कर के, उन के दिल दुखा के और उन से बुरा सुलूक कर के उन पर ज़ुल्म न करो क्यूंकि जो गुनाह बन्दे और ख़ुदा तआ़ला के दरमियान हैं वोह बहुत जल्द मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।

जो शख़्स गुनाह और लोगों से ज़ियादतियां कर के ताइब हो चुका हो उसे चाहिये कि वोह नेकियों में दिल लगाए और इन को यौमे क़ियामत के लिये ज़ख़ीरा बनाए, मज़ीद बर आं मुकम्मल इख़्लास से ऐसी नेकियां करे जो **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई न जानता हो, मुमकिन है इसी के तुफ़ैल **अल्लाह** तआ़ला उसे अपना मुक़र्रब बना ले और उन मह़बूब मोमिनों की जमाअ़त में इसे शामिल फ़रमा ले जिसे वोह बा वुजूद ज़ियादतियों के अपने लुत़्फ़ो करम से बख़्श देगा ।

मुआ़फ़ी का इन्आ़म

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बैठे हुवे थे, अचानक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया इस त़रह़ कि आप के दन्दाने मुबारक

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है, फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे । (پ٢٣،الزمر:٣٠،٣١)

2.....مسند احمد، مسند الزبير بن العوام، ١/٣٥٣، الحديث ١٤٣٤

3.....مسند احمد، مسند المكيين، حديث عبدالله بن انيس، ٥/٤٢٩، الحديث ١٦٠٤٢ عن عبدالله بن انيس

नज़र आने लगे। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों ! हुज़ूर किस बात पर तबस्सुम फ़रमा रहे हैं ? आप ने फ़रमाया : मेरी उम्मत के दो आदमी **अल्लाह** की बारगाह में हाज़िर होंगे, उन में से एक कहेगा : "इलाहल आ़लमीन ! मुझे इस भाई से इन्साफ़ दिलाइये।" रब तआ़ला दूसरे आदमी से फ़रमाएगा कि इसे इस का ह़क़ दो ! वोह अ़र्ज़ करेगा : "या इलाही ! मेरी नेकियों में कुछ बाक़ी नहीं रहा है।" **अल्लाह** तआ़ला इन्साफ़ चाहने वाले से फ़रमाएगा : अब क्या कहते हो ? वोह कहेगा : "ऐ **अल्लाह** ! इस के इवज़ मेरे गुनाहों का बार इस पर कर दीजिये !" हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माए अत़हर अश्कबार हो गईं फिर फ़रमाया : बे शक येह बहुत शदीद दिन होगा, लोग अपने गुनाह दूसरों पर डालने के ख़्वाहिशमन्द होंगे। **अल्लाह** तआ़ला पहले शख़्स से फ़रमाएगा कि नज़र उठा कर जन्नत को देखो ! वोह जन्नत को देख कर कहेगा : मैं ने सोने चांदी के ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात देखे हैं जिन में मोती जड़े हुवे हैं, येह कौन से नबी, सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ? रब्बे ज़ुल जलाल फ़रमाएगा : जो इस की क़ीमत अदा करेगा उसे दूंगा। वोह कहेगा : ऐ **अल्लाह** ! इन की क़ीमत किस के पास है ? **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : "तेरे पास इन की क़ीमत है और वोह येह है कि तू अपने इस भाई को मुआ़फ़ कर दे" चुनान्चे, वोह उसे मुआ़फ़ कर देगा और रब तआ़ला फ़रमाएगा : अपने भाई का हाथ पकड़ कर इसे जन्नत में दाख़िल कर दे। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** से डरो ! और एक दूसरे से नेकी करो ! **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन मोमिनों में बाहम सुल्ह़ कराएगा।[1]

इस इरशाद में येह ताकीद पाई जाती है कि इन्सान अपने अख़्लाक़ बेहतर बनाए, लोगों से नेकी करे। अब ऐ इन्सान ज़रा ग़ौर कर ! अगर तेरा नामए आ'माल उस दिन मज़ालिम से पाक हो या **अल्लाह** तआ़ला तुझे अपने लुत़्फ़ो करम से बख़्श दे और तुझे सआ़दते अबदी का यक़ीन हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला की अ़दालत से वापस लौटते हुवे तुझे कितनी "ख़ुशी और मसर्रत" होगी, तेरे जिस्म पर रज़ाए इलाही का लिबास होगा, तेरे लिये अबदी सआ़दत होगी और हमेशा रहने वाली ने'मतें ह़ासिल होंगी, उस वक़्त तेरा दिल ख़ुशी व शादमानी से उड़ रहा होगा, तेरा चेहरा सफ़ेद व नूरानी होगा और चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ ताबां, तू सर उठाए हुवे फ़ख़्र के साथ लोगों में जाएगा, तेरी पीठ गुनाहों से ख़ाली होगी, जन्नत की हवाओं और रज़ाए इलाही की ठन्डक से तेरी पेशानी चमक रही होगी, सारी मख़्लूक़ की निगाहें तुझ पर जमी होंगी, वोह तेरे हुस्नो जमाल पर रश्क करेंगे, मलाइका तेरे आगे पीछे चल रहे होंगे और लोगों से कहेंगे : येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है,

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال، باب اذا لم يبق من الحسنات...الخ، ٥/٧٩٥، الحديث ٨٧٥٨

अल्लाह तआला इस से राज़ी हुवा और इसे राज़ी कर दिया, इसे सआदते अबदी मयस्सर आ गई है और इसे कभी भी शक़ावत से हम किनार नहीं होना पड़ेगा। क्या तू येह मक़ाम उस मक़ाम से बुलन्द नहीं समझता जिसे तू रिया, तसन्नोअ़, मुनाफ़क़त और ज़ैबो ज़ीनत से लोगों के दिलों में बनाता है। अगर तू इस बात को अच्छा समझता है और यक़ीनन वोही मक़ामे आख़िरत अच्छा है, तो इख़्लास और अल्लाह तआला के हुज़ूर निय्यते सादिक़ के साथ हाज़िरी दे, फिर तू येह बुलन्द मर्तबा हासिल कर लेगा।

नामए आ'माल का बुराइयों से भरा होना और इस का अन्जाम

نَعُوْذُ بِاللّٰه अगर ऐसा न हुवा और तेरे नामए आ'माल से तमाम बुराइयां निकलीं जिन्हें तू मा'मूली समझता था हालांकि अल्लाह तआला के नज़दीक वोह बहुत बड़ी ग़लतियां थीं, इसी वज्ह से तुझ पर अल्लाह तआला का इताब हो और वोह फ़रमाए : ऐ बदतरीन इन्सान ! तुझ पर मेरी ला'नत हो, मैं तेरी इबादत क़बूल नहीं करता, तो येह आवाज़ सुनते ही तेरा चेहरा सियाह हो जाएगा, फिर अल्लाह तआला की नाराज़ी के सबब अल्लाह के फ़िरिश्ते तुझ पर नाराज़ हो जाएंगे और कहेंगे : तुझ पर हमारी और तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ से ला'नत हो, उस वक़्त अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते अपनी भरपूर बद मिज़ाजी, बद ख़ुल्क़ी और वहशत नाक शक्लों के साथ रब तआला की नाराज़ी की वज्ह से इन्तिहाई ग़ुस्से में तेरी त़रफ़ बढ़ें और तेरी पेशानी के बालों को पकड़ कर तुझे तमाम लोगों के सामने मुंह के बल घसीटें, लोग तेरे चेहरे की सियाही देखें, तेरी रुस्वाई देखें ! और तू हलाकत को पुकारे और फ़िरिश्ते तुझे कहें तू आज एक हलाकत को नहीं बहुत सी हलाकतों को बुला और फ़िरिश्ते पुकार कर कहें, येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है, अल्लाह तआला ने आज इस की रुस्वाइयों का पर्दा चाक कर दिया है, इस के बुरे आ'माल की वज्ह से इस पर ला'नत की है और दाइमी बद बख़्ती इस को नसीब हुई है। और येह अन्जाम बसा अवक़ात ऐसे गुनाहों का होता है जिसे तू ने लोगों से छुप कर किया हो, उन से शर्मिन्दगी या इज़्हारे तक़्वा के तौर पर तू ने ऐसा किया हो मगर इस से बढ़ कर तेरी बे वुक़ूफ़ी और क्या होगी कि तू ने चन्द आदमियों के डर से सिर्फ़ दुन्यावी रुस्वाई से बचते हुवे छुप कर गुनाह किया मगर उस **"अ़ज़ीम रुस्वाई"** से जो सारी दुन्या के सामने होगी और उस में अल्लाह तआला की नाराज़ी, अ़ज़ाबे अलीम और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों का तुझे जहन्नम की त़रफ़ घसीटना और दूसरे अ़ज़ाब शामिल होंगे, तू ने बचने की कोई तदबीर न की। क़ियामत में तेरी येही कैफ़िय्यात होंगी मगर अफ़्सोस कि तुझे पेश आने वाले ख़त़रात का ज़र्रा भर एहसास नहीं है।

बाब 38

मज़म्मते मालो मनाल

अम्वाल व अवलाद तुम्हारे लिये आज़माइश हैं

फ़रमाने इलाही है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ (1)

*ऐ ईमान वालो तुम्हें तुम्हारा माल व अवलाद **अल्लाह** से ग़ाफ़िल न करे और जिस ने ऐसा किया वोह नुक़्सान पाने वाले हैं।*

मज़ीद इरशाद है :

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ (2)

*बिला शुबा तुम्हारे माल और अवलाद तुम्हारे लिये आज़्माइश हैं और **अल्लाह** के नज़्दीक बहुत बड़ा अज्र है।*

लिहाज़ा जिस किसी ने भी माल और अवलाद को **अल्लाह** तआला की रह़मत पर तरजीह़ दी उस ने अ़ज़ीम नुक़्सान किया।

फ़रमाने इलाही है : जो शख़्स दुन्यावी ज़िन्दगी और ज़ैबो ज़ीनत की तमन्ना करता है। (आख़िर आयत तक)(3)

फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝ (4)

तह़क़ीक़ इन्सान सरकशी करता है इस लिये कि वोह ख़ुद को ग़नी और बे परवा समझता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी अवलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं। (پ۲۸، المنفقون:۹)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं और **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है। (پ۲۸، التغابن: ۱۵)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम इस में उन का पूरा फल दे देंगे और इस में कमी न देंगे येह हैं वोह जिन के लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुवे जो उन के अ़मल थे। (پ۱۲، هود:۱۵،۱۶)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आदमी सरकशी करता है इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया। (پ۳۰،العلق:۶،۷)

मज़ीद फ़रमाया : तुम्हें कसरते माल की त़लब ने हलाक कर दिया।[1]

फ़रमाने नबवी है कि जैसे पानी सब्ज़ियां उगाता है इसी त़रह़ माल और इ़ज़्ज़त की मह़ब्बत इन्सान के दिल में निफ़ाक़ पैदा करते हैं।[2]

फ़रमाने नबवी है कि दो ख़ूंख़्वार भेड़िये बकरियों के इह़ाते में घुस कर इतना नुक़्सान नहीं करते जितना किसी मुसलमान के दीन में माल, इ़ज़्ज़त और वजाहत की तमन्ना नुक़्सान करती है।[3]

फ़रमाने नबवी है कि ज़ियादा दौलत मन्द हलाक हो गए मगर जिन्हों ने बन्दगाने ख़ुदा पर बे अन्दाज़ा माल ख़र्च किया (वोह हलाकत से मह़फ़ूज़ रहे) और ऐसे लोग कम हैं)[4]

आप से पूछा गया आप की उम्मत में सब से बुरे लोग कौन हैं ? फ़रमाया : दौलत मन्द ![5]

फ़रमाने नबवी है कि अ़न क़रीब तुम्हारे बा'द एक क़ौम आने वाली है जो दुन्या की ख़ुश रंग ने'मतें खाएंगे, ख़ुश क़दम घोड़ों पर सुवार होंगे, बेहतरीन, ह़सीन व ख़ूबरू औ़रतों से निकाह़ करेंगे, बेहतरीन रंगो वाले कपड़े पहनेंगे, उन के मा'मूली पेट कभी नहीं भरेंगे, उन के दिल कसीर दौलत पर भी क़नाअ़त नहीं करेंगे, सुब्ह़ो शाम दुन्या को मा'बूद समझ कर इस की इ़बादत करेंगे, इसे अपना रब समझेंगें, इसी के कामों में मगन और इसी की पैरवी में गामज़न रहेंगे। जो शख़्स उन लोगों के ज़माने को पाए, उसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ورَضِیَ اللّٰہُ عَنْه) की वसिय्यत है कि वोह उन्हें सलाम न करे, बीमारी में उन की इ़यादत न करे, उन के जनाज़ों में शामिल न हो और उन के सरदारों की इ़ज़्ज़त न करे और जिस शख़्स ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को मिटाने में उन से तआ़वुन किया।[6]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने। (پ۳۰، التکاثر:۱)

2......

3......المعجم الكبير، ۹٦/۱۹، الحديث ۱۸۹

4......مسند احمد، مسند ابی ہريرة، ۱۸۰/۳، الحديث ۸۰۹۱

5......مسند البزار، ۲٤۳/۱٦، الحديث ۹٤۱۵ و شعب الايمان، ۳۳/۵، الحديث ۵٦٦۹

6......المعجم الاوسط، ۲۰/۲، الحديث ۲۳۵۱ و تذكرة الموضوعات للفتنی، ص ۱۷٤ و اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم البخل...الخ، ٦٦۹/۹

फ़रमाने नबवी है कि दुन्या, दुन्यादारों के लिये छोड़ दो, जिस ने अपनी ज़रूरत से ज़ियादा दुन्या ले ली, उस ने बे ख़बरी में अपने लिये हलाकत ले ली।[1]

राहे ख़ुदा में ख़र्च होने वाला माल बाक़ी रहता है

फ़रमाने नबवी है कि इन्सान "मेरा माल ! मेरा माल !" करता है मगर तुम्हारे माल से वोह है जो तू ने खा लिया वोह ख़त्म हो गया और जो पहन लिया वोह पुराना हो गया, जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया वोही बाक़ी रहा।[2]

एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे क्या हो गया है कि मैं मौत को अच्छा नहीं समझता ? आप ने फ़रमाया : तेरे पास कुछ मालो दौलत है ? उस ने अर्ज़ किया : जी हां। आप ने फ़रमाया : माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो क्यूंकि मोमिन का दिल अपने माल के साथ रहता है अगर वोह माल को रोके रखता है तो उस का दिल मरने पर तय्यार नहीं होता और अगर वोह माल को आगे भेज देता है (राहे मौला में ख़र्च कर देता है) तो उसे भी वहां जाने की आरज़ू होती है।[3]

फ़रमाने नबवी है कि इन्सान के तीन दोस्त हैं : एक उस की मौत तक साथ रहता है, दूसरा क़ब्र तक और तीसरा क़ियामत तक साथ रहेगा, मौत तक का साथी उस का माल है, क़ब्र तक का साथ देने वाला उस का ख़ानदान है और क़ियामत तक साथ देने वाले उस के आ'माल हैं।[4]

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हवारियों ने आप से पूछा : क्या वज्ह है कि आप पानी पर चलते हैं और हम नहीं चल सकते ? आप ने फ़रमाया : तुम मालो दौलत को कैसा समझते हो ? वोह बोले : अच्छा समझते हैं। आप ने फ़रमाया : मगर मेरे नज़दीक मिट्टी का ढेला और रूपिया बराबर है।

गुनहगार दौलत मन्द पुल सिरात से नहीं गुज़र सकेगा

हज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लिखा कि ऐ भाई ! ख़ुद को इतनी दुन्या जम्अ़ करने से बचाओ जिस का तुम "शुक्र" अदा न कर सको क्यूंकि मैं ने

1 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب الزهد، ٢/٧٩، الجزء الثالث، الحديث ٦١١٤

2 ......مسلم، كتاب الزهد والرقائق، ص١٥٨٢، الحديث ٣ـ (٢٩٥٨)

3 ......الزهد لابن المبارك، ص١٢٤، الحديث٦٤٣

4 ......المعجم الكبير، ٧/٢٦٣، الحديث ٧٠٧٥ ماخوذاً

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि **अल्लाह** तआ़ला का इत़ाअ़त गुज़ार दौलत मन्द अपना माल लिये क़ियामत में आएगा, वोह पुल सिरात़ से गुज़रने लगेगा तो उस का माल कहेगा : गुज़र जा क्यूंकि तू ने मेरा ह़क़ अदा किया था और जब गुनहगार दौलत मन्द आएगा और पुल सिरात़ से गुज़रने लगेगा तो उस का माल कहेगा : तेरे लिये हलाकत हो तू ने मेरे बारे में **अल्लाह** तआ़ला के मुक़र्रर कर्दा ह़ुक़ूक़ पूरे नहीं किये थे, पस उसे हलाकत में डाल दिया जाएगा।(1)

फ़रमाने नबवी है कि जब इन्सान मरता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : इस ने क्या भेजा था (राहे ख़ुदा में क्या कुछ ख़र्च किया था ?) और इन्सान कहते हैं : इस ने क्या कुछ छोड़ा है ?(2)

फ़रमाने नबवी है कि जाएदाद न बनाओ, तुम दुन्या से मह़ब्बत करने लगोगे।(3)

मरवी है कि किसी शख़्स ने ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सख़्त सुस्त कहा, आप को ना गवार गुज़रा और आप ने **अल्लाह** तआ़ला से बद दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** ! जिस ने मुझे बुरा कहा है, उस के जिस्म को तन्दुरुस्त रख, उस को त़वील ज़िन्दगी और कसीर मालो मनाल अ़त़ा कर दे गोया उन्हों ने तन्दुरुस्ती और त़वील ज़िन्दगी के साथ मालो दौलत की फ़रावानी को भी बुरा और उसे राहे रास्त से हटाने वाला समझा।

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक दिरहम हाथ पर रख कर फ़रमाया : तू जब तक मुझ से जुदा नहीं होगा, मुझे कोई फ़ाइदा नहीं देगा।

मरवी है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में कुछ रक़म भेजी, आप ने पूछा : येह क्या है ? लोगों ने कहा : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की ख़िदमत में रक़म भेजी है। आप बोलीं : **अल्लाह** तआ़ला उ़मर पर रह़मत फ़रमाए, फिर एक पर्दा ले कर उस के चन्द टुकड़े किये और उस की थैलियां बना कर उन में रक़म डाल कर तमाम की तमाम रिश्तेदारों और यतीमों में तक़्सीम कर दी और हाथ उठा कर **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगी कि ऐ इलाहल आ़लमीन ! क़ब्ल इस के कि मेरे पास

---

1 ......شعب الایمان، الحادی و السبعون...الخ، فصل فیما بلغنا عن الصحابة فی معنی ما تقدم عن رسول اللّٰہ، ۷/۳۸۰، الحدیث ۱۰۶۵۷

2 ......شعب الایمان، الحادی والسبعون...الخ ، باب فی الزھد، ۷/۳۲۸، الحدیث ۱۰۴۷۵

3 ......ترمذی ، کتاب الزھد، باب ۲۰، ۴/۱۴۷، الحدیث ۲۳۳۵

आयिन्दा साल हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ऐसी ही रक़म आए, मुझे दुन्या से उठा ले ! चुनान्चे, वोह हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द सब से पहली ज़ौजए मोहतरमा थीं जिन्हों ने सब से पहले इन्तिक़ाल फ़रमाया।

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : जिस ने दौलत को इज़्ज़त दी **अल्लाह** ने उसे ज़लील किया। कहते हैं : जब रूपिया पैसा बनता है तो सब से पहले शैतान इन्हें उठा कर माथे से लगा कर चूमता है और कहता है जिस शख़्स ने तुम से महब्बत की वोह यक़ीनन मेरा बन्दा है।

हज़रते समीत़ बिन इजलान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : रूपिया पैसा मुनाफ़िक़ों की ऐसी मुहारें है जो उन्हें जहन्नम में ले जाते हैं।

हज़रते यह्या बिन मुआज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि रूपिया पैसा बिच्छू हैं, अगर तुम्हें इस की काट का मन्तर न आता हो तो इसे हाथ न लगाओ, अगर इस ने तुझे डंक मार दिया तो इस का ज़हर तुझे हलाक कर देगा, पूछा गया : इस का मन्तर क्या है ? आप ने फ़रमाया : हलाल से कमाना और सहीह काम में ख़र्च कर देना।

हज़रते अ़ला बिन ज़ियाद कहते हैं : मेरे सामने दुन्या तमाम ज़ीनतों से मुज़य्यन हो कर आई तो मैं ने कहा : मैं तेरे शर से **अल्लाह** की पनाह चाहता हूं, दुन्या ने कहा : अगर तुम मेरे शर से बचना चाहते हो तो रूपे पैसे से दुश्मनी रखो क्यूंकि दौलत और रूपे पैसे को हासिल करना, दुन्या को हासिल करना है जो इन से अलग थलग रहे वोह दुन्या से बच जाता है।

इसी लिये कहा गया है :

انی وجدت فلا تظنوا غیرہ ان التورع عند ھذا الدرھم

فاذا قدرت علیہ ثم ترکتہ فاعلم بان تقاک تقوی المسلم

﴿1﴾......मैं ने येह राज़ पा लिया है और तुम भी समझ लो कि दौलत को छोड़ कर ही तक़्वा हासिल होता है।

﴿2﴾......जब तू दुन्या पा कर उसे छोड़ दे तो वाक़ेई तू ने एक मुसलमान का सा तक़्वा हासिल किया है।

एक शाइर कहता है :

لایغرنک من المرء قمیص رقعۃ او ازار فوق عظم الساق منہ رقعۃ

اوجبین لاح فیہ اثر قد خلعہ ارہ الدرھم تعرف حبہ او ورعہ

《1》......तुझे किसी की पैवन्द लगी क़मीस या मोटी पिन्डली तक उठी हुई चादर (तहबन्द) धोके में न डाले।

《2》......या उस की पेशानी पर निशाने इबादत धोके में न डाले तुम तो येह देखो कहीं वोह मालो दौलत से महब्बत तो नहीं करता।

हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते मर्ग

मरवी है कि हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौत के वक़्त मस्लमा बिन अब्दुल मलिक ने आ कर कहा : अमीरल मोमिनीन ! आप ने ऐसा काम किया है जो पहले हुक्मरानों ने नहीं किया। आप अपनी अवलाद को तंगदस्त छोड़ कर जा रहे हैं ? हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के तेरह बच्चे थे, आप ने येह सुन कर फ़रमाया : मुझे उठा कर बिठाओ। जब आप बैठ गए तो फ़रमाया : तुम ने येह कहा है कि मैं ने इन के लिये मालो दौलत नहीं छोड़ी है ? मैं ने कभी इन का हक़ नहीं रोका और न कभी इन्हें दूसरों का हक़ दिया है, अगर येह इताअ़त गुज़ार रहेंगे तो अल्लाह तआ़ला इन की ज़रूरतें पूरी करेगा, वोही नेकों का सर परस्त है और अगर येह बदकार निकले तो मुझे इन की कोई परवाह नहीं है।

रिवायत है कि हज़रते मुहम्मद बिन का'ब अल कुरज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कहीं से बहुत सी दौलत मिल गई, उन से कहा गया कि अपनी अवलाद के लिये कुछ जम्अ़ कर दीजिये ! आप ने फ़रमाया कि मैं इसे अपने लिये अल्लाह के हां जम्अ़ करूंगा और अपने रब को अपनी अवलाद के लिये छोड़ जाऊंगा।

मरवी है कि एक शख़्स ने अबू अ़ब्दे रब्बेह से कहा : ऐ बरादर ! अपनी अवलाद के लिये बुराई नहीं बल्कि भलाई छोड़ कर जाइये तो उन्हों ने अपने माल से एक लाख दिरहम निकाले।

हज़रते यहूया बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि दो मुसीबतें ऐसी हैं कि इन जैसी मुसीबतें अगले पिछले लोगों ने नहीं सुनी हैं, वोह है मौत के वक़्त बन्दे का माल पर अफ़्सोस, पूछा गया वोह कैसे ? आप ने फ़रमाया : उस से तमाम दौलत छिन जाती है और दूसरे येह कि उसे तमाम दौलत का हिसाब अल्लाह को देना पड़ता है।

बाब 39

आ'माल, मीज़ान और नारे जहन्नम

मीज़ाने अ़मल और नामए आ'माल के दाएं या बाएं हाथ में दिये जाने के बारे में ग़ौर करते रहना तुम्हारे लिये ज़रूरी है क्यूंकि हिसाब के बा'द लोगों की तीन जमाअ़तें होंगी : एक जमाअ़त वोह होगी जिस की कोई नेकी नहीं होगी, तब आगे से एक सियाह गर्दन नुमूदार होगी जो उन्हें इस त़रह़ उचक लेगी जैसे परन्दा दाने उचक लेता है और उन्हें लपेट कर आग में डाल देगी और आग उन्हें निगल लेगी, फिर पुकार कर कहा जाएगा : इन की बद बख़्ती दवामी है और इन के लिये किसी भलाई की तवक़्क़ोअ़ नहीं है। दूसरी जमाअ़त वोह होगी जिस की कोई बुराई नहीं होगी, उस दिन निदा आएगी कि हर ह़ाल में **अल्लाह** की ह़म्द करने वाले खड़े हो जाएं, वोह खड़े हो जाएंगे और निहायत इत़्मीनान से जन्नत में दाख़िल होंगे फिर रातों को इबादत करने वालों, तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त के बाइ़स ज़िक्रे ख़ुदा से न रुकने वालों को इसी त़रह़ जन्नत में भेजा जाएगा और कहा जाएगा कि इन के लिये दवामी सआ़दत है जिस के बा'द कोई दुख तक्लीफ़ नहीं है। तीसरी जमाअ़त वोह होगी जिन के नामहाए आ'माल में नेकियां और गुनाह दोनों दर्ज होंगे लेकिन उन्हें ख़बर नहीं होगी जब तक **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मत और अपने अ़ज़ाब का इज़्हार फ़रमाए। उन लोगों के नामए आ'माल में गुनाह और नेकियां लिपटी हुई होंगी उन के आ'माल मीज़ान किये जाएंगे और उन की आंखें नामए आ'माल की त़रफ़ होंगी कि कौन से हाथ में आता है और मीज़ान का पल्ला किधर झुकता है और येह ऐसी ख़ौफ़नाक ह़ालत होगी जिस से लोगों के होश उड़ जाएंगे।

आख़िरत की याद में ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا की अश्कबारी

ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا की गोद में सर रखा और आप को ऊंघ आ गई, ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا आख़िरत को याद कर के रो पड़ीं और उन के आंसू हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के चेहरए अन्वर पर गिरे तो हुज़ूर की आंख खुल गई। आप ने फ़रमाया : आ़इशा ! क्यूं रोती हो ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर आख़िरत को याद कर के रोती हूं, क्या लोग क़ियामत के दिन अपने घर वालों को याद करेंगे ? आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! तीन जगहों में लोगों को अपने सिवा कुछ याद नहीं होगा :

﴾1﴿......जब मीज़ाने अ़द्ल रखा जाएगा और आ'माल तोले जाएंगे, लोग सब कुछ भूल कर येह देखेंगे कि उन की नेकियां कम होती हैं या ज़ियादा ?

﴾2﴿......नामए आ'माल दिये जाने के वक़्त येह सोचेंगे कि दाएं हाथ में मिलता है या बाएं हाथ में, और

﴾3﴿......पुल सिरात़ से गुज़रते हुवे सब कुछ भूल जाएंगे।(1)

हज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि क़ियामत के दिन इन्सानों को मीज़ान के सामने खड़ा किया जाएगा और एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया जाएगा, अगर उस की नेकियां भारी हो गईं तो वोह फ़िरिश्ता बुलन्द आवाज़ से कहेगा कि फ़ुलां ने सआ़दते अबदी ह़ासिल कर ली है और उसे कभी बद बख़्ती से वासित़ा नहीं पड़ेगा और अगर उस की बुराइयां ज़ियादा हो गईं तो फ़िरिश्ता बुलन्द आवाज़ से पुकारेगा जिस की आवाज़ तमाम मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़ुलां ने दाइमी बद बख़्ती पा ली है उस के लिये कभी कोई सआ़दत नहीं होगी, तब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते लोहे के गुर्ज़ लिये आग के कपड़े पहने हुवे आएंगे और जहन्नमियों को जहन्नम में ले जाएंगे।

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला हज़रते आदम علیہ السلام को बुला कर फ़रमाएगा कि उठिये और जहन्नमियों को जहन्नम में भेज दीजिये, हज़रते आदम علیہ السلام पूछेंगे कि कितनों को जहन्नम में भेजूं ? रब फ़रमाएगा कि हर हज़ार में से नव सो निनानवे को भेज दीजिये।(2)

सहाबए किराम ने ज़िक्रे क़ियामत पर ख़ौफ़ से हंसना बन्द कर दिया

सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم ने जब येह बात सुनी तो वोह ना उम्मीद हो गए और हंसना मुस्कुराना छोड़ दिया। हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم ने जब येह मुशाहदा फ़रमाया तो इरशाद किया कि अ़मल करो और ख़ात़िर जम्अ़ रखो, रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, काफ़िर इन्सानों और शैत़ान के चेलों के इलावा दो ऐसी मख़्लूक़ात भी हैं जो अपनी ता'दाद में तुम से बहुत ज़ियादा हैं। सहाबा ने पूछा : वोह कौन हैं ? आप ने फ़रमाया : याजूज और माजूज, सहाबए किराम येह सुनते ही खुश हो गए। आप ने मज़ीद फ़रमाया : अ़मल करो और इत़्मीनान

1......ابو داود، کتاب السنة، باب فی ذکر المیزان، ٤/٣١٧، الحدیث ٤٧٥٥

2......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قصة یاجوج وماجوج، ٢/٤١٩، الحدیث ٣٣٤٨

रखो ब ख़ुदा ! तुम क़ियामत के दिन लोगों में ऐसे होगे जैसे ऊंट के पहलू में तिल या जैसे जानवर की टांग पर नुक़्ता होता है।[1]

ऐ फ़ानी दुन्या के धन्दों में मगन और फ़रेब ख़ुर्दा ग़ाफ़िल इन्सान ! इस दारे फ़ानी में ग़ौरो फ़िक्र न कर बल्कि उस मन्ज़िल की फ़िक्र कर जिस के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दी गई है कि वोह तमाम इन्सानों का पड़ाव है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

और तुम में से हर एक उस पर गुज़रने वाला है तेरे रब का ह़तमी वा'दा येह है फिर हम परहेज़गारों को नजात देंगे और ज़ालिमों को उस में गिरा हुवा छोड़ेंगे।[2]

वहां पर तेरा उतरना यक़ीनी और तेरी नजात मश्कूक है लिहाज़ा दिल को उस जगह से ख़ौफ़ज़दा कर शायद कि तू इस त़रह़ नजात का रास्ता पा ले और मख़्लूक़ात के ह़ालात के मुतअ़ल्लिक़ सोच जब वोह क़ियामत की सख़्तियों के मुतअ़ल्लिक़ अन्दाज़े लगा रहे होंगे और वोह उस दुख और दहशत में मुब्तला होंगे और नज़रें उठा कर अपने नामए आ'माल की ह़क़ीक़त के इज़्हार का इन्तिज़ार कर रहे होंगे और किसी शफ़ाअ़त करने वाले के मुन्तज़िर होंगे कि अचानक एक हौलनाक अन्धेरा मुजरिमों को घेर लेगा और भड़कती हुई आग उन पर साया फ़िगन होगी और उस की शिद्दते ग़ज़ब से वोह मकरूह आवाज़ें, चीख़ और पुकार सुनेंगे, उस दम वोह अपनी हलाकत का यक़ीन कर लेंगे, लोग घुटनों के बल गिर जाएंगे उस वक़्त नेक लोग भी अपने बुरे अन्जाम से ख़ौफ़ज़दा होंगे उस वक़्त अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता पुकारेगा कि फ़ुलां बिन फ़ुलां कहां है जो ख़ुद को दुन्या में तूले अमल से तसल्लियां दिया करता था और अपनी ज़िन्दगी को बुरे आ'माल में तज दिया, पस अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते लोहे के गुर्ज़ ले कर बढ़ेंगे और उस का बहुत ही भयानक इस्तिक़्बाल करेंगे या'नी उसे सख़्त अ़ज़ाब के लिये ले जाएंगे, उसे जहन्नम के ग़ार में डाल कर कहेंगे : अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, तुम तो बड़े बुज़ुर्ग और मेहरबान थे।

जहन्नम के चन्द अ़ज़ाब

और वोह उसे ऐसी जगह ठहराएंगे जिस में किनारे तंग, तारीक रास्ते और पोशीदा हलाकतें होंगी, मुजरिम उस में दाइमन रहेगा, उस में आग भड़काई जाएगी, उन का मश्रूब गर्म पानी और

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، سورۃ الحج، ۵/۱۱۵، الحدیث ۳۱۷۰

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को इस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे। (پ۱۶، مریم: ۷۱،۷۲)

उन का ठिकाना जहन्नम होगा, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उन्हें मुन्तशिर करेंगे और जहन्नम उन्हें जम्अ़ करेगा, वोह हलाकत के मुतमन्नी होंगे मगर उन्हें मौत नहीं आएगी, उन के पाउं पेशानियों से बंधे होंगे और उन के चेहरे गुनाहों की सियाही से काले होंगे, वोह हर चहार सू पुकारते फिरेंगे : ऐ मालिक ! हमारे लिये सज़ा का वा'दा पूरा हो चुका। ऐ मालिक ! लोहा हमें फ़ना कर देगा हमारी खालें उतर गईं। ऐ मालिक ! हमें इस से निकाल, हम दोबारा बुरे आ'माल नहीं करेंगे, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते जवाब में कहेंगे : उस वक़्त तुम्हें तुम्हारा तअस्सुफ़ कोई "मआमन" फ़राहम नहीं करेगा और तुम इस ज़िल्लत की जगह से कभी नहीं निकल सकोगे, इसी में रहो और कोई दूसरी बात न करो। अगर तुम इस से निकाल भी दिये गए तो तुम वोही कुछ करोगे जो पहले किया करते थे।

तब वोह ना उम्मीद हो जाएंगे और अपने गुनाहों पर इन्तिहाई परेशानी का इज़्हार करेंगे मगर उन्हें नदामत नहीं बचाएगी और न ही उन का अ़ज़ाब "अफ़्सोस" दूर कर सकेगा बल्कि वोह बांध कर मुंह के बल नीचे डाल दिये जाएंगे और उन के ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं आग होगी और वोह सरापा ग़र्क़े आतश होंगे। उन का खाना-पीना, बिस्तर, लिबास सब कुछ आग का होगा और वोह आग के शो'लों में लिपटे होंगे, जहन्नम के क़त्रान का लिबास और लोहे के डन्डे उन की सज़ा के लिये होंगे और ज़न्जीरों की गिरां बारी तंगी की वज्ह से आवाज़ पैदा कर रही होगी, वोह जहन्नम की गहराइयों में शिकस्त ख़ुर्दगी के साथ सर गर्दां होंगे और उस की आग में सख़्त परेशान होंगे, आग उन्हें ऐसा उबाल देगी जैसे हांडियों में उबाल आता है और वोह गिर्या व ज़ारी करेंगे, मौत को बुलाएंगे, जूं ही वोह हलाकत की तमन्ना करेंगे, उन के सरों पर जहन्नम का खोलता पानी उंडेला जाएगा जिस से उन की आंतें और चमड़ा गल जाएगा और उन के लिये लोहे के हथोड़े होंगे जिन से उन की पेशानियों को तोड़ा जाएगा, उन के मुंह से पीप बहने लगेगी और प्यास से उन के जिगर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे, उन की आंखों की पुतलियां उन के रुख़्सारों पर बहेंगी जिस से उन के रुख़्सारों का गोश्त उधड़ जाएगा और जब उन का चमड़ा गल जाएगा तो दूसरा चमड़ा पैदा हो जाएगा, उन की हड्डियां गोश्त से ख़ाली होंगी, उन की रूह़ का रिश्ता रगों से क़ाइम होगा, जो जिस्म से लिपटी हुई होंगी वोह आग की गर्मी से फूली होंगी और वोह उस वक़्त मौत की तमन्ना करेंगे मगर उन्हें मौत नहीं आएगी।

अगर तुम उन्हें इस ह़ालत में देखो तो नज़र आएगा कि उन की शक्लें बहुत ज़ियादा सियाह हैं, आंखें अन्धी, ज़बानें गूंगी, कमरें शिकस्ता, हड्डियां रेज़ा रेज़ा, कान बहरे, चमड़ा चीथड़ों

की त़रह़ पारा पारा, हाथ गर्दनों के पीछे बंधे हुवे या'नी शिकन की हुई पेशानी और पाउं यक्जा, मुंह के बल आग पर चलते हुवे, अपनी पलकों से गर्म लोहा रौंदते हुवे, उन के तमाम आ'ज़ाए बदन में भड़कती हुई आग होगी, जहन्नम के सांप और बिच्छू उन के जिस्म पर चिमटे हुवे होंगे तो येह मनाज़िर देख कर तुम्हारी क्या ह़ालत होगी !

अब ज़रा उन के हौलनाक अ़ज़ाब की तफ़्सील पर ग़ौर करो और जहन्नम की वादियों और घाटियों के सिलसिले में तअम्मुल करो ।

फ़रमाने नबवी है कि जहन्नम में सत्तर हज़ार वादियां हैं, हर वादी में सत्तर हज़ार घाटियां हैं और हर घाटी में सत्तर हज़ार सांप और सत्तर हज़ार बिच्छू हैं, काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को इन तमाम जगहों ही में जाना होगा ।[1]

रियाकार का अ़ज़ाब

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वादिये हुज़्न या ह़ुज़्न की घाटी से पनाह मांगो ! पूछा गया : हुज़ूर वोह क्या है ? आप ने फ़रमाया : वोह जहन्नम की एक ऐसी वादी है जिस से हर रोज़ जहन्नम भी सत्तर मरतबा पनाह मांगता है, येह वादी **अल्लाह** तआ़ला ने रियाकार क़ारियों के लिये तय्यार की है ।[2]

येह जहन्नम की वुस्अ़त, इस की वादियों की घाटियां, ज़िन्दगी के नशेबो फ़राज़ और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की ता'दाद के बराबर हैं और जहन्नम के दरवाज़े इन्सानी जिस्म के उन आ'ज़ा की ता'दाद के बराबर है जिन से इन्सान जराइम का इर्तिकाब करता है, वोह एक दूसरे के ऊपर हैं, ऊपर वाला **जहन्नम**, फिर **सक़र**, फिर **लज़ा**, फिर **हुत़मा**, फिर **सईर**, फिर **जह़ीम** और सब से नीचे **हाविया** है, ज़रा हाविया की गहराई का तसव्वुर करो, जिस क़दर इन्सान की शहवाते नफ़्सानी गहरी होंगी, इसी क़दर उसे हाविया की गहराई में ठिकाना मिलेगा और जैसे इन्सान की हर उम्मीद एक दूसरी बड़ी उम्मीद पर ख़त्म होती इसी त़रह़ हाविया की हर गहराई दूसरी गहराई पर जा कर रुकती है ।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम ने एक धमाका सुना । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो येह क्या है ? हम ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का

---

1 ......معرفة الصحابة، باب السين، سفيان بن مجيب، ٢/٣٠٥، الحديث ٣٥٢٤

2 ......كنزالعمال، كتاب العلم، باب في فضله...الخ، ٥/١٢٠، الجزء العاشر، الحديث ٢٩٤١٥

रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं, आप ने फ़रमाया : सत्तर साल पेशतर जहन्नम के किनारे से पथ्थर लुढ़काया गया था जो अब उस की गहराई में जा पहुंचा है।(1) (येह उस की आवाज़ थी)

दरजाते जहन्नम

अब जहन्नम के दरजात पर ग़ौर कीजिये ! बेशक आख़िरत अपने त़बक़ात और ख़साइस के ए'तिबार से बहुत अ़ज़ीम है, जैसे दुन्या में लोगों के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं इसी त़रह़ जहन्नम में मुख़्तलिफ़ दरजात होंगे जो गुनाहों का आ़दी और सख़्त ना फ़रमान होगा वोह आग में ग़र्क़ होगा और मा'मूली त़ौर पर गुनाह करने वाला एक मह़दूद ह़द तक जलेगा इसी त़रह़ आग भी गुनहगार के गुनाहों के मुत़ाबिक़ अ़ज़ाब देगी क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला किसी पर एक ज़र्रे के बराबर ज़ुल्म नहीं करता है लिहाज़ा हर इन्सान को एक जैसा अ़ज़ाब नहीं होगा बल्कि गुनाहों की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ सज़ा मिलेगी मगर जहन्नम का सब से मा'मूली अ़ज़ाब भी अगर दुन्या पर पेश कर दिया जाए तो उस की ह़िद्दत से सारी दुन्या जल कर भसम हो जाए।

फ़रमाने नबवी है कि जहन्नम का मा'मूली अ़ज़ाब येह होगा कि दोज़ख़ी को आग के जूते पहनाए जाएंगे जिस की गर्मी से उस का दिमाग़ खोलता होगा।(2)

इस मा'मूली अ़ज़ाब से उस बड़े अ़ज़ाब का अन्दाज़ा लगाओ ! अगर तुम्हें आग के जलाने में शुबहा हो तो अपनी उंगली इस दुन्या की आग में डाल कर देखो तो तुम्हें पता चल जाएगा, अगर्चे इस दुन्यावी आग को जहन्नम की आग से कोई निस्बत नहीं है लेकिन सोचो तो, जब येह आग दुन्या के सख़्त तरीन अ़ज़ाबों में शुमार होती है तो उस आग का क्या आ़लम होगा ! अगर जहन्नमी वहां इस दुन्यावी आग को पा लें तो ख़ुशी से दौड़ते हुवे उस में घुस जाएं। (इसी में अपनी नजात समझें)

आतशे दोज़ख़ और दुन्यावी आग

इसी लिये बा'ज़ अह़ादीस में है कि जहन्नम की आग को सत्तर मरतबा रह़मत के पानी से धो कर दुन्या में लोगों के इस्ति'माल के लिये भेजा गया है(3) बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया कि जहन्नम में आग भड़काई जाए, हज़ार साल के

---

1 ......مسلم، کتاب الجنة، باب مافی شدة حرنارجھنم...الخ، ص١٥٢٣، الحديث ٣١۔(٢٨٤٤)

2 ......ترمذی، کتاب صفة جھنم، باب١٢، ٤/٢٧١، الحديث٢٦١٣

3 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكی، ٦/٣٨٧ و صحيح ابن حبان، باب صفة النار و أھلھا، ٦/٢٧٦، الجزء التاسع، الحديث ٧٤٢٠

बा'द जहन्नम सुर्ख़ हो गया फिर हज़ार साल तक आग भड़काई गई जिस से वोह सफ़ेद हो गया, जब मज़ीद हज़ार साल आग भड़काई गई तो वोह बिल्कुल सियाह और तारीक तरीन हो गया।[1]

फ़रमाने नबवी है : जहन्नम ने रब्बे अज़ीम से शिकायत की, कि मेरे बा'ज़ हिस्से बा'ज़ हिस्सों की तपिश से फ़ना हो रहे हैं तो **अल्लाह** तआला ने उसे सिर्फ़ दो सांसों की इजाज़त दे दी, एक गर्मी में और एक सर्दी में, गर्मियों में गर्मी की शिद्दत उस के गर्म सांस से और सर्दी की शिद्दत उस के सर्द सांस से होती है।[2]

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : क़ियामत के दिन मालदार तरीन काफ़िरों को लाया जाएगा और उसे आग में ग़ोता दे कर पूछा जाएगा कि तू ने दुन्या में कोई ने'मत पाई थी ? वोह कहेगा : बिल्कुल नहीं, फिर एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में सब से ज़ियादा दुख उठाए होंगे, उसे जन्नत में ले जा कर बाहर निकाला जाएगा और पूछा जाएगा : तू ने कभी कोई दुख पाया है ? वोह कहेगा : नहीं।[3]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अगर मस्जिद में एक हज़ार या इस से भी ज़ियादा लोग मौजूद हों और वहां जहन्नमी शख़्स सांस ले तो वोह सब के सब मर जाएंगे।

बा'ज़ उलमा ने इस फ़रमाने इलाही की, कि "**आग उन के मुंह को झुलस देगी।**"[4] तशरीह में लिखा है कि आग की एक ही लपेट से उन की हड्डियों का गोश्त नीचे गिर जाएगा।

अब उस पीप के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करो जो इन्तिहाई बदबू दार बन कर उन के जिस्मों से इस क़दर बहेगी कि वोह उस में ग़र्क़ हो जाएंगे, क़ुरआने करीम में इसी को ग़स्साक़ का नाम दिया गया है।

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ٨، ٤/٢٦٦، الحديث ٢٦٠٠

2 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفة النار...الخ، ٢/٣٩٥، الحديث ٣٢٦٠ و ابن ماجه، کتاب الزهد، باب صفة النار، ٤/٥٢٩، الحديث ٤٣٢٠ بالتقديم و التاخير

3 ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب صفة النار، ٤/٥٢٩، الحديث ٤٣١٩

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन के मुंह पर आग लपट मारेगी। (پ١٨،المؤمنون:١٠٤)

अगर दोज़ख़ियों की पीप का एक डोल दुन्या में फेंक दिया जाए तो उस की बदबू से तमाम मख़्लूक़ का दम घुट जाए।[1]

जब दोज़ख़ी प्यास की शिद्दत महसूस करेंगे तो उन्हें येही पीने को दी जाएगी वोह पीप का पानी हल्क़ में डालेंगे, एक घूंट लेंगे मगर उसे निगल नहीं सकेंगे और मौत हर जानिब से उन पर हम्ला करेगी मगर वोह नहीं मरेंगे। अगर वोह पानी की तमन्ना करेंगे तो उन्हें तांबे की रंगत जैसा पानी दिया जाएगा जो चेहरों को जला देता है, येह बहुत बुरा मशरूब है और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है।

दोज़ख़ियों की ग़िज़ा

उन के तआम के मुतअल्लिक़ सोचो ! वोह ज़क्कूम (थोहर) होगा जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

"फिर तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराहो ! ज़क्कूम का दरख़्त खाने वाले हो, इस से पेट भरने वाले हो फिर इस पर गर्म पानी पीने वाले हो और तिश्नालब ऊंटों की तरह पीने वाले हो।"[2]

मज़ीद फ़रमाया :

"वोह एक दरख़्त है जो जहन्नम की गहराई से निकलता है उस का सर सांप के सरों की मानिन्द है फिर उन के लिये उस में गर्म पानी की मिलावट है फिर उन का दोज़ख़ की तरफ़ जाना है।"[3] (वोह इन मराहिल से गुज़र कर जहन्नम में जाएंगे।)

एक और इरशादे रब्बानी है :

"वोह जलती हुई आग में दाख़िल होंगे खोलते हुवे चश्मे से पिलाए जाएंगे।"[4]

1......ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ ٤/٢٦٣، الحديث ٢٥٩٣

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक तुम ऐ गुमराहो, झुटलाने वालो ! ज़रूर थोहड़ के पेड़ में से खाओगे फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खोलता पानी पियोगे फिर ऐसा पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें। (پ٢٧، الواقعة: ٥١ ـ ٥٥)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है उस का शगूफ़ा जैसे देवों के सर फिर बेशक वोह उस में से खाएंगे फिर उस से पेट भरेंगे फिर बेशक उन के लिये इस पर खोलते पानी की मलूनी (मिलावट) है फिर उन की बाज़ गश्त (वापसी) ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है। (پ٢٣، الصّٰفّٰت: ٦٤ تا ٦٨)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जाएं भड़कती आग में निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं। (پ٣٠، الغاشية: ٤،٥)

"बेशक हमारे पास (उन के लिये) बेड़ियां और आग है और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब है।"(1)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर ज़क़्क़ूम का एक क़त़रा दुन्या के दरयाओं और समन्दरों में डाल दिया जाए तो लोगों के लिये ज़िन्दगी दूभर हो जाए फिर उन लोगों का क्या ह़श्र होगा जिन की ग़िज़ा ही ज़क़्क़ूम होगी।(2)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने जिन चीज़ों से मह़ब्बत रखने का हुक्म दिया है उन्हें मह़बूब रखो और जिन चीज़ों से परहेज़ का हुक्म दिया है उन से परहेज़ करो, **अल्लाह** के अ़ज़ाब और जहन्नम से डरो, अगर जन्नत का एक ज़र्रा तुम्हारे पास दुन्या में होता तो दुन्या तुम्हारे लिये इन्तिहाई जाज़िबे नज़र और पुर कशिश हो जाती है और अगर जहन्नम की आग की एक चिंगारी तुम्हारे साथ होती तो दुन्या तुम्हारे लिये इन्तिहाई मोहलिक और तबाह कुन बन जाती।(3)

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नमियों पर भूक मुसल्लत़ की जाएगी यहां तक कि वोह अ़ज़ाब को भूल कर खाने की इल्तिजा करेंगे उन की इल्तिजा के जवाब में उन्हें ज़रीअ़ पेश की जाएगी जो ऐलवे से ज़ियादा कड़वी और निहायत बदबूदार होगी जो न उन्हें फ़र्बा करेगी और न उन की भूक मिटाएगी, फिर खाने की दरख़्वास्त करेंगे तो उन्हें ऐसा खाना दिया जाएगा जो उन के गले में अटक जाएगा तब उन्हें याद आएगा कि वोह दुन्या में ह़ल्क़ में फंसा हुवा लुक़्मा पानी से उतारते थे लिहाज़ा वोह पानी के लिये इल्तिजा करेंगे तो लोहे की सन्सियों से पकड़ कर गर्म पानी का बरतन उन के आगे लाया जाएगा, जब वोह मुंह के क़रीब होगा तो तपिश से उन के चेहरे झुलस जाएंगे और जब वोह पानी उन के पेट में पहुंचेगा तो उन की अंतड़ियां टुकड़े टुकड़े कर देगा, फिर वोह कहेंगे कि जहन्नम के निगहबानों को बुलाओ और उन्हें बुला कर कहेंगे : अपने रब से दुआ़ करो वोह हम पर एक दिन के अ़ज़ाब की तख़्फ़ीफ़ कर दे, वोह निगहबान कहेंगे : क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर दलाइल ले कर नहीं आए थे ? जहन्नमी कहेंगे : हां आए थे। तब वोह कहेंगे : तुम खुद दुआ़ करो (और काफ़िरों की दुआ़ कभी राहे रास्त पर नहीं आती)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब। (پ۲۹، المزمل:۱۲،۱۳)

2......المعجم الاوسط، ۵/ ۳۳۸، الحدیث ۷۵۲۵

3......الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، الترھیب من النار، ۴/۲۶۴، الحدیث ۵۶۰۲ و البعث والنشور للبیھقی، ص ۳۰۳، ۵۴۶

फिर वोह कहेंगे : मालिके जहन्नम को बुलाओ और उसे बुला कर कहेंगे : अल्लाह तआला हम पर मौत मुसल्लत कर दे । मालिक जवाब देगा : तुम्हें मरना नहीं है, हमेशा यहीं रहना है ।[1]

हज़रते आ'मस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : उन की दुआ और मालिक के जवाब के दरमियान एक हज़ार बरस गुज़र जाएंगे । फिर कहेंगे कि रब से बढ़ कर कोई मेहरबान नहीं है लिहाज़ा अपने रब के हुज़ूर में अ़र्ज़ करेंगे : ऐ रब ! हम पर बद बख़्ती ग़ालिब आ गई और हम गुमराह हो गए अब हमें निकाल, अगर हम फिर वोही काम करें तो हम ज़ालिम होंगे । उन्हें जवाब मिलेगा : दूर हो जाओ इसी जहन्नम में रहो और ख़ामोश हो जाओ ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस वक़्त उन्हें हलाकत, सख़्ती और नदामत घेर लेगी और वोह हर क़िस्म की भलाई से ना उम्मीद हो जाएंगे ।[2]

हज़रते अबू उमामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस फ़रमाने इलाही :

और वोह पीप के पानी से सैराब किया जाएगा । वोह उस का घूंट घूंट लेगा मगर गले से नहीं उतरेगा ।[3]

की तशरीह में फ़रमाया : जब येह पानी उस की नज़रों के सामने आएगा तो वोह इसे बुरा समझेगा, जब होंटों के क़रीब आएगा तो चेहरों को झुलसा देगा और सर की खाल बालों समेत जला देगा, जब वोह इसे पियेगा तो उस की आंतें काट कर बाहर निकाल देगा, फ़रमाने इलाही है :

"और उन को गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उन की आंतें काट देगा ।"[4]

मज़ीद फ़रमाया : "और जब वोह पानी तलब करेंगे तो उन्हें पीप जैसा पानी दिया जाएगा जो चेहरों को भून डालेगा ।"[5]

येह भूक के वक़्त उन का खाना-पीना होगा ।

---

1 ......ترمذی ، کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار، ٤/٢٦٤،الحديث٢٥٩٥....
जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का नाम मालिक (عَلَيْهِ السَّلَام) है । इल्मिय्या

2 ......ترمذی ، کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار، ٤/٢٦٤،الحديث٢٥٩٥

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी । (پ١٣، ابراهيم:١٦،١٧)

4 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाएगा कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे । (پ٢٦، محمد:١٥)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर पानी के लिये फ़रयाद करें तो उन की फ़रयाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये (पिघले) हुवे धात की त़रह है कि उन के मुंह भून (जला) देगा । (پ١٥، الكهف:٢٩)

ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب اهل النار،٤/٢٦٢، الحديث ٢٥٩٢

अब दोज़ख़ के सांप बिच्छू, उन की जसामत, तेज़ ज़हर और दोज़ख़ियों की रुस्वाई पर ग़ौर करो, सांप, बिच्छू जो उन पर मुसल्लत़ किये जाएंगे, उन के सख़्त दुश्मन होंगे, एक लम्ह़ा भी काटने और डंक मारने से बाज़ नहीं रहेंगे।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स को **अल्लाह** तआला ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा नहीं की, क़ियामत के दिन उस का माल गन्जे सांप की शक्ल में आएगा जिस की पेशानी पर दो सियाह नुक़्ते होंगे, वोह उस के गले से लिपट कर उस के जबड़ों को पकड़ लेगा और कहेगा : मैं तेरा माल और तेरा ख़ज़ाना हूं फिर आप ने येह आयत तिलावत की :

وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ (1)

और जो हमारे दिये हुवे माल में बुख़्ल करते हैं वोह येह न समझें कि येह उन के लिये अच्छा है।

फ़रमाने नबवी है : जहन्नम में बख़्ती ऊंटों की गर्दनों जैसे (मोटे और लम्बे) सांप होंगे जब वोह फुंकारेंगे तो उन की गर्मी चालीस बरस के फ़ासिले से मह़सूस की जाएगी और हैबतनाक बिच्छू होंगे जिन की सांस की गर्मी चालीस बरस के फ़ासिले से मह़सूस की जाएगी[2] सांप और बिच्छू उस आदमी पर मुसल्लत़ होंगे जिस पर दुन्या में बुख़्ल, बद ख़ुल्क़ी और लोगों को सताने का ज़ुल्म आ़इद होगा और जिस में येह बुराइयां नहीं पाई जातीं, उसे कोई तक्लीफ़ नहीं दी जाएगी।

इस के बा'द दोज़ख़ियों के त़वीलो अ़रीज़ जिस्मों पर ग़ौर करो, **अल्लाह** तआला उन के अजसाम के तूलो अ़र्ज़ में इज़ाफ़ा कर देगा ताकि उन्हें ज़ियादा से ज़ियादा अ़ज़ाब हो लिहाज़ा वोह दोज़ख़ी मुतवातिर अपने अजसाम पर जहन्नम की गर्मी और सांपों-बिच्छूओं के डंक झेलता रहेगा।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जहन्नम में काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर और उस का निचला होंट सीने पर पड़ा होगा और ऊपर वाला होंट इस क़दर ऊपर उठा हुवा होगा जिस से सारा चेहरा छुपा होगा।[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी। (پ٤،اٰلِ عمران:١٨٠)

بخاری، کتاب الزکاۃ، باب اثم مانع الزکاۃ، ١/٤٧٤، الحدیث ١٤٠٣

2......مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث عبداللّٰہ بن الحارث...الخ ٦/٢١٧، الحدیث ١٧٧٢٩

3......ترمذی، کتاب صفۃ جھنم، باب ماجاء فی اعظم اھل النار، ٤/٢٦١، الحدیث ٢٥٨٨، وص ٢٦٤، الحدیث ٢٥٩٦ ماخوذا

फ़रमाने नबवी है कि काफ़िर जहन्नम में अपनी ज़बान घसीट रहा होगा और लोग उस की ज़बान को रौंदते हुवे जाएंगे।[1]

उन की उन अज़ीम जसामतों के बा वुजूद आग उन्हें जलाती रहेगी और कई कई मरतबा उन के चमड़े और गोश्त को तब्दील किया जाएगा हज़रते हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस इरशादे इलाही के बारे में कि

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا[2] *जब भी उन के चमड़े गल जाएंगे हम और चमड़े बदल देंगे।*

कहते हैं कि आग उन के अज्साम को दिन में सत्तर हज़ार मरतबा जलाएगी मगर जूं ही उन के चमड़े जलेंगे, **अल्लाह** तआला दोबारा उन के अज्साम को मुकम्मल कर देगा।

फिर दोज़खि़यों की गिर्या व ज़ारी, फ़रयादो फ़ुगां और हलाकत व मौत की इल्तिजाओं के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करो जो इब्तिदाए क़ियामत ही से उन का मुक़द्दर बन जाएगी।

फ़रमाने नबवी है : क़ियामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार मुहारें डाल कर लाया जाएगा और हर मुहार के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते होंगे।[3]

हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जहन्नमियों पर गिर्या व ज़ारी भेजी जाएगी, वोह रोते रहेंगे यहां तक कि आंसू ख़त्म हो जाएंगे, फिर वोह ख़ून के आंसू रोएंगे यहां तक कि उन के चेहरों पर गढ़े पड़ जाएंगे, अगर इन में किश्तियां चलाई जाएं तो वोह भी रवां हो जाएं।[4]

उन्हें गिर्या व ज़ारी, आह, फ़रयाद और मौत की दुआ़ मांगने की इजाज़त होगी जिस से वोह दिल का बोझ हलका करेंगे मगर बा'द में उन्हें इस से भी मन्अ़ कर दिया जाएगा।

दोज़खि़यों की इल्तिजाएं रद्द कर दी जाएंगी

हज़रते मुहम्मद बिन का'ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि **अल्लाह** तआला दोज़खि़यों की पांच बातों में से चार का जवाब देगा मगर पांचवें जवाब के बा'द फिर कभी कलाम नहीं फ़रमाएगा, वोह कहेंगे :

---

1 ......شعب الایمان ، التاسع من شعب الإيمان، باب في أن دار المؤمنين...الخ، ١/٣٥٣، الحديث ٣٩٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे। (پ٥، النسا:٥٦)

3 ......مسلم كتاب الجنة...الخ ، باب في شدة حرنار جهنم...الخ ، ص١٥٢٣، الحديث ٢٩ـ (٢٨٤٢)

4 ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب صفة النار، ٤/٥٣١، الحديث ٤٣٢٤

ऐ रब तू ने हमें दो मरतबा मारा और दो मरतबा ज़िन्दा किया, हम ने अपने गुनाहों को मान लिया है पस कोई निकलने का रास्ता है ?[(1)]

रब फ़रमाएगा : येह इस लिये है कि जब तुम्हें अल्लाह की वहदानिय्यत को बुलाया जाता था तो तुम कुफ़्र करते थे अगर उस का शरीक लाया जाता था तो तुम मान लेते थे हुक्म सिर्फ़ अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर के लिये है ।[(2)]

फिर वोह कहेंगे : ऐ रब हम ने देखा और सुना हमें वापस भेज ताकि हम नेक अ़मल करें ।[(3)]

रब फ़रमाएगा : क्या तुम इस से पहले क़समें नहीं खाते थे कि तुम्हें कोई ज़वाल नहीं आएगा ।[(4)]

फिर काफ़िर कहेंगे : ऐ रब हमें जहन्नम से निकाल, हम पहले से अच्छे अ़मल करेंगे ।[(5)]

रब फ़रमाएगा : क्या हम ने तुम्हें उ़म्र नहीं दी थी जिस में तुम नसीहत करने वाले की नसीहत को याद करते और तुम्हारे पास डराने वाला आया था अब तुम अ़ज़ाब चखो ज़ालिमों को कोई मददगार नहीं है ।[(6)]

तब वोह कहेंगे : ऐ रब हम पर बद बख़्ती ग़ालिब आ गई और हम गुमराह हो गए थे ऐ रब हमें इस से निकाल अगर हम फिर इसी रास्ते पर लौटे तो हम ज़ालिम होंगे ।[(7)]

और अल्लाह तआ़ला उन्हें फ़रमाएगा जहन्नम में रहो और अब मत बोलो ।[(8)]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब तू ने हमें दो बार मुर्दा किया और दो बार ज़िन्दा किया अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुवे तो आग से निकलने की भी कोई राह है ? (پ۲٤، المومن:۱۱)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह उस पर हुवा कि जब एक अल्लाह पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते और उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते तो हुक्म अल्लाह के लिये है जो सब से बुलन्द बड़ा । (پ۲٤، المومن: ۱۲)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब अब हम ने देखा और सुना हमें फिर भेज कि नेक काम करें । (پ۲۱، السجدہ:۱۲)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम पहले क़सम न खा चुके थे कि हमें दुन्या से कहीं हट कर जाना नहीं । (پ۱۳، ابراھیم:٤٤)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें निकाल कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले करते थे । (پ۲۲، فاطر:۳۷)

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम ने तुम्हें वोह उ़म्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था तो अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । (پ۲۲، فاطر:۳۷)

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं । (پ۱۸، المومنون:۱۰٦،۱۰۷)

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रब फ़रमाएगा दुतकारे (ज़लील हो कर) पड़े रहो इस में और मुझ से बात न करो । (پ۱۸، المومنون:۱۰۸)

येह उन के लिये इन्तिहाई दरजे का अ़ज़ाब होगा और फिर वोह कभी बारी तआ़ला से कलाम नहीं कर सकेंगे।

ह़ज़रते मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है : ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम ने इस फ़रमाने इलाही :

سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۲۱﴾ (1)

बराबर है हमारे लिये कि हम जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ करें या सब्र करें हमारे लिये भागने की जगह नहीं।

की तशरीह़ में फ़रमाया : वोह सो साल सब्र करेंगे, फिर सो साल आहो फ़ुग़ां करेंगे, फिर सो साल सब्र करने के बा'द कहेंगे : हमारे लिये सब्र करना और आहो बुका करना दोनों बराबर हैं।

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन मौत को एक मोटे मेंढ़े की शक्ल में ला कर जन्नत और जहन्नम के दरमियान ज़ब्ह़ किया जाएगा और कहा जाएगा : ऐ जन्नत वालो ! अब मौत का ख़ौफ़ किये बिग़ैर हमेशा के लिये जन्नत में रहो और जहन्नम वालों से कहा जाएगा कि तुम्हें मौत नहीं आएगी, हमेशा के लिये जहन्नम में रहो।(2)

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि एक आदमी जहन्नम से हज़ार साल बा'द निकलेगा, काश वोह ह़सन हो।

किसी ने ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक गोशे में रोता देख कर पूछा क्यूं रो रहे हो ? आप ने फ़रमाया : कहीं बे नियाज़ परवर दगार मुझे जहन्नम में न डाल दे।

येह मजमूई त़ौर पर अ़ज़ाबे जहन्नम की क़िस्में थीं, वहां के ग़म, तक्लीफ़ों और ह़सरतों की तफ़्सील बहुत त़वील है, उन के लिये बद तरीन अ़ज़ाब येह होगा कि वोह जन्नत की ने'मतें, रज़ाए ख़ुदावन्दी और दीदारे इलाही से मह़रूम होंगे क्यूंकि दुन्या में खोटे सिक्के ख़रीदे और फिर उन के बदले चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में इन्तिहाई रुस्वा कुन नफ़्सानी ख़्वाहिशात ख़रीद लीं, वोह अपने ज़ाएअ़ शुदा आ'माल और बरबाद कर्दा अय्याम पर अफ़्सोस करते हुवे कहेंगे : हाए अफ़्सोस ! हम ने अपने जिस्मों को रब की ना फ़रमानी में तबाह कर दिया, हम ने ज़िन्दगी के मुख़्तसर अय्याम में अपने नफ़्स को सब्र पर क्यूं न मजबूर किया, अगर हम उन गुज़रने वाले दिनों में सब्र कर लेते तो रब्बुल आ़लमीन के जवारे रह़मत में जगह पाते, जन्नत और रज़ाए इलाही ह़ासिल कर लेते।

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं। (پ۱۳، ابراھیم:۲۱)

2......مسلم، کتاب الجنة...الخ، باب النار يدخلها الجبارون...الخ، ص ١٥٢٦، الحديث ٤٠ـ (٢٨٤٩)

हाए अफ़्सोस ! उन की ज़िन्दगी गुनाहों में तबाह हो गई, मसाइब में घिर गए, दुन्यावी ने'मतों और लज़्ज़तों का कोई हिस्सा उन के लिये बाक़ी न रहा, अगर वोह बा वुजूद उन मसाइब के जन्नत की ने'मतों का नज़्ज़ारा न करते तो उन की ह़सरत दो चन्द न होती मगर उन्हें जन्नत दिखाई जाएगी, चुनान्चे,

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ लाया जाएगा जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंचेगे, उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे, जन्नतियों के मह़ल्लात को देखेंगे, तब **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : इन्हें वापस ले जाओ, इन का जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं है, वोह ऐसी ह़सरत ले कर लौटेंगे कि अव्वलो आख़िर इस की मिसाल नहीं मिलेगी और कहेंगे ऐ रब ! अगर जन्नत और उस में रहने वालों के लिये जो इन्आ़मात तय्यार हैं वोह दिखाने से पहले ही हमें जहन्नम में भेज देता तो हमें कुछ आसानी रहती, रब तआ़ला फ़रमाएगा : येह तुम्हारे साथ इस लिये किया गया है कि जब तुम मेरी बारगाह में आते तो अकड़ कर आते लेकिन जब तुम लोगों से मिलते तो झुक झुक कर मिलते थे, लोगों को अपने दिलों में छुपी बातों से बे ख़बर रखते और रियाकारी से काम लेते थे। तुम लोगों से डरते थे मगर मुझ से नहीं डरते थे, तुम लोगों को बड़ा समझते थे और मुझे नहीं, तुम ज़ाती ग़रज़ के लिये लोगों से तो तअ़ल्लुक़ात ख़त्म कर देते थे मगर मेरे लिये नहीं, आज मैं तुम्हें दाइमी ने'मतों से मह़रूम कर के दर्दनाक अ़ज़ाब का मज़ा चखाऊंगा।(1)

ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है : हम धूप पर साए को तरजीह़ देते हैं मगर जहन्नम पर जन्नत को तरजीह़ नहीं देते।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का इरशाद है कि कितने तन्दुरुस्त जिस्म, ख़ूब सूरत चेहरे और शीरीं कलाम करने वाली ज़बानें, कल जहन्नम के त़बक़ात में पड़े चीख़ रहे होंगे।

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाहे इलाही में इल्तिजा

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : इलाही ! जब मैं सूरज की तपिश पर सब्र नहीं कर सकता तो तेरे जहन्नम की आग पर कैसे सब्र करूंगा ? मैं कि तेरी रह़मत की आवाज़ सुनने का ह़ौसला नहीं रखता, तेरे अ़ज़ाब की आवाज़ कैसे सुनूंगा ?

1 ......المعجم الاوسط للطبرانی، ٤/١٣٥، الحديث ٥٤٧٨

ऐ नातुवां ! इन हौलनाकियों पर ग़ौर कर और समझ ले कि अल्लाह तआ़ला ने आग को उस की तमाम तर हौलनाकियों के साथ पैदा किया है और उस में रहने वालों को पैदा कर दिया है जो न कम होंगे न ज़ियादा, अल्लाह तआ़ला उन का फ़ैसला फ़रमा चुका है।

फ़रमाने इलाही है :

"और उन्हें ह़सरत के दिन से डराइये जब काम मुकम्मल किया जाएगा और वोह ग़फ़्लत में हैं और ईमान नहीं लाते।"[1]

अपनी जान की क़सम ! इस में क़ियामत की त़रफ़ इशारा है बल्कि यौमे अज़ल मुराद है लेकिन चूंकि इन फ़ैसलों का इज़्हार क़ियामत के दिन होगा इस लिये इसे क़ियामत से मन्सूब किया गया है।

तुझ पर तअ़ज्जुब है कि इस बात को जानते हुवे भी कि जाने मेरे ह़क़ में क्या फ़ैसला हो चुका है तू दुन्यावी बुराइयों और लह्वो लइब में मश्ग़ूल है और ग़फ़्लत में पड़ा है, अगर तेरी तमन्ना येह है कि काश तुझे अपने ठिकाने और अन्जाम का पता चल जाए तो इस की चन्द अ़लामतें हैं, इन पर नज़र कर और फिर अपनी उम्मीदें क़ाइम रख।

पहले तू अपने अह़वाल और आ'माल को देख, अगर तू हर उस अ़मल पर कारबन्द है जिस के लिये अल्लाह तआ़ला ने तुझे दुन्या में भेजा है और तुझे नेकियों से मह़ब्बत है तो समझ ले कि तू जहन्नम से दूर है और अगर तू नेकी का इरादा करता है मगर ऐसे मवानेअ़ ह़ाइल हो जाते हैं कि तू नेकी नहीं कर पाता लेकिन जब बुराई का इरादा करता है तो उसे आसानी से कर लेता है तो समझ ले तेरे लिये फ़ैसला हो चुका है क्यूंकि जैसे बारिश का वुजूद सब्ज़े की नशो नुमा और धुवां आग पर दलालत करता है तो इसी त़रह़ येह फ़े'ल भी बुरे अन्जाम का पता देता है।

फ़रमाने इलाही है :

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ [2] *नेक ने'मतों और बदकार जहन्नम में होंगे।*

अपने आ'माल को इन आयात के आईने में देख ! तब तू अपना मक़ाम पहचान लेगा। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं और वोह नहीं मानते। (پ١٦، مريم:٣٩)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकूकार ज़रूर चैन में हैं और बेशक बदकार ज़रूर दोज़ख़ में हैं। (پ٣٠،الانفطار:١٣،١٤)

बाब 40

फ़ज़ीलते इताअत

इताअते खुदावन्दी के मा'ना तमाम नेकियों को पा लेना है, अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद की मुतअद्दिद आयात में लोगों को इसी बात की तरग़ीब दी है और इसी लिये अम्बियाए किराम को मबऊस फ़रमाया ताकि लोगों को नफ़्स की तारीकियों से निकाल कर अल्लाह तआला की मा'रिफ़त की रोशनियों में लाएं और वोह उस जन्नत से नफ़अ अन्दोज़ हों जो नेकों के लिये तय्यार की गई है कि उस जैसी जन्नत किसी आंख ने नहीं देखी, किसी कान ने नहीं सुनी और किसी दिल में उस का तसव्वुर भी नहीं गुज़रा, लोगों को फ़ुज़ूल नहीं पैदा किया गया बल्कि इस लिये पैदा किया गया है कि बुरों को उन की बुराई की सज़ा मिले और नेकों को उन की नेकियों का अज्र अता हो।

अल्लाह तआला इबादत से बे नियाज़ है, लोगों की बुराइयां न उसे नुक़्सान पहुंचाती हैं और न ही उस के कमाल में कोई नक़्स आता है। अगर मख़्लूक़ अल्लाह तआला की इबादत न करे तब भी अल्लाह तआला की बारगाह में ऐसे फ़िरिश्ते हैं जो सुब्हो शाम रब की हम्द करते रहते हैं और कभी नहीं थकते।

जिस शख़्स ने नेकी की, उस ने अपने लिये की और जिस ने गुनाह किया उस का अज़ाब उसी की गर्दन पर होगा, अल्लाह तआला ग़नी है और तुम फ़क़ीर हो।

हैरान कुन बात तो येह है कि हम अगर कोई ग़ुलाम ख़रीदते हैं तो इस बात को पसन्द करते हैं कि वोह हर वक़्त ख़िदमते मामूरा पूरी तनदेही से सर अन्जाम देता रहे, हमारा मुतीअ व फ़रमां बरदार रहे हालांकि उसे मा'मूली क़ीमत से ख़रीदा गया है, इस की एक ग़लती पर इसे दुश्मन समझ लेते हैं, बे इन्तिहा गुस्सा करते हैं, इस का खाना बन्द कर देते हैं, इसे आंखों से दूर कर देते हैं या फिर इसे बेच देते हैं, लेकिन हम उस मालिके हक़ीक़ी की इताअत नहीं करते जिस ने हमें बेहतरीन सूरत में पैदा किया है, हम बारिश के क़तरों के बराबर गुनाह करते हैं मगर वोह अपनी ने'मतें हम से नहीं रोकता, अपनी रहमत की नुसरत नहीं रोकता जिस के बिग़ैर हमारे लिये एक क़दम चलना भी मुश्किल हो जाए, अगर वोह चाहे तो हमें एक गुनाह के बदले पकड़ने पर क़ादिर है मगर वोह हमें मोहलत देता है ताकि हम तौबा करें और वोह तौबा क़बूल फ़रमा कर हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे उयूब ढांप ले।

हर अ़क्लमन्द ब ख़ूबी जानता है कि इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी के लाइक़ कौन है ! वोह उसी ज़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है, उसी के दामने रह़मत में पनाह ढूंडता है, जब उस से कोई गुनाह सरज़द होता है तो वोह अपने ख़ालिक़ की त़रफ़ रुजूअ़ करता है, उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होता और उस के इन्आ़मात का शुक्र अदा करता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों में शुमार होने लगता है, जब उसे मौत आती है तो वोह दीदारे इलाही का मुश्ताक़ और रब्बे बे नियाज़ उस से मुलाक़ात का ख़्वाहिशमन्द होता है।

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : मुझे तौरात की एक ख़ास आयत सुनाओ ! उन्हों ने जवाब में येह आयत सुनाई, रब फ़रमाता है : नेकों को मेरे दीदार का शौक़ है और मैं उन की मुलाक़ात का उन से भी ज़ियादा ख़्वाहिशमन्द हूं ह़ज़रते का'ब ने कहा : इस आयत के ह़ाशिये में लिखा हुवा था : जिस ने मुझे तलाश किया, पा लिया और जिस ने किसी और को ढूंडा वोह मेरे दीदार से मह़रूम रहा। ह़ज़रते अबुद्दरदा फ़रमाने लगे : ब ख़ुदा मैं ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी ऐसे ही सुना है।

दुन्या वालों को ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की ज़बानी पैग़ामे इलाही

ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने वह़्य फ़रमाई : ऐ दावूद ! मेरा येह पैग़ाम दुन्या वालों तक पहुंचा दो, मैं उस का दोस्त हूं जो मुझे दोस्त रखता है, अपनी मजलिस में आने वालों का हम मजलिस हूं, जो मेरे ज़िक्र से उल्फ़त रखता है मैं उस से उल्फ़त रखता हूं, जो मुझ से दोस्ती रखता है मैं उस से दोस्ती रखता हूं, जो मुझे पसन्द करता है मैं उसे पसन्द करता हूं, जो मेरा फ़रमां बरदार बन जाता है मैं उस का कहना क़बूल करता हूं, जो शख़्स भी दिल की गहराइयों से मुझे मह़बूब जानता है मैं उसे अपने लिये पसन्द करता हूं और उस से बे मिसाल मह़ब्बत करता हूं, जिस ने ह़क़ीक़तन मुझे त़लब किया, उस ने मुझे पा लिया और जिस ने मेरे ग़ैर को त़लब किया वोह मुझ से मह़रूम रहा, पस ऐ दुन्या वालो ! तुम कब तक दुन्या के धोके में रहोगे ? मेरी करामत, दोस्ती और मजलिस की त़रफ़ आओ ! और मुझ से उन्स रखो, मैं तुझे अपनी मह़ब्बत से माला माल कर दूंगा क्यूंकि मैं ने अपने दोस्तों का ख़मीर इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, मूसा नजियुल्लाह और मुह़म्मद सफ़ियुल्लाह (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के ख़मीर से बनाया है, उन की रूहें अपने नूर से और उन की ने'मतें अपने जमाल से पैदा की हैं।

एक सिद्दीक़ पर इल्हाम का नुज़ूल और सिद्दीक़ीन की सिफ़ात

एक मर्दे सालेह से मरवी है कि हज़रते रब्बुल इज़्ज़त ने एक सिद्दीक़ पर इल्हाम फ़रमाया कि मेरे बन्दों में कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जो मुझे महबूब रखते हैं, मैं उन्हें महबूब रखता हूं, वोह मेरे मुश्ताक़े दीदार हैं, मैं उन का मुश्ताक़े दीदार हूं, वोह मुझे याद करते हैं, मैं उन्हें याद फ़रमाता हूं, वोह मेरी तरफ़ देखते हैं और मैं उन पर निगाहे रहमत डालता हूं, अगर तू उन के रास्ते पर चलेगा तो मैं तुझे महबूब बनाऊंगा और अगर तू ने उन का रास्ता न अपनाया तो मैं तुझ से दुश्मनी रखूंगा। उस सिद्दीक़ ने पूछा : या **अल्लाह** ! उन की अलामतें क्या हैं ? तो रब्बे ज़ुल जलाल ने फ़रमाया : "वोह दिन ढलने का ऐसा ख़याल रखते हैं जैसे मेहरबान चरवाहा अपनी बकरियों का ख़याल रखता है वोह ग़ुरूबे शम्स के ऐसे मुश्ताक़ होते हैं जैसे सूरज डूबने के बा'द परन्दा अपने आश्याने में पहुंचने का मुश्ताक़ होता है।"

जब रात भीग जाती है, तारीकी बढ़ जाती है, बिस्तर बिछा दिये जाते हैं, लोग उठ जाते हैं और दोस्त दोस्तों के साथ खुश गप्पियां करते हैं तो वोह मेरे लिये खड़े हो जाते हैं, मेरे लिये चेहरों का फ़र्श बिछा देते हैं (सजदे करते हैं) मेरे कलाम में मुझ से हम कलाम होते हैं, मेरे इन्आमात की आरज़ू करते हैं, उन की सारी रात गिर्या व ज़ारी करते, रहमत की उम्मीद रखते और ख़ौफ़े अज़ाब से डरते हुवे, क़ियाम व कुऊद, रुकूअ व सुजूद में गुज़र जाती है, मुझे अपनी नज़रे रहमत की क़सम ! वोह मेरी वज्ह से गुनाह का बोझ नहीं उठाते और मुझे अपनी समाअत की क़सम ! वोह मेरी महब्बत का शिक्वा नहीं करते, मैं पहले पहल उन्हें तीन चीज़ें अता करता हूं : उन के दिलों में अपना नूर डाल देता हूं जिस से वोह मेरी ख़बर पा लेते हैं जैसे मैं उन की ख़बर पाता हूं। दूसरे येह कि अगर ज़मीनो आस्मान अपनी तमाम तर अश्या के साथ उन के मीज़ाने अमल में रख दिये जाएं तब भी उन के पल्ले हल्के होंगे और मैं उन की नेकियां भारी कर दूंगा। तीसरे येह कि मैं अपनी रहमत को उस की तरफ़ मुतवज्जेह कर देता हूं और वोह इस बात को जान लेता है कि वोह जो कुछ मांगेगा मैं उसे दे दूंगा।

मुश्ताक़ाने ख़ुदावन्दी की सिफ़ात

अल्लाह तआला ने हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य की, कि ऐ दावूद ! तुम जन्नत का तज़्किरा करते हो मगर मुझ से मेरे मुश्ताक़ों में शुमूलिय्यत की दुआ क्यूं नहीं करते ? आप ने अर्ज़ की : या **अल्लाह** ! तेरे मुश्ताक़ कौन हैं ? रब्बे ज़ुल जलाल ने फ़रमाया : मेरे मुश्ताक़ वोह

हैं जिन के दिलों को मैं ने हर कदूरत से पाक कर दिया है, उन्हें मनहिय्यात से मुतनब्बेह कर दिया है, वोह अपने दिल के गोशों से मुझे देखते हैं और मेरी रह़मत के उम्मीद वार रहते हैं, मैं उन के दिलों को दस्ते रह़मत में ले कर आस्मानों पर रखता हूं और अपने मुक़र्रब फ़िरिश्तों को बुलाता हूं, फ़िरिश्ते इकठ्ठे हो कर मुझे सजदा करते हैं और मैं फ़रमाता हूं : मैं ने सजदा करने के लिये तुम्हें नहीं बुलाया बल्कि तुम्हें अपने मुश्ताक़ हाए दीदार के दिल दिखाने के लिये बुलाया है, येह अहले शौक़ क़ाबिले फ़ख़्र हैं, इन के दिल आस्मान पर ऐसे चमकते हैं जैसे ज़मीन पर सूरज चमकता है।

ऐ दावूद ! मैं ने मुश्ताक़ों के दिल अपनी रिज़ा से, उन का ऐ़श अपने नूर से पैदा किया है, मैं ने उन्हें अपना हम राज़ बनाया हैं, उन के वुजूद दुन्या में मेरी निगाहे रह़मत का मरजअ़ हैं और मैं ने उन के दिलों में एक रास्ता बनाया है जिस से वोह मेरा दीदार करते हैं और उन का शौक़ फ़ुज़ूं से फ़ुज़ूं तर होता रहता है।

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या अल्लाह ! मुझे अपने किसी मुश्ताक़ का दीदार करा दे, रब तआ़ला ने फ़रमाया : दावूद लुबनान के पहाड़ पर जाओ, वहां मेरे चौदह मुह़िब्ब रहते हैं जिन में जवान और बूढ़े सभी शामिल हैं उन्हें मेरा सलाम कहो और कहना अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : तुम मेरे दोस्त और मह़बूब हो वोह तुम्हारी ख़ुशी में ख़ुश होता है और तुम्हें बहुत मह़बूब रखता है और फ़रमाता है : तुम मुझ से कोई ह़ाजत क्यूं नहीं बयान करते ? ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام उन से मुलाक़ात के लिये रवाना हुवे और उन्हें एक चश्मे के क़रीब पाया वोह अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मतो जलाल पर ग़ौरो फ़िक्र कर रहे थे।

जब उन्हों ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को देखा तो वोह इधर उधर छुप जाने के लिये उठ खड़े हुवे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं अल्लाह का रसूल हूं और तुम्हारे पास अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने आया हूं तो वोह नज़रें झुकाए सरापा इश्तियाक़ बने उस का फ़रमान सुनने के लिये वापस आ गए, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल बन कर आया हूं, अल्लाह तआ़ला तुम्हें सलाम कहता है और फ़रमाता है : तुम मुझ से ह़ाजत क्यूं नहीं त़लब करते मुझे अपनी ज़रूरतों के लिये क्यूं नहीं पुकारते ताकि मैं तुम्हारा कलाम सुनूं तुम मेरे दोस्त और मह़बूब हो, मैं तुम्हारी ख़ुशी से ख़ुश होता हूं, तुम्हारी मह़ब्बत को बेहतर समझता हूं और मैं हर वक़्त मेहरबान, शफ़ीक़ मां की निगाह से तुम को देखता हूं।

जब उन्हों ने येह सुना तो उन के रुख़्सारों पर आंसू बहने लगे, उन का शैख़ पुकार उठा : ऐ रब ! तू पाक है, तू पाक है, हम तेरे ग़ुलाम और ग़ुलामों की अवलाद हैं, हमारी गुज़श्ता उ़म्रों के

वोह लम्हात जो तेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत में गुज़रे उन्हें मुआफ़ फ़रमा दे। दूसरा बोला : तू पाक है, तू पाक है, हम तेरे ग़ुलाम और ग़ुलामों के बेटे हैं जो मुआ़मलात हमारे और तेरे दरमियान हैं, हमें उन में हुस्ने नज़र अ़ता फ़रमा। तीसरे ने कहा : ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है हम तेरे ग़ुलाम और तेरे ग़ुलामों की अवलाद हैं, ऐ रब ! तू ने हमें दुआ़ की तरग़ीब दी है और तुझे मा'लूम है कि हमें अपने लिये किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, हम पर मुकम्मल एह़सान फ़रमा और अपने रास्ते पर हमेशा गामज़न रख।

एक और मुहि़ब्ब यूं कहने लगा : इलाही ! हम तेरी रज़ामन्दी को पूरी त़रह़ नहीं पा सकते, हमारी इमदाद फ़रमा ताकि हम इसे पा लें। एक और मुहि़ब्ब ने कहा : तू ने हमें नुत़्फ़े से पैदा किया और अपनी ज़ात में तफ़क्कुर की दौलत बख़्शी है ऐ **अल्लाह** ! तू ने हमें कलाम की तरग़ीब दी है, जो तेरी शाने अ़ज़्मत के फ़ह्म में मश्ग़ूल हैं और तेरे जलाल में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं और हम तुझ से तेरे नूर के कुर्ब की दरख़्वास्त करते हैं। एक और मुहि़ब्ब पुकार उठा कि तेरी अ़ज़्मते शान, दोस्तों से इन्तिहाई कुर्ब और मुहि़ब्बीन पर बे शुमार इन्आ़मात की वज्ह से हमारी ज़बानें दुआ़ मांगने से रुक गई हैं। एक और बोला : तू ने हमारे दिलों को अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शी, अपनी रह़मत में मश्ग़ूल फ़रमा कर सारी दुन्या से बे नियाज़ कर दिया, कमा ह़क़्क़ुहु शुक्र अदा न कर सकने की हमारी तक़्सीर को मुआ़फ़ फ़रमा दे।

एक और ने कहा : ऐ **अल्लाह** ! तू जानता है कि हमारी तमन्ना तेरे दीदार के सिवा और कुछ भी नहीं है। एक और ने कहा : मालिक ग़ुलाम से मांगने को फ़रमाता है मगर ग़ुलाम अपने लिये मांगने की जुरअत नहीं कर सकता, हमें नूर इनायत फ़रमा ताकि हम आस्मान की तारीकियों से निकल कर तेरी बारगाह में आएं।

एक ने कहा : हम येह दुआ़ मांगते हैं कि हमारी येह इबादत क़बूल फ़रमा ले और हमें हमेशा इसी पर क़ाइम रख, एक और मुहि़ब्ब ने कहा : तू ने हमें जो फ़ज़ीलत और इन्आ़मात बख़्शे हैं उन्हें मुकम्मल फ़रमा दे। दूसरे ने कहा : दुन्या में हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, हमें अपना जमाले जहां आरा दिखा दे।

एक और मुहि़ब्ब ने कहा : मेरी आंखें दुन्या और इस की ज़ैबो ज़ीनत से कोर कर दे और मेरे दिल को आख़िरत के ख़यालात से पाक फ़रमा दे।

एक और मुहिब्ब ने कहा : मैं ने तेरी रिफ़्अ़त और पाकी को जान लिया और दोस्तों से तुझ को जो महब्बत है उस को पहचान लिया है, हम पर येह एह्सान और फ़रमा कि हम को ऐसा कर दे कि हम तेरे सिवा किसी और चीज़ का दिल में ख़याल तक न लाएं।

फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि ऐ दावूद ! इन से कह दो, मैं ने तुम्हारी बातें सुन कर उन्हें क़बूल कर लिया है, तुम एक दूसरे से अलग अलग हो जाओ और ख़ुद को दीदार के लिये आमादा कर लो मैं तुम्हारे और अपने दरमियान ह़ाइल पर्दे उठाने वाला हूं ताकि तुम मेरे नूर और जलाल को देखो।

हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : या अल्लाह ! इन्हें येह मक़ाम कैसे मिला है ? रब ने फ़रमाया : हुस्ने ज़न, दुन्या और इस के लवाज़िमात से किनारा कशी, मेरे हुज़ूर मुनाजात और तन्हाई में ह़ाज़िर होने की वज्ह से इन्हें येह मक़ाम मिला है और इस मक़ाम को वोही पाता है जो दुन्या और माफ़ीहा को छोड़ दे, इस से बिल्कुल तअ़ल्लुक़ न रखे, दिल को मेरी याद से मा'मूर कर ले, तमाम मख़्लूक़ को छोड़ कर मुझे पसन्द कर ले तब मैं उस पर रह्मत नाज़िल करता हूं उसे दुन्यावी अ़लाइक़ से आज़ाद कर देता हूं, उस के और अपने दरमियान ह़िजाबात उठा देता हूं, वोह मुझे ऐसे देखता है जैसे कोई इन्सान अपने सामने किसी चीज़ को देखता है, हर लम्ह़ा उसे अपनी इ़ज़्ज़तो करामत का नज़्ज़ारा दिखाता हूं, उसे नूरे मा'रिफ़त से सरफ़राज़ करता हूं, जब वोह बीमार हो जाता है तो मैं मेहरबान मां की त़रह़ उस की तीमार दारी करता हूं, अगर वोह प्यासा होता है तो मैं उसे सैराब करता हूं और उसे अपने ज़िक्र से ग़िज़ा फ़राहम करता हूं।

ऐ दावूद ! (عَلَيْهِ السَّلَام) जब मैं उस से येह सुलूक करता हूं तो वोह दुन्या और इस के अ़लाइक़ से नाबीना हो जाता है, उसे दुन्या से कोई महब्बत नहीं रहती, वोह मेरे सिवा किसी की त़रफ़ तवज्जोह नहीं देता, वोह जल्दी मरने को पसन्द करता है मगर मैं उस की मौत ना पसन्द करता हूं क्यूंकि सारी मख़्लूक़ में वोही तो मेरी नज़रे रह्मत का मूरीद व मरजअ़ होता है, वोह मेरे सिवा किसी को नहीं देखता और मैं उस के सिवा किसी और को पसन्द नहीं करता।

ऐ दावूद ! अगर तू उसे इस ह़ालत में देखे कि उस का जिस्म पुर ऐब हो, दुबला हो, उस के आ'ज़ा टूट चुके हों और उस का दिल निज़ाम से बे रब्त़ हो चुका हो तो जब मैं फ़िरिश्तों में उस पर फ़ख़्र करता हूं और आस्मान वालों में उस का तज़्किरा करता हूं तो वोह येह सुन कर अपनी इ़बादत और ख़ौफ़ को ज़ियादा कर देता है।

ऐ दावूद ! मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उसे जन्नतुल फ़िरदौस में जगह दूंगा और उस के दिल को अपने दीदार से मा'मूर कर दूंगा यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएगा।

मुश्ताक़ाने ख़ुदावन्दी नुक़्सान से मामून हैं

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि मेरी मह़ब्बत के मुश्ताक़ बन्दों से कह दीजिये : तुम्हें उस वक़्त कोई मह़रूमी नहीं होगी जब कि मैं मख़्लूक़ के सामने ह़िजाबात डाल दूं तो तुम बे पर्दा दिल की आंखों से मेरा दीदार करते रहोगे और तुम्हें कोई ज़रर नहीं होगा जब कि मैं ने दुन्या के बदले तुम्हें दीन दे दिया और तुम्हें मेरी रिज़ा की ख़्वास्तगारी के बाइ़स दुन्या पर मेरी नाराज़ी कोई नुक़्सान नहीं देगी।

अल्लाह और दुन्या की मह़ब्बत दिल में यक्जा नहीं हो सक्तीं

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की ख़बरों में येह भी मरक़ूम था कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी की, कि अगर तुम मेरी मह़ब्बत का दा'वा करते हो तो दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दो क्यूंकि मेरी और दुन्या की मह़ब्बत एक दिल में नहीं समा सकतीं।

ऐ दावूद ! दुन्या से मेल जोल रखो मगर मह़ब्बत ख़ालिसतन मुझ से ही रखो, तुम मेरे दीन की पैरवी करो, लोगों के अदयान की पैरवी न करो, जो चीज़ तुम को मेरी मह़ब्बत के शायां नज़र आए उसे ह़ासिल करो, जिस चीज़ में तुम्हें मुश्किल पेश आए तो उस में मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हारे अह़वालो ह़वाइज की इस्लाह़ कर दूंगा, तुम्हारा क़ाइदो रहबर बनूंगा सुवाल से पहले अ़त़ा करूंगा, मसाइब में तुम्हारी मदद करूंगा, मैं ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि मैं अपने उस बन्दे को बदला दूंगा जो त़लबे सादिक़ और पुख़्ता इरादों के साथ मेरे ह़ुज़ूर गर्दन झुका के आता है और वोह येह समझता है कि मुझ से बे नियाज़ी व बे ए'तिनाई मुमकिन नहीं है, जब तू इस मक़ाम पर पहुंच जाएगा तो मैं तुम से रुस्वाई और वह़शत को दूर कर दूंगा, तुम्हारे दिल में लोगों से बे नियाज़ी डाल दूंगा क्यूंकि मैं ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि जब कोई बन्दा दुन्या से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर मेरी ज़ात पर भरोसा करते हुवे मुत़्मइन हो जाता है तो मैं उसे दुन्या से माला माल कर देता हूं, आ'माल में तज़ाद पैदा न करो, लोगों से बे परवाह हो जाओ, तुम को तुम्हारा साथी कोई फ़ाइदा नहीं देगा अपना ध्यान मुझ तक मह़दूद रखो, मेरी मा'रिफ़त की कोई ह़द नहीं है इसे मह़दूद न

समझो, मुझ से जितना ज़ियादा त़लब करोगे उतना अ़त़ा करूंगा, मेरे देने की कोई ह़द नहीं है और बनी इस्राईल को बताओ कि मेरे और मेरी किसी मख़्लूक़ के दरमियान रिश्तेदारी नहीं है, मेरे बारे में उन के अ़ज़ाइम को और उन की रग़बत को बढ़ाओ, उन्हें उस जन्नत का मुज़्दा सुनाओ जिसे किसी आंख ने नहीं देखा किसी कान ने नहीं सुना और किसी दिल पर उस का तसव्वुर नहीं गुज़रा, मुझे हर वक़्त आंखों के सामने समझो ! मुझे सर की आंख से नहीं, दिल की आंख से देखो।

मैं ने अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम खाई है कि जो बन्दा जान बूझ कर ताख़ीर से मेरी इ़बादत करेगा, मैं उसे सवाब नहीं दूंगा, सीखने वालों से तवाज़ोअ़ से पेश आओ ! और मुरीदीन पर ज़ियादती न करो ! मेरे मुह़िब्ब अगर उस मक़ाम को जानते जो मैं ने मुरीदीन के लिये मुक़र्रर किया है तो वोह भी उसी रास्ते पर चलना पसन्द करते।

ऐ दावूद ! किसी मुरीद को उस की सरमस्ती से होशयार न करो, उसे मेरी ज़ात में मगन रहने दो मैं तुम को जहीद (बे इन्तिहा कोशिश करने वाला) लिखूंगा, और जिसे मैं अपने हां जहीद लिख देता हूं उस पर मख़्लूक़ात से कोई ख़ौफ़ और मोह़ताजी बाक़ी नहीं रहती।

ऐ दावूद ! मेरा कलाम ख़ूब समझो और इसे मज़्बूती से पकड़ लो, अपनी ज़ात के लिये अपने नफ़्स से नेकियां लो, दुन्या में मश्ग़ूल न हो ताकि मुझ से तुम्हारी मह़ब्बत पसे पर्दा न चली जाए, मेरे बन्दों को मेरी रह़मत से ना उम्मीद न करो, मेरे लिये अपनी ख़्वाहिशात को ख़त्म कर दो क्यूंकि मैं ने शहवात कमज़ोर बन्दों के लिये बनाई हैं, क़वी मर्दों को ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से क्या काम ? क्यूंकि येह मेरी बारगाह में मुनाजात की शीरीनी को ख़त्म कर देती हैं, मेरे हां त़ाक़तवरों का अ़ज़ाब येह है कि जब वोह मेरे दीदार की लज़्ज़त पा लेने के क़रीब होते हैं, मैं उन की अ़क़्लों पर पर्दा डाल देता हूं और वोह मह़रूम रहते हैं, मैं अपने दोस्त के लिये दुन्या और दुन्या की वज्ह से अपनी दूरी पसन्द नहीं करता।

ऐ दावूद ! मेरे और अपने दरमियान मख़्लूक़ को न लाओ कहीं इस की सर मस्ती तुम को मेरी मह़ब्बत से दूर न कर दे क्यूंकि येह मख़्लूक़ मेरे इरादत मन्द बन्दों के लिये चोरों की त़रह़ है, हमेशा रोज़े रखो शहवात को तर्क कर सकोगे, ख़ुद को बे रोज़ा होने से बचाओ क्यूंकि मुझे हमेशा रोज़े रखने वाले बहुत पसन्द हैं।

बाब 41

शुक्र

रब्बे ज़ुल जलाल ने कुरआने मजीद में ज़िक्र के साथ शुक्र को भी शामिल फ़रमाया है, इरशादे बारी तआला है :

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (1) — *और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र बहुत बड़ा है।*

इरशादे इलाही है :

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ (2) — *पस तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा और मेरा शुक्र करो और कुफ़्र न करो।*

मज़ीद फ़रमाया :

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ (3) — *अगर तुम ईमान लाए और शुक्र गुज़ार बन गए तो **अल्लाह** तआला तुम्हें अ़ज़ाब नहीं देगा।*

और फ़रमाया :

وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ (4) — *हम अ़न क़रीब शुक्र करने वालों को अज्र देंगे।*

और **अल्लाह** तआला ने शैतान मर्दूद का क़िस्सा बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि शैतान ने बारगाहे रब्बी में कहा :

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ (5) — *मैं उन्हें बहकाने के लिये तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊंगा।*

बा'ज़ उ़लमा का ख़याल है कि यहां सिराते मुस्तक़ीम से मुराद शुक्र का रास्ता है, शैतान ने **अल्लाह** तआला की मख़्लूक़ पर ता'न करते हुवे कहा था :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा। (پ۲۱،العنکبوت:۴۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो। (پ۲،البقرة:۱۵۲)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ। (پ۵،النساء:۱۴۷)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें। (پ۴،اٰل عمران:۱۴۵)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा। (پ۸،الاعراف:۱۶)

وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ [1] *तू उन में से अक्सर को शुक्र गुज़ार नहीं पाएगा।*

और फ़रमाने इलाही है :

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ [2] *मेरे बन्दों में थोड़े हैं जो शुक्र अदा करते हैं।*

और **अल्लाह** तआला ने शुक्र करने पर ने'मतों में ज़ियादती का तज़्किरा फ़रमाया है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ [3] *अगर तुम ने शुक्र किया तो मैं ने'मतों को ज़ियादा करूंगा।*

और इस फ़रमान में किसी को मुस्तसना नहीं फ़रमाया और पांच चीज़ें ऐसी हैं जिन में **अल्लाह** तआला ने इस्तिसना किया है :

۞.....तवंगरी ۞.....क़बूलिय्यत ۞.....रिज़्क़ ۞.....बख़्शिश और ۞.....तौबा

चुनान्चे फ़रमाने इलाही है :

فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ [4] *अगर **अल्लाह** ने चाहा तो अन क़रीब तुम्हें मालदार कर देगा।*

और इरशाद फ़रमाया है :

يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ [5] *वोह जिसे चाहता है बे हिसाब रिज़्क़ देता है।*

और फ़रमाया : "और **अल्लाह** तआला शिर्क के सिवा जो गुनाह चाहे बख़्श देगा"[6] मज़ीद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला जिस की तौबा चाहता है क़बूल कर लेता है।"[7]

शुक्र **अल्लाह** तआला की सिफ़ात में से एक सिफ़त है चुनान्चे इरशादे इलाही है :

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ [8] *और **अल्लाह** तआला शकूर व हलीम है।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तू उन में अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा। (پ۸،الاعراف:۱۷)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले। (پ۲۲،سبا:۱۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा। (پ۱۳،ابراهيم:۷)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अन क़रीब **अल्लाह** तुम्हें दौलत मन्द कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे। (پ۱۰،التوبہ:۲۸)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिसे चाहे बे गिनती दे। (پ۲،البقرة:۲۱۲)

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है। (پ۵،النساء:۴۸)

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** जिस की चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए। (پ۱۰،التوبہ:۱۵)

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है। (پ۲۸، التغابن:۱۷)

अल्लाह तआ़ला ने शुक्र को जन्नतियों का मुब्तदाए कलाम क़रार दिया है और फ़रमाया : (जन्नती जन्नत में दाखि़ल होते ही कहेंगे) "ह़म्द और शुक्र है **अल्लाह** के लिये जिस ने अपना वा'दा सच्चा फ़रमाया।"(1) और फ़रमाया :

وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰﴾ (2)

*उन की आखि़री पुकार येह होगी ह़म्द है **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन के लिये।*

शुक्र की फ़ज़ीलत में बहुत सी अह़ादीस भी वारिद हुई हैं चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है : "खा कर शुक्र अदा करने वाले साबिर रोज़ादार की त़रह़ हैं।"(3)

हुज़ूर की शुक्र गुज़ारी

ह़ज़रते अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हम ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि आप हमें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई मुन्फ़रिद बात सुनाएं, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अश्कबार हो गईं और फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कौन सी बात अ़जीब नहीं थी, सुनो ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक रात तशरीफ़ लाए और मेरे बिस्तर या मेरे लिह़ाफ़ में मेरे साथ लैट गए, यहां तक कि आप का जिस्मे अत़हर मेरे जिस्म से मस होने लगा। तब आप ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र की बेटी ! मुझे इजाज़त दो ताकि मैं रब की इ़बादत करूं, मैं ने अ़र्ज़ किया : अगर्चे मैं आप के कुर्ब को बे इन्तिहा पसन्द करती हूं मगर आप की ख़्वाहिश को तरजीह़ देती हूं लिहाज़ा मैं आप को इजाज़त देती हूं, आप ज़रूर इ़बादत फ़रमाएं। आप उठ कर पानी के मश्कीज़े की त़रफ़ गए और थोड़े से पानी से वुज़ू फ़रमा कर आप ने नमाज़ शुरूअ़ कर दी और आप रोने लगे यहां तक कि आप के आंसू सीने पर बहने लगे, फिर आप रुकूअ़ में, सजदे से सर उठा कर भी रोते रहे यहां तक कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ाज़िर हो कर नमाज़े फ़ज्र के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ किया, मैं ने पूछा : आप तो बख़्शे हुवे हैं, आप किस लिये रोते हैं ? आप ने फ़रमाया : क्या मैं **अल्लाह** का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? और मैं क्यूं न रोऊं ह़ालांकि **अल्लाह** ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ (4)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया। (پ۲٤، الزمر: ۷٤)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन की दुआ़ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा (ख़ूबियों वाला) **अल्लाह** जो रब है सारे जहान का। (پ۱۱، یونس:۱۰)

3......ترمذی کتاب صفة القیامة ، باب:٤٣ ، ٤/٢١٩، الحدیث ٢٤٩٤

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्लमन्दों के लिये। (پ٤، ال عمران:۱۹۰)

شرح مشکل الآثار للطحاوی ، ۱۲/۳۳، الحدیث ٤٦١٨ و صحیح ابن حبان ، کتاب التوبة، ذکر البیان بان المرء...الخ، ۲/۹، الحدیث ٦١٩ مختصرا

एक पथ्थर की गिर्या व ज़ारी

येह ह़दीस इस बात पर दलालत करती है कि इन्सान कभी भी बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में रोना बन्द न करे और इस राज़ की त़रफ़ येह रिवायत भी इशारा करती है कि **अल्लाह** तआ़ला के एक नबी का ऐसे पथ्थर से गुज़र हुवा जो खुद तो छोटा था मगर उस से पानी बहुत निकल रहा था, **अल्लाह** तआ़ला के नबी को बहुत तअ़ज्जुब हुवा, **अल्लाह** तआ़ला ने पथ्थर को क़ुव्वते गोयाई अ़त़ा कर दी और उस ने कहा : जब से मैं ने **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमान सुना है कि

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ[1] *इन्सान और पथ्थर जहन्नम का ईंधन होंगे।*

मैं बराबर **अल्लाह** के ख़ौफ़ से रो रहा हूं।

अल्लाह के नबी ने **अल्लाह** से दुआ़ मांगी कि इस पथ्थर को जहन्नम की आग से बचा ले **अल्लाह** ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली कुछ मुद्दत गुज़रने के बा'द उन का फिर उसी त़रफ़ जाना हुवा, देखा तो पथ्थर बराबर रोए जा रहा है उन्हों ने पूछा : अब क्यूं रोए जा रहा है? पथ्थर ने जवाब दिया : उस वक़्त ख़ौफ़ की वज्ह से रो रहा था अब ख़ुशी और मसर्रत में रो रहा हूं।

इन्सान का दिल भी पथ्थर की त़रह़ या इस से भी ज़ियादा सख़्त है, इस की सख़्ती ख़ौफ़ और शुक्र दोनों ह़ालतों में गिर्या व ज़ारी करने से ख़त्म होती है।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन कहा जाएगा कि ह़म्द करने वाले खड़े हो जाएं, लोगों का एक गुरौह खड़ा हो जाएगा, उन के लिये झन्डा लगाया जाएगा और वोह तमाम जन्नत में जाएंगे पूछा गया : या रसूलल्लाह! ह़म्द करने वाले कौन हैं? आप ने फ़रमाया : जो लोग हर ह़ाल में **अल्लाह** का शुक्र अदा करते हैं।[2]

दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं "जो हर दुख-सुख में **अल्लाह** का शुक्र अदा करते हैं।"[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। (پ۱، البقرة : ۲٤)

2......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٦/٢٩٤ و قوت القلوب، ١/٣٥٤ و الموسوعة لابن ابى الدنيا، كتاب الاهوال، ٦/٢٢٥، الحديث ٢١٤ وفردوس الاخبار، ١/١٦، الحديث ١٤

3...... المعجم الكبير، ١٢/١٥، الحديث ١٢٣٤٥ بتغير قليل

फ़रमाने नबवी हैं कि शुक्र रब्बे रह़मान की चादर है।[1]

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि मैं त़वील बातों के बदले अपने दोस्तों से शुक्र करने पर राज़ी हो गया हूं और साबिरीन की ता'रीफ़ में फ़रमाया कि उन का घर जन्नत में है, जब वोह जन्नत में जाएंगे तो मैं उन्हें शुक्र करना सिखलाऊंगा क्यूंकि शुक्र बेहतरीन बात है और इस से मैं ने'मतें ज़ियादा करूंगा और उन की मुद्दते दीदार त़वील करता जाऊंगा।

जब जम्ए़ अम्वाल के सिलसिले में वह़्ये रब्बानी का नुज़ूल हुवा तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा कि हम कौन सा माल इकठ्ठा करें? आप ने फ़रमाया: ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल।[2] इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि हमें माल के बदले शुक्र गुज़ार दिल को पसन्द करना चाहिये। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि शुक्र निस्फ़ ईमान है।

अदाए शुक्र के त़रीक़े

शुक्र, ज़बान, दिल और आ'ज़ाए बदन से होता है। दिल का शुक्र नेकियों का इरादा करना और मख़्लूक़ से इसे पोशीदा रखना। ज़बान का शुक्र येह है कि उन कलिमात को अदा करे जो इज़्हारे शुक्र के लिये मख़्सूस हैं। आ'ज़ाए बदन का शुक्र येह है कि इन्हें इ़बादते इलाही में मसरूफ़ रखे और बुरे कामों में इस्ति'माल न करे, आंखों का शुक्र येह है कि वोह जिस मुसलमान का ऐ़ब देखें तो उसे ढांप लें। कानों का शुक्र येह है कि वोह किसी मुसलमान की बुराई सुनें तो उसे छुपाएं, येही उन का शुक्र है। ज़बान का शुक्र येह है कि वोह तक़्दीरे इलाही पर अपनी रिज़ा का इज़्हार करे और इसे येही हुक्म दिया गया है, चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से पूछा: कैसे हो? उस ने कहा: अच्छा हूं। आप ने फिर पूछा ता आंकि तीसरी मरतबा पूछने पर उस शख़्स ने कहा: अच्छा हूं **अल्लाह** की ह़म्द और शुक्र करता हूं तब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं येही कुछ तुम से सुनना चाहता था।[3]

बुज़ुर्गाने सलफ़ का त़रीक़ए शुक्र गुज़ारी

बुज़ुर्गाने सलफ़ का येह त़रीक़ा था कि वोह दूसरों से पूछा करते थे कि कैसे हो? उन की निय्यत येह होती थी कि लोग जवाब में **अल्लाह** का शुक्र करें और जवाब देने वाले और पूछने

1 ......كشف الخفاء، ١/٣٢٨، الحديث ١١٨٠، و الدرالمنثور، سورة الفاتحة، تحت الآية:١، ١/٣١ و قوت القلوب، ١/٣٤٣

2 ...... ابن ماجه ، كتا ب النكاح ، باب افضل النساء، ٢/٤١٣، الحديث ١٨٥٦

3 .....المعجم الاوسط للطبرانى، ٣/٢١٦، الحديث ٤٣٧٧

वाले दोनों का शुमार शुक्र गुज़ारों में हो जाए, उन की इस बात में रिया का क़त्ई दख़्ल नहीं होता था। जिस शख़्स से भी उस की हालत पूछी जाए वोह तीन बातों में से एक बात करेगा, शुक्र अदा करेगा, शिकायत करेगा या फिर ख़ामोश रहेगा, अल्लाह का शुक्र अदा करना इबादत है, शिकायत करना गुनाह है जो दीनदारों के नज़्दीक सख़्त ना पसन्दीदा फ़े'ल है, अल्लाह तआला के यहां उस की बुराई का कहना ही क्या जो बादशाहों का बादशाह है जिस के दस्ते क़ुदरत में बन्दए नाचीज़ की तमाम चीज़ें हैं लिहाज़ा इन्सान के लिये ज़रूरी है अगर वोह मसाइब पर सब्र नहीं कर सकता, क़ज़ाए इलाही पर राज़ी नहीं रह सकता और ला मुहाला अपनी तही दामनी का शिक्वा करना चाहता है तो वोह लोगों के आगे शिकायतें करने के बजाए अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुज़ूर अपनी गुज़ारिशात पेश करे वोही मसाइब में मुब्तला करने वाला और वोही इन से नजात देने वाला है और येह हक़ीक़त है कि बन्दए नाचीज़ का अल्लाह की बारगाह में अपनी ज़िल्लत का इज़्हार करना हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त है मगर अपने जैसे बन्दों के आगे शिक्वे करना और ज़िल्लत उठाना इन्तिहाई रुस्वा कुन चीज़ है।

फ़रमाने इलाही है : "तह़क़ीक़ तुम अल्लाह के सिवा जिन को (मा'बूद समझ कर) पुकारते हो वोह तुम्हारे जैसे अल्लाह के बन्दे हैं।"(1)

नीज़ फ़रमाया : "तह़क़ीक़ तुम अल्लाह के सिवा जिन की इबादत करते हो वोह तुम्हारे रिज़्क़ के मालिक नहीं हैं अल्लाह के यहां रिज़्क़ तलाश करो और उस की इबादत करो और उस का शुक्र अदा करो।"(2)

शुक्र की अक़्साम में से ज़बान से शुक्र अदा करना भी है चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िदमत में एक वफ़्द आया तो उन में से एक जवान खड़ा हो कर आप से गुफ़्तगू करने की तय्यारी करने लगा। आप ने फ़रमाया : बड़ों की इ़ज़्ज़त करो या'नी बड़ों को मुझ से गुफ़्तगू करने दो। इस पर वोह जवान बोला : ऐ अमीरल मोमिनीन ! अगर क़ियादत का मे'यार उ़म्र होता तो मुसलमानों में ऐसे बूढ़ों की कसीर ता'दाद मौजूद है जो आप से उ़म्र में बड़े हैं। आप ने येह सुन कर फ़रमाया : चलो बात करो ! उस ने कहा : हम कुछ लेने नहीं आए क्यूंकि आप की मेहरबानियों से हमें बहुत कुछ मिल चुका है, किसी से ख़ौफ़ज़दा हो कर नहीं आए क्यूंकि आप के अ़द्लो इन्साफ़ ने हमारे तमाम ख़ौफ़ दूर कर के अम्न की ज़िन्दगी बख़्शी है, हम सिर्फ़ इस लिये आए हैं कि अपनी ज़बानों से आप का शुक्रिया अदा करें और वापस चले जाएं।

1...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं। (پ٩،الاعراف:١٩٤)

2.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं, तो अल्लाह के पास रिज़्क़ ढूंडो और उस की बन्दगी करो और उस का एह़सान मानो। (پ٢٠،العنکبوت:١٧)

बाब 42

मज़म्मते उ़ज्ब व तकब्बुर

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद की मुतअ़द्दिद आयात में तकब्बुर की मज़म्मत की है और हर खुद सर मुतकब्बिर को बुरा गरदाना है चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ (1)

अलबत्ता मैं उन लोगों को अपनी आयात से फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं।

और फ़रमाया :

كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ (2)

इसी तरह अल्लाह हर सरकश मुतकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है।

मज़ीद फ़रमाया : ‘‘और उन्हों ने फ़त्ह मांगी और हर सरकश इनाद रखने वाला ना मुराद हुवा।’’(3) एक और आयत में इरशाद फ़रमाया :

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (4)

वोह तकब्बुर करने वालों को महबूब नहीं रखता।

मज़ीद फ़रमाया : ‘‘बेशक उन्हों ने अपनी ज़िन्दगियों में तकब्बुर किया और बहुत बड़ी सरकशी की।’’(5) फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ﴿۶۰﴾ (6)

जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं बहुत जल्द जहन्नम में ज़लील हो कर दाख़िल होंगे।

और भी मुतअ़द्दिद मक़ामात पर अल्लाह तआ़ला ने तकब्बुर की मज़म्मत फ़रमाई है।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में ना हक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ۹، الاعراف:۱۴۶)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह यूं ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर। (پ۲۴،المؤمن:۳۵)

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हों ने फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा। (پ۱۳، ابراهيم:۱۵)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वो मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता। (پ۱۴، النحل:۲۳)

5...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी पर आए। (پ۱۹،الفرقان:۲۱)

6...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर। (پ۲۴،المؤمن:۶۰)

और फ़रमाने नबवी है : "जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा और जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर ईमान होगा वोह जहन्नम में नहीं जाएगा।[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** फ़रमाता है कि अ़ज़मत और किब्रियाई मेरी चादरें हैं जो इन में से किसी का दा'वा करेगा मैं उसे जहन्नम में डाल दूंगा,[2] मुझे किसी की परवा नहीं है।

हज़रते अबू सलमह बिन अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की कोहे सफ़ा पर मुलाक़ात हुई, कुछ देर ठहरने के बा'द अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) चले गए और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) रोने लगे, लोगों ने रोने का सबब पूछा तो आप ने फ़रमाया : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का कहना है, उन्हों ने हज़रते रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : "जिस शख़्स के दिल में राई के बराबर तकब्बुर होगा **अल्लाह** तआ़ला उसे मुंह के बल जहन्नम में डालेगा।"[3]

फ़रमाने नबवी है कि आदमी अपने नफ़्स की पैरवी में बराबर बढ़ता चला जाता है यहां तक कि उसे मुतकब्बिरीन में लिखा जाता है और उसे उन्हीं के अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाएगा।[4]

हज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَیْہِمَا السَّلَام ने एक मरतबा परन्दों, इन्सानों, जिन्नों और दरिन्दों से फ़रमाया कि मेरी मइय्यत में चलो चुनान्चे, आप दो लाख इन्सानों और दो लाख जिन्नों के साथ तख़्त पर जल्वा फ़रमा हुवे और इतनी बुलन्दी तक जा पहुंचे कि वहां से फ़िरिश्तों की तस्बीहात की आवाज़ ब आसानी सुनी जा रही थी, फिर वहां से नीचे उतरे यहां तक कि उन के क़दम समन्दर को छूने लगे तो आप ने आवाज़ सुनी, अगर तुम्हारे किसी साथी के दिल में ज़र्रा बराबर तकब्बुर होगा तो जितनी बुलन्दी तक मैं तुम को ले गया हूं उस से भी ज़ियादा गहराई में उसे धंसा दूंगा।

---

1. ......مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ ، ص ٦١،الحدیث ١٤٨ـ (٩١)
2. ......ابوداود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الکبر، ٨١/٤، الحدیث ٤٠٩٠
3. ......شعب الایمان، السابع والخمسون...الخ، فصل فی التواضع...الخ، ٢٨١/٦، الحدیث ، ٨١٥٤ (المروہ مکان الصفا)
4. ......ترمذی ، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی الکبر، ٤٠٣/٣، الحدیث ٢٠٠٧

तीन शख़्सों पर जहन्नम का मख़्सूस अ़ज़ाब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिस के दो कान, दो आंखें और कुव्वते गोयाई रखने वाली ज़बान होगी, वोह कहेगी कि मुझे तीन शख़्सों पर मुक़र्रर किया गया है, हर सरकश मुतकब्बिर के लिये, **अल्लाह** के साथ शरीक ठहराने वाले के लिये और तसवीरें बनाने वाले के लिये।(1)

फ़रमाने नबवी है कि बख़ील, मुतकब्बिर और बद ख़िसाल जन्नत में नहीं जाएगा।(2)

फ़रमाने नबवी है कि जन्नत और जहन्नम ने बाहम गुफ़्तगू की :

जहन्नम बोला कि : "मैं ने सरकशों और मुतकब्बिरों को अपने लिये पसन्द किया है।"

जन्नत ने कहा : "मेरे अन्दर कमज़ोर, ज़ईफ़ और दरमांदा लोग आएंगे।"

अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़रमाया : "तू मेरी रह़मत है, मैं जिस बन्दे को चाहूंगा उसे तेरे सिपुर्द कर दूंगा, और जहन्नम से फ़रमाया : "तू मेरा अ़ज़ाब है, मैं जिसे चाहूंगा तेरे अ़ज़ाब में झोंक दूंगा और तुम दोनों को भर दूंगा।(3)

बहुत ही बुरा बन्दा

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि वोह बन्दा बहुत बुरा है जिस ने तकब्बुर किया, सरकशी इख़्तियार की और क़ादिरे मुत़लक़ ख़ुदा को भूल गया, वोह बन्दा बहुत बुरा है जिस ने तकब्बुर किया, अपने आप को बहुत बड़ा समझा और बहुत बड़े बुलन्द व बा इ़ज़्ज़त ख़ुदा को भूल गया, वोह बन्दा बहुत बुरा है जो मक़्सूदे ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल हो गया, उसे भूल गया और क़ब्रों और मसाइब को भुला बैठा, वोह बन्दा बहुत बुरा है जिस ने बग़ावत और सरकशी की और अपनी इब्तिदा और इन्तिहा को भूल गया।(4)

---

1 ......ترمذی،کتاب صفۃ جھنم، باب ماجاء فی صفۃ النار، ٤/٢٥٩، الحدیث٢٥٨٣

2 ......مسند احمد، مسند ابی بکر الصدیق، ١/٢٦، الحدیث ٣٢ ملخصاً

3 ...... بخاری، کتا ب التفسیر، باب وتقول ھل من مزید، ٣/٣٣٣، الحدیث ٤٨٥٠

4 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ١٧، ٤/٢٠٣، الحدیث٢٤٥٦

हज़रते साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हमें मा'लूम हुवा है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा गया कि फुलां में कितना तकब्बुर है ! आप ने फ़रमाया : क्या उस के लिये मौत नहीं है ?(1) (या'नी वोह मौत से नहीं डरता)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام ने वफ़ात के वक़्त अपने बेटों को बुला कर फ़रमाया : मैं तुम्हें दो बातों के करने का हुक्म देता हूं और दो बातों से रोकता हूं, मैं तकब्बुर और शिर्क से मन्अ़ करता हूं और "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पर कारबन्द रहने का हुक्म देता हूं, क्यूंकि अगर एक पलड़े में आस्मानो ज़मीन अपनी तमाम अश्या समेत रख दिये जाएं और दूसरे पलड़े में "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" रख दिया जाए तो येह पलड़ा भारी हो जाएगा। अगर आस्मानो ज़मीन अपनी तमाम तर अश्या समेत एक दाइरे की तरह हो जाएं और उन में "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" रख दिया जाए तो वोह दाइरा टूट जाएगा और मैं तुम्हें, "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़ने का हुक्म देता हूं क्यूंकि येह हर चीज़ की तस्बीह है और इसी के सबब हर चीज़ को रिज़्क़ दिया जाता है।(2)

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : उसे बिशारत हो जिसे **अल्लाह** ने अपनी किताब का इल्म दिया और वोह मुतकब्बिर नहीं मरा।

फ़रमाने नबवी है कि हर संग दिल, इतरा कर चलने वाला मुतकब्बिर, माल जम्अ़ करने वाला और किसी को राहे खुदा से रोकने वाला जहन्नमी है और हर मुफ़्लिस ज़ईफ़ जन्नती है।(3)

फ़रमाने नबवी है : हमें सब से ज़ियादा महबूब हमारा सब से ज़ियादा मुक़र्रब क़ियामत में वोह शख़्स होगा जो तुम में से बेहतरीन अख़्लाक़ का मालिक है और क़ियामत के दिन हमें सब से ज़ियादा ना पसन्द और हम से सब से ज़ियादा दूर, लोगों का मुज़्हिका उड़ाने वाले, बेहूदा गो और मुंह भर भर कर बातें करने वाले होंगे, पूछा गया : हुज़ूर ! येह कौन होंगे ? आप ने फ़रमाया : मुतकब्बिर होंगे।(4)

---

1 ......شعب الایمان ، السابع و الخمسون...الخ، فصل فی التواضع...الخ ٦/٢٩٣، الحدیث ٨٢٠٩

2 ......مسنداحمد ، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، ٢/٦٩٥، الحدیث ٧١٢٣

3 ......مسنداحمد ، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، ٢/٦٧٢، الحدیث ٧٠٣٠

4 ......تاریخ مدینہ دمشق، ٣٧/٣٩٧

फ़रमाने नबवी है : क़ियामत के दिन मुतकब्बिर च्यूंटियों की त़रह़ उठाए जाएंगे लोग उन्हें रौंदेंगे और रेज़ा रेज़ा कर देंगे और वोह इन्तिहाई ज़िल्लत में होंगे फिर उन्हें जहन्नम के क़ैदख़ाने की त़रफ़ ले जाया जाएगा जिस का नाम बूलस है, उन पर जहन्नम की आग भड़केगी, उन्हें दोज़ख़ियों के जिस्मों से निकलने वाली पीप पिलाई जाएगी।[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सरकश और मुतकब्बिरों को क़ियामत के दिन च्यूंटियों जैसी जसामत में पैदा किया जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला के यहां उन की ना क़द्री की वज्ह से लोग उन्हें रौंद रहे होंगे।[2]

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं बिलाल बिन अबी बर्दा के हां गया और उन से कहा कि तुम्हारे वालिद ने मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़दीस सुनाई थी कि जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम "हबहब" है, **अल्लाह** तआ़ला उस वादी में हर मुतकब्बिर को दाख़िल करेगा, ऐ बिलाल ! ख़याल रखना कहीं इस वादी के रहने वालों में से न हो जाना।[3]

फ़रमाने नबवी है कि जहन्नम में एक मह़ल है जिस में तमाम मुतकब्बिरों को जम्अ़ किया जाएगा और फिर वोह मह़ल उन पर गिरा दिया जाएगा।[4]

फ़रमाने नबवी है : ऐ **अल्लाह** ! मैं तकब्बुर की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूं।[5]

और फ़रमाया कि जो शख़्स दुन्या से इस ह़ाल में जाए कि वोह तीन चीज़ों से बरी हो, वोह जन्नत में जाएगा : तकब्बुर, क़र्ज़, ख़ियानत।[6]

ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इरशाद है कि तुम में से कोई भी किसी मुसलमान को ह़क़ीर न समझे क्यूंकि ह़क़ीर मुसलमान भी **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ होता है।

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ٤٧، ٢٢١/٤،الحدیث ٢٥٠٠

2 ......نوادر الاصول للترمذی ، الاصل الثانی والاربعون، فی فضیلة المؤذنین، ٢٥/١ والتواضع والخمول لابن ابی الدنیا ، ٥٧٨/٣، الحدیث ٢٢٤

3 ......تاریخ مدینه دمشق، ٥١٧/١٠

4 ......شعب الایمان، السابع والخمسون...الخ ، فصل فی التواضع...الخ، ٢٨٩/٦،الحدیث ٨١٨٧ (لیس بمرفوع بل موقوف علی عبدالله بن مسعود رضی الله عنه)

5 ......شعب الایمان ، التاسع عشر من شعب الایمان ، فصل فی البکاء عند قراءة القرآن، ٣٦٦/٢، الحدیث ٢٠٦٦ ملتقطاً

6 ......ترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، ٢٠٩/٣، الحدیث ١٥٧٩

हज़रते वहब رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नते अ़द्न को पैदा फ़रमा कर कहा : तू हर मुतकब्बिर पर ह़राम है।

हज़रते अह़नफ़ बिन क़ैस رضی اللہ تعالٰی عنہ हज़रते मुसअ़ब बिन ज़ुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ के साथ चारपाई पर बैठा करते थे, एक दिन अह़नफ़ तशरीफ़ लाए तो हज़रते मुसअ़ब पैर लम्बे किये हुवे दराज़ थे, उन्हें देख कर इन्हों ने पैर नहीं समेटे, हज़रते अह़नफ़ बैठ गए और उन्हें बहुत दुख हुवा, यहां तक कि उन के चेहरे पर नाराज़ी की अ़लामतें ज़ाहिर हो गईं, तब इन्हों ने कहा : तअ़ज्जुब है कि इन्सान तकब्बुर करता है ह़ालांकि वोह दो पेशाब गाहों से निकला है।

हज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : तअ़ज्जुब है कि इन्सान रोज़ाना एक या दो मरतबा पाख़ाना धोता है और फिर भी **अल्लाह** तआ़ला से मुक़ाबला करता है।

आयए करीमा [1] وَفِیۡۤ اَنۡفُسِکُمۡ ؕ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۲۱﴾ के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ उ़लमा ने कहा है कि इस से मुराद इन्सान की शर्मगाहें हैं।

हज़रते मुह़म्मद बिन हुसैन बिन अ़ली (رضی اللہ تعالٰی عنہم) का क़ौल है कि इन्सान के दिल में जितना तकब्बुर दाख़िल होता है उतना ही उस की अ़क़्ल कम होती है, तकब्बुर ज़ियादा हो तो अ़क़्ल बहुत कम होती है और अगर तकब्बुर थोड़ा हो तो उसी के ह़िसाब से अ़क़्ल कम हो जाती है।

हज़रते सुलैमान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से उस गुनाह के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया जिस की मौजूदगी में नेकी कोई फ़ाइदा नहीं देती तो उन्हों ने कहा : वोह तकब्बुर है।

हज़रते नो'मान बिन बशीर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मिम्बर पर खड़े हो कर फ़रमाया : शैत़ान के कुछ जाल हैं, उन जालों में से येह जाल भी हैं : **अल्लाह** की नेमतों पर इतराना, उस की अ़त़ाओं पर फ़ख़्र करना, बन्दगाने ख़ुदा से तकब्बुर करना और **अल्लाह** तआ़ला की ना पसन्दीदा ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ करना। ऐ **अल्लाह** ! अपनी मन्नत और एह़सान के तुफ़ैल दुन्या और आख़िरत में हमें अ़फ़्व और आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा ! आमीन।

फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स तकब्बुर की वज्ह से अपने तहबन्द को घसीटता है **अल्लाह** तआ़ला उसे निगाहे रह़मत से नहीं देखता है।[2]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़ुद तुम में (निशानियां हैं) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं। (پ۲۶،الذّٰریٰت:۲۱)

2 ......مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم جر الثوب خیلاء و بیان حد ما یجوز ارخاؤہ الیہ...الخ، ص ۱۱۵۶، الحدیث ۴۸۔ (۲۰۸۷)

मज़ीद फ़रमाया कि एक शख़्स अपनी चादर पर फ़ख़्र कर रहा था, उस का नफ़्स बहुत इतरा रहा था, अल्लाह तआला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया और वोह क़ियामत के दिन तक उसी तरह धंसता चला जाएगा।[1]

फ़रमाने नबवी है कि जो "तकब्बुर" से अपने कपड़े घसीट कर चलता है अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस पर निगाहे रहमत नहीं फ़रमाएगा।[2]

हज़रते ज़ैद बिन अस्लम से मरवी है कि मैं हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो अ़ब्दुल्लाह बिन वाक़िद का गुज़र हुवा जो नए कपड़े पहने हुवे था, मैं ने सुना हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कह रहे थे ऐ बेटे ! तहबन्द को ऊंचा कर लो क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि जो अपने तहबन्द को तकब्बुर से घसीट कर चलता है, अल्लाह तआला उस की त़रफ़ निगाहे रहमत नहीं करता।[3]

रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा अपनी हथेली पर लुआ़बे दहन लगा कर फ़रमाया : अल्लाह तआला फ़रमाता है : ऐ इन्सान ! तू उ़ज्ब व गुरूर कर रहा है ह़ालांकि मैं ने तुझे इस जैसे पानी से पैदा किया है, यहां तक कि जब मैं ने तुझे मुकम्मल कर दिया तो तू रंग बिरंगे कपड़े पहन कर ज़मीन पर दन-दनाता फिर रहा है ? ह़ालांकि तुझे इसी ज़मीन में जाना है। तू ने माल जम्अ़ कर के इसे रोक लिया मगर जब मौत तेरे सामने आ जाती है तो सदक़ा करने की इजाज़त त़लब करता है, अब सदक़ा करने का वक़्त कहां ?[4]

फ़रमाने नबवी है कि जब मेरा उम्मती इतरा कर चलेगा और फ़ारसो रूम वाले उन के ख़िदमत गुज़ार होंगे तो अल्लाह तआला उन पर दूसरों को मुसल्लत़ कर देगा।[5]

---

1 ......مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم التبختر...الخ، ص ١١٥٦، الحدیث٤٩ـ (٢٠٨٨)

2 ......مسلم، کتاب اللباس والزینۃ ، باب تحریم جرالثوب خیلاء...الخ، ص ١١٥٤، الحدیث٤٣ـ (٢٠٨٥)

3 ......التواضع والخمول لا بن ابی الدنیا ،٣/٥٧١، الحدیث٢٣٩ومسند احمد، مسندعبد اللہ بن عمر...الخ، ٢/٢١٩، الحدیث٤٥٦٧ مختصرا

4 ......مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث بسر بن جحاش ، ٦/٢٥٥ ، الحدیث ١٧٨٥٩

5 ......صحیح ابن حبان، تابع کتاب التاریخ، باب إخباره صلی اللہ علیه وسلم ...الخ ، ذکر الإخبار عن الأمارة ...الخ، ٦/٢٥٣، الجزء الثامن، الحدیث٦٦٨١و سنن الترمذی، کتاب الفتن ، ٤/١١٥، الحدیث ٢٢٦٨

फ़रमाने नबवी है :

जो अपने आप को बड़ा समझता है और इतरा कर चलता है, वोह अल्लाह तआ़ला से इस हा़लत में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर नाराज़ होगा ।[1]

ह़ज़रते अबू बक्र अल हुज़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है :

हम ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बैठे हुवे थे कि "इब्नुल अहतम" का गुज़र हुवा जो अपने मह़ल की त़रफ़ जा रहा था । उस ने मुतअ़द्दिद रेशमी अ़बाएं एक दूसरे पर पहन रखी थीं और इन की वज्ह से उस की अचकन खुली हुई थी, वोह निहायत मुतकब्बिराना अन्दाज़ में एक एक क़दम रखता हुवा जा रहा था । ह़ज़रते ह़सन ने एक नज़र उसे देखा और फ़रमाया : अफ़्सोस ! अफ़्सोस ! नाक चढ़ाने वाला इतरा कर चलने वाला मुंह फुलाए हुवे अपने दोनों पहलू देखता हुवा जा रहा है, ऐ बे वुक़ूफ़ ! तू अपने पहलूओं में ऐसी ने'मतों को देख रहा है जिन का शुक्र अदा नहीं किया गया जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से बनाई गईं और न ही तू ने अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ को अदा किया है, तेरे बदन के हर एक उ़ज़्व में अल्लाह की ने'मत है और शैत़ान हर उ़ज़्व पर क़ब्ज़े की फ़िक्र में है । ब ख़ुदा ! अपनी फ़ित़रत के मुत़ाबिक़ चलना या दीवाने की त़रह़ लड़ खड़ा कर चलना इस चलने से बेहतर है ।

इब्नुल अहतम ने जब येह सुना तो आ कर मा'ज़िरत करने लगा । आप ने फ़रमाया : मुझ से मा'ज़िरत न चाहो, अल्लाह तआ़ला से तौबा करो, क्या तू ने येह फ़रमाने इलाही नहीं सुना है :

"और ज़मीन पर इतरा कर न चल बेशक तू न तो ज़मीन को फाड़ेगा और न ही पहाड़ों जितना लम्बा हो जाएगा ।"[2]

जवानी पर फ़ख़्र नहीं करना चाहिये

ह़ज़रते ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़रीब से एक जवान का गुज़र हुवा जो ख़ूब सूरत कपड़े पहने हुवे था आप ने उसे बुला कर फ़रमाया : ऐ इन्सान ! अपनी जवानी पर फ़ख़्र करता है ! अपनी आ़दतों से मह़ब्बत करता है ! गोया कि क़ब्र ने तेरे वुजूद को छुपा लिया है और तू ने अपने आ'माल देख

---

1 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، ۲/٤٦٢، الحديث ٦٠٠٢

2 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा । (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۷)

लिये हैं ! तुझ पर हैफ़ सद हैफ़ ! जा और अपने दिल का इलाज कर क्यूंकि अल्लाह तआला को बन्दों के उम्दा दिलों की ज़रूरत है ।[1]

रिवायत है कि हज़रते उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़िलाफ़त संभालने से पहले हज किया, हज़रते ताऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें देखा कि वोह इतरा इतरा कर चल रहे हैं । ताऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन के पहलू को उंगली से दबा कर कहा : येह उस की चाल नहीं है जिस के पेट में गन्दगी भरी हो । जनाबे उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मा'ज़िरत ख़्वाहाना लहजे में कहा : ऐ अ़मे मोहतरम ! मेरे जिस्म के हर उ़ज़्व ने मुझे इस चाल पर मजबूर किया और मैं येह चाल सीख गया ।

हज़रते मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने बेटे को नाज़ो तबख़्तुर से चलते हुवे देख कर बुलाया और कहा : जानते हो तुम कौन हो ? तुम्हारी मां को मैं ने सो दिरहम में ख़रीदा था और तुम्हारा बाप मख़्लूक़े ख़ुदा में बहुत से लोगों से कम मर्तबा है ।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने एक आदमी को तहबन्द घसीट कर चलते हुवे देख कर फ़रमाया कि शैतान के भी भाई हैं ! आप ने दो या तीन मरतबा येह जुम्ला दोहराया ।

रिवायत है कि मुतर्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अश्शिख़्ख़ीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुहल्लब को रेशमी जुब्बा पहने नाज़ से चलते देख कर कहा कि ऐ बन्दए ख़ुदा ! येह चाल उन लोगों की है जिन्हें अल्लाह तआला ना पसन्द करता है और जो रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मन हैं, मुहल्लब ने कहा : मुझे पहचानते हो मैं कौन हूं ? हज़रते मुतर्रिफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बोले कि अच्छी तरह पहचानता हूं, तेरी इब्तिदा नापाक नुत्फ़े से, तेरी इन्तिहा गन्दे मुर्दार के तौर पर है और दरमियानी मुद्दत में तू गन्दगी उठाए फिरता है । मुहल्लब ने येह सुन कर मुतकब्बिराना चाल तर्क कर दी और आगे रवाना हो गया ।

इसी मौज़ूअ़ पर अक्सर शो'रा ने बहुत से अश्आर कहे हैं, उन में से चन्द येह हैं :

عجبت من معجب بصورته　　وكان بالامس نطفة مذرة

وفى غد بعد حسن هيئته　　يصير فى القبر جيفة قذرة

---

[1].....या'नी उस की बारगाह में उम्दा और पाकीज़ा दिल मक़्बूल हैं । **इल्मिय्या**

﴾1﴿...मैं अपनी सूरत पर फ़ख़्र करने वाले पर हैरान हूं क्यूंकि वोह कल तक एक नापाक नुत्फ़ा था।

﴾2﴿...और अपनी ख़ूब सूरती के बा वुजूद कल क़ब्र में एक बदबू दार मुर्दार हो जाएगा।

ख़लफ़े अहमर कहता है :

لنا صاحب مولع بالخلاف　　كثير الخطاء قليل الصواب

اشد لجاجا من الخنفسا　　وازهى اذا ما مشى من غراب

﴾1﴿.....मेरा एक इख़्तिलाफ़ पसन्द दोस्त है जिस की ग़लतियां ज़ियादा और अच्छाइयां कम हैं।

﴾2﴿.....वोह गुबरीले से भी ज़ियादा ज़िद्दी है और कव्वे से भी ज़ियादा अकड़ कर चलता है।

एक और शाइर कहता है :

﴾1﴿......मैं ने मुतकब्बिर से कहा : जब कि उस ने कहा : मुझ जैसे रुजूअ़ नहीं किया करते।

﴾2﴿......ऐ बहुत जल्द दुन्या से कूच करने वाले ! तू तवाज़ोअ़ क्यूं नहीं करता !

हज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी मौज़ूअ़ पर फ़रमाते हैं :

ايها الشامخ الذى لايرام　　نحن من طينة عليك السلام

انما هذه الحيوة متاع　　ومع الموت تستوى الاقدام

﴾1﴿......ऐ मौत को न चाहने वाले मुतकब्बिर तुझ पर सलामती हो[1] हम मिट्टी से हैं।

﴾2﴿......येह दुन्या की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, मौत के साथ ही पैर बराबर हो जाएंगे।

मुजाहिद ने फ़रमाने इलाही :

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾ [2]

के मा'ना येह बयान किये हैं कि वोह अपने घर वालों की त़रफ़ इतराता हुवा गया। واللّٰه اعلم

1.....येह सलामे मुतारिकत है जो किसी से किनारा कशी इख़्तियार करते वक़्त कहते हैं जैसा कि आयते मुबारका है : وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿۶۳﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम ! (پ١٩، الفرقان: ٦٣)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अपने घर को अकड़ता चला। (پ٢٩، القيامة:٣٣)

बाब 43

ज़िन्दगी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में बहुत से मक़ामात पर इन्सान को ग़ौरो फ़िक्र करने का हुक्म दिया है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ (1)

बेशक ज़मीनो आस्मान की पैदाइश और रात दिन के इख़्तिलाफ़ में (अहले बसीरत के लिये निशानियां हैं)।

या'नी रात दिन के एक दूसरे के पीछे आने जाने में अ़क्लमन्दों के लिये ग़ौरो फ़िक्र की दा'वत है क्यूंकि जूंही एक जाता है, दूसरा आ जाता है, चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

وَهُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ الَّیۡلَ وَالنَّهَارَ خِلۡفَةً (2)

अल्लाह तआ़ला वोह है जिस ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला कर दिया है।

हज़रते अ़ता رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का क़ौल है कि पहली आयत में इख़्तिलाफ़ से मुराद नूर व ज़ुल्मत, कमी और ज़ियादती है।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

يا راقد الليل مسرورا باوله ان الحوادث قد تطرقن اسحارا

لا تفرحن بليل طاب اوله فرب اخر ليل اجج النارا

﴾1﴿......ऐ रात के इब्तिदाई हिस्से में ख़ुश ख़ुश सोने वाले ! कभी सुब्ह़ को मसाइब भी नाज़िल हो जाया करते हैं।

﴾2﴿......रात के पहले पहर की पाकीज़गी से ख़ुश न हो, रात के बहुत से आख़िरी हिस्से जहन्नम के शो'लों को भड़का देते हैं।

दूसरा शाइर कहता है :

ان الليالى للانام مناهل تطوى و تنشر دونها الاعمار

فقصارهن من الهموم طويلة وطوالهن مع السرور قصار

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं। (پ٤، ال عمران:١٩٠)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी। (پ١٩، الفرقان:٦٢)

﴾1﴿.....बेशक रातें लोगों की मन्ज़िल हैं इलावा अज़ीं उन की उम्रें लपेटी और फैलाई जा रही हैं।
﴾2﴿.....छोटी रातें ग़मों की वज्ह से त़वील हो जाती हैं और त़वील रातें मसर्रत की वज्ह से छोटी मा'लूम होती हैं।

ऊलुल अल बाब कौन हैं

और अल्लाह तआला ने ग़ौरो फ़िक्र करने वालों की ता'रीफ़ की, चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

ٱلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِى خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَٰطِلًا (1)

येह वोह लोग हैं जो खड़े हुवे बैठे हुवे और पहलू के बल लैटे हुवे अल्लाह को याद करते हैं और ज़मीनो आस्मान की पैदाइश में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं (और कहते हैं) ऐ हमारे परवर दगार तू ने इन को बे फ़ाइदा पैदा नहीं किया।

ज़ाते बारी में ग़ौरो फ़िक्र की मुमानअ़त

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से मरवी है कि कुछ लोगों ने अल्लाह तआला की ज़ातो सिफ़ात में ग़ौरो फ़िक्र किया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मख़्लूक़े ख़ुदा के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करो, अल्लाह की ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र न करो क्यूंकि तुम उस की बे मिसाल कुदरत पर क़ादिर नहीं हो सकते।"(2)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है कि एक दिन आप एक ऐसी जमाअ़त के पास गए जो ग़ौरो फ़िक्र में डूबी हुई थी, आप ने पूछा : क्या बात है तुम बोलते क्यूं नहीं हो? उन्हों ने जवाब दिया : हम अल्लाह तआला के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे हैं, आप ने फ़रमाया : अच्छा ! लेकिन मख़्लूक़े ख़ुदा में ग़ौरो फ़िक्र करो, ख़ालिक़े काइनात की ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र मत करो, फिर आप ने फ़रमाया : मग़रिब में एक सफ़ेद बर्राक़ नूरानी ज़मीन है, सूरज का वहां तक चालीस दिनों का सफ़र है, वहां अल्लाह तआला ने एक मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई है, वोह जब से पैदा हुवे हैं उन्हों ने एक लम्ह़ा भी अल्लाह तआला की ना फ़रमानी नहीं की, लोगों ने पूछा : हुज़ूर ! उन में शैतान का गुज़र नहीं है?

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया। (پ٤، اٰل عمران:١٩١)

2......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب التفكر، ٢/ ٤٧، الجزء الثالث، الحديث ٥٧٠٣ ماخوذاً

आप ने फ़रमाया : उन्हें शैतान की पैदाइश का इल्म ही नहीं, पूछा गया : वोह आदम عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं ? आप ने फ़रमाया : उन्हें तो आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश का भी इल्म नहीं है।[1]

हज़रते अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक दिन मैं और उ़बैद बिन उ़मैर हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़िदमत में हाज़िर हुवे, आप के और हमारे दरमियान पर्दा पड़ा हुवा था, उन्हों ने पूछा : उ़बैद ! तुम हमारी मुलाक़ात को क्यूं नहीं आते ? उ़बैद ने कहा : मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान की वज्ह से देर से हाज़िर होता हूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है زُرْغِبًّا تَزْدَدْ حُبًّا ताख़ीर से मुलाक़ात करो, महब्बत बढ़ेगी । इब्ने उ़मैर बोले : आप हमें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाहदा की हुई मुन्फ़रिद बातों से कोई मुन्फ़रिद बात बतलाएं । हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रो पड़ीं और फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर बात मुन्फ़रिद थी ।

एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को मेरे हां तशरीफ़ लाए और मेरे साथ आराम फ़रमा हुवे, थोड़ी देर के बा'द फ़रमाया कि मुझे इजाज़त दो ताकि मैं **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करूं । चुनान्चे, आप एक मश्कीज़े की त़रफ़ गए, वुज़ू फ़रमाया और नमाज़ में खड़े हो गए । नमाज़ शुरूअ़ करते ही आप ने रोना शुरूअ़ किया यहां तक कि आप की मुबारक दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई, फिर सजदा किया यहां तक कि रोते रोते ज़मीन गीली हो गई, सलाम के बा'द आप पहलू के बल लैट गए ता आंकि हज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सुब्ह़ की अज़ान दे दी और आप को नमाज़ के लिये बुलाया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप किस लिये रोते हैं ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने आप के सबब आप के अगलों और पिछलों की ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमाईं । आप ने फ़रमाया : अफ़्सोस ! बिलाल तुम मुझे रोने से रोकते हो ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने आज की रात मुझ पर येह आयत नाज़िल फ़रमाई है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾[2]

बेशक ज़मीनो आस्मान की पैदाइश और रात दिन के इख़्तिलाफ़ में अ़क़्लमन्दों के लिये निशानियां हैं।

फिर इरशाद फ़रमाया : उस शख़्स पर अफ़्सोस है ! जिस ने येह आयत पढ़ी और इस में ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया ।[3]

---

1 ......العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، ٤/١٤٤٢

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्लमन्दों के लिये । (پ٤،اٰل عمران:١٩٠)

3 ......ابن حبان ، کتاب الرقائق ، باب التوبة ، ٢/٨، الحدیث ٦١٩

इमाम औज़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया कि इन आयात में ग़ौरो फ़िक्र करने से क्या मुराद है ? तो उन्हों ने जवाब दिया : इन आयात को पढ़ो और फिर इन्हें समझने की कोशिश करो।

मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि बसरा का एक शख़्स हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द उन की ज़ौजए मोहतरमा की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और उन से हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इबादत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उन की ज़ौजा ने जवाब दिया कि वोह सारा दिन घर के कौने में बैठे ग़ौरो फ़िक्र किया करते थे।

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि एक लम्हे का ग़ौरो फ़िक्र रात भर की इबादत से बेहतर है, हज़रते फ़ुज़ैल का क़ौल है कि ग़ौरो फ़िक्र एक आईना है जो तुझे तेरी नेकियां और बुराइयां दिखाता है।

हज़रते इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा गया कि आप बहुत ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करते हैं, उन्हों ने कहा कि ग़ौरो फ़िक्र अ़क़्ल का मग़्ज़ है।

हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शाइर के इस शे'र को अक्सर बतौरे तमसील पेश किया करते थे :

اذا المرء كانت له فكرة　　　ففی كل شیء له عبرة

......जब आदमी में ग़ौरो फ़िक्र करने का माद्दा हो तो उसे हर चीज़ में इब्रतें नज़र आती हैं।

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का हवारियों को जवाब

हज़रते ताऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हवारियों ने हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام से कहा कि आज रूए ज़मीन पर आप जैसा कोई और भी है ? आप ने फ़रमाया : जिस का बोलना ज़िक्रे इलाही में हो, जिस की ख़ामोशी ग़ौरो फ़िक्र में और जिस की निगाह, निगाहे इब्रत हो, वोह मुझ जैसा है।

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि जिस शख़्स की गुफ़्तगू हकीमाना नहीं वोह लग़्व है, जिस की ख़ामोशी ग़ौरो फ़िक्र की ख़ामोशी नहीं है वोह भूल है और जिस की निगाह, निगाहे इब्रत नहीं वोह बेहूदा है। फ़रमाने इलाही है :

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ (1)

अलबत्ता मैं अपनी निशानियों से ज़मीन पर नाहक़ तकब्बुर करने वालों को फेर दूंगा।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ۹،الاعراف:۱۴۶)

हज़रते हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि इस आयत के मा'ना येह हैं कि मैं उन के दिलों में ग़ौरो फ़िक्र करने की सलाहिय्यत ही नहीं रहने दूंगा।

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपनी आंखों को इबादत का हिस्सा दो, अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर ! इन का इबादत से क्या हिस्सा है ? आप ने इरशाद फ़रमाया : क़ुरआने मजीद को देखना, उस में ग़ौरो फ़िक्र करना और उस के अ़जाइबात में सबक़ हासिल करने वाली निगाह से ग़ौरो ख़ौज़ करना।(1)

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के क़रीब जंगल में रहने वाली औ़रत से मरवी है उस ने कहा : अगर नेकों के दिल ग़ौरो फ़िक्र में डूब कर ग़ैब के पर्दों में पोशीदा उन इन्आ़मात को देख लें जिन को अल्लाह तआ़ला ने उन के लिये तय्यार किया है तो उन की दुन्यावी ज़िन्दगी उन पर भारी हो जाए और दुन्या उन की नज़रों में बिल्कुल हक़ीर हो जाए।

हज़रते लुक़्मान तन्हाई में बैठ कर बहुत देर तक ग़ौरो फ़िक्र में डूबे रहते, उन का ख़ादिम वहां से गुज़रता और कहता कि आप हमेशा तन्हा बैठे रहते हैं, अगर लोगों के साथ बैठा करें तो आप उन से उल्फ़त हासिल करें, आप जवाब में फ़रमाते कि तवील तन्हाई दाइमी ग़ौरो फ़िक्र अ़ता करती है और तवील तफ़क्कुर जन्नत का रास्ता है।

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि जिस शख़्स का ग़ौरो फ़िक्र बढ़ जाता है उसे इल्म अ़ता होता है और जिसे इल्म अ़ता होता है वोह अ़मल करता है।

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करना सब से अफ़्ज़ल इबादत है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक दिन सह्ल बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़ामोश और मुतफ़क्किर देख कर पूछा : कहां तक पहुंचे हो ? वोह बोले कि पुल सिरात़ के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र कर रहा हूं।

हज़रते बिश्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि अगर लोग अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र करें तो कभी भी अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी न करें।

---

(1) شعب الایمان ، التاسع عشر من شعب الإیمان، باب فی تعظیم القرآن، ٢/٤٠٨، الحدیث ٢٢٢٢

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है कि ऐसी दो रक्अ़तें जो हुज़ूरे क़ल्ब और इन्तिहाई ग़ौरो फ़िक्र से पढ़ी जाएं वोह सारी रात की बे हुज़ूरे क़ल्ब इबादत से अफ़्ज़ल हैं।

हज़रते अबू शुरैह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चले जा रहे थे कि अचानक चादर लपेट कर बैठ गए और रोना शुरूअ़ कर दिया, रोने का सबब दरयाफ़्त किया गया तो इन्हों ने कहा : मैं अपनी गुज़श्ता उ़म्र, क़लील नेकियों और मौत के जल्द आने पर ग़ौर कर के रो रहा हूं।

अबू सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : आंखों को रोने का और दिलों को ग़ौरो फ़िक्र करने का आ़दी बनाओ, मज़ीद फ़रमाया : दुन्या के बारे में ग़ौरो फ़िक्र आख़िरत के लिये एक पर्दा है और नेकों के लिये अ़ज़ाब है लेकिन आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र इ़ल्म का वारिस बनाता है और दिलों को ज़िन्दा करता है।

हज़रते हा़तिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि इ़ब्रत हा़सिल करने से इ़ल्म बढ़ता है, ज़िक्र से महब्बत बढ़ती है और ग़ौरो फ़िक्र से ख़ौफ़े खुदा बढ़ता है।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है कि नेकियों में ग़ौरो फ़िक्र नेकियों की तरग़ीब देता है और गुनाहों पर पशेमानी गुनाह छोड़ने पर आमादा करती है।

रिवायत है, **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी बा'ज़ किताबों में फ़रमाया है कि मैं हर आ़लिम व दानिशमन्द का, कलाम नहीं उस की निय्यत और महब्बत देखता हूं, अगर उस की निय्यत व महब्बत मेरे लिये होती है तो मैं उस की ख़ामोशी को ग़ौरो फ़िक्र की ख़ामोशी, उस की गुफ़्तगू को हम्द क़रार देता हूं, अगर्चे वोह ख़ामोश बैठा हुवा हो।

हज़रते ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि अ़क़्लमन्द हमेशा ज़िक्र से फ़िक्र की जानिब और ग़ौरो फ़िक्र से ज़िक्रे खुदा की जानिब रुजूअ़ होते हैं यहां तक कि उन के दिल बोलते हैं और इ़ल्मो हिक्मत की बातें करते हैं।

इस्हा़क़ बिन ख़लफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि हज़रते दावूद ता़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक चांदनी रात में छत पर बैठे **अल्लाह** तआ़ला के अ़जाइबाते अर्ज़ो समा में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे थे और वोह आस्मान की त़रफ़ देख कर रो रहे थे यहां तक कि बे खुदी की हा़लत में हमसाए के घर में गिर पड़े, मकान का मालिक अपने बिस्तर से बरह्ना तल्वार ले कर झपटा, वोह समझा

शायद कोई चोर आ गया है लेकिन जब उस ने आप को देखा तो तल्वार नियाम में कर के पूछा : आप को किसी ने छत से धक्का दिया है ? आप ने फ़रमाया : मुझे मा'लूम नहीं ।

हज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि बेहतरीन और उम्दा मजलिस, मजलिसे ग़ौरो फ़िक्र है जो तौहीद के मैदान में अन्जाम दी जाए और महब्बत के समन्दर से महब्बत के जाम पीना बेहतरीन शराब और मा'रिफ़त की मुअत्तर हवाओं से लुत्फ़ अन्दोज़ होना सब हवाओं से बेहतर है और **अल्लाह** तआला से अज्रे हसन की उम्मीद रखना उम्दगी में बे मिसाल है ।

फिर फ़रमाया : वोह दिल कैसा बेहतरीन है जो इन मजालिस का शनासा है और उसे खुश ख़बरी हो जो महब्बत के उन लज़ीज़ तरीन जामों से काम व दहन की तवाज़ोअ करता है ।

इमामे शाफ़ेई رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि गुफ़्तगू पर ख़ामोशी से और हुसूले इल्म के लिये ग़ौरो फ़िक्र करने से इमदाद तलब करो ।

मज़ीद फ़रमाया : कामों के बारे में अच्छी तरह सोच समझ लेना धोके से बचाता है और उम्दा राए शर्मिन्दगी और हद से ज़ियादा बढ़ जाने से बचा लेती है, कामों में तफ़क्कुर और ग़ौरो खौज़ होशयारी पैदा करता है, दानाओं के मश्वरे और ज़हानते नफ़्स की पाएदारी और बसीरत की कुव्वत हैं लिहाज़ा इरादा करने से पहले सोच, काम करने से पहले ग़ौरो फ़िक्र कर और क़ब्ल अज़ वक़्त मश्वरा हासिल कर ।

मज़ीद फ़रमाया कि फ़ज़ाइल चार हैं :

- ...."हिक्मत"................जिस का दारो मदार ग़ौरो फ़िक्र पर हो,
- ......"पाकबाज़ी".............जिस का दारो मदार शहवत से इजतिनाब है,
- ...."कुव्वत"................जिस का दारो मदार गुस्से पर है,
- ...."अद्ल"..................जिस का दारो मदार क़ुवाए नफ़्सानी के ए'तिदाल पर है

बाब 44

शदाइदे मर्ग

हज़रते हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत और इस के दुख दर्द का तज़्किरा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि येह दुख दर्द तल्वार से लगने वाली तीन सो चोटों के बराबर होता है।(1)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मौत की शिद्दत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि आसान तरीन मौत ऊन में कांटेदार टहनी की त़रह़ है, उसे जब खींचा जाएगा तो उस के साथ ज़रूर कुछ न कुछ ऊन भी खींची चली आएगी।(2)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरीज़ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : मैं जानता हूं कि वोह किस ह़ाल में है और पसीना उसे किस लिये आ रहा है ? दर्दो अलम मौत की शिद्दत व ह़िद्दत की वज्ह से है।(3)

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को जिहाद पर उभारते और फ़रमाते कि अगर तुम जिहाद में शुमूलिय्यत इख़्तियार न करोगे तब भी मरना ज़रूर है, ब ख़ुदा ! मुझे तल्वारों के एक हज़ार वार बिस्तर पर मरने से ज़ियादा आसान नज़र आते हैं।

इमाम औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है : हमारे इ़ल्म में येह बात आई है कि मुर्दा क़ब्र से उठने के वक़्त तक मौत की तल्ख़ी मह़सूस करता रहेगा।

बा'ज़ शदाइदे मर्ग की तफ़्सील

हज़रते शद्दाद बिन औस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि मौत मोमिन के लिये दुन्या और आख़िरत के ख़ौफ़ों में सब से ज़ियादा हौसला शिकन ख़ौफ़ है, वोह आरियों से चिर जाने, क़ैंचियों से आ'ज़ा काट दिये जाने और देगों में उबलने से भी ज़ियादा सख़्त है, अगर कोई मुर्दा ज़िन्दा हो कर दुन्या वालों को मौत की तल्ख़ी की ख़बर दे दे तो वोह ज़िन्दगी के लुत्फ़ को भूल जाएं और कभी आराम की नींद न सोएं।

---

1 ......الزهد لابن مبارك، باب فى طلب الحلال، ص۲۱۹، الحديث ۶۲۰

2 ......كنزالعمال، كتاب الموت، الفصل الاول ، ۲۳۹/۸ ، الجزء الخامس عشر، الحديث ۴۲۱۶۷

3 ......المعجم الكبير، ۲۶۹/۶ ، الحديث ۶۱۸۵ ملتقطا

ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने बाप से रिवायत करते हैं कि जब मोमिन किसी अपने अ़मल की वज्ह से किसी दरजे को नहीं पा सकता तो मौत के वक़्त उसे सकरात और उस के दुख से वासित़ा पड़ता है ताकि वोह इस त़रह़ जन्नत के उस आख़िरी दरजे को भी ह़ासिल करे जिसे वोह आ'माल से ह़ासिल नहीं कर सका, अगर किसी काफ़िर के कुछ अच्छे आ'माल होते हैं और दुन्या में उसे इस का बदला ह़ासिल नहीं हो सका है तो उस पर मौत की शिद्दत को हल्का कर दिया जाता है ताकि वोह उन अच्छे कामों का बदला पा ले और मरने के बा'द सीधा जहन्नम में जाए।

एक साह़िब अक्सर मरीज़ों से मौत की शिद्दत के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू किया करते थे, जब वोह ख़ुद मरज़ुल मौत में मुब्तला हुवे तो लोगों ने उन से मौत की शिद्दत के बारे में सुवाल किया, वोह कहने लगा : ऐसा मह़सूस होता है जैसे आस्मान ज़मीन मिल गए हैं और मेरी रूह़ सूई के नाके से निकल रही है।

फ़रमाने नबवी है कि मर्गे मुफ़ाजात मोमिन के लिये राह़त और गुनहगार के लिये बाइ़से ज़ह़मत है।[1]

ह़ज़रते मक्हूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है : हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर मय्यित के बालों में से एक बाल ज़मीनो आस्मान में रहने वालों पर रख दिया जाए तो सब **अल्लाह** तआ़ला के इज़्न से मर जाएं क्यूंकि मय्यित के हर एक बाल में मौत होती है और मौत जब किसी चीज़ पर त़ारी होती है तो वोह चीज़ फ़ना हो जाती है।[2]

मरवी है कि अगर मौत के दर्द का एक क़त़रा दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सब पहाड़ पिघल जाएं।

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मौत बहुत आसान कर दी जाती है

मरवी है कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिक़ाल हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मेरे ख़लील ! तुम ने मौत को कैसा पाया ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जैसे सीख़ को गीली ऊन में डाल कर खींचा जाए, रब तआ़ला ने फ़रमाया : "हम ने तुम्हारे लिये मौत को बहुत आसान कर दिया है। (तू ने तब भी इस की येह शिद्दत मह़सूस की है)।

---

1 ......مسند احمد ، مسند السيدة عائشه رضى اللّٰه عنها، ٤٦٢/٩، الحديث ٢٥٠٩٦

2 ......بستان الواعظين ورياض السامعين لابن جوزى، ص١٣٢ و طبقات الشافية الكبرى، ٣٨٢/٦ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية، ٢٦٤/١ والتذكرة للقرطبى، باب ما جاء ان للموت سكرات...الخ، ص٢٥

मरवी है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की रूह बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में ह़ाज़िर हुई तो रब्बे जलील ने फ़रमाया : मूसा ! तुम ने मौत को कैसा पाया ? हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : जैसे चिड़या जाल में फंस जाती है और वोह मरती नहीं बल्कि आसाइश त़लब करती है और न रिहाई पाती है कि उड़ जाए (येही ह़ाल दमे नज़्अ़ इन्सान का होता है)।

येह भी मरवी है कि इन्हों ने कहा : मैं ने ऐसा दर्द महसूस किया जैसे ज़िन्दा बकरी की क़स्साब खाल उतार रहा हो।

मरवी है कि मौत के वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब पानी का प्याला रखा था, आप उस में दस्ते अत़हर डुबो कर पेशानी पर मलते और फ़रमाते : ऐ अल्लाह ! मुझ पर मौत की सख़्तियों को आसान फ़रमा और हज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا खड़ी रो रही थीं, हाए मेरे अब्बा की तक्लीफ़ ! और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि तेरे बाप पर आज के बा'द कोई दुख वारिद नहीं होगा।(1)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा : हमें मौत की शिद्दत के मुतअ़ल्लिक़ बताओ, हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : अमीरुल मोमिनीन ! मौत ऐसी टहनी की त़रह़ है जिस में बहुत ज़ियादा कांटे हों और वोह इन्सान के जिस्म में दाख़िल हो गई हो और उस के हर हर कांटे ने हर रग में जगह पकड़ ली हो फिर उसे एक आदमी इन्तिहाई सख़्ती से खींचे, तो कुछ बाहर आ जाए और बाक़ी जिस्म में बाक़ी रह जाए।

फ़रमाने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि बन्दा मौत की सख़्तियों को बीमारी समझ कर उन का इ़लाज करता है मगर उस के जिस्म के आ'ज़ा एक दूसरे से वदाअ़ होते हैं और कहते हैं कि तुझ पर सलाम हो, अब हम क़ियामत तक के लिये एक दूसरे से जुदा हो रहे हैं।(2)

"मज़्कूरए बाला अह़वाल" उन मुक़द्दस हस्तियों के थे जो अल्लाह तआ़ला के दोस्त और मह़बूब हैं, हम जो गुनाहों से आलूदा हैं, हमारी क्या ह़ालत होगी ! हमारे लिये तो मौत की सख़्तियों के इ़लावा और भी आफ़तें होंगी।

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فى ذكر مرض...الخ، ٢/٢٨٢، الحديث ١٦٢٣ ملخصا و بخارى، كتاب المغازى ، باب مرض النبى صلى الله تعالٰى عليه وسلم...الخ، ٣/١٦٠، الحديث ٤٤٦٢

2 ......كنز العمال، كتاب المزارعة من قسم الأفعال، الباب الثانى فى أمور قبل الدفن، الفصل الأول فى المحتضر...الخ، ٨/٢٣٩، الجزء الخامس عشر، الحديث ٤٢١٧٦ و رساله قشيريه ، باب احوالهم عند الخروج من الدنيا، ص ٣٣٤

मौत की तीन मुसीबतें होती हैं :

۞......पहली : नज़्अ की तक्लीफ़, जो अभी मज़्कूर हो चुकी है।

۞......दूसरे : इज़्राईल की सूरत का मुशाहदा और उसे देख कर दिल में इन्तिहाई ख़ौफ़ो दहशत का पैदा होना, अगर बे पनाह हिम्मत वाला आदमी भी मलकुल मौत की उस सूरत को देख ले जो वोह फ़ासिक़ो फ़ाजिर की मौत के वक़्त ले कर आते हैं तो उसे ताबे तहम्मुल न रहे।(1)

मरवी है कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने मलकुल मौत से कहा : क्या तुम मुझे अपनी वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में तुम गुनहगारों की रूह क़ब्ज़ करने को जाते हो ? मलकुल मौत बोले : आप में देखने की ताब नहीं है। आप ने फ़रमाया : मैं देख लूंगा चुनान्चे, मलकुल मौत ने कहा : थौड़ी सी देर दूसरी तरफ़ तवज्जोह कीजिये।

जब आप ने कुछ देर के बा'द देखा तो एक काला सियाह आदमी जिस के रौंगटे खड़े हुवे थे, बदबू के भभके उठ रहे थे, सियाह कपड़े पहने हुवे और उस के मुंह और नथनों से आग के शो'ले निकल रहे थे और धुवां उठ रहा था, सामने नज़र आया, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام येह मन्ज़र देख कर बेहोश हो गए, जब आप को होश आया तो देखा कि मलकुल मौत साबिक़ा शक्ल में बैठे हुवे थे। आप ने फ़रमाया : अगर फ़ासिक़ो फ़ाजिर के लिये मौत की और कोई सख़्ती न हो तब भी सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही उन के लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام इन्तिहाई ग़ैरत मन्द जवान थे, जब आप बाहर तशरीफ़ ले जाते तो दरवाज़े बन्द कर जाते, एक दिन आप घर के दरवाज़े बन्द कर के बाहर तशरीफ़ ले गए। आप की ज़ौजए मोहतरमा ने देखा कि सेहन में एक आदमी खड़ा हुवा था, वोह बोलीं न जाने इस को किस ने घर में दाख़िल होने दिया है ? अगर दावूद عَلَيْهِ السَّلَام आ गए तो ज़रूर उन्हें दुख पहुंचेगा। फिर हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और उसे खड़ा देख कर पूछा : कौन हो ? उस ने कहा : मैं वोह हूं जो बादशाहों से भी नहीं डरता, न कोई पर्दा मेरी राह में हाइल होता है। हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ख़ामोश खड़े के खड़े रह गए और फ़रमाया : तब तो तुम मलकुल मौत हो।(2)

1.....मौत की तीसरी मुसीबत का बयान आगे सफ़हा नम्बर 337 पर है। **इल्मिय्या**

2......مسند احمد، مسند ابی هريرة، ٣/٤٠٠ ، الحديث ٩٤٣٢

एक कासए सर से हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की गुफ़्तगू

मरवी है कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक इन्सानी खोपड़ी के क़रीब से गुज़र हुवा, आप ने उसे पाउं से ठोंक दिया और फ़रमाया : ब हुक्मे ख़ुदा मुझ से बात कर, खोपड़ी बोली : ऐ रूहल्लाह ! मैं फ़ुलां फ़ुलां ज़माने का बादशाह था, एक मरतबा मैं अपने मुल्क में ताज सर पर रखे, लश्कर के घेरे में तख़्त पर बैठा हुवा था, अचानक मलकुल मौत मेरे सामने आ गया जिसे देख कर मेरा हर उ़ज़्व मुअ़त्तल हो गया और मेरी रूह़ परवाज़ कर गई। पस उस इजतिमाअ़ में क्या रखा था, जुदाई तो सामने खड़ी थी और उस उन्स व मह़ब्बत में क्या था, वह़शत ही वह़शत और तन्हाई ही तन्हाई थी, येह धोका है जो ना फ़रमानों ने डाल दिया जो इत़ाअ़त मन्दों के लिये नसीह़त है।

येह वोह आफ़त है जिसे हर गुनहगार और फ़रमां बरदार देखता है। अम्बियाए किराम ने मौत के वक़्त सिर्फ़ नज़्अ़ की सख़्ती को बयान फ़रमाया है, उस ख़ौफ़ व दहशत का तज़्किरा नहीं किया जो मलकुल मौत की सूरत देखने वाले इन्सान पर त़ारी होता है। अगर मलकुल मौत की सूरत को कोई रात को ख़्वाब में देख ले तो उसे बक़िय्या ज़िन्दगी बसर करना अजीरन हो जाए, चे जाए कि उसे मौत की सख़्ती के वक़्त ऐसी हैबतनाक शक्ल में देखे।

अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार और नेक लोग मलकुल मौत को इन्तिहाई ह़सीनो जमील शक्ल में देखते हैं चुनान्चे, हज़रते इकरमा हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) से रिवायत करते हैं कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ग़ैरत मन्द इन्सान थे, आप का एक इबादत ख़ाना था, जब आप बाहर जाते उसे बन्द कर जाते। एक दिन बाहर से तशरीफ़ लाए तो देखा कि इबादत ख़ाने में एक आदमी खड़ा है। आप ने पूछा : तुझे किस ने मेरे घर में दाख़िल किया है ? वोह बोला : इस के मालिक ने। आप ने फ़रमाया : "इस का मालिक तो मैं हूं।" उस ने कहा : मुझे उस ने दाख़िल किया है जो इस मकान का आप से और मुझ से ज़ियादा मालिक है। आप ने पूछा : क्या तुम फ़िरिश्तों में से हो ? वोह बोला : हां ! मैं मलकुल मौत हूं। आप ने फ़रमाया : क्या तुम मुझे अपनी वोह सूरत दिखला सकते हो जिस शक्ल में तुम मोमिनों की रूह़ को क़ब्ज़ करते हो ? मलकुल मौत ने कहा : हां ! आप ज़रा दूसरी त़रफ़ तवज्जोह कीजिये।

चन्द लम्ह़े दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह होने के बा'द आप ने दोबारा उस की त़रफ़ देखा तो उन्हें एक ह़सीनो जमील जवान नज़र आया जिस के चेहरे पर नूर बरस रहा था, लिबास इन्तिहाई

पाकीज़ा पहने और उस से खुश्बू की लपटें उठ रही थीं। आप ने येह मन्ज़र देख कर फ़रमाया : ऐ इज़्राईल ! अगर मोमिन को मौत के वक़्त और कोई इन्आ़म न मिले, सिर्फ़ तुम्हारी सूरत ही देखने को मिल जाए तो येही काफ़ी है और बड़ा इन्आ़म है।

मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों का मुशाहदा

मौत के वक़्त एक मुसीबत मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों का मुशाहदा है। ह़ज़रते वुहैब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हमें येह ख़बर मिली है कि जब भी कोई आदमी मरता है तो वोह मरने से पहले "नामए आ'माल" लिखने वाले फ़िरिश्तों का मुशाहदा करता है, अगर वोह आदमी नेक होता है तो वोह कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर दे, तू ने हमें बहुत सी बेहतरीन मजालिस में बिठलाया और बहुत ही नेक काम लिखने को दिये।

और अगर मरने वाला गुनहगार होता है तो वोह कहते हैं कि **अल्लाह** तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर न दे, तू ने बहुत ही बुरी मजालिस में हमें बिठलाया और गुनाहों और फ़ोह़्श कलाम सुनने पर मजबूर किया, **अल्लाह** तुझे बेहतर जज़ा न दे। उस वक़्त इन्सान की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं और वोह किसी चीज़ को नहीं देख पाता सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के फ़िरिश्तों के।

۞.....तीसरी आफ़त गुनहगारों का जहन्नम में अपने ठिकाने को देखना और वहां जाने से पहले ही इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा हो जाना है, उस वक़्त वोह नज़्अ़ के आ़लम में होता है, उस के आ'ज़ाए बदन ढीले पड़ जाते हैं और उस की रूह़ निकलने को तय्यार होती है। मगर वोह मलकुल मौत की आवाज़ के (जो दो बिशारतों में से एक पर मुश्तमिल होती है) बिग़ैर नहीं निकल सकती, या तो येह कि ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तुझे जहन्नम की बिशारत हो, या फिर येह कि ऐ **अल्लाह** के दोस्त ! तुझे जन्नत की बिशारत हो, इसी लिये अ़क़्लमन्द मौत के वक़्त से बहुत ख़ौफ़ज़दा रहते हैं।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि तुम में से कोई शख़्स भी उस वक़्त तक दुन्या से नहीं निकलता जब तक कि अपना ठिकाना, ख़्वाह वोह जन्नत में हो या जहन्नम में हो, देख न ले।[1]

۞...۞...۞...۞...۞

1 ......كتاب ذكر الموت لابن أبي الدنيا، ٥/٤٩٤، الحديث ٣٠٣

बाब 45

हालात व सुवालाते क़ब्र

फ़रमाने नबवी है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है : ऐ इन्सान ! तुझ पर अफ़्सोस है तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला था ? क्या तुझे मा'लूम नहीं था कि मैं आज़्माइशों, तारीकियों, तन्हाई और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, जब तू मुझ पर से आगे पीछे क़दम रखता गुज़रा करता था तो तुझे कौन सा ग़ुरूर घेरे होता था ? अगर मय्यित नेक होती है तो उस की तरफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है क्या तुझे मा'लूम नहीं है येह शख़्स नेकियों का हुक्म देता और बुराइयों से रोका करता था। क़ब्र कहती है : तब तो मैं इस के लिये सब्ज़े में तब्दील हो जाऊंगी, उस का जिस्म नूरानी बन जाएगा और उस की रूह अल्लाह तआला के क़ुर्बे रहमत में जाएगी।(1)

मदफ़न की निदा

उबैद बिन उमैर अल्लैसी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से मरवी है कि जब कोई शख़्स मरता है तो ज़मीन का वोह टुकड़ा जिस में उस ने दफ़्न होना होता है, निदा करता है कि मैं तारीकी और तन्हाई का घर हूं, अगर तू अपनी ज़िन्दगी में नेक अमल करता रहा तो मैं आज तुझ पर सरापा रहमत बन जाऊंगा और अगर तू ना फ़रमान था तो मैं आज तेरे लिये सज़ा बन जाऊंगा। मैं वोह हूं कि जो मुझ में हक़ का फ़रमां बरदार बन कर आता है वोह ख़ुश हो कर बाहर निकलता है और जो ना फ़रमान बन कर आता है वोह ज़लील हो कर बाहर निकलता है।

हज़रते मुहम्मद बिन सबीह رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ कहते हैं कि मुझ तक येह रिवायत पहुंची है कि जब आदमी को क़ब्र में रखा जाता है और उसे अज़ाब दिया जाता है तो उस के क़रीबी मुर्दे कहते हैं : ऐ अपने भाइयों और हमसाइयों के बा'द दुन्या में रहने वाले ! क्या तू ने हमारे जाने से कोई नसीहत हासिल न की ? और तेरे सामने हमारा मर कर क़ब्रों में दफ़्न हो जाना कोई क़ाबिले ग़ौर बात न थी ? तू ने हमारी मौत से हमारे आ'माल ख़त्म होते देखे ! लेकिन तू ज़िन्दा रहा और तुझे अमल करने की मोहलत दी गई, मगर तू ने इस मोहलत को ग़नीमत न जाना और नेक आ'माल न किये और उस से ज़मीन का वोह टुकड़ा कहता है : ऐ दुन्या की ज़ाहिरी पर इतराने वाले ! तू ने अपने

(1)......المعجم الكبير، ٢٢/٣٧٧، الحديث ٩٤٢

उन रिश्तेदारों से इब्रत क्यूं न हासिल की जो दुन्यावी ने'मतों पर इतराया करते थे मगर वोह तेरे सामने मेरे पेट में गुम हो गए, उन की मौत उन्हें क़ब्रों में ले आई और तू ने उन्हें कन्धों पर सुवार उस मन्ज़िल की त़रफ़ आते देखा कि जिस से कोई राहे फ़िरार नहीं है।

आ'माल भी मय्यित से सुवाल करते हैं

यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है कि मुझे येह रिवायत मिली है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के आ'माल जम्अ़ हो जाते हैं, फिर **अल्लाह** तआ़ला उन्हें कुव्वते गोयाई देता है और वोह कहते हैं : ऐ क़ब्र के तन्हा इन्सान ! तेरे सब दोस्त और अ़ज़ीज़ तुझ से जुदा हो गए हैं, आज हमारे सिवा तेरा और कोई साथी न होगा।

ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब नेक आदमी को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के आ'माले सालिह़ा, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, जिहाद और सदक़ा वग़ैरा उस के पास जम्अ़ हो जाते हैं, जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के पैरों की त़रफ़ से आते हैं तो नमाज़ कहती है : इस से दूर रहो, तुम्हारा यहां कोई काम नहीं, येह इन पैरों पर खड़ा हो कर **अल्लाह** तआ़ला की लम्बी लम्बी इ़बादत करता था।

फिर वोह फ़िरिश्ते सर की त़रफ़ से आते हैं तो रोज़ा कहता है : तुम्हारे लिये इस त़रफ़ कोई राह नहीं है क्यूंकि दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिये इस ने बहुत रोज़े रखे और त़वील भूक प्यास बरदाश्त की, फ़िरिश्ते उस के जिस्म के दूसरे ह़िस्सों की त़रफ़ से आते हैं तो ह़ज और जिहाद कहते हैं कि हट जाओ ! इस ने अपने जिस्म को दुख में डाल कर **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये ह़ज और जिहाद किया था लिहाज़ा तुम्हारे लिये यहां कोई जगह नहीं है।

फिर वोह हाथों की त़रफ़ से आते हैं तो सदक़ा कहता है : मेरे दोस्त से हट जाओ ! इन हाथों से कितने सदक़ात निकले हैं जो मह़ज़ ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये दिये गए और इन हाथों से निकल कर वोह बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत के दरजे पर फ़ाइज़ हुवे लिहाज़ा यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है। फिर उस मय्यित को कहा जाता है कि तेरी ज़िन्दगी और मौत दोनों बेहतरीन हैं और रह़मत के फ़िरिश्ते उस की क़ब्र में जन्नत का फ़र्श बिछाते हैं, उस के लिये जन्नती लिबास लाते हैं, ह़द्दे निगाह तक उस की क़ब्र को फ़राख़ कर दिया जाता है और जन्नत की एक क़िन्दील उस की क़ब्र में रोशन कर दी जाती है जिस से वोह क़ियामत के दिन तक रोशनी ह़ासिल करता रहेगा।

हज़रते उ़बैद बिन उ़मैर ने एक जनाज़े के जुलूस में कहा : मुझे येह रिवायत पहुंची है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मय्यित को क़ब्र में बिठाया जाता है, दर-आं-ह़ाल येह कि[1] वोह चलने वालों के क़दमों की चाप को सुन रहा होता है तो उस के साथ क़ब्र गुफ़्तगू करती है और कहती है कि ऐ इन्सान ! तुझ पर अफ़्सोस है क्या तुझे मुझ से, मेरी तंगी से, बदबू से, हैबत और कीड़ों से नहीं डराया गया था ! अब तू मेरे लिये क्या तय्यारी कर के लाया है ?[2]

मोमिन की वफ़ात पर फ़िरिश्तों की आमद

हज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक अन्सारी जवान के जनाज़े में गए, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की क़ब्र पर सर झुका कर बैठ गए, फिर तीन मरतबा :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगता हूं।

कह कर फ़रमाया कि जब मोमिन की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की त़रफ़ ऐसे फ़िरिश्ते भेजता है जिन के चेहरे सूरज की त़रह़ रोशन होते हैं, वोह उस के लिये ख़ुश्बूएं और कफ़न साथ लाते हैं और ह़द्दे नज़र तक बैठ जाते हैं, जब उस मोमिन की रूह़ परवाज़ करती है तो आस्मानो ज़मीन के दरमियान रहने वाले तमाम फ़िरिश्ते उस के दरजात की बुलन्दी की दुआ़ करते हैं, उस के लिये आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आस्मान के हर दरवाज़े की ख़्वाहिश होती है कि येह रूह़ मेरे यहां से दाख़िल हो, जब उस की रूह़ ऊपर को जाती है तो कहा जाता है : ऐ **अल्लाह** ! तेरा फ़ुलां बन्दा आ गया है। रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

इसे ले जाओ और इसे वोह इन्आ़मात दिखलाओ जो मैं ने इस के लिये तय्यार किये हैं क्यूंकि मैं ने वा'दा किया है कि "इन्हें मिट्टी से मैं ने पैदा किया है और इसी में उन को लौटाऊंगा।"[3]

1....दर-आं-ह़ाल येह कि, या'नी उस ह़ाल में कि। **इल्मिय्या**

2....الزهد لابن المبارك ، زيادات الزهد برواية نعيم، باب ما يبشر به الميت...الخ، ص ٤١، الحديث ١٦٣

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। (پ١٦، طٰہٰ:٥٥)

मुर्दा क़ब्र में लोगों के जूतों की चाप को सुनता होता है, जब वोह उसे दफ़्न कर के वापस जा रहे होते हैं, तब उसे कहा जाता है कि ऐ इन्सान ! तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरा नबी कौन है ? वोह जवाब में कहता है : मेरा रब **अल्लाह**, मेरा दीन इस्लाम और मेरा नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है।

फिर फ़रमाया : क़ब्र में फ़िरिश्ते सख़्त सर ज़निश करते हैं और येह आख़िरी मुसीबत है जो मय्यित पर क़ब्र में नाज़िल होती है। जब वोह इन के सुवालात के जवाब से फ़ारिग़ हो जाता है तो मुनादी निदा करता है : तू ने सच कहा और येही फ़रमाने इलाही है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ (1)

***अल्लाह** तआ़ला मोमिनों को मुस्तह़्कम बात के साथ साबित क़दम रखता है।*

फिर उस के पास एक ह़सीनो जमील शख़्स आता है जिस के जिस्म से ख़ुश्बू की लपटें आती हैं और वोह इन्तिहाई दीदा ज़ेब लिबास ज़ैबे तन किये हुवे होता है, वोह आ कर कहता है कि तुझे रह़मते ख़ुदावन्दी और हमेशा रहने वाली ने'मतों की अमीन "जन्नत" की ख़ुश ख़बरी हो, मोमिन जवाब में कहता है : **अल्लाह** तुझे भलाई से सरफ़राज़ फ़रमाए, तू कौन है ? जवाब मिलता है : मैं तेरा नेक अ़मल हूं, तू नेकियों में बढ़ कर हिस्सा लेता था और बुराइयों से रुक जाता था इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने तुझे बेहतरीन जज़ा दी है।

फिर मुनादी निदा करता है कि इस मोमिन के लिये जन्नती फ़र्श बिछा दो और इस के लिये जन्नत की जानिब एक दरवाज़ा खोल दो, चुनान्चे, उस के लिये जन्नती फ़र्श बिछा दिया जाता है और जन्नत की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वोह दुआ़ मांगता है, ऐ **अल्लाह** ! क़ियामत को जल्दी क़ाइम फ़रमा ताकि मैं अपने अहलो इ़याल और माल से मुलाक़ात करूं।

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब काफ़िर का आख़िरी वक़्त क़रीब आता है और दुन्या से रुख़्सत हुवा चाहता है तो सख़्त बे रह़म फ़िरिश्ते आग और दोज़ख़ के तारकोल का लिबास लिये आते हैं और उसे इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं, जब उस की रूह़ निकलती है तो आस्मान और ज़मीन के दरमियान रहने वाले तमाम फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं, आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और हर दरवाज़ा येह चाहता है कि येह रूह़ इधर से न गुज़रे, जब उस की रूह़ ऊपर चढ़ती है तो उसे नीचे फेंक दिया जाता है और कहा जाता है : ऐ **अल्लाह** ! तेरा फ़ुलां बन्दा

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर। (پ۱۳، ابراھیم: ۲۷)

आया है जिसे ज़मीनो आस्मान ने क़बूल नहीं किया है, रब तआ़ला फ़रमाता है कि इसे वापस लौटाओ और इसे वोह अ़ज़ाब दिखलाओ जो मैं ने इस के लिये क़ब्र में तय्यार किया है क्यूंकि इन्सान से मेरा वा'दा है : "तुम्हें हम ने मिट्टी से पैदा किया और हम तुम्हें उसी में लौटाएंगे।"[1]

और वोह मुर्दा क़ब्र में दफ़्न कर के वापस जाने वालों के जूतों की चाप सुनता है तब उस से कहा जाता है : ऐ इन्सान ! तेरा रब कौन है ? तेरा नबी कौन है ? और तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता और उसे कहा जाता है : तू न जाने।

फिर उस के पास एक बद सूरत, बदबू दार और इन्तिहाई ग़लीज़ कपड़ों वाला आ कर कहता है : तुझे क़हरे खुदावन्दी और दाइमी दर्दनाक अ़ज़ाब की खुश ख़बरी हो, मुर्दा काफ़िर कहता है : अल्लाह तआ़ला तुझे बुरी ख़बर सुनाए तू कौन है ? वोह कहता है : मैं तेरे आ'माले बद हूं। ब खुदा तू बुराइयों में बहुत तेज़ी दिखाता था और नेकियों से ए'राज़ किया करता था लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने तुझे बुरी जज़ा दी। काफ़िर कहता है : अल्लाह तआ़ला तुझे भी जज़ा दे।

फिर उस के लिये एक गूंगा, अन्धा और बहरा फ़िरिश्ता मुक़र्रर किया जाता है, जिस के पास लोहे का हथोड़ा होता है जिसे अगर जिन्नो इन्सान मिल कर उठाना चाहें तो न उठा सकें, अगर वोह पहाड़ पर मारा जाए तो वोह मिट्टी हो जाए। वोह फ़िरिश्ता उस इन्सान को हथोड़ा मारता है जिस से वोह रेज़ा रेज़ा हो जाता है फिर वोह ज़िन्दा हो जाता है और फ़िरिश्ता उसे आंखों के दरमियान मारता है जिस की आवाज़ जिन्नो इन्सान के सिवा ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ सुनती है, फिर मुनादी निदा करता है : इस के लिये जहन्नम की दो तख़्तियां बिछाओ और इस के लिये जहन्नम की जानिब एक दरवाज़ा खोल दो ! लिहाज़ा उस के लिये जहन्नम के दो तख़्ते बिछा दिये जाते हैं और जहन्नम की तरफ़ दरवाज़ा खोल दिया जाता है।[2]

हज़रते मुहम्मद बिन अ़ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हर मरने वाले पर मौत के वक़्त उस के अच्छे और बुरे आ'माल पेश किये जाते हैं, वोह नेकियों की तरफ़ टिक-टिकी बांधे देखता है और गुनाहों के देखने से आंखें चुराता है।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन पर जब मौत का वक़्त क़रीब आता है तो फ़िरिश्ते रेशम के एक कपड़े में मुश्क और नाज़ बू

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। (پ١٦، طٰهٰ: ٥٥)

2......المستدرك للحاكم، كتاب الايمان، باب مجيء ملك الموت...الخ، ١/١٩٨، الحديث ١١٤

की टहनियां लाते हैं, उन जन्नती अश्या को देख कर मोमिन की रूह ऐसी आसानी से निकलती है जैसे आटे में से बाल निकलता है और कहा जाता है : ऐ नफ़्से मुत़मइन्ना ! अपने रब की त़रफ़ खुश और पसन्दीदा हो कर लौट जा, अल्लाह तआ़ला की तय्यार कर्दा आसाइशों और इ़ज़्ज़त की त़रफ़ जा और जब रूह़ निकल आती है तो उसे उस मुश्क और नाज़ बू में रख कर ऊपर रेशम लपेट कर जन्नत की त़रफ़ ले जाया जाता है।(1)

काफ़िर पर अ़ज़ाब

जब काफ़िर पर मौत का वक़्त क़रीब आता है तो फ़िरिश्ते एक टाट पर जहन्नम की चिंगारियां रख कर आते हैं जिस की वज्ह से उस की रूह़ शदीद अ़ज़ाब से खींची जाती है और कहा जाता है : ऐ नफ़्से ख़बीस ! मुसीबत ज़दा और मक़्हूर हो कर अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब और ज़िल्लतो रुस्वाई की त़रफ़ निकल जा, जब उस की रूह़ निकल आती है तो उसे उन अंगारों पर रखा जाता है जिस से वोह उबलने लगती है और उस पर टाट लपेट कर फिर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाता है।

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब कुरज़ी رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है : इन्हों ने येह फ़रमाने इलाही :

حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾ لَعَلِّیْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ (2)

यहां तक कि जब उन में से किसी एक पर मौत आए तो वोह कहता है ऐ मेरे रब मुझे वापस लौटा ताकि मैं नेक अ़मल करूं उस जगह जिसे मैं छोड़ आया हूं।

पढ़ कर कहा : येह सुन कर रब तआ़ला ने फ़रमाया : तू क्या चाहता है और तुझे किस चीज़ की ख़्वाहिश है ? क्या तू इस लिये जाना चाहता है ताकि माल जम्अ़ करे ? दरख़्त लगाए, इमारतें बनाए और नहरें खुदवाए ? वोह कहेगा नहीं बल्कि इस लिये कि मैं छोड़े हुवे नेक अ़मल कर लूंगा।

रब फ़रमाता है :

"तह़क़ीक़ येह बात है जिसे वोह कहने वाला है।"(3)

---

1 ......مسند البزار، ۱۷/۲۹، الحدیث ۹۵٤۱

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** यहां तक कि जब इन में किसी को मौत आए तो कहता है कि ऐ मेरे रब ! मुझे वापस फेर दीजिये शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं। (پ۱۸، المومنون: ۹۹،۱۰۰)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हश्त (हरगिज़ नहीं) येह तो एक बात है जो वोह अपने मुंह से कहता है। (پ۱۸،المومنون:۱۰۰)

या'नी हर काफ़िर मौत के वक़्त येही कलिमात ज़रूर कहता है।

हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالی عنہ से मरवी है : हुज़ूर صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया कि मोमिन की क़ब्र एक सब्ज़ बाग़ होता है, उस की क़ब्र सत्तर हाथ फ़राख़ कर दी जाती है और वोह चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकेगा, फिर फ़रमाया कि येह आयते मुबारका :

فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا[1] *बेशक उस के लिये ज़िन्दगी तंग होती है।*

जानते हो किस के बारे में नाज़िल हुई है ? सहाबए किराम رضی اللہ تعالی عنہم ने अर्ज़ किया : **अल्लाह** और उस का रसूल बेहतर जानता है, आप صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : येह काफ़िर के अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ है, उस की क़ब्र में उस पर निनानवे सांप मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं, हर सांप के सात सर होते हैं, जो उस के वुजूद को नोचते, उसे खाते और ह़श्र के दिन तक उस पर गर्म गर्म फूंकें मारते रहते हैं।[2]

और येह बात भी समझ लीजिये कि इस मख़्सूस अ़दद पर तअ़ज्जुब न कीजिये क्यूंकि उन सांपों की ता'दाद इन बुराइयों की ता'दाद के बराबर है जैसे तकब्बुर, दिखावा, ह़सद, कीना और किसी के लिये दिल में मेल रखना वग़ैरा अगर्चे इन बुराइयों के उसूल गिने चुने हैं मगर इन की शाख़ें और फिर इन शाख़ों की शाख़ें बहुत ज़ियादा हैं जो सब की सब मोहलिक हैं और क़ब्र में येही सिफ़ाते मज़्मूमा सांपों की शक्ल में तब्दील हो कर आएंगी, जो बुराई उस काफ़िर के वुजूद में ज़ियादा रासिख़ होगी वोह अज़्दहे की त़रह़ डसेगी, जो ज़रा कम होगी वोह बिच्छू की त़रह़ डंक मारेगी और जो इन दो के दरमियान होगी वोह सांप की शक्ल में नुमूदार होगी।

अस्ह़ाबे मा'रिफ़त और साहि़बे दिल ह़ज़रात अपने नूरे बसीरत से इन मोहलिकात और इन की फ़ुरूअ़ को जानते हैं मगर इन की ता'दाद पर मुत्त़लअ़ होना, येह नूरे नबुव्वत का काम है इस जैसी ह़दीसों के ज़ाहिरी मा'ना सह़ीह़ और इन के पोशीदा मआ़नी भी हैं जो अहले मा'रिफ़त ब ख़ूबी समझते हैं, लिहाज़ा अगर किसी ज़ाहिर बीन पर इन के ह़क़ाइक़ मुन्कशिफ़ न हों तो उसे इन्कार की बजाए तस्दीक़ और तस्लीम से काम लेना चाहिये क्यूंकि ईमान का कम अज़ कम दरजा येही है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है। (پ١٦، طٰہٰ: ١٢٤)

2......ابن حبان کتاب الجنائز و مایتعلق...الخ، فصل فی احوال المیت فی قبر، ٤/٥٠، الجزء الخامس، الحدیث ٣١١٢

बाब 46

इल्मुल यक़ीन, ऐनुल यक़ीन और सुवालाते क़ियामत

फ़रमाने इलाही है :

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ (1) *हरगिज़ नहीं अगर तुम यक़ीनी तौर पर जानते।*

या'नी अगर तुम क़ियामत के अह्वालो वाक़िआत को यक़ीनी तौर पर जानते, मगर तुम को तो माल की कसरत और एक दूसरे पर तफ़ाख़ुर ने इस बात से ग़ाफ़िल कर दिया है, अगर तुम येह बात जान लेते तो तुम वोह काम करते जो तुम्हारे लिये फ़ाइदा मन्द होते और उन कामों से बचते जो तुम्हारे लिये मुज़िर हैं लिहाज़ा फ़रमाया गया : अगर तुम सहीह मा'ना में इल्मे यक़ीन हासिल कर लेते, जैसा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने तुम्हें समझाया कि माल और अपने क़ाबिले फ़ख़्र कारनामों का शुमार तुम्हें क़ियामत में कोई फ़ाइदा नहीं देगा, तुम ने जो माल की कसरत व ता'दाद पर फ़ख़्र किया है उस की बदौलत तुम ज़रूर नारे जहन्नम को देखोगे चुनान्चे, ख़ालिक़े काइनात ने क़सम खाई कि तुम ज़रूर अपनी इन आंखों से अपने रू बरू जहन्नम और उस की शिद्दत को देखोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ (2) *फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आंख से देखोगे।*

या'नी जहन्नम का इस तरीक़े से मुशाहदा करोगे कि जिसे ऐनुल यक़ीन कहा जाता है और जिस के बा'द किसी शको शुबहा की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती।[3]

मरातिबे यक़ीन का फ़र्क़

अगर इल्मुल यक़ीन और ऐनुल यक़ीन का फ़र्क़ दरयाफ़्त किया जाए तो वोह येह है कि इल्मुल यक़ीन अम्बियाए किराम को अपनी नबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ हासिल था और ऐनुल यक़ीन

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की महब्बत न रखते। (پ۳۰، التکاثر: ۵)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे। (پ۳۰، التکاثر:۷)

3...आग की ख़ासिय्यत जलाना है जो सुना उस का नाम इल्मुल यक़ीन है, दूसरे को आंखों से जलते देखा ऐनुल यक़ीन है और ख़ुद आग से जले या अपना जलना देखा येह हक़्क़ुल यक़ीन है।

फ़िरिश्तों को ह़ासिल है जो जन्नत, दोज़ख़, लौह़ो क़लम और अ़र्श व कुरसी को अपनी आंखों से देखते हैं और इसी का नाम ऐनुल यक़ीन है। यूं भी कहा जा सकता है कि इल्मुल यक़ीन ज़िन्दों का मौत और क़ब्रों के मुतअ़ल्लिक़ इल्म है क्यूंकि वोह जानते हैं कि मौता क़ब्रों में हैं लेकिन वोह येह समझने से क़ासिर हैं कि उन के साथ क्या सुलूक हो रहा है और ऐनुल यक़ीन मौता को ह़ासिल है क्यूंकि वोह कुबूर को जन्नत का एक बाग़ या फिर जहन्नम का एक गढ़ा ख़ुद देख चुके हैं।

येह भी कह सकते हो कि इल्मुल यक़ीन क़ियामत का इल्म और ऐनुल यक़ीन क़ियामत और उस की हौलनाकियों को देख लेना है।

येह भी कह सकते हो कि इल्मुल यक़ीन जन्नत और दोज़ख़ का इल्म और ऐनुल यक़ीन उन का देख लेना है। फ़रमाने इलाही है :

“फिर तुम उस दिन ने'मतों के बारे में ज़रूर पूछे जाओगे।”(1)

या'नी क़ियामत के दिन तुम से दुन्यावी ने'मतों जैसे तन्दुरुस्ती, कुव्वते समाअ़त, कुव्वते बीनाई, हुसूले रिज़्क़ के त़रीक़े और ख़ुर्दो नोश की तमाम अश्या के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा कि तुम ने इन चीज़ों को पा कर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र भी अदा किया था ? उस की मा'रिफ़त ह़ासिल की थी या इन्कार व कुफ़्र के मुर्तकिब हुवे थे।

इब्ने अबी ह़ातिम और इब्ने मर्दविय्या की रिवायत है कि ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम ने अपने वालिद से रिवायत की है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ा कि “तुम को अम्वाल की कसरत के मुक़ाबलों ने हलाक कर दिया”(2) या'नी तुम इबादत से ग़ाफ़िल हुवे।

“यहां तक कि तुम ने क़ब्रों को देखा”(3) या'नी तुम्हें मौत आ गई।

“हरगिज़ नहीं अलबत्ता तुम जान लोगे”(4) या'नी जब तुम क़ब्रों में दाख़िल होगे।

“फिर बेशक तुम अ़न क़रीब जान लोगे”(5) जब तुम क़ब्रों से निकल कर मैदाने मह़शर में आओगे।

“हरगिज़ नहीं अगर तुम इल्मे यक़ीन के त़ौर पर जान लेते”(6) या'नी तुम उस वक़्त को

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी। (پ۳۰، التکاثر: ۸)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने। (پ۳۰، التکاثر: ۱)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा। (پ۳۰، التکاثر: ۲)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां हां जल्द जान जाओगे। (پ۳۰، التکاثر: ۳)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हां हां जल्द जान जाओगे। (پ۳۰، التکاثر: ٤)

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मह़ब्बत न रखते। (پ۳۰، التکاثر: ۵)

जानते जब तुम अपने आ'माल समेत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में खड़े होगे और "जहन्नम को देख रहे होगे"[1] येह बईं तौ़र वाक़ेअ़ होगा कि पुल सिरात़ को जहन्नम के दरमियान रखा जाएगा, पस बा'ज़ मुसलमान नजात पाने वाले होंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे और बा'ज़ जहन्नम में गिराए जाएंगे।

"फिर उस दिन ज़रूर तुम से ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाएगा"[2] या'नी शिकम सेरी, सर्द मशरूबात, मकानात के साए, तुम्हारी बेहतरीन तख़्लीक़ का मस्रफ़ और नींद की आसाइशों के बारे में सुवाल किया जाएगा।[3]

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि ने'मत से मुराद तन्दुरुस्ती है। मज़ीद फ़रमाया कि जिस ने गेहूं की रोटी खाई, फ़ुरात का ठन्डा पानी पिया और उस के रहने के लिये घर भी है, येही वोह ने'मतें हैं जिन के बारे में सुवाल किया जाएगा।

हज़रते अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ कर फ़रमाया : मेरी उम्मत के लोग घी में ख़ालिस शहद मिला कर उसे खाएंगे जिन के मुतअ़ल्लिक़ उन से सुवाल किया जाएगा।[4]

ठन्डा पानी भी एक ने'मत है

हज़रते इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : हमें कौन सी ने'मत हासिल है? हम ने तो कभी पेट भर कर जव की रोटी भी नहीं खाई है, अल्लाह तआ़ला ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह्य फ़रमाई, इन से फ़रमाइये! तुम जूते पहनते हो और ठन्डा पानी पीते हो, क्या येह ने'मतें नहीं हैं?[5]

तिर्मिज़ी वग़ैरा की रिवायत है कि जब येह सूरत नाज़िल हुई तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने पूछा : हम से कौन सी ने'मतों का सुवाल होगा! हमें तो पानी और खजूरों के सिवा कोई गिज़ा

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे। (پ۳۰، التکاثر:۶)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी। (پ۳۰، التکاثر:۸)

3 ......الدرالمنثور، سورۃ التکاثر، ۸/۶۱۱

4 ......الزھد لاحمد بن حنبل، ص۶۶، الحدیث۱۶۶

5 ......تفسیر ابن ابی حاتم، ص۳۴۶۰، الحدیث ۱۹۴۶۲

ही मयस्सर नहीं है ! हर वक़्त तल्वारें हमारी गर्दनों में आवेज़ां हैं और दुश्मनों से लड़ाइयों में मस्रूफ़ रहना पड़ता है ! वोह कौन सी ने'मत है जिस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा ? आप ने फ़रमाया : अ़न क़रीब तुम्हें ने'मतें मिलेंगी ।(1)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से पहले इन्सान से जिन ने'मतों का सुवाल होगा वोह येह होंगी कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : मैं ने तुम्हें तन्दुरुस्ती नहीं दी थी और तुम्हें पीने के लिये ठन्डा पानी नहीं दिया था ?(2)

गोश्त, खजूर और सर्द पानी के मुतअ़ल्लिक़ क़ियामत में सुवाल होगा

मुस्लिम वग़ैरा में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा काशानए नबुव्वत से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप को अचानक हज़रते अबू बक्र और उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मिल गए, आप ने पूछा : इस वक़्त घर से बाहर किस लिये आना हुवा ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! भूक ने हमें घरों से निकाला है। आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मैं भी भूक की वज्ह से घर से निकला हूं। कुछ तवक़्क़ुफ़ के बा'द आप सब एक अन्सारी के घर तशरीफ़ लाए मगर वोह घर पर मौजूद नहीं थे, उन की बीवी ने आप को देख कर "ख़ुश आमदीद" कहा। आप ने उस अन्सारी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा : तो उस की बीवी ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! वोह हमारे लिये ठन्डा पानी लेने गए हैं। उसी वक़्त वोह अन्सारी सहाबी भी वापस आ गए, उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को देख कर कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ आज मैं इन्तिहाई बा इ़ज़्ज़त मेहमानों का शरफ़े मेज़बानी हासिल कर रहा हूं, फिर वोह गए और खजूरों का एक ख़ोशा लाए जिस में कच्ची पक्की बहुत सी खजूरें थीं और अ़र्ज़ की : तनावुल फ़रमाइये और छुरी उठाई तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दूध देने वाली का ख़याल रखना, चुनान्चे, उस ने बकरी ज़ब्ह़ की और आप सब ने बकरी का गोश्त और खजूरें तनावुल फ़रमाईं, पानी पिया। जब खाने और पानी से सैर हो चुके तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! ऐ अबू बक्र व उ़मर ! तुम से क़ियामत के दिन इन ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूर सुवाल किया जाएगा।(3)

1 ......مسند احمد، حدیث رجل من الانصار، ۹/۱۶۲، الحدیث ۲۳۷۰۱

2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الھٰکم التکاثر، ۵/۲۳۶، الحدیث ۳۳۶۹

3 ......مسلم ، کتاب الاشربۃ، باب جواز استتباعہ...الخ، ص ۱۱۲۵، الحدیث ۱۴۰۔ (۲۰۳۸)

बाब 47

फ़ज़ीलते ज़िक्रे इलाही

फ़रमाने इलाही है :

فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ (1) तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा।

हज़रते साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं जानता हूं कि जब मेरा रब मुझे याद फ़रमाता है, येह सुन कर लोग कुछ परेशान हो गए और दरयाफ़्त किया आप को कैसे पता चल जाता है ? आप ने कहा : जब मैं उसे याद करता हूं तो वोह भी मुझे याद फ़रमाता है। फ़रमाने इलाही है :

اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِیْرًا (2) **अल्लाह** को बहुत याद करो।

मज़ीद फ़रमाया :

فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ۪ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ (3) पस जब तुम अ़रफ़ात से पलटो तो मश्अ़रे ह़राम के नज़्दीक **अल्लाह** को याद करो और जैसे तुम्हें हिदायत दी गई है वैसे उसे याद करो।

दूसरे पारह में इरशादे रब्बानी है :

فَاِذَا قَضَیْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (4) जब तुम मनासिके ह़ज पूरे कर चुको तो **अल्लाह** तआ़ला को याद करो जैसे तुम अपने आबा को याद करते हो या उस से भी ज़ियादा याद करो।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (پ۲، البقرۃ:۱۵۲)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** को बहुत याद करो। (پ۲۲،الاحزاب:۴۱)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जब अ़रफ़ात से पलटो तो **अल्लाह** की याद करो मश्अ़रे ह़राम के पास और उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई। (پ۲، البقرۃ:۱۹۸)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको तो **अल्लाह** का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा। (پ۲، البقرۃ:۲۰۰)

इरशादे इलाही है :

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ (1)

वोह लोग अल्लाह तआ़ला को खड़े बैठे और पहलू के बल लैटे याद करते हैं

फ़रमाने इलाही है :

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ (2)

पस जब तुम नमाज़ पूरी कर लो तो अल्लाह तआ़ला को क़ियाम क़ुऊ़द और पहलू पर लैटे याद करो।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी अल्लाह तआ़ला को रात, दिन, बह़्रो बर, सफ़रो ह़ज़र, मालदारी व मुफ़्लिसी, मरज़ो सिह़्ह़त, ज़ाहिरो निहां ग़रज़ हर ह़ालत में याद किया करो।

अल्लाह तआ़ला का मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत में इरशाद है :

وَلَا یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۱۴۲﴾ (3)

वोह अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं।

फ़रमाने इलाही है :

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِیْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ (4)

और फ़रमाने इलाही है :

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (5)

और बेशक ज़िक्रे ख़ुदा बहुत बड़ा है।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे। (پ۴، اٰل عمران:۱۹۱)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे। (پ۵، النساء:۱۰۳)

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा। (پ۵، النساء:۱۴۲)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब को अपने दिल में याद करो ज़ारी (आ़जिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह़ और शाम और ग़ाफ़िलों में न होना। (پ۹، الاعراف:۲۰۵)

5...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा। (پ۲۱، العنکبوت:۴۵)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि इस आयत के दो मा'ना हो सकते हैं, पहला येह कि **अल्लाह** तआ़ला का तुम्हें याद फ़रमाना तुम्हारे ज़िक्र से बहुत बड़ी चीज़ है, दूसरा येह कि ज़िक्रे ख़ुदा हर इ़बादत से ज़ियादा बरतर और आ'ला है। इस सिलसिले में और भी बहुत सी आयात वारिद हुई हैं।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि ग़ाफ़िलों में ज़िक्रे ख़ुदा करने वालों की मिसाल सूखे घास में सब्ज़ पौदे की सी है।(1)

मज़ीद फ़रमाया कि ग़ाफ़िलों में ज़िक्रे ख़ुदा करने वाले की मिसाल भगोड़ों के दरमियान जिहाद करने वाले की सी है।(2)

फ़रमाने नबवी है : रब्बे ज़ुल जलाल फ़रमाता है कि जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और मेरी याद में उस के होंट वा होते हैं तो मैं उस के साथ होता हूं।(3)

ज़िक्रे ख़ुदा से बढ़ कर कोई अ़मल नहीं

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : इन्सान के लिये ज़िक्रे ख़ुदा से बढ़ कर कोई अ़मल ऐसा नहीं है जो अ़ज़ाबे इलाही से जल्द नजात दिलाने वाला हो, अ़र्ज़ की गई कि जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं ? आप ने फ़रमाया : जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं मगर येह कि तू अपनी तल्वार से जिहाद करे और वोह टूट जाए।(4) (बार बार के जिहाद से भी अफ़्ज़ल है)

फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स जन्नत के बाग़ों से सैर होना चाहता है वोह **अल्लाह** को बहुत याद करे।(5)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : जब तू मरे तो तेरी ज़बान ज़िक्रे ख़ुदा से शीरीं हो।(6)

फ़रमाने नबवी है कि ज़िक्रे ख़ुदा में सुब्हो शाम बसर कर, तू इस ह़ालत में दिन और रात मुकम्मल करेगा कि तुझ पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं होगा।(7)

---

1 ......شعب الایمان ، العاشرمن شعب الایمان...الخ، فصل فی ادامة...الخ، ١/٤١١، الحدیث٥٦٥ ماخوذا

2 ......المرجع السابق، ص٤١٢، الحدیث٥٦٧

3 ......المرجع السابق، ص ٣٩١، الحدیث ٥١٠

4 ......المعجم الاوسط ، ٣/٢، الحدیث ٢٢٩٦

5 ......المعجم الکبیر، ١٥٧/٢٠، الحدیث ٣٢٦

6 ......المرجع السابق، ص ١٠٦، الحدیث ٢٠٨

7 ......الفتوحات المکیة لابن عربی، الباب الموفی ستین وخمسمائة ، وصیة نبویة محمدیه، ٤١٦/٧

फ़रमाने नबवी है कि सुब्हो शाम यादे इलाही, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में तल्वारें तोड़ने और बे दरेग़ राहे ख़ुदा में माल लुटाने से बेहतर है।[1] हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब मेरा बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं उसे तन्हाई में याद करता हूं और जब वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उसे उस की जमाअ़त से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं, जब वोह मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उस से एक हाथ क़रीब हो जाता हूं जब वोह एक हाथ मेरे क़रीब होता है तो मैं दोनों हाथों की वुस्अ़त के बराबर उस के क़रीब हो जाता हूं और जब वोह मेरी त़रफ़ चल पड़ता है तो मेरी रह़मत बढ़ कर उसे सायए आ़फ़िय्यत में ले लेती है या'नी मैं उस की दुआ़ओं को बहुत जल्द क़बूल फ़रमा लेता हूं।[2]

फ़रमाने नबवी है : सात शख़्स ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने सायए रह़मत में उस दिन जगह देगा जिस दिन कोई साया नहीं होगा, इन में से एक वोह है जिस ने तन्हाई में ख़ुदा को याद किया और ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से उस की आंखों से आंसू बह निकले।[3]

बेहतरीन अ़मल

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें तुम्हारे आ'माल में से बेहतरीन अ़मल की ख़बर न दूं जो अल्लाह के नज़्दीक सब आ'माल से पाकीज़ा, सब आ'माल में बुलन्द मर्तबा, सोने चांदी की बख़्शिश से बेहतर, दुश्मनों से तुम्हारे उस जिहाद से जिस में तुम उन्हें क़त्ल करो वोह तुम्हें शहीद कर दें, अफ़्ज़लो आ'ला हो ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने पूछा : हुज़ूर ! वोह कौन सा अ़मल है ? आप ने फ़रमाया : दाइमी ज़िक्रे इलाही।[4]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : जिस शख़्स को मेरे ज़िक्र ने सुवाल करने से रोके रखा मैं उसे बिग़ैर मांगे सब साइलों से बेहतर दूंगा।[5]

ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हमें येह ख़बर मिली है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ऐ मेरे बन्दे ! तू मुझे सुब्ह़ के बा'द और अ़स्र के बा'द कुछ देर याद कर लिया कर, येह अ़मल तुझे सारे दिन के लिये काफ़ी होगा।

---

1 ......ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، باب ما جاء فی فضل ذکر اللّٰه، ۸/۲۳۵، الحدیث ۲

2 ......بخاری ، کتاب التوحید ، باب قول الله تعالی (ویحذرکم اللّٰه نفسه) ، ۴/۵۴۱، الحدیث ۷۴۰۵

3 ......بخاری، کتاب الجماعة والإمامة، باب من جلس فی المسجد ینتظر...الخ، ۱/۲۳۶، الحدیث ۶۶۰

4 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۶، ۵/۲۴۶، الحدیث ۳۳۸۸

5 ......شعب الایمان، العاشر من شعب الایمان...الخ ، فصل فی ادامة...الخ، ۱/۴۱۳، الحدیث ۵۷۲

बा'ज़ उलमा का कहना है कि **अल्लाह** तआला इरशाद फ़रमाता है : जब मैं किसी शख़्स के दिल को अपनी याद में सरगर्मे अमल देखता हूं तो मैं उस के जुम्ला उमूर का मुतवल्ली हो जाता हूं और मैं उस का साथी, उस का हम नशीं और हम सुख़न बन जाता हूं। हज़रते हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि ज़िक्र दो हैं : एक तो तन्हाई में **अल्लाह** तआला को याद करना जो बहुत उम्दा और अज्रे अज़ीम का सबब है और इस से भी बेहतर ज़िक्र येह है कि इन्सान **अल्लाह** तआला की हराम कर्दा चीज़ों में **अल्लाह** को याद रखे और ऐसे उमूर से बाज़ रहे।

मरवी है कि यादे इलाही में ज़िन्दगी बसर करने वाले के सिवा हर इन्सान मौत के वक़्त प्यासा जाता है।

हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का फ़रमान है कि जन्नती उस लम्हे के सिवा जो यादे इलाही में बसर नहीं हुवा, किसी चीज़ पर हसरत नहीं करेगा।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि कोई जमाअत भी ऐसी नहीं है जो यादे इलाही के लिये बैठी हो मगर फ़िरिश्ते उसे घेर लेते हैं और रहमते खुदावन्दी उसे ढांप लेती हो, **अल्लाह** तआला अपने मुक़र्रबीन में उन्हें याद करता है।(2)

ज़िक्रे खुदा के लिये जम्अ होने वालों पर इन्आमे इलाही

फ़रमाने नबवी है कि जब कुछ लोग महज़ रज़ाए इलाही के लिये ज़िक्रे खुदा के लिये जम्अ होते हैं तो आस्मान से मुनादी निदा करता है कि खड़े हो जाओ, तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया गया है और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया है।(3)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि कोई क़ौम ऐसी नहीं जो कहीं बैठे और **अल्लाह** तआला का ज़िक्र (न करे) और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न भेजे और क़ियामत के दिन वोह हसरत से दोचार न हो।(4)

हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया : इलाहल आलमीन ! जब तू मुझे देखे कि मैं ज़िक्र करने वालों की मजलिस से उठ कर ग़ाफ़िलों की मजलिस में जा रहा हूं तो मेरे तू पाउं तोड़ दे, बिला शुबहा मेरे ऊपर येह तेरा इन्आम होगा।

1 ......شعب الایمان، العاشر من شعب الایمان...الخ، فصل فی ادامة...الخ، ۱/۳۹۲، الحدیث ۵۱۲ رواہ مرفوعاً

2 ......مسلم، کتاب الذکر...الخ، باب فضل الاجتماع...الخ، ص ۱۴۴۸، الحدیث ۳۹۔ (۲۷۰۰)

3 ......مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ۴/۲۸۶، الحدیث ۱۲۴۵۶

4 ......مسند احمد، مسند ابی هريرة، ۳/۵۲۸، الحدیث ۱۰۲۴۸

फ़रमाने नबवी है : नेक महफ़िल, मोमिन के लिये बीस लाख[1] बुरी मजलिसों का कफ़्फ़ारा है।[2]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : आस्मान के रहने वाले उन घरों को जिन में यादे इलाही होती है, ऐसे देखते हैं जैसे तुम सितारों को देखते हो (पुर शौक़ निगाहों से)

हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कहना है : जब कोई जमाअ़त ज़िक्रे खुदा के लिये जम्अ़ होती है तो शैत़ान और दुन्या अ़लाहि़दा हो जाते हैं, फिर शैत़ान दुन्या से कहता है : क्या तू ने इन्हें देखा येह क्या कर रहे हैं ? दुन्या कहती है : इन्हें छोड़ दे, जूंही येह ज़िक्रे इलाही से फ़ारिग़ होंगे मैं इन्हें गर्दनों से पकड़ कर तेरे ह़वाले कर दूंगी।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा बाज़ार में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : लोगो ! मैं तुम्हें यहां देख रहा हूं ह़ालांकि मस्जिद में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीरास तक़्सीम हो रही है। लोग बाज़ार छोड़ कर मस्जिद की त़रफ़ गए मगर उन्हें कोई मीरास बटती दिखाई न दी, उन्हों ने हज़रते अबू हुरैरा से कहा : हम ने तो मस्जिद में कोई मीरास तक़्सीम होते नहीं देखी। आप ने पूछा : तुम ने वहां क्या देखा है ? बोले : हम ने वहां ऐसी जमाअ़त देखी है जो ज़िक्रे खुदा कर रहे हैं और क़ुरआने मजीद पढ़ रहे हैं, आप ने फ़रमाया : येही तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीरास है।[3]

ज़िक्र करने वालों पर रह़मते इलाहिय्या

आ'मश ने अबू सालेह़ से, इन्हों ने हज़रते अबू हुरैरा और हज़रते अबू सईद खुदरी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने नामए आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों के इलावा ऐसे सय्याह़ फ़िरिश्तों को पैदा फ़रमाया जो ज़मीन में सरगर्मे सफ़र रहते हैं, जब वोह किसी जमाअ़त को ज़िक्र में मश्ग़ूल पाते हैं तो दूसरों से कहते हैं कि इधर अपनी मत़लूबा चीज़ की त़रफ़ आओ ! लिहाज़ा वोह सब फ़िरिश्ते जम्अ़ हो जाते हैं और उन्हें आस्मान तक घेरे में ले लेते हैं। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : मेरे बन्दों को तुम ने किस ह़ाल में छोड़ा ? वोह क्या कर रहे थे ? फ़िरिश्ते कहते हैं : या **अल्लाह** ! वोह तेरी ह़म्द, तेरी बुज़ुर्गी और तेरी तस्बीह़ बयान कर रहे थे। रब्बे जलील फ़रमाता है : क्या उन्हों ने मुझे देखा है ? फ़िरिश्ते

1.....यहां बीस लाख के बजाए दो लाख लिखा था, यक़ीनन किताबत में ग़लत़ी हुई होगी क्यूंकि "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" में इस मक़ाम पर इबारत यूं हैं : المجلس الصالح يكفر عن المؤمن الفى الف مجلس من مجالس السوء लिहाज़ा हम ने यहां अस्ल के मुत़ाबिक़ तस्ह़ीह़ कर दी है। **इल्मिय्या**

2.....فردوس الاخبار، ١/٩٧، الحديث ٥٨٧

3.....المعجم الاوسط، ١/٣٩٠، الحديث ١٤٢٩

अ़र्ज़ करते हैं : नहीं । रब्बे जलील फ़रमाता है : अगर वोह मुझे देख लें तो उन की क्या ह़ालत होगी, फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर वोह तुझे देख लें तो इस से भी ज़ियादा तेरी तस्बीह़ व तह़मीद करें । रब फ़रमाता है : वोह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ? फिरिश्ते कहते हैं : जहन्नम से पनाह मांग रहे थे । रब फ़रमाता है : उन्हों ने जहन्नम को देखा है ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : नहीं । रब फ़रमाता है : अगर वोह जहन्नम को देख लें तो उन की क्या ह़ालत होगी ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर वोह जहन्नम को देख लें तो इस से और ज़ियादा भागें और नफ़रत करें । रब फ़रमाता है : वोह क्या चीज़ मांग रहे थे ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : वोह जन्नत का सुवाल कर रहे थे, रब फ़रमाता है : क्या उन्हों ने जन्नत को देखा है ? फ़िरिश्ते कहते हैं : नहीं, रब फ़रमाता है : अगर वोह जन्नत को देख लें तो उन की क्या ह़ालत होगी ? फ़िरिश्ते कहते है : वोह इसे और ज़ियादा चाहेंगे । रब तआ़ला फ़रमाता है : मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया है । फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : उन में फ़ुलां बिन फ़ुलां भी था जो अपनी किसी ज़रूरत के लिये आया था, रब्बे जलील फ़रमाता है : येह ऐसी जमाअ़त है जिस का हम मजलिस व हमनशीं भी मह़रूम नहीं रहता ।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि सब से अफ़्ज़ल कलिमा जो मैं ने और तमाम अम्बियाए किराम (عَلَیۡهِمُ السَّلَام) ने ज़बान से अदा किया है वोह है : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡکَ لَهٗ(2)

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने हर रोज़ एक सो मरतबा :

''لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡکَ لَهٗ لَهُ الۡمُلۡکُ وَلَهُ الۡحَمۡدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ''

ज़बान से अदा किया, उसे दस ग़ुलामों के आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है, उस के नामए आ'माल में सो नेकियां लिखी जाती हैं और उस के सो गुनाह मिटा दिये जाते हैं और उस दिन शाम तक वोह शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहता है और उस से बढ़ कर कोई और अ़मल नहीं होता मगर येह कि कोई शख़्स उस से ज़ियादा बार येह कलिमात पढ़े ।(3)

फ़रमाने नबवी है : ऐसा कोई बन्दा नहीं जो बेहतरीन त़रीक़े से वुज़ू करे, फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर कहे : اَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡکَ لَهٗ وَ اَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ और उस के लिये जन्नत के दरवाज़े न खोल दिये जाते हों, फिर वोह जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए ।(4)

---

1 ......ترمذی، احادیث شتی، باب ماجاء ان لله ملائکة...الخ، ٥/٣٤٤، الحديث ٣٦١١ بالتقديم و التاخير
2 ......شرح السنة ، كتاب الحج، باب الدعاء يوم عرفة، ٤/٩٣، الحديث ١٩٢٢
3 ......بخاری، کتاب بدء الخلق ، باب صفة ابليس و جنوده ، ٢/٤٠٢، الحديث ٣٢٩٣
4 ......مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ١/٥٢، الحديث ١٢١

बाब 48

फ़ज़ाइले सलात (नमाज़)

फ़रमाने इलाही है :

إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝ (1)

तह़क़ीक़ नमाज़ मुसलमानों पर वक़्ते मुक़र्रर पर लिखी हुई है।

और फ़रमाने नबवी है : **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं, जो शख़्स इन्हें बा अ़ज़मत समझते हुवे मुकम्मल शराइत़ के साथ अदा करता है, **अल्लाह** तआ़ला का उस के लिये वा'दा है कि वोह उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इन्हें अदा नहीं करता **अल्लाह** तआ़ला का उस के लिये कोई वा'दा नहीं है, चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे और अगर चाहे तो जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।[2]

फ़रमाने नबवी है कि पांच नमाज़ों की मिसाल तुम में से किसी एक के घर के साथ बहने वाली वसीअ़ ख़ुश गवार पानी की नहर जैसी है जिस से वोह दिन में पांच मरतबा नहाता है, क्या उस के जिस्म पर मेल बाक़ी रहेगा ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की : नहीं, आप ने फ़रमाया : जैसे पानी मेल कुचैल को बहा ले जाता है उसी त़रह़ पांच नमाज़ें भी गुनाहों को बहा ले जाती हैं।[3]

नमाज़ गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि नमाज़ें अपने अवक़ात के माबैन सरज़द होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा है ब शर्तेकि कबीरा गुनाह से परहेज़ किया जाए जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ (4)

बेशक नेकियां बुराइयों को खा जाती हैं।

मत़लब येह है कि वोह गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती हैं गोया कि गुनाह थे ही नहीं।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है। (پ٥، النساء: ١٠٣)

2 ......ابوداود، کتاب الوتر، باب فیمن لم یوتر، ٢/٨٩، الحدیث ١٤٢٠

3 ......شعب الایمان، باب الحادی والعشرین...الخ، فصل فی الصلوات...الخ، ٣/٤٢، الحدیث ٢٨١٣

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। (پ١٢، ھود: ١١٤)
مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الصلوات الخمس...الخ، ص ١٤٤، الحدیث ١٦ـ (٢٣٣)

बुख़ारी व मुस्लिम और दीगर अस्हाबे सुनन वग़ैरा ने ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि एक शख़्स ने किसी औ़रत का बोसा ले लिया और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ कह सुनाया, गोया वोह इस का कफ़्फ़ारा पूछना चाहता था, जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयत नाज़िल हुई :

وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّهَارِ [1] *और क़ाइम कर नमाज़ दिन के दोनों अत़राफ़ में।*

तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ की, कि येह मेरे लिये है ? आप ने फ़रमाया : "मेरे हर उस उम्मती के लिये है जिस ने ऐसा काम किया।"[2]

नमाज़ की ताकीद में इरशादाते नबविय्या

मुस्नदे अह़मद और मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक आदमी ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि मुझ पर ह़द जारी फ़रमाइये ! उस ने एक या दो मरतबा येही बात कही मगर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तवज्जोह नहीं फ़रमाई, फिर नमाज़ पढ़ी गई। जब नमाज़ से आप फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया : वोह आदमी कहां है ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं ह़ाज़िर हूं या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : तू ने मुकम्मल वुज़ू कर के हमारे साथ अभी नमाज़ पढ़ी है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : "तो तू गुनाहों से ऐसा पाक है जैसे तेरी मां ने तुझे जना था, आइन्दा ऐसा न करना।" उस वक़्त हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयत नाज़िल हुई कि "नेकियां गुनाहों को ले जाती हैं।"[3]

और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि हमारे और मुनाफ़िक़ों के दरमियान फ़र्क़, इशा और फ़ज्र की नमाज़ है वोह इन में आने की त़ाक़त नहीं रखते।[4]

हु़ज़ूर सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ालत में मुलाक़ात करे कि उस ने नमाज़ें ज़ाएअ़ कर दी हों तो **अल्लाह** तआ़ला उस की नेकियों की परवा नहीं करेगा।[5]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों (में)। (پ۱۲، ھود:۱۱٤)

2 ......بخاری،کتاب مواقیت الصلاۃ ، باب الصلاۃ کفارۃ،۱/۱۹٦،الحدیث ٥۲٦

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। (پ۱۲، ھود: ۱۱٤)

المعجم الکبیر للطبرانی، ۸/۱٦۰، الحدیث ۷٦۷٥

4 ......شعب الایمان، باب الحادی والعشرین...الخ، فصل الصلوات الخمس ...الخ ۳/٥٦، الحدیث : ۲۸٥٦

5 ......کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الرابعۃ فی ترک الصلاۃ ، ص ۲۲

फ़रमाने नबवी है कि नमाज़ दीन का सुतून है, जिस ने इसे छोड़ दिया उस ने दीन (की इमारत) को ढा दिया।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? तो आप ने फ़रमाया कि नमाज़ को इन के अवक़ात में अदा करना।[2]

फ़रमाने नबवी है : जिस ने मुकम्मल पाकीज़गी के साथ सहीह़ अवक़ात में हमेशा पांच नमाज़ों को अदा किया क़ियामत के दिन नमाज़ें उस के लिये नूर और हुज्जत होंगी और जिस ने इन्हें ज़ाएअ़ कर दिया वोह फ़िरऔ़न और हामान के साथ उठाया जाएगा।[3]

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।[4]

मज़ीद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने तौह़ीद के बा'द नमाज़ से ज़ियादा पसन्दीदा कोई अ़मल फ़र्ज़ नहीं किया और **अल्लाह** तआ़ला ने पसन्दीदगी ही की वज्ह से फ़िरिश्तों को इसी इबादत में मस्रूफ़ फ़रमाया है, लिहाज़ा इन में से कुछ रुकूअ़ में, कुछ सजदे में, बा'ज़ क़ियाम में और बा'ज़ क़ुऊ़द की ह़ालत में इबादत कर रहे हैं।[5]

फ़रमाने नबवी है : "जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी वोह ह़द्दे कुफ़्र के क़रीब हो गया" या'नी वोह ईमान से निकलने के क़रीब हो गया क्यूंकि उस ने **अल्लाह** की मज़बूत रस्सी को छोड़ दिया और दीन के सुतून को गिरा दिया जैसे उस शख़्स को जो शहर के क़रीब पहुंच जाए कहा जाता है कि वोह शहर में पहुंच गया है, दाख़िल हो गया है, इसी त़रह़ इस ह़दीस में भी फ़रमाया गया है।[6]

और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी वोह मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िम्मेदारी से निकल गया।[7]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : जिस ने बेहतरीन वुज़ू किया फिर नमाज़ के इरादे से निकला वोह नमाज़ में है जब तक कि वोह नमाज़ के इरादे से मस्जिद की त़रफ़ चलता रहे, उस के एक क़दम के बदले नेकी लिखी जाती है और दूसरे क़दम के बदले में एक गुनाह मिटा दिया

---

1 ......تذکرۃ الموضوعات للفتنی، ص۳۸ وکشف الخفاء، ۲/۲۷، تحت الحدیث ۱۶۱۹

2 ......بخاری ، کتاب التوحید، باب وسمّی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم...الخ، ۴/۵۹۰، الحدیث ۷۵۳۴

3 ......مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، ۲/۵۷۴، الحدیث ۶۵۸۷

4 ......ترمذی، کتاب الطہارۃ، باب ماجاء ان مفتاح...الخ، ۱/۸۶، الحدیث ۴

5 ......کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الباب الاول...الخ، الفصل الثانی فی فضائل الصلاۃ، ۴/۱۲۷، الجزء السابع، الحدیث ۱۹۰۳۴

6 ......المعجم الاوسط ، ۲/۲۹۹، الحدیث ۳۳۴۸

7 ......شعب الایمان، الثامن من شعب الایمان...الخ، فصل فی بیان کبائر...الخ، ۱/۲۷۲، الحدیث ۲۹۱

जाता है। जब तुम में से कोई एक इक़ामत सुने तो उस के लिये ताख़ीर मुनासिब नहीं है, तुम में से वोह ज़ियादा अज्र पाता है जिस का घर दूर होता है, पूछा गया : अबू हुरैरा इस की क्या वज्ह है ? आप ने फ़रमाया : ज़ियादा क़दम चलने की वज्ह से उसे येह फ़ज़ीलत ह़ासिल है।[1]

और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तन्हाई की इबादत से अफ़्ज़ल कोई अ़मल नहीं है जिस की बदौलत **अल्लाह** तआ़ला का कुर्ब जल्द ह़ासिल हो जाए।[2]

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि ऐसा कोई मुसलमान नहीं है जो रज़ाए इलाही के लिये सजदा करता है और उस के हर सजदे के बदले में उस का एक दरजा बुलन्द न होता हो और **अल्लाह** तआ़ला उस का एक गुनाह न मिटा देता हो।[3]

मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे आप की शफ़ाअ़त के मुस्तह़िक़ीन में से बनाए और जन्नत में आप की सोह़बत नसीब फ़रमाए, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कसरते सुजूद से मेरी इआ़नत त़लब करो।[4](या'नी कसरत से इबादत करो)

नीज़ कहा गया है कि इन्सान सजदे में रब के बहुत क़रीब होता है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩ ﴿١٩﴾[5] *और सजदा कर और क़रीब हो जा।*

फ़रमाने इलाही है :

سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ[6] *उन की निशानी उन के चेहरों पर सजदों के असरात हैं।*

इस आयत की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : येह कि इस से मुराद चेहरों का वोह हिस्सा है जो सजदों के वक़्त ज़मीन से लगता है या येह कि इस से मुराद ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का नूर

1 ......مؤطا امام مالك، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، ١/٥٤، الحديث ٦٧

2 ......الزهد لابن المبارك، باب العمل و الذكر الخفى، ص ٥٠، الحديث ١٥٤

3 ......ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى كثرة السجود ، ٢/١٨٢، الحديث ١٤٢٣

4 ......مسلم، كتاب الصلاة، باب فضل السّجود و الحثّ عليه، ص٢٥٣، الحديث ٢٢٦ـ (٤٨٩) و مصنف ابن ابى شيبه، الركوع و السجود افضل ام القيام، ٢/٣٦٠، الحديث ٨

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सजदा करो और हम से क़रीब हो जाओ। (پ٣٠، العلق:١٩)

येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनना या पढ़ना बिल क़स्द हो या बिला क़स्द और इसी त़रह़ तर्जमे का हुक्म है। **इल्मिय्या**

6 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सजदों के निशान से। (پ٢٦، الفتح: ٢٩)

है जो बातिन से ज़ाहिर पर चमकता है और इस की शुआएं चेहरों पर नुमायां होती हैं और येही बात ज़ियादा सहीह है।[1] या येह कि इस से मुराद वोह नूर है जो वुज़ू के निशानात पर क़ियामत के दिन उन के चेहरों पर चमकेगा। फ़रमाने नबवी है : जब इन्सान सजदे की आयत पढ़ कर सजदा करता है तो शैतान रोते हुवे अलाहिदा हो जाता है और कहता है : हाए अफ़्सोस ! इसे सजदों का हुक्म दिया गया और इस ने सजदा कर के जन्नत पा ली और मुझे सजदे का हुक्म दिया गया था मगर मैं ने ना फ़रमानी की और मेरे लिये जहन्नम बनाया गया।[2]

नमाज़ के बारे में इरशादाते बुज़ुर्गाने दीन

हज़रते अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मरवी है कि आप हर रोज़ हज़ार सुजूद करते थे इस लिये लोग इन्हें सज्जाद कहा करते थे।

मरवी है कि हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमेशा मिट्टी पर सजदा किया करते थे।

हज़रते यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते : ऐ जवानो ! मरज़ से पहले तन्दुरुस्ती को ग़नीमत समझते हुवे आगे बढ़ो, सिवाए एक आदमी के और कोई ऐसा नहीं है जिस पर मैं रश्क करता हूं, वोह है रुकूअ और सुजूद मुकम्मल करने वाला, येही मेरे और उस के दरमियान हाइल हो गए हैं।[3]

हज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सुजूद के सिवा मुझे दुन्या की किसी चीज़ से उन्स नहीं है।

हज़रते उक़्बा बिन मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा है : **अल्लाह** तआला को बन्दे की उस आदत से बढ़ कर कोई और चीज़ ज़ियादा पसन्द नहीं है जिस में वोह **अल्लाह** तआला की मुलाक़ात को पसन्द करता है और ऐसा कोई लम्हा नहीं है जिस में इन्सान **अल्लाह** के क़रीब तर हो जाता हो जब कि वोह सर ब सुजूद हो जाता है।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : इन्सान सजदे की हालत में रब से बहुत क़रीब हो जाता है लिहाज़ा सुजूद में बहुत ज़ियादा दुआएं मांगा करो।

1.....इस नुक्ते पर तफ़्सील के लिये मुलाहज़ा कीजिये **अवारिफुल मआरिफ़** अज़ शैखुल मशाइख़ हज़रते सोहर वर्दी।

2.....مسلم کتاب الایمان، باب اطلاق رسم الکفر...الخ، ص ٥٦، الحدیث ١٣٣ - (٨١)

3.....हज़रते यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ो'फ़ और बुढ़ापे की वज्ह से रुकूअ व सुजूद कामिल तौर पर अदा नहीं कर पाते थे इस लिये कामिल रुकूअ व सुजूद करने वालों पर रश्क फ़रमाते। **इल्मिय्या**

बाब 49

तारिके नमाज़ पर अज़ाब

तर्के सलात पर वईदें

दोज़ख़ियों के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर देते हुवे रब्बे जलील ने फ़रमाया कि उन से जहन्नम में येह पूछा जाएगा कि "तुम को जहन्नम में क्या चीज़ ले गई वोह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे और न मिस्कीनों को खाना खिलाने वालों में से थे बल्कि बहूस करने वालों के साथ बहूस किया करते थे।"[1]

हज़रते अहमद رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि आदमी और कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़, नमाज़ का छोड़ देना है।[2]

सिह़ाहे सित्ता की चन्द अहादीस

मुस्लिम की रिवायत है कि आदमी और शिर्क या कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ का छोड़ देना है।[3]

अबू दावूद और निसाई की रिवायत है कि बन्दे और कुफ़्र के दरमियान नमाज़ छोड़ देने के सिवा और कोई फ़र्क़ नहीं।[4]

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान फ़र्क़ तर्के नमाज़ है।[5]

इब्ने माजा की रिवायत है कि बन्दे और कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ का छोड़ देना है।[6]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई ? वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे। (پ۲۹، المدثر:۴۲-۴۵)

2 ......مسند احمد، مسند جابر بن عبداللہ، ۵/۱۹۹، الحدیث ۱۵۱۸۵

3 ......مسلم، کتاب الایمان، باب اطلاق اسم الکفر...الخ، ص ۵۷، الحدیث ۱۳۴ - (۸۲)

4 ...... نسائی، کتاب الصلاۃ، باب الحکم فی تارک الصلاۃ، ص ۸۴، الحدیث ۴۶۱

5 ......ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی ترک الصلاۃ، ۴/۲۸۱، الحدیث ۲۶۲۷

6 ......ابن ماجہ، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فیمن ترک الصلاۃ، ۱/۵۶۴، الحدیث ۱۰۷۸

तिर्मिज़ी वग़ैरा की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हमारे और इन के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ का है, जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने काफ़िरों जैसा काम किया।(1)

त़बरानी की रिवायत है कि जिस ने अ़मदन नमाज़ छोड़ दी उस ने खुल्लम खुल्ला काफ़िरों जैसा काम किया है।(2)

एक रिवायत में है कि बन्दे और शिर्क या कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ तर्के नमाज़ है, जब उस ने नमाज़ छोड़ दी तो काफ़िरों जैसा काम किया।(3)

दूसरी रिवायत में है कि बन्दे और शिर्क या कुफ़्र के दरमियान नमाज़ छोड़ने के सिवा और कोई फ़र्क़ नहीं है, जिस ने "नमाज़" छोड़ दी उस ने मुशरिकों जैसा काम किया।(4)

एक और रिवायत में है कि उस ने इस्लाम को बरह्ना कर दिया और इस्लाम की तीन बुन्यादें हैं जिन पर इस्लाम की इमारत क़ाइम है, जिस ने इन में से एक को तर्क कर दिया, वोह काफ़िर है और उस का क़त्ल कर देना ह़लाल है, कलिमए शहादत पढ़ना या'नी अल्लाह तआ़ला की वह्दानिय्यत की गवाही देना, फ़र्ज़ नमाज़ अदा करना और रमज़ान के रोज़े रखना।(5)

दूसरी रिवायत जिस को अस्नादे ह़सन के साथ नक़्ल किया गया है, येह है कि जिस ने इन में से किसी एक को छोड़ दिया वोह अल्लाह तआ़ला का मुन्किर है, उस से कोई ह़ीला और बदला क़बूल नहीं किया जाएगा और उस का ख़ून और माल लोगों के लिये ह़लाल है।(6)

त़बरानी वग़ैरा में वोह ब त़रीक़े ह़सन मरवी है : ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा है कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सात बातों की वसिय्यत फ़रमाई : किसी को अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक न ठहराओ चाहे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या जला दिया

---

1 ......ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی ترک الصلاۃ، ٤/٢٨٢، الحدیث ٢٦٣٠

2 ......المعجم الاوسط ، ٢/٢٩٩، الحدیث ٣٣٤٨

3 ......سنن الدارمی، کتاب الصلاۃ ، باب فی تارک الصلاۃ ، ١/٣٠٧، الحدیث ١٢٣٣ و ابن ماجه، کتاب الصلاۃ ، باب ماجاء فیمن ترک الصلاۃ ، ١/٥٦٤، الحدیث ١٠٧٩ ماخوذًا

4 ......ابن ماجه ، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فیمن ترک الصلاۃ ، ١/٥٦٥، الحدیث ١٠٨٠

5 ......مسند ابی یعلی، مسند ابن عباس ، ٢/٣٧٨ ، الحدیث ٢٣٤٥

6 ......الترغیب و الترهیب ، کتاب الصلاۃ، الترهیب من ترک الصلاۃ...الخ، ١/٢٦٠، الحدیث ٨٢١

जाए या फांसी पर लटका दिया जाए, अ़मदन नमाज़ न छोड़ो क्यूंकि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी वोह दीन से निकल गया, गुनाह और नाफ़रमानी न करो येह **अल्लाह** तआ़ला के क़हर के अस्बाब हैं और शराब न पियो क्यूंकि येह गुनाहों का मम्बअ़ है।[1] (अल ह़दीस)

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم तर्के नमाज़ के इ़लावा किसी और अ़मल के छोड़ने को कुफ़्र नहीं समझते थे।[2]

सह़ीह़ ह़दीस में है कि बन्दे और कुफ़्र व ईमान के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ है, जब उस ने नमाज़ छोड़ दी तो गोया उस ने शिर्क किया।[3]

बज़्ज़ाज़ की रिवायत है कि जो नमाज़ अदा नहीं करता उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं है और जिस का वुज़ू सह़ीह़ नहीं है उस की नमाज़ नहीं।[4]

त़बरानी की रिवायत है कि जिस शख़्स में अमानत नहीं उस का ईमान नहीं जिस का वुज़ू सह़ीह़ नहीं, उस की नमाज़ नहीं और जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी उस का दीन नहीं रहा, जैसे वुजूद में सर का मक़ाम है इसी त़रह़ दीन में नमाज़ का मक़ाम है।[5]

इब्ने माजा और बैहक़ी में ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि मुझे मेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वसिय्यत फ़रमाई : **अल्लाह** तआ़ला के साथ शिर्क न कर अगर्चे तुझे काट दिया जाए और जला दिया जाए, फ़र्ज़ नमाज़ अ़मदन न छोड़ क्यूंकि जिस ने अ़मदन नमाज़ छोड़ दी वोह हमारे ज़िम्मे से निकल गया और शराब न पी क्यूंकि येह हर बुराई की कुन्जी है।[6]

मुस्नदे बज़्ज़ाज़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से मरवी है : आप ने फ़रमाया : जब मेरी पुतलियों की सिह़्ह़त के बा वुजूद मेरी बीनाई ज़ाएअ़ हो गई तो मुझ से कहा गया कि आप कुछ नमाज़ छोड़ दें, हम आप का इलाज करते हैं, मैं ने कहा : ऐसा नहीं होगा क्यूंकि मैं ने

---

1 ......الاحاديث المختارة، مسند انس بن مالك، ٢٨٧/٨، الحديث ٣٥١

2 ......ترمذی، كتاب الايمان، باب ماجاء فی ترك الصلاة ، ٢٨٢/٤، الحديث ٢٦٣١

3 ......ابن ماجه ، كتاب الصلاة ، باب ماجاء فيمن ترك الصلاة ، ٥٦٥/١،الحديث ١٠٨٠

4 ......مسند البزار، ١٧٦/١٥، الحديث ٨٥٣٩

5 ......المعجم الاوسط ، ٦٢٦/١، الحديث ٢٢٩٢

6 ......ابن ماجه ، كتاب الفتن، باب الصبر على البلاء ، ٣٧٦/٤، الحديث ٤٠٣٤

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है, आप ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ छोड़ दी वोह **अल्लाह** तआला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि **अल्लाह** तआला उस पर नाराज़ होगा।[1]

तबरानी की एक रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिसे कर के मैं जन्नत में जाऊं। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला के साथ शिर्क न कर अगर्चे तुझे अ़ज़ाब दिया जाए और ज़िन्दा जला दिया जाए, वालिदैन का फ़रमां बरदार बन, अगर्चे वोह तुझे तेरे तमाम मालो अस्बाब से बे दख़्ल कर दें और जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ क्यूंकि जिस ने दीदा दानिस्ता नमाज़ छोड़ दी वोह **अल्लाह** तआला के ज़िम्मे से निकल गया।[2]

एक और रिवायत में है : **अल्लाह** तआला के साथ शिर्क न कर अगर्चे तुझे क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए, वालिदैन की नाफ़रमानी न कर अगर्चे वोह तुझे तेरे अहलो इ़याल और माल से निकाल दें, फ़र्ज़ नमाज़ को अ़मदन न छोड़ क्यूंकि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी वोह **अल्लाह** तआला के ज़िम्मे से निकल गया, शराब कभी न पी क्यूंकि इस का पीना हर बुराई की जड़ है, ख़ुद को ''ना फ़रमानियों'' से बचा क्यूंकि इन से **अल्लाह** तआला नाराज़ हो जाता है, अपने आप को जंग के दिन भगोड़ा बनने से बचा अगर्चे लोग हलाक हो जाएं और लोग मर जाएं मगर तू साबित क़दम रह, अपनी ताक़त के मुताबिक़ अपने अहलो इ़याल पर ख़र्च कर, इन की तादीब से कभी ग़ाफ़िल न हो और इन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा दिलाता रह।[3]

सहीह इब्ने हब्बान में रिवायत है कि बादल वाले दिन नमाज़ जल्दी पढ़ा लिया करो क्यूंकि जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया।[4]

''तबरानी'' में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कनीज़ हज़रते उमैमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि मैं एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर पर पानी डाल रही थी कि एक शख़्स ने आ कर कहा : मुझे वसिय्यत फ़रमाई जाए, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला के साथ किसी को शरीक न बना अगर्चे तुझे काट दिया जाए और जला दिया जाए, वालिदैन की

---

1 ......المعجم الكبير، ١١/٢٣٤، الحديث ١١٧٨٢

2 ......المعجم الاوسط، ٦/٤٩، الحديث ٧٩٥٦

3 ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث معاذ بن جبل، ٨/٢٤٩، الحديث ٢٢١٣٦

4 ......صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة باب الوعيد على ترك الصلاة، ٣/١٢، الجزء الثالث، الحديث ١٤٦١

"ना फ़रमानी" न कर अगर्चे वोह तुझे तेरे घर और मालो दौलत के छोड़ने का कहें तो सब कुछ छोड़ दे, शराब कभी न पी क्यूंकि येह हर बुराई की कुन्जी है और फ़र्ज़ नमाज़ कभी भी जान बूझ कर न छोड़ क्यूंकि जिस ने ऐसा किया वोह अल्लाह और उस के रसूल के ज़िम्मे से निकल गया।(1)

अबू नुऐम की रिवायत है कि जिस शख़्स ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी, अल्लाह तआला उस का नाम "जहन्नम" के उस दरवाज़े पर लिख देता है जिस में से उसे दाख़िल होना होता है।(2)

तबरानी और बैहक़ी की रिवायत है कि जिस ने नमाज़ छोड़ दी गोया उस का माल और अहलो इयाल (सब कुछ) ख़त्म हो गया।(3)

हाकिम ने हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ गुरौहे कुरैश ! तुम नमाज़ ज़रूर अदा करो और ज़कात अदा करो, नहीं तो अल्लाह तुम्हारी तरफ़ ऐसे शख़्स को भेजेगा जो दीन के लिये तुम्हारी गर्दनें उड़ा देगा।(4)

बज़्ज़ाज़ की रिवायत है कि जो शख़्स नमाज़ अदा नहीं करता उस का दीन में कोई हिस्सा नहीं, और जिस का वुज़ू सहीह नहीं उस की नमाज़ सहीह नहीं।(5)

मुस्नदे अहमद की एक मुर्सल रिवायत है कि अल्लाह तआला ने इस्लाम में चार चीज़ें फ़र्ज़ की हैं, जो शख़्स इन में से तीन को पूरा करता है मगर एक को छोड़ देता है उसे अज़ाब से कोई चीज़ नहीं बचाएगी ता आंकि वोह चारों पर अमल करे, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज।(6)

---

1 ......المعجم الكبير، ٢٤/١٩٠، الحديث ٤٧٩

2 ......كنزالعمال ، كتاب الصلاة ، الباب الاول...الخ، الفصل الثانى...الخ، الترهيب عن ترك الصلاة ، ٤/١٣٢، الجزء السابع، الحديث ١٩٠٨٦ وحلية الاولياء ، مسعر بن كدام ، ٧/٢٩٩، الحديث ١٠٥٩٠

3 ......شعب الايمان،الحادى و العشرون من شعب الإيمان، باب فى الصلوات، فصل الصلوات الخمس فى الجماعة، ٣/٥٢، الحديث ٢٨٤٤ وكنزالعمال، كتاب الصلاة الباب الاول...الخ، الفصل الثانى...الخ، الترهيب عن ترك الصلاة ، ٤/١٣٢، الجزء السابع، الحديث ١٩٠٨٥

4 ......المستدرك للحاكم ، كتاب الايمان والنذور، باب من قال انا برئ...الخ، ٥/٤٢٥، الحديث ٧٨٨٩

5 ...... مسند البزار، ١٥/١٧٦، الحديث ٨٥٣٩

6 ...... مسند احمد ، مسند الشاميين، حديث زياد بن نعيم...الخ ، ٦/٢٣٦، الحديث ١٧٨٠٤

अस्बहानी की रिवायत है कि जिस ने अ़मदन नमाज़ छोड़ दी, **अल्लाह** तआ़ला उस के आ'माल को बरबाद कर देता है और उसे अपने ज़िम्मे से निकाल देता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** की बारगाह में तौबा करे।(1)

त़बरानी की रिवायत है कि जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने खुल्लम खुल्ला कुफ़्र किया।(2)

मुस्नदे अह़मद में रिवायत है कि अ़मदन नमाज़ को न छोड़ो क्यूंकि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी उस से **अल्लाह** और रसूल का ज़िम्मा ख़त्म हो गया।(3)

इब्ने अबी शैबा और तारीख़े बुख़ारी में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मौक़ूफ़ रिवायत है : जिस ने नमाज़ न पढ़ी वोह काफ़िर है।(4)

मुह़म्मद बिन नस्र और इब्ने अ़ब्दुल बर्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अपनी मसानीद में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मौक़ूफ़ रिवायत करते हैं कि जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया।(5)

इब्ने नस्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मौक़ूफ़ रिवायत की है कि जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस का दीन नहीं है।(6)

इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक मौक़ूफ़ रिवायत की है कि जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी वोह काफ़िर है।(7)

एक और रिवायत में है जो अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मौक़ूफ़ है कि जो नमाज़ अदा नहीं करता उस का ईमान नहीं है और जिस का वुज़ू नहीं उस की नमाज़ नहीं।(8)

---

1 ......الترغيب و الترهيب، كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة...الخ، ٢٦١/١، الحديث ٨٢٨

2 ......المعجم الاوسط ، ٢٩٩/٢، الحديث ٣٣٤٨

3 ......مسند احمد، من مسند القبائل ، حديث ام ايمن رضى الله عنها ، ٣٨٦/١٠ ، الحديث ٢٧٤٣٣

4 ......مصنف ابن ابى شيبة ، كتاب الايمان و الرء ويا ، باب ٦ ، ٢٢٨/٧، الحديث ٨٥

5 ......تعظيم قدر الصلاة لمحمد بن نصرالمروزى، باب ذكر اكفارتارك الصلاة ، ٩٠٠/٢، الحديث ٩٣٩، سورة البقرة، تحت الآية:٢٥٣، ٧١٣/١ و صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة ، باب الوعيد على ترك الصلاة، ١٣/٣، الحديث ١٤٦١

6 ......تعظيم قدر الصلاة لمحمد بن نصرالمروزى، باب ذكر اكفارتارك الصلاة، ٨٩٨/٢، الحديث ٩٣٥ و شعب الايمان، الحادى و العشرون من شعب الإيمان، باب فى الصلوات، ٣٩/٣، الحديث ٢٨٠٧ والدرالمنثور، سورة البقرة ، تحت الآية:٢٥٣، ٧١٣/١

7 ......الترغيب و الترهيب، كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة...الخ، ٢٦١/١، الحديث ٨٣٣ و الدر المنثور، سورة البقرة، تحت الآية:٢٥٣، ٧١٣/١

8 .....الترغيب و الترهيب، كتاب الصلاة، الترهيب من ترك الصلاة...الخ، ٢٦١/١، الحديث ٨٣٤

इब्ने अबी शैबा की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया।(1)

मुहम्मद बिन नस्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मैं ने इस्हाक़ से सुना, वोह कहते थे : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह हदीसे सहीह साबित है कि आप ने फ़रमाया : तारिके नमाज़ काफ़िर है।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुक़द्दसा से ले कर आज तक तमाम उ़लमा की राए है कि तारिके नमाज़ जो बिग़ैर किसी उ़ज़्र के नमाज़ नहीं पढ़ता हत्ता कि नमाज़ का वक़्त निकल जाता है तो वोह काफ़िर है।(3)

हज़रते अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि तर्के नमाज़ "कुफ़्र" है जिस में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं है।

फ़रमाने इलाही है :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ (4)

पर उन के बा'द बुरे लोग जा नशीन हुवे जिन्हों ने नमाज़ों को ज़ाएअ़ किया और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी की पस अ़न क़रीब वोह ग़य्य में जाएंगे मगर जिस ने तौबा की (वोह महफ़ूज़ रहेगा)।

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ज़ाएअ़ करने का येह मा'ना नहीं है कि बिल्कुल नमाज़ पढ़ते ही नहीं बल्कि येह कि इसे मुअख़्ख़र कर के पढ़ते हैं।

ज़ियाए सलात का क्या मा'ना है ?

इमामुत्ताबिईन हज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि इस आयत में ज़ियाअ़ से येह मुराद है कि ज़ोहर की अ़स्र के वक़्त और अ़स्र की मग़रिब के वक़्त और मग़रिब की

---

1 .....مصنف ابن ابی شیبة ، کتاب الایمان والرء ویا ، باب ٦ ، ٧/٢٢٢، الحدیث ٤٥

2 .....تعظیم قدر الصلاة لمحمد بن نصرالمروزی، باب ذکر النهی عن قتل المسلمین...الخ، ٢/٩٢٩، الحدیث ٩٩٠ و الترغیب والترهیب ، کتاب الصلاة، الترهیب من ترك الصلاة...الخ ، ١/٢٦١، الحدیث ٨٣٤

3 .....المرجع السابق

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन के बा'द इन की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे तो अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे मगर जो ताइब हुवे। (پ١٦، مریم: ٥٩، ٦٠)

इशा के वक़्त और इशा की फ़ज्र के वक़्त और फ़ज्र की सूरज के तुलूअ़ होने के वक़्त के क़रीब पढ़ी जाए, जो शख़्स इस त़रीक़े से नमाज़ें पढ़ता हुवा मर जाए और उस ने तौबा न की तो अल्लाह तआ़ला ने उस के लिये "ग़य्य" का वा'दा फ़रमाया है जो जहन्नम की एक गहरी और अ़ज़ाब से भरपूर वादी है।

फ़रमाने इलाही है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ (1)

ऐ ईमान वालो तुम्हें तुम्हारे माल और तुम्हारी अवलाद अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जिस ने ऐसा किया पस वोह लोग ख़सारा पाने वाले हैं।

मुफ़स्सिरीन की एक जमाअ़त का क़ौल है : यहां ज़िक्र से मुराद नमाज़ें हैं लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ के वक़्त अपने माल की वज्ह से जैसे इस की ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा में मश्ग़ूल हो कर नमाज़ से ग़ाफ़िल हो गया या अपनी अवलाद में मश्ग़ूल हो कर नमाज़ भूल गया वोह नुक़्सान पाने वालों में से है। इसी लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि क़ियामत के दिन इन्सान के सब आ'माल से पहले नमाज़ का मुह़ासबा होगा, अगर उस की नमाज़ें मुकम्मल हुईं तो वोह फ़लाह़ व कामरानी पा गया और अगर उस की नमाज़ें कम हो गईं तो वोह ख़ाइबो ख़ासिर है।(2)

और फ़रमाने इलाही है :

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ (3)

पस वैल है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ों से बे ख़बर हैं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह वोह लोग हैं जो नमाज़ों को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर के पढ़ते हैं।(4)

मुस्नदे अह़मद की ब सनदे सह़ीह़, त़बरानी और सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन नमाज़ का तज़्किरा फ़रमाया और फ़रमाया : जिस ने इन नमाज़ों को पाबन्दी से अदा किया, वोह नमाज़ उस शख़्स के लिये क़ियामत के दिन नूर, हुज्जत

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी अवलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं। (پ۲۸، المنٰفقون : ۹)

2......المعجم الاوسط، ۳/۳۲، الحديث ۳۷۸۲

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं। (پ۳۰، الماعون:۴،۵)

4......مسند ابی يعلی، مسند سعد بن ابی وقاص، ۱/۳۴۱، الحديث ۸۱۸

और नजात होगी और जिस शख़्स ने नमाज़ों को अदा न किया क़ियामत के दिन उस के लिये नमाज़, नूर, हुज्जत और नजात न होगी और वोह क़ियामत के दिन क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा।[1]

बा'ज़ उ़लमा का कहना है : इन लोगों के साथ तारिके नमाज़ इस लिये उठाया जाएगा कि अगर उस ने अपने मालो अस्बाब में मश्ग़ूलिय्यत की वज्ह से नमाज़ नहीं पढ़ी तो वोह क़ारून की त़रह़ हो गया और उसी के साथ उठाया जाएगा, अगर मुल्क की मश्ग़ूलिय्यत में नमाज़ नहीं पढ़ी तो फ़िरऔन की त़रह़ है और उसी के साथ उठाया जाएगा, अगर वज़ारत की मश्ग़ूलिय्यत नमाज़ से मानेअ़ हुई तो वोह हामान की त़रह़ है और उसी के साथ उठेगा, अगर तिजारत की वज्ह से नमाज़ नहीं पढ़ी तो वोह उबय्य बिन ख़लफ़ ताजिरे मक्का की त़रह़ है और उसी के साथ उठाया जाएगा।

बज़्ज़ाज़ ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस आयत के मा'ना पूछे "जो लोग अपनी नमाज़ों से बे ख़बर हैं" तो आप ने फ़रमाया कि येह वोह लोग हैं जो नमाज़ों को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर देते हैं।[2]

अबू या'ला ने सनदे ह़सन के साथ मुसअ़ब बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल अपनी मुस्नद में नक़्ल किया है। मुसअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद से अ़र्ज़ की अब्बाजान ! आप ने **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान पर ग़ौर किया है : "जो लोग अपनी नमाज़ों से बे ख़बर हैं" हम में से कौन है जो नहीं भूलता और उस के ख़यालात मुन्तशिर नहीं होते ? उन्हों ने जवाब दिया इस का मत़लब येह नहीं बल्कि इस का मत़लब नमाज़ों का वक़्त ज़ाएअ़ कर देना है।[3]

वैल के मा'ना सख़्त अ़ज़ाब है, एक क़ौल येह भी है कि वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है अगर उस में दुन्या के पहाड़ डाले जाएं तो वोह भी इस की शदीद गर्मी की वज्ह से पिघल जाएं और येह वादी उन लोगों का मस्कन है जो नमाज़ों में सुस्ती करते हैं और इन को इन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर के पढ़ते हैं, हां अगर वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ और तौबा कर लें और गुज़श्ता आ'माल पर पशेमान हो जाएं तो और बात है।

---

1 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العا ص، ٢/٥٧٤، الحديث ٦٥٨٧

2 ......مسند البزار، ٣/٣٤٤، الحديث١١٤٥

3 ......مسند ابی یعلی، مسند سعد بن ابی وقاص، ١/٣٠٠، الحديث ٧٠٠

क़ज़ाए सलात पर वईदें

सहीह़ इब्ने ह़ब्बान की रिवायत है कि जिस की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो गोया उस का माल और घराना तबाह हो गया।(1)

हाकिम की रिवायत है कि जिस ने बिग़ैर किसी उ़ज़्रे शरई के दो नमाज़ों को यक्जा किया तो वोह कबीरा गुनाहों के दरवाज़े में दाख़िल हुवा।(2)

सिह़ाहे सित्ता की रिवायत है जिस की नमाज़े अ़स्र क़ज़ा हो गई तो गोया उस के अहलो इयाल और माल तबाह हो गया।(3)

इब्ने ख़ुज़ैमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी "सहीह़" में इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया है कि इमामे मालिक का क़ौल है कि इस से मुराद वक़्त का निकल जाना है।(4)

निसाई की रिवायत है कि नमाज़ों में एक नमाज़ ऐसी है कि जिस की वोह नमाज़ क़ज़ा हो गई तो गोया उस के अहलो इयाल और मालो मताअ़ सब तबाह हो गया और वोह नमाज़े अ़स्र है।(5)

मुस्लिम और निसाई की रिवायत है कि येह नमाज़े अ़स्र तुम से पहले लोगों पर पेश की गई लेकिन उन्हों ने इसे खो दिया, पस तुम में से जो शख़्स इसे पाबन्दी से पढ़ता है उसे दो गुना सवाब मिलता है और इस नमाज़ के बा'द सितारे नज़र आने तक कोई नमाज़ नहीं है (6) (मग़रिब का जब वक़्त शुरूअ़ होता है तो बा'ज़ सितारों पर ताबिन्दगी आ जाती है)

अह़मद, बुख़ारी और निसाई में रिवायत है कि जिस ने नमाज़े अ़स्र छोड़ दी उस का अ़मल बरबाद हो गया।(7)

---

1 ......صحیح ابن حبان، کتاب الصلاة ، باب الوعید علی ترك الصلاة ، ٣/١٥، الجزء الثالث ،الحدیث١٤٦٧

2 ......المستدرك للحاكم ،كتاب الامامة وصلاة الجماعة ، باب الزجر عن الجمع...الخ،١/٥٦٤، الحدیث ١٠٥٨

3 ......بخاری، کتاب مواقیت الصلاة ، باب اثم من فاتته العصر، ١/٢٠٣، الحدیث ٥٥٢

4 ......صحیح ابن خزیمة،١/١٧٣، تحت الحدیث٣٣٥

5 ......نسائی، کتاب الصلاة ، باب صلاة العصر فی السفر، ص٨٦، الحدیث ٤٧٦

6 ......مسلم ،کتاب الصلاة، باب الاوقات التی نهی عن الصلاة فیها، ص٤١٤، الحدیث٢٩٢ـ (٨٣٠)

7 ......بخاری ،کتاب مواقیت الصلاة، باب من ترك العصر، ١/٢٠٣، الحدیث ٥٥٣

मुस्नदे अह़मद और इब्ने अबी शैबा की रिवायत है कि जिस ने नमाज़े अ़स्र छोड़ दी, अ़मदन बैठा रहा यहां तक कि नमाज़ क़ज़ा हो गई तो बेशक उस का अ़मल तबाह हो गया।(1)

इब्ने अबी शैबा की मुर्सल रिवायत है कि जिस ने नमाज़े अ़स्र छोड़ दी, यहां तक कि सूरज गुरूब हो गया और उस के लिये कोई उ़ज़्र भी नहीं था तो गोया उस का अ़मल बरबाद हो गया।(2)

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत है कि तुम में से किसी एक का अहल और मालो मताअ़ से तन्हा रह जाना नमाज़े अ़स्र के क़ज़ा हो जाने से बेहतर है।(3)

त़बरानी और अह़मद की रिवायत है कि जिस ने जान बूझ कर नमाज़े अ़स्र छोड़ दी यहां तक कि सूरज गुरूब हो गया तो गोया उस के अहलो इयाल और माल बरबाद हो गया।(4)

शाफ़ेई और बैहक़ी की रिवायत है कि जिस की एक नमाज़ फ़ौत हो गई गोया उस का घराना और माल हलाक हो गया।(5)

बुख़ारी ने ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अकसर अपने सह़ाबए किराम से फ़रमाया करते थे कि तुम में से किसी ने ख़्वाब देखा है तो बयान करे। लोग अपने ख़्वाब आप को सुनाया करते। एक सुब्ह़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें बतलाया कि मेरे पास दो आने वाले आए और उन्हों ने मुझे जगा कर कहा कि हमारे साथ चलिये ! मैं उन के साथ चल पड़ा यहां तक कि हम ने ऐसे आदमी को देखा जो लैटा हुवा था और दूसरा एक भारी पथ्थर लिये खड़ा था। जब वोह भारी पथ्थर उस के सर पर मारता तो उस सोने वाले का सर रेज़ा रेज़ा हो जाता, फिर वोह पथ्थर उठा लेता है और उस आदमी का सर सह़ीह़ हो जाता है जैसा कि पहले था, वोह फिर पथ्थर मारता है और उस का पहले जैसा ह़श्र हो जाता है, मैं ने उन दोनों से कहा : سُبْحٰنَ اللّٰہ येह क्या है ? उन्हों ने मुझे कहा : अभी और चलिये ! और चलिये !

फिर हम एक ऐसे आदमी के पास आए जो पीठ के बल लैटा हुवा था और दूसरा हाथ में लोहे की सन्सी लिये खड़ा था और सोने वाले के चेहरे की एक जानिब सन्सी से उस की बाछ को

---

1 ......مسند احمد، من مسند القبائل ، ومن حديث ابی الدرداء عويمر، ١٠/٤١٨،الحديث ٢٧٥٦٢

2 ......مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الايمان والرؤيا، باب ٦، ٧/٢٢٣، الحديث٤٩

3 ......مصنف عبدالرزاق، كتاب الصلاة، باب تفريط مواقيت الصلاة، ١/٤٢٨، الحديث ٢٢٢٤

4 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب،٢/٢٥٧، الحديث ٤٨٠٥

5 ......شعب الايمان، باب الحادی والعشرين...الخ، ما فضل الصلوات الخمس...الخ، ٣/٥٣، الحديث ٢٨٤٤

गुद्दी की त़रफ़ खींचता है और उस के नथनों और आंखों से भी येही सुलूक करता है और उस के येह आ'ज़ाए बदन गुद्दी की त़रफ़ मुड़ जाते हैं फिर वोह दूसरी सम्त से आता है और उस के साथ वोही सुलूक करता है जो पहले कर चुका है। जब वोह दूसरी जानिब जाता है तो पहली जानिब चेहरा सह़ीह़ हो जाता है, फिर वोह वापस आता है और पहली त़रफ़ से उस के चेहरे को वोही अज़िय्यत देता है, मैं ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه येह क्या है? उन्हों ने कहा : अभी और चलिये और चलिये ! हम चल पड़े और तन्नूर जैसी एक चीज़ देखी, रावी कहता है कि मुझे ऐसे याद पड़ता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया : इस में से मिली जुली आवाज़ें और शोर उठ रहा था, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम ने देखा उस में नंगे मर्द और औ़रतें थीं, अचानक उन के नीचे से आग का शो'ला निकलता, जूंही येह शो'ला निकलता वोह शदीद घबराहट के आ़लम में आहो फ़ुग़ां शुरूअ़ कर देते, मैं ने पूछा : येह कौन हैं? उन्हों ने मुझ से कहा : अभी और चलिये और चलिये !

हम फिर रवाना हो गए और तब एक ऐसी नहर पर पहुंचे जो मैं समझता हूं कि ख़ून की त़रह़ सुर्ख़ थी, उस में एक आदमी तैर रहा है और नहर के किनारे पर एक आदमी बहुत से पथ्थर लिये खड़ा है, वोह उसे पथ्थर मारता है और वोह तैरने लगता है। जब भी वोह उस के क़रीब आता है वोह उसे पथ्थर मारता है। मैं ने उन से पूछा : येह क्या है? उन्हों ने कहा : अभी और चलिये और चलिये। हम फिर चल दिये और एक ऐसे बद सूरत आदमी के पास आए कि तुम ने उस जैसा बद सूरत नहीं देखा होगा, वोह आग भड़काता है और फिर उस के इर्द गिर्द भागने लगता है, मैं ने उन से पूछा : येह क्या है? उन्हों ने कहा : चलिये और चलिये ! हम फिर चल पड़े और ऐसे बाग़ के क़रीब पहुंचे जिस में त़वीलो अ़रीज़ सब्ज़ा और हर क़िस्म के पौदे, फूल वग़ैरा लगे थे और बाग़ के पीछे एक त़वीलुल क़ामत आदमी है जिस का सर आस्मान से छू रहा है और उस के चारों त़रफ़ छोटे छोटे बच्चे जम्अ़ हैं। मैं ने पूछा : येह क्या है? और येह सब कौन हैं? उन दो फ़िरिश्तों ने मुझे कहा : अभी और चलिये और चलिये !

फिर हम ने एक अ़ज़ीम दरख़्त देखा, मैं ने आज तक उस जैसा त़वील और ह़सीन दरख़्त नहीं देखा है, उन्हों ने मुझ से कहा कि इस पर चढ़िये। चुनान्चे, उस पर चढ़ कर एक ऐसे शहर में पहुंचे जो सोने चांदी की ईंटों से बना हुवा था, हम ने दरवाज़ा खोलने को कहा तो हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया, वहां हमें कुछ इन्तिहाई ह़सीनो जमील और कुछ इन्तिहाई बद सूरत आदमी मिले, उन दो फ़िरिश्तों ने उन आदमियों से कहा कि तुम जाओ और इस नहर में घुस जाओ।

आप ने फ़रमाया : तब मैं ने देखा, एक सफ़ेद पानी की नहर बह रही थी, वोह लोग नहर की त़रफ़ चल दिये, जब वापस आए तो हम ने देखा उन की बद सूरती ज़ाइल हो चुकी थी और वोह इन्तिहाई ख़ूब सूरत बन गए थे।

मुझ से उन दो फ़िरिश्तों ने कहा कि येह जन्नते अ़द्न है और येह आप की मन्ज़िल है, आप ने फ़रमाया : फिर मैं ने निगाह उठा कर ऊपर देखा तो मुझे सफ़ेद बादल की त़रह़ एक मह़ल नज़र आया। उन्हों ने मुझे कहा : येह आप का घर है, मैं ने उन से कहा : अल्लाह तआ़ला तुम्हें बरकतों से नवाज़े, मुझ को इजाज़त दो ताकि मैं इस में दाख़िल होऊं, उन्हों ने कहा : अभी नहीं लेकिन जाएंगे आप ही ! फिर मैं ने उन से कहा : आज रात मैं ने बहुत से अ़जाइब देखे हैं, येह जो कुछ मैं ने देखा, क्या है ? उन्हों ने कहा : हम अभी आप को बतलाते हैं :

पहले जिस आदमी को आप ने देखा कि उस का सर पथ्थर से कुचला जा रहा है, वोह ऐसा शख़्स है जो कुरआने मजीद पढ़ कर उस पर अ़मल नहीं करता और फ़र्ज़ नमाज़ों से सो जाता है, अदा नहीं करता, वोह आदमी जिस की बाछें और नथने और आंखें सन्सी से गुद्दी की त़रफ़ मोड़ी जा रही हैं, वोह ऐसा आदमी है जो झूट घड़ता है और झूटी बातें फैलाता है और आप ने तन्नूर जैसी इमारत में जो नंगे मर्द और औ़रतें देखी हैं वोह ज़ानी मर्द व ज़ानिय्या औ़रतें हैं और जिस आदमी को आप ने ख़ून की नहर में तैरते और पथ्थर खाते देखा है वोह सूदख़ोर है और जिस आदमी को आप ने आग भड़काते और उस के गिर्द घूमते देखा है वोह मालिक है जो जहन्नम का दारोग़ा है। आप ने जिस त़वील आदमी को बाग़ में देखा है वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और उन के इर्द गिर्द जो बच्चे थे वोह ऐसे बच्चे हैं जो बचपन ही में दीने फ़ित़रत पर फ़ौत हुवे हैं।

बा'ज़ मुसलमानों ने पूछा : या रसूलल्लाह ! मुशरिकों के नन्हे मुन्ने फ़ौत हो जाने वाले बच्चे भी वहां होंगे ? आप ने फ़रमाया : हां।

और जिस जमाअ़त के लोगों का आप ने एक पहलू ख़ूब सूरत और दूसरा पहलू बद सूरत देखा है, येह वोह लोग हैं जो अपने आ'माल में नेकियां बुराइयां दोनों साथ लाते हैं और अल्लाह तआ़ला उन की ग़लत़ियों से दर गुज़र फ़रमाता है।(1)

बज़्ज़ाज़ की रिवायत में इस त़रह़ है कि फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी क़ौम पर तशरीफ़ लाए जिन के सर पथ्थर से फोड़े जा रहे थे, जब वोह रेज़ा रेज़ा हो जाते तो फिर अपनी अस्ली ह़ालत पर आ जाते और येही अ़ज़ाब इन्हें बराबर दिया जा रहा है, आप ने पूछा : जिब्रील

1 ......بخاری، کتاب التعبیر، باب تعبیر الرؤیا...الخ، ۴/۴۲۵، الحدیث ۷۰۴۷

येह कौन हैं ? जिब्रील ने कहा : येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ पढ़ने से भारी हो जाते या'नी येह नमाज़ नहीं पढ़ते थे ।(1)

मर्दे मोमिन की नमाज़

ख़त़ीब और इब्नुल नज्जार की रिवायत है कि नमाज़ इस्लाम की अ़लामत है जिस का दिल नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहा और उस ने तमाम शराइत़ के साथ सह़ीह़ वक़्त पर और सह़ीह़ त़रीक़े से नमाज़ पढ़ी, वोह मोमिन है ।(2)

इब्ने माजा की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रब्बे ज़ुल जलाल का इरशाद है : मैं ने आप की उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और मैं ने अपने लिये वा'दा कर लिया है कि जो शख़्स इन नमाज़ों को इन के अवक़ात में अदा करेगा उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो इन की पाबन्दी नहीं करेगा, मेरा उस शख़्स के लिये कोई वा'दा नहीं है ।(3)

अह़मद और ह़ाकिम की रिवायत है कि जिस शख़्स ने येह जान लिया कि नमाज़ उस पर वाजिब और ज़रूरी है और उस ने इसे अदा किया वोह जन्नत में जाएगा ।(4)

तिर्मिज़ी, निसाई और इब्ने माजा की ह़दीस है कि क़ियामत में सब से पहला अ़मल जिस का बन्दे से मुह़ासबा होगा वोह नमाज़ है, अगर नमाज़ें सह़ीह़ हुईं तो वोह कामयाब व कामरान हुवा और अगर नमाज़ों में नुक़्सान निकला तो वोह ख़ाइबो ख़ासिर हुवा, अगर उस के फ़राइज़ कम हो जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, देखो मेरे बन्दे की नफ़्ली इबादत है ? और नवाफ़िल से उस के फ़राइज़ को पूरा किया जाएगा फिर सारे आ'माल का दारो मदार नमाज़ के मुआ़मले में कामयाबी और नाकामी पर होगा ।(5)

निसाई की ह़दीस में है कि क़ियामत के दिन सब से पहले इन्सान से नमाज़ का मुह़ासबा किया जाएगा और सब से पहले लोगों में ख़ून का फ़ैसला किया जाएगा ।(6)

---

1 ......مسند البزار، ۱۷/۵، الحديث ۹۵۱۸

2 ......كنزالعمال، كتاب الصلاة، الباب الاول...الخ، الفصل الاول في الوجوب، ۱۱۳/٤، الجزء السابع، الحديث ۱۸۸٦٦

3 ......ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء في فرض الصلوات...الخ، ۱۷۰/۲، الحديث ۱٤۰۳

4 ......مسند احمد، مسند عثمان بن عفان، ۱۳۲/۱، الحديث ٤۲۳

5 ......ترمذى، كتاب الصلاة، باب ماجاء ان اول مايحاسب...الخ، ٤۲۲/۱، الحديث ٤۱۳

6 ......نسائى، كتاب تحريم الدم، باب تعظيم الدم، ص ٦٥۲، الحديث ۳۹۹۷

अह़मद, अबू दावूद, निसाई, इब्ने माजा और ह़ाकिम में येह ह़दीस है कि क़ियामत में सब से पहले इन्सान की नमाज़ का मुह़ासबा होगा, अगर पूरी हुई तो इन्हें मुकम्मल लिख दिया जाएगा और अगर कम हुई तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : देखो मेरे बन्दे की नफ़्ल इबादत है ? और उस से फ़र्ज़ इबादत मुकम्मल की जाएगी, फिर ज़कात का मुह़ासबा होगा और इसी त़रह़ फिर सारे आ'माल का।[1]

इब्ने अ़साकिर की ह़दीस है कि पहली वोह चीज़ जिस का बन्दे से अव्वल क़ियामत में मुह़ासबा किया जाएगा, उस की नमाज़ देखी जाएगी, अगर नमाज़ सह़ीह़ हुइ तो सारे आ'माल सह़ीह़ हो गए और अगर नमाज़ में नुक़्सान हुवा तो सारे आ'माल में नुक़्सान पाया जाएगा, फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा देखो मेरे बन्दे की नफ़्ली इबादत है ? अगर नफ़्ली इबादत होगी तो इस से फ़राइज़ पूरे किये जाएंगे, उस के बाक़ी फ़राइज़ का मुह़ासबा होगा येही **अल्लाह** तआ़ला की बख़्शिश व रह़मत का त़रीक़ा है।[2]

त़बरानी की ह़दीस है कि क़ियामत में सब से पहले इन्सान की नमाज़ों का सुवाल होगा अगर उस की नमाज़ें दुरुस्त हुईं तो सारे आ'माल दुरुस्त हुवे और वोह नजात पा गया, अगर उस की नमाज़ें सह़ीह़ न हुईं तो वोह नाकाम व ना मुराद हुवा।[3]

अह़मद, अबू दावूद, ह़ाकिम और निसाई की ह़दीस है : क़ियामत के दिन सब से पहले इन्सान के सारे आ'माल में नमाज़ की पुरसिश होगी, **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा ह़ालांकि वोह सब कुछ जानता है, कि मेरे बन्दे की नमाज़ें देखो, मुकम्मल हैं या ना मुकम्मल ? अगर मुकम्मल हुईं तो मुकम्मल लिख दिया जाएगा और अगर कुछ कम हुईं तो फ़रमान होगा : क्या मेरे बन्दे की नफ़्ल इबादत है ? अगर उस की नफ़्ल इबादत हुई तो हुक्म होगा कि इस से फ़राइज़ को मुकम्मल करो, फिर इसी त़रह़ दीगर आ'माल का मुह़ासबा होगा।[4]

त़यालिसी, त़बरानी और अज़्ज़ियाओ फ़िल मुख़्तारा की ह़दीस है कि मेरे पास रब तआ़ला का पैग़ाम ले कर जिब्रीले अमीन आए और कहा : रब तआ़ला फ़रमाता है : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं ने आप की उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जो शख़्स इन्हें सह़ीह़ वुज़ू से सह़ीह़ वक़्त में सह़ीह़ रुकूअ़ और सुजूद से अदा करेगा, मेरा उन नमाज़ों के सबब उस से वा'दा है कि मैं उसे जन्नत में

---

1 ......مسند احمد، مسند الشاميين، حديث تميم الدارى، ٦/٣٥، الحديث ١٦٩٤٦

2 ......تاريخ مدينة دمشق، ٢٠/٢٧٧و ترمذى، كتاب الصلاة، باب ماجاء ان اول ما يحاسب...الخ، ١/٤٢٢، الحديث ٤١٣

3 ......المعجم الاوسط، ٣/٣٢، الحديث ٣٧٨٢

4 ......ابوداود، كتاب الصلاة، باب قول النبى صلى الله تعالى عليه وسلم كل صلاة...الخ، ١/٣٢٩، الحديث ٨٦٤

दाख़िल करूंगा और जिस ने मुझ से इस आ़लम में मुलाक़ात की, कि उस की कुछ नमाज़ें कम हैं तो मेरा उस के साथ वा'दा नहीं है, चाहूं तो उसे अ़ज़ाब दूं और चाहूं तो उस पर रह़्म करूं।[(1)]

बैहक़ी की ह़दीस है कि नमाज़ तराज़ू है, जिस ने इसे पूरा किया वोह कामयाब है।[(2)]

दैलमी की ह़दीस है कि नमाज़ शैत़ान का मुंह काला करती है, सदक़ा उस की कमर तोड़ता है, अल्लाह के लिये लोगों से मह़ब्बत और इ़ल्म दोस्ती उसे शिकस्ते फ़ाश देती है, जब तुम येह आ'माल करते हो तो शैत़ान तुम से इतना दूर हो जाता है कि जैसे सूरज के तुलूअ़ होने की जगह ग़ुरूब होने की जगह से दूर है।[(3)]

तिर्मिज़ी, इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम की रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला से डरो और पांच नमाज़ें पढ़ो, माहे रमज़ान के रोज़े रखो, माल की ज़कात दो, अपने ह़ाकिमों की इत़ाअ़त करो, तुम अपने रब की जन्नत को पा लोगे।[(4)]

अह़मद, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दावूद और निसाई में ह़दीस है कि अल्लाह तआ़ला के हां सब से पसन्दीदा अ़मल नमाज़ को उस के सह़ीह़ वक़्त में अदा करना है, फिर वालिदैन से हुस्ने सुलूक और फिर राहे ख़ुदा में जिहाद करना है।[(5)]

सह़ीह़ वक़्त पर नमाज़ की अदाएगी अल्लाह को सब से ज़ियादा मह़बूब है

बैहक़ी ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक आदमी ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे बतलाइये कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा कौन सा अ़मल पसन्द है ? आप ने फ़रमाया : नमाज़ को सह़ीह़ वक़्त में अदा करना और जिस ने नमाज़ को छोड़ दिया उस का दीन नहीं और नमाज़ दीन का सुतून है।[(6)] इसी लिये जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शदीद ज़ख़्मी कर दिया गया तो किसी ने आप से कहा : अमीरुल मोमिनीन ! नमाज़, आप ने फ़रमाया : "बहुत अच्छा, बिला शुबा उस शख़्स का दीन में कोई हिस्सा नहीं है जिस ने नमाज़ को ज़ाएअ़ कर दिया" और आप ने नमाज़ पढ़ी हालांकि आप के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा था।

---

1 ......مسند الطیالسی، احادیث عبادۃ بن الصامت، ص۷۸، الحدیث ۵۷۳

2 ......شعب الایمان، باب الحادی والعشرین...الخ ،تحسین الصلاۃ...الخ،۳/۱۴۷، الحدیث ۳۱۵۱

3 ......فردوس الاخبار،۲/۳۰، الحدیث ۳۶۱۵

4 ......ترمذی ،کتاب السفر، باب ما ذکر فی فضل الصلوۃ، ۲/۱۱۹، الحدیث ۶۱۶

5 ......نسائی، کتاب المواقیت ، باب فضل الصلاۃ لمواقیتھا،ص ۱۰۶، الحدیث ۶۰۷

6 ......شعب الایمان ، باب الحادی والعشرین...الخ ، ۳/۳۹، الحدیث ۲۸۰۷

ज़हबी की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ता है तो उस की नमाज़ आस्मानों की त़रफ़ जाती है और वोह नूरानी शक्ल में होती है यहां तक कि अ़र्शे इलाही तक जा पहुंचती है और नमाज़ी के लिये क़ियामत तक दुआ़ करती रहती है कि अल्लाह तेरी हि़फ़ाज़त फ़रमाए जैसे तू ने मेरी हि़फ़ाज़त की है और जब आदमी बे वक़्त नमाज़ पढ़ता है तो उस की नमाज़ सियाह शक्ल में ऊपर आस्मानों की त़रफ़ चढ़ती है जब वोह आस्मान तक पहुंचती है तो उसे बोसीदा कपड़े की त़रह़ लपेट कर पढ़ने वाले के मुंह पर मारा जाता है।(1)

अबू दावूद की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला जिन की नमाज़ और ज़िक्र क़बूल नहीं करता, उन में से एक वोह है जो वक़्त गुज़र जाने के बा'द नमाज़ पढ़ता है।(2)

बा'ज़ उ़लमा का कहना है : ह़दीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स नमाज़ की पाबन्दी करता है उसे अल्लाह तआ़ला पांच चीज़ों से सरफ़राज़ फ़रमाता है :

- ....उस से तंगदस्ती ख़त्म कर दी जाती है
- ....उसे अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होगा
- ....नामए आ'माल उसे दाएं हाथ में दिया जाएगा
- ....पुल सिरात़ पर बिजली की त़रह़ गुज़रेगा और
- ....जन्नत में बिला ह़िसाब दाख़िल होगा।(3)

नमाज़ में सुस्ती पर मसाइब

जो शख़्स नमाज़ों में सुस्ती करता है अल्लाह तआ़ला उसे पन्दरह मसाइब में मुब्तला करता है : पांच दुन्या में, तीन मौत के वक़्त, तीन क़ब्र में और तीन क़ब्र से निकलते वक़्त।

दुन्यावी मसाइब येह हैं कि

- ......उस की उ़म्र से बरकत छीन ली जाती है
- ......उस के चेहरे से सालिह़ीन की निशानी मिट जाती है
- ......उस के किसी भी अ़मल का अल्लाह तआ़ला अज्र नहीं देता

1 ......كتاب الكبائر للذهبى ، الكبيرة الرابعة فى ترك الصلاة ، ص ٢٢

2 ......ابو داود، كتاب الصلاة، باب الرجل يوم القوم...الخ، ١/٢٤٣، الحديث ٥٩٣

3 ......

❁......उस की दुआ़ आस्मानों की त़रफ़ बुलन्द नहीं होती

❁......नेकों की दुआ़ओं में उस का कोई ह़िस्सा नहीं होता।

और जो मसाइब उसे मौत के वक़्त दरपेश होंगे वोह येह हैं कि

❁......वोह ज़लील हो कर मरेगा

❁......भूका मरेगा और

❁......प्यासा मरेगा, अगर उसे दुन्या के तमाम समन्दर पिला दिये जाएं तो भी उस की प्यास नहीं बुझेगी।

क़ब्र के मसाइब येह हैं कि

❁......क़ब्र उस पर तंग होगी यहां तक कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी

❁......उस की क़ब्र में आग भड़काई जाएगी जिस के अंगारों पर वोह रात दिन लौटता रहेगा

❁......उस की क़ब्र में एक अज़्दहा मुक़र्रर कर दिया जाएगा जिस का नाम शुजाअ़ या'नी गन्जा होगा, उस की आंखें आग की होंगी और उस के नाखुन लौहे के होंगे जिन की लम्बाई एक दिन के सफ़र के बराबर होगी, वोह कड़क दार बिजली जैसी आवाज़ में मय्यित से हम कलाम होगा और कहेगा : मैं गन्जा अज़्दहा हूं, मेरे रब ने हुक्म दिया है कि मैं तुझे नमाज़ों के ज़ियाअ़ के बदले सुब्ह़ से शाम तक डसता रहूं, सुब्ह़ की नमाज़ के लिये सूरज निकलने तक, नमाज़े ज़ोहर के ज़ाएअ़ करने पर तुझे ज़ोहर से अ़स्र तक, अ़स्र की नमाज़ के लिये मग़रिब तक, मग़रिब की नमाज़ के ज़ियाअ़ पर इशा तक और नमाज़े इशा के ज़ाएअ़ करने की वज्ह से तुझे सुब्ह़ तक डसता रहूं, और जब वोह उसे डसेगा वोह सत्तर हाथ ज़मीन में धंस जाएगा और क़ियामत तक इसी त़रह़ उस को अ़ज़ाब होता रहेगा,

और जो मसाइब उसे क़ब्र से निकलते हुवे ह़श्र के मैदान में झेलने होंगे वोह येह हैं :

❁......सख़्त ह़िसाब ❁......अल्लाह की नाराज़ी और ❁......जहन्नम में दाख़िला।

एक रिवायत में है कि वोह क़ियामत में इस ह़ालत में आएगा कि उस के चेहरे पर तीन सत़रें लिखी होंगी :

❁......पहली सत्‌र येह होगी : ऐ अल्लाह के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करने वाले !

❁......दूसरी सत्‌र होगी : ऐ अल्लाह की नाराज़ी के लिये मख़्सूस ! और

❁......तीसरी सत्‌र होगी कि जैसे तू ने अल्लाह के हुक़ूक़ दुन्या में ज़ाएअ़ किये हैं ऐसे ही तू आज अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद होगा ।

इस ह़दीस में मजमूई ता'दाद तो पन्दरह बताई गई है मगर तफ़्सीलन चौदह का ज़िक्र है, शायद राविये ह़दीस पन्दरहवीं बात भूल गए ।(1)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स अल्लाह की बारगाह में खड़ा किया जाएगा और अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम में जाने का हुक्म देगा । वोह पूछेगा : या अल्लाह ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? रब तआ़ला फ़रमाएगा कि नमाज़ों को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर के पढ़ने और मेरे नाम की झूटी क़समें खाने की वज्ह से येह हो रहा है ।(2)

बा'ज़ मुह़द्दिसीन से मरवी है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने एक दिन सह़ाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم से कहा कि तुम यूं दुआ़ मांगा करो ! "ऐ अल्लाह ! हम में से किसी को शक़ी और मह़रूम न बना ।" फिर फ़रमाया : जानते हो बद बख़्त मह़रूम कौन होता है ? कहा गया : कौन होता है ? या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : जो इन्सान तारिके नमाज़ होता है ।(3)

नीज़ फ़रमाया (मुह़द्दिसीन ने) : हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से मरवी है : आप ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सब से पहले तारिकीने नमाज़ के मुंह काले किये जाएंगे और जहन्नम में एक वादी है जिसे "लमलम" कहा जाता है, उस में सांप रहते हैं, हर सांप ऊंट जितना मोटा और एक माह के सफ़र के बराबर त़वील होगा, वोह बे नमाज़ी को डसेगा उस का ज़हर सत्तर साल तक बे नमाज़ी के जिस्म में जोश मारता रहेगा, फिर उस का गोश्त गल जाएगा ।(4)

1......

2......

3...... كتاب الكبائر للذهبى ، الكبيرة الرابعة فى ترك الصلاة ، فصل فى المحافظة ......الخ، ص ٢٥

4....."किताबुल कबाइर" में इमाम ज़हबी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने जहन्नम की इस वादी का नाम "मल्ह़म" लिखा है । **इल्मिय्या**....अल मर्जउस्साबिक़

अ़मदन नमाज़ तर्क करने वाला ज़ानी से भी बदतर है

नीज़ येह भी मरवी है कि बनी इस्राईल की एक औ़रत ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में आई और अ़र्ज़ किया ऐ नबिय्यल्लाह ! मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है और तौबा भी की है, **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगिये कि वोह मेरे गुनाह को बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले।

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : तू ने कौन सा गुनाह किया है ? वोह कहने लगी कि मैं ज़िना की मुर्तकिब हुई और जो बच्चा पैदा हुवा मैं ने उसे क़त्ल कर दिया है ! येह सुन कर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बोले ! ऐ बद बख़्त ! निकल जा, कहीं तेरी नुहूसत की वज्ह से आस्मान से आग नाज़िल हो कर हमें न जला दे ! चुनान्चे, वोह शिकस्ता दिल हो कर वहां से चल पड़ी, तब जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुवे और कहा : ऐ मूसा ! (عَلَيْهِ السَّلَام) **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि तू ने गुनाह से तौबा करने वाली को क्यूं वापस कर दिया है ? क्या तू ने इस से भी ज़ियादा बुरा आदमी नहीं पाया ? मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : ऐ जिब्रील ! इस औ़रत से ज़ियादा बुरा कौन है ? जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام बोले कि इस से बुरा वोह है जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दे।

बा'ज़ सालिह़ीन से मरवी है कि एक आदमी ने अपनी मुर्दा बहन को दफ़्न किया तो उस की थैली बे ख़बरी में क़ब्र में गिर गई जब सब लोग उसे दफ़्न कर के चले गए तो उसे अपनी थैली याद आई, चुनान्चे, वोह आदमी लोगों के चले जाने के बा'द बहन की क़ब्र पर पहुंचा और उसे खोदा ताकि थैली निकाल ले, उस ने देखा कि उस की क़ब्र में शो'ले भड़क रहे हैं, चुनान्चे, उस ने क़ब्र पर मिट्टी डाली और इन्तिहाई ग़मगीन रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : मां ! येह बताओ कि मेरी बहन क्या करती थी ? मां ने पूछा : तुम क्यूं पूछ रहे हो ? वोह बोला मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़कते देखे हैं उस की मां रोने लगी और कहा : तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती करती रहती थी और नमाज़ों को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर के पढ़ा करती थी।

येह तो उस का ह़ाल है जो नमाज़ों को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र कर के पढ़ा करती थी और उन लोगों का क्या ह़ाल है जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं।

ऐ **अल्लाह** ! हम तुझ से नमाज़ों को उन के अवक़ात में अदा करने और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ त़लब करते हैं, बेशक ऐ रब ! तू मेहरबान, करीम, रऊफ़ और रह़ीम है।

बाब 50

तबक़ाते जहन्नम और इन के अज़ाब

फ़रमाने इलाही है :

لَهَا سَبۡعَةُ اَبۡوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنۡهُمۡ جُزۡءٌ مَّقۡسُوۡمٌ ﴿۴۴﴾ (1) *उस (जहन्नम) के सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े का जुज़्व मुक़र्रर है।*

यहां "جُزۡءٌ" से मुराद गुरौह, जमाअ़त और फ़रीक़ है और दरवाज़ों से मुराद तबक़ात हैं जो ऊपर नीचे बने हुवे हैं।

जहन्नम का हर तबक़ा एक गुरौह के लिये मख़्सूस है

इब्ने जुरैज का क़ौल है कि जहन्नम के तबक़ात सात है : '**जहन्नम**', '**लज़ा**' फिर '**हुतमा**', फिर '**सईर**' फिर '**सक़र**' फिर '**जहीम**' और फिर '**हाविया**'। पहला तबक़ा मुवह्हिदीन के लिये, दूसरा यहूद के लिये, तीसरा नसारा के लिये, चौथा साईबीन के लिये, पांचवां आतश परस्तों के लिये, छटा मुशरिकों के लिये और सातवां मुनाफ़िक़ों के लिये है।

"जहन्नम" सब से ऊपर का तबक़ा है और बाक़ी सब मज़्कूरा तरतीब के साथ इस के नीचे हैं। और येह बई मा'ना है कि अल्लाह तआ़ला इब्लीस के पैरूकारों को सात गुरौहों में तक़्सीम फ़रमाएगा और हर गुरौह और फ़रीक़ जहन्नम के एक तबक़े में रहेगा, इस का सबब येह है कि कुफ़्र और गुनाहों के मरातिब चूंकि मुख़्तलिफ़ हैं इस लिये जहन्नम में दुख़ूल के लिये इन के दरजात भी मुख़्तलिफ़ हैं। और येह भी कहा गया है कि इन सात तबक़ात को इन्सान के सात आ'ज़ाए बदन के मुताबिक़ बनाया गया है, आ'ज़ा येह हैं : आंख, कान, ज़बान, पेट, शर्मगाह, हाथ और पैर, क्यूंकि येही आ'ज़ा गुनाहों का मर्कज़ हैं इसी लिये इन के वारिद होने के दरवाज़े भी सात हैं।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जहन्नम के ऊपर नीचे (तह ब तह) सात तबक़ात हैं लिहाज़ा पहले, पहला भरा जाएगा, फिर दूसरा, फिर तीसरा, इसी तरह सब तबक़ात भरे जाएंगे।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस के सात दरवाज़ें हैं हर दरवाज़े के लिये उन में से एक हिस्सा बटा हुवा है। (پ۱۴، الحجر: ۴۴)

बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और तिर्मिज़ी ने हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम के सात दरवाज़े हैं : इन में एक दरवाज़ा उस शख़्स के लिये है जिस ने मेरी उम्मत पर तल्वार सोंती।(1)

आतशे जहन्नम की हौलनाकियां

तबरानी ने औसत में रिवायत की है कि एक मरतबा हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ऐसे वक़्त में तशरीफ़ लाए कि उस वक़्त में इस से क़ब्ल किसी वक़्त में नहीं आते थे, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और फ़रमाया : जिब्रील ! क्या बात है ? मैं तुम को मुतग़य्यिर देख रहा हूं ? जिब्रील ने अर्ज़ की : मैं उस वक़्त आप के पास आया हूं जब कि **अल्लाह** तआला ने जहन्नम को दहका देने का हुक्म दिया है। आप ने फ़रमाया : जिब्रील ! मुझे उस आग या जहन्नम के बारे में बतलाओ ! जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अर्ज़ की, कि **अल्लाह** तआला ने "जहन्नम" को हुक्म दिया और उस में एक हज़ार साल तक आग दहकाई गई यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई,(2) फिर उसे हज़ार साल तक दहकाया गया यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर उसे हुक्मे ख़ुदावन्दी से हज़ार साल तक और भड़काया गया ता आंकि वोह बिल्कुल सियाह हो गई, अब वोह सियाह और तारीक है, न उस में चिंगारी रोशन होती है और न ही उस का भड़कना ख़त्म होता है और न उस के शो'ले बुझते हैं।

उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप को नबिय्ये बरहक़ बना कर मबऊस फ़रमाया है, अगर सूई के नाके के बराबर भी जहन्नम को खोल दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन फ़ना हो जाएं और क़सम है ! उस ज़ात की जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा, अगर जहन्नम के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता दुन्या वालों पर ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ उस की बद सूरती और बदबू की वज्ह से हलाक हो जाए, और क़सम है ! उस ज़ात की जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया, अगर जहन्नम के ज़न्जीरों का एक हल्क़ा "जिस का **अल्लाह** तआला ने क़ुरआने करीम में ज़िक्र किया है" दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और वोह हल्क़ा "तहतुस्सरा" में जा ठहरे, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया : बस जिब्रील बस ! इतना तज़्किरा ही काफ़ी है, मेरे लिये येह बात इन्तिहाई परेशान कुन है।

---

1 .....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة (الحجر)، ٥/٨٦، الحدیث ٣١٢٤

2 .....यहां तर्जमे में येह इबारत "उस में एक हज़ार साल तक आग दहकाई गई यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई" लिखने से रह गई थी शायद कातिब से ग़लती हुई हो, बहर हाल हम ने अ़रबी मतन देख कर यहां तस्हीह कर दी है। وَاللہُ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

रावी कहते हैं कि तब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रील को देखा ! वोह रो रहे हैं। आप ने फ़रमाया : जिब्रील ! तुम क्यूं रोते हो हालांकि तुम्हारा तो **अल्लाह** के हां बहुत बड़ा मक़ाम है। जिब्रील ने कहा : मैं क्यूं न रोऊं ? मैं ही रोने का ज़ियादा हक़दार हूं, क्या ख़बर इल्मे ख़ुदा में मेरा इस मक़ाम के इलावा कोई और मक़ाम हो ! क्या ख़बर कहीं मुझे इब्लीस की तरह न आज़माया जाए ! वोह भी तो फ़िरिश्तों में रहता था ! और क्या ख़बर मुझे हारूत व मारूत की तरह आज़माइश में न डाल दिया जाए ! तब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام दोनों अश्कबार हो गए और येह अश्कबारी बराबर जारी रही यहां तक कि आवाज़ आई : "ऐ जिब्रील ! ऐ मुहम्मद ! **अल्लाह** तआला ने तुम दोनों को अपनी नाफ़रमानी से महफ़ूज़ कर लिया है" पस इस के बा'द जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानों की तरफ़ परवाज़ कर गए।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र अन्सार की एक जमाअत से हुवा जो हंस रहे थे और फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम हंसते हो ! हालांकि तुम्हारे पीछे जहन्नम है जिसे मैं जानता हूं, अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते, तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की तरफ़ निकल जाते और इन्तिहाई मसाइब बरदाश्त कर के **अल्लाह** की इबादत करते।

उस वक़्त **अल्लाह** तआला की तरफ़ से निदा आई कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे बन्दों को ना उम्मीद न करो, आप ख़ुश ख़बरी देने वाले बना कर भेजे गए हैं, लोगों को मसाइब में डालने वाले बना कर नहीं भेजे गए, पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि राहे रास्त पर गामज़न रहो और रहमते ख़ुदावन्दी से उम्मीद रखो।(2)

अहमद की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रील से कहा : मैं ने कभी भी मीकाईल को हंसते हुवे नहीं देखा, इस की क्या वज्ह है ? जिब्रील ने कहा कि जब से जहन्नम को पैदा किया गया है मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام कभी नहीं मुस्कुराए।(3)

मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार लगामें दे कर लाया जाएगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उसे खींच रहे होंगे।(4)

---

1. المعجم الاوسط، ٢/٧٨، الحديث٢٥٨٣
2. المعجم الاوسط، ٢/٧٨، الحديث٢٥٨٣
3. مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ٤/٤٤٧، الحديث ١٣٣٤٢
4. مسلم، كتاب الجنة...الخ، باب في شدة حر نار...الخ، ص ١٥٢٣، الحديث ٢٩ـ (٢٨٤٢)

बाब 51

अज़ाबे जहन्नम

अबू दावूद, निसाई और तिर्मिज़ी की रिवायत है : जब **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत और जहन्नम को पैदा फ़रमाया तो जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा कि जन्नत और उस में जो कुछ मैं ने जन्नतियों के लिये तय्यार किया है उसे देख आओ, जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आ कर जन्नत और उस में रहने वालों के लिये तय्यार शुदा ने'मतों को देखा और बारगाहे इलाही में जा कर अ़र्ज़ किया : तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जो भी इस का तज़्किरा सुनेगा इस में आने की कोशिश करेगा, **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया और जन्नत पर मसाइब त़ारी कर दिये गए, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : जाओ और देखो कि मैं ने जन्नत में आने वालों के लिये क्या इन्तिज़ाम किया है ! जिब्रील जन्नत की त़रफ़ आए तो देखा कि वोह मसाइब में छुपा दी गई है चुनान्चे, जिब्रील वापस आ गए और कहा : मुझे तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मुझे डर है कि इस में कोई नहीं जाएगा।

फिर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : जाओ जहन्नम और इस में पहुंचने वालों के लिये मैं ने जो कुछ तय्यार किया है उसे देखो ! जिब्रील ने जहन्नम को देखा उस की एक आग दूसरी आग को रौंद रही थी जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام वापस आ गए और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जो भी इस का तज़्किरा सुनेगा इस में नहीं आएगा, **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया और जहन्नम को शहवात से ढांप दिया गया। रब तआ़ला ने जिब्रील से फ़रमाया : अब जाओ और इसे देखो, जिब्रील आए जहन्नम को देखा और वापस जा कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मुझे डर है कि कोई भी इस में गिरने से नहीं बचेगा।[1]

बैहक़ी ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है : इन्हों ने फ़रमाने इलाही :

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾[2] *बेशक जहन्नम मह़लों जैसी चिंगारियां फेंकती है।*

की तशरीह़ में फ़रमाया : "येह नहीं कहता कि वोह दरख़्तों जितनी बड़ी चिंगारियां फेंकती है बल्कि क़ल्ओं और शहरों जितनी बड़ी बड़ी चिंगारियां फेंकती है।

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة...الخ، ٤/٢٥٣، الحديث ٢٥٦٩

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है जैसे ऊंचे मह़ल। (پ٢٩،المرسلٰت:٣٢)

अहमद, इब्ने माजा, सहीह इब्ने हब्बान और हाकिम की रिवायत है कि "वैल" जहन्नम की एक वादी है, काफ़िर उस में चालीस साल बराबर गिरता चला जाएगा मगर उस की गहराई तक नहीं पहुंच सकेगा।(1)

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि वैल जहन्नम की एक वादी है, काफ़िर सत्तर साल में भी उस की गहराई तक नहीं पहुंच सकेगा।(2) (दोनों रिवायतों में गहराई तक पहुंचने की मुद्दत का फ़र्क़ है, दोनों का मक़्सद येह है कि उस की गहराई बहुत ही ज़ियादा है जो बरसों में तै होगी।)

जुब्बुल हुज़्न का अ़ज़ाब

इब्ने माजा और तिर्मिज़ी की ह़दीस है : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जुब्बुल हुज़्न से **अल्लाह** की पनाह मांगो, सहाबए किराम ने पूछा : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) जुब्बुल हुज़्न क्या है ? आप ने फ़रमाया : जहन्नम की एक वादी है जिस से जहन्नम भी दिन में चार सो मरतबा पनाह मांगता है, पूछा गया : हुज़ूर ! इस में कौन जाएंगे ? आप ने फ़रमाया : वोह रियाकार क़ारियों के लिये तय्यार की गई है जो अपने आ'माल की नुमाइश करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला के यहां सब से ज़ियादा ना पसन्द ऐसे क़ारी हैं जो ज़ालिम हाकिमों से मेल जोल रखते हैं।(3)

"त़बरानी" की रिवायत है कि जहन्नम में एक ऐसी वादी है कि जहन्नम उस वादी से दिन में चार सो मरतबा पनाह मांगता है और येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के रियाकारों के लिये तय्यार की गई है।(4)

इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत है कि जहन्नम में सत्तर हज़ार वादियां हैं, हर वादी में सत्तर हज़ार घाटियां हैं, हर घाटी में सत्तर हज़ार सूराख़ हैं, हर सूराख़ में एक सांप है जो दोज़ख़ियों के चेहरों को डसता रहता है।(5)

---

1 ......مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۱۵۰/۴، الحدیث ۱۱۷۱۲

2 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ (الانبیاء) علیھم السلام، ۱۱۱/۵، الحدیث ۳۱۷۵ وفیہ اربعین مکان سبعین

3 ......ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب الانتفاع بالعلم...الخ، ۱۶۷/۱، الحدیث ۲۵۶

4 ......المعجم الکبیر، ۱۳۶/۱۲، الحدیث ۱۲۸۰۳

5 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب صفۃ النار، ۴۰۹/۶، الحدیث ۴۵

बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में येह मुन्किरुस्सनद ह़दीस नक़्ल की है कि जहन्नम में सत्तर हज़ार वादियां हैं, हर वादी में सत्तर हज़ार घाटियां हैं, हर घाटी में सत्तर हज़ार घर हैं, हर घर में सत्तर हज़ार मकान हैं, हर मकान में सत्तर हज़ार कूंएं हैं, हर कूंएं में सत्तर हज़ार अज़्दहे है, हर अज़्दहे की बाछों में सत्तर हज़ार बिच्छू हैं, काफ़िर और मुनाफ़िक़ इन तमाम का अ़ज़ाब पाए बिग़ैर नहीं रहेगा।[1]

तिर्मिज़ी में मुन्क़त़उ़स्सनद रिवायत है कि जहन्नम के किनारे से अ़ज़ीम चट्टान लुढ़काई जाती है और सत्तर साल गुज़रने के बा वुजूद भी वोह जहन्नम की गहराई तक पहुंच नहीं पाती।[2]

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : जहन्नम को अक्सर याद किया करो क्यूंकि उस की गर्मी सख़्त, उस की गहराई बेह़द है और उस में लोहे के हथोड़े हैं।

बज़्ज़ाज़, अबू या'ला, सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान और बैहक़ी की रिवायत है कि अगर जहन्नम में पथ्थर फेंका जाए और उसे नीचे जाते हुवे सत्तर साल गुज़र जाएं, तब भी वोह उस की गहराई तक नहीं पहुंच सकेगा।[3]

"मुस्लिम" में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे कि हम ने एक धमाका सुना, हु़ज़ूर ने फ़रमाया : जानते हो येह क्या था ? हम ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ज़ियादा जानते हैं, आप ने फ़रमाया : येह पथ्थर था जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने सत्तर साल पहले जहन्नम में डाला था अभी वोह इस की गहराई तक पहुंच सका है।[4]

त़बरानी में ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक हौलनाक आवाज़ सुनी, जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए तो आप ने पूछा : जिब्रील येह कैसी आवाज़ थी ? जिब्रील ने अ़र्ज़ किया : येह चट्टान थी जिसे सत्तर साल पहले जहन्नम के किनारे से गिराया गया था और वोह अभी जहन्नम की गहराई तक पहुंची है, **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा कि आप को भी इस की आवाज़ सुना दी जाए, इस के बा'द किसी ने विसाल तक आप को हंसते हुवे नहीं देखा।[5]

---

1. التاريخ الكبير، باب نفير، ٦٢١/٨، الحديث ١١٧٧٥
2. ترمذی، كتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة قعر جهنم، ٢٦٠/٤، الحديث ٢٥٨٤
3. صحيح ابن حبان، كتاب اخباره...الخ، باب صفة النار واهلها، ٢٧٨/٦، الجزء التاسع، الحديث ٧٤٢٥
4. مسلم، كتاب الجنة...الخ، باب فی شدة حر نار جهنم...الخ، ص١٥٢٣، الحديث ٣١ـ (٢٨٤٤)
5. المعجم الاوسط، ٢٣٨/١، الحديث ٨١٥

अहमद और तिर्मिज़ी की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सर की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : अगर इस जितना सीसा आस्मान से ज़मीन की त़रफ़ फेंका जाए तो ज़मीनो आस्मान की पांच सो साला सफ़र की दूरी के बा वुजूद रात से पहले पहले येह ज़मीन पर आ जाए और अगर इसे जहन्नम के किनारे से जहन्नम में फेंका जाए तो चालीस साल गुज़रने से पहले उस की गहराई तक न पहुंच सके।(1)

अह़मद, अबू या'ला और ह़ाकिम की रिवायत है कि अगर जहन्नम का हथोड़ा जो लोहे से तय्यार किया हुवा है, ज़मीन पर रख दिया जाए और जिन्नो इन्सान मिल कर उसे उठाना चाहें तो उसे उठा नहीं सकेंगे।(2)

ह़ाकिम की रिवायत है कि अगर पहाड़ पर हथोड़े की एक ज़र्ब लगाई जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो कर रैत बन जाए।(3)

इब्ने अबिद्दुन्या की रिवायत है कि अगर जहन्नम का एक पथ्थर दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह उस की गर्मी से पिघल जाएं।(4)

ह़ाकिम की एक रिवायत है कि ज़मीनें सात हैं और हर ज़मीन का दूसरी ज़मीन के दरमियान पांच सो साल के सफ़र के बराबर फ़ासिला है, सब से ऊपर वाली ज़मीन मछली की पुश्त पर है जिस ने अपनी दोनों आंखें आस्मान से मिलाई हुई हैं, मछली चट्टान पर है और चट्टान फ़िरिश्ते के हाथ में है, दूसरी ज़मीन हवा का क़ैदख़ाना है, जब **अल्लाह** तआ़ला ने क़ौमे आ़द की हलाकत का इरादा फ़रमाया तो वहां के ख़ाज़िन को फ़रमाया कि उन पर हवा भेज जो उन को हलाक कर दे, ख़ाज़िन ने अ़र्ज़ किया : या **अल्लाह** ! मैं उन पर बैल के नथनों के बराबर हवा भेजूंगा, रब्बे ज़ुल जलाल ने फ़रमाया : तब तो दुन्या की तमाम मख़्लूक़ हलाक हो जाएगी और येह सब के लिये काफ़ी होगी, उन पर अंगूठी के सुराख़ के बराबर हवा भेजो और येही वोह हवा है जिस के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे इलाही है :

---

1 ......ترمذی ، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة طعام...الخ، ٤/٢٦٥، الحدیث ٢٥٩٧

2 ......مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری،٤/٥٨، الحدیث١١٢٣٣

3 ......المستدرك للحاکم،کتاب الاهوال ، باب السور الذی ذکره الله فی القرآن، ٥/٨٢٥، الحدیث٨٨١٣

4 ......الترغیب والترهیب ،کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی سلاسلها وغیر ذلك ، ٤/٢٧٩، الحدیث٥٦٤٥

مَاتَذَرُ مِنۡ شَیۡءٍ اَتَتۡ عَلَیۡهِ اِلَّا جَعَلَتۡهُ کَالرَّمِیۡمِ (1) *उस ने किसी चीज़ को नहीं छोड़ा जिस पर वोह आई मगर उसे बोसीदा हड्डी की तरह कर दिया।*

तीसरी ज़मीन में जहन्नम के पथ्थर हैं, चौथी में जहन्नम का गन्धक है, सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! जहन्नम के लिये भी गन्धक है ? आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! उस में गन्धक की कई वादियां हैं, अगर उन में बुलन्दो बाला मुस्तह़कम पहाड़ डाले जाएं तो नर्म हो कर रेज़ा रेज़ा हो जाएं, पांचवीं में जहन्नम के सांप हैं जिन के मुंह ग़ारों की तरह हैं जब वोह काफ़िर को एक मरतबा डसेंगे तो उस की हड्डियों पर गोश्त बाक़ी नहीं रहेगा।

छटी में जहन्नम के बिच्छू हैं जिन में सब से छोटा बिच्छू भी पहाड़ी ख़च्चर के बराबर है वोह जब काफ़िर को डसेगा तो काफ़िर जहन्नम की शिद्दत और गर्मी को भूल जाएगा।

सातवीं में इब्लीस लोहे से जकड़ा हुवा है, उस का एक हाथ आगे और एक पीछे है, जब **अल्लाह** तआ़ला चाहता है कि उसे किसी बन्दे के लिये छोड़ दे तो उसे छोड़ देता है।[2]

अह़मद, त़बरानी, सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम की रिवायत है कि जहन्नम में बख़्ती ऊंटों की गर्दनों जैसे सांप हैं, जब उन में से कोई एक डसता है तो उस की गर्मी सत्तर साल के रास्ते की दूरी से मह़सूस की जाती है और जहन्नम में पहाड़ी ख़च्चरों जैसे बिच्छू हैं, जब वोह डसते हैं तो उन की गर्मी चालीस साल की दूरी से मह़सूस की जाती है।[3]

तिर्मिज़ी, सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाने इलाही [4] "کَالْمُهْلِ" के बारे में फ़रमाया है कि वोह ज़ैतून के तेल की तल्छट की तरह होगा, जब वोह उन के चेहरों के क़रीब आएगा तो उन के चेहरे की खाल बालों समेत उधड़ कर उस में गिर जाएगी।[5]

"तिर्मिज़ी" की रिवायत है कि गर्म पानी उन के सरों पर डाला जाएगा तो वोह शदीद गर्म पानी उन के सरों से गुज़र कर उन के पेट में असर अन्दाज़ होगा और जो कुछ उन के लिये पेटों में

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोड़ती। (پ۲۷،الذّٰریٰت:۴۲)

2......المستدرك للحاكم،كتاب الاهوال، باب كل ارض الى التى...الخ، ٥/٨١٦، الحديث ٨٧٩٤

3......مسند احمد، مسند الشاميين، حديث عبدالله بن الحارث...الخ، ٦/٢١٧، الحديث ١٧٧٢٩

4....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** चर्ख़ दिये (खोलते हुवे) धात की तरह। (پ۱۵،الکھف:۲۹)

5......المستدرك للحاكم،كتاب الاهوال ، باب صفة ماء كالمهل ، ٥/٨٢٩، الحديث ٨٨٢٢

होगा उसे बाहर निकाल देगा यहां तक कि इसी शिद्दत से उन के पैरों से बह निकलेगा और उन के वुजूद की चरबी ख़त्म कर देगा, फिर दोबारा उसे वैसे ही डाला जाएगा और बार बार इन्सानों को भी हैअते ऊला पर किया जाता रहेगा।[1]

ज़ह्हाक का क़ौल है कि हमीम वोह गर्म पानी है जो ज़मीनो आस्मान की पैदाइश के वक़्त से जहन्नमियों को पिलाने के वक़्त तक बराबर गर्म हो रहा है और फिर उन्हें पिलाने के साथ उन के सरों पर भी डाला जाएगा।

एक क़ौल येह है कि वोह जहन्नम के गढ़ों में जम्अ् होने वाले जहन्नमियों के आंसू होंगे जो उन्हें पिलाए जाएंगे। और भी मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं।[2]

कुरआने पाक में इसी पानी का ज़िक्र है, इरशादे इलाही है :

وَسُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾ (3)

और वोह गर्म पानी पियेंगे जो उन की अन्तड़ियां काट देगा।

अहमद, तिर्मिज़ी और हाकिम की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस फ़रमाने इलाही :

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ (4)

और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा जिसे वोह घूंट घूंट पियेगा और उसे गले से उतार नहीं सकेगा।

के बारे में फ़रमाया कि दोज़ख़ी उसे अपने मुंह के क़रीब लाएगा तो उस की बदबू की वज्ह से उसे सख़्त ना पसन्द करेगा मगर जब प्यास के मारे मुंह के और ज़ियादा क़रीब लाएगा तो उस का मुंह भुन जाएगा और उस के सर की खाल बालों समेत उस में गिर जाएगी और जब वोह उसे घूंट घूंट पियेगा तो वोह उस की अन्तड़ियां काट कर बाहर निकाल देगा[5] चुनान्चे,

---

1 ......ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ، ٤/٢٦٢، الحدیث ٢٥٩١

2 ......الترغیب و الترهیب، کتاب صفة الجنة و النار، فصل فی شراب اهل النار، ٤/٢٨٢، الحدیث ٥٦٥٢

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे। (پ٢٦، محمد:١٥)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी। (پ١٣، ابراهیم: ١٦، ١٧)

5 ......ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ، ٤/٢٦٢، الحدیث ٢٥٩٢

फ़रमाने इलाही है :

وَ اِنۡ یَّسۡتَغِیۡثُوۡا یُغَاثُوۡا بِمَآءٍ کَالۡمُہۡلِ یَشۡوِی الۡوُجُوۡہَ ؕ بِئۡسَ الشَّرَابُ ؕ(1)

और जब वोह फ़रयाद करेंगे तो उन की फ़रयाद रसी की जाएगी ऐसे पानी के साथ जो गले हुवे तांबे जैसा होगा जो उन के दहनों को भून डालेगा वोह बहुत बुरा पीना है।

जहन्नम का बदबू दार पानी

अह़मद और ह़ाकिम की रिवायत है कि अगर "जहन्नम" के बदबू दार पानी का डोल दुन्या में गिरा दिया जाए तो तमाम मख़्लूक़ उस की बदबू से परेशान हो जाए, उस पानी का नाम ग़स्साक़ है जिस का फ़रमाने इलाही में भी ज़िक्र है चुनान्चे, इरशाद होता है : "पस चखो गर्म पानी और ग़स्साक़ को"(2)

और जहन्नमियों के मशरूब के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : "मगर गर्म पानी और ग़स्साक़ होगा।"(3)

ग़स्साक़ के मा'ना में कुछ इख़्तिलाफ़ है।(4)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का क़ौल है कि इस से मुराद वोह मवाद है जो जहन्नमियों के चमड़ों से बहेगा और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि इस से मुराद उन की पीप है। ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का क़ौल है कि वोह जहन्नम का एक कूंआं है जिस में हर ज़हरीली चीज़ जैसे सांप बिच्छू वग़ैरा का ज़हर बह कर आएगा और वहां जम्अ़ होता रहेगा फिर काफ़िर को वहां लाया जाएगा और उसे इस में ग़ोत़ा दिया जाएगा, जब वोह निकलेगा तो उस का चमड़ा और गोश्त गिर चुका होगा और उस के पैरों और टांगों के पीछे चिमटा हुवा घिसटता हुवा आएगा जैसे आदमी अपने किसी कपड़े को घसीटता हुवा लाता है।

तिर्मिज़ी की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी :

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर पानी के लिये फ़रयाद करें तो उन की फ़रयाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये (पिघले) हुवे धात की त़रह है कि उन के मुंह भून (जला) देगा क्या ही बुरा पीना। (پ۱۵، الکہف:۲۹)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उसे चखें खोलता पानी और पीप। (پ۲۳، صٓ:۵۷)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर खोलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप। (پ۳۰، النبا:۲۵)

4......مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۵۸، الحدیث ۱۱۲۳۰

اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (1) *अल्लाह से कमा हक़्क़ुहू डरो और तुम हरगिज़ न मरो मगर येह कि मुसलमान हो कर मरो।*

और फ़रमाया कि ज़क़्क़ुम का अगर एक क़त्रा ज़मीन पर डाल दिया जाए तो मख़्लूक़ पर ज़िन्दगी गुज़ारना दूभर हो जाए, उस शख़्स का क्या हाल होगा जिस की गिज़ा ही ज़क़्क़ुम होगी।

दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : उस का क्या हाल होगा जिस का ज़क़्क़ुम के सिवा कोई खाना नहीं होगा।(2)

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से सहीह रिवायत के साथ मरवी है : उन्हों ने फ़रमाने इलाही :

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ (3) *और खाना गले में फंस जाने वाला।*

की तफ़्सीर में फ़रमाया कि उस में कांटे होंगे जो हल्क़ पकड़ लेंगे, न ऊपर आएंगे और न नीचे पेट में उतरेंगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत है कि काफ़िर के कन्धों का दरमियानी फ़ासिला तेज़ रफ़्तार सुवार के तीन दिन की मसाफ़त के बराबर होगा।(4)

अहमद की रिवायत है कि काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उस की रान बैज़ा पहाड़ की मिस्ल होगी और जहन्नम में उस की बैठक कुदैद और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के दरमियानी फ़ासिले के बराबर होगी या'नी तीन दिन के सफ़र के बराबर, उस के चमड़े की मोटाई बयालीस यमनी हाथ होगी या बयालीस अ़जमी हाथ, इब्ने हब्बान ने पहले क़ौल को तरजीह दी है।(5)

मुस्लिम की रिवायत है कि काफ़िर की दाढ़ या दांत उहुद पहाड़ जैसा होगा और उस के चमड़े की मोटाई तीन दिन के सफ़र के बराबर होगी।(6)

तिर्मिज़ी की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन काफ़िर की दाढ़ उहुद के बराबर होगी, उस की रान बैज़ा के बराबर और जहन्नम में उस की बैठक तीन दिन के सफ़र के बराबर होगी जैसे रबज़ा और मदीने का दरमियानी फ़ासिला है।(7)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (پ٤،اٰل عمران:١٠٢)

2......ترمذی،کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی صفة شراب...الخ، ٤/٢٦٣، الحدیث ٢٥٩٤

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और गले में फंसता खाना। (پ٢٩،المزمل:١٣)

4......بخاری، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة و النار، ٤/٢٦٠، الحدیث ٦٥٥١

5......مسند احمد، مسند ابی هریرة ، ٣/٦٤٠، الحدیث ١٠٩٣١

6......مسلم ،کتاب صفة الجنة...الخ ، باب النار یدخلها...الخ، ص١٥٢٧، الحدیث ٤٤ـ (٢٨٥١)

7......ترمذی ،کتاب صفة جهنم ، باب ماجاء فی عظم اهل النار،٤/٢٦١، الحدیث ٢٥٨٧

अह़मद की रिवायत है : क़ियामत के दिन काफ़िर की दाढ़ उहुद पहाड़ जैसी होगी, उस के चमड़े की मोटाई सत्तर हाथ होगी, उस का बाज़ू बैज़ा पहाड़ जैसा, और उस की रान वरिक़ान[1] जैसी और जहन्नम में उस की बैठक मेरे और रबज़ा के दरमियानी फ़ासिले के बराबर होगी।[2]

एक रिवायत में है कि जहन्नम में उस की बैठक तीन दिन के सफ़र के बराबर होगी जैसे रबज़ा है।[3]

अह़मद, तिर्मिज़ी और त़बरानी की रिवायत है : जिसे ह़ाफ़िज़ मुन्ज़री ने अच्छी सनद वाली ह़दीस कहा है और तिर्मिज़ी ने उसे फ़ुज़ैल बिन यज़ीद से नक़्ल किया है कि काफ़िर जहन्नम में एक या दो फ़र्सख़ के बराबर लम्बी ज़बान जहन्नम में खींचता फिरेगा और लोग उसे रौंदते होंगे, एक फ़र्सख़ तीन मील के क़रीब होता है।[4]

फ़ज़्ल बिन यज़ीद ने अबिल अ़जलान से रिवायत की है कि काफ़िर क़ियामत में दो फ़र्सख़ लम्बी ज़बान खींच रहा होगा और लोग उसे रौंद रहे होंगे।[5]

बैहक़ी वग़ैरा की रिवायत है कि जहन्नमियों के जिस्म जहन्नम में बहुत बड़े कर दिये जाएंगे यहां तक कि उस के कान की लौ से उस के कन्धे तक सात सो साल के सफ़र का फ़ासिला होगा, उस की खाल की मोटाई सत्तर हाथ और उस की दाढ़ जबले उहुद के बराबर होगी।[6]

अह़मद और ह़ाकिम ने ब सनदे सह़ीह़ मुजाहिद से रिवायत किया है कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : जानते हो जहन्नमियों के जिस्म कितने अ़ज़ीम होंगे ? मैं ने कहा : नहीं ! तब उन्हों ने कहा : हां ! ब ख़ुदा ! तुम नहीं जानते कि उन के कान की लौ और उन के कन्धे के दरमियान सत्तर साल के सफ़र का फ़ासिला होगा, उस की वादियों में ख़ून और पीप रवां होगी, मैं ने कहा : नहरें होंगी तो उन्हों ने फ़रमाया : नहीं बल्कि वादियां होंगी।[7]

1.....एक अ़ज़ीम सियाह पहाड़ का नाम है। **इल्मिय्या**

2.......مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۲۱۹، الحدیث ۸۳۵۳

3.......ترمذی، کتاب صفۃ جہنم، باب ماجاء فی عظم اھل النار، ۴/۲۶۱، الحدیث ۲۵۸۷

4.......المرجع السابق، الحدیث ۲۵۸۹

5.......شعب الایمان، التاسع من شعب...الخ، فصل فی ان الجنۃ...الخ، ۱/۳۵۳، الحدیث ۳۹۴ بابن العجلان مکان ابی العجلان

6.......مسند احمد، مسند عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب، ۲/۴۵۶، الحدیث ۴۸۰۰

7.......مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا، ۹/۴۲۷، الحدیث ۲۴۹۱۰

बाब 52

गुनाहों से ख़ौफ़ज़दा होने की फ़ज़ीलत

येह बात अच्छी तरह जेह्न नशीन कर लीजिये कि गुनाहों से मुतनब्बेह करने वाली बातों में ख़ौफ़े इलाही, उस के इन्तिक़ाम का अन्देशा, उस की हैबत और शानो शौकत, उस के अज़ाब का डर और उस की गिरिफ़्त बहुत नुमायां हैसिय्यत रखती हैं, फ़रमाने इलाही है कि

"जो लोग **अल्लाह** तआ़ला के अह़कामात की मुख़ालफ़त करते हैं वोह इस अम्र से डरें कि उन्हें फ़ितना या दर्दनाक अज़ाब पहुंचे।"(1)

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जवान के पास तशरीफ़ लाए जो नज़्अ़ के आ़लम में था, आप ने फ़रमाया : अपने आप को किस आ़लम में पाते हो ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं **अल्लाह** की रह़मत का उम्मीद वार हूं और अपने गुनाहों से ख़ौफ़ज़दा हूं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया कि किसी बन्दे के दिल में ऐसी दो बातें जम्अ़ नहीं होतीं मगर **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे की उम्मीद पूरी कर देता है और गुनाहों के ख़ौफ़ से उसे बे नियाज़ कर देता है।(2)

वह्ब बिन वर्द से मरवी है : ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام फ़रमाया करते थे कि जन्नत की मह़ब्बत और जहन्नम का ख़ौफ़ मुसीबत के वक़्त सब्र देता है और येह दो चीज़ें दुन्यावी लज़्ज़तों, ख़्वाहिशात और ना फ़रमानियों से दूर कर देती हैं।

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है : ब ख़ुदा तुम से पहले ऐसे लोग हो गुज़रे हैं जो गुनाहों को इतना अ़ज़ीम समझते थे कि वोह बे ह़द व ह़िसाब सोने चांदी की बख़्शिशों को भी अपने एक गुनाह से नजात का ज़रीआ़ नहीं समझते थे।

फ़रमाने नबवी है कि जो कुछ मैं सुनता हूं, क्या तुम सुनते हो ? आस्मान चर चराता है और उस का ह़क़ है कि वोह चर चराए, रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! आस्मान में चार उंगल जगह नहीं है जिस में फ़िरिश्ते बारगाहे इलाही में सजदा रेज़, क़ियाम करने वाला या रुकूअ़ करने वाला न हो, जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते और निकल जाते या पहाड़ों

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े। (پ۱۸، النور:٦٣)

2 ......ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی التشدید عند الموت، ۲/۲۹٦، الحدیث۹۸۵

पर चढ़ जाते और अल्लाह तआ़ला के शदीद इन्तिक़ाम और हैबतो जलाल के ख़ौफ़ से अल्लाह तआ़ला की पनाह ढूंडते।[1]

एक रिवायत में ह़ज़रते बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह अल मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल है : जो लोग हंसते हुवे गुनाह करते हैं वोह रोते हुवे जहन्नम में जाएंगे।

ह़दीस शरीफ़ में है : कि अगर मोमिन अल्लाह तआ़ला के तय्यार कर्दा तमाम अ़ज़ाबों को जानता तो कभी भी जहन्नम से बे ख़ौफ़ न होता।[2]

सह़ीह़ैन में है, जब येह आयत नाज़िल हुई :

وَاَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ الْاَقْرَبِیْنَ [3] *और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा।*

तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और फ़रमाया : ऐ गुरौहे कुरैश ! अल्लाह तआ़ला से अपने नफ़्सों को ख़रीद लो, मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला के मुआ़मलात में किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ बनी अ़ब्दे मनाफ़ ! (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिश्तेदार) मैं तुम्हें अह़कामे ख़ुदावन्दी में किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ अ़ब्बास ! (रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा) मैं आप को अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ सफ़िय्या ! (रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफी) मैं तुम को अल्लाह के सामने किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ फ़ाति़मा ! (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटी) मेरे माल से जो चाहे मांग लो मगर मैं अल्लाह के सामने तुम्हें किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा।[4]

ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने येह आयत पढ़ी :

وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ [5]

और जो लोग अल्लाह की अ़ताकर्दा चीज़ों से देते हैं और उन के दिल इस बात से डरते हैं कि वोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ लौटने वाले हैं।

1 ......كنز العمال، كتاب العظمة، قسم الاقوال، ٥/١٦٦، الجزء العاشر، الحديث ٢٩٨٢٤، ٢٩٨٢٨ و مسند احمد، ٣٥/٤٠٥، الحديث ٢١٥١٦ ملتقطا

2 .....

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब ! अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ। (پ١٩، الشعراء: ٢١٤)

4 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب ولا تخزنی...الخ، ٣/٢٩٤، الحدیث ٤٧٧١

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है। (پ١٨، المومنون: ٦٠)

और पूछा : या रसूलल्लाह ! क्या येह वोह शख़्स है जो ज़िना करता है, चोरी करता है, शराब पीता है मगर ख़ौफ़े ख़ुदा भी रखता है ? आप ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र की बेटी ! ऐसा नहीं है बल्कि इस से मुराद वोह शख़्स है जो नमाज़ पढ़ता है, रोज़ा रखता है, सदक़ा देता है मगर इस बात से डरता है कि कहीं वोह ना मक़्बूल न हों ।[1] इसे अह़मद ने रिवायत किया है ।

हज़रते ह़सन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ से कहा गया : ऐ अबू सईद ! तुम्हारी क्या राए है ? हम ऐसे लोगों की मजलिस में बैठते हैं जो हमें रह़मते ख़ुदावन्दी से उम्मीदें वाबस्ता रखने की ऐसी बातें सुनाते हैं कि हमारे दिल ख़ुशी से उड़ने लगते हैं, आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! तुम अगर ऐसी क़ौम में बैठते जो तुम्हें ख़ौफ़े ख़ुदा की बातें सुनाते और तुम को अ़ज़ाबे इलाही से डराते यहां तक कि तुम अम्न पा लो, वोह तुम्हारे लिये बेहतर है उस चीज़ से कि तुम ऐसे लोगों में बैठो जो तुम को बे ख़ौफ़ी और उम्मीद में रखें यहां तक कि तुम को ख़ौफ़ आ घेरे ।

फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़शिय्यते इलाही

हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ को जब नेज़े से ज़ख़्मी कर दिया गया और उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने अपने बेटे से कहा : बेटे ! मेरा चेहरा ज़मीन पर रख दो, अफ़्सोस ! और शदीद अफ़्सोस ! अगर **अल्लाह** ने मुझ पर रह़्म न फ़रमाया । हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने कहा : अमीरुल मोमिनीन ! आप को किस चीज़ का ख़ौफ़ है ? **अल्लाह** तआ़ला ने आप के हाथ से फ़ुतूह़ात कराईं, शहर आबाद कराए । उन्हों ने कहा : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे बराबर ही में छोड़ दिया जाए या'नी न नुक़्सान और न नफ़्अ़ दिया जाए ।

हज़रते ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन ह़ुसैन رضی اللہ تعالٰی عنہما जब वुज़ू से फ़ारिग़ होते तो कांपने लग जाते, लोगों ने सबब पूछा : तो आप ने फ़रमाया : तुम पर अफ़्सोस है ! तुम्हें पता नहीं मैं किस की बारगाह में जा रहा हूं और किस से मुनाजात का इरादा कर रहा हूं ।

हज़रते अह़मद बिन ह़म्बल رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : ख़ौफ़े ख़ुदा ने मुझे खाने पीने से रोक दिया, अब मुझे खाने पीने की ख़्वाहिशात नहीं होतीं ।

सह़ीह़ैन की रिवायत है : हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने उन सात आदमियों का ज़िक्र किया कि जिस दिन कोई साया नहीं होगा तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह

---

1 ......مسند احمد، مسند السيدة عائشه رضى الله عنها، ١٠/١٩، الحديث ٢٥٧٦٣ بالتقديم و التاخير

देगा, उन में से एक वोह आदमी है जिस ने तन्हाई में अल्लाह तआला के अ़ज़ाब और वईद को याद किया और अपने क़ुसूर याद कर के ख़ौफ़े इलाही से उस की आंखों से आंसू बह निकले और ख़ौफ़े इलाही की वज्ह से वोह नाफ़रमानी और गुनाहों से किनारा कश हो गया।[1]

अ़ज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ दो आंखें

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दो आंखें ऐसी हैं जिन्हें आग नहीं छूएगी, एक वोह आंख जो आधी रात में अल्लाह के ख़ौफ़ से रोई और दूसरी वोह आंख जिस ने राहे ख़ुदा में निगहबानी करते हुवे रात गुज़ारी।[2]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन हर आंख रोएगी मगर जो आंख अल्लाह की ह़राम कर्दा चीज़ों से रुक गई, जो आंख राहे ख़ुदा में बेदार रही और जिस आंख से ख़ौफ़े इलाही की वज्ह से मख्खी के सर के बराबर आंसू निकला वोह रोने से महफ़ूज़ रहेगी।[3]

ख़ौफ़े इलाही से रोने वाला जहन्नम से आज़ाद है

तिर्मिज़ी ने ह़सन और सह़ीह़ कह कर ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह शख़्स जहन्नम में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा जो अल्लाह के ख़ौफ़ से रोया यहां तक कि दूध दोबारा थन में लौट आए और राहे ख़ुदा का गुबार और जहन्नम का धुवां यक्जा नहीं होंगे।[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) का क़ौल है कि हज़ार दीनार राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा से एक आंसू बहा लेना ज़ियादा पसन्द है।

ह़ज़रते औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : मुझे येह रिवायत मिली है कि इन्सान के ख़ौफ़े ख़ुदा से बहने वाले आंसू उस के जिस्म के जिस हिस्से पर लगते हैं, उस हिस्से को अल्लाह तआला जहन्नम पर ह़राम कर देता है और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सीनए अन्वर

---

1 ......بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد...الخ، ۱/۲۳۶، الحدیث ٦٦٠

2 ......شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان...الخ، ۱/٤۸۸، الحدیث ۷۹٦

3 ......حلیة الاولیاء، ۳/۱۹۰، الحدیث ۳٦٦۳

4 ......ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل الغبار...الخ، ۳/۲۳٦، الحدیث ۱٦۳۹

रोने की वज्ह से ऐसे जोश मारता था जैसे हांडी उबलती और जोश मारती है[1] (या'नी जैसे भड़कती आग पर हांडी जोश मारती है)

कन्दी का क़ौल है कि ख़ौफ़े खुदा से रोने वाले का एक आंसू समन्दरों जैसी त़वीलो अ़रीज़ आग को बुझा देता है।

इब्ने सम्माक की अपने नफ़्स को सर ज़निश

ह़ज़रते इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने नफ़्स को सर–ज़निश करते और फ़रमाते कि कहने को तो ज़ाहिदों जैसी बातें करते हो और अ़मल मुनाफ़िक़ों जैसा करते हो और इस कजरवी के बा वुजूद जन्नत में जाने का सुवाल करते हो ? दूर हो ! दूर हो ! जन्नत के लिये दूसरे लोग हैं जिन के आ'माल हमारे आ'माल से क़त़ई मुख़्तलिफ़ हैं।

ह़ज़रते जा'फ़र की नसीह़तें

ह़ज़रते सुफ़यान सौरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं कि ह़ज़रते जा'फ़रे सादिक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में, मैं ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ऐ रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लख़्ते जिगर ! मुझे वसिय्यत कीजिये ! आप ने फ़रमाया : "सुफ़्यान ! झूटे में मुरुव्वत नहीं होती, ह़ासिद में ख़ुशी नहीं होती, ग़मगीन में भाईचारा नहीं होता और बद ख़ुल्क़ के लिये सरदारी नहीं होती।" मैं ने कहा : ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द ! कुछ और नसीह़त फ़रमाइये ! आप ने फ़रमाया : ऐ सुफ़्यान ! **अल्लाह** तआ़ला की मन्अ़ कर्दा चीज़ों से रुक जा तू आ़बिद होगा, **अल्लाह** की तक़्सीम पर राज़ी हो तू मुसलमान होगा, जैसी तुम लोगों से दोस्ती चाहते हो तुम भी उन के साथ वैसी दोस्ती रखो, तब तुम मोमिन होगे, बुरों से दोस्ती न रख वरना तू भी बुरे अ़मल करने लगेगा, चुनान्चे ह़दीस में है कि आदमी अपने दोस्त के त़रीक़े पर होता है, तुम येह देखो कि तुम्हारी दोस्ती किस से है ? और अपने कामों में उन लोगों से मश्वरा लो जो ख़ौफ़े खुदा रखते हों, मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द ! कुछ और नसीह़त कीजिये ! आप ने फ़रमाया : जो बिग़ैर क़बीले के इ़ज़्ज़त और बिग़ैर हुकूमत के हैबत चाहे उसे चाहिये कि खुदा की नाफ़रमानी की ज़िल्लत से निकल कर **अल्लाह** की फ़रमां बरदारी में आ जाए, मैं ने कहा : ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द ! कुछ और नसीह़त फ़रमाइये ! आप ने फ़रमाया : मुझे मेरे वालिद ने तीन बेहतरीन अदब की बातें सिखलाईं और फ़रमाया : ऐ बेटे ! जो बूरों की सोह़बत इख़्तियार करता है, सलामत नहीं रहता, जो बुरी जगह जाता है मुत्तहम होता है और जो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त नहीं करता शर्मिन्दगी उठाता है।

1 ......مسند احمد، مسند المدنيين، حديث مطرف بن عبدالله، ٥/٤٩٩، الحديث ١٦٣١٢

इब्ने मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कहना है कि मैं ने वुहैब बिन वर्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि जो शख़्स **अल्लाह** की ना फ़रमानी करता है, क्या वोह इबादत का मज़ा पाता है ? उन्हों ने कहा : नहीं और मा'सिय्यत का इरादा करने वाला भी नहीं।

इमाम अबुल फ़रज इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि ख़ौफ़ ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को जलाने वाली आग है, जिस क़दर येह आग शहवात को जलाएगी और गुनाहों से रोकेगी, उस क़दर येह बेहतरीन होगी इसी त़रह़ जिस क़दर येह ख़ौफ़ इबादत पर बर अंगेख़्ता करेगा उसी क़दर येह बेहतरीन होगा और ख़ौफ़ साहि़बे इ़ज़्ज़त कैसे नहीं होगा, इसी से ही तो पाक दामनी, तक़्वा, परहेज़गारी, मुजाहदात और ऐसे उ़म्दा आ'माल का ज़ुहूर होता है जिन से **अल्लाह** तआ़ला का कुर्ब ह़ासिल होता है जैसा कि आयात व अह़ादीस से साबित होता है चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾ (1)

उन लोगों के लिये हिदायत और रह़मत है जो अपने रब से डरते हैं।

और फ़रमाने इलाही है :

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿٨﴾ (2)

***अल्लाह** उन से राज़ी हुवा और वोह **अल्लाह** से राज़ी हुवे येह उस के लिये है जो अपने रब से डरा।*

नीज़ फ़रमाने इलाही है :

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾ (3)

और मुझ से डरो अगर तुम ईमानदार हो।

मज़ीद इरशाद हुवा :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ (4)

और जो शख़्स अपने परवर दगार के आगे खड़े होने से डरता है उस के लिये दो जन्नतें हैं।

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं। (پ۹،الاعراف:۱۵٤)

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** उन से राज़ी, और वोह उस से राज़ी, येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे। (پ۳۰، البینۃ:۸)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो। (پ٤،اٰل عمران : ۱۷۵)

4 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के ह़ुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं। (پ۲۷،الرحمٰن:٤٦)

और इरशाद फ़रमाया :

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ (1) — *अलबत्ता नसीहत हासिल करेगा जो शख़्स डरता है।*

फ़रमाने इलाही है :

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا (2) — *सिवाए उस के नहीं कि अल्लाह के बन्दों में से आलिम डरते हैं।*

और हर वोह आयत या हदीस जो इल्म की फ़ज़ीलत पर दलालत करती है वोह ख़ौफ़ की फ़ज़ीलत पर भी दलालत करती है क्यूंकि ख़ौफ़ इल्म ही का समरा है।

इब्ने अबिद्दुन्या की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब ख़ौफ़े ख़ुदा से बन्दे का जिस्म कांपता है और उस के रोंगटे खड़े हो जाते हैं उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे सूखे दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआला फ़रमाता है : मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ नहीं करता, अगर वोह दुन्या में मुझ से अम्न में (बे ख़ौफ़) होता है तो मैं क़ियामत के दिन ख़ौफ़ज़दा करूंगा और अगर दुन्या में वोह मुझ से डरता है तो मैं उसे क़ियामत के दिन बे ख़ौफ़ कर दूंगा।[4]

अबू सुलैमान अद्दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि हर वोह दिल जिस में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं है वीराना है, और फ़रमाने इलाही है :

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۠ (5) — *पस ख़ुदा की तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं होते मगर ख़सारा पाने वाली क़ौम ही बे ख़ौफ़ होती है।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अ़न क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है। (پ۳۰، الاعلی: ۱۰)
2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। (پ۲۲، فاطر:۲۸)
3.....شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان...الخ، ۱/۴۹۱، الحدیث۸۰۳
4.....المرجع السابق، ص۴۸۲، الحدیث ۷۷۷ بالتقدیم و التاخیر
5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले। (پ۹، الاعراف:۹۹)

बाब 53

फ़ज़ाइले तौबा

तौबा की फ़ज़ीलत में बहुत सी आयात वारिद हैं, फ़रमाने इलाही है :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (1)

और तौबा करो अल्लाह की तरफ़ ऐ मोमिनो ! ताकि तुम फ़लाह पाओ।

और फ़रमाया :

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا یَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ یَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ یُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَیَخْلُدْ فِیْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓىٕكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۷۰﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ یَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿۷۱﴾ (2)

और जो लोग अल्लाह के साथ कोई और मा'बूद नहीं पुकारते और नाहक़ किसी इन्सान को क़त्ल नहीं करते जिस के क़त्ल को अल्लाह ने हराम कर दिया है और ज़िना नहीं करते और जो कोई येह काम करेगा सख़्त मुसीबत से मुलाक़ात करेगा क़ियामत के दिन उसे दुगना अ़ज़ाब दिया जाएगा और रुस्वाई के साथ हमेशा उसी में रहेगा मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे अ़मल किये पस येह लोग अल्लाह तआ़ला इन की बुराइयों को नेकियों में बदल देता है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और जो कोई तौबा करे और अच्छे अ़मल करे पस बेशक वोह रुजूअ़ करता है अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करना।

---

(1) .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ। (پ۱۸، النور: ۳۱)

(2) .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की अल्लाह ने हुर्मत रखी, ना हक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा। बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी। (پ۱۹، الفرقان: ۶۸ تا ۷۱)

तौबा के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अहादीस हैं । मुस्लिम की एक ह़दीस है कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मत को रात में वसीअ़ करता है ताकि दिन में गुनाह करने वाले तौबा करें और वोह उन की तौबा क़बूल फ़रमाए और इसी त़रह़ दिन को अपना दस्ते रह़मत दराज़ फ़रमाता है ताकि रात के गुनाहगारों की तौबा क़बूल फ़रमाए यहां तक कि मग़रिब से सूरज तुलूअ़ होगा[1] (रोज़े क़ियामत तक)

तिर्मिज़ी की ह़दीस है : मग़रिब की त़रफ़ एक दरवाज़ा है जिस की चौड़ाई चालीस या सत्तर साल के सफ़र के बराबर है, **अल्लाह** तआ़ला ने उसे आस्मानो ज़मीन की पैदाइश के वक़्त से तौबा के लिये खोला है और उसे बन्द नहीं करेगा ता आंकि मग़रिब से सूरज तुलूअ़ होगा ।[2] (रोज़े क़ियामत तक)

तिर्मिज़ी की ह़दीसे सह़ीह़ है : **अल्लाह** तआ़ला ने मग़रिब में तौबा के लिये एक दरवाज़ा बनाया है जिस का अ़र्ज़ सत्तर साल के सफ़र के बराबर है, **अल्लाह** उस वक़्त तक इसे बन्द नहीं फ़रमाएगा जब तक कि इस से पहले सूरज मग़रिब से तुलूअ़ न करे ।[3]

चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا[4]

जिस दिन तेरे रब की बा'ज़ निशानियां आएंगी किसी को उस का ईमान नफ़्अ़ नहीं देगा ।

येह कहा गया है कि येह रिवायत और पहले वाली रिवायत के मरफ़ूअ़ होने की तसरीह़ नहीं मिलती जैसा कि बैहक़ी ने इस की तसरीह़ की है, इस का जवाब येह है कि ऐसी बातें अपनी अ़क़्ल और समझ से नहीं कही जातीं लिहाज़ा येह ह़दीस मरफ़ूअ़ के हुक्म में होगी ।

त़बरानी ने जय्यद सनद से नक़्ल किया है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, सात दरवाज़े बन्द हैं और एक दरवाज़ा तौबा के लिये खुला है यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा ।[5]

इब्ने माजा ने जय्यद सनद से येह ह़दीस रिवायत की है कि अगर तुम इतने गुनाह करो कि तुम्हारे गुनाह आस्मानों तक पहुंच जाएं, फिर तुम तौबा करो तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा ।[6]

---

1 ......مسلم، کتاب التوبة، باب قبول التوبة من الذنوب...الخ، ص ١٤٧٥، الحديث ٣١ـ (٢٧٥٩)

2 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبة...الخ ، ٥/٣١٦، الحديث ٣٥٤٦

3 ......المرجع السابق ، ص ٣١٧ ، الحديث ٣٥٤٧

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी, किसी जान को ईमान लाना काम न देगा । (پ٨،الانعام:١٥٨)

5 ......المعجم الكبير ، ١٠/٢٠٦، الحديث ١٠٤٧٩

6 ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر التوبة ، ٤/٤٩٠، الحديث ٤٢٤٨

हाकिम की सहीह़ रिवायत है कि येह बात इन्सान की सआ़दत मन्दी की अ़लामत है कि उस की ज़िन्दगी त़वील हो और अल्लाह तआ़ला उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[1]

तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और हाकिम की रिवायत है कि हर इन्सान ख़त़ाकार है और बेहतरीन ख़त़ाकार तौबा करने वाले हैं।[2]

एक ख़त़ाकार और उस की मुआ़फ़ी

बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि एक बन्दे ने गुनाह किया, फिर अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह ! मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है, मेरा येह गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे, रब ने फ़रमाया : मेरा बन्दा जानता है कि उस का खुदा है जो गुनाह पर मुआख़ज़ा करता है और गुनाहों को मुआ़फ़ करता है लिहाज़ा उस का गुनाह मुआ़फ़ कर दिया, फिर वोह इन्सान जितनी मुद्दत अल्लाह ने चाहा गुनाहों से रुका रहा, फिर उस ने दूसरा गुनाह कर लिया और कहा : ऐ अल्लाह ! मैं ने और गुनाह कर लिया, इसे मुआ़फ़ फ़रमा दे, तब रब्बे जलील ने फ़रमाया : मेरा बन्दा जानता है कि उस का खुदा गुनाहों को बख़्श देता है और गुनाहों के सबब पकड़ लेता है लिहाज़ा अल्लाह ने उस का गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिया फिर जितने दिन अल्लाह तआ़ला ने चाहा वोह रुका रहा ता आंकि उस ने और गुनाह कर लिया और अ़र्ज़ किया कि या अल्लाह ! मैं ने फिर गुनाह किया है, मेरे इस गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमा दे, रब ने फ़रमाया : मेरा बन्दा जानता है कि उस का खुदा गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है और इन पर मुआख़ज़ा भी करता है। इसी सबब उस के गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया जाता है और रब फ़रमाता है : मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया, जो चाहे अ़मल करे।[3]

मुन्ज़िरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है : "जो चाहे अ़मल करे" का मत़लब येह है कि अल्लाह अ़लीमो ख़बीर है, उसे इ़ल्म है कि जब भी मेरा येह बन्दा गुनाह करेगा फ़ौरन ही गुनाह से तौबा कर लेगा और उस की दलील येह है कि वोह जूंही गुनाह करता है तौबा कर लेता है और जब उस का येह त़रीक़ा हो कि गुनाह करते ही दिल की गहराइयों से तौबा कर ले तो ऐसी सूरत में उसे गुनाह नुक़्सान नहीं देंगे, इस का येह मा'ना नहीं है कि वोह ज़बान से तौबा करे मगर दिल से गुनाहों से इज़्हारे नफ़रत न करे और बार बार गुनाह करने लग जाए क्यूंकि येह झूटों की तौबा है।

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب التوبة والا نابة، باب من سعادة المرء...الخ، ٣٤١/٥، الحديث٧٦٧٦

2 ......ترمذی، كتاب صفة القيامة، باب ٤٩(ت_١١٤)، ٢٢٤/٤، الحديث٢٥٠٧

3 ......بخاری، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالٰى: يزيدون أن...الخ، ٥٧٥/٤، الحديث٧٥٠٧

मुहद्दिसीन की एक जमाअ़त ने येह सह़ीह़ रिवायत नक़्ल की है कि मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर सियाह नुक़्ता पड़ जाता है, अगर वोह तौबा कर ले, गुनाह से रुक जाए और इस्तिग़फ़ार करे तो वोह नुक़्ता साफ़ हो जाता है और अगर वोह गुनाह करता रहता है तो उस का दिल सियाह नुक़्तों में छुप जाता है,(1) इस का ज़िक्र **अल्लाह** तआ़ला ने किताबे मुक़द्दस में फ़रमाया है, इरशाद होता है :

كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (2)

हरगिज़ नहीं येह बल्कि उन के दिलों पर उन के आ'माल ने ज़ंग चढ़ा दिया है।

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाता है जब तक कि उस की रूह़ गले तक न पहुंच जाए।(3)

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ज़रते मुआ़ज़ को नसीह़तें

त़बरानी और बैहक़ी ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा और कुछ दूर चलने के बा'द फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुझे **अल्लाह** से डरने, सच्ची बात करने, वा'दा पूरा करने, अमानत की अदाएगी, ख़ियानत से परहेज़, यतीम पर रह़्म, हमसाए की ह़िफ़ाज़त, ग़ुस्सा ज़ब्त़ करने, नर्मी गुफ़्तार, बहुत सलाम करने, ह़ाकिम की इत़ाअ़त, क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र, आख़िरत को मह़बूब रखने, ह़िसाब से डरने, थोड़ी उम्मीदों और बेहतरीन अ़मल की वसिय्यत करता हूं और मुसलमान को गाली देने, झूटे की तस्दीक़ करने, सच्चे को झुटलाने, ह़ाकिमे आ़दिल की ना फ़रमानी करने और ज़मीन में फ़ितना व फ़साद फैलाने से तुझे रोकता हूं, ऐ मुआ़ज़ ! **अल्लाह** तआ़ला का हर दरख़्त और पथ्थर के पास ज़िक्र कर और हर पोशीदा गुनाह की छुप कर तौबा कर और हर ज़ाहिरी गुनाह की ज़ाहिर में तौबा कर।(4)

ताइब का गुनाह हर जगह से मिटा दिया जाता है

अस्बहानी की रिवायत है कि जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्तों को, उस के आ'ज़ाए बदन को और ज़मीन के उस टुकड़े को जिस पर उस ने गुनाह किया है उस बन्दे का गुनाह भुला देता है यहां तक कि वोह क़ियामत में **अल्लाह** की बारगाह में पेश होगा और उस के गुनाहों की कोई गवाही देने वाला नहीं होगा।(5)

1 ......ابن ماجه ، كتاب الزهد، باب ذكر الذنوب، ٤/٤٨٨، الحديث ٤٢٤٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं, बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने। (پ۳۰، المطففين: ۱٤)

3 ......ترمذی، كتاب الدعوات، باب فى فضل التوبة...الخ ، ٥/٣١٧، الحديث ٣٥٤٨

4 ......الزهد الكبير، ص ٣٤٧، الحديث ٩٥٦

5 ......تاريخ مدينة دمشق، ١٧/١٤

अस्बहानी की एक रिवायत है कि गुनाहों पर शर्मसार अल्लाह तआ़ला की रह़मत का मुन्तज़िर होता है और मुतकब्बिर अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का मुन्तज़िर होता है, ऐ अल्लाह के बन्दो ! जान लो कि हर अ़मल करने वाला अपने अ़मल को पाएगा और दुन्या से नहीं निकलेगा यहां तक कि वोह अपने अच्छे और बुरे आ'माल को देख लेगा और आ'माल का दारो मदार उन के ख़ातिमे पर है, और रात, दिन तुम्हारी सुवारियां हैं इन पर सुवार हो कर आख़िरत की त़रफ़ अच्छा सफ़र करो, तौबा में ताख़ीर से बचो क्यूंकि मौत अचानक आती है, तुम में से कोई अल्लाह तआ़ला के ह़िल्म की वज्ह से सुस्त न हो जाए क्यूंकि आग तुम से तुम्हारे जूते से भी क़रीब है,

फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ [1]

पस जो कोई ज़र्रा बराबर नेकी करेगा उसे देखेगा और जो कोई ज़र्रा बराबर बुराई करेगा उसे देखेगा । [2]

त़बरानी येह ह़दीस नक़्ल करते हैं कि गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस का कोई गुनाह न हो ।[3]

बैहक़ी ने येह ह़दीस एक दूसरे त़रीक़े से नक़्ल की है, उस में येह लफ़्ज़ ज़ियादा हैं : गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करने वाला जो बराबर गुनाह भी किये जा रहा है, ऐसा है जैसे वोह रब तआ़ला से मज़ाक़ कर रहा हो ।[4]

सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम की रिवायत है कि गुनाहों पर शर्मिन्दगी तौबा है या'नी शर्मिन्दगी तौबा का अहम रुक्न है जैसे ह़ज में वुक़ूफ़े अ़रफ़ात है ।[5]

तौबा के लिये ज़रूरी है कि वोह सिर्फ़ गुनाहों के ख़राब होने और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से डरते हुवे की जाए, अपनी बे इ़ज़्ज़ती के डर से या रूपे पैसे के ज़ाएअ़ होने की वज्ह से न हो ।

---

1 ......الترغيب و الترهيب، كتاب التوبة و الزهد، الترغيب فى التوبة...الخ، ٤/٩، الحديث ٤٨١٦

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा । (پ ٣٠، الزلزال:٧،٨)

3 ......المعجم الكبير، ١٠/١٥٠، الحديث ١٠٢٨١

4 ......شعب الايمان، السابع والاربعون من شعب الايمان...الخ، ٥/٤٣٦، الحديث ٧١٧٨

5 ......المستدرك للحاكم، كتاب التوبة والانابة، باب الندم توبة، ٥/٣٤٦، الحديث ٧٦٨٦

हाकिम ने सनदे सहीह से येह हदीस नक्ल की है लेकिन इस में एक रावी साकित है कि **अल्लाह** तआला किसी बन्दे के गुनाहों पर पशेमानी और शर्मिन्दगी देखता है तो उसे बख़्शिश तलब करने से पहले बख़्श देता है।(1)

मुस्लिम वग़ैरा की हदीस है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम गुनाह न करो और बख़्शिश तलब न करो तो **अल्लाह** तआला तुम्हें नाबूद कर दे और तुम्हारे बदले में ऐसी क़ौम को लाए जो गुनाह करें और **अल्लाह** तआला से बख़्शिश तलब करें फिर **अल्लाह** तआला उन्हें मुआफ़ फ़रमा दे।(2)

मुस्लिम की हदीस है : कोई ऐसा नहीं है जिसे **अल्लाह** तआला से ज़ियादा अपनी ता'रीफ़ पसन्द हो, इसी लिये **अल्लाह** तआला ने अपनी ता'रीफ़ फ़रमाई है और कोई भी **अल्लाह** तआला से ज़ियादा ग़ैरत वाला नहीं है, इसी लिये **अल्लाह** तआला ने बद कारियों को हराम कर दिया है और कोई एक ऐसा नहीं है जो **अल्लाह** तआला से ज़ियादा उज़्र पसन्द करने वाला हो इसी के लिये **अल्लाह** तआला ने किताबें नाज़िल कीं और रसूलों को भेजा।(3)

एक ज़ानिया की तौबा

मुस्लिम की रिवायत है कि एक औरत जुहैना जो ज़िना से हामिला हुई थी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई और अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं क़ाबिले हद हूं, मुझ पर हद जारी फ़रमाइये, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सर परस्त को बुला कर फ़रमाया कि इस से हुस्ने सुलूक करना और जब इस का बच्चा पैदा हो जाए तो इसे मेरे पास ले आना, चुनान्चे, उस शख़्स ने ऐसा ही किया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि इस औरत के कपड़े अच्छी तरह बांध दिये जाएं, फिर आप ने उसे संगसार करने का हुक्म दिया और बा'द में आप ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप ने इस ज़ानिया की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ? आप ने फ़रमाया : इस ने ऐसी तौबा की है कि अगर वोह मदीने के सत्तर आदमियों पर बांट दी जाए तो सब को पूरी हो जाए, क्या तुम ने इस से कोई अफ़्ज़ल शख़्स देखा कि वोह ख़ुद को **अल्लाह** की हुदूद के इजरा के लिये ले आई है।(4)

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب التوبة والانابة، باب ما علم الله من عبد...الخ، ٥/٣٦٠، الحديث ٧٧٢١

2 ......مسلم، كتاب التوبة، باب سقوط الذنوب...الخ، ص ١٤٧٠، الحديث ١١ ـ (٢٧٤٩) وغيره

3 ......المرجع السابق، باب غيرة الله تعالى...الخ، ص١٤٧٦، الحديث ٣٥ ـ (٢٧٦٠)

4 ......مسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف...الخ، ص ٩٣٣، الحديث ٢٤ ـ (١٦٩٦)

तिर्मिज़ी ने ब सनदे ह़सन, सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान और ब सनदे सह़ीह़ ह़ाकिम ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رضی اللہ تعالٰی عنہما) से रिवायत की है, इन्हों ने कहा : मैं हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की गुफ़्तुगू सुनता था, आप एक या दो मरतबा (और इन्हों ने सात मरतबा तक गिना) से ज़ियादा किसी बात को नहीं दोहराया करते थे मगर येह बात मैं ने आप से इस से भी ज़ियादा बार सुनी है, आप फ़रमाते थे कि बनी इस्राईल में एक किफ़्ल नामी शख़्स था, वोह गुनाहों से परहेज़ नहीं करता था, एक मरतबा वोह एक औ़रत के पास गया और उसे साठ दीनार दे कर गुनाह पर रज़ामन्द कर लिया, चुनान्चे, जब वोह बुराई के इन्तिहाई क़रीब हुवा तो वोह औ़रत कांपने और रोने लगी, उस ने औ़रत से कहा : क्या तुम मुझे अच्छा नहीं समझती हो ? वोह बोली नहीं बल्कि बात येह है कि मैं ने ऐसी बुराई कभी नहीं की है और आज मैं किसी ज़रूरत से मजबूर हो कर येह कर रही हूं। उस ने येह बात सुन कर कहा : वाक़ेई तुम ने इस ह़ालत में भी ऐसी बुराई नहीं की है ? येह दीनार ले जाओ, मैं ने तुम्हें बख़्श दिये हैं और ख़ुदा की क़सम ! मैं आयिन्दा कभी भी गुनाह नहीं करूंगा। फिर वोह उसी रात मर गया, सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था कि **अल्लाह** तआ़ला ने किफ़्ल को बख़्श दिया है।(1)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ से सह़ीह़ ह़दीस मरवी है, हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : दो बस्तियां थीं, एक नेकों की और दूसरी बुरों की, एक मरतबा बुरों की बस्ती से एक आदमी नेकों की बस्ती की त़रफ़ जाने के इरादे से निकला मगर उसे रास्ते में मशिय्यते इलाही के मुत़ाबिक़ मौत आ गई चुनान्चे, उस शख़्स के बारे में शैत़ान और फ़िरिश्तए रह़मत का झगड़ा हो गया, शैत़ान बोला इस ने कभी भी मेरी ना फ़रमानी नहीं की लिहाज़ा येह मेरा है, फ़िरिश्तए रह़मत ने कहा कि येह तो तौबा के इरादे से जा रहा था। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ैसला फ़रमाया कि तुम देखो, येह कौन सी बस्ती से ज़ियादा क़रीब है ? उन्हों ने उसे बालिश्त नेकों की बस्ती से क़रीब पाया लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला ने उसे बख़्श दिया।

मुअ़म्मर की रिवायत है कि मैं ने कहने वाले से सुना है, **अल्लाह** तआ़ला ने नेकों की बस्ती को उस के क़रीब कर दिया।(2)

क़ातिल, इरादए तौबा की बदौलत नजात पा गया

बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : तुम से पहले लोगों में से एक शख़्स था जिस ने निनानवे क़त्ल किये थे, उस ने दुन्या के सब से बड़े आ़लिम के

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ٤٨ـ (ت:١١٣)، ٤/٢٢٣، الحدیث ٢٥٠٤
2 ......المعجم الکبیر، ٩/١٧١، الحدیث ٨٨٥١

मुतअ़ल्लिक़ पूछगछ की तो लोगों ने उसे एक राहिब का पता दिया चुनान्चे, वोह राहिब के पास आया और उसे कहा : मैं ने निनानवे क़त्ल किये हैं, क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? राहिब बोला : नहीं और उस आदमी ने राहिब को भी क़त्ल कर के सो क़त्ल पूरे कर लिये, फिर उस ने दोबारा दुन्या के सब से बड़े आ़लिम की तलाश शुरूअ़ की तो उसे एक आ़लिम का पता बताया गया, वोह आ़लिम के पास गया और कहा कि उस ने सो क़त्ल किये हैं, क्या उस के लिये तौबा मुमकिन है ? आ़लिम ने कहा : हां ! तेरे और तेरी तौबा के दरमियान कौन ह़ाइल हो सकता है ! फ़ुलां फ़ुलां जगह जाओ वहां अल्लाह तआ़ला के नेक, इ़बादत गुज़ार लोग रहते हैं, तुम भी वहीं जा कर उन के साथ इ़बादत करो और फिर अपने वत़न वापस न आना क्यूंकि येह बहुत बुरी जगह है।

चुनान्चे, वोह चल पड़ा, जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई, लिहाज़ा उस के मुतअ़ल्लिक़ रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों का आपस में झगड़ा हो गया, रह़मत के फ़िरिश्तों ने कहा : येह ताइब हो कर अपना दिल रह़मते खुदावन्दी से लगाए आ रहा था, अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने कहा : इस ने कभी कोई नेकी नहीं की, तब उन के पास आदमी की शक्ल में एक फ़िरिश्ता आया जिसे उन्हों ने अपना ह़कम तस्लीम कर लिया, उस फ़िरिश्ते ने कहा : तुम ज़मीन नाप लो, वोह जिस बस्ती के क़रीब था वोह उन्ही में शुमार होगा चुनान्चे, उन्हों ने ज़मीन नापी और वोह नेकों की बस्ती के क़रीब निकला, लिहाज़ा उसे रह़मत के फ़िरिश्ते ले गए।(1)

एक रिवायत में है कि वोह एक बालिश्त नेकों की बस्ती से क़रीब था लिहाज़ा उसे भी नेकों में से कर दिया गया।(2)

दूसरी रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने बुरों की बस्ती की ज़मीन की त़रफ़ वह्य फ़रमाई, उस से कहा : दूर हो जा और नेकों की बस्ती की ज़मीन से कहा : तू क़रीब हो जा और फ़रमाया : इन बस्तियों का फ़ासिला नापो तो फ़िरिश्तों ने उसे एक बालिश्त नेकों की बस्ती से क़रीब पाया और उसे बख़्श दिया गया।(3)

ह़ज़रते क़तादा رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हमें येह बतलाया था कि जब इ़ज़्राईल आया तो उस शख़्स ने अपना सीना नेकों की त़रफ़ कर दिया।

---

(1) ......مسلم، کتاب التوبة، باب قبول توبة القاتل...الخ، ص ۱۴۷۹، الحدیث ۴۶ـ (۲۷۶۶)

(2) ......المرجع السابق، الحدیث ۴۷ـ (۲۷۶۶)

(3) ......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۵۶، ۲/۴۶۶، الحدیث ۳۴۷۰

त़बरानी ने सनदे जय्यद के साथ येह रिवायत नक़्ल की है कि एक आदमी ने बहुत ज़ियादा गुनाह किये और वोह एक शख़्स के पास आया और कहा : मैं ने निनानवे बे गुनाहों को क़त्ल किया है, क्या तुम मेरे लिये तौबा का कोई रास्ता पाते हो ? उस आदमी ने कहा : नहीं, चुनान्चे, इस लिये उसे भी क़त्ल कर दिया और दूसरे आदमी से कहा मैं ने सो बे गुनाहों को क़त्ल किया है, क्या मेरे लिये तौबा का कोई त़रीक़ा है ? उस ने कहा : अगर मैं येह कहूं कि अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों की तौबा क़बूल नहीं करता तो येह सरासर झूट है, देखो फ़ुलां मक़ाम पर एक इबादत गुज़ार जमाअ़त रहती है, तुम भी वहां जाओ और उन के साथ रह कर इबादत करो, चुनान्चे, वोह उन की त़रफ़ चल पड़ा और रास्ते ही में मर गया। इस पर अ़ज़ाब और रह़मत के फ़िरिश्तों ने झगड़ा किया अल्लाह तआ़ला ने उन के पास फ़िरिश्ता भेजा जिस ने कहा कि तुम इन दोनों जगहों की ज़मीन नाप लो, जिस ज़मीन से येह क़रीब होगा उसी का होगा, जब ज़मीन नापी गई तो उसे च्यूंटी के बराबर इबादत गुज़ार बन्दों की बस्ती से क़रीब पाया गया लिहाज़ा उसे बख़्श दिया गया।(1)

त़बरानी की एक और रिवायत में है कि फिर वोह दूसरे राहिब के पास आया और कहा : मैं ने सो क़त्ल किये हैं, क्या तू मेरे लिये तौबा का रास्ता पाता है ? राहिब ने कहा : तुम अपने आप पर बहुत ज़ुल्म कर चुके हो मैं कुछ नहीं जानता लेकिन क़रीब ही दो बस्तियां हैं, एक को नस्रा और दूसरी को कुफ़्रा कहा जाता है, नस्रा वाले हमेशा अल्लाह की इबादत करते रहते हैं, उस में कोई गुनहगार नहीं रह सकता और कुफ़्रा वाले हमेशा गुनाहों में मगन रहते हैं, वहां उन के सिवा और कोई नहीं रहता, तुम नस्रा में जाओ, अगर तुम वहां साबित क़दमी से नेक अ़मल करते रहे तो तुम्हारी तौबा की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं होगा। चुनान्चे, वोह नस्रा का इरादा कर के रवाना हो गया। जब वोह दोनों बस्तियों के दरमियान पहुंचा तो उसे मौत ने आ लिया, फ़िरिश्तों ने अल्लाह तआ़ला से उस शख़्स के बारे में सुवाल किया तो रब्बे जलील ने फ़रमाया कि देखो येह कौन सी बस्ती से क़रीब है, जिस बस्ती से क़रीब हुवा, इसे उन्ही लोगों में से लिख दो, पस फ़िरिश्तों ने उसे च्यूंटी के बराबर नस्रा से क़रीब पाया लिहाज़ा उसे नस्रा वालों में से लिख दिया गया।(2)

---

1 ......المعجم الكبير، ١٩/٣٦٩، الحديث ٨٦٧

2 ......الترغيب والترهيب، كتاب التوبة والزهد، الترغيب فى التوبة...الخ ٤/١٤، الحديث ٤٨٢٧

बाब 54

मुमानअ़ते ज़ुल्म

फ़रमाने इलाही है :

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوٓا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾[1]

और अ़न क़रीब ज़ालिम जान लेंगे कौन सी फिरने की जगह फेरे जाएंगे।

फ़रमाने नबवी है कि ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकी होगी।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन ज़ुल्म से हासिल कर लेता है, अल्लाह तआ़ला उस के गले में सातों ज़मीनों का तौक़ डालेगा।[3]

बा'ज़ कुतुब में मरक़ूम है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : उस आदमी पर ज़ुल्म मेरे ग़ज़ब को भड़का देता है जिस का मेरे सिवा कोई मददगार नहीं है। किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

لاتظلمن اذا ما كنت مقتدرا　　　فالظلم يرجع عقباه الى الندم

تنام عيناك والمظلوم منتبه　　　يدعوعليك وعين الله لم تنم

《1》...... जब तू साहिबे इक़्तिदार हो तो किसी पर हरगिज़ ज़ुल्म न कर क्यूंकि ज़ुल्म का अन्जाम शर्मिन्दगी है।

《2》.....तेरी आंखें सोएंगी मगर मज़लूम की आंखें जाग कर तेरे लिये अल्लाह तआ़ला से बद दुआ़ करेंगी और अल्लाह तआ़ला कभी सोता नहीं है।

दूसरा शाइर कहता है :

اذا ماالظلوم استوطا الارض مركبا　　　ولج غلوا فى قبيح اكتسابه

فكله الى صرف الزمان فانه　　　سيبدى له مالم يكن فى حسابه

《1》......जब मज़लूम ज़मीन पर चले और ज़ालिम बुरे आ'माल में हद से ज़ियादा बढ़ जाए,

《2》......तो तू उस को मसाइबे ज़माना के सिपुर्द कर दे क्यूंकि ज़माना उसे वोह सबक़ देगा जो उस के वहमो गुमान में भी नहीं होगा।

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे। (پ۱۹،الشعراء:۲۲۷)

2 ......بخاری،کتاب المظالم والغصب، باب الظلم ظلمات، الخ، ۲/۱۲۷، الحدیث۲٤٤۷

3 ......مسلم،کتاب المساقاۃ، باب تحریم الظلم وغصب الارض وغیرھا، ص ۸٦۹، الحدیث۱۳۸ـ (۱٦۱۰)

अस्लाफ़े किराम में से बा'ज़ का क़ौल है कि कमज़ोरों पर ज़ुल्म न कर, वरना तू बद तरीन ताक़तवरों में से हो जाएगा।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि ज़ालिम के ज़ुल्म की वज्ह से जज़्र (सुरख़ाब) अपने आश्याने में मर जाता है।

कहते हैं : तौरैत में मरक़ूम था कि पुल सिरात् के इस त़रफ़ मुनादी निदा करेगा : ऐ सरकश ज़ालिमो ! ऐ बद बख़्त ज़ालिमो ! बेशक **अल्लाह** तआला ने अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम खाई है कि आज ज़ालिम का ज़ुल्म पुल सिरात् से नहीं गुज़रेगा (ज़ालिम पुल सिरात् से नहीं गुज़र सकेंगे)।

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब मुहाजिरीने ह़बशा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस लौट कर आ गए तो आप ने उन से फ़रमाया कि तुम ने ह़बशा में कोई अ़जीब बात देखी हो तो मुझे बतलाओ ! हज़रते क़ुतैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्ही मुहाजिरीन में से थे, उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) मेरी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाइये ! मैं बतलाता हूं : हम एक दिन बैठे हुवे थे कि ह़बशा की एक बूढ़ी औ़रत सर पर पानी का बरतन रखे जा रही थी, जब वोह एक ह़बशी जवान के क़रीब से गुज़री तो उस ने खड़े हो कर बुढ़िया के दोनों कन्धों पर हाथ रख कर उसे धक्का दिया जिस से बुढ़िया घुटनों के बल जा गिरी और उस का मटका टूट गया, वोह उठी और जवान की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगी : ऐ ग़द्दार ! तू अ़न क़रीब जान लेगा जब कि **अल्लाह** तआला अ़दालत फ़रमाएगा और पहले पिछले सब लोगों को जम्अ़ करेगा और हाथ पाउं आदमी के आ'माल की गवाही देंगे। **अल्लाह** के हां तू भी अपना और मेरा फ़ैसला कल सुन लेगा। रावी कहते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ऐसी क़ौम को कैसे फ़लाह़ देगा जो ताक़तवरों से कमज़ोरों को बदला नहीं दिला सकती।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है : आप ने फ़रमाया : पांच आदमी ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** तआला ग़ज़बनाक होता है, अगर वोह चाहेगा तो दुन्या में उन्हें अपने ग़ज़ब का निशाना बनाएगा वरना (आख़िरत में) उन्हें जहन्नम में डालेगा :

﴾1﴿.....हाकिमे क़ौम जो खुद तो लोगों से अपने हुक़ूक़ ले लेता है मगर उन्हें उन के हुक़ूक़ नहीं देता और उन से ज़ुल्म को दफ़्अ़ नहीं करता।

﴾2﴿.....क़ौम का क़ाइद, लोग जिस की पैरवी करते हैं और वोह ताक़तवर और कमज़ोर के दरमियान फ़ैसला नहीं कर सकता और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के मुताबिक़ गुफ़्तगू करता है (ह़दीस में हज़रते क़ुतैबा के बजाए सहाबिय्या का ज़िक्र है)

﴾3﴿......घर का सरबराह जो अपने घर वालों और अवलाद को **अल्लाह** की इताअ़त का हुक्म नहीं देता और उन्हें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं देता।

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الفتن، باب الامر بالمعروف...الخ، ٤/٣٦٢، الحديث ٤٠١٠ بذكر صحابية مكان قتيبة

﴾4﴿......ऐसा आदमी जो उजरत पर मज़दूर लाता है और काम मुकम्मल करवा के उस की उजरत पूरी नहीं देता, और

﴾5﴿......वोह आदमी जो अपनी बीवी का हक़्क़े महर दबा कर उस पर ज़ियादती करता है।[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, आप ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने जब मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया और वोह खड़े हो गए तो उन्हों ने अल्लाह की त़रफ़ सर उठा कर देखा और कहा : ऐ अल्लाह ! तू किस के साथ होगा ? रब्बे जलील ने फ़रमाया : मज़्लूम के साथ यहां तक कि उसे उस का हक़ दिया जाए।

एक बुढ़िया पर ज़ुल्म के बाइ़स हलाकत

वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : किसी ज़ालिम बादशाह ने शानदार महल बनवाया, एक मुफ़्लिस बुढ़िया आई और उस ने महल के पहलू में अपनी कुटया बना ली जिस में वोह सुकून से रहती थी एक मरतबा ज़ालिम बादशाह ने सुवार हो कर महल के इर्द गिर्द चक्कर लगाया तो उसे बुढ़िया की कुटया नज़र आई, उस ने पूछा : येह किस की है ? कहा गया : येह एक बुढ़िया की है और वोह इस में रहती है चुनान्चे, उस ने हुक्म दिया कि इसे गिरा दो लिहाज़ा उसे गिरा दिया गया, जब बुढ़िया वापस आई तो उस ने अपनी मुन्हदिम कुटया देख कर पूछा कि इसे किस ने गिरा दिया है ? लोगों ने कहा : इसे बादशाह ने देखा और गिरा दिया, तब बुढ़िया ने आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और कहा : ऐ अल्लाह ! अगर मैं हाज़िर नहीं थी तो तू कहां था ? अल्लाह तआ़ला ने जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म दिया : महल को इस के रहने वालों पर उलट दो और ऐसा ही किया गया।

कहते हैं कि एक बरमकी अमीर और उस के बेटे को जब एक अ़ब्बासी अमीरुल मुस्लिमीन ने क़ैद कर दिया तो बेटे ने कहा : ऐ अब्बा जान ! हम बा इ़ज़्ज़त होने के बा'द क़ैद कर दिये गए हैं, बाप ने जवाब दिया, बेटे ! मज़्लूमों की फ़रयादें रातों को सफ़र करती रहीं, हम उन से ग़ाफ़िल रहे मगर अल्लाह तआ़ला उन से ग़ाफ़िल नहीं था।

यज़ीद बिन ह़कीम कहा करते थे : मैं कभी किसी से ख़ौफ़ज़दा नहीं हुवा अलबत्ता मुझे एक शख़्स ने डरा दिया या'नी मैं ने उस पर येह जानते हुवे ज़ुल्म किया कि अल्लाह के सिवा उस का कोई मददगार नहीं है, वोह मुझ से कहता था कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, अल्लाह तआ़ला तेरे और मेरे दरमियान फ़ैसला करेगा।

हज़रते अबी उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : ज़ालिम क़ियामत के दिन आएगा जब वोह पुल सिरात़ पर पहुंचेगा तो उसे मज़्लूम मिल जाएगा और वोह अपने ज़ुल्म को ख़ूब पहचान लेगा लिहाज़ा ज़ालिम मज़्लूमों से नजात नहीं पाएंगे यहां तक कि ज़ुल्म के बदले उन की नेकियां ले लेंगे

1......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة السادسة والعشرين، ص ١١٩

और उन की नेकियां नहीं होंगी तो उन के ज़ुल्म के बराबर अपने गुनाह ज़ालिमों पर डाल देंगे ता आंकि ज़ालिम जहन्नम के सब से निचले तृबके में भेजे जाएंगे।[1]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : क़ियामत के दिन लोग नंगे बदन, नंगे पाउं, ग़ैर मख़्तूं, सियाह सूरतों में उठेंगे। पस मुनादी निदा करेगा : जिस की आवाज़ ऐसी होगी जो दूरो नज़्दीक यक्सां तौर पर सुनी जाएगी, मैं बदले देने वाला मालिक हूं किसी जन्नती के लिये मुनासिब नहीं है कि वोह जन्नत में जाए बा वुजूद येह कि उस पर किसी जहन्नमी की दाद ख़्वाही रहती हो चाहे वोह एक थप्पड़ ही क्यूं न हो या इस से ज़ियादा हो और कोई जहन्नमी जहन्नम में न जाए दर-आं-ह़ाल येह कि[2] उस पर किसी का ह़क़ रहता हो, चाहे वोह एक थप्पड़ हो या इस से ज़ियादा हो और तेरा रब किसी एक पर भी ज़ुल्म नहीं करेगा, हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह कैसे हो सकेगा ह़ालांकि हम तो उस दिन नंगे बदन, नंगे पाउं होंगे, आप ने फ़रमाया : नेकियों और बुराइयों के साथ मुकम्मल बदला दिया जाएगा और तुम्हारा रब किसी एक पर ज़ुल्म नहीं करेगा।[3]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है : जो नाह़क़ एक चाबुक मारता है, क़ियामत के दिन उस का बदला लिया जाएगा।[4]

हिकायत

किस्रा ने अपने बेटे के लिये एक उस्ताद मुक़र्रर किया जो उसे ता'लीम देता था और अदब सिखाता, जब वोह बच्चा मुकम्मल तौर पर इल्मो फ़ज़्ल से बहरा वर हो गया तो उस्ताद ने उसे बुलाया और बिग़ैर किसी जुर्म और बिग़ैर किसी सबब के उसे इन्तिहाई दर्दनाक सज़ा दी, उस लड़के ने अपने उस्ताद के इस रविय्ये को बहुत ही बुरा समझा और दिल में उस की तरफ़ से अ़दावत पैदा हो गई यहां तक कि वोह जवान हो गया, उस का बाप मर गया और बाप के बा'द वोह बादशाह बन गया। बादशाही संभालते ही उस ने उस्ताद को बुला कर पूछा : आप ने फ़ुलां दिन बिग़ैर किसी जुर्म और बिग़ैर किसी सबब मुझे इतनी दर्दनाक सज़ा क्यूं दी थी ? उस्ताद ने कहा : ऐ बादशाह ! जब तू इल्मो फ़ज़्ल के कमाल तक पहुंच गया तो मुझे मा'लूम हो गया कि बाप के बा'द तू बादशाह बनेगा, मैं ने सोचा तुझे सज़ा का ज़ाइक़ा और ज़ुल्म की तक्लीफ़ से मुवाफ़िक़ कर दूं ताकि तू इस के बा'द किसी पर ज़ुल्म न करे, बादशाह ने कहा : अल्लाह तआ़ला आप को जज़ाए ख़ैर दे और फिर उन का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया और उन के अख़राजात की अदाएगी का हुक्म सादिर कर दिया।

---

1 ......المعجم الاوسط ، ٤/٢٧٦، الحديث٥٩٧٦

2 ...दर आं ह़ाल येह कि, या'नी इस ह़ाल में कि। **इल्मिय्या**

3 ......كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة السادسة والعشرين، ص ١٢١

4 ......المعجم الاوسط، ١/٣٩٤ ، الحديث١٤٤٥

बाब 55

यतीमों पर ज़ुल्म से मुमानअ़त

फ़रमाने इलाही है :

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾ [1]

बेशक जो लोग नाहक़ यतीमों का माल खाते हैं सिवाए इस के नहीं कि वोह अपने पेटों में आग खाते हैं और अलबत्ता वोह जहन्नम में जाएंगे।

हज़रते क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि येह आयत बनी ग़त्फ़ान के एक शख़्स के हक़ में नाज़िल हुई, वोह अपने छोटे यतीम भतीजे का सरपरस्त बना और उस का तमाम माल खा गया।

नाहक़ और ज़ुल्म से येह मुराद है कि वोह ऐसा करते हुवे हक़ीक़त में यतीमों पर ज़ुल्म करते हैं। इस वईद में वोह लोग दाख़िल नहीं हैं जो कुतुबे फ़िक़्ह में मुन्दरजा शराइत़ के मुत़ाबिक़ इन के माल में तसर्रुफ़ करते हैं और खाते हैं।

फ़रमाने इलाही है :

وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ [2]

और जो ग़नी हो उसे चाहिये कि वोह बच्चे (यतीमों के माल से कुछ न ले) और जो फ़क़ीर हो उसे चाहिये कि इन्साफ़ के साथ खाए।

या'नी वोह अपनी लाज़िमी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ले ले या बत़ौरे क़र्ज़ या अपने काम की उजरत के बराबर खाए या वोह इज़्तिराब की ह़ालत में हो लिहाज़ा अगर बा'द में वोह फ़राख़ दस्त हो जाए तो यतीम का खाया हुवा माल वापस करे वगरना येह उस के लिये ह़लाल है।

और **अल्लाह** तआ़ला ने यतीमों के हुक़ूक़ पर ताकीद फ़रमा कर और उन से ज़ियादा शफ़्क़त व उल्फ़त रखने का ज़िक्र फ़रमा कर लोगों को तवज्जोह दिलाई है और इस इब्तिदाई आयत से पहले वाली आयत में इरशाद फ़रमाया है कि

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जाएंगे। (پ٤، النساء:١٠)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिसे ह़ाजत न हो वोह बचता रहे और जो ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए। (پ٤، النساء:٦)

وَلۡيَخۡشَ الَّذِيۡنَ لَوۡ تَرَكُوۡا مِنۡ خَلۡفِهِمۡ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوۡا عَلَيۡهِمۡ ۖ فَلۡيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡيَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ۝ [1]

*और बेशक डरें वोह लोग इस बात से कि अगर वोह अपने पीछे ना तुवां अवलाद छोड़ जाएं वोह उन पर ख़ौफ़ खाएं और चाहिये कि **अल्लाह** से डरें और चाहिये कि मोहकम बात कहें।*

इस आयते करीमा में उन लोगों के अक़्वाल के बर अ़क्स जो इसे एक तिहाई से ज़ियादा वसिय्यत करने और इस जैसी और बातों पर महमूल करते हैं, आयिन्दा आने वाली आयत से रब्त़ देते हुवे येह मुराद है कि जिस शख़्स की सर परस्ती में यतीम हो वोह इस से बेहतर सुलूक करे, यहां तक कि उसे ऐसे बुलाए जैसे वोह अपनी अवलाद को बुलाता है, या'नी उसे "ऐ बेटे" कह कर बुलाए और उस से ऐसी भलाई, एहसान और नेक सुलूक करे और उस के माल को इस त़रीक़े से ख़र्च करे जैसा कि वोह अपने मरने के बा'द अपनी अवलाद और अपने माल से सुलूक की आरज़ू रखता है क्यूंकि क़ियामत के दिन का मालिक रब्बे ज़ुल जलाल आ'माल के मुत़ाबिक़ जज़ा देता है या'नी जैसा करोगे वैसा भरोगे जैसे तुम दूसरों के साथ सुलूक करोगे वोही सुलूक तुम्हारे साथ किया जाएगा।

बसा अवक़ात इन्सान बे ख़ौफ़ हो कर दूसरे के माल और अवलाद में तसर्रुफ़ करता है कि उसे अचानक मौत आ लेती है और **अल्लाह** तआ़ला उसे उस के माल, अवलाद ख़ानदान और तमाम तअ़ल्लुक़ात की वैसी ही जज़ा देता है जैसा सुलूक उस ने दूसरे के साथ किया होता है, अगर अच्छा सुलूक किया होता है तो अच्छी जज़ा, और अगर बुरा सुलूक किया होता है तो बुरी जज़ा मिलती है।

लिहाज़ा हर अ़क़्लमन्द को चाहिये कि अगर उस के दिल में दीन का ख़ौफ़ न हो, तब भी उसे अपनी अवलाद और माल की ख़ात़िर ख़ौफ़ करना चाहिये और यतीमों के माल को जो उस की सरपरस्ती में हैं, ऐसे ख़र्च करे जैसे वोह अपनी अवलाद के माल में उन के यतीम होने की उन के सरपरस्त से ख़र्च करने की उम्मीद रखता है।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य की, कि ऐ दावूद ! यतीम के लिये मेहरबान बाप की त़रह़ और मुफ़्लिस बेवा के लिये मेहरबान शोहर की त़रह़ हो जा और जान

---

[1].....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और डरें वोह लोग कि अगर अपने बा'द नातुवान अवलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि **अल्लाह** से डरें और सीधी बात करें। (پ٤، النساء:٩)

ले कि जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा या'नी तू जैसा करेगा वैसा ही तुझ से किया जाएगा क्यूंकि आख़िर एक दिन मरना है, तेरी अवलाद को यतीम और बीवी को बेवा होना है।

यतीमों के माल खाने और उन पर ज़ुल्म करने के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अहादीस में शदीद वईदें आई हैं जैसा कि मज़्कूरए बाला आयत में लोगों को इस तबाह कुन, बेहूदा और ज़लील हरकत से बाज़ रखने के लिये सख़्त तम्बीह की गई है।

मुस्लिम वग़ैरा में मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! मैं तुझे कमज़ोर समझता हूं और मैं तेरे लिये वोही कुछ पसन्द करता हूं जो अपने लिये पसन्द करता हूं, कभी दो पर हुक्मरान न बन और माले यतीम को अच्छा न समझ।(1)

बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरा में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सात मोहलिक बातों से बचो, सहाबए किराम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) वोह कौन सी हैं ? आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** के साथ शरीक बनाना, जादू, नाहक़ किसी को क़त्ल करना, सूद खाना और यतीम का माल खाना वग़ैरा।(2)

हाकिम ने सनदे सहीह के साथ रिवायत की है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चार शख़्स ऐसे हैं कि येह **अल्लाह** का अ़द्ल होगा कि उन्हें जन्नत में न दाख़िल करे और न ही उन्हें जन्नत की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने दे, शराबी, सूद ख़ोर, नाहक़ यतीमों का माल खाने वाला और वालिदैन का ना फ़रमान।(3)

सहीह इब्ने ह़ब्बान में रिवायत है कि इन बातों में जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के तवस्सुत़ से यमन वालों को जो अह़काम भेजे थे, उन में येह भी था कि

क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** का शरीक ठहराना, नाहक़ किसी मोमिन को क़त्ल करना, जंग के दिन मैदान से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह से फ़िरार, वालिदैन की ना फ़रमानी, पाकबाज़ औरतों पर इत्तिहाम लगाना, जादू सीखना, सूद खाना और यतीम का माल खाना है।(4)

---

1. ......مسلم، كتاب الامارة، باب كراهة الامارة...الخ، ص ١٠١٥، الحديث١٧ـ (١٨٢٦)
2. ......بخاری، كتاب الوصايا، باب قول الله تعالى ان الذين يأكلون... الخ، ٢٤٢/٢، الحديث٢٧٦٦
3. ......المستدرك للحاكم، كتاب البيوع، باب ان اربى الربا...الخ، ٣٣٨/٢، الحديث٢٣٠٧
4. ......صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب كتب النبى صلى الله عليه وسلم، ١٨١/٦، الجزء الثامن، الحديث٦٥٢٥

यतीमों का माल नाहक़ खाना और इस का बदला

अबू या'ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत है कि क़ियामत के दिन क़ब्रों से एक ऐसी क़ौम उठाई जाएगी जिन के मुंह से आग भड़क रही होगी, अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! वोह कौन हैं ? आप ने फ़रमाया : क्या तुम ने फ़रमाने इलाही नहीं देखा :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ (1)

बेशक जो लोग ज़ुल्म के तौर पर यतीमों का माल खाते हैं सिवाए इस के नहीं कि वोह अपने पेट में आग खाते हैं।

मुस्लिम की रिवायत से मे'राज शरीफ़ की ह़दीस में है :

पस मैं अचानक ऐसे आदमियों के पास आया जिन पर कुछ लोग मुक़र्रर थे जो उन की दाढ़ियां नोच रहे थे और कुछ लोग जहन्नम के पथ्थर ला कर उन के मुंह में डाल रहे थे जो उन के पीछे से निकल रहे थे, मैं ने कहा : ऐ जिब्रील ! येह कौन हैं ? जिब्रील ने कहा : जो लोग नाहक़ यतीमों का माल खाते हैं वोह अपने पेट में आग खा रहे हैं, पस इस के सिवा और कुछ नहीं[2] (येह वोही लोग हैं)

शबे मे'राज नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का माले नाहक़ खाने वालों पर गुज़र

क़ुरतुबी की तफ़्सीर में ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, इन्हों ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की है, आप ने फ़रमाया :

मे'राज की रात मैं ने ऐसी क़ौम को देखा जिन के होंट ऊंट के होंटों जैसे थे और उन पर कुछ लोग मुक़र्रर हैं जो उन के होंट पकड़ कर उन के मुंह में जहन्नम के पथ्थर डाल रहे हैं जो उन के नीचे से निकल रहे हैं, तब मैं ने पूछा : जिब्रील ! येह कौन हैं ? जिब्रील बोले : येह वोह हैं जो नाहक़ यतीमों का माल खाया करते थे।[3]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं। (پ ٤، النساء: ١٠)......مسند ابی یعلی، ٦/٢٧٢، الحدیث ٧٤٠٣

2 ......كتاب الكبائر الذهبى، الكبيرة الثالثة عشرة، ص ٧٢

3 ......تفسير قرطبى، پ ٤، النسآء، تحت الاية: ١٠، ٣/٣٩

बाब 56

मज़म्मते तकब्बुर

तकब्बुर की मज़म्मत और बद अन्जामी के मुतअ़ल्लिक़ क़ब्ल अज़ीं जो कुछ लिखा जा चुका है, अब इस में कुछ और इज़ाफ़ा किया जाता है।

तकब्बुर वोह पहला गुनाह है जो इब्लीस से सरज़द हुवा, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने इस पर ला'नत की, इसे उस जन्नत से जिस की चौड़ाई आस्मान और ज़मीन के बराबर है, निकाल कर जहन्नम के अ़ज़ाब में फेंक दिया।

ह़दीसे क़ुदसी में है : रब तआ़ला फ़रमाता है कि तकब्बुर मेरी चादर और बड़ाई मेरा लिबास है, जो शख़्स इन दो में से किसी एक के बारे में मुझ से झगड़ा करेगा मैं उस के दांत तोड़ दूंगा और मुझे किसी की परवा नहीं है।[1]

ह़दीस में वारिद है कि मुतकब्बिर, इन्सानों की शक्ल में च्यूंटियों की त़रह़ क़ब्रों से उठेंगे, हर त़रफ़ से ज़िल्लतो रुस्वाई उन्हें ढांप लेगी और उन्हें दोज़ख़ियों की पीप की मिट्टी पिलाई जाएगी।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उन से 'कलाम' नहीं करेगा, उन की त़रफ़ नहीं देखेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : 'बूढ़ा ज़ानी', 'ज़ालिम बादशाह' और 'सरकश मुतकब्बिर'।[3]

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : उन्हों ने येह आयत पढ़ी :

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ [4]

*और जब उसे कहा जाता है कि **अल्लाह** से डर तो उस को इ़ज़्ज़त ने गुनाह के साथ पकड़ा।*

फिर फ़रमाया : बेशक हम **अल्लाह** के लिये हैं और बेशक हम उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं।[5]

---

1 ......ابو داود، كتاب اللباس، باب ماجاء فی الكبر، ٤/٨١، الحديث ٤٠٩٠

2 ......ترمذی، كتاب صفة القيامة، باب ٤٧ (ت: ١١٢) ، ٤/٢٢١، الحديث ٢٥٠٠

3 ......مسلم، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم، اسبال الازار...الخ، ص ٦٨، الحديث ١٧٢ - (١٠٧)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की। (پ٢، البقرة:٢٠٦)

5 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। (پ٢، البقرة:١٥٦)

एक मुतकब्बिर ने एक ऐसे शख़्स को जो "नेकी और अच्छी बातों का हुक्म देता था" क़त्ल कर दिया तो दूसरा शख़्स खड़ा हो गया और उस ने कहा : तुम उन लोगों को क़त्ल करते हो जो तुम्हें अच्छी बातें और नेक अ़मल करने का हुक्म देते हैं, तब मुतकब्बिर ने उसे भी क़त्ल कर दिया जिस ने उस की मुख़ालफ़त की और उसे भी जिस ने उसे नेकी का हुक्म दिया था।

हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : इन्सान के गुनहगार होने के लिये इतना काफ़ी है कि जब उसे **अल्लाह** से डरने को कहा जाए तो वोह येह कहे कि तुम अपना ख़याल रखो !

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से फ़रमाया कि दाएं हाथ से खाओ, उस ने कहा : मैं दाएं हाथ से खाने की ताक़त नहीं रखता, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तू ताक़त नहीं रखेगा। उस शख़्स को दाएं हाथ से खाना खाने से तकब्बुर ने रोक दिया था, रावी कहते हैं कि इस के बा'द उस शख़्स ने उस हाथ को न उठाया[1] या'नी वोह शल हो गया (और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के हक़ में जो इरशाद फ़रमाया था वोह पूरा हो गया)।

रिवायत है कि हज़रते साबित बिन क़ैस बिन शम्मास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं ऐसा आदमी हूं कि ख़ूब सूरत लिबास और साफ़ सुथरा रहने को पसन्द करता हूं क्या येह तकब्बुर है ? आप ने फ़रमाया : नहीं बल्कि तकब्बुर हक़ से चश्म पोशी करना और लोगों को हक़ीर समझना है, हालांकि वोह **अल्लाह** के बन्दे हैं।[2]

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि जब हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़िरऔन से कहा : ईमान ला, तेरा मुल्क तेरे ही पास रहेगा तो फ़िरऔन ने कहा : मैं हामान से मश्वरा कर लूं, चुनान्चे, जब उस ने हामान से मश्वरा किया तो उस ने कहा कि अब तक तो तू रब रहा है, लोग तेरी इबादत करते रहे हैं और अब तू इबादत करने वाला बन्दा बनना चाहता है ? फ़िरऔन ने येह मश्वरा सुना तो तकब्बुर की वज्ह से **अल्लाह** का बन्दा बनने और मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की पैरवी करने से इन्कार कर दिया, पस **अल्लाह** तआ़ला ने उसे ग़र्क़ कर दिया।

अल्लाह तआ़ला ने कुरैश के बारे में फ़रमाया है कि जब उन्हें इस्लाम की दा'वत दी गई तो वोह कहने लगे :

---

1 ......مسلم، کتاب الأشربة، باب آداب الطعام...الخ ،ص ۱۱۱۸، الحدیث ۱۰۷ـ (۲۰۲۱)

2 ......المعجم الکبیر،۷/۹۷، الحدیث۶۴۷۹ و شعب الایمان ،الأربعون من شعب الإیمان، باب فی الملابس...الخ، باب فی الصلوات، فصل فیمن کان متوسعا ثوبا...الخ،۵/۱۶۰، الحدیث۶۱۹۲

لَوْ لَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْیَتَیْنِ عَظِیْمٍ ﴿۳۱﴾ [1]

येह कुरआने मजीद उन दो बस्तियों (मक्का और ताइफ़) के बड़े लोगों पर क्यूं नहीं उतारा गया।

हज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ौल है कि दो बस्तियों के बड़ों से मुराद वलीद बिन मुग़ीरा और अबू मसऊद सक़फ़ी थे, क़ुरैशे मक्का ने उन का ज़िक्र इस लिये किया था कि वोह ज़ाहिरी मालो दौलत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे बढ़े हुवे थे और उन्हों ने कहा : मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो यतीम इन्सान हैं **अल्लाह** तआला ने उन्हें कैसे हमारे लिये भेजा है ![2]

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

اَهُمْ یَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ [3]

क्या वोह तेरे रब की रहमत तक़्सीम करते हैं ?

फिर **अल्लाह** तआला ने उन के जहन्नम में दाख़िल होने के वक़्त उन के इस तअज्जुब की ख़बर दी है जब कि उन्हों ने अहले सुफ़्फ़ा को जिन्हें वोह हक़ीर समझते थे, जहन्नम में न देखा तो फिर वोह कहेंगे कि :

مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ [4]

और हमें क्या हो गया है कि हम उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम शरीरों से गिना करते थे।

रिवायत है कि अशरार से उन की मुराद हज़रते अम्मार, बिलाल, सुहैब और मिक्दाद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) होंगे।

हज़रते वहब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का कहना है कि इल्म, आस्मान से नाज़िल होने वाली साफ़, शफ़्फ़ाफ़ मीठी बारिश की तरह है जिसे पौदे अपनी जड़ों के ज़रीए पी कर अपने ज़ाइक़े बदला करते हैं, चुनान्चे, कड़वे की कड़वाहट और मीठे की मिठास बढ़ती है, इसी तरह लोग इल्म को अपनी हिम्मतों और ख़्वाहिशात के मुताबिक़ हासिल करते हैं और इस से मुतकब्बिर का तकब्बुर और मुतवाज़ेअ का इन्किसार बढ़ता है और येह इस लिये होता है कि जिस जाहिल का नसबुल ऐन और मतमहे नज़र तकब्बुर होता है, जब वोह इल्म हासिल कर लेता है तो उसे एक ऐसी चीज़ मिल जाती है जिस की वज्ह से वोह और ज़ियादा तकब्बुर कर सकता है और वोह तकब्बुर ही में बढ़ता चला जाता है और जब कोई शख़्स बे इल्मी के बा वुजूद **अल्लाह** से ख़ाइफ़ रहता है तो जब वोह इल्म हासिल करता है तो उसे मा'लूम हो जाता है कि उस के लिये ख़ौफ़े ख़ुदा के मुकम्मल दलाइल

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्यूं न उतारा गया येह कुरआन उन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर। (پ۲۵، الزُّخْرُف : ۳۱)

2......اتحاف السادة المتقین، کتاب ذم الکبر...الخ، ۱۰/۲۷۸

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम्हारे रब की रहमत वोह बांटते हैं ? (پ۲۵، الزُّخْرُف:۳۲)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हमें क्या हुवा हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे।

(پ۲۳، ص : ۶۲) ......اتحاف السادة المتقین، کتاب ذم الکبر...الخ، ۱۰/۲۸۱

लाए गए हैं, चुनान्चे, उस का ख़ौफ़, शफ़्क़त और इन्किसारी बढ़ती है। चुनान्चे, हज़रते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक क़ौम होगी जो कुरआन पढ़ेंगे मगर वोह उन के हल्क़ से नीचे नहीं जाएगा, कहेंगे कि हम ने कुरआन पढ़ा है, हम से ज़ियादा अच्छा क़ारी और आलिम कौन है ? फिर आप ने सहाबए किराम की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : ऐ उम्मत ! वोह तुम में से होंगे वोह जहन्नम का ईंधन होंगे।[1]

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि मुतकब्बिर उलमा न बनो कि तुम्हारा इल्म तुम्हारी जहालत से आगे न बढ़े।

हिकायत

बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिस के कसरते गुनाह और फ़ितना व फ़साद की वज्ह से उसे बनी इस्राईल का ख़लीअ कहा जाता था जिस के मा'ना हैं अपने गुनाहों से बनी इस्राईल को आजिज़ करने वाला, एक मरतबा उस का ऐसे इन्सान से गुज़र हुवा जिसे बनी इस्राईल का आबिद कहा जाता था, आबिद के सर पर बादल का टुकड़ा साया किये हुवे था, जब उस गुनहगार ने आबिद को देखा तो उस के दिल में ख़याल आया कि मैं बनी इस्राईल का बदबख़्त तरीन आदमी हूं और येह बनी इस्राईल का आबिद है, अगर मैं इस के पास बैठ जाऊं तो शायद अल्लाह तआला मुझ पर भी रहम कर दे, चुनान्चे, वोह आबिद के पास जा कर बैठ गया, आबिद के दिल में ख़याल आया कि मैं बनी इस्राईल का आबिद हूं और येह बनी इस्राईल का बदबख़्त आदमी है, येह मेरे साथ कैसे बैठेगा ! उसे बहुत शर्म महसूस हुई और उस बदबख़्त से कहा : यहां से उठ जाओ ! उस वक़्त अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के उस ज़माने के नबी पर वही फ़रमाई कि उन दोनों को नए सिरे से इबादत शुरूअ करने का हुक्म दीजिये क्यूंकि मैं ने बदबख़्त को बख़्श दिया है और आबिद के आ'माल को बरबाद कर दिया है।

दूसरी रिवायत है कि बादल का टुकड़ा आबिद के सर से हट कर बदबख़्त के सर पर साया फ़िगन हो गया। येह बात तुम पर इस हक़ीक़त को अच्छी तरह वाज़ेह कर देगी कि अल्लाह तआला बन्दों के दिलों को देखता है।

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक शख़्स का तज़्किरा बड़े अच्छे अल्फ़ाज़ में किया गया, एक मरतबा वोही शख़्स नज़र आया तो सहाबए किराम ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह वोही शख़्स है जिस का हम ने आप के सामने तज़्किरा किया था। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे इस के चेहरे पर शैतान का असर नज़र आता है। उस शख़्स ने आ कर सलाम किया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गया, आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

---

1 ......مسند ابی یعلی، ٦/٥، الحدیث ٦٦٦٨

ने उस शख़्स से फ़रमाया कि मैं तुझे ख़ुदा की क़सम दे कर पूछता हूं : तेरे नफ़्स ने कभी तुझ से येह कहा है कि क़ौम में मुझ से अफ़्ज़ल कोई नहीं है ? उस ने कहा : ब ख़ुदा ऐसा हुवा है[1] और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नूरे नबुव्वत से उस के दिल में मौजूद तकब्बुर का असर उस के चेहरे पर देख लिये।

इरशादाते सहाबा

हज़रते हारिस बिन जज़्इज़्ज़ुबैदी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इरशाद है कि मुझे हर वोह मज़्हका खेज़ क़ारी तअ़ज्जुब में डालता है जिस से तू तो ख़न्दा पेशानी से मिलता है और वोह तुझे नाक भौं चढ़ा कर मिलता है और तुझ पर अपने इल्म का एह़सान जताता है, **अल्लाह** तआ़ला मुसलमानों से ऐसे क़ारियों को ख़त्म करे।

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में एक शख़्स से तल्ख़ कलामी की और उसे कहा : ऐ ह़बशी के बेटे ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! साअ़ को हल्का कर ! साअ़ को हल्का कर ! किसी सफ़ेद को सियाह पर फ़ज़ीलत नहीं है।"

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि येह सुनते ही मैं लैट गया और उस शख़्स से कहा : उठो और मेरा चेहरा रौंद डालो।[2]

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है कि जो शख़्स किसी जहन्नमी को देखना चाहता है वोह ऐसे आदमी को देखे जो ख़ुद बैठा हुवा हो और लोग उस के सामने खड़े हों।

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को कोई शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब न था, जब वोह हुज़ूर को देखते तो खड़े न होते क्यूंकि उन्हें इल्म था कि आप इस चीज़ को अच्छा नहीं समझते।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बा'ज़ अवक़ात अपने सहाबा के साथ चलते तो उन्हें आगे चलने का हुक्म फ़रमाते और ख़ुद उन के दरमियान चलते, येह इस लिये करते ताकि दूसरों को ता'लीम हो या फिर क़ल्बे अन्वर से तकब्बुर और बड़ाई के शैतानी वसाविस के निकालने के लिये ऐसा करते जैसा कि नमाज़ में नया कपड़ा पहन कर फिर पुराना पहन लेते, उस में भी येही हिक्मत होती थी।

1 ......المغنی عن حمل الاسفار للعراقی، ۲/۹۶۰، الحدیث ۳۵۰۲ و شعب الایمان، السابع والخمسون من شعب الإیمان، باب فی حسن الخلق، ۶/۳۰۲، الحدیث ۸۲۵۴ و مسند البزار، ۱۴/۶۰، الحدیث ۷۵۱۰

2 ......شعب الایمان، الرابع و الثلاثون من شعب الإیمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۸۸، الحدیث ۵۱۳۵ و تاریخ مدینہ دمشق، ۱۰/۴۶۴

बाब 57

फ़ज़ीलते तवाज़ोअ़ व क़नाअ़त

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि **अल्लाह** तआ़ला अ़फ़्वो दर गुज़र के ज़रीए बन्दे की इ़ज़्ज़त को बढ़ाता है और जो **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करता है, **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्द फ़रमाता है।(1)

फ़रमाने नबवी है : कोई आदमी ऐसा नहीं मगर उस के साथ दो फ़िरिश्ते हैं और इन्सान पर फ़हमो फ़िरासत का नूर होता है जिस से वोह फ़िरिश्ते उस के साथ रहते हैं, पस अगर वोह इन्सान तकब्बुर करता है तो वोह उस से हिक्मत छीन लेते हैं और कहते हैं : "ऐ **अल्लाह** इसे सर निगूं कर", और अगर वोह तवाज़ोअ़ और इन्किसारी करता है तो फ़िरिश्ता कहता है : "ऐ **अल्लाह** ! इसे सर बुलन्दी अ़ता कर।"(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि उस के लिये खुश ख़बरी है जिस ने तवंगरी में तवाज़ोअ़ की, जम्अ़ कर्दा माल को अच्छे त़रीक़े पर ख़र्च किया, तंगदस्त और मुफ़्लिसों पर मेहरबानी और उ़लमा और दानिशमन्दों से मेल जोल रखा।(3)

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम की एक जमाअ़त के साथ घर में खा रहे थे कि दरवाज़े पर साइल आया जिसे एक ऐसी बीमारी थी कि जिस की वज्ह से लोग उस से नफ़रत करते थे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अन्दर आने की इजाज़त दी, जब वोह अन्दर आया तो आप ने उसे अपने ज़ानू मुबारक पर बिठाया और फ़रमाया : खाना खाओ, कुरैश के एक आदमी ने इसे बहुत ना पसन्द किया और फिर वोह कुरैशी जवान इस जैसी बीमारी में मुब्तला हो कर मरा।(4)

फ़रमाने नबवी है कि रब तआ़ला ने मुझे दो बातों का इख़्तियार दिया, एक येह कि मैं रसूले अ़ब्द बनूं या नबिय्ये फ़िरिश्ता बनूं ! मैं नहीं समझ रहा था कि मैं कौन सी बात पसन्द करूं ?

---

(1) ......مسلم، کتاب البر...الخ، باب استحباب العفو و التواضع، ص ١٣٩٧، الحديث٦٩ـ (٢٥٨٨)

(2) ......الموسوعة ابن ابی الدنيا، التواضع و الخمول، ٣/٥٥١، الحديث٧٥

(3) ......المعجم الكبير، ٥/٧١، الحديث٤٦١٥

(4) ......الموسوعة لابن ابی الدنيا، التواضع و الخمول، ٣/٥٥٣، الحديث ٨٢

फ़िरिश्तों में जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरा दोस्त था, मैं ने सर उठा कर उस की त़रफ़ देखा तो उस ने कहा : रब के हां तवाज़ोअ़ इख़्तियार कीजिये, तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं रसूले अ़ब्द बनना चाहता हूं।(1)

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मैं उस शख़्स की नमाज़ क़बूल फ़रमाता हूं जो मेरी अ़ज़मत के सामने इन्किसारी करता है, मेरी मख़्लूक़ पर तकब्बुर नहीं करता और उस का दिल मुझ से ख़ौफ़ज़दा रहता है।

फ़रमाने नबवी है कि करम तक़्वा का, इ़ज़्ज़त तवाज़ोअ़ का और यक़ीन बे नियाज़ी का नाम है।(2)

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है कि दुन्या में तवाज़ोअ़ करने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी है, वोह क़ियामत के दिन मिम्बरों पर होंगे, लोगों में इस्लाह़ करने वालों को ख़ुश ख़बरी हो, येह वोह लोग हैं जो क़ियामत के दिन जन्नतुल फ़िरदौस के वारिस होंगे और दुन्या में अपने दिलों को पाक करने वालों को बिशारत हो, येही लोग क़ियामत के दिन दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होंगे।

बा'ज़ मुह़द्दिसीने किराम से मरवी है, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला ने किसी बन्दे को इस्लाम की हिदायत दी, उसे बेहतरीन सूरत दी और उसे उस के ग़ैर पसन्दीदा मक़ाम से दूर रखा और इन सब नवाज़िशात के बा'द उसे मुतवाज़ेअ़ बनाया, इस से साबित हुवा कि तवाज़ोअ़ अल्लाह की पसन्दीदगी की अ़लामत है।(3)

अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूब बन्दों को चार चीज़ें अ़त़ा फ़रमाता है

फ़रमाने नबवी है कि चार चीज़ें ऐसी हैं जो अल्लाह अपने मह़बूब बन्दों के सिवा किसी को अ़त़ा नहीं फ़रमाता :

﴿1﴾...ख़ामोशी और येह पहली इ़बादत है, (इलावा अज़ीं) ﴿2﴾......तवक्कुल
﴿3﴾...तवाज़ोअ़ और ﴿4﴾......दुन्या से किनारा कशी।(4)

---

1 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، التواضع و الخمول، ٣/ ٥٥٤، الحدیث ٨٥
2 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، التواضع و الخمول، ٣/٥٥٩، الحدیث ١١٥
3 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، التواضع و الخمول، ٣/٥٦٠، الحدیث ١٢١
4 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، التواضع و الخمول، ٣/٥٦١، الحدیث ١٢٧

मरवी है कि रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना खिला रहे थे कि एक ह़बशी आया जो चैचक में मुब्तला था और जगह जगह से उस की खाल उधड़ चुकी थी, वोह जिस के साथ बैठता वोह उस के पहलू से उठ जाता, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने पहलू में बिठाया।(1)

और इरशाद फ़रमाया : मुझे वोह आदमी तअ़ज्जुब में डालता है जो अपने हाथ में ऐसा ज़ख़्म लिये फिरता है जो लोगों के लिये बाइ़से तक्लीफ़ है और इस से उस का तकब्बुर मिट गया है।(2)

एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबा से फ़रमाया : क्या बात है मैं तुम में इ़बादत की शीरीनी नहीं पाता ? सहाबए किराम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! इ़बादत की शीरीनी क्या है ? आप ने फ़रमाया : तवाज़ोअ़ !(3)

फ़रमाने नबवी है कि जब तुम मेरी उम्मत के तवाज़ोअ़ करने वालों को देखो तो उन से तवाज़ोअ़ से पेश आओ और मुतकब्बिरीन को देखो तो उन से तकब्बुर करो क्यूंकि येह उन के लिये तह़क़ीर और ज़िल्लत है।(4)

इसी मौज़ूअ़ पर येह चन्द अश्आ़र हैं :

تواضع تکن کالنجم لاح لناظر	علی صفحات الماء وھو رفیع
ولا تک کالدخان یعلو بنفسه	علی طبقات الجو وھو وضیع

﴾1﴿......तवाज़ोअ़ कर जो उस सितारे की त़रह़ हो जो देखने वाले को पानी की सत़्ह़ पर नज़र आता है, ह़ालांकि वोह बहुत बुलन्दी पर होता है।

﴾2﴿......धुवें की त़रह़ न हो जो फ़ज़ा में खुद को बुलन्द करता है ह़ालांकि उस की कोई इ़ज़्ज़त नहीं होती और वोह एक बेकार चीज़ है।

1......الموسوعة لابن ابی الدنيا، التواضع والخمول، ۳/ ۵۵۳، الحديث ۸۱

2......الموسوعة لابن ابی الدنيا، التواضع والخمول، ۳/۵۵۶، الحديث ۹۶

3......تذكرة الموضوعات للفتنی، ص۱۷۸ و الزواجر عن اقتراف الكبائر ، الكبيرة الرابعة، الكبر والعجب والخيلاء ، ۱/۱۴۰ و طبقات الشافعية الكبرى للسبكی ، ۶/۳۵۳

4......المرجع السابق

फ़ज़ाइले क़नाअ़त

क़नाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ पहले बयान किया जा चुका है, उस से भी ज़ियादा अहादीसो अक़्वाल क़नाअ़त की फ़ज़ीलत में वारिद हुवे हैं, चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है कि मोमिन की इ़ज़्ज़त लोगों से बे परवाई में है,(1) क़नाअ़त में आज़ादी और इ़ज़्ज़त है।(2)

इसी लिये कहा गया है कि उस से बे नियाज़ हो जा जिसे तू चाहता है उस जैसा हो जाएगा जिस की त़रफ़ ह़ाजत ले कर जाएगा तू उस का क़ैदी होगा और जिस पर चाहे एह़सान कर तू उस का सरदार होगा, थोड़ा माल जो तुझे किफ़ायत करे, उस ज़ियादा माल से बेहतर है जो तुझे गुमराह कर दे।

एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि मैं ने क़नाअ़त से अफ़्ज़ल कोई मालदारी नहीं देखी और लालच से बढ़ कर तंगदस्ती नहीं देखी और येह अश्आ़र पढ़े :

افادتنی القناعة ثوب عز　　وای غنی اعز من القناعة

فصیرها لنفسک راس مال　　وصیر بعدها التقوی بضاعة

تجد ربحین تغنی عن خلیل　　وتنعم فی الجنان بصبر ساعة

﴾1﴿......क़नाअ़त ने जब मुझे इ़ज़्ज़त का लिबास दिया और कौन सा वोह तमव्वुल है जो क़नाअ़त से ज़ियादा बा इ़ज़्ज़त हो।

﴾2﴿......पस उसे अपने नफ़्स के लिये अस्ल पूंजी बना ले और इस के बा'द परहेज़गारी को ज़ख़ीरा कर ले।

﴾3﴿......तू दो गुना नफ़्अ़ पाएगा, दोस्त से कुछ त़लब करने से बे नियाज़ हो जाएगा और एक घड़ी सब्र के बदले जन्नत में इन्आ़मो इकराम पाएगा।

एक और शाइ़र कहता है :

قنع النفس بالکفاف والا　　طلبت منک فوق مایکفیها

انما انت طول عمرک ما　　عمرت فی الساعة التی انت فیها

﴾1﴿......अपने जिस्म को मा'मूली गुज़र बसर पर सब्र करने वाला बना वरना येह तुझ से तेरी ज़रूरत से बढ़ कर मालो दौलत मांगेगा।

﴾2﴿......तेरी ज़िन्दगी की मुद्दत इतनी ही है जितनी इस लम्ह़े की मुद्दत है जिस में तू सांस ले रहा है।

1......شعب الایمان ، الحادی والعشرون من شعب الایمان...الخ، ۳/۱۷۱، الحدیث ۳۲۴۸

2......الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الیقین، ۱/۲۳، الحدیث ۸ و الفردوس الاخبار، ۵/۲۶۹، الحدیث ۸۱۵۱

एक और शाइ़र कहता है :

اذ الرزق عنک نای فاصطبر ومنه اقنع بالذی قد حصل

ولا تتعب النفس فی تحصیله فان کان ثم نصیب وصل

﴾1﴿......अगर रिज़्क़ तुझ से दूर है तो सब्र कर और जो कुछ मिल गया है उसी पर क़नाअ़त कर।

﴾2﴿......अपने नफ़्स को उस (रिज़्क़) के ह़ासिल करने में ज़ह़मत न दे, अगर वोह तेरा मुक़द्दर है तो क्या वोह मुझे मिल जाएगा !

एक और शाइ़र कहता है :

اذا اعطشتک اکف اللئام کفتک القناعة شبعا و ریا

فکن رجلا رجله فی الثری وھامة ھمته فی الثریا

﴾1﴿......जब तुझे बख़ीलों का तमव्वुल ह़रीस बनाए तो उस वक़्त क़नाअ़त तुझे सैराब करने के लिये काफ़ी होगी।

﴾2﴿......ऐसा जवान बन जिस का पाउं तह़्तुस्सरा में हो और उस के इरादों की चोटी सुरय्या को छू रही हो।

दूसरा शाइ़र कहता है :

یا طالب الرزق الھنی بقوۃ ھیھات انت بباطل مشغوف

رعت الاسود بقوۃ جیف الفلا ورعی الذ باب الشھد وھو ضعیف

﴾1﴿......ऐ आसानी से ह़ासिल होने वाले रिज़्क़ को क़ुव्वत से तलाश करने वाले ! अफ़्सोस ! तू झूटी मह़ब्बत में मुब्तला है, ग़लत़ चीज़ में दिल लगा रहा है।

﴾2﴿......शेर अपनी तमाम तर क़ुव्वत के बा वुजूद जंगल के मुर्दार खाते हैं और मख्खियां अपनी कमज़ोरी के बा वुजूद शहद खाती हैं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा येह था कि जब आप भूक मह़सूस फ़रमाते तो अहले बैते किराम से फ़रमाते कि नमाज़ के लिये खड़े हो जाओ और फ़रमाते : मुझे येही हुक्म दिया गया है और येह आयत पढ़ते :

"अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म कर और इस पर सब्र कर"(1)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और खुद इस पर साबित रह।

(پ۱۶، طٰہٰ:۱۳۲)......المعجم الاوسط، ۱/۲۵۸، الحدیث ۸۸۶

शाइर कहता है :

دع التهافت فی الدنیا و زینتها ولا یغرنک الاکثار و الجشع

واقنع بما قسم الرحمن وارض به ان القناعة مال لیس ینقطع

وخل ویک فضول العیش اجمعها فلیس فیها اذا حققت منتفع

﴾1﴿......दुन्या की ज़ीनत और इस की गिरिफ़्तारी को तर्क कर दे और तुझे बहुत मालदार होने की हि़र्स व आरज़ू फ़रेब में मुब्तला न करे।

﴾2﴿......अल्लाह की तक़्सीम पर क़नाअ़त कर और उस पर राज़ी हो जा क्यूंकि क़नाअ़त ऐसी दौलत है जो कभी ख़त्म नहीं होती।

﴾3﴿......तू इस तमाम तर बेहूदा ऐ़श को तर्क कर दे क्यूंकि जब तू उसे ब ग़ौर देखेगा तो उस में कोई नफ़्अ़ नहीं पाएगा।

बा'ज़ शो'रा का क़ौल है :

اقنع بما تلقی بلا بلغة فلیس ینسی ربنا النملة

ان اقبل الدهر فقم قائما وان تولی مدبرا نم له

﴾1﴿......जो कुछ तुझे बिग़ैर कोशिश के मिल जाता है उसी पर 'क़नाअ़त' कर ले कि रब्बे ज़ुल जलाल तो ह़शरातुल अर्ज़ में से किसी को भी नहीं भूलता। (रिज़्क़ पहुंचाता है)

﴾2﴿......अगर ज़माना तुझे इन्आ़मात से नवाज़े तो खड़ा हो जा और अगर वक़्त तुझ से पीठ फेर ले तो तू सो जा।

दानाओं का क़ौल है कि इ़ज़्ज़त ख़ूब सूरत कपड़ों की मरहूने मिन्नत नहीं है क्यूंकि फ़राख़ दस्ती में बेहतरीन लिबास पहनना ख़ूब सूरत कपड़ों से आरास्ता होना आदमी को मसरूफ़ कर देता है यहां तक कि दुन्यावी मह़ब्बत की वज्ह से वोह दीनी उमूर की परवा नहीं करता और ऐसा आदमी बहुत ही कम तकब्बुर व ख़ुदबीनी से ख़ाली होता है।

बा'ज़ शो'रा का कहना है :

رضیت من الدنیا بلقمة بائس ولبس عباء لا ارید سواهما

لانی رایت الدهر لیس بدائم فدهری وعمری فانیان کلاهما

﴾1﴿....मैं दुन्या से सूखी रोटी और मोटे कपड़े पर राज़ी हूं और मुझे इन के सिवा कुछ नहीं चाहिये।

﴾2﴿....क्यूंकि मैं ने ज़माने को फ़ानी देखा है लिहाज़ा मेरी उ़म्र और ज़माना दोनों फ़ना होने वाले हैं।

बाब 58

फ़रेबहाए दुन्या

दुन्या के तमाम ह़ालात खुशी और ग़म के इर्द गिर्द गर्दिश करते रहते हैं, दुन्या अपने चाहने वालों की ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ नहीं रहती बल्कि वोह ह़कीमे मुत़लक़ **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ रंग बदलती रहती है, फ़रमाने इलाही है :

وَلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ [1]

वोह हमेशा मुख़्तलिफ़ रहेंगे मगर वोह जिस पर तेरे रब ने रह़्म किया (वोह इस से मह़फ़ूज़ रहेंगे)।

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का कहना है कि यहां 'इख़्तिलाफ़' से मुराद रिज़्क़ का इख़्तिलाफ़ है या'नी बा'ज़ ग़नी हैं और बा'ज़ फ़क़ीर हैं लिहाज़ा हर शख़्स के लिये ज़रूरी है जिसे दुन्या का माल मिल जाए और रब्बे ज़ुल जलाल दुन्या को उस का ख़ादिम बना दे तो वोह शुक्र अदा करता रहे और नेक कामों में उसे सर्फ़ करे क्यूंकि अच्छे आ'माल बुराइयों को ज़ेर कर लेते हैं और अपनी दुन्या पर ग़ुरूर न करे और येह फ़रमाने इलाही इस बात को समझने के लिये काफ़ी है

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾ [2]

*तुम्हें दुन्या की ज़िन्दगी फ़रेब न दे और न तुम्हें कोई फ़रेब देने वाला **अल्लाह** से फ़रेब दे।*

और फ़रमाने इलाही है :

"लेकिन तुम ने अपने आप को फ़ित्ने में डाला और तुम मुन्तज़िर रहे और तुम ने शक किया और तुम्हें आरज़ूओं ने फ़रेब में डाला।"[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे मगर जिन पर तुम्हारे रब ने रह़्म किया (वोह इस से मह़फ़ूज़ रहेंगे)। (پ۱۲، ھود: ۱۱۸، ۱۱۹)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के इ़ल्म पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी (शैत़ान)। (پ۲۱، لقمٰن: ۳۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर तुम ने अपनी जानें फ़ित्ने में डालीं और मुसलमानों की बुराई तकते और शक रखते और झूटी त़म्अ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया। (پ۲۷، الحدید: ۱۴)

दुन्या के फ़रेब से गुरेज़ के लिये येह आयात अ़क़्लमन्द इन्सान को बहुत कुछ बसीरत सिखाती हैं। उन अ़क़्लमन्दों की नींद और बेदारी कैसी अ़जीब है जो बे वुक़ूफ़ों की शब बेदारी और कोशिशों पर रश्क करते हैं हालांकि ख़ुद कुछ भी नहीं कर पाते।

दानिशमन्द कौन ?

फ़रमाने नबवी है कि अ़क़्लमन्द वोह है जिस ने अपने नफ़्स का मुहासबा किया और मौत के बा'द के लिये अ़मल किये और अहमक़ वोह है जिस ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी की और अल्लाह तआ़ला से ढेरों दुन्यावी तमन्नाएं रखीं।(1)

शाइर कहता है :

ومن يحمد الدنيا لشئ يسره فسوف لعمرى عن قليل يلومها

اذا ادبرت كانت على المرء حسرة وان اقبلت كانت كثيرا همومها

﴿1﴾......और जो शख़्स किसी पसन्दीदा चीज़ की वज्ह से दुन्या की ता'रीफ़ करता है मुझे ज़िन्दगी की क़सम अ़न क़रीब वोह उसे बुरा भला कहेगा।

﴿2﴾......जब दुन्या चली जाती है तो इन्सान के दिल में ह़सरत छोड़ जाती है और जब आती है तो बे शुमार दुख ले कर आती है।

एक और शाइर कहता है :

تاللّٰه لو كانت الدنيا باجمعها تبقى علينا وياتى رزقها رغدا

ماكان فى حق حر ان يذل لها كيف وهى متاع يضمحل غدا

﴿1﴾......ब ख़ुदा ! अगर दुन्या अपनी तमाम तर मालो मताअ़ के बा वुजूद हमारे लिये परहेज़गारी का निशान होती और लगातार उस का रिज़्क़ आता रहता।

﴿2﴾......तब भी किसी मर्दे आज़ाद के लिये उस की त़रफ़ रुजूअ़ मुनासिब न होता चे जाए कि येह माल ही ऐसा बनाया गया हो जो कल ख़त्म हो जाए।

इब्ने बस्साम कहता है :

اف للدنيا و ايامها فانها للحزن مخلوقة

همومها لا تنقضى ساعة عن ملك فيها ولا سوقة

ياعجبا منها ومن شانها عدوة للناس معشوقة

❶......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر الموت...الخ، ٤/٤٩٦، الحديث ٤٢٦٠

﴾1﴿.....दुन्या और इस के अय्याम पर हैफ़ है, बेशक येह दुखों के लिये पैदा की गई है।
﴾2﴿.....इस के दुख एक लम्हा भी ख़त्म नहीं होते चाहे इस में कोई बादशाह है या फ़क़ीर है।
﴾3﴿.....इस पर और इस के अ़जीब ह़ालात पर तअ़ज्जुब है, येह लोगों की जान लेवा मा'शूक़ा है।

एक और शाइ़र कहता है :

وقائلة اری الایام تعطی ... لـئام الناس من رزق حثیث
وتمنع من له شرف وفضل ... فقلت لها خذی اصل الحدیث
رأت حـمل المكاسب من حرام ... فـجادت بالخبیث علی الخبیث

﴾1﴿.....मैं देखता हूं कि ज़माना बख़ील तरीन लोगों को बे इन्तिहा माल देने पर आमादा रहता है।
﴾2﴿.....और साह़िबे इ़ज़्ज़त व फ़ज़ीलत से ज़माना दुन्या को रोक देता है, मैं ने इसे कहा : तुम अस्ल बात में ग़ौर करो।
﴾3﴿.....ख़बीस ह़राम कमाई से माल इकठ्ठा करते हैं लिहाज़ा ख़बीस माल और ख़बीस लोगों में जम्अ़ होते हैं।

दूसरा शाइ़र कहता है :

سـل الایـام مافعلت بكسری ... وقیـصر والقصور وسا كنیها
امـا استـدعتهم للبین طرا ... فلم تدع الحلیم ولا السفیها

﴾1﴿......ज़माने से पूछ तू ने किस्रा, क़ैसर, उन के मह़ल्लात और उन में रहने वालों से क्या किया?
﴾2﴿......क्या इन सब ने तुझ से जुदाई की इस्तिद्अ़ा की थी कि तू ने किसी अ़क़्लमन्द और किसी बे वुक़ूफ़ को नहीं छोड़ा।

कहते हैं कि एक बदवी किसी क़बीले में आया, लोगों ने उसे खाना खिलाया और वोह खाना खा कर उन के ख़ैमे के साए में लैट गया, फिर उन्हों ने ख़ैमा उखेड़ लिया और बदवी को जब भूक लगी तो उस की आंख खुल गई और वोह कहता हुवा वहां से चल दिया :

الا انما الدنیا كظل بنیته ... ولا بد یوما ان ظلک زائل
الا انما الدنیا مقیل لراكب ... قضی وطرا من منزل ثم هجرا

﴾1﴿......बा ख़बर हो जाओ येह दुन्या इमारत के साए की त़रह़ है और ला मह़ाला एक दिन इस का साया ज़ाइल हो जाएगा।
﴾2﴿......बिला शुबा दुन्या सुवार के लिये क़ैलूला करने की जगह है, उस ने अपनी ह़ाजत पूरी की और फिर इसे छोड़ दिया।

किसी दाना ने अपने दोस्त से कहा : तुझे दाई ने सब कुछ सुना दिया और बुलाने वाले ने सब कुछ वाज़ेह कर दिया, उस शख़्स से बढ़ कर और कोई मुसीबत में मुब्तला नहीं जिस ने यक़ीने कामिल को गंवा दिया और ग़लत़ कारियों में मश्ग़ूल हुवा।

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि ख़ौफ़े इलाही के लिये इ़ल्म और तकब्बुर व ग़ुरूर के लिये जहालत काफ़ी है।

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने दुन्या से मह़ब्बत रखी और इस की ज़ैबो ज़ीनत से मसरूर हुवा, उस के दिल से आख़िरत का ख़ौफ़ निकल गया।(1)

बा'ज़ उ़लमा का क़ौल है कि बन्दे से मालो दौलत के चले जाने पर रन्जो ग़म करने और मालो दौलत की फ़रावानी में ख़ुशी पर मुह़ासबा किया जाएगा।

बा'ज़ सलफ़े सालिह़ीन जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने दुन्या दी थी, वोह ह़राम कर्दा बातों से तुम से ज़ियादा बचने वाले थे और जो काम करना तुम्हें मुनासिब नज़र नहीं आता वोह उन के नज़दीक मोहलिक तरीन समझे जाते थे।

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बसा अवक़ात मिसअ़र बिन किदाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह अश्आ़र पढ़ा करते थे :

نهارک یامغرور نوم وغفلة ولیلک نوم والردی لک لازم

یغرک ما یفنی وتفرح بالمنی کما غر باللذات فی النوم حالم

وشغلک فیها سوف تکره غبه کذلک فی الدنیا تعیش البهائم

﴾1﴿......ऐ फ़रेब ख़ुर्दा ! तेरा दिन नींद और ग़फ़्लत में और तेरी रात सोने में पूरी होती है और मौत तेरे लिये लाज़िमी है।

﴾2﴿......ज़ाइल शुदा माल तुझे फ़रेब में डालता है और उम्मीदें पा कर तू बहुत ख़ुश होता है जैसे ख़्वाब देखने वाला ख़्वाब में लुत़्फ़ अन्दोज़ होता है।

﴾3﴿......अ़न क़रीब तू अपनी इस दुन्यावी मश्ग़ूलिय्यत को बुरा समझेगा, ऐसी ज़िन्दगी तो दुन्या में जानवरों की होती है।

1......موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب ذم الدنیا،٥/٥٢، الحدیث٧٩ و حلیة الاولیاء، أحمد بن أبی الحواری، ١٠/٢١، الحدیث١٤٣٥٥

बाब 59

मज़म्मत व तख़्वीफ़े दुन्या

हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सा'लबा बिन हातिब ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे लिये दुआ करें **अल्लाह** तआला मुझे माल दे। आप ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा ! थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करता है उस माले कसीर से बेहतर है जिस का तू शुक्र अदा नहीं कर सकता, सा'लबा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे लिये **अल्लाह** तआला से माल की दुआ कीजिये, आप ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा ! क्या तेरे पेशे नज़र मेरी ज़िन्दगी नहीं है, क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि तेरी ज़िन्दगी नबी की ज़िन्दगी जैसी हो, ब ख़ुदा ! अगर मैं चाहूं कि मेरे साथ सोने और चांदी के पहाड़ चलें तो चलेंगे।

सा'लबा ने अर्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को नबिय्ये बर हक़ बना कर भेजा है ! अगर आप मेरे लिये **अल्लाह** से माल की दुआ करें तो मैं इस माल से हर हक़दार का हक़ पूरा करूंगा और मैं ज़रूर करूंगा, ज़रूर हुक़ूक़ अदा करूंगा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ की : ऐ **अल्लाह** ! सा'लबा को माल अता कर ! चुनान्चे, उस ने बकरियां लीं और वोह ऐसे बढ़ीं कि जैसे हशरातुल अर्ज़ बढ़ते हैं और उन के लिये मदीने में रहना मुश्किल हो गया।

चुनान्चे, सा'लबा मदीने से निकल कर मदीने के क़रीब एक वादी में आ गया और तीन नमाज़ें छोड़ कर सिर्फ़ दो नमाज़ें ज़ोहर और अस्र जमाअत के साथ पढ़ने लगा, बकरियां और बढ़ीं और वोह कुछ और दूर हो गया यहां तक कि वोह सिर्फ़ नमाज़े जुमुआ में शरीक होता और बकरियां बराबर बढ़ती गईं ता आंकि इन की मसरूफ़िय्यत की वज्ह से उस की जुमुआ की जमाअत भी छूट गई और वोह जुमुआ के दिन मदीने से आने वाले सुवारों से मदीने के हालात पूछ लेता और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के मुतअल्लिक़ पूछा कि सा'लबा बिन हातिब का क्या बना ? अर्ज़ की गई कि या रसूलल्लाह ! उस ने बकरियां लीं और वोह इतनी बढ़ीं कि उन का मदीने में रहना दुश्वार हो गया और उस के तमाम हालात बतलाए गए। आप ने सुन कर फ़रमाया : ऐ सा'लबा ! अफ़्सोस !...... ऐ सा'लबा ! अफ़्सोस !.....अफ़्सोस !..... ऐ सा'लबा ! रावी कहते हैं कि तब कुरआने मजीद की येह आयत नाज़िल हुई :

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ (1)

उन के माल से सदक़ा लीजिये उन के ज़ाहिर और बातिन को पाक कीजिये उन के सदक़ात और उन के लिये दुआ कीजिये बेशक आप की दुआ उन के लिये तस्कीन है।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुहैना और बनू सुलैम के दो आदमियों को सदक़ात की वुसूल याबी पर मुक़र्रर फ़रमाया और इन्हें सदक़ात के अहकामात और सदक़ात वुसूल करने की इजाज़त लिख कर रवाना फ़रमाया कि जाओ और मुसलमानों से सदक़ात वुसूल कर के लाओ और फ़रमाया कि सा'लबा बिन हातिब और फ़ुलां आदमी के पास जाना जो बनी सुलैम से तअल्लुक़ रखता है और उन से भी सदक़ात वुसूल करना। चुनान्चे, येह दोनों हज़रात सा'लबा के पास आए और उसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान पढ़वा कर सदक़ात (बकरियों की ज़कात) का सुवाल किया। सा'लबा ने कहा : येह तो टेक्स है, येह तो टेक्स है, येह तो टेक्स ही की एक शक्ल है, तुम जाओ, जब तुम फ़ारिग़ हो चुको तो मेरे पास फिर आना।

फिर येह हज़रात बनू सुलैम के उस आदमी के पास आए जिस के मुतअल्लिक़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था : जब उस ने सुना तो उस ने अपने आ'ला मर्तबा ऊंटों के पास जा कर उन में से सदक़े के लिये अलाहिदा कर दिये और उन्हें ले कर इन हज़रात की ख़िदमत में आया, इन हज़रात ने जब वोह ऊंट देखे तो बोले : तुम्हारे लिये येह ऊंट देना ज़रूरी नहीं हैं और न ही हम तुम से उम्दा और आ'ला ऊंट लेने आए हैं, उस शख़्स ने कहा : इन्हें ले लीजिये, मेरा दिल इन्हीं से ख़ुश होता है और मैं येह आप ही को देने के लिये लाया हूं।

जब येह हज़रात सदक़ात की वुसूली से फ़ारिग़ हो चुके तो सा'लबा के पास आए और उस से फिर सदक़ात का सुवाल किया, सा'लबा ने कहा : मुझे ख़त दिखाओ और उस ने ख़त देख कर कहा : येह टेक्स ही की एक शक्ल है, तुम जाओ ताकि मैं इस बारे में कुछ ग़ौर कर सकूं, लिहाज़ा येह हज़रात वापस रवाना हो गए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से बात चीत करने से पहले महज़ इन्हें देखते ही फ़रमाया : ऐ सा'लबा अफ़्सोस ! और बनू सुलैम के उस शख़्स के लिये दुआ फ़रमाई, फिर इन हज़रात ने आप को सा'लबा और सुलैमी के मुकम्मल हालात सुनाए, **अल्लाह** तआला ने सा'लबा के बारे में येह आयात नाज़िल फ़रमाईं :

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ महबूब उन के माल में से ज़कात तहसील (वुसूल) करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उन के हक़ में दुआए ख़ैर करो बेशक तुम्हारी दुआ उन के दिलों का चैन है। (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۳)

وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ۝ (1)

और बा'ज़ उन में से वोह है कि जिस ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर अल्लाह हमें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाएगा तो अलबत्ता हम सदक़ा देंगे और सालिहीन में से होंगे पस जब उन को अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से अ़ता किया तो उन्हों ने बुख़्ल किया माल के साथ और फिर गए और मुंह फेरने वाले हैं पस निफ़ाक़ उन के दिलों में क़ियामत के दिन तक असर दे गया ब सबब इस के कि उन्हों ने अल्लाह से किये हुवे वा'दे के ख़िलाफ़ किया और ब सबब इस के कि वोह झूट बोलते थे।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस वक़्त सा'लबा का एक रिश्तेदार बैठा हुवा था, उस ने सा'लबा के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली आयात को सुना तो उठ कर सा'लबा के पास गया और उसे कहा : तेरी वालिदा मारी जाए ! अल्लाह तआ़ला ने तेरे बारे में फुलां फुलां आयात नाज़िल की हैं, सा'लबा ने येह सुना तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और सदक़ा क़बूल करने की दरख़्वास्त की। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे अल्लाह तआ़ला ने तेरा सदक़ा लेने से मन्अ़ कर दिया है।

सा'लबा येह सुनते ही अपने सर में ख़ाक डालने लगा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे येह करतूत ! मैं ने तुझ से पहले कह दिया था मगर तू ने मेरी बात नहीं मानी थी।

जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सदक़ा लेने से बिल्कुल इन्कार कर दिया तो वोह अपने ठिकाने पर लौट आए, जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए तो वोह अपने सदक़ात ले कर अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा मगर इन्हों ने भी लेने से इन्कार कर दिया, फिर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुवा मगर इन्हों ने भी इन्कार कर दिया, यहां तक कि हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़लीफ़ा बनने के बा'द सा'लबा का इन्तिक़ाल हो गया।(2)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे। तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया इस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो इस के पीछे अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने अल्लाह से वा'दा झूटा किया और बदला इस का कि झूट बोलते थे। (پ۱۰، التوبة: ۷۵ تا ۷۷)

2.....المعجم الكبير، ۸/۲۱۸، الحديث ۷۸۷۳

एक इब्रत अंगेज़ वाक़िआ

जरीर ने लैस से रिवायत की है कि एक शख़्स हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की सोहबत में आया और कहने लगा : मैं आप की सोहबत में हमेशा आप के साथ रहूंगा, लिहाज़ा हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और वोह आदमी इकट्ठे रवाना हो गए। जब एक दरया के किनारे पहुंचे तो खाना खाने के लिये बैठ गए, उन के पास तीन रोटियां थीं, जब दो रोटियां खा चुके और एक रोटी बाक़ी रह गई तो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام दरया पर पानी पीने तशरीफ़ ले गए। जब आप पानी पी कर वापस तशरीफ़ लाए तो रोटी मौजूद नहीं थी, आप ने पूछा : रोटी किस ने ली है ? वोह आदमी बोला कि मुझे मा'लूम नहीं।

रावी कहते हैं कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उसे ले कर आगे चल पड़े और आप ने हिरनी को देखा जो दो बच्चे साथ लिये जा रही थी। आप ने उस के एक बच्चे को बुलाया, जब वोह आया तो आप ने उसे ज़ब्ह किया और गोश्त भून कर खुद भी खाया और उस शख़्स को भी खिलाया, फिर बच्चे से फ़रमाया : **अल्लाह** के हुक्म से खड़ा हो जा। चुनान्चे, हिरनी का बच्चा खड़ा हो गया और जंगल की तरफ़ चल दिया, तब आप ने उस आदमी से कहा : मैं तुझ से उस ज़ात के नाम पर सुवाल करता हूं जिस ने तुझे येह मो'जिज़ा दिखलाया, रोटी किस ने ली थी ? वोह आदमी बोला : मुझे मा'लूम नहीं है।

फिर आप एक झील पर पहुंचे और उस शख़्स का हाथ पकड़ा और दोनों सत्हे आब पर चल पड़े, जब पानी उ़बूर कर लिया तो आप ने उस शख़्स से पूछा : तुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस ने तुझे येह मो'जिज़ा दिखाया बता वोह रोटी किस ने ली थी ? उस आदमी ने फिर जवाब दिया कि मुझे मा'लूम नहीं है।

फिर आप रवाना हो गए और एक जंगल में पहुंचे, जब दोनों बैठ गए तो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मिट्टी और रैत की ढेरी बना कर फ़रमाया कि **अल्लाह** के हुक्म से सोना हो जा, चुनान्चे, वोह सोना बन गई और आप ने उस की एक जैसी तीन ढेरियां बनाईं और फ़रमाया : तिहाई मेरी, तिहाई तेरी और तिहाई उस शख़्स की है जिस ने वोह रोटी ली थी, तब वोह आदमी बोला : वोह रोटी मैं ने ली थी, आप ने उस से फ़रमाया : येह सोना तमाम का तमाम तेरा है और उसे वहीं छोड़ कर आगे रवाना हो गए।

उस शख़्स के पास दो आदमी आ गए, उन्हों ने जब जंगल में एक आदमी को इतने मालो मताअ़ के साथ देखा तो उन की निय्यत बदल गई और उन्हों ने इरादा किया कि उसे क़त्ल कर के

माल समेट लें। उस आदमी ने जब उन की निय्यत भांप ली तो खुद ही बोल उठा कि येह माल हम तीनों ही आपस में बराबर बराबर तक़्सीम कर लेते हैं, फिर उन्हों ने अपने में से एक शख़्स को शहर की त़रफ़ रवाना किया ताकि वोह खाना ख़रीद लाए। जिस शख़्स को उन्हों ने शहर की त़रफ़ खाना लाने के लिये भेजा था, उस के दिल में ख़याल आया कि मैं इस माल में उन को हिस्सेदार क्यूं बनने दूं? मैं खाने में ज़ह्र मिलाए देता हूं ताकि वोह दोनों ही हलाक हो जाएं और माल अकेला मैं ही ले लूं, चुनान्चे, उस ने ऐसा ही किया।

रावी कहते हैं कि इधर जो दो आदमी जंगल में बैठे हुवे थे, उन्हों ने इरादा कर लिया कि हम उसे एक तिहाई क्यूं दें? जूंही वोह आए हम उसे क़त्ल करें और दौलत हम दोनों आपस में तक़्सीम कर लें, चुनान्चे, जब वोह आदमी खाना ले कर आया तो उन्हों ने उसे क़त्ल कर दिया और बा'द में वोह खाना खाया जिसे खाते ही वोह दोनों भी मर गए और सोने की ढेरियां इसी त़रह़ पड़ी रहीं और जंगल में तीन लाशें रह गईं।

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का फिर वहां से गुज़र हुवा और उन की येह ह़ालत देख कर अपने साथियों से फ़रमाया : **देखो येह दुन्या है, इस से बचते रहना।**

ह़िकायत

ज़ुलक़रनैन ऐसे लोगों के पास पहुंचे जिन के पास दुन्यावी मालो मताअ़ बिल्कुल नहीं था, उन्हों ने अपनी क़ब्रें तय्यार कर रखी थीं, जब सुब्ह़ होती तो वोह क़ब्रों की त़रफ़ आते, उन की याद ताज़ा करते, उन्हें साफ़ करते और उन के क़रीब नमाज़ें पढ़ते और जानवरों की त़रह़ कुछ घास पात खा लेते और उन्हों ने गुज़र बसर सिर्फ़ ज़मीन से उगने वाली सब्ज़ियों वग़ैरा पर मह़दूद कर रखी थी। ज़ुलक़रनैन ने उन के सरदार को एक आदमी भेज कर बुलाया लेकिन सरदार ने कहा : ज़ुलक़रनैन को जवाब देना कि मुझे तुम से कोई काम नहीं है, अगर तुम्हें कोई काम है तो मेरे पास आ जाओ। ज़ुलक़रनैन ने येह जवाब सुन कर कहा कि वाक़ेई उस ने सच कहा है : चुनान्चे, ज़ुलक़रनैन उस के पास आया और उस ने कहा : मैं ने तुम्हारी त़रफ़ आदमी भेज कर तुम्हें बुलाया मगर तुम ने इन्कार कर दिया लिहाज़ा मैं खुद आया हूं। सरदार ने कहा : अगर मुझे तुम से कोई काम होता तो ज़रूर आता। ज़ुलक़रनैन ने कहा : मैं ने तुम्हें ऐसी ह़ालत में देखा है कि किसी और क़ौम को इस ह़ालत में नहीं देखा, सरदार ने कहा : आप किस ह़ालत की बात कर रहे हैं? ज़ुलक़रनैन ने कहा : येही कि तुम्हारे पास दुन्यावी मालो मताअ़ और मालो मनाल कुछ भी नहीं है

जिस से तुम बहरा अन्दोज़ हो सको। सरदार ने कहा : हम सोना चांदी का जम्अ़ करना बहुत बुरा समझते हैं क्यूंकि जिस शख़्स को येह चीज़ें मिलती हैं वोह इन में मगन हो जाता है और उस चीज़ को जो इन से कहीं बेहतर है, भूल जाता है। ज़ुलक़रनैन ने कहा : तुम ने क़ब्रें क्यूं तय्यार कर रखी हैं ? हर सुब्ह़ इन की ज़ियारत करते हो, इन्हें साफ़ करते हो और इन के क़रीब खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते हो। सरदार ने कहा : येह इस लिये कि जब हम क़ब्रों को देखेंगे और दुन्या की आरज़ू करेंगे तो येह क़ब्रें हमें दुन्या से बे नियाज़ कर देंगी और हमें ह़िर्स व हवा से रोक देंगी। ज़ुलक़रनैन ने पूछा : मैं ने देखा है कि ज़मीन के सब्ज़े के इलावा तुम्हारी कोई ग़िज़ा नहीं है, तुम जानवर क्यूं नहीं रखते ताकि तुम इन का दूध दोहो, इन पर सुवारी करो और इन से बहरा अन्दोज़ हो सको, सरदार ने कहा : हम इस चीज़ को अच्छा नहीं समझते कि हम अपने पेटों को इन की क़ब्रें बनाएं और हम ज़मीन के सब्ज़े से काफ़ी ग़िज़ा ह़ासिल कर लेते हैं और येह इन्सान की गुज़र अवक़ात के लिये काफ़ी है, जब खाना ह़ल्क़ से उतर जाता है (चाहे वोह कैसा ही हो) फिर इस का कोई मज़ा बाक़ी नहीं रहता।

फिर उस क़ाइद (सरदार) ने ज़ुलक़रनैन के पीछे हाथ बढ़ा कर के एक खोपड़ी उठाई और कहा : ज़ुलक़रनैन ! जानते हो येह कौन है ? ज़ुलक़रनैन ने कहा : नहीं ! येह कौन है ? क़ाइद ने कहा : येह दुन्या के बादशाहों में से एक बादशाह था, अल्लाह तआ़ला ने इसे दुन्या वालों पर शाही अ़ता फ़रमाई थी लेकिन इस ने ज़ुल्मो सितम किया और सरकश बन गया। जब अल्लाह तआ़ला ने इस की येह ह़ालत देखी तो इसे मौत दे दी और येह एक गिरे पड़े पथ्थर की मानिन्द बे वक़्अ़त हो गया, अल्लाह तआ़ला ने इस के आ'माल शुमार कर लिये हैं ताकि इसे आख़िरत में सज़ा दे।

फिर उस ने एक और खोपड़ी उठाई जो बोसीदा थी और कहा : ज़ुलक़रनैन ! जानते हो येह कौन है ? ज़ुलक़रनैन ने कहा : नहीं, बताओ कौन है ? क़ाइद ने कहा : येह एक बादशाह है जिसे पहले बादशाह के बा'द ह़ुकूमत मिली, येह अपने पीशर व बादशाह का मख़्लूक़ पर ज़ुल्मो सितम और ज़ियादतियां देख चुका था लिहाज़ा इस ने तवाज़ोअ़ की, अल्लाह का ख़ौफ़ किया और मुल्क में अ़द्लो इन्साफ़ करने का ह़ुक्म दिया, फिर येह भी मर कर ऐसा हो गया, जैसा तुम देख रहे हो और अल्लाह तआ़ला ने इस का शुमार फ़रमा लिया है, यहां तक कि इसे आख़िरत में इन का बदला देगा। फिर वोह ज़ुलक़रनैन की खोपड़ी की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : येह भी इन्ही की त़रह़ है, ज़ुलक़रनैन ! ख़याल रखना कि तुम कैसे आ'माल कर रहे हो ? ज़ुलक़रनैन ने उस की बातें सुन कर कहा : क्या तुम मेरी दोस्ती में रहना चाहते हो ? मैं तुम्हें अपना भाई और वज़ीर

या जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने मुझे मालो मनाल दिया है, उस में अपना शरीक बना लूंगा। सरदार ने कहा : मैं और आप सुल्ह़ नहीं कर सकते और न ही हम इकठ्ठे रह सकते हैं, ज़ुलक़रनैन ने कहा : वोह क्यूं ? सरदार ने कहा : इस लिये कि लोग तुम्हारे दुश्मन और मेरे दोस्त हैं, ज़ुलक़रनैन ने पूछा : वोह कैसे ? सरदार ने कहा : वोह तुम से तुम्हारा मुल्क, माल और दुन्या की वज्ह से दुश्मनी रखते हैं और चूंकि मैं ने इन चीज़ों को छोड़ दिया है लिहाज़ा कोई एक भी मेरा दुश्मन नहीं है और इसी लिये मुझे किसी चीज़ की ह़ाजत नहीं है और न मेरे पास किसी चीज़ की कमी है। रावी कहता है कि ज़ुलक़रनैन येह बातें सुन कर इन्तिहाई मुतअस्सिर हुवा और ह़ैरान वापस लौट आया।

किसी शाइ़र ने क्या ही अच्छा कहा है :

يامن تمتع بالدنيا وزينتها ولا تنام عن اللذات عيناه

شغلت نفسک فيما ليس تدركه تقول لله ماذا حين تلقاه

﴾1﴿......ऐ वोह शख़्स ! जो दुन्या और इस की ज़ीनत से नफ़्अ़ अन्दोज़ होता है और दुन्यावी लज़्ज़तों से उस की आंखें नहीं सोतीं।

﴾2﴿......ख़ुद को ना मुमकिन चीज़ों के ह़ुसूल में मश्ग़ूल कर दिया है, जब तू अल्लाह की बारगाह में ह़ाज़िर होगा तो क्या जवाब देगा ?

दूसरे शाइ़र का क़ौल है :

عتبت على الدنيا لرفعة جاهل وتاخيرذى فضل فقالت خذ العذرا

بنو الجهل ابنائى لهذا رفعتهم واهل التقوى ابناء ضرتى الاخرى

﴾1﴿......मैं ने दुन्या के जाहिलों को बहुत मरतबा अ़त़ा करने और अहले फ़ज़्ल से किनारा कशी करने पर मलामत की तो उस ने मुझ से कहा कि मेरी मजबूरी सुनिये।

﴾2﴿......जाहिल मेरे बेटे हैं लिहाज़ा मैं उन्हें सर बुलन्दी देती हूं और मुत्तक़ी अहले फ़ज़्ल मेरी सोकन आख़िरत के फ़रज़न्द हैं (लिहाज़ा मैं इन से गुरेज़ करती हूं)।

ह़ज़रते मह़मूद बाहिली का क़ौल है :

الا انما الدنيا على المرء فتنة على كل حال اقبلت او تولت

فان اقبلت فاستقبل الشكر دائما ومهما تولت فاصطبر وتثبت

﴾1﴿......बेशक दुन्या आए या जाए इन्सान के लिये हर ह़ाल में फ़ितना व आज़्माइश है।

﴾2﴿......जब दुन्या आती है तो दाइमी शुक्र साथ लाती है (तो शुक्र अदा कर) और जब जाए तो सब्र और साबित क़दमी का मुज़ाहरा कर।

बाब 60

फ़ज़ीलते सदक़ा

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जो शख़्स हलाल की कमाई से एक खजूर के बराबर सदक़ा करता है (और अल्लाह तआ़ला हलाल की कमाई ही का सदक़ा क़बूल फ़रमाता है) तो अल्लाह तआ़ला उसे अपनी बरकत से क़बूल फ़रमा लेता है फिर उस की साहिबे सदक़ा के लिये परवरिश करता है जैसे तुम अपने बछेरों की परवरिश करते हो यहां तक कि वोह सदक़ा पहाड़ के बराबर हो जाता है।[1]

दूसरी ह़दीस में है (जैसे तुम में से कोई एक अपने बछेरे की परवरिश करता है) यहां तक कि एक लुक़्मा उहुद पहाड़ के बराबर हो जाता है।

इस ह़दीसे पाक की तस्दीक़ फ़रमाने इलाही से होती है :

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ[2]

क्या उन्हों ने नहीं जाना कि अल्लाह वोही है जो अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता है और सदक़ात लेता है।

और इरशाद फ़रमाया :

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ[3]

अल्लाह तआ़ला सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है।

फ़ज़ाइले सदक़ात

सदक़ा माल को कम नहीं करता और अल्लाह तआ़ला उस बख़्शिश के बदले इन्सान की इ़ज़्ज़तो वक़ार को बढ़ाता है और जो शख़्स अल्लाह की रज़ाजूई के लिये तवाज़ोअ़ करता है, अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द मर्तबा अ़ता फ़रमाता है।[4]

1 ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الصدقة من کسب طیب، ١/٤٧٦، الحدیث ١٤١٠

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत में लेता है। (پ١١، التوبة: ١٠٤)

ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی فضل الصدقة، ٢/١٤٤، الحدیث ٦٦٢

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को। (پ٣،البقرۃ:٢٧٦)

4 ......مسلم، کتاب البر...الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص ١٣٩٧، الحدیث ٦٩۔ (٢٥٨٨)

तृबरानी की रिवायत है कि सदक़ा माल को कम नहीं करता और न ही बन्दा सदक़ा देने के लिये अपना हाथ बढ़ाता है मगर वोह अल्लाह तआ़ला के हाथ में जाता है या'नी अल्लाह तआ़ला उसे साइल के हाथ में जाने से पहले क़बूल कर लेता है और कोई बन्दा बे परवाई के बा वुजूद सुवाल का दरवाज़ा नहीं खोलता मगर अल्लाह तआ़ला उस पर फ़क्र को मुसल्लत़ कर देता है, बन्दा कहता है : मेरा माल है मेरा माल है मगर उस के माल के तीन हिस्से हैं, जो खाया वोह फ़ना हो गया जो पहना वोह पुराना हो गया जो राहे ख़ुदा में दिया वोह ह़ासिल कर लिया और जो इस के सिवा है वोह उसे लोगों के लिये छोड़ जाने वाला है।[1]

ह़दीस शरीफ़ में है : तुम में से कोई एक ऐसा नहीं है मगर अल्लाह तआ़ला बिग़ैर किसी तर्जुमान के उस से गुफ़्त्गू फ़रमाएगा, आदमी अपनी दाईं त़रफ़ देखेगा तो उसे वोही कुछ नज़र आएगा जो उस ने आगे भेजा है और बाईं त़रफ़ वोही कुछ दिखाई देगा जो उस ने आगे भेजा है और अपने सामने देखेगा तो उसे मुक़ाबिल में आग नज़र आएगी पस तुम उस आग से बचो अगर्चे खजूर का एक टुकड़ा ही राहे ख़ुदा में दे कर बच सको।[2]

ह़दीस शरीफ़ में है कि अपने चेहरों को आग से बचाओ अगर्चे खजूर के एक टुकड़े ही से क्यूं न हो।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि सदक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है।[4]

आप ने फ़रमाया : ऐ का'ब बिन उ़जरा ! जन्नत में वोह ख़ून और गोश्त नहीं जाएगा जो ह़राम ज़रीए़ से ह़ासिल कर्दा माल से फला फुला हो, ऐ का'ब बिन उ़जरा ! लोग जाने वाले हैं, बा'ज़ जाने वाले अपने नफ़्स को रिहाई देने वाले हैं और बा'ज़ इसे हलाक करने वाले हैं। ऐ का'ब बिन उ़जरा ! नमाज़ नज़्दीकी है, रोज़ा ढाल है, सदक़ा गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देता है जैसे चिकने पथ्थर से काई उतर जाती है।[5]

एक रिवायत में है कि जैसे पानी आग को बुझा देता है।[6]

---

1 ......المعجم الكبير، ١١/٣٢٠، الحديث ١٢١٥٠ و مسلم ، كتاب الزهدوالرقائق،ص ١٥٨٢، الحديث ٤-(٢٩٥٩)

2 ......بخارى،كتاب التوحيد، باب كلام الرب...الخ ، ٤/٥٧٨، الحديث ٧٥١٢

3 ......ترمذى،كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة فاتحة الكتاب، ٤/٤٤٢، الحديث ٢٩٦٣

4 ......ترمذى،كتاب السفر، باب ماذكر فى فضل الصلاة، ٢/١١٨، الحديث ٦١٤

5 ......صحيح ابن حبان ، كتاب الحظر و الاباحة ، ذكر الاخبار بايجاب النار...الخ ، ٥/٤٣٦، الجزء السابع، الحديث ٥٥٤١

6 ......ترمذى،كتاب السفر، باب ما ذكر فى فضل الصلاة ، ٢/١١٨، الحديث ٦١٤

फ़रमाया : सदक़ा अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब को ठन्डा कर देता है और मौत की जह़मतों को दूर कर देता है।(1)

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला सदक़े के बदले ना गवार मौत के सत्तर दरवाज़े बन्द कर देता है।(2)

ह़दीस शरीफ़ में है कि लोगों के फ़ैसले होने तक लोग अपने सदक़ात के साए में रहेंगे।(3)

दूसरी रिवायत में है कि कोई आदमी सदक़े की चीज़ नहीं निकालता मगर इसे सत्तर शैत़ानों के जबड़ों से जुदा करता है।(4)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कि कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? तो आप ने फ़रमाया : कम हैसिय्यत शख़्स का कोशिश से ख़र्च करना और अपने अहलो इ़याल से इस की इब्तिदा करना।(5)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक दिरहम एक लाख दिरहम से सबक़त ले गया, एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : वोह कैसे ? आप ने फ़रमाया : एक शख़्स का बहुत मालो दौलत था और उस ने अपने पहलू से एक लाख दिरहम निकाल कर सदक़ा कर दिया और दूसरे शख़्स के पास सिर्फ़ दो दिरहम थे, उस ने इन में से एक राहे खुदा में दे दिया।(6)

फ़रमाने नबवी है कि साइल को ख़ाली हाथ न लौटाओ अगर्चे उसे गाए बकरी का चिरा हुवा सुम ही क्यूं न दे दो।(7)

ह़दीस शरीफ़ में है कि सात शख़्स ऐसे हैं जो रह़मते इलाही के साए में होंगे जिस दिन रह़मते इलाही के सिवा कोई साया न होगा, इन में से एक वोह है जिस ने इन्तिहाई राज़दारी से राहे खुदा में ख़र्च किया यहां तक कि उस के बाएं हाथ को पता न चला कि दाएं हाथ ने क्या ख़र्च किया है।(8)

---

(1) ......ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی فضل الصدقة، ۲/ ۱٤٦، الحدیث ٦٦٤

(2) ......الأموال لابن زنجویه ، ۲/۷٦۲، الحدیث ۱۳۱۰ و کنز العمال، کتاب الزکاۃ من قسم الأفعال، باب فی السخاء و الصدقة ، ۳/۲٤٤، الجزء السادس، الحدیث ۱٦۹۷٥ و کشف الخفاء، ۲/ ۲۱، الحدیث ۱٥۹۱

(3) ......صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب صدقة التطوع ، ٤/ ۱۳۲، الجزء الخامس، الحدیث ۳۲۹۹

(4) ......مسند احمد، حدیث بریدة الاسلمی، ۹/ ۱۲، الحدیث ۲۳۰۲۳

(5) ......صحیح ابن خزیمة ، کتاب الزکاۃ، جماع ابواب صدقة التطوع ، باب ذکر الدلیل...الخ، ٤/۹۹، الحدیث ۲٤٤٤

(6) ......صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب صدقة التطوع ، ٤/ ۱٤٤، الجزء الخامس، الحدیث ۳۳۳٦

(7) ...... صحیح ابن خزیمة، کتاب الزکاۃ، جماع ابواب صدقة التطوع، باب الامربا عطاء...الخ، ٤/ ۱۱۱، الحدیث ۲٤۷۲

(8) ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الصدقة بالیمین، ۱/ ٤۸۰، الحدیث ۱٤۲۳

नेकी के रास्ते येह हैं, बुरी जगहों से बचो, पोशीदा सदक़ा अल्लाह के ग़ज़ब को ठन्डा कर देता है और सिलए रेहूमी ज़िन्दगी बढ़ाती है।(1)

तृबरानी की रिवायत में है कि नेक काम, बुरी जगहों से बचना और खुफ़्या सदक़ा अल्लाह के ग़ज़ब को ठन्डा कर देता है और सिलए रेहूमी ज़िन्दगी बढ़ाती है और हर अच्छा काम सदक़ा है, दुन्या में अच्छे काम करने वाले आख़िरत में अच्छे काम करने वालों के साथ होंगे और जन्नत में सब से पहले भलाई करने वाले दाख़िल होंगे।(2)

तृबरानी और अहृमद की दूसरी रिवायत में है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि सदक़ा क्या है ? तो आप ने फ़रमाया : दूना दो गुना और अल्लाह के हां इस से भी ज़ियादा है, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةًؕ (3)

कौन शख़्स है जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दे पस वोह दुगना कर दे उस को उस के वासिते बहुत दुगना।

नीज़ पूछा गया : या रसूलल्लाह ! कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : फ़क़ीर को पोशीदा देना और कम माल वाले का कोशिश से ख़र्च करना, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْؕ (4)

अगर तुम सदक़ात को ज़ाहिर करो तो अच्छा है और अगर तुम इन्हें छुपाओ और फ़क़ीर को दो तो तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है।

जिस ने किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाया तो जब तक उस के जिस्म पर इस कपड़े का एक धागा भी मौजूद रहेगा अल्लाह तआला सदक़ा देने वाले इन्सान के उ़यूब को ढांपता रहेगा।(5)

---

1 ......المعجم الكبير، ٢٦١/٨، الحديث ٨٠١٤

2 ......المعجم الاوسط، ٣١١/٤، الحديث ٦٠٨٦

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हृसन दे तो अल्लाह उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे। (پ٢، البقرة:٢٤٥)...... المعجم الكبير، ٢٢٦/٨، الحديث ٧٨٩١

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर ख़ैरात ए'लानिय्या दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है। (پ٣، البقرة:٢٧١) .... المعجم الكبير، ٢٢٦/٨، الحديث ٧٨٩١

5 ......المستدرك للحاكم، كتاب اللباس، باب من كسا مسلما...الخ، ٢٧٥/٥، الحديث ٧٤٩٩

दूसरी रिवायत में है कि जिस मुसलमान ने किसी बरह्ना मुसलमान को कपड़ा पहनाया, अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत का लिबास पहनाएगा, जिस मुसलमान ने किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाया अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जिस मुसलमान ने किसी प्यासे मुसलमान को सैराब किया अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में मोहर शुदा शराबे त़हूर पिलाएगा। मिस्कीन को सदक़ा, ख़ैरात है और रिश्तेदार पर सदक़ा करने में दोहरा सवाब है, सदक़े का और सिलए रेह़मी का सवाब।[1]

पूछा गया : कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : हर उस रिश्तेदार को देना जो तेरे लिये अपने दिल में बुग़्ज़ व अ़दावत रखता है।[2]

आप ने फ़रमाया : जिस ने किसी शख़्स को दूध पीने के लिये बकरी वग़ैरा दी ताकि वोह उस का दूध पी कर उसे वापस कर दे, या क़र्ज़ दिया या सफ़र का साथी दिया, उसे गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है।[3]

मज़ीद फ़रमाया कि हर क़र्ज़ सदक़ा है।[4]

एक रिवायत में है कि फ़रमाया : मैं ने मे'राज की रात जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा कि सदक़े का दस गुना और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना सवाब है।[5]

फ़रमाया : जो किसी तंगदस्त की मुश्किल आसान कर देता है, अल्लाह तआ़ला दुन्या और आख़िरत में उस पर आसानी कर देता है।[6]

पूछा गया : या रसूलल्लाह ! कौन सा इस्लाम बेहतर है ? आप ने फ़रमाया : खाना खिलाना और हर वाक़िफ़ और अजनबी पर तुम्हारा सलाम कहना ! साइल ने अ़र्ज़ की, कि मुझे हर चीज़ की ह़क़ीक़त बतलाइये ! आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ को पानी से पैदा

---

1 ......ابوداود،كتاب الزكاة، باب فى فضل سقى الماء، ٢/١٨٠، الحديث١٦٨٢ و ترمذى،كتاب الزكاة، باب ماجاء فى الصدقة على ذى القرابة، ٢/١٤٢، الحديث ٦٥٨

2 ......المعجم الكبير، ٣/٢٠٢، الحديث٣١٢٦

3 ......ترمذى،كتاب البر والصلة، باب ماجاء فى المنحة، ٣/٣٨٥، الحديث١٩٦٤

4 ......شعب الايمان، باب الثانى والعشرين...الخ، فصل فى القرض، ٣/٢٨٤، الحديث٣٥٦٣

5 ......شعب الايمان، باب الثانى والعشرين...الخ، فصل فى القرض، ٣/٢٨٥، الحديث٣٥٦٦

6 ......مسلم،كتاب الذكر...الخ، باب فضل الاجتماع على تلاوة...الخ، ص١٤٤٧، الحديث ٣٨ـ (٢٦٩٩)

किया है, फिर मैं ने कहा : मुझे ऐसे अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ बताइये जिस के सबब मैं जन्नत में जाऊं ? आप ने फ़रमाया : खाना खिला, सलाम किया कर, सिलए रेह़्मी कर और रात को जब लोग सो रहे हों, नमाज़ पढ़, तू जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल होगा ।[1]

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** की इबादत करो, मिस्कीनों को खिलाओ और सलाम करो, ब सलामत जन्नत में जाओगे ।[2]

फ़रमाने नबवी है कि रह़मत के नुज़ूल के अस्बाब में से मुसलमान मिस्कीन को खाना खिलाना है जिस ने अपने मुसलमान भाई को खाने और पीने से सैराब किया, **अल्लाह** तआ़ला उस के और दोज़ख़ के दरमियान सत्तर ख़न्दक़ों का फ़ासिला कर देता है जिन में से हर एक ख़न्दक़ पांच सो साल के सफ़र की मसाफ़त पर है ।[3]

फ़रमाने नबवी है : **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा कि ऐ इन्सान ! मैं बीमार हुवा था मगर तू ने इयादत नहीं की थी । इन्सान कहेगा : मैं तेरी कैसे इयादत करता ? तू तो रब्बुल आ़लमीन है ! रब फ़रमाएगा : तुझे मा'लूम नहीं मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार है मगर तू उस की इयादत को न आया, क्या तुझे मा'लूम नहीं था कि अगर तू उस की इयादत करता तो मुझे उस के क़रीब पाता । ऐ इन्सान ! मैं ने तुझ से खाना खिलाने के लिये कहा था मगर तू ने मुझे खाना नहीं दिया था । इन्सान कहेगा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझे कैसे खाना खिलाता ? तू तो रब्बुल आ़लमीन है ! रब फ़रमाएगा : तुझे इल्म नहीं था कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो उसे मेरे यहां ह़ासिल करता, ऐ इन्सान ! मैं ने तुझ से पानी त़लब किया था मगर तू ने मुझे सैराब नहीं किया था । इन्सान कहेगा कि मैं तुझे कैसे सैराब करता ? तू तो रब्बुल आ़लमीन है ! रब तआ़ला फ़रमाएगा : मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा था मगर तू ने उसे पानी नहीं पिलाया था, क्या तुझे मा'लूम नहीं था कि अगर उसे पानी पिलाता तो मेरे यहां इस का अज्र पाता ।[4]

---

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب اطعام الطعام من الاسلام، ١٦/١، الحدیث ١٢ و صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب النوافل، فصل فی قیام اللیل، ٣/١١٥، الجزء الرابع، الحدیث ٢٥٠٠

2 ......ترمذی، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی فضل اطعام الطعام، ٣/٣٣٨، الحدیث ١٨٦٢

3 ......شعب الایمان، باب الثانی والعشرین...الخ، فصل فی اطعام...الخ، ٣/٢١٧، الحدیث ٣٣٦٤ و ص ٢١٨، الحدیث ٣٣٦٨

4 ......مسلم، کتاب البر...الخ، باب فضل عیادۃ المریض، ص ١٣٨٩، الحدیث ٤٣ـ (٢٥٦٩)

बाब 61

मुसलमान की हाजत बर आरी

फ़रमाने इलाही है :

وَتَعَاوَنُوۡا عَلَی الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰی ۪ (1)

नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मुआवनत करो।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी भाई की इमदाद और फ़ाइदे के लिये क़दम उठाता है, उसे राहे ख़ुदा में जिहाद करने वालों जैसा सवाब मिलता है।(2)

फ़रमाने नबवी है कि अल्लाह तआला ने ऐसी मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया है जिन का काम लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना है और अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि उन्हें अज़ाब नहीं करेगा, जब क़ियामत का दिन होगा उन के लिये नूर के मिम्बर रखे जाएंगे वोह अल्लाह तआला से गुफ़्त्गू कर रहे होंगे हालांकि लोग अभी हिसाब में होंगे।(3)

फ़रमाने नबवी है कि जो किसी मुसलमान भाई की हाजत रवाई के लिये कोशिश करता है चाहे उस की हाजत पूरी हो या न हो, अल्लाह तआला कोशिश करने वाले के अगले पिछले सब गुनाहों को बख़्श देता है और उस के लिये दो बराअतें लिख दी जाती हैं जहन्नम से रिहाई और मुनाफ़क़त से बराअत।(4)

फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की हाजत रवाई करता है, मैं उस के मीज़ान के क़रीब खड़ा होऊंगा, अगर उस की नेकियां ज़ियादा हुईं तो सहीह वरना मैं उस की शफ़ाअत करूंगा।(5) येह रिवायत हिल्या में अबू नुऐम ने नक़्ल की है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो। (پ٦، المائدہ: ٢)

2.....كنز العمال، كتاب الزكاة، الباب الثانى...الخ، الفصل الثالث...الخ، ٣/١٩٠، الجزء السادس، الحديث ١٦٤٦٢

3.....موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب قضاء الحوائج، ٤/١٧٥، الحديث ٤٩ ماخوذًا و الفردوس الاخبار، ٥/٤٧٦، الحديث ٨٨١١ و كنز العمال، كتاب الزكاة من قسم الأفعال، باب فى السخاء والصدقة، ٣/١٦٦، الجزء السادس، الحديث ١٦١٨٨ و تاريخ مدينه دمشق، ٤٣/٨٢ و المستطرف، الباب الثانى والعشرون فى اصطناع المعروف... الخ، ١/١٩٩

4.....مسند حارث، كتاب الصلاة، باب فى خطبة قد كذبها، ١/٣٠٩، الحديث ٢٠٥ و تنزيه الشريعة للكنانى، ٢/١٤٣، الحديث ٥٤ و البحر المديد لابن عجيبة، ١/٨٦ و المستطرف، الباب الثانى والعشرون فى اصطناع المعروف..الخ، ١/١٩٩

5.....حلية الاولياء، ٦/٣٨٩، الحديث ٩٠٣٨

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चलता है **अल्लाह** तआ़ला हर क़दम के बदले उस के नामए आ'माल में सत्तर नेकियां लिख देता है और सत्तर गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, पस अगर वोह ह़ाजत उस के हाथों पूरी हो जाए तो वोह गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे मां के पेट से आया था और अगर वोह इसी दरमियान मर जाए तो बिला ह़िसाब जन्नत में जाएगा।(1)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये उस के साथ जाता है और उस की ह़ाजत पूरी कर देता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के और जहन्नम के दरमियान सात ख़न्दकें बना देता है और दो ख़न्दक़ों का दरमियानी फ़ासिला ज़मीनो आस्मान के दरमियानी फ़ासिले के बराबर होता है।(2)

हज़रते इब्ने अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला के कुछ ऐसे इन्आ़मात हैं जो उन लोगों के लिये मख़्सूस हैं जो लोगों की ह़ाजत रवाई करते रहते हैं और जब वोह येह त़रीक़ा छोड़ देते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला वोह इन्आ़मात दूसरों की त़रफ़ मुन्तक़िल कर देता है।(3)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो कि शेर अपनी दहाड़ में क्या कहता है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** और उस के रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमाया : वोह कहता है कि ऐ **अल्लाह** ! मुझे किसी भलाई करने वाले पर मुसल्लत़ न करना।(4)

हज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह ह़दीसे मरफ़ूअ़ बयान करते थे कि जब तुम किसी ज़रूरत या काम का इरादा करो तो उसे जुमा'रात के दिन शुरूअ़ करो और जब अपने घर से निकलो तो 'सूरए आले इमरान' का आख़िरी ह़िस्सा, 'आयतुल कुरसी', 'सूरतुल क़द्र' और 'सूरए फ़ातिह़ा' पढ़ो क्यूंकि इन में दुन्या और आख़िरत की बहुत सी ह़ाजतें हैं।(5)

---

1 ......الترغيب والترهيب ، كتاب البر والصلاة وغيرهما، الترغيب فى قضاء...الخ ، ٣/٣١٧، الحديث ٤٠٢٢
2 ......موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب قضاء الحوائج ، باب فى فضل المعروف، ٤/١٦٧، الحديث ٣٥
3 ......المعجم الاوسط، ٦/١٥٨، الحديث ٨٣٥٠
4 ......مكارم الاخلاق للطبرانى، الجزء الاول...الخ ، باب فضل اصطناع المعروف، ص ٣٣٥، الحديث ١١٥
5 ......تنزيه الشريعة للكنانى، ١/٣٠٩ ، الحديث ٨٦ و الدرالمنثور، پ ٣٠، القدر، ٨/٥٨٣

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन बिन हुसैन (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) कहते हैं कि मैं किसी ज़रूरत के लिये हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ के पास गया, इन्हों ने मुझे कहा : जब भी आप को कोई ज़रूरत पेश आए तो मेरी त़रफ़ कोई क़ासिद भेज दें या ख़त़ लिख दें क्यूंकि मुझे **अल्लाह** तआ़ला से ह़या आती है कि आप मेरे दरवाज़े पर तशरीफ़ लाएं।

हज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है : रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम ! जो हर आवाज़ को सुनता है, कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो अपने दिल में मसर्रत को जगह देता है मगर **अल्लाह** तआ़ला इस सुरूर से लुत़्फ़ अ़त़ा फ़रमाता है, फिर जब कोई मुसीबत नाज़िल होती है तो वोह इस सुरूर को इस त़रह़ बहा ले जाती है जैसे पानी निशेब में बहता है यहां तक कि उसे अजनबी ऊंट की त़रह़ हंका दिया जाता है, नीज़ आप ने फ़रमाया कि ना हन्जार लोगों से ह़ाजत त़लब करने से ह़ाजत का पूरा न होना बेहतर है, आप ने मज़ीद फ़रमाया : "अपने भाई के पास बहुत ज़ियादा ज़रूरतें ले कर न जाओ क्यूंकि बछड़ा जब थनों को बहुत ज़ियादा चूसने लगता है तो उस की मां उसे सींग मारती है।

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

لا تقطعن عادة الاحسان عن احد　　　مادمت تقدر والایام تارات

واذکر فضیلة صنع اللّٰه اذ جعلت　　　الیک لا لک عند الناس حاجات

《1》......जब तक तेरे मक़्दूर में हो किसी एह़सान करने में पसो पेश न कर और येह ज़िन्दगी गुज़रने वाली है।

《2》......और **अल्लाह** तआ़ला की इस नवाज़िश को याद रख कि उस ने तुझे लोगों का ह़ाजत रवा बना दिया है मगर तू किसी के पास अपनी ह़ाजत ले कर नहीं जाता।

एक और शाइ़र कहता है :

اقض الحوائج ما استطعت　　　وکن لهم اخیک فارج

فلخیر ایام الفتی　　　یوم قضی فیه الحوائج

《1》.....जहां तक तुझ से मुमकिन हो लोगों की ज़रूरतें पूरी कर और उन का ह़ाजत रवा भाई बन।

《2》.....बेशक किसी जवान का उ़म्दा दिन वोही है जिस में वोह लोगों की ह़ाजत रवाई करता है।

और हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم का फ़रमान है : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिस के हाथों भलाइयों का सुदूर होता है और उस शख़्स के लिये हलाकत है जिस के हाथों बुराइयां फ़रोग़ पाती है।[1]

1......شعب الایمان ، الخامس والعشرون...الخ ،حدیث الکعبة...الخ، ۳/۴۴۵، الحدیث ۴۰۱۷

बाब 62

फ़ज़ाइले वुज़ू

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस ने वुज़ू किया और बेहतरीन त़रीके से किया फिर दो रक्अ़तें अदा कीं और उस के दिल में दुन्यावी ख़यालात नहीं आए वोह गुनाहों से उस दिन की त़रह़ निकल गया जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।[1]

दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : और उस ने इन दो रक्अ़तों में कोई ना मुनासिब ह़रकत नहीं की तो उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।[2]

फ़रमाने नबवी है : क्या मैं तुम्हें ऐसे कामों की ख़बर न दूं जिन से दरजात बुलन्द होते हैं और जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनते हैं, तक्लीफ़ देह अवक़ात में मुकम्मल वुज़ू करना, मसाजिद की त़रफ़ चलना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, बस येह पनाहगाहें हैं। येह लफ़्ज़ आप ने तीन मरतबा फ़रमाए।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक एक मरतबा आ'ज़ाए वुज़ू को धो कर फ़रमाया : येह वुज़ू है जिस के बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला नमाज़ को क़बूल नहीं करता और आप ने दो दो मरतबा आ'ज़ाए वुज़ू धो कर फ़रमाया कि जिस ने दो दो मरतबा आ'ज़ाए वुज़ू को धोया उसे दोहरा सवाब मिलेगा और आप ने तीन तीन मरतबा आ'ज़ाए वुज़ू को धोया और फ़रमाया : मेरा, मुझ से पहले आने वाले तमाम अम्बिया का और इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का वुज़ू है जो ख़लीलुल्लाह हैं।[4]

---

1 ......كنز العمال، كتاب الصلاة من قسم الأقوال، الباب الأول فى فضل الصلاة ، ١٢٢/٤، الجزء السابع، الحديث ١٨٩٧٥، ١٨٩٨٠، ١٨٩٨٣.

2 ......مسند ابی داود الطیالسی، زید بن خالد الجهنی رضی اللّٰه عنه ، ص ١٨٩، الحديث ١٣٣١

3 ......شعب الایمان، باب العشرون من شعب...الخ ، فضل الوضوء، ١٥/٣، الحديث ٢٧٣٨

4 ......ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب ماجاء فى الوضوء مرة...الخ ، ٢٥١/١، الحديث ٤٢٠ بدون ذكر ابراهيم عليه السلام

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "जो वुज़ू के वक़्त **अल्लाह** को याद करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के तमाम जिस्म को पाक कर देता है और जो शख़्स वुज़ू करते वक़्त **अल्लाह** को याद नहीं करता उस का वोही हिस्सा पाक होता है जिस पर पानी लगता है।"(1)

फ़रमाने नबवी है कि जो ह़ालते वुज़ू में वुज़ू करता है उस के नामए आ'माल में **अल्लाह** तआ़ला दस नेकियां लिख देता है।(2)

फ़रमाने नबवी है कि वुज़ू पर वुज़ू नूरुन अ़ला नूर है।(3)

इन तमाम रिवायात में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नए वुज़ू की फ़ज़ीलत की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हुवे इस की तरग़ीब दी है।

फ़रमाने नबवी है कि जब बन्दए मुस्लिम वुज़ू करते हुवे कुल्ली करता है तो उस के मुंह से गुनाह निकल जाते हैं और जब वोह नाक साफ़ करता है तो उस के नाक से गुनाह निकल जाते हैं, जब वोह मुंह धोता है तो उस के चेहरे के गुनाह निकल जाते हैं, जब वोह बाज़ू धोता है तो उस के नाख़ुनों के नीचे तक के तमाम गुनाह निकल जाते हैं, जब वोह सर का मस्ह़ करता है तो उस के सर के गुनाह निकल जाते हैं यहां तक कि कानों के नीचे तक के गुनाह गिर जाते हैं, जब वोह पाउं धोता है तो उस के पाउं के नाख़ुनों के नीचे तक के तमाम गुनाह निकल जाते हैं, फिर उस का मस्जिद की त़रफ़ चलना और नमाज़ पढ़ना उस की इ़बादत में दाख़िल हो जाता है।(4)

और मरवी है कि बा वुज़ू आदमी रोज़ादार की त़रह़ है।(5)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि जिस शख़्स ने बेहतरीन वुज़ू किया फिर फ़राग़त के बा'द आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर कहा :

اَشْهَدُاَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, वोह जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो।(6)

1 ......كنزالعمال،كتاب الطهارة،الباب الثانى...الخ ، الفصل الثانى فى آداب الوضوء، ٥/١٣٠، الجزء التاسع، الحديث ٢٦٠٦٢

2 ...... ابوداود،كتاب الطهارة، باب الرجل يجدد...الخ، ١/٥٦، الحديث ٦٢

3 ......المقاصد الحسنة ، حرف الواو، ص ٤٥٨، الحديث ١٢٦٤

4 ...... ابن ماجه، كتاب الطهارة ، باب ثواب الطهور، ١/١٨٢، الحديث ٢٨٢ ماخوذًا

5 ...... الزهد لا بن المبارك ، الجزء العاشر استعنت باللّٰه، ص ٤٤٠، الحديث ١٢٤٣

6 ......مسند احمد ، مسند عمر بن الخطاب، ١/٥٢، الحديث ١٢١

हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि बेहतरीन वुज़ू शैतान को तुझ से दूर भगा देता है।

हज़रते मुजाहिद رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है : "जो शख़्स इस बात की ताक़त रखता है कि वोह बा वुज़ू, ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार करते हुवे रात गुज़ारे तो उसे ऐसा करना चाहिये क्यूंकि रूहें जिस हालत में क़ब्ज़ की जाती हैं उसी हालत में उठाई जाएंगी।"

मरवी है कि हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक सहाबिये रसूल को का'बे का ग़िलाफ़ लाने के लिये मिस्र भेजा, वोह सहाबी शाम के एक अलाक़े में ऐसी जगह क़ियाम पज़ीर हुवे जिस के क़रीब अहले किताब के एक ऐसे बड़े आलिम का सौमआ था कि कोई और आलिम उस से ज़ियादा बा इल्म नहीं था।

हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़ासिद के दिल में उस आलिम से मिलने और उस की इल्मी बातें सुनने की ख़्वाहिश पैदा हुई चुनान्चे, वोह उस की इबादत गाह के दरवाज़े पर आए और दरवाज़ा खट-खटाया मगर बहुत देर के बा'द दरवाज़ा खोला गया, फिर वोह आलिम के पास गए और उस से इल्मी गुफ़्तगू करने की फ़रमाइश की और उसे उस आलिम के तबह्हुर से बहुत तअज्जुब हुवा ! आख़िर में उन्हों ने दरवाज़ा देर से खोलने की शिकायत की तो वोह आलिम बोला कि जब आप आए तो हम ने आप पर बादशाहों जैसी हैबत देखी लिहाज़ा हम ख़ौफ़ज़दा हो गए और हम ने आप को दरवाज़े पर इस लिये रोक दिया कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : ऐ मूसा ! जब तुझे कोई बादशाह ख़ौफ़ज़दा कर दे तो तू वुज़ू कर और अपने घर वालों को भी वुज़ू का हुक्म दे, तू जिस से डर रहा है उस से मेरी अमान में आ जाएगा चुनान्चे, हम ने दरवाज़ा बन्द कर दिया यहां तक कि मैं ने और इस में रहने वाले तमाम आदमियों ने वुज़ू कर लिया, फिर हम ने नमाज़ पढ़ी लिहाज़ा हम तुझ से बे ख़ौफ़ हो गए और फिर हम ने दरवाज़ा खोल दिया।

बाब 63

फ़ज़ीलते नमाज़

चूंकि नमाज़ अफ़्ज़ल तरीन इबादत है लिहाज़ा हम ने किताबुल्लाह की पैरवी करते हुवे इस की तरग़ीब देने के लिये दूसरी मरतबा इस का ज़िक्र किया है क्यूंकि जो कुछ हम तह़रीर कर चुके हैं नमाज़ के फ़ज़ाइल में इस से कहीं ज़ियादा आयात व अह़ादीस वारिद हुई हैं चुनान्चे, इरशादे नबवी है कि बन्दे के लिये इस से बढ़ कर कोई इन्आ़म नहीं है कि उसे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी जाए।(1)

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि अगर मुझे जन्नत और दो रक्अ़त नमाज़ में से किसी एक को पसन्द करने का कहा जाए तो मैं जन्नत पर दो रक्अ़त नमाज़ को तरजीह़ दूंगा क्यूंकि दो रक्अ़तों में रज़ाए इलाही और जन्नत में मेरी रिज़ा है।

कहा जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जब सात आस्मानों को पैदा फ़रमाया तो इन्हें फ़िरिश्तों से ढांप दिया, वोह उस की इबादत से एक लम्ह़े को ग़ाफ़िल नहीं होते और **अल्लाह** तआ़ला ने हर आस्मान के फ़िरिश्तों के लिये इबादत की एक क़िस्म मुक़र्रर फ़रमा दी है चुनान्चे, एक आस्मान वाले क़ियामत तक के लिये क़ियाम में हैं, किसी आस्मान वाले रुकूअ़ में, किसी आस्मान वाले फ़िरिश्ते सुजूद में और किसी आस्मान वाले **अल्लाह** तआ़ला की हैबत और जलाल से अपने बाज़ू झुकाए हुवे हैं, इल्लिय्यीन और अ़र्शे इलाही के फ़िरिश्ते सफ़ बस्ता अ़र्शे इलाही का त़वाफ़ करते रहते हैं, **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करते हैं और ज़मीन वालों के लिये मग़फ़िरत त़लब करते हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला ने येह तमाम इबादतें एक नमाज़ में जम्अ़ कर दी हैं ताकि मोमिनों को आस्मानी फ़िरिश्तों की हर इबादत का हिस्सा इनायत फ़रमा कर इन्हें इ़ज़्ज़त व तौक़ीर बख़्शे और इस में तिलावते क़ुरआने मजीद की इ़ज़्ज़त बख़्शी और मोमिनों से इबादत का शुक्र अदा करने की फ़रमाइश की, नमाज़ का शुक्र इस की मुकम्मल शराइत़ व ह़ुदूद से अदाएगी है, फ़रमाने इलाही है :

الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَۙ(۳) (2)

जो लोग ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और हमारे दिये हुवे रिज़्क़ में से ख़र्च करते हैं।

---

1 ......المعجم الكبير، ٨/١٥١، الحديث ٧٦٥٦ و فردوس الاخبار، ١٢١/٤، الحديث ٦٣٧٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं। (پ١، البقرة: ٣)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ[1] — *और तुम नमाज़ क़ाइम करो।*

इरशादे ख़ुदावन्दी हुवा :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ[2] — *और नमाज़ क़ाइम कीजिये।*

एक मक़ाम पर इरशाद है :

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ[3] — *और जो नमाज़ों को क़ाइम करने वाले हैं।*

क़ुरआने मजीद में जहां कहीं भी नमाज़ का ज़िक्र है वहां इसे क़ाइम करने का भी हुक्म है और **अल्लाह** तआ़ला ने जब मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र किया तो फ़रमाया :

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ[4] — *पस हलाकत है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से सुस्ती करने वाले हैं।*

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में मुनाफ़िक़ों को 'मुसल्लीन' कहा है और मोमिनों का ज़िक्र करते वक़्त फ़रमाया :

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ[5] — *जो नमाज़ों को क़ाइम करने वाले हैं।*

और येह इस लिये फ़रमाया ताकि मा'लूम हो जाए कि नमाज़ी तो बहुत हैं मगर सहीह़ मा'ना में नमाज़ क़ाइम करने वाले कम हैं, ग़ाफ़िल लोग तो बस रवाज के तौर पर अ़मल करते हैं और इन्हें उस दिन की याद नहीं आती जिस दिन आ'माल पेश किये जाएंगे, क्या मा'लूम इन की नमाज़ें मक़्बूल होंगी या मर्दूद ?

ह़ज़रते नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है : आप ने फ़रमाया : बेशक तुम में से बा'ज़ वोह हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं मगर उन की नमाज़ में से तिहाई या चौथाई या पांचवां या छटा

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम करो। (پ١، البقرة: ٤٣)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नमाज़ क़ाइम रख। (پ١٦، طٰه: ١٤)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखने वाले। (پ٦، النساء: ١٦٢)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं। (پ٣٠، الماعون: ٤،٥)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखने वाले। (پ٦، النساء: ١٦٢)

हिस्सा यहां तक कि आप ने दसवें हिस्से तक गिना और फ़रमाया : सवाब लिखा जाता है।[1] या'नी नमाज़ में से उसी हिस्से का सवाब मिलता है जिस को वोह मुकम्मल यक्सूई और तवज्जोह से पढ़ता है।

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है : आप ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने **अल्लाह** तआला की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर मुकम्मल यक्सूई से दो रक्अ़त नमाज़ अदा की वोह गुनाहों से उस दिन की त़रह़ पाक हो गया जिस दिन कि उस की मां ने उसे जना था।[2]

हक़ीक़त येह है कि बन्दे की नमाज़ बा अ़ज़मत तब होती है जब उस की तमाम तर तवज्जोह **अल्लाह** तआला की त़रफ़ हो और वोह नफ़्सानी ख़यालात में मश्ग़ूल हो तो उस की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स अपनी ग़लतियों और लग़्ज़िशों पर मा'ज़िरत करने के लिये बादशाह के दरबार में जा रहा हो और जब वोह बादशाह के हुज़ूर पहुंच गया और बादशाह उसे सामने खड़ा देख कर उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो वोह दाएं बाएं देखने लगे लिहाज़ा बादशाह उस की ज़रूरत पूरी नहीं करेगा और बादशाह उस की तवज्जोह के मुताबिक़ उस पर इनायत करेगा और उस की बात सुनेगा, इसी त़रह़ जब बन्दा नमाज़ में दाख़िल हो जाता है और दूसरी बातों के ख़यालात में खो जाता है तो उस की नमाज़ भी क़बूल नहीं होती।

जान लीजिये कि नमाज़ की मिसाल उस दा'वते वलीमा की सी है जिसे बादशाह ने मुन्अ़क़िद किया हो और उस में क़िस्म क़िस्म के खाने तय्यार किये गए हों, खाने और पीने की हर चीज़ की जुदागाना लज़्ज़त और ज़ाइक़ा हो फिर वोह लोगों को खाने की दा'वत दे, ऐसे ही नमाज़ है, **अल्लाह** तआला ने लोगों को इस की जानिब बुलाया है और इस में मुख़्तलिफ़ अफ़्आ़ल और रंगारंग ज़िक्र वदीअ़त रखे हैं ताकि बन्दे उस की इबादत करें और उ़बूदिय्यत के रंगारंग मज़े लें, इस में अफ़्आ़ल खाने की त़रह़ और अज़्कार पीने की अश्या जैसे हैं।

येह भी कहा गया है कि नमाज़ में बारह हज़ार अफ़्आ़ल थे, फिर येह बारह हज़ार अफ़्आ़ल बारह अफ़्आ़ल में मख़्सूस कर दिये गए लिहाज़ा जो शख़्स भी नमाज़ पढ़ना चाहे उसे इन बारह चीज़ों का ख़याल रखना चाहिये ताकि उस की नमाज़ कामिल हो जाए, जिन में से छे ख़ारिजे नमाज़ और छे दाख़िले नमाज़ हैं :

---

1 ......مسند احمد، ۱۸۹/۳۱، الحديث:۱۸۸۹٤و فردوس الاخبار، ۱/۱۹۱، الحديث ۷۲۰

2 ......المعجم الاوسط، ٤/۳۷۹، الحديث ٦۳۰٦

۞.....पहला 'इल्म' है क्यूंकि फ़रमाने नबवी है कि वोह थोड़ा अ़मल जिसे इन्सान मुकम्मल इल्म से अदा करे, उस ज़ियादा अ़मल से बेहतर है जिसे बे ख़बरी और जहालत में अदा किया जाए।[1]

۞......दूसरा 'वुज़ू' है क्यूंकि फ़रमाने नबवी है कि त़हारत के बिग़ैर नमाज़ होती ही नहीं।[2]

۞......तीसरा 'लिबास' है, चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ [3]

तुम हर नमाज़ के वक़्त ज़ीनत ह़ासिल करो।

या'नी हर नमाज़ के वक़्त कपड़े पहनो।

۞......चौथा 'वक़्त की पाबन्दी' है, फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝ [4]

बेशक नमाज़ मोमिनों पर वक़्ते मुक़र्रर पर फ़र्ज़ है।

۞......पांचवां 'क़िब्ले की जानिब मुंह करना' है, फ़रमाने इलाही है :

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَیْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ [5]

पस अपने चेहरे को मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ फेर दो और तुम जहां कहीं भी हो अपने चेहरों को मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ फेर दो।

۞......छटी 'निय्यत' है चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ وَ اِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَانَوٰی[6] आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की।

۞......सातवीं 'तक्बीरे तह़रीमा' है, फ़रमाने नबवी है[7] تَحْرِیْمُهَا التَّكْبِیْرُ وَ تَحْلِیْلُهَا التَّسْلِیْمُ इस में दुन्यावी अफ़्आ़ल को ह़राम करने वाली तक्बीरे तह़रीमा और ह़लाल करने वाला सलाम फेरना है।

۞......आठवां 'क़ियाम' है क्यूंकि फ़रमाने इलाही है :

1......المصنف للامام عبدالرزاق، کتاب العلم، باب الرخص...الخ، ۱۰/۲۶۳، الحدیث ۲۰۷۳۵ ماخوذاً

2......الدار قطنی، کتاب الصلاۃ، باب ذکر وجوب الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۴۷۵، الحدیث۱۳۲۶ملتقطا

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ। (پ۸، الاعراف: ۳۱)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है। (پ۵، النساء: ۱۰۳)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसलमानो ! तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की त़रफ़ करो। (پ۲، البقرۃ: ۱۴۴)

6......بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی...الخ، ۱/۵، الحدیث ۱

7......المستدرک للحاکم، کتاب الطہارۃ، باب مفتاح الصلاۃ...الخ، ۱/۳۴۲، الحدیث ۴۶۹

وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝ (1) — *और खड़े हो जाओ **अल्लाह** के लिये इताअ़त करने वाले।*

या'नी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो।

۞......नवां 'सूरए फ़ातिहा' का पढ़ना है क्यूंकि फ़रमाने इलाही है :

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ (2) — *पस पढ़ो तुम जो तुम्हें कुरआन से मुयस्सर हो।*

۞......दसवां 'रुकूअ़' है, इरशादे इलाही है :

وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ (3) — *और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।*

۞......ग्यारहवां 'सजदे' हैं, इरशादे इलाही है :

وَاسْجُدُوْا (4) — *और सजदा करो।*

۞......बारहवां ''क़ा'दा'' है, इरशादे नबवी है कि जब किसी आदमी ने आख़िरी सजदे से सर उठाया और तशह्हुद पढ़ने के ब क़दर बैठ गया तो उस की नमाज़ मुकम्मल हो गई।(5)

जब येह बारह चीज़ें पाई जाएं तो इन के तकमिला के लिये एक और चीज़ की ज़रूरत होती है और वोह है ख़ुलूसे क़ल्ब ताकि तेरी नमाज़ सहीह़ मा'नों में अदा हो जाए और फ़रमाने इलाही है :

فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ (6) — *पस **अल्लाह** की इ़बादत करो उस के दीन को ख़ालिस करते हुवे।*

हम ने सब से पहले इ़ल्म का तज़्किरा किया था, इ़ल्म की तीन क़िस्में हैं : एक येह कि वोह फ़राइज़ और सुनन को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा समझता हो, वुज़ू में जो फ़राइज़ और सुनन हैं,

---

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खड़े हो **अल्लाह** के हुज़ूर अदब से। (پ۲، البقرة:۲۳۸)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अब कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो। (پ۲۹، المزمل:۲۰)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो। (پ۱، البقرة:۴۳)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सजदा करो। (پ۱۷، الحج:۷۷)

5......كنز العمال، كتاب الصلاة، من قسم الأقوال، الخروج من الصلاة، ۴/۷۶، الجز الثامن، الحديث ۲۲۳۶۴، ۲۲۳۶۵ و الدار قطني، كتاب الصلاة، باب من احدث قبل... الخ، ۱/۵۰۵، الحديث ۱۴۰۹

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो **अल्लाह** को पूजो निरे उस के बन्दे हो कर। (پ۲۳، الزمر:۲)

इन्हें जानता हो क्यूंकि येह नमाज़ के मुकम्मल करने का एक वासिता हैं और शैतान के मक्रों को जानता हो और इन के दफ़इय्या के लिये अपनी कोशिश सर्फ़ करे।

वुज़ू तीन चीज़ों से मुकम्मल होता है : 'पहला' येह कि तू अपने दिल को कीना, ह़सद और अ़दावत से पाक करे, 'दूसरा' येह कि अपने बदन को गुनाहों से पाक करे, 'तीसरा' येह कि पानी को ज़ाएअ़ न करते हुवे अपने आ'ज़ाए वुज़ू को खूब अच्छी त़रह़ धोए।

लिबास तीन चीज़ों से मुकम्मल होता है : 'पहला' येह कि वोह ह़लाल की कमाई से ह़ासिल किया गया हो, 'दूसरा' येह कि नजासत से पाक हो, 'तीसरा' येह कि उस की वज़्अ़ क़त्अ़ सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो और तकब्बुर व ख़ुदबीनी के लिये उन कपड़ों को न पहना गया हो।

पाबन्दिये वक़्त तीन चीज़ों पर मुन्ह़सिर है : 'अव्वल' येह कि तू इतना इ़ल्म रखता हो कि सूरज, चांद सितारों से तू वक़्त के तअ़य्युन में मदद ले सके, 'दुवुम' येह कि तेरे कान अज़ान की आवाज़ पर लगे रहें, 'सिवुम' येह कि तेरा दिल नमाज़ के वक़्त की पाबन्दी के मुतअ़ल्लिक़ मुतफ़क्किर हो।

इस्तिक़्बाले क़िब्ला तीन चीज़ों से मुकम्मल होता है : 'पहला' येह कि तेरा मुंह का'बे की सम्त हो, 'दूसरा' येह कि तेरा दिल **अल्लाह** की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और 'तीसरा' येह कि तू इन्तिहाई इन्किसारी से ह़ाज़िर हो।

निय्यत तीन चीज़ों से मुकम्मल होती है : 'पहला' येह कि तुझे इ़ल्म हो कि तू कौन सी नमाज़ पढ़ रहा है, 'दूसरे' येह कि तुझे इस बात का इ़ल्म हो कि तू **अल्लाह** की बारगाह में खड़ा हो रहा है और वोह तुझे देख रहा है और तू ख़ौफ़ज़दा हो कर ह़ाज़िर हो, 'तीसरे' येह कि तुझे मा'लूम हो कि **अल्लाह** तआ़ला तेरे दिल के भेदों को जानता है लिहाज़ा तू अपने दिल से दुन्यावी ख़यालात यक्सर ख़त्म कर दे।

तक्बीरे तह़रीमा भी तीन चीज़ों से पायए तक्मील तक पहुंचती है : 'पहला' येह कि तुम सह़ीह़ मा'नों में **अल्लाह** तआ़ला की बड़ाई बयान करो और सह़ीह़ त़ौर पर **अल्लाहु अक्बर** कहो, 'दूसरा' येह कि अपने दोनों हाथ कानों के बराबर तक उठाओ, 'तीसरा' येह कि तक्बीर कहते हुवे तुम्हारा दिल भी ह़ाज़िर हो और इन्तिहाई ता'ज़ीम से तक्बीर कहो।

क़ियाम भी तीन चीज़ों से कामिल होता है : 'पहला' येह कि तेरी निगाह सजदा गाह पर हो, 'दूसरा' येह कि तेरा दिल **अल्लाह** की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, 'तीसरा' येह कि तू दाएं बाएं तवज्जोह न करे।

क़िराअत भी तीन चीज़ों से मुकम्मल होती है : 'पहला' येह कि तू सूरए फ़ातिहा को सहीह तलफ़्फ़ुज़ से ठहर ठहर कर गाने की तर्ज़ से एहतिराज़ करते हुवे पढ़े, 'दूसरा' येह कि इसे ग़ौरो फ़िक्र से पढ़े और इस के मआनी में सोच बिचार करे, 'तीसरा' येह कि जो कुछ पढ़े उस पर अमल भी करे।

रुकूअ भी तीन अश्या से कामिल होता है : 'पहला' येह कि पीठ को बराबर रखो, ऊंचा या नीचा न रखो, 'दूसरा' येह कि अपने हाथ घुटनों पर रखो और उंगलियां खुली हुई हों, 'तीसरा' येह कि कामिल इत्मीनान से रुकूअ करो और ता'ज़ीम व वक़ार से रुकूअ की तस्बीहात मुकम्मल करो।

सजदा भी तीन बातों से मुकम्मल होता है : 'पहला' येह कि तू अपने हाथ कानों के बराबर रख, 'दूसरा' येह कि कोहनियां खुली रख, 'तीसरा' येह कि मुकम्मल सुकून से सजदे की तस्बीहात मुकम्मल कर।

क़ा'दा भी तीन चीज़ों से पायए तक्मील को पहुंचता है : 'पहला' येह कि तू दायां पाउं खड़ा रख और बाएं पर बैठ, 'दूसरे' येह कि तशह्हुद पूरी ता'ज़ीम से पढ़ और अपने और मुसलमानों के लिये दुआ मांग, 'तीसरे' येह कि इस के इख़्तिताम पर सलाम फेर।

सलाम इस तरीक़े से पायए तक्मील को पहुंचता है कि दाईं जानिब सलाम फेरते हुवे तेरी येह सच्ची निय्यत हो कि मैं दाईं तरफ़ के फ़िरिश्ते, मर्दों और औरतों को सलाम कर रहा हूं और इसी तरह बाईं तरफ़ सलाम फेरते हुवे निय्यत कर और अपनी निगाह अपने दो कन्धों से मुतजाविज़ न कर।

इसी तरह इख़्लास भी तीन चीज़ों से पूरा होता है : 'एक' येह कि नमाज़ से तेरा मुद्दआ रज़ाए इलाही का हुसूल हो लोगों की रज़ामन्दी का हुसूल न हो, 'दूसरे' येह कि नमाज़ की तौफ़ीक़ **अल्लाह** की तरफ़ से जान, 'तीसरे' येह कि तू इस की हिफ़ाज़त कर ताकि इसे क़ियामत के दिन **अल्लाह** की बारगाह में पेश कर सके क्यूंकि फ़रमाने इलाही है :

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ (1) *जो शख़्स नेकियां ले कर आया।*

येह नहीं फ़रमाया : مَنْ عَمِلَ بِالْحَسَنَةِ जिस ने नेकियां कीं, लिहाज़ा अपनी नेकियों को बुरे आ'माल से बरबाद कर के उस के हुज़ूर में न जा।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो नेकी लाए। (پ ٢٠، القصص:٨٤)

बाब 64

आफ़ाते क़ियामत

मरवी है कि हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह ! क्या क़ियामत के दिन दोस्त दोस्त को याद करेगा ? आप ने फ़रमाया : तीन जगहों पर कोई किसी को याद नहीं करेगा, मीज़ाने अ़मल के वक़्त ता आंकि वोह अपना हल्का या भारी पलड़ा देख न ले, नामए आ'माल के उड़ने के वक़्त[1] या तो उसे दाएं हाथ या बाएं हाथ में नामए आ'माल दे दिया जाए और उस वक़्त जब कि जहन्नम से आग की गर्दन बाहर निकलेगी और लोगों की त़रफ़ बढ़ती चली आएगी और कहेगी : मैं हर मुशरिक, सरकश, मुतकब्बिर और उस शख़्स पर मुक़र्रर की गई हूं जो क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखता था पस वोह उन्हें अपने शो'लों में लपेट कर जहन्नम की घाटियों में डाल देगी और जहन्नम पर बाल से बारीक और तल्वार की धार से ज़ियादा तेज़ पुल है और उस पर कांटे होंगे, लोग उस पर बिजली की चमक और तेज़ हवा की त़रह़ गुज़रेंगे।[2]

सूरे इस्राफ़ील की ह़क़ीक़त

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीनो आस्मान को पैदा फ़रमाया तो फिर सूर को पैदा फ़रमाया और इस्राफ़ील को दिया वोह इसे मुंह में रखे अ़र्श की त़रफ़ निगाह जमाए खड़ा है कि कब उसे सूर फूंकने का हुक्म मिलता है। अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! सूर क्या है ? आप ने फ़रमाया : वोह बैल का एक सींग है। मैं ने कहा : वोह कैसा है ? आप ने फ़रमाया : बहुत बड़े दाइरे वाला है, क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है उस के दाइरे का क़ुत्र ज़मीन और आस्मान की चौड़ाई के बराबर है, उसे तीन मरतबा फूंका जाएगा, पहले घबराहट के लिये, दूसरे मौत के लिये और तीसरी मरतबा क़ब्रों से उठने के लिये, फिर रूहें ऐसे निकलेंगी जैसे शहद की मक्खियां। वोह ज़मीनो आस्मान के ख़ला को पुर कर देंगी और नाक के रास्ते जिस्मों में दाख़िल हो जाएंगी, फिर फ़रमाया : सब से पहले मेरी क़ब्र शक़ होगी।[3]

1.....या'नी तक़्सीम होते वक़्त। **इल्मिय्या**

2.....مسند احمد، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، ۹/۴۱۵، الحديث ۲۴۸۴۷

3.....موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب الاهوال، باب القيامة، ۶/۱۵۶، الحديث ۵۴

दूसरी रिवायत में है : तब **अल्लाह** तआला जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफ़ील को ज़िन्दा करेगा वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की तरफ़ आएंगे, उन के साथ बुराक़ और जन्नती लिबास होंगे, फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर शक़ होगी और आप जिब्रीले अमीन को देख कर फ़रमाएंगे कि येह कौन सा दिन है ? जिब्राईल अ़र्ज़ करेंगे : येह रोज़े क़ियामत है, येह मुसीबत का दिन है, येह सख़्ती का दिन है। आप फ़रमाएंगे : ऐ जिब्रील ! **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी उम्मत के साथ कैसा सुलूक किया है ? जिब्रील अ़र्ज़ करेंगे : आप को बिशारत हो कि सब से पहले शख़्स आप हैं जिन की क़ब्र शक़ हुई है।[1]

हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : ऐ जिन्नो इन्स ! मैं ने तुम्हें नसीहत की थी, लो तुम्हारे नामए आ'माल में तुम्हारे आ'माल दर्ज हैं, जो अपना सहीफ़ा अच्छा पाए वोह **अल्लाह** की हम्द करे और जो इसे बेहतर न पाए वोह अपने आप को मलामत करे।[2]

हज़रते यह्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मन्क़ूल है कि इन्हों ने अपनी मजलिस में येह आयात सुनीं :

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾[3]

उस दिन हम परहेज़गारों को रह़मान की त़रफ़ जम्अ़ करेंगे वफ़्द की सूरत में और हम मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ प्यासा हांकेंगे।

या'नी परहेज़गार सुवार हो कर **अल्लाह** की बारगाह में हाज़िर होंगे और मुजरिम पैदल और प्यासे जहन्नम में जाएंगे, तो आप ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! नेकी और भलाई में पेश पेश रहो। कल तुम ह़श्र के दिन क़ब्रों से उठाए जाओगे और मुख़्तलिफ़ सम्तों से फ़ौज दर फ़ौज आओगे, **अल्लाह** के सामने अकेले अकेले खड़े होगे और तुम से एक एक ह़र्फ़ का सुवाल किया जाएगा, नेक लोग **अल्लाह** की बारगाह में सुवार हो कर गुरौह दर गुरौह आएंगे, बदकारों को पैदल और प्यासा लाया जाएगा और लोग जमाअ़त दर जमाअ़त जहन्नम में दाख़िल होंगे। ऐ भाइयो !

---

1 ......تنبيه الغافلين للسمرقندى ، باب اهوال القيامة و افزاعها، ص٢٨، الحديث٤٩

2 ......الفردوس الاخبار، ٥/٢٥٥، الحديث ٨١١١ ملتقطا

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम परहेज़गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे। (پ١٦، مريم: ٨٥،٨٦)

तुम्हारे आगे एक ऐसा दिन है जो तुम्हारे साल व माह के अन्दाज़ों के मुताबिक़ पचास हज़ार बरस का है जो हलचल मचाने वाला और भाग दौड़ का दिन है जिस दिन लोग ख़ालिके काइनात की बारगाह में खड़े होंगे जो हसरत, अफ़्सोस, नुक्ता चीनी, मुहासबा, चीख़ो पुकार, मुसीबत, सख़्ती और दोबारा ज़िन्दा होने का दिन है जिस दिन इन्सान अपने किये हुवे आ'माल देखेगा। अफ़्सोस ! पछतावे का दिन, जिस दिन बा'ज़ चेहरे सफ़ेद और बा'ज़ सियाह होंगे, जिस दिन किसी को माल और अवलाद फ़ाइदा नहीं देगी मगर जो क़ल्बे सलीम ले कर आएगा वोही फ़ाइदा पाएगा, जिस दिन ज़ालिमों को मा'ज़िरत कोई फ़ाइदा नहीं देगी और उन के लिये ला'नत और बुरा ठिकाना होगा।

हज़रते मुक़ातिल बिन सुलैमान رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि क़ियामत के दिन मख़्लूक़ सो बरस कामिल ख़ामोश रहेगी और लोग सो बरस तक तारीकियों में हैरानो परेशान रहेंगे और सो बरस वोह एक दूसरे पर चढ़ दौड़ेंगे, रब के हां झगड़े करेंगे, क़ियामत के दिन की त़वालत पचास हज़ार बरस की होगी मगर मोमिन मुख़्लिस पर ऐसे गुज़रेगा, जितना हल्की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने में वक़्त सर्फ़ होता है।

फ़रमाने नबवी है कि बन्दे के क़दम उस वक़्त तक नहीं हिलेंगे जब तक कि उस से चार चीज़ों का सुवाल नहीं कर लिया जाएगा, उस ने अपनी उ़म्र कैसे सर्फ़ की, अपने आप को किस चीज़ में मसरूफ़ रखा, अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया और दौलत कैसे कमाई और कैसे ख़र्च की है ?[1]

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رضی اللہ تعالٰی عنہما) से मरवी है : हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने हर एक नबी को क़बूल होने वाली एक एक दुआ़ अ़ता फ़रमाई थी, उन सब ने अपनी अपनी वोह दुआ़ दुन्या में मांग ली मगर मैं ने अपनी दुआ़ को क़ियामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये मह़फ़ूज़ रख लिया है।[2]

ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की हुरमत व तौक़ीर के तुफ़ैल हमें इन की शफ़ाअ़त से मह़रूम न फ़रमा, وصلی اللہ علیہ وعلٰی آلہ وصحبہ وسلم

---

1 ......مسند البزار، ٧/٨٧، الحديث ٢٦٤٠ و المعجم الكبير، ٢٠/٦٠، الحديث ١١١

2 ......شعب الايمان، الرابع عشر من شعب الايمان...الخ، فصل في براءة...الخ، ٢/١٨١، الحديث ١٤٨٨

बाब 65

जहन्नम व मीज़ान

अगर्चे जहन्नम और मीज़ान का ज़िक्र हम पहले भी कर चुके हैं, अब दोबारा इस का ज़िक्र इस लिये कर रहे हैं कि शायद ग़ाफ़िल व बेकार दिल इस दोबारा ज़िक्र से कुछ मज़ीद इस्तिफ़ादा कर सकें, और बार बार ज़िक्र करने की ज़रूरत इस लिये भी पेश आई कि **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमान की इत्तिबाअ़ हो जाए क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने भी कुरआने मजीद में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर इस का ज़िक्र फ़रमाया है और जहन्नम और मीज़ान के अह़वाल की हौलनाकियों को बहुत अ़ज़ीम क़रार दिया है ताकि अ़क़्लमन्दों के दिल इस के ज़िक्र से तम्बीह ह़ासिल करें और जान लें कि दुन्या का कोई दुख दर्द, जहन्नम के मुक़ाबले में कोई ह़ैसिय्यत नहीं रखता और आख़िरत ही उ़म्दा और हमेशा रहने वाली है।

अब हम जहन्नम के ह़ालात का बयान करते हैं, **अल्लाह** तआ़ला हमें अपने लुत्फ़ो अ़ता के तुफ़ैल इस से अमान बख़्शे। (आमीन)

ह़दीस शरीफ़ में है कि जहन्नम सख़्त तारीक है जिस में कोई रोशनी और शो'ला नहीं है, इस के सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े पर सत्तर हज़ार पहाड़ हैं, हर पहाड़ पर सत्तर हज़ार आग की घाटियां हैं, हर घाटी में सत्तर हज़ार दराज़ें हैं, हर दराज़ में आग की सत्तर हज़ार वादियां हैं हर वादी में आग के सत्तर हज़ार मकानात हैं, हर मकान में सत्तर हज़ार आग के घर हैं, हर घर में सत्तर हज़ार सांप और सत्तर हज़ार बिच्छू हैं, हर बिच्छू की सत्तर हज़ार दुमें हैं हर दुम में सत्तर हज़ार मोहरे हैं, हर मोहरे में ज़ह्र के सत्तर हज़ार मटके हैं, जब क़ियामत का दिन होगा, इन पर से पर्दा उठा लिया जाएगा, तब जिन्नो इन्स के दाएं बाएं ग़ुबार का ख़ैमा तन जाएगा, आगे भी ग़ुबार, पीछे भी ग़ुबार और उन के ऊपर भी जहन्नम का धुवां और ग़ुबार होगा, जब वोह इसे देखेंगे तो घुटनों के बल गिर कर पुकारेंगे कि ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! हमें इस से बचा ![1]

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार लगामें डाल कर लाया जाएगा और हर लगाम को सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते पकड़ कर खींच रहे होंगे।[2]

1 ......التذكرة للقرطبى، باب ما جاء ان جهنم تسعر...الخ، ص ٣٧٢ ماخوذًا

2 ......مسلم كتاب الجنة...الخ، باب فى شدة حرنار...الخ، ص ١٥٢٣، الحديث ٢٩ـ (٢٨٤٢)

हदीस शरीफ़ में है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम के फ़िरिश्तों की अज़मत को बयान करते हुवे, जिन के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे इलाही है :

غِلَاظٌ شِدَادٌ (1) *वोह सख़्त और इन्तिहाई मज़बूत होंगे ।*

फ़रमाया : हर फ़िरिश्ते के दो कन्धों का दरमियानी फ़ासिला एक साल का सफ़र होगा और उन में इतनी त़ाक़त होगी कि अगर वोह उस हथोड़े से जो उन के हाथों में होगा किसी पहाड़ पर एक ज़र्ब लगाएं तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाए और वोह हर ज़र्ब से सत्तर हज़ार जहन्नमियों को जहन्नम की गहराइयों में गिराएंगे ।(2)

फ़रमाने इलाही है :

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ (3) *उस पर उन्नीस फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं।*

इस इरशाद से मुराद जहन्नमियों पर मुतअ़य्यन फ़िरिश्तों के सरदार हैं वरना जहन्नम के फ़िरिश्तों की ता'दाद **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता ।

फ़रमाने इलाही है कि ''तेरे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता ।''(4)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से जहन्नम की वुस्अ़त के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मैं नहीं जानता कि जहन्नम कितना वसीअ़ व अ़रीज़ है लेकिन हम इतना जानते हैं जहन्नम पर मुतअ़य्यन फ़िरिश्तों में से हर एक इतना अ़ज़ीम है कि इन के कान की लौ और कन्धे का दरमियानी फ़ासिला सत्तर साल के सफ़र के बराबर है और जहन्नम में पीप और ख़ून की वादियां बहती हैं ।

तिर्मिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है कि जहन्नम की दीवारों की चौड़ाई चालीस साल के सफ़र के बराबर है ।(5)

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम्हारी येह आग जहन्नम की आग के सत्तरवें हिस्से की गर्मी के बराबर गर्म है, सहाबए किराम ने अ़र्ज़ की :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सख़्त कर्रे (त़ाक़तवर फ़िरिश्ते) । (پ۲۸، التحریم:٦)

2.....حلية الاولياء ، كعب الاحبار، ٥/٤٠٥، الحديث ٧٥٣١ و التخويف من النار والتعريف بحال دار البوار لابن رجب الحنبلى، ص٢٢٦

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस पर उन्नीस दारोग़ा हैं । (پ۲۹، المدثر:٣٠)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता । (پ۲۹، المدثر:٣١)

5.....ترمذی ، كتاب صفة جهنم ، باب ما جاء فی صفة شراب أهل النار، ٤/٢٦٣، الحديث ٢٥٩٣

या रसूलल्लाह ! येह भी काफ़ी गर्म है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम की आग इस की गर्मी से उन्हत्तर हिस्से ज़ियादा गर्म है।[1]

फ़रमाने नबवी है कि अगर जहन्नमियों में से कोई जहन्नमी अपनी हथेली दुन्या में निकाल दे तो उस की गर्मी से दुन्या जल जाए और जहन्नम के फ़िरिश्तों में से कोई फ़िरिश्ता दुन्या में ज़ाहिर हो और लोग उसे देख लें तो उस के जिस्म पर ग़ज़बे इलाही के बे इन्तिहा आसार देख कर दुन्या के सब लोग हलाक हो जाएं।[2]

मुस्लिम वग़ैरा की ह़दीस है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबा के साथ बैठे हुवे थे कि आप ने धमाका सुना, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो येह क्या है ? हम ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** और उस का रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने फ़रमाया : येह उस पथ्थर के जहन्नम की गहराई में गिरने की आवाज़ है जो आज से सत्तर साल पहले जहन्नम में गिराया गया था और वोह अब उस की गहराई तक पहुंचा है।[3]

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि जहन्नम को बहुत याद किया करो क्यूंकि इस की गर्मी शदीद, इस की गहराई बहुत बई़द और इस के हथोड़े लोहे के हैं।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाया करते थे कि जहन्नम अपने रहने वालों को इस त़रह़ उचक लेगी जैसे परन्दे दानों को उचक लेते हैं, और आप से इस फ़रमाने इलाही :

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ۝۱۲ [4]

और जब वोह उन्हें दूर से देखेगी तो वोह उस से गुस्से से भरी हुई आवाज़ सुनेंगे।

के मा'ना दरयाफ़्त किये गए कि क्या जहन्नम की भी आंखें हैं ? तो आप ने फ़रमाया : हां ! तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान नहीं सुना कि जो अ़मदन किसी झूटी बात

---

1 ......مسلم، كتاب الجنة...الخ، باب فى شدة حرنار...الخ، ص ١٥٢٣، الحديث ٣٠ـ (٢٨٤٣)

2 ......التذكرة للقرطبى، باب ما جاء فى صفة جهنم...الخ، ص ٣٨١

3 ......مسلم كتاب الجنة...الخ، باب فى شدة حرنار...الخ، ص ١٥٢٣، الحديث ٣١ـ (٢٨٤٤)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना। (پ١٨، الفرقان:١٢)

को मेरी त़रफ़ मन्सूब करता है वोह अपना ठिकाना जहन्नम की दो आंखों के दरमियान समझे । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया कि क्या जहन्नम की भी आंखें हैं ? तो आप ने फ़रमाया : क्या तुम ने येह फ़रमाने इलाही नहीं सुना ?[1]

इस रिवायत की वोह ह़दीस भी ताईद करती है जिस में है कि जहन्नम से गर्दन निकलेगी, जिस की दो आंखें देखने के लिये और बोलने के लिये ज़बान होगी, वोह कहेगी कि आज मैं हर उस शख़्स पर मुक़र्रर की गई हूं जो **अल्लाह** तआ़ला के साथ शरीक ठहराता था और वोह उन्हें उस परन्दे से भी ज़ियादा तेज़ी से देख लेगी जो तिल पसन्द करता है और ज़मीन पर उसे ढूंढ लेता है ।[2]

मीज़ान जिस में लोगों के आ'माल तोले जाएंगे, उस के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस का नेकियों का पल्ला नूर का और बुराइयों वाला पल्ला ज़ुल्मत का है ।[3]

तिर्मिज़ी की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जन्नत अ़र्शे इलाही के दाईं और जहन्नम बाईं जानिब रखी जाएगी, नेकियों का पलड़ा दाईं और बुराइयों का पलड़ा उस के बाईं त़रफ़ होगा लिहाज़ा नेकियों का पलड़ा जन्नत की मुक़ाबिल सम्त में और बुराइयों का पलड़ा जहन्नम के मुक़ाबिल होगा ।[4]

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाते थे कि नेकियां और बुराइयां ऐसे तराज़ू में तोली जाएंगी, जिस के दो पलड़े और ज़बान होगी । आप फ़रमाया करते थे : जब **अल्लाह** तआ़ला बन्दों के आ'माल तोलने का इरादा फ़रमाएगा तो उन्हें जिस्मों में तब्दील फ़रमा देगा और फिर क़ियामत के दिन उन्हें तोला जाएगा ।

1......جامع الاصول فی احادیث الرسول، الکتاب التاسع، الباب الثالث، الفصل الاول، الفرع الثانی فی صفة النار، نوع سادس، ١٠/٤٧٦،تحت الحدیث ٨٠٦٥ والتذکرة للقرطبی، باب ما جاء فی شکوی النار و کلامها...الخ، ص٣٨٤

2......التذکرة للقرطبی، باب ماجاء فی شکوی النار و کلامها...الخ، ص٣٨٤ وجامع الاصول فی احادیث الرسول، الکتاب التاسع ، الباب الثالث،الفصل الاول، الفرع الثانی فی صفة النار، نوع سادس، ١٠/٤٧٦،تحت الحدیث ٨٠٦٥

3......التذکرة للقرطبی، بیان کیفیة المیزان...الخ، ص٣٠٢

4......نوادر الاصول ، الاصل الرابع فی أدب الانتعال، ١/٣٥

बाब 66

मज़म्मते तकब्बुर व ख़ुदबीनी

अल्लाह तआ़ला तुम को और मुझ को दुन्या और आख़िरत में भलाई की तौफ़ीक़ दे, ख़ूब ग़ौर कर लो कि तकब्बुर और ख़ुदबीनी फ़ज़ाइल से दूर कर देते हैं और रज़ाइल के हुसूल का ज़रीआ़ बनते हैं और तेरी रिज़ालत के लिये इतना ही काफ़ी है कि तकब्बुर तुझे नसीहत सुनने नहीं देता और तू अच्छी आ़दतों के क़बूल करने से पसो पेश करता है, इसी लिये दानिशमन्दों ने कहा है कि हया और तकब्बुर से इल्म ज़ाएअ़ हो जाता है, इल्म तकब्बुर के लिये मुसीबत है जैसे कि बुलन्दो बाला इमारतों के लिये सैलाब मुसीबत होता है।

फ़रमाने नबवी है : वोह शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा जिस के दिल में एक दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा।(1)

फ़रमाने नबवी है : जो तकब्बुर की वज्ह से अपना कपड़ा घसीटते हुवे चलता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।(2)

दानाओं का क़ौल है कि तकब्बुर और ख़ुदबीनी की वज्ह से मुल्क हमेशा नहीं रहता और **अल्लाह** तआ़ला ने भी तकब्बुर का फ़साद के साथ बयान फ़रमाया है

चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًاؕ (3)

येह आख़िरत का घर हम उन लोगों को अ़ता करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर और फ़साद नहीं चाहते।

और फ़रमाने इलाही है :

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ (4)

अलबत्ता मैं उन लोगों से जो ज़मीन में तकब्बुर और फ़साद करते हैं अपनी निशानियों को फेर लूंगा।

---

1 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الکبر، ۳/۴۰۲، الحدیث ۲۰۰۵

2 ......بخاری، کتاب اللباس، باب قول اللّٰہ تعالٰی قل من حرم...الخ، ۴/۴۵، الحدیث ۵۷۸۳

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद। (پ۲۰، القصص: ۸۳)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ۹، الاعراف:۱۴۶)

एक दाना का क़ौल है कि जब मैं किसी मुतकब्बिर को देखता हूं तो उस के तकब्बुर का जवाब तकब्बुर से देता हूं।

कहते हैं कि इब्ने अ़वाना इन्तिहाई मुतकब्बिर आदमी था, उस ने एक मरतबा अपने ग़ुलाम से कहा : मुझे पानी पिलाओ ! ग़ुलाम बोला : हां ! इब्ने अ़वाना येह सुन कर चिल्लाया कि "हां" तो वोह कहे जिसे "ना" कहने का इख़्तियार हो, येह कह कर उसे त़मांचे मारे और उस ने मिज़्रेअ़ को बुला कर उस से बात चीत की, जब गुफ़्त्गू से फ़ारिग़ हुवा तो पानी मंगवा कर कुल्ली की ताकि उस से गुफ़्त्गू की नजासत दूर हो जाए।

और कहा गया है कि फ़ुलां ने ख़ुद को तकब्बुर की उस सीढ़ी पर पहुंचा दिया है कि अगर वोह गिर गया तो फिर टूट फूट जाएगा।

जाहिज़ का क़ौल है कि क़ुरैश में बनू मख़्ज़ूम और बनू उमय्या का तकब्बुर मश्हूर था जब कि अ़रब में बनू जा'फ़र बिन किलाब और बनू ज़ुरारा बिन अ़दी का तकब्बुर मश्हूर था और अकासिरा[1] लोगों को अपना ग़ुलाम तसव्वुर करते थे और ख़ुद को उन का मालिक तसव्वुर करते थे।

बनू अ़ब्दुद्दार क़बीले के एक आदमी से कहा गया कि तुम ख़लीफ़ा के पास क्यूं नहीं आते ? वोह बोला : मैं इस बात से डरता हूं कि वोह पुल मेरे इ़ज़्ज़तो एह़तिराम को नहीं उठा सकेगा।

ह़ज्जाज बिन अरत़ात से कहा गया : क्या वज्ह है कि तुम जमाअ़त में शामिल नहीं होते, उस ने जवाब दिया कि मैं दुकानदारों के क़ुर्ब से घबराता हूं।

और येह भी कहा गया है कि वाइल बिन ह़ुज्र ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हां आया और आप ने उसे ज़मीन का एक टुकड़ा दिया और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया कि इसे वोह ज़मीन दिखा दो और लिख भी दो ! चुनान्चे, ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शदीद गर्मी के आ़लम में उस के साथ रवाना हुवे, वोह ऊंटनी पर सुवार हो गया और आप पैदल चलने लगे, जब उन्हें गर्मी ने निहायत तंग किया तो उन्हों ने उसे कहा कि मुझे अपने पीछे ऊंटनी पर बिठा लो। उस ने कहा : मैं तुम्हें अपनी ऊंटनी पर नहीं बिठाऊंगा क्यूंकि मैं उन बादशाहों में से नहीं जो लोगों को अपने पीछे ऊंटनियों पर सुवार कर लेते हैं।

आप ने फ़रमाया : मैं नंगे पाउं हूं मुझे अपने जूते ही दे दो, वाइल बोला : ऐ अबू सुफ़्यान के बेटे ! मैं बुख़्ल की वज्ह से नहीं बल्कि इस वज्ह से तुम्हें अपने जूते नहीं देता कि मैं इस बात को

1.....ईरान के सलात़ीन जो किस्रा से मौसूम थे।

अच्छा नहीं समझता कि यमन के बादशाहों को येह ख़बर मिले कि तुम ने मेरे जूते पहने हैं अलबत्ता तुम्हारी इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये इतना कर सकता हूं कि तुम मेरी ऊंटनी के साए में चलते रहो। कहते हैं कि उस ने अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़माना पाया और वोह आप के दौरे हुकूमत में एक दफ़्आ़ आप के हां आया तो आप ने उसे अपने साथ तख़्त पर बिठाया और गुफ़्तगू की।

मसरूर बिन हिन्द ने एक आदमी से कहा कि तुम मुझे पहचानते हो ? वोह बोला कि नहीं ! मसरूर ने कहा मैं मसरूर बिन हिन्द हूं, उस आदमी ने कहा : मैं तुझे नहीं पहचानता, मसरूर चिल्ला कर बोला : ख़ुदा उसे ग़ारत करे जो चांद को नहीं पहचानता।

ऐसे ही मुतकब्बिरों के बारे में शाइ़र ने कहा है :

قولا لاحمق يلوى التيه اخدعه لو كنت تعلم ما فى التيه لم تته

التيه مفسدة للدين منقصة للعقل مهلكة للعرض فانتبه

《1》......उस बे वुकूफ़ से कह दो कि जो तकब्बुर से अपने सुरीन मटका कर चल रहा है अगर तुझे मा'लूम हो जाए कि इन में क्या है तो तू हैरान न हो।

《2》......तकब्बुर दीन का फ़साद, अ़क़्ल की कमी का बाइ़स और इ़ज़्ज़त की हलाकत है, इस से ख़बरदार रह।

और कहा गया है कि हर कमीना आदमी तकब्बुर करता है और हर बुलन्द मर्तबा आदमी इन्किसारी को अपनाता है।

फ़रमाने नबवी है कि तीन चीज़ें हलाक करने वाली हैं : दाइमी बुख़्ल, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी और इन्सान का ख़ुद को बहुत बड़ा समझना।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो इन्हों ने अपने बेटों को बुला कर फ़रमाया : मैं तुम्हें दो चीज़ों का हुक्म देता हूं और दो चीज़ों से रोकता हूं मैं तुम्हें शिर्क और तकब्बुर से रोकता हूं और لَا اِلٰهَ اِلَّا الله पढ़ने का हुक्म देता हूं क्यूंकि ज़मीनो आस्मान और इन में

(1)......شعب الايمان، الحادى عشر من شعب الايمان...الخ، ١/٤٧١، الحديث ٧٤٥

मौजूद सब अश्या एक पलड़े में और येह कलिमा दूसरे पलड़े में रख दिया जाए तब भी येह कलिमा भारी रहेगा और अगर आस्मानो ज़मीन एक दाइरे में रख दिये जाएं और येह कलिमा उन के ऊपर रख दिया जाए तो वोह उन्हें दो टुकड़े कर देगा और तुम्हें سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ने का हुक्म देता हूं क्यूंकि येह कलिमा हर चीज़ की नमाज़ है[1] और इसी की वज्ह से हर चीज़ को रिज़्क़ दिया जाता है।[2]

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है : उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी है जिस को अल्लाह तआ़ला ने किताब का इल्म दिया और वोह मुतकब्बिर हो कर नहीं मरा।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए बाज़ार से गुज़रे, आप से किसी ने कहा कि आप को लकड़ियों का गठ्ठा उठाने की क्या ज़रूरत पेश आ गई है हालांकि आप को इन की ज़रूरत नहीं है, आप ने फ़रमाया : मैं ने चाहा लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठा कर बाज़ार से गुज़रू ताकि मेरे दिल में से तकब्बुर निकल जाए।

तफ़्सीरे कुरतुबी में फ़रमाने इलाही :

وَلَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ[3] *और वोह औ़रतें अपने पैर ज़मीन पर न मारें।*

के येह मा'ना हैं कि वोह इज़्हारे ज़ीनत और लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने के लिये अगर ऐसा करें तो येह उन के लिये ह़राम है और इसी त़रह़ जो शख़्स तकब्बुर के त़ौर पर अपना जूता ज़मीन पर ज़ोर ज़ोर से मार कर चलता है तो येह भी ह़राम है क्यूंकि इस में सरासर तकब्बुर ही तकब्बुर है।

1.....या'नी इ़बादत है। **इल्मिय्या**

2.....مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٢/٦٩٥، الحديث ٧١٢٣

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और (औ़रतें) ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें। (پ١٨، النور: ٣١)

बाब 67

यतीम से भलाई और इस पर ज़ुल्म से एहतिराज़

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है कि मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में ऐसे होंगे और फिर आप ने शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली को थोड़ा सा खोल कर उन की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।[1]

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं और यतीम की परवरिश करने वाला, चाहे वोह यतीम उस का अ़ज़ीज़ हो या कोई ग़ैर, जन्नत में ऐसे होंगे जैसे येह दो उंगलियां, और मालिक ने अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली की त़रफ़ इशारा किया।[2]

बज़्ज़ाज़ की ह़दीस है कि जिस ने किसी यतीम की परवरिश की, चाहे वोह यतीम उस का अ़ज़ीज़ ही क्यूं न हो, पस वोह और मैं जन्नत में ऐसे होंगे जैसे येह दोनों उंगलियां मिली हुई हैं और जिस ने तीन बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में होगा और उसे राहे ख़ुदा में रोज़ादारों और नमाज़ी मुजाहिद के बराबर सवाब मिलेगा।[3]

इब्ने माजा शरीफ़ की ह़दीस है कि जिस शख़्स ने तीन यतीमों की परवरिश की ज़िम्मेदारी उठा ली वोह उस शख़्स की त़रह़ सवाब पाएगा, जो रात को इ़बादत करता है और दिन को रोज़ा रखता है और राहे ख़ुदा में जिहाद करने के लिये तल्वार ले कर निकल खड़ा होता है, मैं और वोह जन्नत में ऐसे दो भाई होंगे जैसे येह दो उंगलियां मिली हुई हैं, फिर आप ने अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली को मिलाया।[4]

तिर्मिज़ी ने ब सनदे सह़ीह़ रिवायत की है कि जिस शख़्स ने किसी मुसलमान यतीम की खाने पीने के मुआ़मले में कफ़ालत की तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में भेजेगा मगर येह कि वोह कोई ऐसा गुनाह करे जो लाइक़े बख़्शिश न हो।[5]

---

1 ......بخاری، کتاب الطلاق ، باب اللعان ، ٤٩٧/٣، الحدیث ٥٣٠٤

2 ......مسلم ، کتاب الزھد و الرقائق ، باب الاحسان الی الارملة...الخ ، ص١٥٩٢، الحدیث ٤٢ـ (٢٩٨٣)

3 ......مسند البزار، ١١٦/١٧، الحدیث ٩٦٨٩ و الترغیب و الترھیب ، کتاب النکاح، الترغیب فی النفقة...الخ ، فصل (٨) ، ٣٥/٣ ، الحدیث٣٠٥٧

4 ......ابن ماجه، کتاب الادب، باب حق الیتیم ، ١٩٤/٤، الحدیث ٣٦٨٠

5 ......ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی رحمة الیتیم...الخ ، ٣٦٨/٣، الحدیث١٩٢٤

तिर्मिज़ी की ब सनदे ह़सन रिवायत है कि जिस किसी ने यतीम की परवरिश की यहां तक कि वोह अपने पैरों पर खड़ा होने के लाइक़ हो गया तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये जन्नत वाजिब कर देता है।(1)

इब्ने माजा की ह़दीस है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुसलमानों का सब से बेहतर घर वोह है जिस में किसी यतीम से अच्छा सुलूक किया जाता है और एक मुसलमान का बुरा घर वोह है जिस में किसी यतीम को दुख और तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है।(2)

अबू या'ला ने ब सनदे ह़सन रिवायत की है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं पहला शख़्स होऊंगा जिस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खुलेगा मगर मैं एक औ़रत को अपने आगे देख कर पूछूंगा कि तुम कौन हो और मुझ से पहले क्यूं जा रही हो? वोह कहेगी : मैं ऐसी औ़रत हूं जो अपने यतीम बच्चों की परवरिश के लिये घर बैठी रही।(3)

त़बरानी की रिवायत है जिस में एक के सिवा सब रावी सिक़ह हैं और इस के बा वुजूद येह रिवायत मतरूक नहीं है। क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस शख़्स पर अ़ज़ाब नहीं करेगा जिस ने यतीम पर रह़म किया और उस से नर्म गुफ़्त्गू की और उस की यतीमी और कमज़ोरी पर रह़म करते हुवे और अल्लाह तआ़ला के दिये हुवे माल की वज्ह से उसे अपनी पनाह में ले लिया और उस पर ज़ियादती व ज़ुल्म नहीं किया।(4)

इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वग़ैरा की ह़दीस है कि जिस शख़्स ने अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिये किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा तो उसे हर उस बाल के बदले में जो उस के हाथ के नीचे आया, नेकियां मिलेंगी और जिस शख़्स ने किसी यतीम से नेकी की या उस की परवरिश की तो मैं और वोह जन्नत में दो उंगलियों की त़रह़ होंगे।(5)

मुह़द्दिसीन की एक जमाअ़त ने येह ह़दीस रिवायत की है और ह़ाकिम ने इस को सह़ीह़ कहा है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि तेरी आंखों की बीनाई चले जाने, कमर झुक जाने और यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के साथ भाइयों के ना रवा सुलूक करने की वज्ह येह

1 ......مسند احمد، مسند الكوفيين، حديث مالك بن الحارث رضى الله تعالى عنه، ٢٧/٧، الحديث ١٩٠٤٧

2 ......ابن ماجه، كتاب الادب، باب حق اليتيم، ١٩٣/٤، الحديث ٣٦٧٩

3 ......مسند ابى يعلى، ٥/١٠٥، الحديث ٦٦٢١

4 ......المعجم الاوسط، ٢٩٦/٦، الحديث ٨٨٢٨

5 ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابى امامة الباهلى، ٢٧٢/٨، الحديث ٢٢٢١٥

है कि उन के हां एक मरतबा भूका रोज़ेदार यतीम आया, उन्हों ने घर वालों के तआवुन से बकरी ज़ब्ह कर के खाई मगर यतीम को खाना न खिलाया पस अल्लाह तआला ने उन्हें ख़बर दी कि मैं अपनी मख़्लूक़ में से उसे सब से ज़ियादा महबूब रखता हूं जो यतीमों और मिस्कीनों से महब्बत रखता है और उन्हें हुक्म दिया कि खाना तय्यार करो और मिस्कीनों, यतीमों को बुला कर खिलाओ चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा ही किया।(1)

सहीहैन ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेवा, यतीम और मिस्कीन की परवरिश करने वाला ऐसा है जैसे राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला होता है। रावी कहता है : ग़ालिबन आप ने येह भी फ़रमाया कि वोह उस शख़्स की तरह अज्र पाता है जो रातों को इबादत करता है और दिन में रोज़े से रहता है।(2)

इब्ने माजा की हदीस है कि बेवा और मिस्कीन की निगहदाश्त करने वाला मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह है और उस शख़्स की तरह है जो रातों को इबादत करता है और दिन को रोज़ा रखता है।(3)

बुज़ुर्गाने सलफ़ में से एक से मन्कूल है कि मैं इब्तिदाई ज़िन्दगी में आदी शराबी और बदकार था, मैं ने एक दिन किसी यतीम को देखा तो उस से निहायत अच्छा बरताव किया जैसे बाप अपने बेटे से करता है बल्कि उस से भी उम्दा सुलूक किया। जब मैं सोया तो ख़्वाब में देखा कि जहन्नम के फ़िरिश्ते इन्तिहाई बे दर्दी से मुझे घसीटते हुवे जहन्नम की तरफ़ ले जा रहे हैं और अचानक वोह यतीम दरमियान में आ गया और कहने लगा : इसे छोड़ दो ताकि मैं रब से इस के बारे में गुफ़्तगू कर लूं मगर उन्हों ने इन्कार कर दिया, तब निदा आई : इसे छोड़ दो ! हम ने इस यतीम पर रहम करने की वज्ह से इसे बख़्श दिया है, फिर मैं जाग पड़ा और उसी दिन से मैं यतीमों के साथ इन्तिहाई बा वक़ार सुलूक करता हूं।

सादात के खाते पीते घरानों में से एक घर में सय्यिद ज़ादियां रहती थीं, ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि उन का बाप फ़ौत हो गया और वोह कमसिन जानें यतीम और फ़क्रो फ़ाक़ा का शिकार हो गईं यहां तक कि उन्हों ने शर्म की वज्ह से अपना वतन छोड़ दिया, वतन से निकल कर किसी

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثامنة بعد مائتين، اكل مال اليتيم، خاتمة...الخ، ١/٤٨٦ والمستدرك للحاكم، كتا ب التفسير، تفسير سورة يوسف، ٣/٨٨، الحديث ٣٣٨١ و الترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة، الترغيب فى كفالة...الخ، ٣/٢٨٢، الحديث ٣٨٩٢ من كلاهما ماخوذًا

2 ......بخارى، كتاب الادب، باب الساعى على المسكين، ٤/١٠٢، الحديث ٦٠٠٧

3 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الحث على المكاسب، ٣/٧، الحديث ٢١٤٠

शहर की वीरान मस्जिद में ठहर गईं, उन की मां ने उन्हें वहीं बिठाया और ख़ुद खाना लेने के लिये बाहर निकल गई। चुनान्चे, वोह शहर के एक अमीर शख़्स के पास पहुंची जो मुसलमान था और उसे अपनी सारी सर गुज़श्त सुनाई मगर वोह न माना और कहने लगा : तुम ऐसे गवाह लाओ जो तुम्हारे बयान की तस्दीक़ करें तब मैं तुम्हारी इमदाद करूंगा और वोह औ़रत येह कह कर वहां से चल दी कि मैं ग़रीबुल वत़न गवाह कहां से लाऊं ? फिर वोह एक मजूसी के पास आई और उसे अपनी कहानी सुनाई, चुनान्चे, उस मजूसी ने उस की बातों को सह़ीह़ समझ कर अपने यहां की एक औ़रत को भेजा कि इसे और इस की बेटियों को मेरे घर पहुंचा दो, उस शख़्स ने उन की इ़ज़्ज़त और एह़तिराम में कोई दक़ीक़ए फ़िरो-गुज़ाश्त न किया।

जब आधी रात गुज़र गई तो उस मुसलमान अमीर ने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम हो गई है और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सरे मुबारक पर लिवाउल ह़म्द बांधा है और एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल के क़रीब खड़े हैं उस अमीर ने आगे बढ़ कर पूछा : या रसूलल्लाह ! येह मह़ल किस का है ? आप ने फ़रमाया : एक मुसलमान मर्द के लिये है, अमीर ने कहा : मैं ख़ुदा को एक मानने वाला मुसलमान हूं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया कि तुम इस बात के गवाह लाओ कि वाक़ेई तुम मुसलमान हो। वोह बहुत परेशान हुवा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे उस सय्यिदा औ़रत की बात याद दिलाई जिस से उस ने गवाह मांगे थे। अमीर येह सुनते ही अचानक जाग खड़ा हुवा और उसे इन्तिहाई ग़म व अन्दोह ने आ घेरा, वोह उस सय्यिदा औ़रत और उन की बच्चियों की तलाश में निकल खड़ा हुवा, तलाश करते करते उस मजूसी के घर जा पहुंचा और उस से कहा कि येह सय्यिद ज़ादी और इस की बच्चियों को मुझे दे दो मगर मजूसी ने इन्कार कर दिया और बोला : मैं ने इन के सबब अ़ज़ीम बरकतें पाई हैं, अमीर ने कहा : मुझ से हज़ार दीनार ले लो और इन्हें मेरे सिपुर्द कर दो लेकिन उस ने फिर भी इन्कार कर दिया। तब उस अमीर के दिल में उसे तंग करने का ख़याल आया और मजूसी उस की बुरी निय्यत देख कर बोला : जिन्हें तू लेने आया है, मैं उन का तुझ से ज़ियादा ह़क़दार हूं और तू ने ख़्वाब में जो मह़ल देखा है वोह मेरे लिये बनाया गया है, क्या तुझे अपने मुसलमान होने का फ़ख़्र है, ब ख़ुदा ! मैं और मेरे घर वाले उस वक़्त तक नहीं सोए जब तक कि हम सब इस सय्यिदा के हाथ पर इस्लाम नहीं लाए और मैं ने भी तेरी त़रह़ ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है और आप ने मुझ से फ़रमाया : क्या सय्यिद ज़ादी और इस की बेटियां तेरे पास हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : जी हां ! या रसूलल्लाह ! आप ने फ़रमाया : येह मह़ल तेरे और तेरे घर वालों के लिये है। मुसलमान अमीर येह बात सुनते ही वापस लौट गया और **अल्लाह** तआ़ला बेहतर जानता है कि वोह किस ह़िरमान व यास के साथ वापस हुवा होगा।

बाब 68

मज़म्मते अकले हराम

फ़रमाने इलाही है :

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَاۡكُلُوۡۤا اَمۡوَالَكُمۡ بَيۡنَكُمۡ بِالۡبَاطِلِ[1] *और तुम एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।*

इस आयत के मा'ना में इख़्तिलाफ़ है लिहाज़ा इसे सूद, जूआ, ग़सब, चोरी, ख़ियानत, झूटी गवाही और झूटी क़सम खा कर माल हथयाने के मा'नों में लिया गया है, हज़रते इब्ने अब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है : इस से मुराद वोह चीज़ें हैं जो इन्सान नाहक़ हासिल कर लेता है। कहते हैं कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो लोगों ने एक दूसरे के हां कुछ खाना पीना भी ममनूअ़ समझ लिया, तब सूरए नूर की येह आयत नाज़िल हुई।

"तुम पर कोई मुज़ाअक़ा नहीं है कि तुम अपने घरों से और अपने वालिदैन के घरों से खाओ।"[2]

और बा'ज़ ने कहा है कि इस से मुराद ग़लत़ बैअ़ है और हज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस क़ौल से कि "येह आयत मोहूकमात में से है जिस का हुक्म क़ियामत तक बाक़ी रहेगा।" इस से मुराद है कि नाहक़ त़रीक़े से खाना हर उस चीज़ को शामिल है जो ग़लत़ त़रीक़े से हासिल की जाए, चाहे वोह ज़ुल्म कर के ली जाए जैसे ग़सब, ख़ियानत और चोरी वग़ैरा, या लह्वो लइ़ब से हासिल की जाए जैसे जूआ या खेल कूद के ज़रीए़ हासिल करें, या मक्र और धोके से हासिल की जाए जैसे नाजाइज़ त़ौर पर ख़रीदो फ़रोख़्त की जाए और मेरे इस क़ौल की ताईद में बा'ज़ उ़लमा का क़ौल भी है कि येह आयत इन्सान के अपने माल को भी नाजाइज़ त़रीक़ो से ख़र्च करने की मुमानअ़त पर दलालत करती है और दूसरों के माल को मज़्कूरए बाला सूरतों में से किसी सूरत में हासिल करने की भी मुमानअ़त करती है।

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ। (پ٥، النساء: ٢٩)

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और न तुम में किसी पर (मुज़ाअक़ा) कि खाओ अपनी अवलाद के घर या अपने बाप के घर। (پ١٨، النور: ٦١)

और फ़रमाने इलाही : "मगर येह कि तिजारत हो"[1]

इस में इस्तिस्नाए मुन्क़तेअ़ है या'नी तिजारत के ज़रीए़ तुम माल ले सकते हो क्यूंकि तिजारत उस जिन्स में से नहीं है जिस की मुमानअ़त कर दी गई है, ख़्वाह इस को किसी मा'ना पर मह़मूल किया जाए और इस की तावील सबब से करना ताकि इस्तिस्ना मुत्तसिल बन जाए, दुरुस्त नहीं है अगर्चे तिजारत तबादले के अ़क़्द के साथ ख़ास है मगर दूसरे दलाइल की रोशनी में इस का इत़्लाक़ क़र्ज़ व हिबा पर भी होता है और फ़रमाने इलाही : عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ[2] से मुराद येह है कि ख़ुशदिली और जाइज़ त़रीक़ पर हो, खाने का ख़ुसूसी ज़िक्र करना क़ैद लगाने के लिये नहीं है बल्कि सिर्फ़ इस लिये है कि आ़म त़ौर पर खाना ही मक़्सूद होता है, येह बिल्कुल इस त़रह़ है जैसे :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا[3]

इस सिलसिले के दलाइल कसीर और अह़ादीसे मुक़द्दसा में इस के मुतअ़ल्लिक़ वारिद शुदा तम्बीहात बेशुमार हैं जिन में से हम बा'ज़ का ज़िक्र किये देते हैं।

मुस्लिम वग़ैरा में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पाक है, वोह पाक चीज़ों को क़बूल फ़रमाता है और उस ने मोमिनों को वोही हुक्म दिया है जो उस ने रसूलों को दिया है,

चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

یٰۤاَیُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا[4]

ऐ रसूलो ! पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ और अच्छे अ़मल करो।

और दूसरी आयत में फ़रमाया :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ[5]

ऐ मोमिनो हमारे दिये हुवे रिज़्क़ में से पाकीज़ा चीज़ें खाओ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर येह कि कोई सौदा (है)। (پ۵، النساء:۲۹)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** (मगर येह कि कोई सौदा) तुम्हारी बाहमी रज़ामन्दी का हो। (پ۵، النساء: ۲۹)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं। (پ٤، النساء:١٠)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ पैग़म्बरो ! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो। (پ۱۸، المؤمنون: ۵۱)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें। (پ۲، البقرة: ۱۷۲)

फिर आप ने ऐसे आदमी का तज़्किरा फ़रमाया जो तवील सफ़र के बा'द बिखरे बालों और गुबार आलूद चेहरे के साथ आता है और आस्मान की तरफ़ हाथ उठा कर ऐ **अल्लाह** ! ऐ **अल्लाह** ! कहता है हालांकि उस का खाना पीना, लिबास और गिज़ा सब हराम होता है, इस सूरत में उस की दुआ रब्बे जलील कैसे क़बूल फ़रमाएगा ।(1)

तबरानी ने अस्नादे हसन से येह रिवायत की है कि रिज़्क़े हलाल तलाश करना हर मुसलमान पर वाजिब है ।(2)

तबरानी और बैहक़ी की रिवायत है कि फ़राइज़े नमाज़ के बा'द रिज़्क़े हलाल तलब करना भी फ़र्ज़ है ।(3)

तिर्मिज़ी और हाकिम की हदीस है कि जिस ने हलाल खाया या सुन्नत के मुताबिक़ अमल किया और लोग उस के शर से महफ़ूज़ रहे, वोह जन्नत में जाएगा । सहाबए किराम ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह चीज़ तो आज आप की उम्मत में बहुत है, आप ने फ़रमाया : मेरे बा'द कुछ वक़्त ऐसा ही होगा ।(4)

अहमद वग़ैरा ने अस्नादे हसन के साथ रिवायत की है : जब तेरे अन्दर चार चीज़ें हों तो दुन्या की कोताहियां तुझे नुक़्सान नहीं देंगी, अमानत की निगहबानी, रास्त गोई, हुस्ने खुल्क़ और रिज़्क़े हलाल ।(5)

तबरानी की हदीस है : उस के लिये खुश ख़बरी है जिस का कसब उम्दा, बातिन सहीह, ज़ाहिर बा इज़्ज़त और लोग उस के शर से महफ़ूज़ हों, उसे खुश ख़बरी हो जिस ने इल्म के साथ अमल किया, ज़ाइद माल राहे खुदा में ख़र्च किया और ग़ैर ज़रूरी बातें करने से इजतिनाब किया ।(6)

तबरानी में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ सा'द ! हलाल का खाना खा, तेरी दुआएं क़बूल होंगी, क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

---

1 ......مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقة...الخ، ص ٥٠٦، الحديث ٦٥ـ (١٠١٥)

2 ......المعجم الاوسط، ٦/٢٣١، الحديث ٨٦١٠

3 ......المعجم الكبير، ١٠/٧٤، الحديث ٩٩٩٣

4 ......ترمذی، كتاب صفة القيامة، باب ٦٠، ٤/٢٣٣، الحديث ٢٥٢٨

5 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، ٢/٥٩١، الحديث ٦٦٦٤

6 ......المعجم الكبير، ٥/٧١، الحديث ٤٦١٦

की जान है जब आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़्मा डालता है तो इस की वज्ह से उस की चालीस दिन की इबादत क़बूल नहीं होती, जो बन्दा ह़राम से अपना गोश्त बढ़ाता है। (जहन्नम की) आग उस के बहुत क़रीब होती है।(1)

मुस्नदे बज़्ज़ाज़ में ब सनदे मुन्कर रिवायत है कि उस का दीन नहीं जिस में अमानत नहीं और न उस शख़्स की नमाज़ और ज़कात है जिस ने ह़राम का माल पाया और इस में से क़मीस पहन ली, उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी, जब तक कि वोह इसे उतार नहीं देता क्यूंकि शाने इलाही इस चीज़ से बुलन्दो बाला है कि वोह ऐसे शख़्स की नमाज़ क़बूल करे या कोई और अ़मल क़बूल करे कि जिस के जिस्म पर ह़राम का लिबास हो।(2)

अह़मद ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से रिवायत की है : उन्हों ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने दस दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और उस में एक दिरहम ह़राम का था, जब तक वोह कपड़ा उस के जिस्म पर रहता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता, फिर उन्हों ने अपने दोनों कानों में दो उंगलियां दाख़िल कर के फ़रमाया कि अगर मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे न सुना हो तो येह दोनों बहरे हो जाएं।(3)

बैहक़ी की रिवायत है कि जिस ने चोरी का माल ख़रीदा हालांकि वोह जानता है कि येह चोरी का माल है तो वोह भी उस की रुस्वाई और गुनाह में शरीक होगा।(4)

हाफ़िज़ मुन्ज़िरी ने क़ाबिले ह़सन अस्नाद या मौक़ूफ़ सनद के साथ और अह़मद ने ब सनदे जय्यद येह ह़दीस नक़्ल की है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़सम है उस की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है कि तुम में से कोई अपनी रस्सी ले कर पहाड़ की त़रफ़ निकल जाए और लकड़ियां इकठ्ठी कर के पीठ पर लाद कर ले आए और उन्हें बेच कर खाए वोह इस से बेहतर है कि वोह अपने मुंह में ह़राम का लुक़्मा डाले।(5)

---

1. ......المعجم الاوسط، ٥/٣٤، الحديث ٦٤٩٥
2. ......مسند البزار، ٣/٦١، الحديث ٨١٩
3. ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، ٢/٤١٦، الحديث ٥٧٣٦
4. ......شعب الايمان، الباب الثامن والثلاثون...الخ، ٤/٣٨٩، الحديث ٥٥٠٠
5. ......مسند احمد، مسند ابی هريرة، ٣/٦٨، الحديث ٧٤٩٣

इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने हृब्बान ने अपनी सहीह़ में और ह़ाकिम ने येह ह़दीस नक़्ल की है कि जिस ने ह़राम का माल जम्अ़ किया, फिर इसे सदक़ा कर दिया तो उसे कोई अज्र नहीं मिलेगा और उस का गुनाह उसी पर रहेगा।[1]

त़बरानी की ह़दीस है कि जिस ने माले ह़राम ह़ासिल कर के उस से किसी को आज़ाद किया और सिलए रेह़्मी की, येह उस के लिये सवाब की बजाए अ़ज़ाब और गुनाह का मूजिब होगा।[2]

अह़मद वग़ैरा ने येह ह़दीस नक़्ल की है जिस की सनद को बा'ज़ मुह़द्दिसीन ने ह़सन कहा है कि अल्लाह तआ़ला ने जैसे तुम्हारे दरमियान रिज़्क़ तक़्सीम कर दिया है ऐसे ही आ़दात तक़्सीम कर दी हैं।

अल्लाह तआ़ला हर इन्सान को, ख़्वाह वोह दुन्या को अच्छा समझता हो या बुरा, दुन्या देता है और दीन उसे देता है जो दीन को पसन्द करता है और अल्लाह तआ़ला जिसे दीन देता है उसे मह़बूब रखता है, ब ख़ुदा ! बन्दा उस वक़्त तक कामिल मुसलमान नहीं बनता जब तक कि उस की ज़बान और दिल इस्लाम न लाए और उस की ज़बान और दिल से लोग सलामत न रहें और उस वक़्त तक बन्दा मोमिन नहीं बनता जब तक उस के हमसाए उस के कीने और ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ न हों और बन्दा ह़राम की कमाई से जो कुछ ह़ासिल करता है उस में से उस का सदक़ा क़बूल नहीं होता और न ही राहे ख़ुदा में उस को देने से उस के माल में बरकत होती है और जो माल वोह अपने पीछे छोड़ जाता है वोह उस के लिये जहन्नम का सामान होता है, बेशक अल्लाह तआ़ला बुराई से बुराइयों को नहीं मिटाता बल्कि नेकियों से बुराइयों को मिटाता है, बेशक ख़बीस चीज़ से ख़बीस चीज़ नहीं मिटती।[3]

तिर्मिज़ी ने ह़सन, सह़ीह़ और ग़रीब क़रार दे कर येह ह़दीस नक़्ल की है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उन चीज़ों के बारे में पूछा गया जिन की वज्ह से अक्सर लोग जहन्नम में जाएंगे, आप ने फ़रमाया : मुंह और शर्मगाह, और उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया जिन के सबब अक्सर लोग जन्नत में जाएंगे, आप ने फ़रमाया : ख़ौफ़े ख़ुदा और ह़ुस्ने ख़ुल्क़।[4]

1 ......صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب صدقة التطوع، ٤/١٥٢، الجزء الخامس، الحدیث ٣٣٥٦

2 ......الترغیب والترھیب ، کتاب البیوع وغیرھا، الترغیب فی طلب الحلال...الخ ، ٢/٣٥٠، الحدیث ٢٦٨٣ و المعجم الکبیر للطبرانی ، ١٠/١٠٧، الحدیث ١٠١١١

3 ......مسند احمد ، مسند عبداللہ بن مسعود، ٢/٣٣،الحدیث ٣٦٧٢

4 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی حسن الخلق، ٣/٤٠٤، الحدیث ٢٠١١ بالتقدیم والتاخیر

तिर्मिज़ी ने ब सनदे सहीह़ येह ह़दीस रिवायत की है कि बन्दा उस वक़्त तक क़ियामत के दिन नहीं हिलेगा जब तक कि उस से चार चीज़ों का सुवाल नहीं हो जाएगा, उस ने अपनी उ़म्र कैसे पूरी की, अपनी जवानी किन कामों में सर्फ़ की, माल कैसे ह़ासिल किया और कहां ख़र्च किया और अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया ?[1]

बैहक़ी की ह़दीस है कि दुन्या सर सब्ज़ और शीरीं है, जिस शख़्स ने इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाया और इसे सह़ीह़ त़ौर पर ख़र्च किया, अल्लाह तआ़ला उसे इस का सवाब देगा और उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने इस में नाजाइज़ त़रीक़ों से माल कमाया और नाजाइज़ त़रीक़ों से इसे ख़र्च किया, अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम में भेजेगा और उन बहुत से लोगों के लिये जो माल की मह़ब्बत में अल्लाह और उस के रसूल को भूल जाते हैं, क़ियामत के दिन जहन्नम होगा ।[2]

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝ [3]

जब वोह बुझने लगेगी हम उस की सोज़िश और ज़ियादा कर देंगे ।

इब्ने ह़ब्बान ने अपनी सह़ीह़ में येह ह़दीस नक़्ल की है कि जो गोश्त और ख़ून ह़राम के माल से पैदा हुवा उस पर जन्नत ह़राम है और जहन्नम उस की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है ।[4]

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि जो गोश्त माले ह़राम से परवरिश पाता है, आग उस के लिये ज़ियादा मुनासिब है । एक रिवायत में है कि जो गोश्त नाजाइज़ त़रीक़ों से ह़ासिल कर्दा माल से परवरिश पाए, उस के लिये आग ज़ियादा मुनासिब है ।[5]

एक और रिवायत में ब सनदे ह़सन नक़्ल किया गया है कि वोह जिस्म जन्नत में नहीं जाएगा जिस ने ह़राम माल से ग़िज़ा ह़ासिल की हो ।[6]

---

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب فی القیامۃ، ٤/١٨٨، الحدیث ٢٤٢٥

2 ......شعب الایمان، الباب الثامن والثلاثون...الخ، ٤/٣٩٦، الحدیث ٥٥٢٧

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे । (پ١٥، بنی اسرائیل:٩٧)

4 ......صحیح ابن حبان، کتاب الحظر والاباحۃ، ذکر الاخبار بایجاب النار...الخ، ٧/٤٣٦، الحدیث ٥٥٤١

5 ......ترمذی، کتاب السفر، باب ما ذکر فی فضل الصلاۃ، ٢/١١٨، الحدیث ٦١٤

6 ......المعجم الاوسط، ٤/٢٧١، الحدیث ٥٩٦١

बाब 69

मुमानअ़ते सूदख़ोरी

सूदख़ोरी की मुमानअ़त में काफ़ी आयात नाज़िल हुई हैं और बहुत सी अहादीस भी इस सिलसिले में वारिद हुई हैं, चुनान्चे, बुख़ारी और अबू दावूद की ह़दीस है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस्म पर नक़्श गूदने वाले और नक़्श गुदवाने वाले, सूद देने वाले और सूद लेने वाले पर ला'नत की है और कुत्ते की क़ीमत लेने और बदकारियों से मन्अ़ फ़रमाया और तस्वीर बनाने वालों पर ला'नत फ़रमाई है ।[1]

अह़मद, अबू या'ला, सह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा और सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान ने ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की है : इन्हों ने फ़रमाया : सूद लेने वाला, सूद देने वाला, इस पर गवाह बनने वाले, इस की तह़रीर करने वाले पर जब कि उसे मा'लूम हो कि येह तह़रीर सूद के लिये हो रही है, जिस्म पर फूल गूदने वाले, फूल गुदवाने वाले पर जो अपनी ख़ूब सूरती के लिये ऐसा करता है, सदक़े से इन्कार करने वाला और बदवी जो हिजरत के बा'द फिर मुर्तद हुवा, सब मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से मलऊ़न क़रार पाए हैं ।[2]

ह़ाकिम ने ब सनदे सह़ीह़ रिवायत की है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि चार शख़्स ऐसे हैं जिन के लिये अल्लाह तआ़ला ने लाज़िम कर दिया है कि उन्हें जन्नत में दाख़िल नहीं करेगा और न ही वोह उस की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे, शराबी, सूदख़ोर, नाह़क़ यतीम का माल खाने वाला और वालिदैन का ना फ़रमान ।[3]

ह़ाकिम की एक रिवायत है जिसे सह़ीह़ क़रार दिया गया है कि सूद के तिहत्तर दरवाज़े हैं जिन में से सब से कमतर येह है कि जैसे कोई शख़्स अपनी मां से निकाह़ कर ले ।[4]

---

1 ......بخاری، کتاب الطلاق ، باب مهر البغي...الخ ، ۳/۵۰۹، الحديث ۵۳٤۷

2 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن مسعود، ۲/۱۲۱، الحديث ٤۰۹۰

3 ......المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع ، باب اربى الربا...الخ ، ۲/۳۳۸، الحديث ۲۳۰۷

4 ......المستدرك للحاكم ، كتاب البيوع ، باب اربى الربا...الخ ، ۲/۳۳۸، الحديث ۲۳۰٦

बज़्ज़ाज़ ने ब सनदे सहीह़ रिवायत की है कि सूद के कुछ ऊपर सत्तर अक़्साम हैं, इसी त़रह़ शिर्क भी है।(1)

बैहक़ी की रिवायत है कि सूद के सत्तर दरवाज़े हैं और सब से अदना येह है कि इन्सान अपनी मां से बदकारी करे।(2)

त़बरानी कबीर में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह दिरहम जो इन्सान सूद में लेता है, **अल्लाह** के नज़्दीक ह़ालते इस्लाम में तेंतीस33 मरतबा ज़िना करने से भी बदतर है।(3)

इस रिवायत की सनद में इन्क़ित़ाअ़ है और इब्ने अबिदुन्या और बग़वी ने इसे मौक़ूफ़न ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया है और येही सह़ीह़ है और येह ह़दीसे मौक़ूफ़ भी ह़दीसे मरफ़ूअ़ के हुक्म में है क्यूंकि एक सूदी दिरहम का मज़्कूरए बाला ता'दाद में ज़िना करने से भी **अल्लाह** तआ़ला के हां बहुत बड़ा गुनाह होना, वह्य के बिग़ैर मा'लूम होना ना मुमकिन है, गोया कि उन्हों ने येह ह़दीस हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी होगी।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कहना है, सूद के बहत्तर72 गुनाह हैं, इस का सब से अदना गुनाह ह़ालते इस्लाम में किसी का अपनी मां से ज़िना करने के बराबर है और एक सूदी दिरहम कुछ ऊपर तीस मरतबा ज़िना करने से बदतर है और उन्हों ने येह भी कहा कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन हर नेक और बद को खड़े होने की इजाज़त देगा मगर सूदख़ोर खड़ा नहीं होगा लेकिन जैसे वोह शख़्स खड़ा होता है जिसे शैत़ान ने आसेब से बावला कर दिया हो।(4)

अह़मद ने ब सनदे जय्यद ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की है कि मैं तेंतीस33 मरतबा ज़िना करने को एक दिरहम सूद खाने से अच्छा समझता हूं, जब मैं सूद कमाऊं तो **अल्लाह** ही जानता है कि मैं क्या खा रहा हूं।(5)

---

1 ......مسند البزار، ۵/۳۱۸، الحدیث ۱۹۳۵

2 ......شعب الایمان، الباب الثامن و الثلاثون...الخ، ۴/۳۹۴، الحدیث ۵۵۲۰

3 ......کنزالعمال، کتاب البیوع، الباب الرابع فی الربا، ۲/۴۵، الحدیث ۹۷۷۷ و المعجم الکبیر للطبرانی، ۱۱/۱۱۴، الحدیث ۱۱۲۱۶

4 ......شرح السنة، کتاب البیوع، باب وعید آکل الربا، ۴/۲۳۹، الحدیث ۲۰۴۷

5 ......مسند احمد، مسند الانصار، حدیث عبداللّٰه بن حنظلة...الخ، ۸/۲۲۳، الحدیث ۲۲۰۱۷

अह्मद ने ब सनदे सहीह और तबरानी ने येह हदीस नक्ल की है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन्सान का जान बूझ कर एक दिरहम सूद खाना तेंतीस33 मरतबा ज़िना करने से बदतर है।(1)

इब्ने अबिद्दुन्या और बैहक़ी की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम को खुत्बा दिया और सूद और इस की बुराइयां बयान करते हुवे फ़रमाया कि ऐसा एक दिरहम जिसे आदमी ब तौरे सूद लेता है, **अल्लाह** तआला के हां इन्सान के तेंतीस मरतबा ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है और सब से बड़ा सूद मुसलमान के माल में से कुछ लेना है।(2)

तबरानी ने सग़ीर और औसत में रिवायत की है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने नाजाइज़ तौर पर किसी ज़ालिम की इआनत की ताकि वोह किसी का माल दबा ले तो ऐसा शख़्स **अल्लाह** और उस के रसूल की ज़िम्मेदारी से बरी है और जिस ने एक दिरहम सूद खाया वोह तेंतीस मरतबा ज़िना करने के बराबर है और जिस का गोश्त माले हराम खा कर बढ़ा, जहन्नम ऐसे शख़्स का ज़ियादा मुस्तहिक़ है।(3)

बैहक़ी की रिवायत है कि सूद के कुछ ऊपर सत्तर दरवाज़े हैं, इस का सब से कमतर गुनाह हालते इस्लाम में मां से ज़िना करने के बराबर है और सूद का एक दिरहम तिरपन53 मरतबा ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है।(4)

तबरानी ने औसत में अम्र बिन राशिद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत की है कि सूद के बहत्तर दरवाज़े हैं, इन में से अदना दरवाज़ा (गुनाह) आदमी का अपनी मां से ज़िना करने के बराबर है और सब से बुरा सूद येह है कि इन्सान अपने भाई के माल की तरफ़ हाथ लम्बा करे(5) (सूद में मुसलमान भाई का माल ले)।

इब्ने माजा और बैहक़ी ने अबी मा'शर से, उन्हों ने अबू सईद मक़्बुरी से और उन्हों ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूद में सत्तर गुनाह हैं, सब से अदना गुनाह येह है कि जैसे आदमी अपनी मां से निकाह कर ले।(6)

---

1 ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث عبدالله بن حنظلة...الخ، ٨/٢٢٣، الحديث ٢٢٠١٦

2 ......موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب الصمت و آداب اللسان، باب الغيبة وذمها، ٧/١٢٧، الحديث ١٧٥

3 ......المعجم الاوسط، ٢/١٨٠، الحديث ٢٩٤٤

4 ......شعب الايمان، الرابع والاربعون من شعب...الخ، فصل فيماورد من الاخبار...الخ، ٥/٢٩٩، الحديث ٦٧١٥ والترغيب والترهيب، كتاب الأدب وغيره، الترغيب من الغيبة...الخ، ٣/٣٩٧، الحديث ٤٣٣٨

5 ......المعجم الاوسط، ٥/٢٢٧، الحديث ٧١٥١

6 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ فى الربا، ٣/٧٢، الحديث ٢٢٧٤

ज़िना और सूद का आम हो जाना अज़ाबे इलाही को दा'वत देता है

हाकिम ने सनदे सहीह के साथ हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फलों को बड़ा होने से पहले बेचने से मन्अ फ़रमाया है और फ़रमाया : जब किसी शहर में ज़िना और सूद आम हो जाए तो उन्हों ने गोया खुद ही **अल्लाह** के अज़ाब को दा'वत दे दी है।[1]

अबू या'ला ने सनदे जय्यद के साथ हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की है : उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हदीस बयान करते हुवे फ़रमाया कि किसी क़ौम का ज़िना और सूदख़ोरी ज़ाहिर नहीं होते मगर वोह लोग अज़ाबे इलाही को अपने लिये हलाल कर लेते हैं[2] (या'नी जो क़ौम ज़िना और सूदख़ोरी में मुब्तला है उस ने गोया अज़ाबे इलाही को दा'वत दी है)।

अहमद ने येह हदीस नक़्ल की है : ऐसी कोई क़ौम नहीं जिस में सूद चल निकले मगर वोह क़हूत़ साली में मुब्तला की जाती है और जिस क़ौम में ज़िना की कसरत हो जाती है, **अल्लाह** तआला उसे ख़ौफ़ और क़हूते आम में मुब्तला कर देता है चाहे बारिश ही क्यूं न हो जाए।[3]

अहमद ने एक त़वील हदीस में, इब्ने माजा ने मुख़्तसरन और अस्बहानी ने इस हदीस को बयान किया है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब मुझे मे'राज में सैर कराई गई और हम सातवें आस्मान पर पहुंचे तो मैं ने ऊपर देखा तो मुझे बिजली की कड़क और गरज चमक नज़र आई, फिर मैं ने ऐसी क़ौम को देखा जिन के पेट मकानों की त़रह थे और बाहर से उन के पेटों में चलते फिरते सांप नज़र आ रहे थे, मैं ने पूछा : जिब्रील ! येह कौन हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि येह सूदख़ोर हैं।[4]

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب البيوع، باب اذا ظهر الزنا والربا...الخ ٢/٣٣٩، الحديث ٢٣٠٨

2 ......مسند ابى يعلى، ٤/٣١٤، الحديث ٤٩٦٠

3 ......مسند احمد، مسند الشاميين، حديث عمرو بن العاص، ٦/٢٤٥، الحديث ١٧٨٣٩ و الترغيب والترهيب، كتاب البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٢/٤٠٧، تحت الحديث ٢٨٨٩

मुस्नदे अहमद की रिवायत में ज़िना के बजाए लफ़्ज़ "الرشا" है जिस का मा'ना है रिश्वतें, या'नी जिस क़ौम में रिश्वतें आम हो जाएं। हो सकता है मुतर्जिम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ के पास जो नुस्ख़ा हो उस में "الرشا" के बजाए "الزنا" लिखा हो। واللّٰہ تعالٰی اعلم **इल्मिय्या**

4 ......مسند احمد، مسند ابى هريرة، ٣/٢٦٩، الحديث ٨٦٤٨

अस्बहानी ने हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब मुझे आस्मानों की त़रफ़ मे'राज कराई गई तो मैं ने आस्माने दुन्या में ऐसे आदमियों को देखा जिन के पेट बड़े बड़े घड़ों जैसे थे, उन के पेट झुके हुवे थे और वोह फ़िरऔ़न के पैरूकारो के रास्तों में पड़े हुवे थे और वोह हर सुब्हो शाम जहन्नम के किनारे खड़े हो कर कहते : ऐ **अल्लाह** ! क़ियामत कभी क़ाइम न करना, मैं ने पूछा : जिब्रील ! येह कौन हैं ? जिब्रील ने अ़र्ज़ की, कि येह आप की उम्मत के सूदख़ोर हैं। वोह नहीं खड़े होंगे मगर जैसे वोह शख़्स खड़ा होता है जिसे शैत़ान आसेब से बावला कर देता है। अस्बहानी का क़ौल है कि आले फ़िरऔ़न जो सुब्हो शाम आग पर पेश किये जाते हैं, उन्हें रौंदते हुवे गुज़रेंगे।[1]

त़बरानी ने सनदे सह़ीह़ से रिवायत नक़्ल की है, आप ने फ़रमाया : क़ियामत से पहले ज़िना, सूद और शराब आ़म हो जाएगा।[2]

त़बरानी ने क़ासिम बिन अ़ब्दुल्लाह वर्राक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि मैं ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सियारफ़ा (जहां सूद वग़ैरा का कारोबार होता है) के बाज़ार में देखा, वोह अहले बाज़ार से कह रहे थे ऐ अहले सियारफ़ा ! तुम्हें खुश ख़बरी हो ! उन्हों ने कहा : **अल्लाह** आप को जन्नत की खुश ख़बरी दे, ऐ अबू मुह़म्मद ! आप हमें किस चीज़ की खुश ख़बरी दे रहे हैं ? आप ने कहा : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सियारफ़ा के लिये फ़रमाते सुना है कि उन्हें आग की बिशारत दे दो।[3]

त़बरानी की ह़दीस है कि अपने आप को उन गुनाहों से बचा जिन की मग़फ़िरत नहीं होती ख़ियानत ऐसा ही एक गुनाह है, जो जिस चीज़ में ख़ियानत करता है क़ियामत के दिन उसे उसी के साथ लाया जाएगा, सूदख़ोरी, जो सूद खाता है वोह क़ियामत के दिन पागल आसेब ज़दा उठाया जाएगा, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

---

1 ....الترغیب والترھیب ، کتاب البیوع وغیرھا ، الترھیب من الربا ، ۲/۴۰۷ ، الحدیث ۲۸۹۱

2 ....المعجم الاوسط، ۵/۳۸۶، الحدیث ۷۶۹۵

3 ....الترغیب والترھیب ،کتاب البیوع وغیرھا، الترھیب من الربا، ۲/۴۰۸،الحدیث ۲۸۹۳

जो सूद खाते हैं वोह उस शख़्स की तृरह् खड़े होंगे जिसे शैत़ान आसेब से बावला कर देता है।[(1)]

अस्बहानी की ह़दीस है कि क़ियामत के दिन सूदख़ोर पागल की तृरह् अपने दोनों पहलू खींचता हुवा आएगा, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

"वोह उस शख़्स की तृरह् खड़े होंगे जिसे शैत़ान आसेब से पागल कर देता है।"[(2)]

इब्ने माजा और ह़ाकिम की ह़दीस है : हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो भी सूद से अपना माल बढ़ा लेता है, आख़िरे कार वोह तंगदस्ती का शिकार बनता है।[(3)]

ह़ाकिम ने ब सनदे सह़ीह़ येह ह़दीस नक़्ल की है कि सूद ख़्वाह कितना ही बढ़ जाए आख़िरे कार क़िल्लत पर मुन्तज होता है।[(4)]

अबू दावूद और इब्ने माजा ने ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से, उन्हों ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है (मुह़द्दिसीन ने ह़ज़रते अबू हुरैरा से ह़सन के समाए ह़दीस में इख़्तिलाफ़ किया है, जमहूर का क़ौल है कि समाअ़ साबित नहीं है) हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि उन में कोई भी ऐसा न होगा जो सूद न खाता हो और जो सूद नहीं खाएगा सूद का गुबार उस तक ज़रूर पहुंच जाएगा।[(5)]

अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद ने ज़वाइदुल मुस्नद में येह ह़दीस नक़्ल की है कि क़सम है उस ज़ात की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है, अलबत्ता मेरी उम्मत के लोग बुराइयों में रात गुज़ारेंगे, ऐशो इशरत करेंगे और लह्वो लइ़ब में मश्ग़ूल होंगे, जब सुब्ह़ होगी तो **अल्लाह** की ह़राम कर्दा

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो सूद खाते हैं, क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो। (پ٣، البقرة:٢٧٥)......المعجم الكبير، ١٨/٦٠، الحديث ١١٠

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो। (پ٣، البقرة:٢٧٥)

الترغيب والترهيب، كتاب البيوع وغيرها، الترهيب من الربا، ٢/٤٠٨، الحديث ٢٨٩٤

3......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ فى الربا، ٣/٧٤، الحديث ٢٢٧٩

4...... المستدرك للحاكم، كتاب البيوع، باب الرباوان كثر...الخ، ٢/٣٣٩، الحديث ٢٣٠٩

5...... ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ فى الربا، ٣/٧٤، الحديث ٢٢٧٨

चीज़ों को ह़लाल करने, औ़रतों से गाना बजाना सुनने, शराब पीने, सूद खाने और रेशम पहनने के सबब सुवर और बन्दर बन जाएंगे।[1]

अह़मद और बैहक़ी की ह़दीस है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस उम्मत का एक गुरोह खाने पीने और लह्वो लइब में रात गुज़ारेगा, जब सुब्ह़ करेंगे तो उन की सूरतें मस्ख़ हो चुकी होंगी, वोह बन्दर और ख़िन्ज़ीर होंगे और अलबत्ता वोह ज़मीन में धंसेंगे और उन पर पथ्थर बरसाए जाएंगे यहां तक कि लोग कहेंगे, फ़ुलां घर और फ़ुलां लोग ज़मीन में धंस गए हैं और बिला शुबा उन पर पथ्थरों की बारिश की जाएगी जैसे क़ौमे लूत़ पर की गई थी, उन के क़बाइल पर उन के घरों पर येह इब्तिला उन के शराब पीने, रेशमी लिबास पहनने, गाने बजाने की मह़फ़िलें मुन्अ़क़िद करने, सूद खाने और क़त़ए़ रेह़्मी के सबब होगा और एक ख़स्लत को बयान करना रावी भूल गए।[2]

तंगदस्ती का इलाज

ज़बरदस्त मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد को ख़लीफ़ए बग़दाद मामून रशीद ने अपने हां मदऊ़ किया, त़आ़म के आख़िर में खाने के जो दाने वग़ैरा गिर गए थे, मुह़द्दिस मौसूफ़ चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने लगे : मामून ने ह़ैरान हो कर कहा : ऐ शैख़ ! क्या आप का अभी तक पेट नहीं भरा, फ़रमाया : क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक ह़दीस बयान फ़रमाई है : जो शख़्स दस्तर ख़्वान के नीचे गिरे हुवे टुकड़ों को चुन चुन कर खाएगा वोह तंगदस्ती से बे ख़ौफ़ हो जाएगा। मैं इसी ह़दीसे मुबारक पर अ़मल कर रहा हूं। येह सुन कर मामून बे ह़द मुतअस्सिर हुवा और अपने एक ख़ादिम की त़रफ़ इशारा किया तो वोह एक हज़ार दीनार रूमाल में बांध कर लाया। मामून ने उस को ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد की ख़िदमत में बत़ौरे नज़राना पेश कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ह़दीसे मुबारका पर अ़मल की हाथों हाथ बरकत ज़ाहिर हो गई।

(ثمرات الاوراق ، ج۱، ص ۸)

---

1 ......مسند احمد ، أخبار عبادة بن الصامت ، ۸/۴۲۴، الحديث ۲۲۸۵۴ و مجمع الزوائد ، كتاب الأشربة ، باب فيمن يستحل الخمر، ۵/۱۱۸، الحديث ۸۲۱۵

2 ......شعب الايمان ، التاسع و الثلاثون، من شعب...الخ ، ۵/۱۶، الحديث ۵۶۱۴

बाब 70

हुकूकुल इबाद

हर इन्सान पर येह लाज़िम है कि जब वोह दूसरे से मिले तो उसे सलाम कहे, जब वोह उसे मदऊ करे तो उस की दा'वत क़बूल करे, जब उसे छींक आए तो उस का जवाब दे, जब वोह बीमार हो तो उस की इयादत को जाए, जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े में हाज़िर हो, जब वोह क़सम दिलाए तो उस की क़सम को पूरा करे, जब वोह नसीहत का ख़्वास्तगार हो तो उसे नसीहत करे, उस की अदमे मौजूदगी में उस की पीठ की हिफ़ाज़त करे या'नी उस की ग़ीबत न करे और उस के लिये वोही कुछ पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है और हर वोह चीज़ जिसे वोह अपने लिये ना पसन्द समझता है उस के लिये भी मकरूह समझे।

येह तमाम अहकाम अहादीस में वारिद हुवे हैं चुनान्चे, हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं : आप ने फ़रमाया : तुझ पर मुसलमानों के चार हक़ हैं : इन के नेक की इमदाद कर, बुरे के लिये तलबे मग़फ़िरत कर, इन में से जाने वाले (मरने वाले) के लिये दुआ मांग और इन में से तौबा करने वाले के साथ महब्बत रख।[1]

हज़रते इब्ने अब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस फ़रमाने इलाही : "वोह आपस में रहम करने वाले हैं।"[2] की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि उन के नेक बुरों के लिये, बुरे नेकों के लिये दुआ करते हैं, जब कोई बदकार उम्मते मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के नेक मर्द को देखता है तो कहता है : ऐ **अल्लाह** ! तू ने इसे जो भलाई मर्हमत फ़रमाई है इस में बरकत दे, इसे साबित क़दम रख और हमें इस की बरकतों से नवाज़, और जब कोई नेक किसी बदकार को देखता है तो कहता है : ऐ **अल्लाह** इसे हिदायत दे इस की तौबा क़बूल फ़रमा और इस की लग़्ज़िशों को मुआफ़ फ़रमा दे।

मुसलमान पर मुसलमान का येह भी हक़ है कि वोह जो कुछ अपने लिये पसन्द करता है, दूसरे भाई के लिये भी वोही पसन्द करे और जो चीज़ अपने लिये बुरी समझता है दूसरे मुसलमान के लिये भी उसे बुरा समझे।

---

1 ......فردوس الاخبار، ۱/۲۱۵، الحدیث ۱۵۰۲

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आपस में नर्म दिल। (پ۲۶، الفتح: ۲۹)

हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि एक दूसरे से महब्बत करने और बाहम मशक़्क़त करने में मुसलमानों की मिसाल एक जिस्म जैसी है, जब जिस्म का कोई उ़ज़्व तक्लीफ़ में होता है तो तमाम जिस्म उस के एहसास और बुख़ार में मुब्तला होता है।[1]

हज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं : आप ने फ़रमाया कि मुसलमान, मुसलमान के लिये दीवार की त़रह़ है जिस का एक हिस्सा दूसरे को तक़्विय्यत देता है।[2]

मुसलमान के हुक़ूक़ में येह भी है कि वोह अपनी ज़बान और किसी फ़े'ल से दूसरे मुसलमान को दुख न पहुंचाए।

फ़रमाने नबवी है कि मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें।[3]

एक त़वील ह़दीस है जिस में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को अच्छी आ़दात अपनाने के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म फ़रमाया है, फ़रमाया : अगर तुम येह नहीं कर सकते हो तो लोगों को अपने शर से मह़फ़ूज़ रखो, येह तुम्हारे लिये सदक़ा है जो तुम ने अपनी ज़ात के लिये दिया है।[4]

और फ़रमाया : अफ़्ज़ल मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें।[5]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो मुसलमान कौन है ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** और उस का रसूल बेहतर जानते हैं, आप ने फ़रमाया : मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें। सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : मोमिन कौन है ? आप ने फ़रमाया : जिस ने अपनी त़रफ़ से मुसलमानों को उन के माल और जानों में बे ख़ौफ़ कर दिया, पूछा गया : मुहाजिर कौन है ? आप ने फ़रमाया : जिस ने बुराइयों को छोड़ दिया और उन से किनारा कश रहा।[6]

---

1 ......بخاری، کتاب الأدب، باب رحمة الناس والبهائم، ٤/١٠٣، الحديث ٦٠١١

2 ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب تشبيك الاصابع...الخ، ١/١٨، الحديث ٤٨١

3 ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب المسلم من سلم...الخ، ١/١٥، الحديث ١٠

4 ......بخاری، کتاب العتق، باب ایّ الرقاب افضل، ٢/١٥٠، الحديث ٢٥١٨

5 ......بخاری، کتاب الایمان، باب ایّ الاسلام افضل، ١/١٦، الحديث ١١

6 ......المعجم الاوسط، ٢/٢٥٣، الحديث ٣١٨٨

एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! इस्लाम क्या है ? आप ने फ़रमाया : येह कि तू दिल से अल्लाह को तस्लीम कर ले और तेरे हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें।(1)

ह़ज़रते मुजाहिद رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि जहन्नमियों पर ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी जो तेज़ी से उन का गोश्त ख़त्म कर के उन की हड्डियां नुमायां कर देगी, तब निदा आएगी : ऐ फ़ुलां ! क्या येह ख़ारिश तुझे तक्लीफ़ देती है ? वोह कहेगा : हां ! आवाज़ आएगी, येह मुसलमान को तकालीफ़ देने का तेरे लिये बदला है।

फ़रमाने नबवी है : मैं ने एक ऐसे शख़्स को जन्नत में चलते फिरते देखा है जिस ने मुसलमानों के रास्ते से एक ऐसे दरख़्त को काट दिया था जो उन्हें तक्लीफ़ दिया करता था।(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसा अ़मल बतलाइये जिस से मैं नफ़्अ़ ह़ासिल करूं, आप ने फ़रमाया : मुसलमानों के रास्ते से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ों को दूर किया करो।(3)

फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स मुसलमानों के रास्ते से ऐसी किसी चीज़ को दूर कर देता है जो उन्हें तक्लीफ़ देती है तो अल्लाह तआ़ला इस के बदले में उस के लिये नेकी लिख देता है और जिस के लिये अल्लाह तआ़ला नेकी लिख देता है उस के लिये जन्नत को वाजिब कर देता है।(4)

फ़रमाने नबवी है : किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है कि वोह अपने मुसलमान भाई की त़रफ़ ऐसा इशारा करे जिसे वोह ना पसन्द करता है।(5)

फ़रमाने नबवी है : किसी मुसलमान के लिये येह जाइज़ नहीं है कि वोह किसी मुसलमान को ख़ौफ़ज़दा करे।(6)

नीज़ इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मोमिन की तक्लीफ़ को ना पसन्द फ़रमाता है।(7)

---

1 ......مسند احمد، مسند الشاميين، حديث زيد بن خالد الجهنى، ٥٨/٦، الحديث ١٧٠٢٤

2 ......مسلم، كتاب البر...الخ، باب فضل ازالة الأذى عن الطريق، ص ١٤١٠، الحديث ١٢٩، (١٩١٤)

3 ......المرجع السابق، ص ١٤١١، الحديث ١٣١، (٢٦١٨) راوى ابوبرزه

4 ......مسند احمد، ومن حديث ابى الدرداء عويمر، ٤١٦/١٠، الحديث ٢٧٥٤٩

5 ......الزهد لابن المبارك، ص ٢٤٠، الحديث ٦٨٩ وكشف الخفاء، ٣٣٧/٢، الحديث ٣٠٩٦

6 ......المعجم الاوسط، ٤٥٥/١، الحديث ١٦٧٣

7 ......الزهد لابن المبارك، ص ٢٤١، الحديث ٦٩٢

हज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि लोगों की दो क़िस्में हैं, अगर तेरा मुख़ातब मोमिन है तो उसे ईज़ा न दे और अगर जाहिल है तो उस की जहालत में न पड़ो और बन्दे पर मुसलमान का येह भी ह़क़ है कि वोह हर मुसलमान से तवाज़ोअ़ से पेश आए और तकब्बुर से पेश न आए क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला हर इतराने वाले मुतकब्बिर को ना पसन्द फ़रमाता है।

फ़रमाने नबवी है : **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे वह़्य फ़रमाई है कि तुम तवाज़ोअ़ करो और एक दूसरे पर फ़ख़्र व तकब्बुर न करो, अगर कोई दूसरा तुम से तकब्बुर से पेश आए तो बरदाश्त करो।[1]

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया है :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾ [2]

दर गुज़र को अपनाइये नेकी का हुक्म कीजिये और जाहिलों से मुंह फेर लीजिये।

हज़रते इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर मुसलमान से तवाज़ोअ़ से पेश आते और बेवा और मिस्कीन के साथ चल कर इन की ह़ाजत रवाई करने में आ़र मह़सूस न फ़रमाते और न तकब्बुर से काम लेते।[3]

हुक़ूक़ुल इ़बाद में येह बात भी दाख़िल है कि लोगों की बातें एक दूसरे को न बतलाई जाएं और किसी की बात सुन कर किसी दूसरे को न सुनाई जाए।

फ़रमाने नबवी है कि चुग़ुल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।[4]

ख़लील बिन अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : जो तेरे सामने दूसरे लोगों की चुग़लियां खाता है वोह तेरी चुग़लियां दूसरे लोगों के सामने खाता होगा और जो तुझे दूसरे लोगों की बातें बताता है वोह तेरी बातें दूसरे लोगों को बताता होगा।

---

1 ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب البراءة من الکبر و التواضع، ٤/٤٥٩، الحدیث ٤١٧٩

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो। (پ ٩، الاعراف:١٩٩)

3 ......شعب الایمان، السابع و الخمسون من شعب الإیمان ، باب فی حسن الخلق ، فصل فی لین الجانب و سلامة الصدر، ٦/٢٦٩، الحدیث ٨١١٤ و المعجم الکبیر ، ٨/٢٨٧، الحدیث ٨١٠٣

4 ......بخاری، کتاب الادب، باب مایکره من النمیمة، ٤/١١٥، الحدیث ٦٠٥٦

एक हक़ येह भी है कि गुस्से की हालत में अपने किसी जानने वाले से तीन दिन से ज़ियादा तर्के तअ़ल्लुक़ न करे।

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिये येह जाइज़ नहीं है कि वोह अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करे, दोनों एक दूसरे के सामने आएं, येह इधर मुंह फेर कर गुज़र जाए और वोह उधर मुंह फेरे चला जाए, उन में से बेहतर वोह है जो सलाम करने में पहल करे।(1)

फ़रमाने नबवी है : जिस ने किसी मुसलमान भाई को उस की लग़ज़िश के सबब छोड़ दिया **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत में छोड़ देगा।(2)

इकरमा से मरवी है : **अल्लाह** तआ़ला ने यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : भाइयों से तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र की वज्ह से मैं ने दो आ़लम में तेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया है।

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ात की ख़ातिर कभी किसी से इन्तिक़ाम नहीं लिया, हां जब हुदूदुल्लाह की बात होती थी तो आप **अल्लाह** की रज़ाजूई की ख़ातिर बदला लिया करते थे।(3)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है : कोई शख़्स किसी ग़लती से दर गुज़र नहीं करता मगर उस के बदले में **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त बुलन्द करता है।(4) (या'नी जो शख़्स किसी ग़लती से दर गुज़र करता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त बुलन्द करता है)

फ़रमाने नबवी है कि सदक़े से माल कम नहीं होता, अ़फ़्वो दर गुज़र से **अल्लाह** तआ़ला इन्सान की इ़ज़्ज़त बढ़ाता है और जो शख़्स **अल्लाह** की ख़ुशनूदी के लिये तवाज़ोअ़ करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्द मर्तबा अ़ता फ़रमाता है।(5)

---

1 ......مسلم، کتاب البر...الخ، باب تحریم الھجر...الخ، ص ۱۳۸۵، الحدیث ۲۵۸۔ (۲۵۶۰)

2 ......شعب الایمان، السابع والخمسون من شعب...الخ، فصل فی ترک الغضب...الخ، ۶/۳۱۴، الحدیث ۸۳۱۰

3 ......بخاری، کتاب المحاربین...الخ، باب کم التعزیر والاداب، ۴/۳۵۲، الحدیث ۶۸۵۳

4 ......شعب الایمان، السابع والخمسون من شعب الإیمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع...الخ، ۶/۲۷۴، الحدیث ۸۱۳۴ رواہ ابو ھریرہ مرفوعاً

5 ......مسلم، کتاب البر...الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص ۱۳۹۷، الحدیث ۶۹۔ (۲۵۸۸)

बाब 71

मज़म्मते हवाए नफ़्स व वस्फ़े ज़ोहद

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اَفَرَءَیْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰـهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ (1)

क्या तू ने उस को नहीं देखा कि जिस ने अपनी ख़्वाहिश को मा'बूद बना लिया है और उसे अल्लाह ने इल्म पर गुमराह बना दिया है।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ौल है कि इस से मुराद वोह काफ़िर है जिस ने अल्लाह तआ़ला की जानिब से अ़ताकर्दा किसी हिदायत और दलील के बिग़ैर ख़्वाहिशात को अपना दीन बना लिया है। इस का मत़लब येह है कि वोह ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का पैरू है और वोह हर ऐसा काम करने पर तय्यार हो जाता है जिस की त़रफ़ उस की ख़्वाहिशात इशारा करती हैं और अल्लाह तआ़ला की किताब के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता गोया कि वोह अपनी ख़्वाहिशात की इबादत करता है।

फ़रमाने इलाही है :

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ (2)

और उन की ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ न कर।

और इरशादे रब्बानी है : "और ख़्वाहिश की पैरवी न कर येह तुझे अल्लाह के रस्ते से हटा देगी।"(3)

इसी लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह से दुआ़ मांगा करते : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ ھَوًی مُطَاعٍ وَّشُحٍّ مُتَّبَعٍ.(4) ऐ अल्लाह मैं तुझ से पनाह मांगता हूं उस ख़्वाहिश से जिस की इत़ाअ़त की जाती है और उस बुख़्ल से जिस का इत्तिबाअ़ किया जाता है। और आप ने फ़रमाया कि तीन बातें इन्सान के लिये मोहलिक हैं, इत़ाअ़त कर्दा ख़्वाहिश, इत्तिबाअ़ कर्दा बुख़्ल और इन्सान का अपने आप को बहुत बड़ा समझना और येह इस लिये है कि हर गुनाह का बाइ़स

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहरा लिया और अल्लाह ने उसे बा वस्फ़ इल्म के गुमराह किया। (پ۲۵، الجاثیة: ۲۳)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन की ख़्वाहिशों पर न चल। (پ٦، المائدہ: ٤٩)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी। (پ۲۳، صٓ: ۲٦)

4.....

नफ़्सानी ख़्वाहिशात हैं और येही इन्सान को जहन्नम की त़रफ़ ले जाती हैं।[1] अल्लाह तआ़ला हमें इन से पनाह दे। आमीन !

एक आ़रिफ़ का क़ौल है कि जब दो बातें तेरे सामने हों और तुझे पता न चले कि उन में से कौन सी बात उ़म्दा होगी तो येह देख कि उन दो में से कौन सी बात तेरी ख़्वाहिश के क़रीब है तू उसी को छोड़ दे और दूसरी को पायए तक्मील तक पहुंचा।

इसी नुक्ते की त़रफ़ इशारा करते हुवे इमामे शाफ़ेई رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया है :

اذا حال امرک فی معنیین ولم تدرحیث الخطا والصواب

فخالف هواک فان الهوی یقود النفوس الی ما یعاب

《1》......जब तेरा काम दो बातों के दरमियान ह़ाइल हो और तुझे उन में से अच्छे और बुरे की ख़बर न लगे।

《2》......तो उस बात के मुत़ाबिक़ काम कर जो तेरी ख़्वाहिश के मुख़ालिफ़ हो क्यूंकि ख़्वाहिशात इन्सान को बुरे कामों की त़रफ़ ले जाती हैं।

ह़ज़रते अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि जब तू दो सोचों में घिर जाए तो जो सोच तुझे ज़ियादा पसन्द हो उसे छोड़ दे और जो ना पसन्द हो उसे पसन्द कर ले, इस की वज्ह येह है कि मा'मूली काम आसानी से हो जाएगा, इस में मेह़नत मशक़्क़त नहीं करनी पड़ती, किसी से तआ़वुन की दरख़्वास्त नहीं करनी पड़ती, इस लिये नफ़्से इन्सानी इस के करने का हुक्म देता है और इसी की त़रफ़ इसे उकसाता है मगर मुश्किल काम मुश्किल ही से सर अन्जाम दिया जाता है, तक्लीफ़ उठानी पड़ती है, कोई तआ़वुन नहीं करता, ख़ुद बड़ी मुश्किल से इन्सान इसे पूरा करता है इस लिये नफ़्से इन्सानी इसे करने में पसो पेश करता है और मेह़नतो मशक़्क़त को बुरा समझता है (पस तुझे येही काम इख़्तियार करना चाहिये)।

ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ का इरशाद है कि अपने नफ़्सों को रोको क्यूंकि येह ऐसा हरावल दस्ता हैं जो तुम्हें बुराई की आख़िरी सरह़द तक ले जाता है, ह़क़ कड़वा और गिरां है, बात़िल सबुक और तबाह कुन है, तौबा के इलाज से बेहतर येही है कि इन्सान गुनाहों ही को छोड़ दे बहुत सी निगाहों ने शहवत की काश्त की और एक लम्ह़े की लज़्ज़त उन को त़वील ग़म की मीरास दे गई।

ह़ज़रते लुक़मान رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने बेटे से कहा कि ऐ बेटे ! मैं सब से पहले तुझे तेरे नफ़्स से डराता हूं क्यूंकि हर नफ़्स की ख़्वाहिशात और आरज़ूएं हैं, अगर तू उन को पूरा कर देगा तो वोह अपनी ख़्वाहिशात को त़वील कर देगा और तुझ से तमाम ख़्वाहिशात को पूरा करने की त़लब

1......شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان...الخ، ۱/۴۷۱، الحدیث ۷۴۵

करेगा, बिला शुबा शहवत दिल में इस त़रह़ पोशीदा होती है जैसे पथ्थर में आग ! अगर तू पथ्थर पर चक़्माक़ मारेगा तो आग निकलेगी वरना नहीं।

किसी शाइ़र का क़ौल है :

اذا ما اجبت النفس فی کل دعوۃ   دعتک الی الامر القبیح المحرم

۞......जब तू ने नफ़्स की हर पुकार पर लब्बैक कहा तो वोह तुझे मनहिय्यात की त़रफ़ बुलाएगा।

एक और शाइ़र कहता है :

اذا انت لم تعص الھوی قادک الھوی   الی کل مافیہ علیک مقال

۞......जब तू ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की मुख़ालफ़त नहीं करेगा तो येह तुझे हर उस काम के लिये कहेंगी जो तेरे लिये बाइ़से आ़र हो।

एक और शाइ़र कहता है :

واعلم بانک لن تسود لن تری   طرق الرشاد اذا اتبعت ھواک

۞......अगर तू ने अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की तो न तुझे सीधा रास्ता मिलेगा और न तू सरदारी ह़ासिल कर सकेगा।

एक और शाइ़र कहता है :

اذا شئت اتیان المحامد کلھا   ونیل الذی ترجوہ من رحمت الرب

فخالف ھوی النفس المسیئۃ انہ   لا عدی واردی من ھوی الحب

ھما سببا حتف الھوی غیر ان فی   ھوی الحب مھما عف بعدا عن الذنب

وجل المعاصی فی ھوی النفس فاعتمد   خلاف الذی تھواہ ان کنت ذا لب

﴾1﴿......जब तू तमाम अवसाफ़े ह़मीदा का ह़ुसूल और अल्लाह की रह़मत से अपनी मुरादों का बर आना चाहता है।

﴾2﴿......तो इस बुरे नफ़्स की ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त कर क्यूंकि येह इ़श्क़ से भी ज़ियादा दुश्मन और मोहलिक है।

﴾3﴿......वोह दोनों ख़्वाहिशात को हलाक करने का सबब हैं अलबत्ता आ़शिक़ जब पाक दामन हो तो गुनाह से बच जाता है। और

﴾4﴿......नफ़्सानी ख़्वाहिशात बर आने की आरज़ूओं को तर्क कर दे, अगर तू अ़क़्लमन्द है तो वोह काम कर जो तेरे नफ़्स की ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ हो।

एक और शाइ़र कहता है :

انارۃ العقل مکسوف بطوع ھوی   و عقل عاصی الھوی یزداد تنویرا

۞......ख़्वाहिशात की पैरवी में अ़क़्ल का नूर छुप जाता है और ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करने वाले की अ़क़्ल की नूरानिय्यत बराबर बढ़ती रहती है।

फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कहना है :

لقد ترفع الایام من کان جاهلا ویردی الهوی ذاالرأی وهولبیب

وقد تحمد الناس الفتی وهو مخطئ ویعذل فی الاحسان وهو مصیب

﴾1﴿......ज़माना जाहिल को बुलन्द मक़ाम दे देता है और ख़्वाहिशात की पैरवी अ़क़्लमन्द, ज़ी राए को उस के मक़ाम से फेर देती है।

﴾2﴿......कभी लोग ऐसे जवान की ता'रीफ़ करते हैं जो ख़ताकार होता है और एह्सान करने वाले शख़्स को मलामत की जाती है हालांकि वोह बा मुराद होता है।

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अ़क़्ल को पैदा फ़रमाया और उसे फ़रमाया : सामने आ ! तो वोह सामने हुई, फिर फ़रमाया : पीछे हट ! तो वोह पीछे हट गई। रब तआ़ला ने फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुझे अपनी सब से ज़ियादा पसन्दीदा मख़्लूक़ में रखूंगा। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़माक़त को पैदा फ़रमाया और आगे आने का हुक्म दिया चुनान्चे, वोह आगे हुई, फिर फ़रमाया : पीछे हट ! तो वोह पीछे हट गई। तब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! मैं तुझे बद तरीन मख़्लूक़ में रखूंगा।[1] येह तिर्मिज़ी की रिवायत है।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

وقد اصاب رایه عین الصواب من استشار عقله فی کل باب

وقد رای ان الهوی مهما یجب یدعوالی سوء العواقب والعقاب

﴾1﴿......उस शख़्स की राए जो हर बात में अ़क़्ल से मश्वरा करता है सवाब को पा लेती है।

﴾2﴿......और उस ने देखा कि जब भी ख़्वाहिशात की पैरवी की जाए वोह बुरे अन्जाम और अ़ज़ाब में मुब्तला करती है।

एक दूसरा शाइ़र कहता है :

اذا شئت ان تخطی وان تبلغ المنی فلا تسعد النفس المطیعة للهوی

وخالف بها عن مقتضی شهواتها وایاک ان تحفل بمن ضل اوغوی

ودعها وماتدعو الیه فانها لامارة بالسوء من هم او مدی

لعلک ان تنجو من النار انها لقاطعة الامعاء نزاعة الشوی

1......كشف الخفاء، ١/٢١١، تحت الحديث ٧٢٢

﴾1﴿......जब तू चाहे कि उम्मीदों से बहरा वर हो तो नफ़्स को ख़्वाहिशात की पैरवी से बचा।
﴾2﴿......और इस की ख़्वाहिशात पूरी न कर और गुमराह और बाग़ियों की रौनक़ न बन।
﴾3﴿......नफ़्स और इस की ख़्वाहिशात को तर्क कर दे क्यूंकि येह हर उस शख़्स को जो इस की त़रफ़ क़दम बढ़ाता है, बुराइयों का हुक्म देता है।
﴾4﴿......शायद कि तू इस त़रह़ जहन्नम से नजात पा ले जो आंतें काटने वाली और खाल उतारने वाली है।

दानाओं का क़ौल है कि ख़्वाहिश एक बुरी सुवारी है जो तुझे मुसीबतों की तारीकियों में ले जाती है और ना मुवाफ़िक़ चरागाह है जो तुझे दुखों का वारिस बनाती है लिहाज़ा ख़बरदार हो कि तुझे नफ़्स की ख़्वाहिश बुराइयों पर सुवार न करे और गुनाहों की अन्धेर नगरी में ख़ैमाज़न न करे। किसी दाना से कहा गया कि अगर तुम शादी कर लेते तो ख़ूब था, तो उस ने बरजस्ता जवाब दिया अगर मैं त़लाक़ दे सकता तो अपने नफ़्स को त़लाक़ दे देता, और येह शे'र पढ़ा :

تجرد من الدنیا فانک انما　　سقطت الی الدنیا وانت مجرد

۞......दुन्या से तन्हा हो जा क्यूंकि तू तन्हा ही दुन्या में भेजा गया था।

दुन्या नींद और आख़िरत बेदारी है और इन का दरमियानी फ़ासिला मौत है और हम परागन्दा ख़्वाबों में हैं, जिस ने ख़्वाहिश की आंख से देखा वोह तुन्दो तेज़ हो गया, जिस ने ख़्वाहिश की पैरवी की उस ने ज़ुल्म किया और जिस ने त़वील उम्मीदें रखीं उस ने इन्तिहा को न पाया और न ही किसी देखने वाले के लिये निहायत है। (तूले अमल की कोई इन्तिहा नहीं)

किसी दाना ने एक शख़्स को वसिय्यत की, कि मैं तुझे ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से मुक़ाबला करने का हुक्म देता हूं क्यूंकि ख़्वाहिशात बुराइयों की किलीद और नेकियों की दुश्मन हैं, तेरी हर ख़्वाहिश तेरी दुश्मन है और सब से बुरी ख़्वाहिश येह है जो गुनाहों को तेरे सामने बत़ौरे नेकी पेश करती है। जब येह दुश्मन तुझ से झगड़ा करेंगे तो तू इन के पंजे से बच, सुस्ती से मुबर्रा होशयारी, झूट से मुबर्रा सच, तसाहिल से पाक मश्ग़ूलिय्यत, जज़्अ़ फ़ज़्अ़ से पाक सब्र और ऐसी निय्यत जो बेकारी से आलूदा न हो, की मौजूदगी ही में नजात पा सकेगा।

ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! हमारी अ़क़्ल को हमारी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब फ़रमा दे, हमें नुक़्सान और सबुक सारी से बचा, हमें आख़िरत की बजाए दुन्या में मश्ग़ूल न कर और हमें अपना ज़िक्र करने वाला और अपनी ने'मतों का शुक्र करने वाला बना दे, सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत के तुफ़ैल हमें सआ़दते दारैन अ़त़ा फ़रमा ! والحمد للّٰہ رب العٰلمین

फ़रमाने नबवी है कि तुम्हारा दीन बेहतरीन परहेज़गारी है।[1]

और फ़रमाया : परहेज़गारी आ'माल की सरवरी है।[2]

और फ़रमाया : परहेज़गार बन, सब लोगों से ज़ियादा इबादत गुज़ार बन जाएगा और क़नाअ़त कर कि सब लोगों से ज़ियादा शुक्र गुज़ार बन जाएगा।[3]

फ़रमाने नबवी है कि जिस में परहेज़गारी मौजूद नहीं (जो उसे अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी से रोके तो) उस के किसी अ़मल की अल्लाह तआ़ला को परवा नहीं है।[4]

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رضی اللہ تعالٰی عنہ का फ़रमान है कि ज़ोह्द के तीन मर्तबे हैं, एक ज़ोह्द फ़र्ज़ है और वोह अल्लाह तआ़ला की ह़राम कर्दा चीज़ों से रुकना, दूसरा ज़ोह्द सलामती के लिये है और वोह है मुश्तबा चीज़ों को तर्क कर देना, तीसरा ज़ोह्द फ़ज़ीलत के ह़ुसूल के लिये है और वोह है अल्लाह तआ़ला की ह़लाल कर्दा अश्या को भी छोड़ देना और येह ज़ोह्द का बहुत ही आ'ला मर्तबा है।

इब्ने मुबारक رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि ज़ोह्द, ज़ोह्द को छुपाने का नाम है, जब ज़ाहिद लोगों से दूर रहे तो उस की जुस्त्जू रखो और जब ज़ाहिद लोगों की तलाश में सरगर्दां हो तो उस से किनार कशी इख़्तियार कर लो।

किसी ने क्या ही ख़ूब कहा है :

انی وجدت فلا تظن غیرہ ان التورع عند ھذا الدرھم

فاذا قدرت علیه ثم ترکته فاعلم بان تقاک تقوی المسلم

﴿1﴾......मैं ने इस राज़ को पा लिया है, इस के सिवा और कुछ नहीं है कि परहेज़गारी दुन्या और दौलते दुन्या को छोड़ देने का नाम है।

﴿2﴾......जब तू दौलत पा कर इसे तर्क कर दे तो समझ ले कि तेरा तक़्वा ऐसे है जैसे एक मुसलमान का तक़्वा है।

ज़ाहिद वोह नहीं है जो दुन्या के न होते हुवे इस से किनारा कश हुवा बल्कि ज़ाहिद वोह है कि जिस के पास दुन्या अपनी तमाम तर ह़श्र सामानियों के साथ आई मगर उस ने इस से मुंह फेर लिया और भाग गया, जैसा कि अबू तमाम कहता है :

---

1. ......شعب الایمان، السابع عشر من شعب الایمان...الخ، ۲/۲٦٤، الحدیث ۱۷۰۳
2. ......کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، باب الخوف والرجاء ، ۲/٦۰، الجزء الثالث، الحدیث ٥۸٦۹
3. ......شعب الایمان، التاسع والثلاثون من شعب الایمان، الفصل الثالث...الخ، ٥/٥۳، الحدیث ٥۷٥۰
4. ......فردوس الاخبار، ۲/٤۰۸، الحدیث ٤۷٦۱

जब आदमी ने ज़ोहद इख़्तियार न किया और दुन्या अपनी तमाम तर रा'नाइयों के साथ जल्वागर हुई तो वोह ज़ाहिद नहीं कहलाएगा।

बा'ज़ हुकमा का क़ौल है कि क्या वज्ह है कि हम दुन्या से किनारा कशी नहीं करते हालांकि इस की उम्र गिनी चुनी, इस की भलाई मा'मूली, इस की सफ़ा में तिलछट, इस की उम्मीदें धोका और फ़रेब हैं, आती है तो दुख ले कर आती है और जब जाती है तो ग़मों का बोझ छोड़ जाती है, शाइर कहता है :

تبا لطالب الدنيا لا بقاء لها	كانما هي في تصريفها حلم
صفاء ها كدر سرورها ضرر	امالها غرر انوارها ظلم
شبابها هرم راحتها سقم	لذاتها ندم وجدانها عدم
لايستفيق من الانكاد صاحبها	لوكان يملک ماقدضمنت ارم
فخل عنها ولا تركن لزهرتها	فانها نعم فى طيها نقم
واعمل لدارنعيم لا نفدلها	ولا يخاف بها موت ولاهرم

﴾1﴿...दुन्या के त़ालिब के लिये हलाकत है, इस को बक़ा नहीं और इस की गर्दिश ख़्वाबो ख़याल है।

﴾2﴿...इस का साफ़ गदला, इस की ख़ुशी नुक़्सान, इस की उम्मीदें पुर फ़रेब और इस की रोशनियां तारीकी हैं।

﴾3﴿...इस की जवानी बुढ़ापा, इस की राह़त बीमारी, इस की लज़्ज़तें शर्मिन्दगी और इस को पाना न पाने के बराबर है।

﴾4﴿...दुन्यादार अगर्चे शद्दाद की बिहिश्त (आराम देह मक़ाम) जितनी ने'मतें पा लें, तब भी इस के मसाइब से नहीं छूटेगा।

﴾5﴿...इस से रू गर्दानी कर, इस की रौनक़ को बा वक़ार न समझ क्यूंकि इस की ने'मतें ऐसी हैं जिन में इ़ताब मुज़्मिर है।

﴾6﴿...उस दाइमी इन्आ़मात के घर के लिये अ़मल कर जिस की ने'मतें कभी न मिटेंगी और जिस में मौत और बुढ़ापे का कोई अन्देशा न होगा।

यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक दानिशमन्दाना क़ौल है कि दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से देख, इसे अपनी पसन्द से छोड़, इस के ह़ुसूल में मजबूरी से कोशिश कर और आख़िरत को तवज्जोह से त़लब कर।

बाब 72

जन्नत और मरातिबे अहले जन्नत

क़ब्ल अज़ीं आप जिस घर के ग़म व अन्दोह और मेहनत व आलाम का हाल पढ़ चुके हैं, उस घर के मुक़ाबले में एक और घर है, पहले घर को जहन्नम का नाम दिया गया था और इस दूसरे घर का नाम जन्नत है, अब ज़रा इस घर की ने'मतों और मसर्रतों पर नज़र डालिये क्यूंकि येह बात तो तै शुदा है कि जो एक घर से महरूम होगा उसे दूसरे घर में जाना होगा ख़्वाह वोह जन्नत हो या जहन्नम, लिहाज़ा ज़रूरी है कि जहन्नम की हलाकत ख़ैज़ियों से बचने के लिये अपने दिल में तवील ग़ौरो फ़िक्र कीजिये ताकि किसी तरह इस से नजात हासिल हो जाए और दिल को ख़ौफ़े ख़ुदा का गहवारा बनाइये और जन्नत की दवामी ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ तवील सोच बिचार करते हुवे **अल्लाह** तआला की रहमत से उम्मीद रखिये कि वोह हमें भी इस का मकीन बनाएगा जिस का उस ने अपने सालेह बन्दों से वा'दा फ़रमाया है।

अपने नफ़्स को ख़ौफ़े इलाही का चाबुक मारिये और उम्मीद की महार डाल कर सीधे रास्ते पर गामज़न रखिये, इसी सूरत में ही तो आप मुल्के अज़ीम (जन्नत) को पाएंगे और दर्दनाक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे।

अब ज़रा अहले जन्नत के बारे में ग़ौर कीजिये, उन के चेहरों पर अ़ताए रब्बानी की ताज़गी और शगुफ़्तगी होगी मोहर कर्दा शराबे तहूर के जाम उन के हाथों में होंगे और वोह सुर्ख़ याक़ूत के मिम्बरों पर जल्वा अफ़रोज़ होंगे जिन के ऊपर सफ़ेद बर्राक़ मोतियों के साइबान तने होंगे, नीचे बे मिसाल सब्ज़ रेशम के फ़र्श होंगे, वोह शहद व शराब की नहरों के किनारे नसब शुदा तख़्तों पर टेक लगाए होंगे जिन्हें ग़िलमान व नौनिहालाने बिहिश्त और इन्तिहाई हसीनो जमील हूराने बिहिश्ती ने, जो मोती और मूंगों की तरह होंगी (जिन्हें इस से पहले किसी इन्सान और जिन्न ने हाथ नहीं लगाया होगा) येह सब उन्हें घेरे होंगे, जो हूरें जन्नत के दरजात में सबुक ख़िरामी कर रही होंगी, जब उन में से कोई एक चलने पर माइल होगी तो सत्तर हज़ार बिहिश्ती बच्चे उस के लिबास उठाए होंगे, उन पर सफ़ेद रेशमी लिबास होगा जिस को देख कर लोग शशदर रह जाएंगे, लुअ लुअ और मरजान से मुरस्सअ़ ताज उन के ज़ेबा सर होंगे, वोह इन्तिहाई नाज़ो अन्दाज़ वाली शीरीं अदा इत्रबीज़ और बुढ़ापे और दुख

से बे नियाज़ होंगी, वोह याकूत से तय्यार कर्दा महल्लात में फ़रोकश होंगी और जन्नत के बाग़ों के दरमियान आंखें नीची किये आराम फ़रमा होंगी, फिर उन जन्नतियों और हूरों पर आब ख़ूरे आफ़ताबे और शराबे तहूर के प्याले लिये ग़िलमान फिरेंगे जिन में इन्तिहाई सफ़ेद, लज़्ज़त बख़्श मशरूब होगा और उन के इर्द गिर्द जन्नती ख़ादिम और अम्रद, मोतियों की तरह फिर रहे होंगे येह उन के आ'माल की जज़ा होगी कि वोह अम्न वाले मक़ाम में चश्मों, बाग़ों और नहरों के दरमियान रब्बे क़दीर के नज़दीक सच्चे मक़ाम में होंगे, वोह इन में बैठ कर रब्बे करीम का दीदार करेंगे, उन के चेहरों पर **अल्लाह** की ने'मतों की ताज़गी के आसार नुमायां होंगे, उन के चेहरे ज़िल्लतो रुस्वाई से आलूदा नहीं होंगे बल्कि वोह **अल्लाह** के मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे होंगे, रब्बे करीम की जानिब से उन्हें तोहफ़े अ़ता होंगे, वोह अपनी इस पसन्दीदा जगह में हमेशा रहने वाले होंगे, न इस में उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा न ग़म, वोह मौत की तक्लीफ़ से बे ख़ौफ़ होंगे, वोह जन्नत में ने'मतें पाएंगे, जन्नत के लज़ीज़ खाने खाएंगे, दूध, शराब, शहद और साफ़ पानी की ऐसी नहरों से अपनी प्यास बुझाएंगे जिन की ज़मीन चांदी की, कंकरियां मोतियों की और मिट्टी मुश्क की होगी, जिस से तेज़ ख़ुश्बू आएगी, वहां का सब्ज़ा ज़ा'फ़रान का होगा, वोह काफ़ूर के टीलों पर बैठेंगे, और उन पर फूलों के इत्र की बारिश होगी और उन की ख़िदमत में चांदी के प्याले जिन पर मोती जड़े होंगे और जो याकूत व मरजान से मुरस्सअ़ होंगे, लाए जाएंगे, किसी प्याले में सल-सबील के ठन्डे और मीठे पानी में मुहरबन्द शराब मिली होगी और ऐसा प्याला जिस की सफ़ाई की वज्ह से उस में मौजूद शराब का रंगो रूप बाहर से नज़र आ रहा होगा, आदमी उस जैसा मुरस्सअ़ मुसफ़्फ़ा बरतन बनाने का तसव्वुर ही नहीं कर सकता, वोह प्याला ऐसे ख़ादिम के हाथ में होगा कि आदमी उस के चेहरे की चमक दमक को याद करेगा लेकिन सूरज में उस की दिलकश सूरत, हसीन चेहरा और बे नज़ीर आंखें कहां ?

तअ़ज्जुब है ऐसे शख़्स पर जो उस घर पर ईमान रखता है, उस की ता'रीफ़ों को सच्चा जानता है और इस बात का यक़ीने कामिल रखता है कि उस में रहने वाले कभी भी मौत से हम किनार नहीं होंगे, जो उस में आ जाएगा उसे दुख दर्द नहीं सताएंगे, उस में रहने वालों पर कभी भी तग़य्युर नहीं आएगा और वोह हमेशा अम्न व सुकून से रहेंगे, येह सब कुछ जानने के बा वुजूद वोह ऐसे घर में दिल लगाता है जो आख़िरे कार उजड़ने वाला है, जिस का ऐ़श ज़वाल पज़ीर है, ब ख़ुदा ! अगर जन्नत में सिर्फ़ मौत से बे ख़ौफ़ी होती, इन्सान भूक, प्यास और तमाम हवादिसात से बे ख़ौफ़ ही रह सकता और दीगर इन्आ़मात न होते तब भी वोह जन्नत इस लाइक़ थी कि उस के लिये दुन्या को छोड़ दिया जाए और उस पर ऐसी चीज़ को तरजीह न दी जाती जो लुट जाने वाली और मिट जाने वाली है चे जाएकि जन्नत में रहने वाले बे ख़ौफ़ बादशाहों की तरह हों, रंगा रंग

मसर्रतों, राहतों से हम किनार हों, हर ख़्वाहिश को पाने वाले हों, हर रोज़ अ़र्शे आ'ज़म के कुर्ब में जाने वाले हों, रब्बे ज़ुल मिनन का दीदार करने वाले हों, अल्लाह तआला को ऐसी बे मिसाल निगाहों से देखने वाले हों कि जिस निगाह से वोह जन्नत की ने'मतों को नहीं देखा करते थे वोह इन ने'मतों से फिरने वाले न हों, हमेशा इन्हीं ने'मतों में रहें और इन के ज़वाल से अम्न में हों।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुनादी पुकारेगा : ऐ जन्नत के रहने वालो ! तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे, कभी बीमार नहीं होगे, हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मौत नहीं आएगी, हमेशा जवान रहोगे, कभी बुढ़ापा नहीं आएगा और तुम हमेशा इन्आ़मो इकराम में रहोगे, कभी ना उम्मीद नहीं होगे।(1) और येही फ़रमाने इलाही है :

وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ (2)

और पुकारे जाएंगे कि येह बिहिश्त है जिस के तुम अपने आ'माल के सबब वारिस हुवे हो।

और तुम जब जन्नत की सिफ़ात जानना चाहो तो कुरआने मजीद पढ़ो क्यूंकि अल्लाह तआ़ला के बयान से उ़म्दा किसी का बयान नहीं है और अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान से कि

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾ (3)

जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरता है उस के लिये दो जन्नतें हैं।

सूरए रह़मान के आख़िर तक पढ़ो, सूरए वाक़िआ़ और दूसरी सूरतों का मुत़ालआ़ करो (इन में जन्नत की ने'मतों का तज़्किरा है)।

और अगर तुम अह़ादीसे मुक़द्दसा से जन्नत की तफ़्सीलात जानना चाहते हो तो मज़्कूरए बाला इजमाल के बा'द अब इस की तफ़्सील पर ग़ौरो फ़िक्र करो, सब से पहले जन्नतों की ता'दाद ज़ेह्न नशीन कर लो, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाने इलाही : "और उस शख़्स के लिये जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा, दो जन्नतें हैं।" की तफ़्सीर में फ़रमाया : दो जन्नतें चांदी की हैं, इन की तमाम अश्या और ज़ुरूफ़ वग़ैरा चांदी के हैं और दो जन्नतें सोने की हैं, इन की तमाम चीज़ें और ज़ुरूफ़ वग़ैरा सोने के हैं और जन्नते अ़द्न में लोग और तजल्लिये इलाही के दरमियान सिर्फ़ रब की किब्रियाई का पर्दा होगा।(4)

1.....مسلم، کتاب الجنة...الخ، باب فی دوام نعیم...الخ، ص ۱۵۲۱، الحدیث ۲۲۔ (۲۸۳۷)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली सिला तुम्हारे आ'माल का। (پ۸، الاعراف: ۴۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं। (پ۲۷، الرحمٰن: ۴۶)

4.....بخاری، کتاب التفسیر، باب ومن دونهما جنتان، ۳/۳۴۴، الحدیث ۴۸۷۸

रहे जन्नत के दरवाज़े तो वोह बहुत बे शुमार होंगे जिस त़रह़ गुनाहों की अक़्साम के मुत़ाबिक़ जहन्नम के अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा दरवाज़े हैं, इसी त़रह़ इबादत की अक़्साम के मुत़ाबिक़ जन्नत के अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा दरवाज़े होंगे चुनान्चे, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने अपने माल से राहे ख़ुदा में ख़र्च किया, वोह जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा और जन्नत के आठ दरवाज़े हैं जो शख़्स नमाज़ी होगा वोह नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, रोज़ादार रोज़े वाले दरवाज़े से, सदक़ा करने वाला सदक़े के दरवाज़े से और मुजाहिद जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ब ख़ुदा ! अल्लाह पर दुश्वार नहीं कि बन्दे को किस दरवाज़े पर बुलाया जाए, क्या मख़्लूक़ में से कोई शख़्स ऐसा भी होगा जिसे तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए ? आप ने फ़रमाया : हां ! और मुझे उम्मीद है कि तुम उन्ही में से होगे।(1)

ह़ज़रते आ़सिम बिन ज़मरह, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं, इन्हों ने जहन्नम का बहुत ज़ियादा तज़किरा किया जिसे मैं भूल गया हूं, फिर इन्हों ने कहा :

وَسِیْقَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ(2) *और जो लोग अपने रब से डरे वोह जन्नत की त़रफ़ ज़ूक़ दर ज़ूक़ ले जाए जाएंगे।*

जब वोह जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुंचेंगे तो वोह ऐसा दरख़्त पाएंगे जिस के नीचे पानी के दो चश्मे जारी होंगे वोह हुक्म के मुत़ाबिक़ एक चश्मे पर जाएंगे और पानी पियेंगे जिस के पीते ही उन के जिस्म से तमाम दुख-दर्द और तक्लीफ़ें ज़ाइल हो जाएंगे, फिर वोह दूसरे चश्मे पर जा कर उस से त़हारत ह़ासिल करेंगे, तब उन पर अल्लाह तआ़ला की ने'मतों की ताज़गी आ जाएगी, इस के बा'द कभी भी उन के बाल मुन्तशिर नहीं होंगे और न ही उन के सर कभी दर्द मन्द होंगे, जैसे उन्हों ने तेल लगा लिया हो, फिर वोह जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचेंगे तो जन्नत के दरबान उन्हें कहेंगे : "तुम पर सलामती हो तुम ख़ुश ह़ाल हुवे लिहाज़ा इस में हमेशा रहने के लिये दाख़िल हो जाओ।"(3)

---

1 ....شعب الایمان، باب الثانی والعشرین...الخ، فصل فی الاختیار...الخ، ۳/۲۵۴، الحدیث ۳۴۶۸

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब से डरते थे उन की सुवारियां गुरौह गुरौह जन्नत की त़रफ़ चलाई जाएंगी। (پ۲۴، الزمر:۷۳)

3 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे, तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने। (پ۲۴، الزمر: ۷۳)

जन्नत में दाख़िल होते ही उन्हें वलदान घेर लेंगे जैसे दुन्या में अपने किसी दूर से आने वाले किसी अ़ज़ीज़ बच्चे को घेर लेते हैं और वोह उस से कहेंगे तुझे खुश ख़बरी हो, अल्लाह तआ़ला ने तेरे लिये फ़ुलां फ़ुलां इ़ज़्ज़त व करामत रखी है, फिर उन वलदान में से एक अम्रद उस जन्नती की बीवियों में से किसी बीवी की त़रफ़ जो कि जन्नत की हूर होगी, जाएगा और उसे कहेगा कि फ़ुलां आदमी जो दुन्या में फ़ुलां नाम से बुलाया जाता था, आया है। हूर कहेगी : तू ने उसे देखा है, वोह अम्रद कहेगा : हां ! मैं उसे देख के आ रहा हूं और वोह भी मेरे अ़क़ब में आ रहा है, तब वोह ख़ुशी से अज़रफ़्ता हो कर दरवाज़े की देहलीज़ पर फ़र्ते इश्तियाक़ से खड़ी हो जाएगी। जब वोह जन्नती वहां पहुंचेगा और उस घर की बुन्यादें देखेगा जो मोतियों की होंगी और दीवारें सुर्ख़, सब्ज़ और पीले हर रंग के मोतियों से बनी हुई होंगी, तब वोह छत को देखेगा, वोह बिजली की त़रह़ ऐसी ख़ीरा कुन होगी कि अगर अल्लाह तआ़ला उसे क़ुदरत न देता तो उस की आंखें ज़ाइल हो जातीं, फिर सर झुका कर नीचे नज़र करेगा तो उसे हूरें क़ित़ार दर क़ित़ार आबख़ूरे लिये, सफ़ बांधे तक्ये और सजी हुई मस्नदें नज़र आएंगी और वोह उन से तक्या लगा कर कहेगा : "सब ता'रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जिस ने हमें इस की हिदायत की अगर अल्लाह हमें येह राह न दिखाता तो हम हिदायत न पाते।"(1)

फिर पुकारने वाला पुकारेगा कि तुम ज़िन्दा रहो कभी नहीं मरोगे, इस में हमेशा रहो कभी कूच नहीं कराए जाओगे और सलामत व तन्दुरुस्त रहो कभी बीमार नहीं होगे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं क़ियामत के दिन जन्नत के दरवाज़े पर आ कर उसे खुलवाना चाहूंगा, जन्नत का दरबान (रिज़्वान) पूछेगा : कौन हो ? मैं कहूंगा मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) दरबान कहेगा : मुझे येही हुक्म दिया गया है कि आप से पहले किसी के लिये दरवाज़ा न खोलूं।(2)

फिर जन्नत के बालाख़ानों, और बुलन्दो बाला मुख़्तलिफ़ त़बक़ात के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करो बेशक आख़िरत बहुत बड़े दरजात और बहुत बड़ी अ़ज़मत देने वाली है, जैसा कि लोगों की ज़ाहिरी इबादात और इन की बात़िनी सिफ़ात ब ज़ाहिर मुख़्तलिफ़ हैं इसी त़रह़ दारुल जज़ा में जन्नत के भी मुख़्तलिफ़ दरजात हैं, अगर तुम जन्नत का आ'ला दरजा ह़ासिल करना चाहते हो तो कोशिश करो कि कोई दूसरा इबादत करने में तुम से सबक़त न ले जाए, अल्लाह तआ़ला ने भी अपनी इत़ाअ़त में मुक़ाबले और एक दूसरे से सबक़त ले जाने का हुक्म फ़रमाया है चुनान्चे,

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें इस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता। (پ۸، الاعراف:٤٣)

2....مسلم، کتاب الایمان،باب فی قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم انا اوّل الناس...الخ،ص۱۲۸،الحدیث۳۳۳۔ (۱۹۷)

फ़रमाने इलाही है :

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ (1) अपने रब की बख़्शिश की त़रफ़ सबक़त ह़ासिल करो ।

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَ فِیْ ذٰلِكَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ (2) और इसी में चाहिये कि रग़बत करने वाले रग़बत करें ।

तअ़ज्जुब की बात तो येह है कि अगर तुम्हारे दोस्त या हमसाए तुम से रूपे पैसे या मकानात की ता'मीर में तुम से सबक़त ले जाएं तो तुम को बहुत अफ़्सोस होता है, तुम्हारा दिल तंग होता है ह़सद की वज्ह से ज़िन्दगी में बे कैफ़ी पैदा हो जाती है मगर तुम ने कभी जन्नत के ह़ुसूल के मुतअ़ल्लिक़ नहीं सोचा, बस अपने ह़ालात को जन्नत के ह़ुसूल के लिये बेहतर बनाओ और तुम जन्नत में ऐसे लोगों को पाओगे जो तुम से सबक़त ले गए होंगे, ऐसे मक़ामात पर रोनक़ अफ़रोज़ होंगे कि तमाम दुन्या भी जिस के बराबर नहीं हो सकती ।

ह़ज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बिला शुबा जन्नती अपने ऊपर बुलन्दो बाला बालाख़ानों में रहने वालों को ऐसे देखेंगे, जैसे तुम दूर मशरिक़ो मग़रिब के उफ़ुक़ में बहुत नीचे किसी चमकदार सितारे को देखते हो, येह उन के दरमियान बुलन्दियों की वज्ह से होगा । सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) क्या येह अम्बियाए किराम के मक़ामात होंगे जहां और लोग नहीं पहुंच पाएंगे ? आप ने फ़रमाया : हां क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है वहां वोह लोग होंगे जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और जिन्हों ने रसूलों की तस्दीक़ की और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत के बुलन्द दरजात वाले नीचे से ऐसे दिखाई देंगे जैसे तुम दूर मशरिक़ या मग़रिब में आस्मान के उफ़ुक़ पर तुलूअ़ होने वाला सितारा देखते हो और अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इन्ही जन्नतियों में से हैं और दोनों ख़ूब हैं ।(3)

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की त़रफ़ । (پ۲۷، الحدید:۲۱)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इसी पर चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले । (پ۳۰، المطففین:۲٦)

3......مسلم، کتاب الجنة...الخ، باب ترائی اهل الجنة...الخ، ص ۱۵۱۸، الحدیث ۱۱ ـ (۲۸۳۱) وترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر الصدیق...الخ، ۵/۳۷۲، الحدیث ۳٦۷۸

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम लोगों से फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें जन्नत के बालाख़ानों के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : आप पर हमारे मां-बाप कुरबान हों या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ज़रूर इरशाद फ़रमाइये ! आप ने फ़रमाया : जन्नत में मोतियों जैसे बालाख़ाने हैं जिन के अन्दर वाला हिस्सा बाहर से और बाहर का हिस्सा अन्दर से देखा जा सकता है और इन में ऐसी ने'मतें, लज़्ज़तें और मसर्रतें हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल में इन का तसव्वुर गुज़रा। मैं ने पूछा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) येह बालाख़ाने किन लोगों के लिये होंगे ? आप ने फ़रमाया : उस शख़्स के लिये जो सलाम को फैलाता है, खाना खिलाता है, हमेशा रोज़े से रहता है और रात में जब कि लोग सोते हैं वोह नमाज़ पढ़ता है। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! इन आ'माल को पूरा करने की ताक़त कौन रखता है ? आप ने फ़रमाया : मेरे उम्मती इस की ताक़त रखते हैं और मैं तुम को इस की तफ़्सील बताता हूं, जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से मिला और उसे सलाम किया तो गोया उस ने सलाम को फैलाया, जिस ने अपने अहलो इयाल को ख़ूब सैर करा कर खाना खिलाया तो उस ने खाना खिलाया, जिस ने माहे रमज़ान के मुकम्मल और हर महीने में तीन रोज़े रखे उस ने दाइमी रोज़े रखे, जो नमाज़े इशा पढ़ कर सोया और उस ने सुब्ह की नमाज़ जमाअ़त से अदा की तो गोया उस ने सारी रात इबादत की और लोग या'नी यहूद, नसारा और मजूसी सोते रहे।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस फ़रमाने इलाही :

وَمَسٰكِنَ طَیِّبَةً فِیْ جَنّٰتِ عَدْنٍؕ[2] *अ़द्न के बाग़ में पाकीज़ा रहने की जगहें हैं।*

की तफ़्सीर पूछी गई तो आप ने फ़रमाया कि वोह मोतियों के महल्लात होंगे, हर महल में सुर्ख़ याक़ूत के सत्तर घर होंगे, हर घर में सब्ज़ ज़ुमर्रद के सत्तर मकान होंगे, हर मकान में एक तख़्त होगा, हर तख़्त पर क़िस्म क़िस्म के सत्तर बिछौने होंगे, हर बिछौने पर उस की बीवी हूरे ऐन होगी, हर मकान में सत्तर दस्तर ख़्वान होंगे, हर दस्तर ख़्वान पर सत्तर क़िस्म के खाने होंगे, हर मकान में सत्तर ख़ादिम होंगे और मोमिन हर सुब्ह इन तमाम दस्तर ख़्वानों पर बैठ कर खाएंगे।[3]

---

1 ......حلية الاولياء، ٢/٤٠٤، الحديث ٢٧٣٩

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और पाकीज़ा मकानों का बसने के बाग़ों में। (پ ١٠، التوبة : ٧٢)

3 ......كتاب العظمة، باب الامر بالتفكر...الخ، ذكر الجنات وصفتها، ص ٢١٨، الحديث ٦١١

बाब 73

सब्र, रिज़ा और क़नाअ़त

रिज़ा की फ़ज़ीलत आयाते कुरआनी से साबित है चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ[1] *अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हुवा और वोह अल्लाह से राज़ी हुवे।*

नीज़ इरशाद होता है :

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ[2] *नहीं है बदला एह्सान का मगर एह्सान।*

एह्सान का मुन्तहा येह है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे से राज़ी हो और येह मक़ाम बन्दे को राज़ी ब रज़ाए इलाही होने से मिलता है। नीज़ इरशादे इलाही होता है :

وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ[3] *अ़द्न के बाग़ों में पाकीज़ा रहने की जगहें हैं और अल्लाह की त़रफ़ से बहुत बड़ी रज़ामन्दी है।*

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में रिज़ा को जन्नते अ़द्न से बाला ज़िक्र किया है जैसे कि ज़िक्र को नमाज़ पर फ़ौक़िय्यत दी है, चुनान्चे, फ़रमाया :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ[4] *बेशक नमाज़ बे ह़याई और ना मा'कूल बातों से मन्अ़ करती है और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है।*

पस जैसा कि नमाज़ से मा'बूदे ह़क़ीक़ी (अल्लाह तआ़ला) की शान बहुत बुलन्द है इसी त़रह़ जन्नत से रब्बे जन्नत की रिज़ा आ'ला व अरफ़अ़ है बल्कि येही चीज़ हर जन्नती का मक़्सूद व

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी। (پ۷، المائدہ: ۱۱۹)
2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नेकी का बदला क्या है मगर नेकी। (پ۲۷، الرحمن: ۶۰)
3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और पाकीज़ा मकानों का बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रिज़ा सब से बड़ी। (پ۱۰، التوبة: ۷۲)
4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा। (پ۲۱، العنكبوت: ۴۵)

मत्मह़े नज़र होगी चुनान्चे, ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला मोमिनों पर तजल्ली फ़रमाएगा और कहेगा कि मुझ से मांगो तो मोमिन कहेंगे ऐ **अल्लाह** ! हम तुझ से तेरी रिज़ा चाहते हैं।[1] तो गोया कमाले फ़ज़ीलत को पा कर भी वोह रब की रिज़ा चाहेंगे।

बन्दे की रिज़ा त़लबी की ह़क़ीक़त का हम ज़िक्र ज़रूर करते, बन्दे से **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी का जो मत़लब है वोह इस मा'ना से ज़ियादा क़रीब है जिस का ज़िक्र हम बन्दे के लिये ख़ुदा की मह़ब्बत के ज़िम्न में कर चुके हैं, चूंकि लोगों के फ़हम इस मा'ना की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकते इस लिये इस ह़क़ीक़त के ज़िक्र का कोई जवाज़ नहीं है और कौन है जो अपने नफ़्स के इदराक से इस ह़क़ीक़त को पा ले।

ह़क़ीक़त तो येह है कि दीदारे इलाही से बढ़ कर कोई और चीज़ नहीं है मगर मोमिनों की दीदार के वक़्त रज़ाए इलाही की ख़्वाहिश इस वज्ह से होगी कि येही चीज़ दाइमी दीदार का सबब है पस गोया जब उन्हों ने इन्तिहाई बुलन्द मरातिब और उम्मीदों की आख़िरी ह़दों को छू लिया और दीदार की लज़्ज़त से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो गए तो उन्हों ने मज़ीद कुछ सुवाल करने के जवाब में दाइमी दीदार को ही मांग लिया और येह जान गए कि रज़ाए इलाही ही दाइमी त़ौर पर ह़िजाबात के उठ जाने का सबब है और फ़रमाने इलाही है :

وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝۳۵ [2] *हमारे नज़्दीक इस से भी ज़ियादा है।*

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का कहना है, इस से ज़ियादा के येह मा'ना हैं कि जन्नतियों को रब्बुल आ़लमीन की जानिब से तीन तोह़्फ़े मिलेंगे, पहले येह कि इन्हें जन्नत में ऐसा तोह़्फ़ा दिया जाएगा जो पहले से इन के पास मौजूद नहीं होगा, चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ [3] *पस कोई नफ़्स नहीं जानता कि उस के लिये कौन सी आंखों की ठन्डक छुपाई गई है।*

दूसरे येह कि इन्हें इन के रब की त़रफ़ से सलाम होगा जो इस तोह़्फ़े से फ़ुज़ूं होगा, जैसा कि इरशादे इलाही है :

---

1 ......طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ٦/٢٩٤ و مسند البزار، ١٤/٦٩، الحديث ٧٥٢٧

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है। (پ٢٦، ق: ٣٥)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है। (پ٢١، السجدة: ١٧)

سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ [1] रब्बे रहीम की त़रफ़ से उन्हें सलाम कहा जाएगा।

तीसरा येह कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : मैं तुम से राज़ी हूं और येह बात सलाम और तोह़्फ़े से भी बेहतर और आ'ला है, चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ [2] और **अल्लाह** की त़रफ़ से बहुत बड़ी ख़ुशनूदी है।

या'नी उन ने'मतों से भी अफ़्ज़ल है जिन को इन्हों ने ह़ासिल कर लिया है, पस येही **अल्लाह** तआ़ला की मुक़द्दस रिज़ा है जो बन्दे की रज़ाजूई का फल है।

अब रही अह़ादीसे मुक़द्दसा से रिज़ा की फ़ज़ीलत तो इस सिलसिले में बहुत सी अह़ादीस वारिद हुई हैं चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि आप ने सह़ाबा की एक जमाअ़त से पूछा : तुम कौन हो ? उन्हों ने कहा : मोमिन, आप ने फ़रमाया : तुम्हारे ईमान की क्या अ़लामत है ? उन्हों ने कहा : हम मसाइब पर सब्र करते हैं, फ़राख़ी में शुक्र अदा करते हैं और **अल्लाह** की क़ज़ा पर राज़ी रहते हैं। आप ने फ़रमाया : रब्बे का'बा की क़सम तुम मोमिन हो।[3]

फ़रमाने नबवी है कि हुकमा और उ़लमा अपनी फ़िक़्ह की वज्ह से इस अम्र के क़रीब हुवे कि नबी हो जाएं।[4]

ह़दीस शरीफ़ में है कि उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी है जिसे इस्लाम की हिदायत मिली और वोह अपनी मा'मूली गुज़र अवक़ात पर राज़ी रहा।[5]

फ़रमाने नबवी है कि जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से मा'मूली रिज़्क़ पर राज़ी हो गया **अल्लाह** तआ़ला उस के आ'माल पर राज़ी हो जाता है।[6]

और फ़रमाया : जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे पर राज़ी हो जाता है तो उस को आज़्माइश में डाल देता है अगर वोह सब्र करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे को पसन्द कर

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा। (پ۲۳، یٰسٓ:۵۸)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की रिज़ा सब से बड़ी। (پ۱۰، التوبۃ:۷۲)

3 ......المعجم الاوسط، ۴۶۷/۶، الحدیث ۹۴۲۷

4 ......کنزالعمال،کتاب الایمان والاسلام، الفصل الاول، ۱۴۸/۱، الجزء الاول، الحدیث ۱۳۵۹

5 ......ترمذی،کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف...الخ، ۱۵۶/۴، الحدیث ۲۳۵۶

6 ......شعب الایمان، السبعون من شعب الایمان، الخ، فصل فی ذکر مافی الوجاع...الخ، ۲۰۴/۷، الحدیث ۱۰۰۰۳

लेता है और अगर वोह आज़माइश पर राज़ी हो जाए तो अल्लाह उसे (अपने ख़ास बन्दों में) चुन लेता है।[1]

फ़रमाने नबवी है : जब क़ियामत का दिन होगा अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत के एक गुरौह के पर पैदा फ़रमाएगा और वोह इन परों से उड़ कर क़ब्रों से निकलते ही सीधे जन्नत में जा पहुंचेंगे, वोह जन्नत की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे और जहां चाहेंगे आराम करेंगे, फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : क्या तुम हिसाब देख आए हो ? वोह कहेंगे कि हम ने हिसाब नहीं देखा, फ़िरिश्ते पूछेंगे : क्या तुम पुल सिरात़ ऊ़बूर कर आए हो ? वोह कहेंगे : हम ने सिरात़ को नहीं देखा। फ़िरिश्ते कहेंगे : क्या तुम ने जहन्नम को देखा है ? वोह कहेंगे : हम ने किसी चीज़ को नहीं देखा।

तब फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम किस की उम्मत में से हो ? वोह कहेंगे हम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत हैं, फ़िरिश्ते कहेंगे : हम तुम्हें अल्लाह की क़सम देते हैं येह बताओ तुम दुन्या में क्या अ़मल किया करते थे ? वोह कहेंगे कि हम में दो आ़दतें थीं जिन्हों ने हमें इस मन्ज़िल तक पहुंचाया है और अल्लाह का फ़ज़्ल व रह़मत हमारे शामिले ह़ाल है, फ़िरिश्ते कहेंगे : वोह दो आ़दतें कौन सी थीं ? वोह कहेंगे : हम जब तन्हा होते तो गुनाह करते हमें शर्म आती थी चे जाएकि हम अ़लल ए'लान गुनाह करते और हम अल्लाह तआ़ला के अ़त़ा कर्दा मा'मूली रिज़्क़ पर राज़ी हो गए थे, फ़िरिश्ते येह सुन कर कहेंगे, तब तो तुम्हारा येही बदला होना चाहिये था।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ गुरौहे फ़ुक़रा ! तुम दिल की गहराइयों से अल्लाह की अ़त़ा पर राज़ी हो जाओ तो अपने फ़क़्र का सवाब पा लोगे वरना नहीं।[3]

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िआ़त में है कि बनी इस्राईल ने इन से कहा : अल्लाह तआ़ला से हमारे लिये कोई ऐसा अ़मल दरयाफ़्त कीजिये जिस के बाइ़स वोह हम से राज़ी हो जाए। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह तू ने इन की गुज़ारिश सुन ली, इन्हों ने क्या कहा है ? रब तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! इन से कह दो कि येह मुझ से राज़ी हो जाएं या'नी मेरे दिये हुवे कमो बेश पर राज़ी हो जाएं, मैं इन से राज़ी हो जाऊंगा।

---

1 ......فردوس الاخبار، ١/١٥١، الحديث ٩٧٦

2 ......قوت القلوب، ذكر احكام مقام الرضا ، ٢/٦٥

3 ......فردوس الاخبار، ٢/٤٧٥ ، الحديث ٨٢٤٢

रहे सब्र के फ़ज़ाइल तो रब तआला ने कुरआने मजीद में नव्वे से ज़ियादा मक़ामात पर सब्र का ज़िक्र फ़रमाया है और अकसर दरजात और भलाइयों को सब्र से मन्सूब किया है और इन्हें सब्र का फल क़रार दिया है और साबिरों के लिये ऐसे इन्आमात रखे हैं जो किसी और के लिये नहीं रखे, चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

أُولَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾ [1]

उन लोगों पर उन के रब की तरफ़ से दुरूद हैं और रहमत है और येही लोग हिदायत पाने वाले हैं।

लिहाज़ा साबित हुवा कि हिदायत, रहमत और सलवात तीन चीज़ें साबिरीन के लिये मख़्सूस हैं।

चूंकि इस में तमाम आयाते रब्बानी का लाना ना मुमकिन है लिहाज़ा इस से सिर्फ़ नज़र करते हुवे सिर्फ़ चन्द अहादीस दर्ज की जाती हैं। फ़रमाने नबवी है कि सब्र आधा ईमान है।[2]

मज़ीद फ़रमाया कि थोड़ी सी वोह चीज़ जो तुम्हें यक़ीन और पुख़्ता सब्र से मिल जाए और जिस शख़्स को इन में से कुछ हिस्सा मरहमत कर दिया जाए उस से अगर रात की इबादत और दिन के रोज़े फ़ौत हो जाएं तो कोई परवा नहीं। (वाज़ेह रहे कि यहां इबादत और रोज़ों से मुराद नफ़्ल इबादत और रोज़े हैं)। और तुम्हारा मा'मूली रिज़्क़ पर सब्र करना मुझे इस बात से ज़ियादा पसन्द है कि तुम में से हर एक तमाम के आ'माल पर कारबन्द हो कर आए लेकिन मैं तुम पर ख़ौफ़ करता हूं कि मेरे बा'द तुम पर दुन्या खोल दी जाएगी, पस तुम एक दूसरे को अच्छा न समझने लगो और इस सबब से फ़िरिश्ते तुम्हें अच्छा न समझने लगें, जिस ने सब्र किया और सवाब की उम्मीद रखी उस ने सवाब के कमाल को पा लिया,[3] फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ [4]

*जो कुछ तुम्हारे पास है तमाम हो जाता है और जो कुछ **अल्लाह** के यहां है बाक़ी रहने वाला है और अलबत्ता हम सब्र करने वालों को जज़ा देंगे।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह लोग हैं जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रहमत और येही लोग राह पर हैं। (پ۲، البقرة: ۱۵۷)

2.....شعب الايمان، باب القول فى زيادة الايمان...الخ، ۱/۷٤، الحديث ٤٨

3.....

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का वोह सिला देंगे जो उन के सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो। (پ١٤، النحل: ٩٦)

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया, आप ने फ़रमाया : ईमान, सब्र और सख़ावत का नाम है।(1)

और फ़रमाया : सब्र, जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।(2)

एक मरतबा आप से दरयाफ़्त किया गया कि ईमान क्या है ? आप ने फ़रमाया : सब्र।(3)

और येह बात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के मिस्ल है जिस में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया था कि हज क्या है ? तो आप ने फ़रमाया : वुक़ूफ़े अ़रफ़ा।(4) या'नी अहम रुक्न वुक़ूफ़े अ़रफ़ात है।

फ़रमाने नबवी है कि सब से उ़म्दा अ़मल वोह है जिसे नफ़्स बुरा समझता है।(5)

मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को वही फ़रमाई कि मेरे अख़्लाक़ जैसे अपने अख़्लाक़ बनाओ और मेरे अख़्लाक़ में से येह है कि मैं सबूर हूं।

अ़ता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अन्सार में तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : क्या तुम मोमिन हो ? वोह चुप रहे, हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : हां या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! आप ने फ़रमाया : तुम्हारे ईमान की अ़लामत क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम फ़राख़ दस्ती में **अल्लाह** का शुक्र अदा करते हैं, मसाइब में सब्र करते हैं और क़ज़ाए इलाही पर राज़ी रहते हैं, आप ने येह सुन कर फ़रमाया : रब्बे का'बा की क़सम ! तुम मोमिन हो।(6)

फ़रमाने नबवी है : अपनी ना पसन्दीदा चीज़ों पर तुम्हारा सब्र बहुत उ़म्दा चीज़ है।(7)

---

1 ......مکارم الاخلاق للطبرانی، باب فضل اطعام الطعام ، ص ۳۷۰، الحدیث ۱۵۵

2 ......

3 ......شعب الایمان ، الرابع و السبعون من شعب الإیمان ، باب فی الجود و السخاء ، ۷/۴۲۵، الحدیث ۱۰۸۳۷

4 ......ابن ماجه، کتاب المناسك، باب من اتی عرفة...الخ ، ۳/۴٦۸، الحدیث ۳۰۱۵

5 ......محاسبة النفس لابن ابی الدنیا ، باب الحذر علی النفس...الخ ، ص۱۲۳، الحدیث ۱۱۳

6 ......المعجم الاوسط ، ۴٦۷/٦، الحدیث ۹۴۲۷

7 ......مسند احمد، مسند عبدالله بن عباس...الخ ، ۱/٦۵۹، الحدیث ۲۸۰۴

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम अपनी पसन्दीदा चीज़ों को नहीं पा सकते जब तक कि ना पसन्दीदा चीज़ों पर सब्र न करो।

नीज़ इरशाद फ़रमाया कि अगर सब्र आदमी होता तो मेहरबान आदमी होता और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है।(1)

सब्र के मौज़ूअ़ पर बे शुमार अहादीस हैं जिन्हें हम ब ख़ौफ़े त़वालत छोड़ रहे हैं। अब क़नाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ दो ह़दीसें बयान की जाती हैं :

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने क़नाअ़त की वोह मुअ़ज़्ज़ज़ हुवा और जिस ने लालच किया वोह ज़लील हुवा।(2)

नीज़ फ़रमाया कि क़नाअ़त एक ऐसा ख़ज़ाना है जो फ़ना नहीं होता।(3)

इस मौज़ूअ़ पर पहले भी कुछ लिखा जा चुका है। واللّٰه اعلم

चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जो शख़्स लोगों से सुवाल करे ह़ालांकि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा न इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा। (شعب الایمان، ۳/ ۲۷٤، الحدیث۳۵۲٦)

﴾2﴿ जो शख़्स बिग़ैर ह़ाजत सुवाल करता है गोया वोह अंगारा खाता है।

(المعجم الکبیر، ٤/ ۱۵، الحدیث ۳۵۰٦)

﴾3﴿ जो माल बढ़ाने के लिये सुवाल करता है वोह अंगारे का सुवाल करता है तो चाहे ज़ियादा मांगे या कम का सुवाल करे। (مسلم،ص۵۱۸ ، الحدیث۱۰٤۱)

﴾4﴿ जो शख़्स लोगों से सुवाल करे इस लिये कि अपने माल को बढ़ाए तो वोह जहन्नम का गर्म पथ्थर है अब उसे इख़्तियार है चाहे थोड़ा मांगे या ज़ियादा त़लब करे।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، ۵/ ۱٦٦، الحدیث ۳۳۸۲)

---

1 ......

2 ......تفسیر روح البیان، البقرة ،تحت الآیة:۷۱، ۱/ ۱٦۱ و بریقة محمودیة فی شرح طریقة محمدیة وشریعة نبویة فی سیرة أحمدیة، ۳/ ۲۳

3 ......الزهد الکبیر للبیهقی ، ص ۸۸، الحدیث ۱۰٤

बाब 74

फ़ज़ीलते तवक्कुल

फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾ [1]

बेशक अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों को महबूब रखता है ।

और उस से बुलन्द मक़ाम जिस का फ़ाइल अल्लाह तआला की महब्बत से मौसूम है और जिस का लिबास वग़ैरा अल्लाह तआला की किफ़ायत से आरास्ता है, कौन सा है ? बस वोह शख़्स जिसे अल्लाह काफ़ी हो, निगहबानी करने वाला हो, अलबत्ता वोह अ़ज़ीम कामयाबी पर फ़ाइज़ुल मराम हुवा क्यूंकि महबूब को न तो अ़ज़ाब दिया जाता है और न उसे धुतकारा जाता है और न उसे दूर किया जाता है ।

अहादीस में भी तवक्कुल और मुतवक्किलीन की फ़ज़ीलत मरवी है : चुनान्चे, हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ने तमाम उम्मतों को मक्के में हज के मौक़अ़ पर जम्अ़ होने की जगह देखा और मैं ने अपनी उम्मत को देखा, उस ने हर बुलन्दी व पस्ती को घेर रखा था, मुझे उन की कसरते ता'दाद और सूरतों ने बहुत मुतअ़ज्जिब किया तब मुझ से कहा गया, क्या अब तुम राज़ी हो ? मैं ने कहा : हां ! फिर कहा गया : इन के साथ सत्तर हज़ार अफ़राद बिला हिसाब जन्नत में जाएंगे । आप से कहा गया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! वोह कौन लोग हैं जो बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे ? आप ने फ़रमाया : वोह लोग जो जिस्मों को नहीं दाग़ते, फ़ालें नहीं लेते, चोरी छुपे लोगों की बातें नहीं सुनते और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं । हज़रते अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो गए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! अल्लाह से दुआ़ कीजिये कि अल्लाह तआ़ला मुझे इन में से कर दे, आप ने फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! अ़क्काशा को इन में से कर दे ! फिर एक सहाबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह के नबी ! मेरे लिये भी दुआ़ कीजिये कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी इन में से कर दे ! आप ने फ़रमाया : अ़क्काशा तुम से सबक़त ले गए ।[2]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि अगर तुम सहीह़ मा'नों में अल्लाह पर तवक्कुल करते तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें परन्दों की तरह रिज़्क़ देता जो सुब्ह़ भूके निकलते हैं और शाम को सैर हो कर आते हैं ।[3]

1.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं । (پ٤،اٰل عمرٰن:١٥٩)

2.....صحیح ابن حبان، کتاب الرقاء والتمائم، ٥/٦٢٨، الجزء السابع، الحدیث ٦٠٥٢

3.....ترمذی، کتاب الزھد، باب فی التوکل علی اللّٰہ، ٤/١٥٤، الحدیث ٢٣٥١

फ़रमाने नबवी है : जो सब से क़त्ए तअ़ल्लुक़ कर के **अल्लाह** तआ़ला से तअ़ल्लुक़ जोड़ लेता है, **अल्लाह** तआ़ला हर मुश्किल में उसे काफ़ी होता है और उसे ऐसे त़रीक़े से रिज़्क़ देता है जो उस के वह्मो गुमान में भी नहीं होता और जो शख़्स दुन्या का हो जाता है **अल्लाह** तआ़ला उसे दुन्या के सिपुर्द कर देता है।(1)

फ़रमाने नबवी है : जो शख़्स इस चीज़ को पसन्द करता है कि वोह सब लोगों से ज़ियादा मालदार हो, उसे चाहिये कि मौजूद रिज़्क़ से ज़ियादा ए'तिमाद उस रिज़्क़ पर करे जो **अल्लाह** के हां मौजूद है।(2)

मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना जब फ़ाक़े से होते तो आप फ़रमाते कि नमाज़ के लिये खड़े हो जाओ और मेरे रब ने मुझे येही हुक्म दिया है।(3)

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا (4) *और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और इस पर सब्र करो।*

फ़रमाने नबवी है कि जिस शख़्स ने जन्तर मन्तर किया और जिस्म को दाग़ा, उस ने तवक्कुल नहीं किया।(5)

मरवी है कि जब ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को मुन्जनीक़ से आग में फेंके जाने के वक़्त कहा : क्या तुम्हारी कोई ह़ाजत है? आप ने फ़रमाया कि तुम से मेरी कोई ह़ाजत वाबस्ता नहीं है। आप अपने उस अ़हद को पूरा कर रहे थे जो इन्हों ने आग में फेंके जाने के लिये गिरिफ़्तारी के वक़्त किया था कि "मुझे मेरा रब काफ़ी है और वोह अच्छा कारसाज़ है"

और **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰۤى ﴿۳۷﴾ (6) *और इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) जिस ने अपना क़ौल पूरा किया।*

---

1 ......شعب الایمان ، الثانی عشر من شعب...الخ ، فصل فی انه کما ینبغی...الخ ، ۲/۲۸، الحدیث ۱۰۷۶

2 ......مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا، باب ماجاء فی مکارم الاخلاق، ص ۸، الحدیث ۵

3 ......المعجم الاوسط، ۱/۲۰۸، الحدیث ۶۸۸

4 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह। (پ۱۶، طٰهٰ: ۱۳۲)

5 ....مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث المغیرة بن شعبة، ۶/۳۴۱، الحدیث ۱۸۲۲۵

6 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इब्राहीम के जो पूरे अह़काम बजा लाया। (پ۲۷، النجم: ۳۷)

کشف الخفاء، ۱/۳۱۸، الحدیث ۱۱۳۴

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई : ऐ दावूद ! मेरा ऐसा कोई बन्दा नहीं जो मख़्लूक़ को छोड़ कर मेरा दामने रह़मत थाम लेता है और ज़मीनो आस्मान उस पर सख़्तियां लाते हैं मगर मैं उस की सब दुश्वारियां दूर कर देता हूं और उस के लिये रास्ता निकाल देता हूं।

ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मुझे बिच्छू ने डंग मारा तो मेरी वालिदा ने मुझे क़सम दी कि मैं किसी झाड़ फूंक करने वाले के पास जा कर दम कराऊं, चुनान्चे, मन्तर पढ़ने वाले ने मेरा वोह हाथ पकड़ा जो नहीं डसा गया था और येह आयत पढ़ी :

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ [1]

और उस ज़िन्दा पर तवक्कुल कर जिसे मौत नहीं आएगी।

और कहा कि इस आयत को सुनने के बा'द किसी आदमी के लिये येह मुनासिब नहीं है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी और की पनाह तलाश करे।[2]

एक आ़लिम से ख़्वाब में कहा गया कि जिस ने **अल्लाह** पर ए'तिमाद किया उस ने अपना रिज़्क़ जम्अ़ कर लिया। बा'ज़ उ़लमा का क़ौल है कि मुक़र्रर कर्दा रिज़्क़ का ह़ुसूल तुझे फ़र्ज़ कर्दा आ'माल से ग़ाफ़िल न कर दे क्यूंकि इस त़रह़ तेरी आ़क़िबत ख़राब हो जाएगी और तुझे वोही रिज़्क़ मिलेगा जो तेरा मुक़द्दर हो चुका है।

यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि बन्दे का बिग़ैर त़लब किये रिज़्क़ पा लेना इस बात की दलील है कि रिज़्क़ को बन्दे की तलाश का ह़ुक्म दिया गया है।

इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक राहिब से पूछा : तुम कहां से खाते हो ? उस ने कहा मुझे इस की ख़बर नहीं है, रब्बे जलील से पूछ कि वोह मुझे कहां से खिलाता है।

ह़ज़रते हरिम बिन ह़य्यान ने ह़ज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : आप मुझे कहां जाने का ह़ुक्म देते हैं ? उन्हों ने शाम की त़रफ़ इशारा किया, हरिम बोले : वहां गुज़र अवक़ात कैसे होगी ? ह़ज़रते उवैस ने फ़रमाया : हलाक हो जाएं वोह दिल जिन में ख़ुदा पर ए'तिमाद नहीं है और वोह शक में पड़ गए हैं, ऐसे दिलों को नसीह़त कोई फ़ाइदा नहीं देती है।

एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि जब से मैं **अल्लाह** तआ़ला को अपना कारसाज़ बनाने पर राज़ी हुवा हूं, मुझे हर भलाई का रास्ता मिल गया है। ऐ **अल्लाह** ! हमें भी ह़ुस्ने अदब अ़त़ा फ़रमा दे। (आमीन)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा। (پ۱۹، الفرقان : ۵۸)

2 ......الجامع الصغير، ص١٦٥، الحديث ٢٧٨٣

बाब 75

फ़ज़ीलते मस्जिद

फ़रमाने इलाही है :

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (1)

अल्लाह की मसाजिद को सिर्फ़ वोही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं।

फ़रमाने नबवी है कि जिस शख़्स ने अल्लाह की रज़ाजूई के लिये मस्जिद बनाई अगर्चे वोह मस्जिद भट-तीतर[2] के बिल के बराबर ही क्यूं न हो, अल्लाह तआला उस शख़्स के लिये जन्नत में महल बना देता है।[3]

फ़रमाने नबवी है : जब तुम में से कोई मस्जिद से महब्बत रखता है अल्लाह तआला उस से महब्बत रखता है।[4]

फ़रमाने नबवी है कि जब तुम में से कोई शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रक्अत नमाज़ अदा करे।[5]

फ़रमाने नबवी है कि मस्जिद के हमसाए की नमाज़ मस्जिद के सिवा जाइज़ नहीं।[6]

एक और इरशादे नबवी है कि तुम में से कोई फ़र्द जब तक जाए नमाज़ पर रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये मग़्फ़िरत व बख़्शिश की दुआएं करते हैं और कहते हैं : "ऐ अल्लाह ! इस पर सलामती नाज़िल फ़रमा, ऐ अल्लाह ! इस पर रहम फ़रमा और ऐ अल्लाह ! इसे बख़्श दे।" येह दुआएं उस वक़्त तक जारी रहती हैं जब तक कि वोह किसी से बात न करे या मस्जिद से निकल न जाए।[7]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाते (हैं)। (پ ١٠، التوبة: ١٨)

2.....ख़ाकी भूरे रंग का तीतर। **इल्मिय्या**

3.....صحیح ابن حبان، کتاب الصلاة، باب المساجد، ٦٩/٣، الجزء الثالث، الحدیث ١٦٠٨

4.....المعجم الاوسط، ٤٠٠/٤، الحدیث ٦٣٨٣

5.....بخاری، کتاب الصلاة، باب اذا دخل المسجد...الخ، ١٧٠/١، الحدیث ٤٤٤

6.....المستدرك للحاکم، کتاب الامامة...الخ، باب لاصلاة لجار...الخ، ٥١٩/١، الحدیث ٩٣٣

7.....بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد...الخ، ٢٣٦/١، الحدیث ٦٥٩

फ़रमाने नबवी है कि आख़िर ज़माने में मेरी उम्मत के कुछ ऐसे लोग होंगे जो मस्जिदों में आएंगे और गुरौह बना कर दुन्यावी बातें करते रहेंगे और दुन्या की महब्बत के क़िस्से बयान करेंगे, उन के साथ न बैठना, अल्लाह तआला को उन की कोई ज़रूरत नहीं है।(1)

फ़रमाने नबवी है कि अल्लाह तआला का येह इरशाद बा'ज़ इल्हामी किताबों में मौजूद है कि ज़मीन पर मस्जिदें मेरा घर हैं और इन की ता'मीर व आबादी में हिस्सा लेने वाले मेरे ज़ाइर हैं, पस ख़ुश ख़बरी है मेरे उस बन्दे के लिये जो अपने घर में त़हारत ह़ासिल कर के मेरे घर में मेरी ज़ियारत को आता है लिहाज़ा मुझ पर ह़क़ है कि मैं आने वाले ज़ाइर को इ़ज़्ज़त व वक़ार अ़ता करूं।(2)

सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जब तक तुम किसी ऐसे आदमी को देखो जो मस्जिद में आने का आ़दी है तो उस के ईमान की गवाही दो।(3)

जनाबे सईद बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है : जो शख़्स मस्जिद में बैठता है, गोया वोह अल्लाह की मजलिस में बैठता है लिहाज़ा उसे भलाई के सिवा कोई और बात नहीं करना चाहिये।

एक ह़दीस में येह भी आया है कि मस्जिद में दुन्यावी बातें नेकियों को इस त़रह़ खा जाती हैं जैसे जानवर चारा खा जाते हैं।(4)

इमाम नख़ई رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है : सलफ़े सालिह़ीन ने फ़रमाया कि रात की तारीकी में मस्जिद में आने वाले के लिये जन्नत वाजिब होती है।

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का फ़रमान है कि जो शख़्स मस्जिद में चराग़ जलाता है, जब तक उस चराग़ की रोशनी से मस्जिद मुनव्वर रहती है, ह़ामिलीने अ़र्श और तमाम फ़िरिश्ते उस के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं।

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب من استحيى من الله...الخ، ٥/٤٦١، الحديث ٧٩٨٦

2 ......فيض القدير، ٢/٥٦٤، الحديث ٢٢٥٨ و الزهد لأبي داود، محمد بن كعب، ص٣٧٨، الحديث ٤٨٣ و المعجم الكبير، ٦/٢٥٥، الحديث ٦١٤٥

3 ......ترمذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة التوبة، ٥/٦٤، الحديث ٣١٠٤

4 ......كشف الخفاء، ١/٣١٥، الحديث ١١١٩

हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब आदमी मर जाता है तो उस की नमाज़ पढ़ने की जगह और आस्मान की जगह, जहां से उस के अमल चढ़ा करते हैं, उस पर रोते हैं फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

"पस उन पर न ज़मीनो आस्मान रोए और न ही उन्हें ढील दी गई।"(1)

(या'नी जब ऐसा शख़्स मरता है जिस की नमाज़ पढ़ने की जगह नहीं होती तो उस पर ज़मीनो आस्मान नहीं रोते)

हज़रते इब्ने अब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है कि नमाज़ी पर चालीस सुब्हें(2) ज़मीन रोती है।

हज़रते अता अल ख़ुरासानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि बन्दा जब ज़मीन के किसी टुकड़े पर सजदा करता है तो वोह टुकड़ा क़ियामत के दिन उस के अमल की गवाही देगा और उस बन्दे की मौत के दिन वोह टुकड़ा रोता है।

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि ज़मीन का हर वोह टुकड़ा जिस पर नमाज़ अदा की जाती है या ज़िक्रे ख़ुदा किया जाता है वोह इर्द गिर्द के तमाम क़त्आत पर फ़ख़्र करता है और ऊपर से नीचे सातवीं ज़मीन तक वोह मसर्रत व शादमानी महसूस करता है और जब बन्दा किसी ज़मीन पर नमाज़ पढ़ता है वोह ज़मीन उस पर फ़ख़्र करती है।

और येह भी कहा गया है कि कोई जमाअत ऐसी नहीं है जो कहीं जा कर ठहरे मगर ज़मीन का वोह टुकड़ा जो उन की क़ियाम गाह है, या तो उन पर सलामती भेजता है या उन पर ला'नत करता है।

कुत्तों की तरह काटते और नोचते होंगे

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर एक दूसरे की मदद करने वाले जम्अ होंगे, फिर वोह घुटनों के बल खड़े होंगे और एक दूसरे को कुत्तों की तरह काटते और नोचते होंगे, येह वोह बद नसीब होंगे जो बिग़ैर तौबा किये दुन्या से रुख़्सत हुवे होंगे। (بحرالدموع، ص۱۸۵)

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई। (پ۲۵، الدخان: ۲۹)

2 .....या'नी चालीस दिन तक। **इल्मिय्या**

बाब 76

रियाज़त व फ़ज़ीलते अस्हाबे करामत

येह बात अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लेनी चाहिये कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे की भलाई चाहता है तो वोह बन्दा अपने उ़यूब पर निगाह डालता है, जिस की बसीरत कामिल हो जाती है उस से कोई गुनाह पोशीदा नहीं रहता लिहाज़ा वोह जूंही अपने उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होता है उस के लिये इन का इ़लाज मुमकिन हो जाता है लेकिन अक्सर जाहिल अपने उ़यूब से ना वाक़िफ़ होते हैं, वोह दूसरे की आंख का तिन्का तो देख लेते हैं मगर उन्हें अपनी आंख का शहतीर नज़र नहीं आता, जो शख़्स अपने उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होना चाहे उस के लिये चार त़रीक़े हैं :

पहला त़रीक़ा : ऐसे शैख़े कामिल की सोह़बत इख़्तियार करे जो अपने उ़यूब का आश्ना हो और पोशीदा नफ़्सानी ख़्वाहिशात ख़बासतों से कमा ह़क़्क़ुहू वाक़िफ़ हो, वोह उसे अपने नफ़्स का ह़ाकिम बनाए, इ़बादात में उस के इशारों पर चले, येही कुछ मुरीद को शैख़ के हुक्म पर और शागिर्द को उस्ताद के हुक्म पर करना चाहिये ताकि उस का शैख़ और उस्ताद उस के बात़िनी उ़यूब और इन के इ़लाज की तश्ख़ीस कर सकें, हमारे ज़माने में इस त़रीक़े की बहुत इ़ज़्ज़त है।

दूसरा त़रीक़ा : ऐसे दोस्त का हम मजलिस बने जो सादिक़, साह़िबे बसीरत और दीनदार हो, आदमी उसे अपने नफ़्स का निगहबान बनाए ताकि वोह दोस्त उस के अह़वाल व अफ़्आ़ल पर नज़र रखे और इन में से जो आ़दत और ज़ाहिरी व बात़िनी ऐ़ब नज़र आए वोह उसे उस पर तम्बीह करे। अ़क़्लमन्द और अकाबिर उ़लमाए दीन का येही त़रीक़ था, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआ़ला उस जवान पर रह़्म फ़रमाए जो मुझे मेरे उ़यूब पर मुत्त़लअ़ करे और आप ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपने उ़यूब पूछा करते थे, वोह जब भी आते आप उन से फ़रमाते क्या आप ने मेरे अन्दर कोई ऐसी चीज़ पाई है जिसे आप बुरा समझते हों? ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मा'ज़िरत चाही मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब बहुत इस्रार किया तो उन्हों ने कहा : मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम एक दस्तर ख़्वान पर दो सालन जम्अ़ करते हो और तुम्हारा रात और दिन का अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा लिबास है, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया क्या आप ने इस के सिवा कोई और बात भी सुनी है? उन्हों ने कहा : नहीं ! तब आप ने फ़रमाया कि मैं ने इन को तर्क किया। और ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया करते

(आप मुनाफ़िक़ों के बारे में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़दान थे) फ़रमाइये ! कहीं मेरे अन्दर आप को मुनाफ़क़त की अ़लामतें तो नज़र नहीं आईं ? आप अपने जलीलुल क़द्र और अ़ज़ीमुश्शान मर्तबे के बा वुजूद अपने नफ़्स की देख भाल और सरज़निश से ग़ाफ़िल न होते।

जिस किसी में अ़क़्ल वाफ़िर और बुलन्द होती है वोह तकब्बुर से किनारा कशी कर लेता है और अपने नफ़्स की सरज़निश से ग़ाफ़िल नहीं होता और इसी वज्ह से वोह बुलन्द मरातिब पर सरफ़राज़ हुवा।

ऐसे शख़्स को दोस्त न रखो जो चश्मपोशी से काम लेते हुवे तुम्हें तुम्हारे उ़यूब न बतलाए और एक मुक़र्रर ह़द से बढ़ने की कोशिश न करते हुवे तुम्हें अपने मुतअ़ल्लिक़ अन्धेरे में रखे, नीज़ ऐसे लोगों को दोस्त बनाओ जो ह़ासिद और मत़लब परस्त हों ताकि वोह तुम्हारी नेकियां भी ऐ़बों की सूरत में दिखाएं और तुम उन से सबक़ ह़ासिल करो और ऐसे चश्मपोशी करने वाले दोस्त से बचो जो तुम्हारी बुराइयों को ख़ूबियां कहे।

इसी लिये कहते हैं कि जब ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लोगों से उ़ज़्लत नशीनी इख़्तियार फ़रमाई तो किसी ने पूछा आप लोगों से मेल जोल क्यूं नहीं रखते ? आप ने फ़रमाया : मैं ऐसी क़ौम से कैसे तअ़ल्लुक़ात रखूं जो मुझ से ऐ़ब छुपाते हैं।

दीनदार लोग इब्तिदाए ह़ाल ही से इस बात के मुतमन्नी होते थे कि लोग उन्हें उन के उ़यूब पर मुत्त़लअ़ करें और वोह अपनी इस्लाह़ कर लें लेकिन हमारी ह़ालत येह है कि जो हमें नसीह़त करता है और हमें हमारे उ़यूब बताता है, हम उसे अपना सब से बड़ा दुश्मन समझते हैं और येही बात इन्सान के ईमान को कमज़ोर कर देती है क्यूंकि बुरी आ़दतें सांप बिच्छू की त़रह़ डसने वाली हैं, अगर हम से कोई शख़्स येह कह दे कि तुम्हारे कपड़ों में बिच्छू है तो हम उस के एह़सान मन्द होते हैं, उस का शुक्रिय्या अदा करते हैं, बिच्छू से बचाव की सूरत और उसे मारने की तदबीर करने लगते हैं ह़ालांकि इस की तक्लीफ़ सिर्फ़ बदन मह़सूस करता है और एक दो दिन से ज़ियादा इस का दुख भी बाक़ी नहीं रहता मगर बुरे ख़साइल की तक्लीफ़ दिल की गहराइयों में मह़सूस की जाती है और मुझे अन्देशा है कि येह दुख मौत के बा'द भी बाक़ी रहेगा, अगर हमेशा बाक़ी न रहा तब भी हज़ारों बरस इस की पादाश में दुख दर्द झेलने पड़ेंगे।

दूसरी बात येह है कि हम बजाए इस के कि नासेह़ की नसीह़त सुन कर अपने इन उ़यूब के इज़ाले की फ़िक्र करें, अपने मोह़सिन का शुक्रिय्या अदा करें, उलटा उस के मुक़ाबले में उतर आते हैं और उस की बातों के जवाब में यूं कहते हैं कि तुम भी ऐसा ऐसा काम कर चुके हो हमें उस की

दुश्मनी सच्ची बातों पर अ़मल करने से रोक देती है और येह सब कुछ दिल की सख़्ती का नतीजा होता है जो कसरते गुनाह से पथ्थर से भी ज़ियादा सख़्त हो जाता है, इन का मम्बअ़ व मर्कज़ ईमान की कमज़ोरी है लिहाज़ा हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! हमें राहे रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ दे, हमें अपने ऐ़ब देखने, इन का इ़लाज करने की हिम्मत दे और हमें अपनी रह़मत के तुफ़ैल हर शख़्स का शुक्रिय्या अदा करने की तौफ़ीक़ दे, जो हमें हमारे ऐ़बों पर मुत्तलअ़ करे।

तीसरा त़रीक़ा : अपने दुश्मनों से अपने उ़यूब सुने क्यूंकि दुश्मन की आंख हर ऐ़ब को ज़ाहिर कर देती है, अ़क़्लमन्द इन्सान कीना परवर दुश्मन से अपने उ़यूब सुन कर ऐसे चश्मपोशी करने वाले दोस्त से ज़ियादा नफ़्अ़ ह़ासिल कर सकता है जो उस की ता'रीफ़ो तौसीफ़ करता रहता है और उस के ऐ़ब छुपाता रहता है मगर मुसीबत येह है कि इन्सानी त़बाएअ़ दुश्मन की बात को झूट और ह़सद पर मब्नी ख़याल करती हैं लेकिन अ़क़्लमन्द दुश्मनों की बातों से भी सबक़ सीखते हैं और अपने उ़यूब की तलाफ़ी करते हैं कि आख़िर कोई ऐ़ब तो ज़रूर है जो उस के दुश्मनों की निगाह में है।

चौथा त़रीक़ा : लोगों से घुल मिल जाए, उन का जो फ़े'ल उसे अच्छा लगे उसे अपनाए और जो फ़े'ल उसे बुरा लगे उस में ग़ौरो फ़िक्र करे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे अपने उ़यूब दूसरे के आईने में नज़र आ रहे हैं क्यूंकि मोमिन मोमिन का आईना होता है लिहाज़ा दूसरों के उ़यूब के आईने में अपने ऐ़ब तलाश करे और वोह जानता है कि नफ़्सानी ख़्वाहिश में त़बाएअ़ एक दूसरे के क़रीब हैं, जो चीज़ एक ज़माने के लोगों में होगी वोह दूसरे ज़माने के लोगों में भी होगी लिहाज़ा इसे अपने नफ़्स में तलाश करना चाहिये और अपने नफ़्स को बुरी चीज़ों से पाक करना चाहिये। मैं समझता हूं कि अदब सिखाने के लिये येह गुर काफ़ी है, अगर लोग उन तमाम चीज़ों को तर्क कर दें जिन को वोह दूसरों से मह़बूब समझते हैं तो उन्हें किसी दूसरे अदब के सिखाने की ज़रूरत ही न पड़े।

ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام से पूछा गया कि आप को अदब किस ने सिखाया ? आप ने फ़रमाया मुझे किसी ने अदब नहीं सिखाया बल्कि मैं ने जाहिल की जहालत को बुरा समझते हुवे उस से किनारा कशी इख़्तियार कर ली।

मज़्कूरए बाला तमाम त़रीक़े उन लोगों के लिये हैं जिसे शैख़े कामिल, अ़क़्लमन्द, साह़िबे बसीरत, उ़यूबे नफ़्स पर इन्तिहाई मुश्फ़िक़ाना त़रीक़े से नसीह़त करने वाला, दीन के मुआ़मलात को समझाने वाला, अपने नफ़्स की तक्मीले इस्लाह़ करने वाला और बन्दगाने ख़ुदा की इस्लाह़ का बीड़ा उठाने वाला रहबर न मिले, जिस ने ऐसे शैख़े कामिल को पा लिया उस ने त़बीबे ह़ाज़िक़ को

पा लिया लिहाज़ा उसे उस की सोहबत लाज़िम करनी चाहिये क्यूंकि येही वोह शख़्सिय्यत है जो उसे उस की बीमारी से नजात दिलाएगी और इस मोहलिक मरज़ से नजात देगी जो उसे ब तदरीज हलाकत की त़रफ़ ले जा रही है।

समझ लो कि हम ने जो कुछ ज़िक्र किया है अगर तुम इसे इब्रत की निगाह से देखो तो तुम्हारी बसीरत कमाल पर पहुंचेगी और इल्म व यक़ीन की वज्ह से तुम पर दिल की तमाम बीमारियां, तक्लीफ़ें और इन के इलाज ज़ाहिर हो जाएंगे, अगर तुम इस दरजए कमाल को न पा सके तब भी ज़रूरी है कि तुम्हारा ईमान और तस्दीक़े क़ल्बी फ़ौत न होने पाए और हर उस शख़्स की तक़्लीद करो जो क़ाबिले तक़्लीद हो क्यूंकि इल्म की त़रह़ ईमान के भी दरजात हैं और इल्म ईमान के बा'द ह़ासिल होता है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ [1]

अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो तुम में से ईमान लाए बुलन्द मर्तबा देगा और जिन्हें इल्म दिया गया है उन्हें दरजात दिये जाएंगे।

लिहाज़ा जिस शख़्स ने येह जान लिया कि नफ़्स व शहवाते नफ़्सानी की मुख़ालफ़त ही अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ जाने का रास्ता है और वोह इन के अस्बाब व इलल तक कमा ह़क़्क़ुहू रसाई ह़ासिल न कर सका, वोह ईमानदारों में से है और जब कोई शख़्स शहवात के इन मुआ़विनीन पर मुत्तलअ़ हो गया जिन का हम ने ज़िक्र किया है वोह उन लोगों में से है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इल्म दिया है और जिन से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वा'दा किया है। और जो शख़्स इन उमूर को मद्दे नज़र रखते हुवे कुरआनो सुन्नत और उ़लमाए किराम के अक़्वाल से दीन की ह़क़ीक़त को समझता है और ईमान की पुख़्तगी चाहता है उस का मर्तबा बुलन्दो बाला है, फ़रमाने इलाही है :

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۙ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ؕ [2]

और जिस ने नफ़्स को ख़्वाहिश से रोक दिया पस बेशक जन्नत ही उस का ठिकाना है।

और मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ [3]

येही वोह लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जिन के दिलों को तक़्वा के लिये ख़ालिस कर लिया है।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा। (پ۲۸، المجادلة:۱۱)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है। (پ۳۰، النّٰزعٰت:۴۰،۴۱)

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है। (پ۲۶، الحجرات:۳)

फ़रमाने नबवी है कि मोमिन पांच मसाइब में घिरा होता है, मोमिन उस से ह़सद करता है, मुनाफ़िक़ उस से अ़दावत रखता है, काफ़िर उसे क़त्ल करने की कोशिशों में होता है, शैत़ान उसे गुमराह करता है और नफ़्स उस से झगड़ा करता है,(1) लिहाज़ा साबित हुवा कि नफ़्स झगड़ालू दुश्मन है जिस से मुक़ाबला करना इन्तिहाई ज़रूरी है।

मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : ऐ दावूद ! ख़ुद बचो और दोस्तों को भी ख़्वाहिशात की पैरवी करने से डराओ क्यूंकि दिल दुन्यावी ख़्वाहिशात में मगन होते हैं, उन की अ़क़्ल मुझ से दूर हो जाती है।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उस शख़्स के लिये बिशारत है जिस ने इन वा'दा कर्दा इन्आ़मात की ख़ात़िर जो अभी नज़रों से ग़ाइब हैं, ज़ाहिरी चीज़ों की ख़्वाहिशात तर्क कर दी हैं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा की ऐसी जमाअ़त से जो जिहाद से आ रहे थे फ़रमाया : ख़ुश आमदीद ! तुम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की त़रफ़ वापस आए हो, अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! जिहादे अक्बर क्या है ? आप ने फ़रमाया : नफ़्स से जिहाद करना।(2)

फ़रमाने नबवी है कि मुजाहिद वोह है जो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में नफ़्स से मुक़ाबला करता है।(3)

फ़रमाने नबवी है कि अपने नफ़्स के मसाइब को रोक, इस की ख़्वाहिशात की पैरवी में अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी न कर, जब क़ियामत के दिन तेरा नफ़्स तुझ से झगड़ा करेगा तो तेरे वुजूद का एक ह़िस्सा दूसरे पर ला'नत करेगा, अल्लाह तआ़ला अगर तुझे बख़्श दे और तेरे ऐबों को ढांप ले तो येह और बात है।(4)

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़ौल है कि मैं ने नफ़्स से बढ़ कर किसी चीज़ का मुश्किल इलाज नहीं किया जिस में कभी मुझे फ़ाइदा और कभी नुक़्सान हुवा। ह़ज़रते अबू अ़ब्बास मौसिली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाया करते थे : ऐ नफ़्स ! न तो तू दुन्यादारों के साथ रह कर ऐ़शो इ़श्रत के मज़े लेता है और न ही तू आख़िरत की त़लब में नेकों के साथ रह कर इ़बादतो रियाज़त करता है, गोया तू मुझे जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान रोक रहा है तुझे शर्म नहीं आती ?

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، الباب الاول...الخ، الفصل السابع...الخ، ١/٩٤، الجزء الاول، الحديث ٨٠٥

2 ......تاريخ بغداد، واصل بن حمزة...الخ، ١٣/٤٩٨، الرقم ٧٣٤٥

3 ......شعب الايمان، السابع والسعبون من شعب الايمان...الخ، ٧/٤٩٩، الحديث ١١١٢٣

4 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٦/٣٣٣

हज़रते हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि नफ़्स सरकश जानवर से भी ज़ियादा लगाम का मोहताज है, हज़रते यहया बिन मुआज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि नफ़्स का रियाज़त की तल्वारों से मुक़ाबला कर। रियाज़त की चार क़िस्में हैं : मा'मूली खाना, मा'मूली सोना, हाजत के वक़्त बोलना और तमाम लोगों से दुख उठाना, कम खाने से शहवात मर जाती हैं, कम सोने से इरादे पाकीज़ा होते हैं, कम बोलने से सलामती अता होती है और लोगों से दुख उठाने की वज्ह से इन्सान आ'ला मरातिब तक पहुंच जाता है। किसी इन्सान के लिये ज़ुल्म के वक़्त हौसले से बढ़ कर उम्दा चीज़ और कोई नहीं है, तकालीफ़ में सब्र करना भी इसी तरह है, जब भी नफ़्स गुनाहों और ख़्वाहिशात की तरफ़ मैलान करे, फ़ुज़ूल गुफ़्तगू करने के खुश गवार तसव्वुर करने लगे, इस पर कम खाने, कम सोने और बेदारी की तल्वारें खींच कर इसे कम बोलने की सज़ा दे, पोशीदगी में इस पर वार कर ! यहां तक कि तू ज़ुल्म और इन्तिक़ाम से महफ़ूज़ हो जाए, तमाम लोगों को इस की आफ़ात से अम्न हासिल हो, इस की शहवात की तारीकियों को ज़ाइल कर, ताकि इस की गुमराही की मुसीबत से नजात पा ले, तब तू पाकीज़ा और रूहानी व नूरानी असरार का मालिक बन जाएगा फिर तू उस तेज़ रफ़्तार घोड़े की तरह जो मैदान में अपनी तेज़ रफ़्तारी के जोहर दिखाता है नेकियों और इबादत की राहों में अपनी सुबुक रवी और तेज़गामी के जोहर दिखाना और बाग़ के मालिक की तरह बाग़ की रविशों पर चहल क़दमी करना।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मज़ीद फ़रमाया कि इन्सान के तीन दुश्मन हैं : दुन्या, शैतान और नफ़्स, दुन्या को छोड़ कर इस से महफ़ूज़ रह, शैतान की मुख़ालफ़त कर और ख़्वाहिशात छोड़ कर नफ़्स के शर से महफ़ूज़ हो जा।

किसी हकीम का क़ौल है कि जिस शख़्स पर उस का नफ़्स ग़ालिब आ जाता है वोह शहवात की महब्बत का असीर हो जाता है और ख़्वाहिशात की जेल का क़ैदी बन जाता है, नफ़्स के हाथ में उस की बागें होती हैं, वोह उस पर ज़ुल्म व तशद्दुद करता है और जहां चाहता है, उसे घसीट कर ले जाता है लिहाज़ा उस का दिल तमाम दीनी फ़वाइद से महरूम कर दिया जाता है।

हज़रते जा'फ़र बिन हमीद رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उलमा व हुकमा को इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ पाया है कि दुन्यावी ने'मतें छोड़े बिग़ैर उख़रवी ने'मतें हासिल नहीं हो सकतीं।

हज़रते अबू यहया अल वर्राक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि जिस शख़्स ने अपने आ'ज़ा की ख़्वाहिशात को पूरा किया, उस ने गोया दिल में पशेमानियों के बीज बोए। हज़रते वुहैब बिन वर्द رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि जो कुछ क़ूते-ला-यमूत(1) से ज़ाइद है वोह शहवत है, मज़ीद फ़रमाया कि जिस ने दुन्यावी ख़्वाहिशात को महबूब रखा वोह रुस्वाई के लिये तय्यार हुवा।

1.....इस क़दर ख़ूराक जिस से ज़िन्दगी क़ाइम रहे। (उर्दू लुग़त, 14/359)

हिकायत

अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जब सल्तनते मिस्र पर फ़ाइज़ पाया और खुद यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की गुज़रगाह पर एक बुलन्द टीले के ऊपर बैठी हुई थी, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام तक़रीबन बारह हज़ार उमराए ममलुकत के साथ वहां से गुज़र रहे थे तो उस ने कहा : पाक है वोह ज़ात जो गुनाहों के सबब बादशाहों को ग़ुलाम बना देती है, बेशक हिर्स और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी ने बादशाहों को ग़ुलाम बना दिया है और येही मुफ़्सिदीन की जज़ा है और सब्र व तक़्वा ने ग़ुलामों को बादशाह कर दिया है, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआला ने जब अज़ीज़े मिस्र की बीवी की चालीस बातें बतलाईं तो वोह बे साख़्ता कह उठे जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

"बेशक जो तक़्वा और सब्र इख़्तियार करता है **अल्लाह** तआला नेकियां करने वालों के अज्र को ज़ाएअ़ नहीं करता है।"(1)

हज़रते जुनैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कहना है कि एक मरतबा मैं रात को बेदार हो कर इबादत में मश्ग़ूल हुवा मगर मुझे इबादत में मज़ा न आया, तब मेरा इरादा हुवा कि जा कर सो जाऊं लेकिन नींद मुझ से कोसों दूर, मैं उठ कर बैठ गया फिर भी मुझे चैन न आया चुनान्चे, मैं बाहर निकल गया, रास्ते में मैं ने एक आदमी को कम्बल में लिपटा पड़ा देखा जब उस ने मेरी आहट महसूस की तो कहा ऐ अबल क़ासिम ! ज़रा मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाइये ! मैं ने कहा : आक़ा ! बिग़ैर किसी के बुलाए के आ जाऊं ? वोह कहने लगा : हां ! मैं ने **अल्लाह** तआला से सुवाल किया था कि आप के दिल में मेरे लिये तह़रीक पैदा करे। मैं ने कहा : **अल्लाह** तआला ने ऐसे ही किया है, बतलाइये ! आप की ह़ाजत क्या है ? वोह शख़्स कहने लगा : नफ़्स की बीमारी उस के लिये इलाज कब बनती है ? मैं ने कहा : जब आप अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करें। तब वोह अपने आप से कहने लगा : सुन लिया ! मैं ने सात मरतबा तुझे येही बात बतलाई थी मगर तू ने जुनैद के सिवा किसी की बात सुनने से इन्कार कर दिया था, अब सुन लिया कि जुनैद क्या कहता है ? फिर वोह चल दिया और जाने कहां ग़ाइब हो गया।

हज़रते यज़ीदुर्रक़्क़ाशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि तुम मुझे दुन्या में ठन्डे पानी से बचाओ, कहीं मैं आख़िरत में इस से महरूम न हो जाऊं। किसी ने हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा : मैं कब बोलूं ? उन्हों ने कहा : जब तुझे चुप रहने की ख़्वाहिश हो, उस ने कहा : और चुप कब रहूं ? आप ने फ़रमाया : जब तुझे गुफ़्त्गू करने की ख़्वाहिश हो।

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का फ़रमान है कि जो जन्नत का मुश्ताक़ हो वोह दुन्यावी ख़्वाहिशात से किनारा कश हो जाए।

1...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता। (پ۱۳، یوسف:۹۰)

बाब 77

ता'रीफ़े ईमान व ज़म्मे मुनाफ़क़त

जान लीजिये कि ईमान **अल्लाह** तआ़ला की वह्दानिय्यत की तस्दीक़ और रसूलों के लाए हुवे अह्कामात की ताईद व तस्दीक़ और आ'माल के मजमूए़ का नाम है, फ़रमाने इलाही है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ یَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ۝۱۵ (1)

*ईमानदार लोग वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर उन्हों ने शक नहीं किया और राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों के साथ जिहाद किया येही लोग सच्चे हैं।*

दूसरी आयत में इरशाद है :

وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَۚ (2)

*लेकिन भलाई उस के लिये है जो **अल्लाह** और क़ियामत के दिन और फ़िरिश्तों और किताबों और नबियों पर ईमान लाया।*

इसी त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने बीस सिफ़ात मसलन अ़ह्द का पूरा करना, मसाइब पर सब्र करना वग़ैरा, ईमाने कामिल की शर्तें रखी हैं,

फिर इरशाद फ़रमाया : "येही लोग हैं जिन्हों ने सच किया।"(3)

एक और आयत में फ़रमाने इलाही है :

"**अल्लाह** तआ़ला उन लोगों को बुलन्द करेगा जो तुम में से ईमान लाए और जिन को इल्म दिया गया है उन्हें दरजात।"(4)

एक और मक़ाम पर इरशादे इलाही है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोही सच्चे हैं। (پ۲٦،الحجرات:۱۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर। (پ۲، البقرۃ:۱۷۷)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की। (پ۲، البقرۃ:۱۷۷)

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा। (پ۲۸، المجادلۃ:۱۱)

"नहीं बराबर तुम में से वोह शख़्स कि जिस ने फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च किया और लड़ाई की।"(1)

फ़रमाने इलाही है : "येह लोग अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक़ मरातिब पर फ़ाइज़ हैं।"(2)

फ़रमाने नबवी है कि ईमान बरह्ना है और इस का लिबास तक़्वा है।(3)

और इरशाद फ़रमाया कि ईमान के कुछ ऊपर सत्तर दरजे हैं और कम तरीन दरजा रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर करना है।(4)

येही ह़दीस इस अम्र पर दलालत करती है कि कामिल ईमान अ़मल से मशरूत़ व मरबूत़ है और ईमान का निफ़ाक़ से बराअत और शिर्के ख़फ़ी से अ़लाह़िदगी पर मरबूत़ होना हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से साबित है, इरशाद होता है चार चीज़ें जिस में हों वोह नमाज़ी व रोज़ादार होने के बा वुजूद ख़ालिस मुनाफ़िक़ है अगर्चे वोह ख़ुद को मोमिन ही समझता रहे, जब वोह बात करे तो झूट बोले वा'दा कर के वा'दा ख़िलाफ़ी करे, उस के हां अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे और जब झगड़ा करे तो बेहूदापन पर उतर आए।(5)

बा'ज़ रिवायतों में है कि जब मुआ़हदा करे तो उसे तोड़ डाले।(6)

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीस में है : दिल चार हैं : दुन्यावी ख़्वाहिशात से मुनज़्ज़ा दिल जिस में मा'रिफ़त का चराग़ रोशन है और येही मोमिन का दिल है। ऐसा दिल जिस में ईमान और निफ़ाक़ दोनों हों ऐसे दिल में ईमान सब्ज़े की त़रह़ है जो मीठे पानी से नश्वो नुमा पाता है और निफ़ाक़ ऐसे ज़ख़्म की त़रह़ है जो पीप और गन्दे ख़ून से फैलता जाता है, इन में से जो चीज़ ग़ालिब आ जाती है दिल पर उसी का हुक्म चलता है।(7)

दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं कि जो इन में से ग़ालिब हो जाता है वोह दूसरे को ले जाता है।(8)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया। (پ۲۷،الحدید:۱۰)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह अल्लाह के यहां दरजा दरजा हैं। (پ٤،اٰل عمرٰن:۱٦۳)

3 ......مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا، ص ۸٤، الحدیث ۹۷ لیس بمرفوع

4 ......ترمذی،کتاب الایمان، باب ماجاء فی اضافة...الخ، ٤/۲۷۸، الحدیث ۲٦۲۳

5 ......بخاری،کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ۱/۲۵، الحدیث ۳٤ بالتقدیم و التاخیر و مسند احمد، مسند ابی هریرة، ۳/٦۳۹، الحدیث ۱۰۹۲۵

6 ......شعب الایمان،٤/۷۷،الحدیث ٤۳۵۲

7 ......المعجم الصغیر للطبرانی، ۲/۱۱۰و مسند احمد بن حنبل،٤/۳٦، الحدیث ۱۱۱۲۹ ملتقطا

8 ......قوت القلوب ، ۱/۲۰۰

फ़रमाने नबवी है कि मेरी उम्मत के अक्सर मुनाफ़िक़ क़ारी हैं ।(1)

एक ह़दीस में है कि मेरी उम्मत में शिर्क, सफ़ा पहाड़ पर चलने वाली च्यूंटी से भी ज़ियादा पोशीदा है ।(2)

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में आदमी एक बात ऐसी करता था जिस के सबब मरते वक़्त तक वोह मुनाफ़िक़ हो जाता था और मैं तुम से वैसी दस बातें रोज़ाना सुनता हूं ।

बा'ज़ उ़लमा का कहना है कि वोह शख़्स निफ़ाक़ से बहुत क़रीब है जो ख़ुद को निफ़ाक़ से बरी समझता है ।

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि आज हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक से ज़ियादा मुनाफ़िक़ हैं तब मुनाफ़िक़ अपना निफ़ाक़ पोशीदा रखते थे और अब ज़ाहिर करते हैं, येही निफ़ाक़ कमाले ईमानी और सिद्क़े ईमान की ज़िद है क्यूंकि येह पोशीदा है, जो इस से ख़ौफ़ज़दा होता है वोह इस से दूर होता है और इस से क़रीब वोही होता है जो ख़ुद को इस से बरी समझता है चुनान्चे, ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा गया कि लोग कहते हैं : आज निफ़ाक़ बाक़ी नहीं रहा है, आप ने फ़रमाया : ऐ भाई ! अगर मुनाफ़िक़ हलाक हो जाएं तो तुम रास्तों पर वह़्शत ज़दा हो जाओ और आप ने या किसी और ने कहा कि अगर मुनाफ़िक़ों के सुम पैदा हो जाएं तो हम ज़मीन पर क़दमों से न चल पाएं (इन की कसरत के बाइ़स राह चलना दुश्वार हो जाए) ।

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक आदमी को ह़ज्जाज को बुरा भला कहते सुन कर फ़रमाया कि अगर ह़ज्जाज मौजूद होता तो तुम येह बातें करते ? उस ने कहा : नहीं ! आप ने येह सुन कर फ़रमाया कि हम इस चीज़ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में निफ़ाक़ में शुमार करते थे ।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जो शख़्स दुन्या में दो ज़बानों वाला होता है आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला उसे दो ज़बानों वाला बनाएगा, मज़ीद फ़रमाया : बदतरीन आदमी दो चेहरों वाला है जो इस के पास एक चेहरे से और दूसरे के पास दूसरे चेहरे से जाता है (या'नी मुनाफ़क़त करता है) ।

---

1 ......مسند احمد بن حنبل،٦/١٤١، الحديث١٧٤١٥ و شعب الايمان، الخامس والاربعون من شعب الايمان...الخ، ٥/٣٦٣، الحديث ٦٩٥٩

2 ......نوادر الاصول، الاصل السادس والسبعون والمائتان، ٢/١١٩٤، الحديث ١٤٩٢

हज़रते हसन बसरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा गया : कुछ लोग कहते हैं कि आप को निफ़ाक़ का ख़ौफ़ नहीं है ? आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मुझे ज़मीन की हर बुलन्दी के बराबर सोने के मालिक होने से येह बात ज़ियादा पसन्द है कि मुझे मा'लूम हो जाए कि मैं निफ़ाक़ से बरी हूं।

हज़रते हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : निफ़ाक़ की वज्ह से ज़बान और दिल मुख़्तलिफ़ होते हैं, पोशीदा और ज़ाहिर का इख़्तिलाफ़ होता है और आने जाने में फ़र्क़ होता है, दाख़िल होने का रास्ता और, और निकलने का और होता है। किसी ने हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि मैं निफ़ाक़ से डरता हूं, आप ने फ़रमाया : अगर तुम मुनाफ़िक़ होते तो तुम्हें निफ़ाक़ का ख़ौफ़ न होता क्यूंकि मुनाफ़िक़ निफ़ाक़ से बे परवा होता है।

हज़रते इब्ने अबी मुलैका رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने एक सो तीस और एक रिवायत में एक सो पचास सहाबए किराम को पाया है जो सब के सब निफ़ाक़ से डरते थे।

मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबा की एक जमाअ़त में तशरीफ़ फ़रमा थे, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने एक आदमी का तज़्किरा किया और उस की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की, सब हज़रात इसी त़रह़ तशरीफ़ फ़रमा थे कि वोह शख़्स आया उस के चेहरे से वुज़ू का पानी टपक रहा था, जूता उस के हाथ में था और उस की आंखों के दरमियान सजदों का निशान था, सहाबए किराम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) येह वोही शख़्स है जिस की हम ने आप के सामने ता'रीफ़ की है, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे इस के चेहरे पर शैत़ान का असर नज़र आता है। वोह आदमी आ कर सहाबा के साथ बैठ गया और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया। आप ने उसे देख कर फ़रमाया : मैं तुझे **अल्लाह** की क़सम देता हूं, बता कि जब तू ने इन लोगों को देखा तो तेरे दिल में येह ख़याल आया था कि तू इन से अच्छा है ? वोह बोला : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! हां, तब आप ने अपनी दुआ़ में फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से हर उस बात से जिसे जानता हूं या नहीं जानता, बख़्शिश त़लब करता हूं। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! आप भी ख़ौफ़ज़दा हैं ? आप ने फ़रमाया : मैं कैसे बे ख़ौफ़ हो जाऊं ह़ालांकि मख़्लूक़ के दिल **अल्लाह** तआ़ला की दो उंगलियों के दरमियान हैं, वोह जैसे चाहता है उन्हें फेरता रहता है।[1]

---

1 ......شعب الایمان، السابع والخمسون من شعب الإیمان ، باب فی حسن الخلق ، ٦/٣٠٢، الحدیث ٨٢٥٤ و مسند البزار، ١٤/٦٠، الحدیث ٧٥١٠ و المعجم الکبیر، ٢/٢٥٢، الحدیث ٢٠٥٨ وکشف الخفاء، ٢/٣٥٧، تحت الحدیث ٣٢١٤ و قوت القلوب ، ٢/٢٣٢

फ़रमाने ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर है :

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ (1)

और ज़ाहिर हो जाएगा उन के वासिते अल्लाह की त़रफ़ से जिस को वोह गुमान नहीं करते थे।

इस की तफ़्सीर में कहा गया है कि उन्हों ने ऐसे आ'माल किये जिन्हें वोह अपने गुमान के ब मूजिब नेकियां समझते थे मगर वोह गुनाहों के पलड़े में जा पड़े।

ह़ज़रते सरी सक़त़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि अगर कोई इन्सान ऐसे बाग़ में जाए जिस में हर क़िस्म के दरख़्त हों और उन दरख़्तों पर हर क़िस्म के परन्दे हों जो उसे देख कर यक ज़बान हो कर कहें : "ऐ अल्लाह के वली ! तुझ पर सलाम हो" और उस का दिल येह बात सुन कर मुत़्मइन हो जाए तो गोया वोह उन परन्दों का असीर है।

येह तमाम अक़्वाल व अह़ादीस तुझे उन ख़त़रात से रू शनास कराएंगे जो पोशीदा निफ़ाक़ और शिर्के ख़फ़ी पर मुन्तहा होते हैं और कोई भी अ़क़्लमन्द इस से ग़ाफ़िल नहीं रहता यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से अपने मुतअ़ल्लिक़ पूछा करते। (येह रिवायत पहले भी गुज़र चुकी है)

ह़ज़रते सुलैमान दारानी رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि मैं ने एक अमीर से ऐसी बात सुनी जो मुझे ना गवार गुज़री और मैं ने उसे टोकने का इरादा किया मगर मुझे अन्देशा हुवा कि कहीं येह मुझे क़त्ल करने का हुक्म न दे दे, मैं मौत से नहीं बल्कि इस बात से डरा कि क़त्ल के वक़्त लोगों के सामने मेरे दिल में येह बात न आ जाए कि मैं ने कैसा उ़म्दा काम किया है लिहाज़ा मैं उसे टोकने से रुक गया।

येह निफ़ाक़ की वोह क़िस्म है जो ईमान की अस्ल के नहीं बल्कि इस की सफ़ाई, कमाल, ह़क़ीक़त और सिद्क़ के ख़िलाफ़ है। निफ़ाक़ की दो क़िस्में हैं : एक क़िस्म वोह है जो दीन से निकाल कर काफ़िरों में शामिल कर देती है और उन लोगों के साथ मुन्सलिक कर देती है जो हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहेंगे, दूसरी क़िस्म वोह है जो अपने रखने वाले को कुछ मुद्दत जहन्नम में पहुंचाएगी या उस के बुलन्द मरातिब को कम कर देगी और उसे सिद्दीक़ों के बुलन्द तरीन मक़ाम से नीचे गिरा देगी।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी। (پ۲٤، الزمر:٤٧)

बाब 78

मज़म्मते ग़ीबत व चुग़ल ख़ोरी

कुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने ग़ीबत की मज़म्मत फ़रमाई है और ग़ीबत करने वाले को मुर्दार का गोश्त खाने वाले की मिस्ल क़रार दिया है चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ (1)

और तुम एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में से कोई एक येह बात पसन्द करता है कि वोह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए पस तुम इसे बुरा समझोगे ।

फ़रमाने नबवी है कि हर मुसलमान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त ह़राम है ।(2)

ग़ीबत इ़ज़्ज़त को खा जाती है और अल्लाह तआ़ला ने इसे माल और ख़ून के साथ यक्जा ज़िक्र किया है ।

ह़ज़रते अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक दूसरे पर ह़सद न करो, बुग़्ज़ न करो, धोका न दो, पीठ पीछे बुराइयां न करो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो, अल्लाह तआ़ला के बन्दो ! भाई-भाई बन जाओ ।(3)

ह़ज़रते जाबिर और अबू सईद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ग़ीबत से बचो क्यूंकि ग़ीबत ज़िना से भी बुरी है इस लिये कि आदमी ज़िना करता है और तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है मगर ग़ीबत करने

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा । (پ ٢٦، الحجرات : ١٢)

2.....مسلم، كتاب البر...الخ، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص ١٣٨٦، الحديث ٣٢ـ (٢٥٦٤)

3.....موسوعة ابن ابى الدنيا،كتاب الصمت...الخ،باب الغيبة وذمها، ٧/١٧، الحديث ١٦٣، راوى ابوهريرة و مسلم، كتاب البر و الصلة ، باب تحريم ظلم المسلم...الخ، ص١٣٨٦،الحديث٣٢ـ (٢٥٦٤)

वाले की तौबा उस वक़्त तक क़बूल नहीं होती जब तक कि वोह शख़्स मुआफ़ न करे जिस की ग़ीबत की गई है।(1)

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मे'राज की रात मेरा ऐसी क़ौम पर से गुज़र हुवा जो अपने चेहरे नाख़ुनों से नोच रहे थे, मैं ने कहा : जिब्रील ! येह कौन हैं ? जिब्रील ने कहा : येह वोह लोग हैं कि जो लोगों की ग़ीबत करते हैं और उन की इज़्ज़त को पामाल करते हैं।(2)

हज़रते सुलैमान बिन जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मुझे ऐसा भला काम बतलाइये जिस से मैं नफ़्अ़ अन्दोज़ हो सकूं, आप ने फ़रमाया कि भलाई के किसी काम को ह़क़ीर न समझ अगर्चे तुझे अपने डोल का पानी प्यासे के डोल में ही डालना पड़े और तेरा भाई तुझ से गर्म जोशी से मिले या तुझ से मुंह मोड़ ले, तू उस की ग़ीबत न कर।(3)

हज़रते बरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ित़ाब फ़रमाया जिसे पर्दा नशीन औ़रतों ने अपने घरों में सुना, आप ने फ़रमाया : ऐ वोह लोगो ! जो ज़बान से ईमान लाए हो मगर दिलों में ईमान नहीं रखते हो ! मुसलमानों की ग़ीबत न करो और इन की रुस्वाई की जुस्तजू में न रहो क्यूंकि जो किसी भाई की रुस्वाई के दरपे होता है, **अल्लाह** तआ़ला उस की रुस्वाई के दरपे होता है और **अल्लाह** तआ़ला जिस की रुस्वाई के दरपे होता है उसे उस के घर में बे इ़ज़्ज़त और रुस्वा कर देता है।(4)

कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि जो ग़ीबत से ताइब हो कर मरा वोह आख़िरी शख़्स होगा जो जन्नत में जाएगा और जो ग़ीबत करते करते मर गया वोह पहला शख़्स होगा जो जहन्नम में जाएगा।

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب الصمت...الخ، باب الغیبة وذمها، ۷/۱۱۸، الحدیث ۱٦٤

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 73 पर फ़रमाते हैं : "ग़ीबत में ह़क़्क़ुल अ़ब्द या'नी बन्दे का ह़क़ उस सूरत में शामिल होगा जब कि जिस की ग़ीबत की है उस को पता चल जाए कि फ़ुलां ने मेरी ग़ीबत की है और अब ग़ीबत करने वाले के लिये तौबा के साथ साथ उस से मुआ़फ़ी मांगनी भी ज़रूरी है जिस की ग़ीबत की है वरना ख़ाली तौबा काफ़ी थी।" **इल्मिय्या**

2 ......موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب الصمت...الخ، باب الغیبة وذمها، ۷/۱۱۸، الحدیث ۱٦٥

3 ......موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب الصمت...الخ، باب الغیبة وذمها، ۷/۱۱۹، الحدیث ۱٦٦ (راوی سلیم بن جابر)

4 ......موسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب الصمت...الخ، باب الغیبة وذمها، ۷/۱۲۰، الحدیث ۱٦۷

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को एक दिन के रोज़े का हुक्म दिया और फ़रमाया कि मेरी इजाज़त के बिग़ैर कोई भी रोज़ा इफ़्तार न करे, यहां तक कि जब शाम हो गई तो लोग आना शुरूअ़ हुवे और हर शख़्स हाज़िर हो कर अ़र्ज़ करता : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) मैं ने दिन में रोज़ा रखा मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इसे इफ़्तार करूं, आप उसे इजाज़त फ़रमा देते। इसी त़रह़ लोग आते गए और इजाज़त लेते गए ता आंकि एक आदमी ने आ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे घर की दो जवान औ़रतों ने रोज़ा रखा है और वोह आप की ख़िदमत में आते हुवे शरमाती हैं, इजाज़त दीजिये ताकि वोह रोज़ा इफ़्तार करें। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुंह फेर लिया, उस ने फिर अ़र्ज़ किया : आप ने फिर मुंह फेर लिया, उस ने फिर अ़र्ज़ की तो आप ने फ़रमाया : उन्हों ने रोज़ा नहीं रखा वोह शख़्स कैसे रोज़ादार हो सकता है जिस का दिन लोगों का गोश्त खाते गुज़र जाए तुम जाओ और उन्हें जा कर कहो कि अगर तुम रोज़ादार हो तो किसी त़रह़ क़ै करो चुनान्चे, वोह उन के पास गया और उन्हें सारी बात बता कर क़ै करने को कहा। उन्हों ने क़ै की और हर एक ने ख़ून के लोथड़े की क़ै की, वोह शख़्स हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और सारी रू दाद सुनाई, आप ने उस की बात सुन कर फ़रमाया : ब ख़ुदा ! अगर येह चीज़ उन के पेट में मौजूद रहती तो उन्हें आग जलाती।(1)

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं कि जब हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने उस से मुंह फेर लिया तो वोह कुछ देर बा'द दोबारा हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वोह दोनों मर चुकी हैं या मरने के क़रीब हैं, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उन्हें मेरे पास लाओ, जब वोह आ गईं तो आप ने प्याला मंगवा कर उन में से हर एक से फ़रमाया कि इस में क़ै करो चुनान्चे, एक ने पीप, ख़ून और बदबू दार मवाद से प्याला भर दिया, फिर आप ने दूसरी से भी क़ै करने को कहा तो उस ने भी वैसी ही क़ै की। आप ने फ़रमाया : इन दोनों ने **अल्लाह** के ह़लाल कर्दा रिज़्क़ से रोज़ा रखा और **अल्लाह** तआ़ला की ह़राम कर्दा अश्या से इफ़्तार किया, इन में से एक, दूसरी के पास जा बैठी और येह दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाती रहीं (2)(या'नी ग़ीबत करती रहीं)।

1 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت...الخ، باب الغیبۃ وذمھا، ۱۲۲/۷، الحدیث ۱۷۰

2 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت...الخ، باب الغیبۃ وذمھا، ۱۲۳/۷، الحدیث ۱۷۱

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से ख़िताब फ़रमाया और उस में सूद की बुराइयों और क़बाहतों का ज़िक्र करते हुवे फ़रमाया कि एक सूदी दिरहम इन्सान के तेंतीस[33] मरतबा ज़िना करने से बदतर है और सब से बड़ा सूद किसी मुसलमान की इ़ज़्ज़त पर डाका डालना है।[(1)]

चुग़ुल ख़ोरी

येह एक इन्तिहाई बुरी सिफ़त है, फ़रमाने इलाही है : "ग़ीबत करने वाला लोगों के साथ चुग़ली करने वाला है।"[(2)]

फिर फ़रमाया : "मुतकब्बिर और इस के बा'द बद नसीब।"[(3)]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि '**ज़नीम**' ऐसे वलदुज़्ज़िना को कहते हैं जो बातें पोशीदा नहीं रखता और इन्हों ने इस जानिब इशारा किया है कि जो शख़्स बात मख़्फ़ी नहीं रखता और चुग़ुल ख़ोरी करता है उस का येह फ़े'ल इस अम्र पर दलालत करता है कि वोह वलदुज़्ज़िना है क्यूंकि फ़रमाने इलाही में इसी जानिब इशारा मिलता है : "गर्दन अकड़ा कर चलने वाला और इस के बा'द वलदुज़्ज़िना।" यहां **ज़नीम** से मुराद झूटे नसब का मुद्दई है।

और फ़रमाने इलाही है :

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ (4) *वैल (हलाकत) है हर ग़ीबत करने वाले हुमज़ह के लिये।*

एक तशरीह़ के मुताबिक़ हुमज़ह का मा'ना चुग़ुल ख़ोर बताया गया है।

और इरशादे इलाही है :

"जो लकड़ियों को उठाने वाली है।" (5)

कहते हैं कि यहां लकड़ियों से मुराद चुग़लियां हैं क्यूंकि वोह बातें उठाए चुग़लियां करती रहती थी।

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب الصمت...الخ، باب الغيبة وذمها، ١٢٧/٧، الحديث ١٧٥

2 .....(پ٢٩، القلم: ١١) هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيمٍ ﴿۱۱﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ज़लील बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

3 .....(پ٢٩، القلم: ١٣) عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿۱۳﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** दुरुश्त ख़ू (बद मिज़ाज बद ज़बान) इस सब पर तुर्रह येह कि इस की अस्ल में ख़ता।

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे। (پ٣٠، الهمزة: ١)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए। (پ٣٠، اللّهب: ٤)

एक और मक़ाम पर इरशादे इलाही है :

"पस उन दो औरतों ने उन की ख़ियानत की और उन्हों ने अल्लाह की तरफ़ उन दोनों की किफ़ायत न की ।"(1)

कहते हैं कि इस आयत में दो औरतों का तज़्किरा है : एक हज़रते लूत् عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी जो क़ौम को हज़रते लूत् عَلَيْهِ السَّلَام के मेहमानों से ख़बरदार किया करती थी और नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी जो आप को मख़बूतुल ह़वास कहा करती थी ।

फ़रमाने नबवी है कि चुग़ुल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा ।(2)

दूसरी ह़दीस में है कि क़त्तात जन्नत में नहीं जाएगा ।(3) क़त्तात चुग़ुल ख़ोर को कहते हैं ।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में से अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा मह़बूब वोह लोग हैं जो दुन्या में रहते हैं, वोह लोगों से मह़ब्बत करते हैं और लोग उन्हें मह़बूब समझते हैं और अल्लाह तआ़ला के हां सब से बद तरीन वोह लोग हैं जो चुग़ुल ख़ोरियां करते हैं, भाइयों को बाहम लड़ाते हैं और नेकों की लग़्ज़िशों के ख़्वाहां होते हैं ।(4)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें बद तरीन आदमियों के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : बतलाइये या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) आप ने फ़रमाया : वोह चुग़ुल ख़ोरी करने वाले, दोस्तों में फ़साद बरपा करने वाले और सालेह़ लोगों पर झूटी तोहमतें लगाने वाले हैं(5) (या'नी बद तरीन लोग येह हैं) ।

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स नाह़क़ किसी मुसलमान के मुतअ़ल्लिक़ झूटी बात फैलाता है कि उसे ज़लीलो रुस्वा करे तो अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन जहन्नम में ज़लीलो रुस्वा करेगा ।(6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उन्हों ने उन से दग़ा की तो वोह अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए । (پ۲۸، التحریم: ۱۰)

2......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم النمیمة ، ص ٦٦، الحدیث ١٦٨ ـ (١٠٥)

3......بخاری، کتاب الأدب ، باب مایکرہ من النمیمة ، ٤/١١٥، الحدیث ٦٠٥٦

4......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة و النمیمة ، باب (ماجاء فی ذم النمیمة)، ٤/٣٩٤، الحدیث ١١٨

5......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة و النمیمة ، باب (ماجاء فی ذم النمیمة)، ٤/٣٩٥، الحدیث ١٢٠

6......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الغیبة و النمیمة ، باب (ماجاء فی ذم النمیمة)، ٤/٣٩٦، الحدیث ١٢١

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स मुसलमान के लिये किसी ऐसी बात को फैलाता है जो बिल्कुल ग़लत़ हो और वोह इस से उस मुसलमान को दुन्या में रुस्वा करना चाहता है, **अल्लाह** तआला को ह़क़ है कि वोह उसे क़ियामत के दिन जहन्नम में रुस्वा करे।(1)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान पर झूटी गवाही देता है वोह अपना ठिकाना जहन्नम में समझे।(2)

और येह भी कहा गया है कि क़ब्र में एक तिहाई अ़ज़ाब सिर्फ़ चुग़ुल ख़ोरी की बदौलत होता है।(3)

हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत को पैदा फ़रमाया तो उसे हुक्म दिया कि मुझ से बात कर, वोह बोली कि जो मेरे अन्दर आ गया वोह सआ़दत मन्द हुवा, तब रब्बे जब्बार جَلَّ جَلَالُہٗ ने फ़रमाया मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरे अन्दर आठ क़िस्म के लोग दाख़िल नहीं करूंगा, आ़दी शराबी, ज़ानी, चुग़ुल ख़ोर, बे ग़ैरत, रज़ील, हीजड़ा,(4) क़त़ए़ रेह़्मी करने वाला और वोह शख़्स जो येह कहता है : मेरा ख़ुदा से अ़ह्द है कि फ़ुलां फ़ुलां बुरा अ़मल नहीं करूंगा मगर येह वा'दा पूरा नहीं करता।(5)

हिकायत

हज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा बनी इस्राईल क़ह़त़ में मुब्तला हो गए, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मुतअ़द्दिद बार बारिश की दुआ़ की मगर बारिश न हुई, तब

1 ......موسوعة ابن ابی الدنيا ، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء فی ذم النميمة) ، ٣٩٧/٤، الحديث : ١٢٢ ليس بمرفوع

2 ......موسوعة ابن ابی الدنيا ، كتاب الغيبة والنميمة ، باب (ماجاء فی ذم النميمة) ، ٣٩٨/٤، الحديث ١٢٣

3 ......موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب الصمت، باب الغيبة وذمها، ١٣٤/٧، الحديث ١٩٠

4 .....हीजड़े को अ़रबी में मुख़न्नस कहते हैं, मुख़न्नस वोह है जो ह़रकात व सकनात, गुफ़्तार व रफ़्तार में औ़रतों की त़रह़ हो अगर क़ुदरती येह ह़ालत हो तो वोह गुनहगार नहीं और अगर मर्द है मगर औ़रत की शक्ल बनाता है तो ब फ़रमाने ह़दीस मलऊ़न है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्द बनने वाली औ़रतों पर और औ़रत बनने वाले मर्दों पर ला'नत फ़रमाई। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 14) **इल्मिय्या**

5 ......كنز العمال، كتاب الاذكار قسم الاقوال، ٢٣٨/١، الجز الاول، الحديث ٢٠٣٧ و شعب الايمان، الثانی والسبعون من شعب الإيمان، باب فی الغيرة والمذاء، ٤١٢/٧، الحديث ١٠٧٩٩ والمعجم الكبير، ١١٨/٢، الحديث ١٥٠٩ وفردوس الاخبار، ٤٢٣/٣، الحديث ٥٢٩٦ وطبقات الشافية الكبرى للسبكی، ٣٤١/٦ و بحر الدموع، الفصل السابع والعشرون، ص ١٢٠

अल्लाह तआ़ला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि मैं तेरी और तेरे साथियों की दुआ़ कैसे क़बूल करूं ? ह़ालांकि तुम में आ़दी चुग़ुल ख़ोर मौजूद है ! ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या इलाही ! मुझे वोह चुग़ुल ख़ोर बता ताकि मैं उसे (अपनी जमाअ़त से) बाहर निकाल दूं ! रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मूसा ! मैं तुम्हें चुग़ुल ख़ोरी से मन्अ़ कर रहा हूं और फिर ख़ुद चुग़ुल ख़ोरी करूं ? लिहाज़ा उन सब ने तौबा की और बारिश बरसने लगी।

और कहा गया है कि किसी आदमी ने सात सो फ़रसख़ का त़वील सफ़र कर के एक दाना की मजलिस में ह़ाज़िरी दी और उसे कहा कि मैं इतनी त़वील मसाफ़त तै कर के आप से सात बातें पूछने आया हूं, अल्लाह तआ़ला ने आप को इ़ल्म दिया है, मुझे येह बतलाइये कि आस्मान से भारी चीज़ क्या है ? ज़मीन से फ़राख़ चीज़ क्या है ? चट्टान से सख़्त चीज़, आग से गर्म चीज़, ज़महरीर से भी ठन्डी चीज़, समन्दर से भी ज़ियादा बे नियाज़, यतीम से भी ज़ियादा ख़्वार चीज़ क्या है ? उस दाना ने जवाब दिया कि पाक दामन पर बोहतान आस्मान से भी भारी है, ह़क़ ज़मीन से ज़ियादा फ़राख़ है, क़नाअ़त पसन्द दिल समन्दर से ज़ियादा बे नियाज़ है, ह़िर्स और ह़सद आग से ज़ियादा गर्म हैं, किसी अ़ज़ीज़ से काम, जब कि वोह पूरा न करे ज़महरीर से ज़ियादा सर्द है, काफ़िर का दिल चट्टान से ज़ियादा सख़्त और चुग़ुल ख़ोर, जब उस का किरदार ज़ाहिर हो जाए यतीम से भी ज़ियादा ज़लीलो रुस्वा होता है। किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

من نم فی الناس لم تؤمن عقاربه — على الصديق ولم تؤمن افاعيه

كالسيل بالليل لايدری به احد — من اين جاء ولا من اين ياتيه

الويل للعهد منه كيف ينقضه — والويل للود منه كيف ينفيه

﴿1﴾......जो चुग़ुल ख़ोर लोगों में चुग़ुल ख़ोरियां करता है तो उस के दोस्त को भी उस के सांपों और बिच्छूओं से बे ख़ौफ़ न समझ (या'नी वोह दोस्तों की भी चुग़लियां करेगा)

﴿2﴾......रात को आने वाले सैलाब की त़रह़ जिस के मुतअ़ल्लिक़ कोई नहीं जानता कि कहां से आया है और किस किस तक पहुंचा है।

﴿3﴾......उस के अ़ह्द के लिये हलाकत है वोह उसे कैसे पूरा करेगा और उस की दोस्ती के लिये हलाकत है, वोह कैसे इस की नफ़ी करेगा।

दूसरा शाइ़र कहता है :

يسعى عليك كما يسعى اليك فلا — تامن غوائل ذی وجهين كياد

۞......वोह चुग़ुल ख़ोर जिस त़रह़ तेरी ह़िमायत करता है इसी त़रह़ तेरी बुराइयां भी बयान करेगा दो चेहरों वाले के मक्रो फ़रेब से ग़ाफ़िल न हो।

बाब 79

अदावते शैतान

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दिल में उतरने की दो जगहें हैं, एक जगह फ़िरिश्ते के उतरने की वोह है जो नेकी पर तम्बीह करती है और हक़ की तस्दीक़ की जानिब रग़बत दिलाती है लिहाज़ा जो आदमी अपने अन्दर येह बात महसूस करे वोह इसे **अल्लाह** तआला की रहमत समझे और खुदावन्द جَلَّ وَعَلَا की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करे, दूसरी जगह दुश्मन की है जो फ़ितना व फ़साद की जानिब मैलान पैदा करता, हक़ की तकज़ीब और नेकियों से मन्अ करता है, जो शख़्स अपने दिल में येह बात महसूस करे वोह **अल्लाह** तआला से शैताने रजीम की शरारतों से पनाह मांगे, फिर आप ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ (1)

शैतान तुम्हें फ़क्र का वा'दा देता है और बुरे काम करने का हुक्म देता है।

हज़रते हसन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि दो फ़िक्रें हैं जो इन्सान के दिल में गर्दिश करती रहती हैं, एक हक़ की फ़िक्र और दूसरी दुश्मनी की फ़िक्र होती है, **अल्लाह** तआला उस बन्दे पर रहम करे जो अपने अज़ाइम का क़स्द करता है, जो काम उसे **अल्लाह** तआला की तरफ़ से नज़र आता है उसे पूरा करता है और जो उसे दुश्मन की तरफ़ से नज़र आता है उसे छोड़ देता है।

हज़रते जाबिर बिन उबैदा अदवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : मैं ने हज़रते अला बिन ज़ियाद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से अपने दिल में पैदा होने वाले वस्वसों की शिकायत की तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : दिल की मिसाल उस घर जैसी है जिस में चोरों का गुज़र होता है, अगर उस में कुछ मौजूद होता है तो वोह उसे निकाल ले जाने के बारे में सोचते हैं वरना उसे छोड़ देते हैं या'नी जो दिल ख़्वाहिशात से ख़ाली होता है उस में शैतान दाख़िल नहीं होता।

फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ (2)

बेशक मेरे बन्दों पर तेरे लिये कोई ग़लबा नहीं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का।
(پ۳، البقرة:۲٦۸)......ترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ومن سورة البقرة، ٤/٤٦٤، الحدیث۲۹۹۹

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं। (پ١٤، الحجر:٤٢)

लिहाज़ा हर वोह इन्सान जो ख़्वाहिशात की पैरवी करता है वोह **अल्लाह** का नहीं बल्कि शहवत का बन्दा है इसी लिये **अल्लाह** तआला उस पर शैतान को मुसल्लत कर देता है,

इरशादे इलाही है :

اَفَرَءَيۡتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ[1] *क्या तू ने उस को नहीं देखा जिस ने अपनी ख़्वाहिश को मा'बूद बना लिया।*

इस आयत में इस अम्र की जानिब इशारा है कि जिस का मा'बूद और खुदा उस की ख़्वाहिश हो वोह **अल्लाह** का बन्दा नहीं होता।

इसी लिये हज़रते अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) शैतान मेरे और मेरी नमाज़ व क़िराअत के दरमियान हाइल हो जाता है। आप ने फ़रमाया : येह शैतान है जिसे ख़िन्ज़ब[2] कहा जाता है, तुम जब भी इस के वस्वास महसूस करो **अल्लाह** तआला से इस से पनाह मांगो और तीन मरतबा बाईं जानिब थूक दो। रावी कहते हैं चुनान्चे, मैं ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** तआला ने मुझे इस से दूर कर दिया।[3]

हदीस शरीफ़ में है वुज़ू (में नक़्स पैदा करने) के लिये एक शैतान है जिस का नाम वल्हान है, **अल्लाह** तआला की रहमत से इस से बचने का सुवाल करो।[4]

दिल से शैतानी वसाविस इस सूरत में दूर हो सकते हैं कि इन्सान इन वसाविस के ख़िलाफ़ बातें सोचे या'नी ज़िक्रे इलाही करे क्यूंकि दिल में किसी चीज़ का ख़याल आता है तो पहले वाली चीज़ का ख़याल मिट जाता है लेकिन हर उस चीज़ का ख़याल जो ज़ाते रब्बानी और उस के फ़रामीन के इलावा हो, शैतान की जौलानगाह बन सकती है मगर ज़िक्रे खुदा ऐसी चीज़ है जिस की वज्ह से मोमिन का दिल मुतमइन हो जाता है और जान लेता है कि शैतान की ताक़त नहीं जो इस में ज़ोर आज़माई करे, चूंकि हर चीज़ का इलाज उस की ज़िद से किया जाता है, लिहाज़ा जान लीजिये कि तमाम शैतानी वसाविस की ज़िद ज़िक्रे इलाही है, शैतान से पनाह चाहना है और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ से

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना खुदा ठहरा लिया। (پ٢٥، الجاثية:٢٣)

2.....यहां शैतान का नाम '**ख़रब**' लिखा था लेकिन सहीह मुस्लिम की रिवायत में इस शैतान का नाम '**ख़िन्ज़ब**' लिखा है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर महमूल करते हुवे हम ने यहां '**ख़रब**' के बजाए सहीह मुस्लिम के मुताबिक़ '**ख़िन्ज़ब**' कर दिया है। واللّٰه تعالٰی اعلم **इल्मिय्या**

3.....مسلم، كتاب السلام، باب التعوذ من شيطان...الخ، ص١٢٠٩، الحديث ٦٨ـ (٢٢٠٣) عن عثمان بن ابى العاص

4.....قوت القلوب، ١/١٩٩ و حاشية البجيرمى على الخطيب، كتاب الصلاة، ٢/١٥٥ و ترمذى، كتاب الطهارة، باب ماجاء فى كراهية الاسراف...الخ، ١/١٢٢، الحديث ٥٧

रिहाई पाना है और तुम्हारे इस क़ौल का कि मैं अल्लाह से शैताने रजीम से पनाह मांगता हूं और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم का येही मन्शा है, इस मक़ाम पर वोही लोग सरफ़राज़ होते हैं जो मुत्तक़ी हों और ज़िक्रे खुदा जिन की रग रग में रच बस गया हो और शैतान ऐसे लोगों पर बे ख़बरी के आलम में अचानक हम्ले किया करता है, फ़रमाने इलाही है :

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَاهُمْ مُّبْصِرُوْنَ (1) *तह़क़ीक़ वोह लोग जो परहेज़गार हैं जब उन को शैतान की त़रफ़ से वस्वसा लगता है तो वोह ज़िक्र करते हैं फिर अचानक वोह देखने लगते हैं।*

मुजाहिद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस फ़रमाने इलाही :

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (2) *ख़न्नास के वस्वसों के शर से।*

की तफ़्सीर में कहते हैं कि वोह दिल पर फैला हुवा होता है, जब इन्सान ज़िक्रे खुदा करता है तो वोह पीछे हट जाता है और सुकड़ जाता है और जब इन्सान ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है तो वोह हस्बे साबिक़ दिल पर तसल्लुत़ जमा लेता है।

ज़िक्रे इलाही और शैतान के वसाविस का मुक़ाबला ऐसे है जैसे नूर और ज़ुल्मत, रात और दिन और जिस त़रह़ येह एक दूसरे की ज़िद हैं। चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللهِ (3) *उन पर शैतान ग़ालिब आया और उन्हें यादे इलाही से ग़ाफ़िल कर दिया।*

ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि शैतान इन्सान के दिल पर अपनी नाक लगाए हुवे है, जब इन्सान अल्लाह तआला को याद करता है तो वोह पीछे हट जाता है और जब वोह यादे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है तो शैतान उस के दिल को निगल लेता है।(4)

इब्ने वज़्ज़ाह़ ने एक ह़दीस नक़्ल की है जिस में कहा गया है कि जब आदमी चालीस साल को पहुंच जाता है और तौबा नहीं कर पाता तो शैतान उस के मुंह पर हाथ फेरता और कहता है कि मुझे अपने बाप की क़सम ! येह उस का चेहरा है जो फ़लाह़ नहीं पाएगा।(5)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं। (پ٩، الاعراف:٢٠١)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले और दुबक रहे। (پ٣٠، الناس:٤)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुला दी। (پ٢٨، المجادلة:١٩)

4.....موسوعة ابن ابى الدنيا ،كتاب مكائد الشيطان، الباب الثانى، ٤/٥٣٦، الحديث ٢٢

5.....المحرر الوجيز، سورة فاطر، تحت الآية٣٧ ، ٤/٤٤١ و طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ٦/٣٣١

और जैसे इन्सानी ख़्वाहिशात व शहवात इन्सान के ख़ून और गोश्त-पोस्त से जुदा नहीं होतीं, इसी त़रह़ शैत़ान की सल्त़नत भी इन्सानी दिल पर मुह़ीत़ है और इन्सान के ख़ून और गोश्त व पोस्त पर जारी व सारी है चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है :

शैत़ान इन्सान के वुजूद में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है लिहाज़ा इस की गुज़रगाहों को भूक से बन्द करो ।[1]

आप ने भूक का ज़िक्र इस लिये फ़रमाया है कि शहवत को ख़त्म कर देती है और शैत़ान के रास्ते भी शहवात हैं ।

शहवाते नफ़्सानी के दिल का घेराव करने के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे इलाही है : जिस में शैत़ान के क़ौल की ख़बर दी गई है कि उस ने कहा : "फिर अलबत्ता मैं उन के पास उन के आगे से उन के पीछे से उन के दाएं से और उन की बाईं त़रफ़ से आऊंगा ।"[2]

इस से पहले वाली आयत में है कि शैत़ान ने कहा कि "मैं अलबत्ता तेरी सीधी राह पर उन के लिये बैठूंगा ।"[3]

फ़रमाने नबवी है कि शैत़ान इन्सान के रास्तों पर बैठ गया, उस के इस्लाम के रास्ते में बैठ कर उसे कहा : क्या तू इस्लाम क़बूल करता है और अपने और अपने बाप दादा के दीन को छोड़ता है मगर उस इन्सान ने उस का कहा मानने से इन्कार कर दिया और इस्लाम ले आया फिर वोह हिजरत के रास्ते में बैठ गया और बोला : क्या तू हिजरत करता है और अपने वत़न को और उस के ज़मीनो आस्मान को छोड़ता है ? मगर उस इन्सान ने उस की बात मानने से इन्कार कर दिया और हिजरत कर गया फिर उस के जिहाद के रास्ते में बैठ कर बोला : क्या तू जिहाद करना चाहता है हालांकि इस में जानो माल का ज़ियाअ़ है, जब तू जंग में जाएगा तो क़त्ल हो जाएगा और तेरी औ़रतों से लोग निकाह़ कर लेंगे, तेरा माल आपस में बांट लेंगे मगर उस बन्दए ख़ुदा ने शैत़ान की बात मानने से इन्कार कर दिया और जिहाद में शरीक हुवा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस किसी ने ऐसे किरदार का मुज़ाहरा किया, फिर उसे मौत आ गई तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मए करम पर होगा कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल करे ।[4]

---

1 .....بخاری، کتاب الاعتکاف، باب هل یدرأ...الخ، ۱/۶۷۰، الحدیث ۲۰۳۹ وکشف الخفاء، ۱/۱۹۸، الحدیث ۶۷۱

2 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा उन के आगे और पीछे और दाहिने और बाएं से । (پ۸، الاعراف:۱۷)

3 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा । (پ۸، الاعراف:۱۶)

4 .....نسائی، کتاب الجهاد، باب ما لمن اسلم...الخ، ص ۵۰۹، الحدیث ۳۱۳۱

बाब 80

महब्बत व मुहासबए नफ़्स

हज़रते सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है : महब्बत इत्तिबाए रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم है। एक और बुज़ुर्ग का क़ौल है कि महब्बत दाइमी ज़िक्र का नाम है, एक और क़ौल है कि महब्बत महबूब को खुद पर तरजीह देना है और बा'ज़ का क़ौल है कि महब्बत नाम है दुन्या के क़ियाम को बुरा समझने का, मज़्कूरए बाला सब अक़्वाल महब्बत के समरात की तरफ़ इशारा करते हैं, नफ़्से महब्बत को किसी ने नहीं छेड़ा, बा'ज़ ने येह कहा कि महब्बत नाम महबूब के उन कमालात का है जिस के इदराक से दिल मजबूर और जिस की अदाएगी से ज़बानें मसदूद हैं।

हज़रते जुनैद رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने दुन्या से तअल्लुक़ रखने वालों पर महब्बत को हराम कर दिया है और फ़रमाया : हर महब्बत किसी इवज़ के जवाब में होती है, जब इवज़ ख़त्म हो जाता है महब्बत ज़ाइल हो जाती है।

हज़रते ज़ुन्नून رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि उस शख़्स से जो अल्लाह की महब्बत का इज़्हार करे, कह दो कि किसी ग़ैर के सामने ज़लील होने से बचते रहना।

हज़रते शिब्ली رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से कहा गया कि हमें आरिफ़ मुहिब की ता'रीफ़ बतलाइये ! उन्हों ने कहा : आरिफ़ अगर बात करता है तो हलाक हो जाता है और मुहिब अगर चुप रहता है तो हलाक हो जाता है और आप ने येह अश्आर पढ़े :

یاایھا السید الکریم　　حبک بین الحشا مقیم

یارافع النوم عن جفونی　　انت بما مر بی علیم

﴾1﴿......ऐ मेहरबान सरदार ! तेरी महब्बत मेरे दिल की गहराइयों में मुक़ीम है।

﴾2﴿......ऐ मेरी पलकों से नींद उड़ाने वाले ! जो कुछ मुझ पर बीती तू उसे जानता है।

किसी दूसरे शाइर का क़ौल है :

عجبت لمن یقول ذکرت الفی　　وھل انسی فاذکر ما نسیت

اموت اذا ذکرتک ثم احیا　　ولو لا حسن ظنی ما حییت

فاحیا بالمنی واموت شوقا　　فکم احیا علیک وکم اموت

شربت الحب کاسا بعد کاس　　فما نفد الشراب وما رویت

فلیت خیاله نصب لعینی　　فان قصرت فی نظری عمیت

﴾1﴿......मुझे उस पर इन्तिहाई तअ़ज्जुब होता है जो मुझ से कहता है तू ने मेरी मह़ब्बत को याद किया है, क्या मैं उस की मह़ब्बत भूल गया हूं जो उसे याद करूं ?

﴾2﴿......जब मैं तुझे याद करता हूं तो मर जाता हूं फिर ज़िन्दा हो जाता हूं, अगर मेरा हुस्ने ज़न न होता तो मैं कभी ज़िन्दा न होता।

﴾3﴿......पस मैं मौत में ज़िन्दगी पाता हूं और तेरे शौक़ में मौत पाता हूं, कितनी मरतबा मैं तेरे लिये ज़िन्दा होता हूं और मरता हूं।

﴾4﴿......मैं ने मह़ब्बत का जाम के बा'द जाम पिया, न शराबे मह़ब्बत कम हुई और न ही मैं सैर हुवा।

﴾5﴿......ऐ काश ! उस का ख़याल मेरा नस्बुल ऐन हो, जब भी वोह मेरी नज़रों से दूर हो, मैं अन्धा हो जाता हूं।

ह़ज़रते राबिआ़ अ़दविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक दिन कहा : कौन है जो हमें अपने मह़बूब का पता बतलाए ? उन की ख़ादिमा बोली कि हमारा मह़बूब हमारे साथ है लेकिन दुन्या ने हमें उस से जुदा कर रखा है।

इब्नुल जला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि जब मैं बन्दे के दिल को दुन्या और आख़िरत की मह़ब्बत से ख़ाली पाता हूं तो उस के दिल को अपनी मह़ब्बत से भर देता हूं और उसे अपनी ह़िफ़ाज़त में ले लेता हूं।

कहते हैं कि ह़ज़रते जनाबे समनून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक दिन मह़ब्बत के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू फ़रमाई तो उन के सामने एक परन्दा उतरा और वोह अपनी चोंच ज़मीन पर मारने लगा यहां तक कि उस से ख़ून बहने लगा और वोह मर गया।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : ऐ **अल्लाह** तू जानता है कि जन्नत तेरे उन इन्आ़मात के मुक़ाबले में जो मुझे वदीअ़त हुवे हैं मेरे नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर वज़्न नहीं रखती, तू ने मुझे अपनी मह़ब्बत से सरफ़राज़ किया है, अपने ज़िक्र की उल्फ़त बख़्शी है और अपनी अ़ज़मत में ग़ौरो फ़िक्र करने के लिये फ़राग़त मर्ह़मत फ़रमाई है।

ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि जिस ने **अल्लाह** से मह़ब्बत की वोह ज़िन्दए जावीद हुवा, जिस ने दुन्या से मह़ब्बत की वोह बे आबरू हुवा, अह़मक़ सुब्ह़ो शाम ज़िल्लतो रुस्वाई से बसर करता है और अ़क़्लमन्द अपने उ़यूब तलाश करता रहता है।

मुहासबए नफ़्स

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में नफ़्स के मुहासबे का हुक्म दिया है,

फ़रमाने इलाही है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ (1)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और हर नफ़्स येह देखे कि उस ने कल के लिये क्या भेजा है।

इस आयते करीमा में इस बात की तरफ़ इशारा है कि इन्सान अपने गुज़श्ता आ'माल का मुहासबा करे इसी लिये हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : क़ब्ल इस के कि तुम्हारा मुहासबा हो, तुम खुद अपना मुहासबा करो और इस से पहले कि तुम्हारे आ'माल तोले जाएं तुम खुद अपने आ'माल तोल लो।

हदीस शरीफ़ में है कि एक आदमी ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ किया : मुझे नसीहत कीजिये ! आप ने फ़रमाया : क्या तुम नसीहत की तलब में आए हो ? अर्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : जब किसी काम का इरादा करो तो उस का अन्जाम सोच लो, अगर उस का अन्जाम अच्छा हो तो कर लो और अगर उस का बुरा अन्जाम हो तो उस से रुक जाओ।(2)

हदीस शरीफ़ में है : अक़्लमन्द के लिये मुनासिब है कि वोह चार घड़ियों में एक घड़ी अपने नफ़्स के मुहासबे में ख़र्च करे।(3)

फ़रमाने इलाही है :

وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۳۱ (4)

और तौबा करो अल्लाह की तरफ़ मुकम्मल तौबा ऐ मोमिनो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

और तौबा ऐसा फ़े'ल है जो काम कर चुकने के बा'द शर्मिन्दगी और पशेमानी से मुत्तसिफ़ होता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा। (پ٢٨، الحشر:١٨)

2.....الزهد لابن المبارك، باب التخصيص على طاعة اللّٰه عزوجل، ص ١٤، الحديث ٤١

3.....شعب الايمان، الثالث و الثلاثون من شعب الإيمان، باب فى تعديد نعم اللّٰه، فصل فى فضل العقل الذى...الخ، ١٦٤/٤، الحديث ٤٦٧٧ ملتقطا و كنز العمال، كتاب المواعظ...الخ، قسم الأفعال، فصل فى مواعظ متفرقة لأشخاص متفرقين، ١٩/٨، الجزء السادس العاشر، الحديث ٤٤٢٣٠

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ। (پ١٨، النور:٣١)

फ़रमाने नबवी है कि मैं दिन में सो मरतबा तौबा करता हूं और अल्लाह से बख़्शिश तलब करता हूं।[(1)]

फ़रमाने इलाही है :

"बेशक वोह लोग जो परहेज़गार हैं जब उन्हें शैतान की तरफ़ से वस्वसा आता है तो वोह ज़िक्र करते हैं पस अचानक वोह देखने वाले होते हैं।"[(2)]

हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब रात तारीक होती तो अपने क़दमों पर चाबुक मारते और अपने नफ़्स से कहते कि तू ने आज क्या अमल किया ? हज़रते मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि आदमी उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं बन सकता जब तक वोह काम के बा'द अपने शरीक या शरीकों के मुहासबे से भी अपने नफ़्स का सख़्त मुहासबा न करे।

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से वक़्ते विसाल फ़रमाया कि मुझे लोगों में से कोई भी उमर से ज़ियादा महबूब नहीं है, फिर आप ने मुझ से पूछा कि मैं ने क्या कहा है ? मैं ने आप का फ़रमान दोहराया तो आप ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक उमर से ज़ियादा बा इज़्ज़त कोई शख़्स नहीं है, तो गोया आप ने एक बात कह कर इस पर ग़ौर फ़रमाया और इसे दूसरे जुम्ले में तब्दील कर दिया।

हज़रते अबू तलहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है कि जब इन्हें इन के बाग़ के परन्दे ने नमाज़ से इन की तवज्जोह हटा दी तो इन्हों ने इस कोताही के बदले में इन्तिहाई पशेमानी के आलम में वोह सारा बाग़ अल्लाह की राह में वक़्फ़ कर दिया।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हदीस में है कि इन्हों ने लकड़ियों का गठ्ठा उठाया तो लोगों ने कहा : ऐ अबू यूसुफ़ ! तेरे घर में लकड़ियां मौजूद थीं और तेरे ग़ुलाम भी इस काम के लिये मौजूद थे, तू ने येह काम क्यूं किया ? तो इन्हों ने जवाब दिया कि मैं अपने नफ़्स का इम्तिहान ले रहा था कि कहीं येह इन कामों को बुरा तो नहीं समझता !

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि मोमिन अपने नफ़्स का हाकिम होता है और इस का मुहासबा करता रहता है, उन लोगों का क़ियामत में हिसाब आसान और हल्का होगा जो दुन्या

1.....ابن ماجه، كتاب الادب، باب الاستغفار، ٢٥٦/٤، الحديث ٣٨١٥

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं। (پ٩، الاعراف:٢٠١)

में अपने नफ़्सों का मुहासबा करते रहे हैं और क़ियामत में उन लोगों का सख़्त मुहासबा होगा जो दुन्या में अपने नफ़्सों का मुहासबा नहीं करते।

फिर मुहासबा की तफ़्सीर में फ़रमाया कि अचानक मोमिन को कोई चीज़ पसन्द आ जाती है और वोह इसे देख कर कहता है ब ख़ुदा ! तू मुझे पसन्द है, तू मेरी ज़रूरत है लेकिन अफ़्सोस येह है कि तेरे और मेरे दरमियान हिसाब हाइल है, येह हिसाब क़ब्ल अज़ अ़मल की मिसाल है और जब मोमिन से कोई लग़्ज़िश सरज़द हो जाती है तो वोह ख़ुद से कहता है तेरा इस फ़े'ल से क्या मत़लब था ? ब ख़ुदा ! मैं इस पर उ़ज़्र पेश नहीं करूंगा और ब ख़ुदा ! अगर **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा तो मैं कभी भी ऐसा काम फिर नहीं करूंगा।

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक दिन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मैं मदीनए मुनव्वरा से बाहर निकले यहां तक कि वोह एक दीवार के क़रीब पहुंचे, मैं ने सुना वोह कह रहे थे और मेरे और उन के दरमियान एक दीवार हाइल थी, वाह वाह ! उ़मर बिन ख़त्त़ाब अमीरुल मोमिनीन है ! ब ख़ुदा ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** से डर, वरना वोह तुझे अ़ज़ाब करेगा।

हज़रते हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस फ़रमाने इलाही :

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ (1) — *और मैं मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूं।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि मोमिन से जब कोई ग़लत़ी होती है तो वोह अपने नफ़्स का तआ़क़ुब करता है कि तेरा इस बात से क्या इरादा था ? तेरा मेरे खाने और पीने से मन्शा क्या था ? और बदकार क़दम ब क़दम आगे बढ़ता रहता है मगर गुनाहों पर मुहासबए नफ़्स नहीं करता।

हज़रते मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रहम करे जिस ने अपने नफ़्स से येह कहा कि तू ने ऐसा ऐसा काम अन्जाम नहीं दिया फिर उस की ख़िदमत की, उस की नाक में नकील डाल कर किताबुल्लाह की पैरवी को उस के लिये लाज़िमी क़रार दे दिया, ऐसा शख़्स अपने नफ़्स का क़ाइद होगा और हक़ीक़त में येही नफ़्स का मुहासबा है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे। (پ۲۹، القیٰمۃ:۲)

हज़रते मैमून बिन मेहरान رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि मुत्तक़ी शख़्स अपने नफ़्स का ज़ालिम बादशाह और बख़ील हिस्सेदार से भी ज़ियादा मुहासबा करता है।

हज़रते इब्राहीम तैमी رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि मैं ने अपने नफ़्स के सामने जन्नत की मिसाल पेश की, उस के फल खाना, उस की नहरों से पानी पीना और उस की पाकीज़ा औरतों से मैल मिलाप रखने की तफ़्सील बयान की, फिर मैं ने अपने नफ़्स को जहन्नम की तफ़्सील सुनाई या'नी उस का थोहर खाना, उस की पीप पीना और उस के भारी ज़न्जीर और तौक़ गले में पहनने का बता कर कहा : तुझे इन दोनों में से कौन सी चीज़ पसन्द है? नफ़्स बोला मेरा इरादा है कि दुन्या में जा कर नेक अमल कर के आऊं, तब मैं ने उसे कहा कि फ़िलहाल तुझे मोहलत मिली हुई है, लिहाज़ा ख़ूब नेक आ'माल कर ले।

हज़रते मालिक बिन दीनार رضی اللہ تعالیٰ عنہ कहते हैं कि मैं ने हज्जाज को ख़िताब करते हुवे सुना, वोह कह रहा था : **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिस ने अपना हिसाब दूसरे के पास जाने से पहले ख़ुद ही अपने नफ़्स का मुहासबा कर लिया, **अल्लाह** उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिस ने अपने अमल की लगाम पकड़ कर सोचा कि मैं ऐसा काम क्यूं कर रहा हूं? **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिस ने अपनी भरती को देखा, **अल्लाह** उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिस ने अपने आ'माल के मीज़ान को देखा वोह इसी तरह कहता रहा यहां तक कि मैं रो पड़ा, (लेकिन हज्जाज के मज़ालिम और सुलहा व अबरार पर उस की चीरा दस्तियों ने ख़ुद उस को कभी अपने नफ़्स के मुहासबे का मौक़अ़ नहीं दिया)।

हज़रते अहनफ़ बिन क़ैस رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के एक साथी की रिवायत है कि मैं उन के साथ रहता था, उन की रात की इबादत उ़मूमी तौर पर दुआ़ओं पर मुश्तमिल होती थी और वोह चराग़ की तरफ़ आते उस की लौ में अपनी उंगली रख देते यहां तक कि उस पर आग का असर महसूस किया जाता, फिर अपने नफ़्स से मुख़ातब हो कर कहते : ऐ अहनफ़! तुझे फ़ुलां फ़ुलां दिन किस चीज़ ने ऐसे ऐसे काम करने पर उक्साया था, तुझे फ़ुलां रोज़ कौन सी चीज़ ने ऐसे बुरे अ़मल पर आमादा किया था।

बाब 81

आमेज़िशे हक़ व बातिल

फ़रमाने नबवी है : जिसे मा'क़िल बिन यसार رضی اللہ تعالٰی عنہ ने रिवायत किया है कि लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा जब लोगों के दिलों में कुरआने मजीद बदन के कपड़ों की तरह पुराना हो जाएगा उन के तमाम अह़कामात त़म्अ़ पर मब्नी होंगे, किसी के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं होगा, अगर उन में से कोई एक नेकी करेगा तो कहेगा : येह मुझ से क़बूल कर ली जाएगी और अगर बुराई करेगा तो कहेगा : येह बख़्श दी जाएगी। हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم ने बताया कि वोह ख़ौफ़े ख़ुदा की बजाए त़म्अ़ रखेंगे।(1)

क्यूंकि कुरआने मजीद की उन तम्बीहात से जिन में इन्सानों को अ़ज़ाब से ख़ौफ़ दिलाया गया है, उन को बिल्कुल इल्म नहीं होगा, इसी आ़दत और इस जैसी दूसरी आ़दतों की वज्ह से अल्लाह तआ़ला ने नसारा के मुतअ़ल्लिक़ इन अल्फ़ाज़ में ख़बर दी है कि

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ وَّرِثُوا الۡكِتٰبَ يَاۡخُذُوۡنَ عَرَضَ هٰذَا الۡاَدۡنٰى وَيَقُوۡلُوۡنَ سَيُغۡفَرُ لَنَا ۚ (2)

पस उन की जगह उन के बुरे जा निशीन बैठे जो किताब के वारिस हुवे वोह नाक़िस या'नी ह़राम अस्बाब को लेते हैं और कहते हैं अलबत्ता हम को बख़्श दिया जाएगा।

इस की तफ़्सीर येह है कि उन के उ़लमा किताबे इलाही के वारिस हुवे मगर उन्हों ने दुन्या की ख़्वाहिशात से मुरस्सअ़ माल कमाना शुरूअ़ कर दिया ख़्वाह वोह ह़लाल हो या ह़राम और येह कहा कि हमें अल्लाह बख़्श देगा हा़लांकि फ़रमाने इलाही है :

"और उस शख़्स के लिये जो अपने रब के हु़ज़ूर खड़ा होने से डरा दो जन्नतें हैं।"(3)

मज़ीद फ़रमाया :

---

1 ......فردوس الاخبار، ٤٤٨/٥، الحديث ٨٧٠١ عن ابن عباس و تاريخ مدينه دمشق، ١٨١/١٨ ماخوذًا

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उन की जगह उन के बा'द वोह ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुवे। इस दुन्या का माल लेते हैं और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी। (پ٩، الاعراف:١٦٩)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के हु़ज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं। (پ٢٧، الرحمٰن:٤٦)

"येह (जन्नत) उस शख़्स के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़ा होने से डरा और मेरी तहदीद से ख़ौफ़ज़दा हुवा है।"(1)

कुरआने मजीद में अव्वल से आख़िर तक लोगों को ख़ौफ़ दिलाया गया है, उन्हें डराया गया है इस में जब कोई सोचने वाला ग़ौरो फ़िक्र करता है तो उस का हुज़्नो मलाल बढ़ता है, अगर वोह मोमिन है तो उस का इस में ग़ौरो फ़िक्र करने से ख़ौफ़ फ़ुज़ूं तर होता है मगर तुम लोगों को देखते हो, इसे जल्दी जल्दी पढ़ते हैं, इस के हुरूफ़ के मख़ारिज निकालते हैं, इस के ज़बर ज़ेर और पेश में झगड़ते हैं जैसे कि वोह अ़रब के अश्आ़र पढ़ रहे हों, वोह इस के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और न ही इस के अह़कामात पर अ़मल की सई करते हैं और दुन्या में इस जैसा या इस से बढ़ कर कोई धोका है कि लोग नेकियां और गुनाह करते हैं, उन के गुनाह नेकियों से ज़ियादा होते हैं मगर वोह इस के बा वुजूद बख़्शिश की तमन्ना रखते हैं और गुनाहों के पलड़े को भारी समझते हुवे भी वोह नेकियों के पलड़े को भारी होने की उम्मीदें लगाए बैठे हैं, येह उन की जहालत की इन्तिहा नहीं तो और क्या है ?

तुम देखते हो आदमी चन्द ह़लालो ह़राम के मिले जुले रूपे राहे ख़ुदा में देता है और मुसलमानों के माल और मुश्तबा माल से उन के दो गुने चोगुने रूपे खरे कर लेता है और येह भी हो सकता है कि उस का राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हुवा माल भी मुसलमानों के माल से छीना हुवा हो। और वोह येह गुमान करता है कि खाए हुवे हज़ार रूपे का येह ह़राम या ह़लाल से कमाए दस रूपे जिन को मैं ने राहे ख़ुदा में दिया है, बदला बन जाएंगे, ऐसे शख़्स की मिसाल कुछ यूं है कि एक आदमी तराज़ू के एक पलड़े में दस रूपे और दूसरे में एक हज़ार रूपे रख कर येह तवक़्क़ोअ़ रखे कि दस रूपे वाला पलड़ा भारी और हज़ार वाला हल्का हो जाएगा और येह उस की जहालत की इन्तिहा होगी, तुम को बा'ज़ ऐसे शख़्स भी नज़र आएंगे जिन में से हर एक येह समझेगा कि उस की नेकियां गुनाहों से ज़ियादा हैं, ऐसा शख़्स नफ़्स का मुहासबा नहीं करता और अपने गुनाहों को तलाश नहीं करता लेकिन जब वोह कोई नेकी करता है, उस पर ए'तिमाद करता है उसे गिन लेता है, ऐसे शख़्स की मिसाल ऐसी है जो ज़बान से इस्तिग़फ़ार करता है या दिन में सो मरतबा तस्बीह़ करता है। फिर मुसलमानों की ग़ीबत करता है, उन की इ़ज़्ज़तें पामाल करता है और सारा दिन अन गिनत ऐसी बातें करता है जिन से अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो जाता है लेकिन उस की निगाह में

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे। (پ۱۳، ابراھیم:۱٤)

वोह सो तस्बीहात गर्दिश करती रहती हैं और सो बार इस्तिग़फ़ार करना घूमता रहता है और सारे दिन की लग़वियात से ग़ाफ़िल हो जाता है जिन को अगर वोह लिखता तो वोह हर तस्बीह से सो गुना या हज़ार गुना ज़ियादा होतीं, जिन्हें मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों ने लिख लिया है और **अल्लाह** तआला ने भी हर ऐसे कलिमे पर इक़ाब का वा'दा किया है चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾ [1]

वोह शख़्स तस्बीह व तहलील के फ़ज़ाइल में तो ग़ौर करता है मगर उन वईदों से अपनी आंखें बन्द कर लेता है जो ग़ीबत करने वालों, झूटों, चुग़ुल ख़ोरों और ऐसे लोगों के मुतअ़ल्लिक़ वारिद हुई हैं जो ज़बान से कुछ और कहते हैं और दिल में कुछ और कहते हैं इस के इलावा भी त़रह त़रह की ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन पर गिरिफ़्त होगी और येह दुन्या तो महज़ धोका ही धोका है।

मुझे ज़िन्दगी की क़सम ! अगर मुहाफ़िज़ लिखने वाले फ़िरिश्ते उस से उन लग़्व बातों के तहरीर करने की उजरत त़लब करते जो उस की तस्बीहात से ज़ियादा हैं तो वोह अपनी ज़बान को बन्द कर लेता और ऐसी अहम बातें भी न करता जो उस की ज़रूरियात में शामिल होतीं और न ही वोह ना तुवानी में कोई बात करता वोह हर बात को गिनता, उस का मुहासबा करता और अपनी तस्बीहात से उन का मुवाज़ना करता कि कहीं मेरी बातों की उजरत मेरी तस्बीहात से ज़ियादा न हो जाए, अफ़्सोस तो इस अम्र का है कि इन्सान किताबत की उजरत के सबब तो अपने नफ़्स का मुहासबा करे और बोलने में इन्तिहाई एहतियात को पेशे नज़र रखे मगर फ़िरदौसे आ'ला के न पाने और इस की ने'मतों के ज़वाल को कोई अहम्मिय्यत न दे।

हक़ीक़त तो येह है कि येह चीज़ हर उस इन्सान के लिये अज़ीम मुसीबत है जो ग़ौरो फ़िक्र करने का आ़दी हो, हमें **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से ऐसे काम सोंपे गए हैं कि अगर हम इन का इन्कार कर दें तो ना फ़रमान काफ़िरों में से हो जाएं और अगर इन की तस्दीक़ करें बा वुजूद येह कि आ'माल का नामो निशान न हो तो हम फ़रेब ख़ुर्दा बे वुक़ूफ़ कहलाएंगे क्यूंकि हमारे आ'माल वैसे नहीं जैसे आ'माल एक ऐसे शख़्स के होने चाहिये जो क़ुरआने मजीद के अहकामात की तस्दीक़ करता है (और हम **अल्लाह** तआला से काफ़िरों में होने से बराअत चाहते हैं)।

---

[1].....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो। (پ٢٦،ق:١٨)

बाब 82

नमाज़े बा जमाअ़त की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि तन्हा नमाज़ पढ़ने से नमाज़े बा जमाअ़त को सत्ताईस दरजे फ़ज़ीलत हासिल है।(1)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ लोगों को चन्द नमाज़ों में जमाअ़त में न देख कर फ़रमाया : मेरा येह इरादा हुवा कि मैं किसी आदमी को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूं और मैं उन लोगों के यहां जाऊं जो जमाअ़त से रह गए हैं और उन को और उन के घरों को जला दूं।(2)

दूसरी रिवायत में है कि फिर मैं उन लोगों के घरों को लकड़ियों के गठ्ठों के साथ उन पर जलाने का हुक्म दूं जो जमाअ़त में शरीक नहीं हुवे, अगर उन में से किसी को इल्म होता कि मोटी हड्डी या जानवर के दो हाथ (जमाअ़त में शरीक होने से) मिलेंगे तो वोह ज़रूर जमाअ़त में शामिल होते।(3)

हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न मरवी है कि जो इ़शा की जमाअ़त में हाज़िर हुवा पस गोया उस ने आधी रात इ़बादत में गुज़ारी और जो सुब्ह़ की जमाअ़त में भी शामिल हुवा गोया उस ने सारी रात इ़बादत में गुज़ारी।(4)

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस ने नमाज़े बा जमाअ़त अदा की पस गोया उस ने अपने सीने को इ़बादत से भर लिया।(5)

---

1 ......بخاری، کتاب الأذان ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ ، ۲۳۲/۱، الحدیث ٦٤٥

2 ......مسند أبی داود الطیالسی، ص ٤٢، الحدیث ٣١٦

3 ......مسلم، کتاب المساجد...الخ ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ...الخ ، ص ٣٢٧، الحدیث ٢٥١ـ (٦٥١) و بخاری ، کتاب الاذان، باب وجوب صلاۃ الجماعۃ ، ۲۳۲/۱، الحدیث ٦٤٤

4 ......مسلم، کتاب المساجد...الخ ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ...الخ ، ص ٣٢٩، الحدیث ٢٦٠ـ (٦٥٦)

5 ......حلیۃ الاولیاء ، تکملۃ کعب الاحبار ، ٣٠/٦ ، الحدیث ٧٧٠٤ لیس بمرفوع و تفسیر روح البیان، القلم ، تحت الآیۃ:٤٣ ، ١٢٤/١٠ و قوت القلوب ، ١٨٠/١

हज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि बीस बरस से मुतवातिर मैं उस वक़्त मस्जिद में होता हूं जब मुअज़्ज़िन अज़ान देता है। हज़रते मुहम्मद बिन वासेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं दुन्या से तीन चीज़ों की ख़्वाहिश रखता हूं, ऐसा भाई कि अगर मैं टेढ़ा हो जाऊं तो वोह मुझे सीधा कर दे, बिग़ैर काविश के मुख़्तसर रिज़्क़ जिस की बाज़ पुर्स न हो और नमाज़े बा जमाअ़त जिस की ग़लतियां मेरे लिये मुआ़फ़ कर दी जाएं और जिस की फ़ज़ीलत मुझे बख़्श दी जाए।

हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा कुछ लोगों की इमामत की, जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो शैत़ान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि वोह मुझे बहकाता रहा यहां तक कि मैं ने भी ख़ुद को दूसरे से अफ़्ज़ल समझ लिया, मैं आज के बा'द इमामत नहीं करूंगा।

हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ न पढ़ो जो उ़लमा की मजलिस में न जाता हो। हज़रते नख़ई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि जो बिग़ैर किसी इ़ल्म के लोगों की इमामत करता है वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो समन्दर में रह कर उस का पानी नापता है और उस की कमी ज़ियादती को नहीं समझता।

हज़रते ह़ातिमे असम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि मेरी एक नमाज़े बा जमाअ़त फ़ौत हो गई तो सिर्फ़ अबू इस्ह़ाक़ बुख़ारी मेरी ता'ज़िय्यत को आए, अगर मेरा बच्चा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार से भी ज़ियादा लोग ता'ज़िय्यत के लिये आते क्यूंकि लोग दीन के नुक़्सान को दुन्या के नुक़्सान से बहुत हल्का जानते हैं।

हज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल है कि जिस शख़्स ने अज़ान सुन कर इस का जवाब न दिया उस ने भलाई का इरादा नहीं किया और न ही उसे भलाई नसीब होगी।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि पिघले हुवे सीसे से इन्सान के कानों का भर दिया जाना इस से बेहतर है कि वोह अज़ान सुन कर इस का जवाब न दे।

मन्क़ूल है कि हज़रते मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिद में आए तो आप से कहा गया कि लोग तो वापस लौट गए हैं (या'नी नमाज़ हो चुकी है) आप ने येह सुन कर फ़रमाया : اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ और कहा कि इस नमाज़ के पा लेने की फ़ज़ीलत मुझे इराक़ की हुकूमत से ज़ियादा पसन्द थी।

चालीस नमाज़ें जमाअ़त के साथ अदा करने वाले पर इन्आ़मे इलाही

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने चालीस दिन तमाम नमाज़ें बा जमाअ़त अदा कीं और उस की तक्बीरे तह्रीमा फ़ौत नहीं हुई, **अल्लाह** तआ़ला उस की ख़ातिर दो बराअतें लिख देता है, एक निफ़ाक़ से बराअत और दूसरी बराअत जहन्नम से।[1]

येह भी कहा गया है कि जब क़ियामत का दिन होगा तो क़ब्रों से एक ऐसी जमाअ़त उठेगी जिन के चेहरे चमकदार सितारे की त़रह़ होंगे, फ़िरिश्ते उन से कहेंगे कि तुम्हारे आ'माल क्या थे? वोह जवाब देंगे कि जब हम अज़ान सुनते थे तो वुज़ू के लिये खड़े हो जाया करते थे और किसी और काम में मश्ग़ूल नहीं होते थे। फिर एक ऐसी जमाअ़त आएगी जिन के चेहरे चांद की त़रह़ होंगे, वोह फ़िरिश्तों के सुवाल के बा'द कहेंगे कि हम वक़्त से पहले वुज़ू किया करते थे, फिर एक ऐसी जमाअ़त आएगी जिन के चेहरे आफ़्ताब की त़रह़ दरख़्शिन्दा होंगे और वोह कहेंगे कि हम अज़ान मस्जिद में सुना करते थे[2] (या'नी अज़ान से पहले मस्जिद में पहुंच जाते थे)।

मरवी है कि सलफ़े सालिह़ीन तक्बीरे ऊला के फ़ौत होने पर तीन दिन तक अपनी ता'ज़िय्यत किया करते थे।

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स ने गुस्सा ज़ब्त़ कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।" (الجامع الصغير للسيوطی ص ٥٤١ حديث٨٩٩٧)

या'नी अगर किसी की त़रफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंच गई और गुस्सा आ गया येह बदला ले सकता था मगर मह्ज़ रज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर गुस्सा पी गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को सुकूने क़ल्ब अ़त़ा फ़रमाएगा और इस का दिल नूरे ईमान से भर देगा। इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ अवक़ात गुस्सा आना मुफ़ीद भी है जब कि ज़ब्त़ करना नसीब हो जाए।

---

1 ......ترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی فضل التکبیرۃ الاولی، ١/٢٧٤، الحدیث ٢٤١

2 ......تفسیر روح البیان، سورۃ النور، تحت الآیۃ: ٣٨، ٦/١٦١

बाब 83

फ़ज़ीलते नमाज़े तहज्जुद

कुरआने मजीद की मुतअ़द्दिद आयात से इस नमाज़ की फ़ज़ीलत साबित है, इरशादे इलाही है :

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ (1)

बेशक तेरा रब जानता है कि तू दो तिहाई रात के क़रीब खड़ा होता है।

फ़रमाने इलाही है :

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا (2)

तहक़ीक़ रात का उठना नफ़्स को कुचलने के लिये बहुत सख़्त है और काम का बहुत दुरुस्त करने वाला है।

फ़रमाने इलाही है :

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (3)

उन की करवटें (पहलू) बिछोनों से दूर होती हैं।

मज़ीद फ़रमान होता है :

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ (4)

क्या जो शख़्स कि वोह रात के वक़्त बन्दगी करता है।

इरशादे इलाही है :

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا (5)

और वोह लोग जो अपने रब के लिये रात को सजदा करते हुवे और क़ियाम करते हुवे गुज़ारते हैं।

मज़ीद इरशाद होता है :

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ (6)

ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब। (پ٢٩، المزّمل: ٢٠)

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक रात का उठना वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात ख़ूब सीधी निकलती है। (پ٢٩، المزّمل: ٦)

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से। (پ٢١، السجدة: ١٦)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं। (پ٢٣، الزمر: ٩)

5...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सजदे और क़ियाम में। (پ١٩، الفرقان: ٦٤)

6...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। (پ١، البقرة: ٤٥)

कहा गया है कि इस नमाज़ से मुराद रात की नमाज़ है जिस पर मुदावमत कर के नफ़्स से जिहाद किया जा सकता है।

अहादीस में भी इस नमाज़ की फ़ज़ीलत वारिद है चुनान्चे फ़रमाने नबवी है कि जब तुम में से कोई एक सो जाता है तो शैतान उस की गुद्दी में तीन गांठें देता है और हर गांठ में वोह कहता है कि बहुत तवील रात बाक़ी है अभी कुछ देर और सो ले, पस अगर इन्सान बेदार हो कर ज़िक्रे खुदा करता है तो एक गांठ खुल जाती है, जब वुज़ू करता है तो दूसरी गांठ खुल जाती है और जब इन्सान नमाज़ में मसरूफ़ हो जाता है तो तीसरी गांठ खुल जाती है और इन्सान इस हाल में सुब्ह करता है कि वोह खुशी व मसर्रत का पाने वाला और हल्का फुलका होता है वरना वोह सुस्त और बद मिज़ाज हो कर उठता है।[1]

हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ऐसे शख़्स का तज़किरा किया गया जो सारी रात सोता है यहां तक कि सुब्ह हो जाती है, आप ने फ़रमाया : येह वोह शख़्स है कि जिस के नाक में शैतान ने पेशाब कर दिया है।[2]

हदीस शरीफ़ में है कि शैतान के पास नाक की दवा, चाटने की चीज़ और छिड़कने की चीज़ें हैं, जब वोह किसी इन्सान के नाक में दवाई डालता है तो वोह बद ख़ुल्क़ बन जाता है जब किसी इन्सान को चाटने की दवा देता है तो वोह इन्सान बद ज़बान हो जाता है और जब किसी इन्सान पर दवाई छिड़कता है तो वोह सुब्ह तक सोता रहता है।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि आधी रात में बन्दे का दो रक्अतें नमाज़ पढ़ना, दुन्या और इस की तमाम अश्या से बेहतर है, अगर मेरी उम्मत पर दुश्वार न होता तो मैं येह दो रक्अतें इन पर फ़र्ज़ कर देता।[4]

सहीह बुख़ारी में हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रात में एक ऐसी साअत है कि जब उस में बन्दा **अल्लाह** तआला से भलाई का सुवाल करता है तो **अल्लाह** तआला उसे अता कर देता है।[5]

---

1 ......بخاری، کتاب التهجد، باب عقد الشیطان...الخ، ۱/۳۸۷، الحدیث ۱۱٤۲

2 ......بخاری، کتاب التهجد، باب اذا نام ولم یصل...الخ، ص ۳۸۸، الحدیث ۱۱٤٤ بأذن مکان أنف

3 ......المعجم الکبیر، ۷/۲۰٦، الحدیث ٦۸۵۵

4 ......کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الباب السابع...الخ، الفصل الثانی...الخ، ٤/۳۲۳، الجزء السابع، الحدیث ۲۱٤۰۱

5 ......مسند احمد، مسند جابر بن عبدالله، ۵/٤۸، الحدیث ۱٤۳٦۱

एक रिवायत है कि वोह दुन्या और आख़िरत की जो भलाई मांगता है और येह साअ़त हर रात में होती है।[1]

हज़रते मुग़ीरा बिन शो'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (शब में नमाज़ के लिये) खड़े हुवे यहां तक कि आप के पाए मुबारक रात में खड़े हो कर इबादत करने के सबब सूज गए, आप से कहा गया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) क्या अल्लाह तआ़ला ने आप की अगली पिछली ख़िलाफ़े औला बातों को मुआ़फ़ नहीं फ़रमा दिया ? आप ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : क्या मैं अल्लाह तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?[2] इस ह़दीस शरीफ़ से येह मत़लब निकलता है कि इस से आप की मुराद मज़ीद इन्आ़माते इलाहिय्या की त़लब और जुस्त्जू थी क्यूंकि शुक्र ज़ियादतिये ने'मत का सबब है, फ़रमाने इलाही है :

لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ[3]

अगर तुम शुक्र करो तो मैं अलबत्ता तुम्हें ज़ियादा दूंगा।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि क्या तुम इस बात को पसन्द करते हो कि तुम पर ज़िन्दगी, मौत, क़ब्र और ह़श्र में अल्लाह तआ़ला की रह़मत का नुज़ूल हो, रात का कुछ हिस्सा बाक़ी हो और तुम रब की रिज़ा के हुसूल के लिये उठ कर इबादत करो ! ऐ अबू हुरैरा ! घर के कोनों में नमाज़ पढ़ा करो, तुम्हारा घर आस्मान से ऐसा चमकता नज़र आएगा जैसे कि ज़मीन वालों को चमकदार सितारे नज़र आया करते हैं।[4]

फ़रमाने नबवी है : तुम्हारे लिये लाज़िम है कि रात को इबादत किया करो क्यूंकि येह गुज़श्ता नेक लोगों का त़रीक़ा है, बेशक रात का क़ियाम अल्लाह तआ़ला के क़ुर्ब का सबब, गुनाहों का कफ़्फ़ारा, जिस्मानी बीमारियों को दूर करने वाला और गुनाहों से रोकने वाला है।[5]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है कि हर वोह शख़्स जो रात को इबादत का आ़दी हो और उसे नींद आ जाए तो उस के नामए आ'माल में रात की इबादत का सवाब लिख दिया जाता है और नींद को उस पर बख़्श दिया जाता है।[6]

1 ......مسلم، کتاب صلاة المسافرین و قصرها ، باب فی اللیل ساعة...الخ ، ص ٣٨٠، الحدیث١٦٦ـ (٧٥٧)

2 ......مسلم، کتاب صفة القیامة...الخ ، باب اکثارا الاعمال...الخ، ص ١٥١٤، الحدیث ٧٩ـ (٢٨١٩)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा। (پ١٣، ابراهیم:٧)

4 ......الفتوحات المکیة لابن عربی، الباب الموفی ستین و خمسمائة فی...الخ ، ٤١٦/٨

5 ......شعب الایمان، باب الحادی و العشرین من شعب...الخ ، فصل الأذان و الاقامة...الخ ، ١٢٧/٣، الحدیث٣٠٨٧

6 ......ابوداود، کتاب التطوع، باب من نوی القیام فنام ، ٥١/٢، الحدیث ١٣١٤

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! जब तुम सफ़र का इरादा करते हो तो ज़ादे राह तय्यार करते हो ? अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : क़ियामत के त़वील रास्ते का सफ़र कैसे करोगे ? ऐ अबू ज़र ! मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बतलाऊं जो तुम को क़ियामत के दिन नफ़्अ़ दे ? अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मेरे मां-बाप आप पर कुरबान, ज़रूर बतलाइये ! आप ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन के लिये सख़्त गर्मी के दिन रोज़ा रख, क़ब्र की वह्शत को दूर करने के लिये अन्धेरी रात में नफ़्ल दो रक्अ़त पढ़, अहम उमूरे क़ियामत की हुज्जत के लिये ह़ज कर, मिस्कीन पर सदक़ा कर या ह़क़ बात कह और बुरी बात कहने से ख़ामोश रह।[1]

रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में एक आदमी था, जब लोग अपने बिस्तरों पर सो जाते और आंखें सुकून ह़ासिल करने के लिये बन्द हो जातीं तो वोह खड़ा हो कर नमाज़ पढ़ता कुरआने मजीद की तिलावत करता और कहता : ऐ ख़ालिक़े जहन्नम ! मुझे जहन्नम से बचा ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस शख़्स का तज़्किरा किया गया तो आप ने फ़रमाया : जब वोह ऐसी ह़ालत में हो तो मुझे ख़बर कर देना, चुनान्चे, आप वहां तशरीफ़ लाए और उस की तिलावत व दुआएं सुनीं, सुब्ह़ हुई तो आप ने उस से फ़रमाया : ऐ फुलां ! तू ने **अल्लाह** तआ़ला से जन्नत का सुवाल क्यूं नहीं नहीं किया ? वोह आदमी बोला : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ! मैं जन्नत का सुवाल कैसे करूं, अभी तो मेरे आ'माल इस की त़लब के लाइक़ नहीं हुवे। इस गुफ़्तगू को थोड़ी ही देर गुज़री थी कि जिब्रीले अमीन नाज़िल हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) फुलां आदमी को बतला दीजिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने उसे जहन्नम से मह़फ़ूज़ फ़रमा लिया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है।[2]

रिवायत है कि ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि इब्ने उ़मर उ़म्दा आदमी है, काश वोह रात को इ़बादत करता। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को इस बात की ख़बर दी, इस के बा'द ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हमेशा रात को इ़बादत किया करते।[3]

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि आप रात को इ़बादत करते हुवे मुझ से कहा करते : देखो कहीं सुब्ह़ तो नहीं हो गई ? मैं कहता : नहीं, आप फिर इ़बादत में मश्ग़ूल हो जाते, फिर फ़रमाते : ऐ नाफ़ेअ़ ! देखो सुब्ह़ हुई ? मैं कहता : हां तो आप बैठ जाते और इस्तिग़फ़ार फ़रमाते यहां तक कि सुब्ह़ ख़ूब रोशन हो जाती।

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب التهجد و قیام اللیل، ١/٢٤٧، الحدیث ١٠

2 ......

3 ......بخاری، کتاب التهجد، باب فضل قیام اللیل، ١/٣٨٢، الحدیث ١١٢٢

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि हज़रते यह्या बिन ज़करिय्या (علیهما السلام) ने एक रात जव की रोटी पेट भर कर खा ली, रात को उन की आंख लग गई और वोह सुब्ह तक सोते रहे, अपने वज़ाइफ़ व इबादात में मश्ग़ूल न हो सके, तब **अल्लाह** तआ़ला ने आप की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : ऐ यह्या ! क्या तू ने मेरे तय्यार कर्दा घर से उ़म्दा घर या मेरे पड़ोस से उ़म्दा पड़ोस पा लिया है ? मुझे मेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! ऐ यह्या ! अगर तू ने जन्नतुल फ़िरदौस को देख लिया होता तो इस के शौक़ में तेरी चर्बी पिघल जाती और रूह़ निकल जाती और अगर तू जहन्नम को देख लेता तो तेरी चर्बी पिघल जाती और आंखों से पीप बहती।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! फ़ुलां आदमी रात को नमाज़ पढ़ता है, सुब्ह हुई तो उस ने चोरी कर ली। आप ने फ़रमाया : अ़न क़रीब उस का नेक अ़मल उस को इन बुराइयों से रोक देगा।(1)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जो रात को खड़ा हो कर इबादत करता रहा, फिर उस ने अपनी औ़रत को जगाया और उस ने भी उस के साथ खड़े हो कर इबादत की, अगर औ़रत ने इन्कार किया तो उस बन्दे ने उस के मुंह पर पानी के छींटे मारे और आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** ने उस औ़रत पर रह़्म फ़रमाया जो रात को खड़ी हो कर इबादत करती रही फिर उस ने अपने ख़ावन्द को जगाया और वोह भी उस के साथ इबादत में मश्ग़ूल हो गया वगरना उस औ़रत ने अपने ख़ावन्द के मुंह पर पानी के छींटे मारे।(2)

फ़रमाने नबवी है : जो रात को ख़ुद बेदार हुवा और अपनी औ़रत को भी जगाया फिर दोनों ने खड़े हो कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा की, **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ज़िक्र करने वाले मर्दों और औ़रतों में से लिख देता है।(3)

फ़रमाने नबवी है कि फ़राइज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ रात की है।(4)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपने वज़ाइफ़ या इबादत करने के लिये जिस की रात को आंख न खुली और उस ने वोह वज़ाइफ़ और

1 ......مسند احمد، مسند ابی هریرة، ٣/٤٥٧، الحدیث ٩٧٨٥

2 ......نسائی، کتاب قیام اللیل، باب الترغیب فی قیام اللیل، ص ٢٨١، الحدیث ١٦٠٧

3 ......ابوداود، کتاب الوتر، باب الحث علی قیام اللیل، ٢/١٠٠، الحدیث ١٤٥١

4 ......مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، ص ٥٩١، الحدیث ٢٠٢ـ(١١٦٣)

इबादत सुब्ह़ की नमाज़ और ज़ोहर की नमाज़ के दरमियान अदा किये तो उस के लिये पूरी रात की इबादत का सवाब लिख दिया जाता है।[1]

कहते हैं कि इमामे बुख़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर येह अश्आ़र पढ़ा करते :

اغتنم فی الفراغ فضل الرکوع   فعسی ان یکون موتک بغتة

کم صحیح رأیت من غیر سقم   خرجت نفسه الصحیحة فلتة

﴿1﴾....फ़राग़त के अवक़ात में रुकूअ़ व सुजूद को ग़नीमत जान, अ़न क़रीब तुझे मौत आ जाएगी।

﴿2﴾....मैं ने कितने ऐसे तन्दुरुस्त देखे हैं जिन्हें कोई बीमारी नहीं थी और अचानक उन की रूहें परवाज़ कर गईं।

दिल खुश करने की फ़ज़ीलत

मुसलमान का दिल खुश करना भी बहुत बड़े सवाब का काम है चुनान्चे, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में खुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस खुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और तौह़ीद बयान करता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : क्या तू मुझे नहीं पहचानता ? वोह कहता है कि तू कौन है ? तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि मैं वोह खुशी की शक्ल हूं जिसे तू ने फ़ुलां मुसलमान के दिल में दाख़िल किया था, अब मैं तेरी वह़शत में तेरा मूनिस होऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और रोज़े क़ियामत मैं तेरे पास आऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा। (الترغیب والترھیب، ۳/۲۶۶، الحدیث۲۳)

कसरते मालो दौलत मत दे   ताजो तख़्त व हुकूमत मत दे

*या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे   अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1]......مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرھا، باب جامع صلاة اللیل...الخ، ص ۳۷۶، الحدیث ۱۴۲۔ (۷۴۷)

बाब 84

उ़क़ूबते उ़लमाए सू

उ़लमाए सू से हमारी मुराद वोह उ़लमा हैं जो इ़ल्म के हुसूल से दुन्यावी ने'मतों के कमाने का इरादा रखते हैं, दुन्यावी क़द्रो मन्ज़िलत चाहते हैं और दुन्यादारों के हम पल्ला बनना चाहते हैं।

सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि क़ियामत के दिन सख़्त तरीन अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने उस के इ़ल्म से नफ़्अ़ अन्दोज़ नहीं होने दिया।[1]

फ़रमाने नबवी है कि आदमी उस वक़्त तक आ़लिम नहीं होता जब तक कि अपने इ़ल्म के मुताबिक़ अ़मल न करे।[2]

फ़रमाने नबवी है इ़ल्म की दो क़िस्में हैं : ज़बानी इ़ल्म, जो लोगों पर **अल्लाह** की हुज्जत है, क़ल्बी इ़ल्म और येही इ़ल्म लोगों को नफ़्अ़ देने वाला है।[3]

फ़रमाने नबवी है कि आख़िर ज़माने में जाहिल इ़बादत गुज़ार और फ़ासिक़ आ़लिम होंगे।[4]

फ़रमाने नबवी है कि उ़लमा पर तफ़ाख़ुर जताने, बे वुक़ूफ़ों से जंगो जिदाल करने और लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने के लिये इ़ल्म ह़ासिल न करो, जो भी ऐसा करेगा जहन्नम में जाएगा।[5]

फ़रमाने नबवी है कि जो अपना इ़ल्म छुपाता है **अल्लाह** तआ़ला उसे आग की लगाम देगा।[6]

---

1. ......شعب الایمان، الثامن عشر من شعب الایمان...الخ ، فصل فی انه ينبغي ان يكون...الخ، ٢/٢٨٥، الحديث ١٧٧٨
2. ......سنن الدارمی، باب من قال العلم الخشية وتقوى الله ، ١/١٠٠، الحديث٢٩٣
3. ......تاريخ بغداد ، احمد بن الفضل بن سهل...الخ، ٥/١٠٧، الرقم ٢٤٩٥
4. ......المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق، باب اربع اذاكان فيك ...الخ، ٥/٤٤٩، الحديث ٧٩٥٣
5. ......ابن ماجه، كتاب السنة ، باب الانتفاع بالعلم والعمل به ، ١/١٦٩، الحديث ٢٥٩
6. ......المعجم الاوسط ، ٥/٣٤٠، الحديث ٧٥٣٢

नीज़ इरशाद फ़रमाया कि मैं दज्जाल से ज़ियादा और लोगों पर तुम्हारे लिये डरता हूं, पूछा गया : वोह कौन हैं ? आप ने फ़रमाया : गुमराह कुन इमाम ।[1]

मज़ीद फ़रमान होता है कि जो शख़्स इल्म को बढ़ाता मगर हिदायत में नहीं बढ़ता, अल्लाह तआ़ला से उस की दूरी बढ़ती रहती है ।[2]

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम जो ह़ैरानो परेशान लोगों के साथ बैठने वाले हो, अन्धेरी रात में आने वालों के लिये इल्मो ह़िक्मत के रास्ते कैसे साफ़ करोगे ।

येह और इन जैसी और भी बहुत सी अह़ादीस हैं जो इल्म के ख़त़रात से आगाही बख़्शती हैं, क्यूंकि आ़लिम या तो दाइमी हलाकत पाता है या फिर दाइमी सआ़दत से सरफ़राज़ होता है और अगर आ़लिम इल्म की जुस्तजू में सलामती से मह़रूम हो जाए तो सआ़दत को कभी भी नहीं पा सकता ।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं इस उम्मत पर सब से ज़ियादा मुनाफ़िक़ आ़लिम से ख़ौफ़ज़दा होता हूं, लोगों ने कहा : मुनाफ़िक़ आ़लिम कैसा होता है ? आप ने फ़रमाया : उस की ज़बान आ़लिम होती है मगर उस का दिल और अ़मल जाहिल होता है ।

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि उन लोगों में से न हो जो उ़लमा का इल्म और दानिशमन्दों की ह़कीमाना बातें जम्अ़ करता है मगर अ़मल बे वुक़ूफ़ों जैसे करता है ।

किसी शख़्स ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : मैं इल्म सीखना चाहता हूं और इस बात से डरता हूं कि कहीं मैं इसे ज़ाएअ़ न कर दूं, आप ने कहा : इल्म का छोड़ देना ही बहुत बड़ा ज़ियाअ़ है ।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा गया लोगों में से त़वील शर्मिन्दगी पाने वाला शख़्स कौन है ? इन्हों ने फ़रमाया : दुन्या में तो ऐसे शख़्स से भलाई करने वाला जो कुफ़्राने ने'मत का आ़दी है और मौत के वक़्त गुनहगार आ़लिम ।

ह़ज़रते ख़लील बिन अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि चार क़िस्म के आदमी हैं :

एक वोह जो जानता है और येह भी जानता है कि वोह इल्म रखता है वोह आ़लिम है, उस की इत्तिबाअ़ करो ।

---

1 ......مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی ذر الغفاری، ۸/۶۷، الحدیث ۲۱۳۵۵

2 ......فردوس الاخبار، ۲/۳۰۳ ، الحدیث ۶۲۹۸ بزھد مکان ھدی و طبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ۶/۲۸۹

दूसरा वोह जो इल्म रखता है मगर उसे मा'लूम नहीं कि वोह इल्म रखता है, वोह सोया हुवा है उसे जगाओ।

तीसरा वोह जो नहीं जानता और वोह समझता है कि वोह कुछ नहीं जानता वोह राहनुमाई चाहने वाला है उस की रहनुमाई करो।

चौथा वोह जो नहीं जानता और समझता येह है कि वोह बहुत कुछ जानता है वोह जाहिल है, उस से दूर रहो।

हज़रते सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि इल्म अ़मल से बोलता है अगर इन्सान अ़मल करे तो सहीह़ वरना इल्म कूच कर जाता है।

हज़रते इब्ने मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि आदमी जब तक इल्म की तलाश में रहता है वोह आ़लिम होता है और जूंही वोह खुद को आ़लिम समझने लगता है, जहालत की तारीकियों में चला जाता है।

हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ का क़ौल है कि मुझे तीन शख़्सों पर बहुत रह़्म आता है, क़ौम का सरदार जो ज़लील हो जाए, क़ौम का ग़नी जो मोह़ताज हो जाए और वोह आ़लिम जिसे दुन्यादारी से फ़ुरसत नहीं होती।

हज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : उ़लमा का अ़ज़ाब दिल की मौत है और दिल की मौत आख़िरत के बदले दुन्या का ह़ुसूल है।

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

عجبت لمبتا ع الضلا لة بالهدى ومن يشترى دنياه با لدين اعجب

واعجب من هذين من با ع دينه بدنيا سواه فهو من دين اعجب

﴾1﴿......मुझे हिदायत के बदले ज़लालत ख़रीदने वाले पर तअ़ज्जुब हुवा और जो दीन के बदले दुन्या ख़रीदता है वोह इस से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात करता है।

﴾2﴿......और इन से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात येह है कि इन्सान ग़लत़ दीन के बदले में अपना सहीह़ दीन बेच देता है।

फ़रमाने नबवी है कि आ़लिम को जहन्नम में ऐसा अ़ज़ाब दिया जाएगा जिस की शिद्दत से वोह जहन्नमियों में घूमता रहेगा, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद ऐसे आ़लिम से फ़ाजिरो फ़ासिक़ आ़लिम थी।(1)

(1)......طبقات الشافية الكبرى للسبكى،٦/٢٨٩

बे अ़मल आ़लिम का अन्जाम

हज़रते उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم से सुना, आप फ़रमा रहे थे : क़ियामत के दिन एक आ़लिम को लाया जाएगा और उसे जहन्नम में डाला जाएगा, उस की आंतें निकल आएंगी और जहन्नम में आंतों के बल ऐसे घूमेगा जैसे गधा चक्की के गिर्द घूमता है, जहन्नम वाले उसे अपने गिर्द घूमता देख कर उस से उस के अ़मल पूछेंगे : तब वोह आ़लिम कहेगा कि मैं औरों को तो नेकी का हुक्म देता था मगर ख़ुद इस पर अ़मल नहीं करता था, लोगों को बुराइयों से रोकता था मगर ख़ुद नहीं रुकता था।[1]

आ़लिम को गुनाहों के सबब दोहरा अ़ज़ाब इस लिये दिया जाएगा क्यूंकि वोह इ़ल्म के बा वुजूद गुनाह करता रहा, इसी लिये फ़रमाने इलाही है कि

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ[2]

मुनाफ़िक़ीन बेशक जहन्नम के निचले त़बक़े में होंगे।

इस लिये कि उन्हों ने इ़ल्म के बा वुजूद हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की नबुव्वत व सदाक़त का इन्कार किया।

अल्लाह तआ़ला ने नसारा को **अल्लाह** का बेटा और उसे तीन में से तीसरा कहने के बा वुजूद यहूद को उन से बदतर क़रार दिया क्यूंकि यहूद ने इ़ल्म के बा वुजूद हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की नबुव्वत का इन्कार कर दिया था चुनान्चे,

फ़रमाने इलाही है :

يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ[3]

वोह (यहूद) आप को पहचानते हैं जैसे के अपने बेटों को पहचानते हैं।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ[4]

*पस जब उन के पास वोह कुछ आया जिसे वोह पहचानते थे तो उन्हों ने उस से कुफ़्र किया पस काफ़िरों पर **अल्लाह** की ला'नत है।*

---

1 ......بخاری، کتاب بدء الخلق ، باب صفۃ النار و انھا مخلوقۃ ، ۲/۳۹۶ ، الحدیث ۳۲۶۷

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बक़े में हैं। (پ٥، النساء:١٤٥)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह उस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है। (پ٢، البقرۃ:١٤٦)

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर। (پ١، البقرۃ:٨٩)

अल्लाह तआला ने बलअ़म बिन बाऊ़रा के क़िस्से में इरशाद फ़रमाया :

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْۤ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ (1)

और इन लोगों पर उस शख़्स का क़िस्सा बयान कर जिसे हम ने अपनी निशानियां दीं पस वोह उन में से निकल गया और शैत़ान ने उसे पीछे लगाया पस वोह गुमराहों में से हो गया।

और येह भी इरशाद फ़रमाया कि

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ (2)

पस उस की मिसाल कुत्ते की मिसाल जैसी है अगर तू उस पर बोझ डाल दे तो वोह ज़बान लटकाता है और अगर उसे छोड़ दे तो भी ज़बान लटकाता है।

इसी त़रह़ फ़ासिक़ो फ़ाजिर आ़लिम का अन्जाम होता है क्यूंकि बलअ़म को किताबुल्लाह का इ़ल्म दिया गया था मगर उस ने ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को अपना लिया लिहाज़ा उस के लिये कुत्ते की मिसाल दी गई या'नी उसे चाहे हिक्मत व इ़ल्म दिया गया या नहीं वोह हर ह़ालत में शहवात की त़रफ़ ज़बान लटकाता रहता है।

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया बुरे उ़लमा की मिसाल ऐसी चट्टान की सी है जो नह्‌र के मुंह पर गिर गई हो, न वोह ख़ुद सैराब होती है और न ही वोह पानी को रास्ता देती है कि उस से खेतियां सैराब हों।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब इन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह उन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया। (پ۹، الاعراف: ۱۷۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले। (پ۹، الاعراف:۱۷۶)

बाब 85

फ़ज़ीलते हुस्ने ख़ुल्क़

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी और ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ फ़रमाते हुवे और अपनी ने'मतों का इन के लिये इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

وَ اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ (1) *बेशक आप साहिबे ख़ुल्क़े अ़ज़ीम हैं।*

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ कुरआन था।(2)

एक शख़्स ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हुस्ने ख़ुल्क़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

خُذِ الْعَفْوَ وَ اْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ (3) *दर गुज़र करना इख़्तियार करो नेकी का हुक्म करो और जाहिलों से मुंह फेर लो।*

फिर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़ येह है कि तू क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वालों से सिलए रेह़मी करे, जो तुझे मह़रूम करे तू उसे अ़ता करे और जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसे मुआ़फ़ कर दे।(4)

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं इस लिये मबऊ़स किया गया हूं कि उ़म्दा अख़्लाक़ को पायए तक्मील तक पहुंचाऊं।(5)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मीज़ाने आ'माल में सब से भारी चीज़ ख़ौफ़े ख़ुदा और हुस्ने ख़ुल्क़ होगा।(6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है। (پ۲۹، القلم: ٤).

2......كنزالعمال، كتاب الشمائل، الباب الرابع...الخ، شمائل متفرقة، ٤/٨٨، الجزء السابع، الحديث ١٨٧١٤

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो। (پ۹، الاعراف: ۱۹۹)....الدرالمنثور، سورة الاعراف، تحت الآية: ٨٠، ٣/٦٣٠

4......شعب الايمان، السادس والخمسون من شعب الايمان...الخ، ٦/٢٢٢، الحديث ٧٩٥٩

5......سنن الكبرى للبيهقى، كتاب الشهادات، باب بيان مكارم الاخلاق...الخ، ١٠/٣٢٣، الحديث ٢٠٧٨٢

6......ترمذى، كتاب البر و الصلة، باب ماجاء فى حسن الخلق، ٣/٤٠٤، الحديث ٢٠١٠

एक शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दीन क्या है ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़, फिर दाईं त़रफ़ से आया और अ़र्ज़ की : दीन क्या है ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़, फिर वोह बाईं त़रफ़ से आया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दीन क्या है ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़, फिर वोह शख़्स आप के अ़क़ब से आया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दीन क्या है ? आप ने उस की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और फ़रमाया : [1] اَمَا تَفْقَهُ هُوَ اَنْ لَا تَغْضَبَ (क्या तू नहीं समझता ? दीन येह है कि तू गुस्सा न करे) ।

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि नुहूसत क्या है ? आप ने फ़रमाया : बद ख़ुल्क़ी ।[2]

एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि मुझे वसिय्यत कीजिये ! आप ने फ़रमाया : जहां भी रहो अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, उस ने अ़र्ज़ की : मज़ीद इरशाद फ़रमाइये !

आप ने फ़रमाया : हर बुराई के बा'द नेकियां करो, वोह इसे मिटा देंगी, उस ने फिर अ़र्ज़ की : कुछ और फ़रमाइये !

आप ने फ़रमाया : लोगों से हुस्ने सुलूक करो और हुस्ने ख़ुल्क़ से पेश आओ ।[3]

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़ ।[4]

फ़रमाने नबवी है कि अल्लाह तआ़ला ने जिस बन्दे की पैदाइश और ख़ुल्क़ को बेहतरीन बनाया है उसे वोह जहन्नम में नहीं डालेगा ।[5]

हज़रते फ़ुज़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि फ़ुलां औ़रत रात को इबादत करती है, दिन को रोज़ा रखती है मगर वोह बद ख़ुल्क़ है, अपनी बातों से हमसाइयों को तक्लीफ़ देती है, आप ने फ़रमाया : उस में भलाई नहीं है वोह जहन्नमियों में से है ।[6]

1 ......الترغيب والترهيب، كتاب الادب وغيره، الترهيب فى الخلق الحسن وفضله...الخ، ٣/٣٢٨ ، الحديث ٤٠٦١ و تعظيم قدر الصلاة لمحمد بن نصر المروزى، باب ذكر اكفار تارك الصلاة ، ٢/٨٦٤، الحديث٨٧٨

2 ......المعجم الاوسط ، ٤/٢٠٥، الحديث ٥٧٢٦

3 ......شعب الايمان، السابع والخمسون من شعب...الخ ، ٦/٢٤٤، الحديث ٨٠٢٣

4 ......المعجم الكبير، ١/١٨٠، الحديث ٤٦٨

5 ......المعجم الاوسط ، ٥/١٢٠، الحديث ٦٧٨٠

6 ......المستدرك للحاكم ، كتاب البر والصلة، باب ان الله لايعطى...الخ، ٥/٢٣١، الحديث ٧٣٨٤ (عن ابى هريره)

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि सब से पहले मीज़ाने अ़मल में हुस्ने खुल्क़ और सख़ावत रखी जाएगी, जब **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान को पैदा फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! मुझे कुव्वत अ़ता फ़रमा, तो **अल्लाह** तआ़ला ने उसे हुस्ने खुल्क़ और सख़ावत से तक़विय्यत बख़्शी और जब **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्र को पैदा फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! मुझे कुव्वत बख़्श तो उस ने उसे बुख़्ल और बद खुल्क़ी से तक़विय्यत बख़्शी।[1]

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस दीन को अपने लिये पसन्द फ़रमा लिया है, तुम्हारा येह दीन सख़ावत और हुस्ने खुल्क़ के बिग़ैर सहीह़ नहीं होता, होशयार ! अपने आ'माल को इन दो चीज़ों से ज़ीनत बख़्शो।[2]

फ़रमाने नबवी है कि हुस्ने खुल्क़ **अल्लाह** तआला की अ़ज़ीम तरीन मख़्लूक़ है।[3]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि कौन से मोमिन का ईमान अफ़्ज़ल है ? आप ने फ़रमाया : जिस का खुल्क़ सब से बेहतर होगा।[4]

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि बिला शुबा तुम लोगों की मालो दौलत के ज़रीए इमदाद नहीं कर सकते लिहाज़ा उन की ख़न्दा पेशानी और हुस्ने खुल्क़ से मदद करो।[5]

फ़रमाने नबवी है कि बद खुल्क़ी आ'माल को इस त़रह़ ज़ाएअ़ कर देती है जैसे सिर्का शहद को ख़राब कर देता है।[6]

हज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक तुम ऐसे जवान हो कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी ख़िल्क़त को बेहतरीन किया है लिहाज़ा तुम अपना खुल्क़ बेहतरीन करो।[7]

---

1 ...... المعجم الكبير، ٢٥٣/٢٤، الحديث ٦٤٧ عن ام الدرداء و طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٣٣٢/٦

2 ......المعجم الاوسط، ١٤٠/٦، الحديث ٨٢٨٦

3 ......المعجم الاوسط، ١٥٦/٦، الحديث ٨٣٤٤

4 ......المعجم الكبير، ٤٩/١٧، الحديث ١٠٥

5 ......مسند ابى يعلى، ٤٨٩/٥، الحديث ٦٥١٩

6 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الباب الثانى...الخ، الفصل الاول، ١٧٨/٢، الجزء الثالث، الحديث ٧٣٤٤

7 ......فردوس الاخبار، ٤٠٩/٥، الحديث ٨٥٧٧

हज़रते बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों से ज़ियादा ख़ूब सूरत और बेहतरीन ख़ुल्क़ वाले थे।[1]

हज़रते अबू मसऊद बदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी दुआ में यूं अ़र्ज़ करते :

ऐ **अल्लाह** ! जैसे तू ने मेरी तख़्लीक़ को बेहतरीन किया है वैसे ही मेरी ख़ुल्क़ को बेहतरीन फ़रमा।[2]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ फ़रमाया करते :

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ الصِّحَۃَ وَ الْعَافِیَۃَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ [3]

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से सिह़्ह़त सलामती और हुस्ने ख़ुल्क़ का सुवाल करता हूं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन्सान की शराफ़त उस का दीन है, उस की नेकी हुस्ने ख़ुल्क़ है और उस की मुरुव्वत उस की अ़क़्ल है।[4]

हज़रते उसामा बिन शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं आ'राबियों की मजलिस में हाज़िर हुवा, वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछ रहे थे कि इन्सान को अ़ताशुदा भलाइयों में से कौन सी भलाई उ़म्दा है ? आप ने फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़।[5]

फ़रमाने नबवी है कि क़ियामत के दिन मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब और मुझ से क़रीब तर वोह लोग होंगे जो तुम में से बेहतरीन ख़ुल्क़ रखते हैं।[6]

---

1 ......بخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، ۲/۴۸۷، الحدیث ۳۵۴۹

2 ......مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود ۲/۶۶، الحدیث ۳۸۲۳

3 ......فردوس الاخبار، ۱/۴۵۶، الحدیث ۱۸۵۲ ملتقطاً

4 ......شعب الایمان ، الباب السابع والخمسون من شعب الایمان...الخ ، ۶/۲۴۶، الحدیث ۸۰۳۰

5 ......المستدرک للحاکم، کتاب الطب، باب خیر ما اعطی...الخ ، ۵/۲۸۰، الحدیث ۷۵۰۷

6 ......ترمذی، کتاب البر والصلاۃ، باب ماجاء فی معالی الاخلاق ، ۳/۴۱۰، الحدیث ۲۰۲۵

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन ख़स्लतें हैं जिस शख़्स में वोह तीनों या उन में से कोई एक न पाई जाए, उस के किसी अ़मल को शुमार में न लाओ !

परहेज़गारी जो उसे अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी से बाज़ रखती है,

हिल्म जिस से वोह बे वुक़ूफ़ को रोक देता है,

हुस्ने ख़ुल्क़ जिस से मुत्तसिफ़ हो कर वोह ज़िन्दगी बसर करता है।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ की इब्तिदा में येह दुआ़ फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह ! मुझे बेहतरीन ख़ुल्क़ की हिदायत फ़रमा, तेरे सिवा कौन है जो हुस्ने ख़ुल्क़ की हिदायत दे, मुझे बद ख़ुल्क़ी से नजात दे, बद ख़ुल्क़ी से बचाने वाला तेरे सिवा कौन है ?[2]

आप से दरयाफ़्त किया गया कि इन्सान की ज़ेबो ज़ीनत किस बात में है ? आप ने फ़रमाया : कलाम में नर्मी, कुशादा रूई और ख़न्दा पेशानी का इज़्हार।[3]

जो शख़्स लोगों से एह़सान करता है और हुस्ने ख़ुल्क़ से मुआ़मला रखता है, ऐसा इन्सान लोगों को गवारा होता है और लोग उस की ता'रीफ़ें करते हैं।

जैसा कि एक शाइर कहता हैं।

اذا حويت خصال الخير اجمعها — فضلا وعاملت كل الناس بالحسن

لـم تعدم الخيرمن ذى العرش تحرزه — والشكر من خلقه فى السر والعلن

﴾1﴿......जब तू ने भलाई की तमाम आ़दात को जम्अ़ कर लिया और सब लोगों से अच्छा बरताव किया,

﴾2﴿......तो तू साहि़बे अ़र्श से अपनी जम्अ़ कर्दा नेकी को गुम नहीं पाएगा और न ही अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ से सामने और पीठ पीछे अपनी ता'रीफ़ों को गुम पाएगा।

❶......المعجم الكبير، ٢٣/٣٩٥، الحديث ٩٤٤ عن ام سلمة رضى الله عنها

❷......نسائى، كتاب الافتتاح، باب نوع آخر من الدعاء...الخ، ص ١٥٦، الحديث ٨٩٣

❸......سنن الكبرى للبيهقى، كتاب قتال اهل البغى، باب لا يبدا الخوارج، ٨/٣١٣، الحديث ١٦٧٤٣ ماخوذاً

बाब 86

ख़न्दा व गिर्या ज़ारी

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस फ़रमाने इलाही :

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِیْثِ تَعْجَبُوْنَ ۙ۝۵۹ وَ تَضْحَكُوْنَ وَ لَا تَبْكُوْنَ ۙ۝۶۰ وَ اَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝۶۱ (1) *क्या पस इस बात से तअ़ज्जुब करते हो और हंसते हो और रोते नहीं हो, और तुम ग़फ़्लत में हो।*

की तफ़्सीर में फ़रमाया कि هٰذَا الْحَدِیْثِ से मुराद कुरआन है या'नी तुम इस कुरआन पर तअ़ज्जुब करते हो और झुटलाते हो और बा वुजूद इस के कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है फिर भी तुम इस का ठठ्ठा करते हो और इस में जो वईदें हैं इन को पढ़ कर तुम ख़ौफ़ से रोते नहीं और तुम से जो मुतालबा है उस से ग़ाफ़िल हो।

इस आयत के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी नहीं हंसे, सिर्फ़ तबस्सुम फ़रमाया करते थे।[2]

एक रिवायत में है कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हंसते और मुस्कुराते हुवे नहीं देखा गया यहां तक कि आप दुन्या से तशरीफ़ ले गए।[3]

हज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है : एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ने लोगों की ऐसी जमाअ़त देखी जो हंस हंस कर बातें कर रहे थे आप उन के पास ठहर गए, उन्हें सलाम कहा और फ़रमाया : दुन्यावी लज़्ज़तों को मुन्क़त़ेअ़ करने वाली (मौत) को अक्सर याद किया करो।[4]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या इस बात से (तुम तअ़ज्जुब करते हो और हंसते हो और रोते नहीं और तुम खेल में पड़े हो।) (پ۲۷، النجم:۵۹۔۶۱)

2......الدرالمنثور، سورة النجم، تحت الآية:٥٦، ٧/٦٦٦ و مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الزهد، ما ذكر عن نبيّنا...الخ، ٨/١٣٣، الحديث ٥٥

3......الدرالمنثور، سورة النجم، تحت الآية:٥٦، ٧/٦٦٦ و الزهد لوكيع، الجزء الاول، ١/٢٦٦، الحديث٣٦

4......شعب الايمان، الحادى عشر من شعب الإيمان، باب فى الخوف من الله تعالى، ١/٤٩٨، الحديث ٨١٣٤ و مسند البزار، ١٣/٣٥٢، الحديث ٦٩٨٧ وكشف الخفاء، ١/١٥٠، تحت الحديث ٥٠٠

फिर एक मरतबा आप का गुज़र एक ऐसी जमाअ़त से हुवा जो हंस रहे थे, आप ने उन्हें देख कर फ़रमाया : ब ख़ुदा अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो तुम कम हंसते और ज़ियादा रोते।[1]

जब ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़लाह़िदा होना चाहा तो उन्हों ने कहा : मुझे नसीह़त कीजिये ! ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ऐ मूसा ख़ुद को झगड़ों से बचाइये ! ज़रूरत के बिग़ैर क़दम न उठाइये ! तअ़ज्जुब के बिग़ैर मत हंसिये ! गुनाहगारों को उन की ख़त़ाओं के सबब शर्मिन्दा न करो और अपनी त़रफ़ से रब के ह़ुज़ूर रोते रहो।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ज़ियादा हंसना दिल को मौत से हम किनार कर देता है।[2]

मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स जवानी में हंसता है, मौत के वक़्त रोता है।[3]

इरशादे नबवी है कि क़ुरआन पढ़ो और रोओ, अगर रोना न आए तो रोने वाले शख़्स जैसा चेहरा बनाओ।[4]

ह़ज़रते ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस फ़रमाने इलाही :

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ (5) *पस चाहिये कि थोड़ा हंसो और ज़ियादा रोओ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि दुन्या में कम हंसो वरना आख़िरत में बहुत रोना पड़ेगा और येह तुम्हारे आ'माल की जज़ा होगी।

मज़ीद फ़रमाया कि मुझे उस हंसने वाले पर तअ़ज्जुब होता है जिस के पीछे जहन्नम है और उस मसरूर व शादां पर तअ़ज्जुब होता है जिस के पीछे मौत लगी हुई है।

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का एक ऐसे जवान के क़रीब से गुज़र हुवा जो हंस रहा था। आप ने पूछा : ऐ बेटे ! क्या तू ने पुल सिरात़ को उ़बूर कर लिया है ? उस ने कहा : नहीं ! आप ने फ़रमाया : तो क्या तुझे येह मा'लूम हो गया है कि तू जन्नत में जाएगा ? आप ने फ़िर पूछा : वोह जवान न बोला, आप ने फ़रमाया : फिर किस लिये हंस रहे हो ? इस के बा'द उस जवान को कभी भी हंसते हुवे नहीं देखा गया।

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب صفة النار، ٦/٤٣٣، الحدیث ١٥٧

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب من اتقی المحارم...الخ، ٤/١٣٧، الحدیث ٢٣١٢

3 ......

4 ......مسند البزار، ٤/٦٩، الحدیث ١٢٣٥ و کنز العمال، قسم الاقوال، الباب السابع فی تلاوة القرآن وفضائله، الفصل الثالث فی آداب التلاوة، ١/٣٣٠، الجز الاول، الحدیث ٢٧٩١

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं। (پ١٠، التوبة: ٨٢)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान है कि जो हंसते हुवे गुनाह करता है वोह रोते हुवे जहन्नम में जाएगा।

अल्लाह तआ़ला ने रोने वालों की ता'रीफ़ की है चुनान्चे, इरशादे इलाही है :

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ [1] *और वोह रोते हुवे ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं।*

हज़रते औज़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस आयत :

مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا [2] *क्या है इस किताब को कि नहीं छोड़ती छोटी बात और न बड़ी बात मगर इस को गिन लिया है।*

की तशरीह़ में फ़रमाते हैं कि छोटी बात से मुराद तबस्सुम और बड़ी बात से मुराद क़ह्क़हा लगाना है।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन सब आंखें रोने वाली होंगी मगर तीन आंखें नहीं रोएंगी, जो ख़ौफ़े ख़ुदा से रोई, जो अल्लाह तआ़ला की ह़राम कर्दा चीज़ों से बन्द हो गई और जो राहे ख़ुदा में बेदार हुई।[3]

कहा गया है कि तीन चीज़ें दिल को सख़्त करती हैं, बिग़ैर किसी तअ़ज्जुब के हंसना, भूक के बिग़ैर खाना और बिग़ैर किसी ज़रूरत के बातें करना।

लिबास

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तहबन्द, चादर, क़मीस या जुब्बा वग़ैरा से जो कपड़ा भी मुयस्सर आ जाता, पहन लेते थे और आप को सब्ज़ लिबास पसन्द था लेकिन अक्सर अवक़ात आप सफ़ेद लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया करते थे और फ़रमाते येही लिबास अपने ज़िन्दों को पहनाओ और इसी में अपने मुर्दों को कफ़न दो।[4]

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुवे। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۰۹)

येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है ख़्वाह पढ़ना या सुनना बिल क़स्द हो या बिला क़स्द और तर्जमे का भी येही हुक्म है। **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस नविश्ता (तह़रीर) को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो। (پ۱۵، الکھف: ۴۹)

3 ......كنزالعمال،كتاب المواعظ...الخ، الباب الاول...الخ، الفصل الثالث...الخ، ۳۵۶/۸، الجزء الخامس عشر، الحديث ۴۳۳۵۰

4 ......المعجم الكبير، ۶۶/۱۲، الحديث۱۲۴۹۳ و اتحاف السادة المتقين للزبيدى،كتاب آداب المعيشة...الخ، بيان آدابه واخلاقه...الخ، ۲۴۹/۸

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रेशमी क़बा थी, आप के जिस्मे अत़हर पर इस का सब्ज़ रंग बहुत भला लगता था। आप के तमाम कपड़े टख़्नों के ऊपर होते थे और आप का तहबन्द इन से ऊपर निस्फ़ साक़ (पिन्डली) तक होता था।(1)

आप के पास एक सियाह कम्बल था जो आप ने किसी को बख़्श दिया, ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, सियाह कम्बल का क्या हुवा ? आप ने फ़रमाया : वोह मैं ने पहना दिया, ह़ज़रते उ़म्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बोलीं : या रसूलल्लाह ! मैं ने आप के सफ़ेद जिस्म पर उस काले कम्बल से ज़ियादा ह़सीन चीज़ नहीं देखी।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिबास को दाहिनी त़रफ़ से पहनना शुरूअ़ फ़रमाते और पढ़ते : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَآ اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِی النَّاسِ ह़म्द है उस अल्लाह को जिस ने मुझे लिबास दिया जिस से मैं अपना जिस्म ढांपता हूं और लोगों में ज़ीनत के साथ जाता हूं।(3)

आप अपना लिबास हमेशा बाईं त़रफ़ से उतारते थे, जब नया कपड़ा ज़ेबे तन फ़रमाते तो पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन को दे देते और फ़रमाते : जो किसी मुसलमान को अपना पुराना कपड़ा रज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये पहनाता है वोह अपने इस अ़मल की बदौलत ज़िन्दगी और मौत दोनों में अल्लाह तआ़ला की अमान, पनाह और रह़मत में होता है।(4)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा मुबारक था, आप जहां आराम फ़रमाते उसे नीचे दो तहों में बिछा देते।(5)

आप चटाई पर आराम फ़रमाया करते थे, चटाई के बिग़ैर और कोई चीज़ आप के जिस्मे अत़हर व अक़्दस के नीचे नहीं होती थी।(6)

---

1 ......مسند البزار، ٤٥٢/١٣، الحديث ٧٢٢٣ و اتحاف السادة المتقين، كتاب آداب المعيشة...الخ، بيان آدابه و اخلاقه...الخ، ٢٥٠/٨ و شعب الايمان ، الأربعون من شعب الإيمان، باب فى الملابس والزى والأوانى وما يكره منها، فصل فيمن اختار التواضع فى اللباس، ١٥٥/٥، الحديث ٦١٧١ و سنن الكبرى للنسائى، كتاب الزينة، باب موضع الإزار، ٤٨٤/٥، الحديث ٨٢٩٦

2 ......اتحاف السادة المتقين للزبيدى، كتاب اداب المعيشة...الخ، بيان آدابه واخلاقه...الخ، ٢٥٣/٨

3 ......مصنف ابن ابى شيبية، كتاب اللباس و الزنية، باب ما يقول الرجل اذا لبس...الخ، ٥٩/٦، الحديث ١

4 ......شعب الايمان، الاربعون من شعب الايمان، فصل فيما يقول اذا لبس ثوباً ، ١٨١/٥، الحديث ٦٢٨٦ماخوذاً

5 ......كنز العمال، كتاب الشمائل، قسم الافعال، باب شمائل الاخلاق، ٧٣/٤، الجزء السابع، الحديث١٨٦٠٨ و الشمائل الترمذى، باب ماجاء فى فراش رسول صلى اللّٰه عليه وسلم ، ص١٨٨، الحديث ٣١٢

6 ......مسلم، كتاب الصلاة، باب فِي الإيلاء واعتزال النّساء، ص٧٨٧، الحديث ٣١ـ (١٤٧٩)

बाब 87

क़ुरआन, इल्म और उ़लमा

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस ने कुरआने मजीद की तिलावत की फिर येह समझा कि किसी को इस से भी उ़म्दा चीज़ दी गई है तो गोया उस ने **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मत को मा'मूली समझा है।[1]

इरशादे नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला के पास कुरआने मजीद से ज़ियादा मर्तबे वाला कोई शफ़ीअ़ नहीं है।[2]

एक और फ़रमान है कि मेरी उम्मत की बेहतरीन इ़बादत कुरआने मजीद की तिलावत है।[3]

एक और इरशाद है कि तुम में से ज़ियादा बेहतर वोह है जो कुरआने मजीद पढ़े और पढ़ाए।[4]

मज़ीद फ़रमाया कि दिलों को ज़ंग इस त़रह़ लग जाता है जैसे लोहे को, अ़र्ज़ किया गया : इस की चमक-दमक फिर कैसे लौटती है ? आप ने फ़रमाया : तिलावते कुरआन और मौत को याद करने से।[5]

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि कुरआने करीम का इ़ल्म रखने वाला इस्लाम का झन्डा उठाने वाला है लिहाज़ा उस के लिये येह मुनासिब नहीं कि वोह लह्वो लइ़ब में मश्ग़ूल लोगों के साथ मिल कर लह्वो लइ़ब में मश्ग़ूल हो जाए, भूलने वाले के साथ भूले नहीं और बेहूदा लोगों के साथ मिल कर बेहूदगी न करे क्यूंकि येह कुरआने मजीद की ता'ज़ीम के ख़िलाफ़ है, आप ने मज़ीद फ़रमाया : जो सुब्ह़ करते ही सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात की तिलावत करता है, अगर वोह उसी दिन मर जाए तो उसे शुहदा में लिखा जाता है और उस पर शहीदों की मोहर लगाई जाती है और जो शख़्स इन को रात की इब्तिदा में तिलावत करता है और अगर वोह उसी रात मर जाए तो उस पर शहीदों की मोहर लगाई जाती है।

---

1 ......المحرر الوجیز، باب ما ورد عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱/۳۶ و الزھد لابن مبارک ، باب ما جاء فی ذم التنعم فی الدنیا، ص۲۷۵، الحدیث ۷۹۹ و تذکرۃ الموضوعات للفتنی، ص۷۷

2 ......المحرر الوجیز، باب ما ورد عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۱/۳۷ و المقاصد الحسنۃ، ص۲۱ وکشف الخفاء، ۱/۱۷، تحت الحدیث ۲۱

3 ......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان...الخ ، فصل فی ادمان تلاوۃ القرآن، ۲/۳۵۴، الحدیث ۲۰۲۲

4 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من...الخ، ۳/۴۱۰، الحدیث۵۰۲۸

5 ......شعب الایمان، التاسع عشر من شعب الایمان...الخ ، فصل فی ادمان تلاوۃ القرآن، ۲/۳۵۳، الحدیث ۲۰۱۴

इल्म और उ़लमा की फ़ज़ीलत

इस सिलसिले में बहुत ही कसरत से अह़ादीस वारिद हैं चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला जिस शख़्स से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ देता है और उसे राहे रास्त की हिदायत फ़रमाता है।[1]

नीज़ इरशादे गिरामी है कि उ़लमा, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं।[2]

और येह बदीही बात है कि अम्बियाए किराम से बढ़ कर किसी का रुत्बा नहीं और अम्बियाए किराम के वारिसों से बढ़ कर किसी वारिस का मर्तबा नहीं है।

फ़रमाने नबवी है कि सब लोगों से अफ़्ज़ल वोह मोमिन आ़लिम है कि जब उस की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाए तो वोह नफ़्अ़ दे और जब उस से बे नियाज़ी बरती जाए तो वोह भी बे नियाज़ हो जाए।[3]

नीज़ इरशाद फ़रमाया कि मर्तबए नुबुव्वत से सब से ज़ियादा क़रीब, आ़लिम और मुजाहिद हैं।[4]

उ़लमा इस लिये कि इन्हों ने रसूलों के पैग़ामात लोगों तक पहुंचाए और मुजाहिद इस लिये कि इन्हों ने अम्बियाए किराम के अह़कामात को ब ज़ोरे शम्शीर पूरा किया और उन के अह़कामात की पैरवी की, मज़ीद इरशाद है कि पूरे क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से आसान है।[5]

और फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उ़लमा की सियाही की दवातें शुहदा के ख़ून के बराबर तोली जाएंगी।[6]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि आ़लिम इल्म से कभी सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाता है।[7]

---

1 ......المعجم الكبير، ١٩/٣٤٠، الحديث ٧٨٦

2 ......ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه...الخ، ٤/٣١٢، الحديث ٢٦٩١

3 ......شعب الايمان، السابع عشر من شعب الايمان...الخ، فصل فی فضل العلم...الخ، ٢/٢٦٩، الحديث ١٧٢٠ ماخوذًا

4 ......كنزالعمال، کتاب الجهاد، الباب الاول...الخ، ٢/١٣٢، الجزء الرابع، الحديث ١٠٦٤٣

5 ......شعب الايمان، السابع عشر من شعب الايمان...الخ، فصل فی فضل العلم...الخ، ٢/٢٦٤، الحديث ١٦٩٩

6 ......كنزالعمال، کتاب العلم، الباب الاول...الخ، ٥/٦٠، الجزء العاشر، الحديث ٢٨٧١١،

7 ......فردوس الاخبار، ٢/٤٤٢، الحديث ٧٨٨٦

मज़ीद फ़रमाया कि मेरी उम्मत की हलाकत दो चीज़ों में है, इल्म का छोड़ देना और माल का जम्अ़ करना।(1)

एक और इरशाद है कि आ़लिम बन या मुतअ़ल्लिम, या इल्मी गुफ़्त्गू सुनने वाला या इल्म से महब्बत करने वाला बन और पांचवां या'नी इल्म से बुग़्ज़ रखने वाला न बन कि हलाक हो जाएगा।(2)

और फ़रमाया कि तकब्बुर इल्म के लिये बहुत बड़ी मुसीबत है।(3)

हुकमा का क़ौल है कि जो सरदारी के हुसूल के लिये इल्म हासिल करता है वोह तौफ़ीक़ और रइय्यत दारी का एहसास खो देता है। फ़रमाने इलाही है :

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (4)

अलबत्ता मैं अपनी निशानियों से ऐसे लोगों को फेर दूंगा जो दुन्या में तकब्बुर करते हैं।

हज़रते शाफ़ेई رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़ौल है कि जिस ने कुरआन का इल्म सीखा उस की क़ीमत बढ़ गई, जिस ने इल्मे फ़िक़्ह सीखा उस की क़द्र बढ़ गई, जिस ने हदीस सीखी उस की दलील क़वी हुई, जिस ने हिसाब सीखा उस की अ़क़्ल पुख़्ता हुई, जिस ने नादिर बातें सीखीं उस की तबीअ़त नर्म हुई और जिस शख़्स ने अपनी इज़्ज़त नहीं की उसे इल्म ने कोई फ़ाइदा न दिया।

हज़रते हसन बिन अ़ली (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) का इरशाद है कि जो शख़्स उ़लमा की महफ़िल में अक्सर हाज़िर होता है उस की ज़बान की रुकावट दूर होती है, ज़ेहन की उलझनें खुल जाती हैं और जो कुछ वोह हासिल करता है उस के लिये बाइसे मसर्रत होता है। उस का इल्म उस के लिये एक विलायत है और फ़ाइदामन्द होता है।

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला जिस बन्दे को रद्द कर देता है, इल्म को उस से दूर कर देता है।(5)

एक और इरशाद में है कि जहालत से बढ़ कर कोई फ़क़्र नहीं है।(6)

---

1 ......المستطرف، الباب الثالث، ٤٩/١ و موسوعة ابن ابی الدنيا،كتاب الورع ، باب الورع فی الفرج، ١٥٩/٥، الحديث ٣٦١ وموسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب قصر الأمل، ٣/ ٣٠٣، الحديث٣، ٤،٥

2 ......كتاب الكبائر للذهبی، الكبيرة الحادية عشرة اللواط، فصل الحاق اتيان...الخ ، ص ٦٧ ليس بمرفوع

3 ......طبقات الشافية الكبری للسبكی،٣١٩/٦ و تذكرة الموضوعات للفتنی، ص٧٢ و المعجم الكبير،٦٨/٣، الحديث٢٦٨٨

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ٩، الاعراف:١٤٦)

5 ......كنزالعمال،كتاب العلم، الباب الاول...الخ ، ٦٨/٥، الجزء العاشر، الحديث٢٨٨٠٣

6 ......شعب الايمان، الباب الثالث و الثلاثون...الخ ، فصل فی فضل العقل...الخ ، ١٥٧/٤، الحديث٤٦٤٧

बाब 88

फ़ज़ीलते ज़कात व सलात

येह बात समझ लीजिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़कात को इस्लाम की बुन्यादों में से शुमार किया है और इस का ज़िक्र नमाज़ के ज़िक्र के साथ है, नमाज़ जो कि इस्लाम का बुलन्द तरीन शिआ़र है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ (1) *और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो।*

फ़रमाने नबवी है कि इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है, **अल्लाह** की वह्दानिय्यत, मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की शहादत, नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात अदा करना।(2) (الٰی آخر الحدیث)

और **अल्लाह** तआ़ला ने दो में तक़सीर करने वालों की वई़दे शदीद की है चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

(3) فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ *पस हलाकत है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से बे ख़बर हैं।*

इस बारे में पहले ही मुकम्मल बह़स गुज़र चुकी है और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कलाम में इरशाद फ़रमाया है :

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ (4) *और जो लोग सोना चांदी जम्अ़ करते हैं और इसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते पस उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुश ख़बरी दीजिये।*

इस आयते करीमा में राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुराद ज़कात अदा करना है।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो। (پ۱، البقرۃ:۴۳)

2......مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ارکان الاسلام...الخ، ص۲۷، الحدیث ۲۱۔ (۱۶)

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं। (پ۳۰، الماعون:۴،۵)

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे **अल्लाह** की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की। (پ۱۰، التوبۃ: ۳۴)

सदक़ा किसे दिया जाए ?

सदक़ा देते वक़्त ऐसे नेक अफ़राद फ़ुक़रा तलाश किये जाएं जो दुन्या से तर्के तअ़ल्लुक़ कर चुके हों और आख़िरत से लौ लगाए हुवे हों क्यूंकि ऐसे फ़ुक़रा को सदक़ा देना माल को बढ़ाना है, फ़रमाने नबवी है कि परहेज़गार का खाना खा और परहेज़गार को खाना खिला।[1]

आप ने येह बात इस लिये फ़रमाई कि परहेज़गार इस त़आ़म से परहेज़गारी में बढ़ेगा तू भी इस इआ़नत की वज्ह से उस की इ़बादतो रियाज़त में शरीक गिना जाएगा।

एक आ़लिम का क़ौल है कि सदक़ा देते वक़्त सूफ़ी फ़ुक़रा को तरजीह़ दे, किसी ने उस आ़लिम से कहा कि अगर आप तमाम फ़ुक़रा का कहते तो बेहतर होता, आ़लिम ने कहा : नहीं ! येह सूफ़ी फ़क़ीर एक ऐसा गुरौह हैं जिन की तमाम तर तवज्जोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ मब्ज़ूल रहती है, जब उन में से किसी को फ़ाक़ा से वासित़ा पड़ता है तो उन की हिम्मतें परागन्दा हो जाती हैं, मुझे उन में से किसी एक फ़क़ीर की तवज्जोह फ़ाक़ा से हटा कर अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ कर देना उन हज़ार फ़क़ीरों को देने से ज़ियादा पसन्द है जिन की दिल चस्पियों का मर्कज़ दुन्या है। किसी ने ह़ज़रते जुनैद رضی اللہ تعالٰی عنہ को येह बात सुनाई तो उन्हों ने उसे बहुत पसन्द फ़रमाया और कहा कि येह शख़्स अल्लाह के औलिया में से एक वली है। मैं ने काफ़ी मुद्दत से इस जैसी बेहतरीन बात नहीं सुनी थी। कुछ मुद्दत के बा'द ह़ज़रते जुनैद से अ़र्ज़ की गई कि उस शख़्स का ह़ाल दिगर गूं हो गया है और वोह दुकान छोड़ने का इरादा रखता है। ह़ज़रते जुनैद ने उस शख़्स की त़रफ़ कुछ माल भेजा और कहला भेजा कि इसे अपने मसरफ़ में लाओ और दुकान न छोड़ो क्यूंकि तुम जैसे लोगों को तिजारत नुक़्सान नहीं देती। येह आदमी जिस का तज़्किरा हुवा है दुकानदार था और फ़ुक़रा उस से जो कुछ ख़रीदते वोह उन से उन चीज़ों की क़ीमत नहीं लेता था।

ह़ज़रते इब्ने मुबारक अपने अ़तिय्यात सिर्फ़ उ़लमा को देते

ह़ज़रते इब्ने मुबारक رضی اللہ تعالٰی عنہ अपने अ़त़ाया को उ़लमा के लिये ख़ास करते थे, किसी ने कहा : आप अपनी ख़ैरात व सदक़ात अगर आ़म कर देते तो बेहतर होता, उन्हों ने कहा : मैं नबुव्वत के मर्तबे के बा'द उ़लमा के मर्तबे से अफ़्ज़ल कोई मर्तबा नहीं जानता, अगर उन में से किसी का दिल अपनी ज़रूरतों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए तो उन के इ़ल्मी मश्ग़ले में ख़लल पड़ जाता है, फिर वोह ता'लीम व तअ़ल्लुम पर कमा-ह़क़्क़ुहू तवज्जोह नहीं दे सकेंगे लिहाज़ा उन के लिये ह़ुसूले इ़ल्म की राहों को आसान करना अफ़्ज़लो आ'ला है।

---

[1] ......قوت القلوب، ۲/۴۸۰ و شعب الایمان، السادس و الستون من شعب الإيمان، باب فى مباعدة الكفار...الخ، ۴۲/۷، الحديث ۹۳۸۳

अपने सदक़ात में मुसीबत ज़दा लोगों, ख़ुसूसन अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को तरजीह़ देनी चाहिये क्यूंकि येह सदक़ा भी है और सिलए रेह़्मी भी है और सिलए रेह़्मी का अज्र बे इन्तिहा है जैसा कि सिलए रेह़्मी के बाब में इस के फ़ज़ाइल मज़्कूर हुवे हैं।

येह भी ज़रूरी है कि इन्सान ख़ुफ़्या त़रीक़े पर सदक़ात दे ताकि रिया की नुहूसत से पाक रहे और लोगों के सामने लेने वाला रुस्वाई से बचे।

फ़रमाने नबवी है कि ख़ुफ़्या सदक़ा **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब को बुझा देता है।[1]

और इस ह़दीस शरीफ़ में जिस में उन सात आदमियों का ज़िक्र है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला अ़र्श के साए में जगह देगा जब कि अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा, येह भी इरशाद है कि वोह आदमी जिस ने ख़ुफ़्या सदक़ा दिया यहां तक कि उस का बायां हाथ येह नहीं जानता कि दाएं ने क्या दिया है।[2]

हां अगर सदक़े के इज़्हार में येह फ़ाइदा हो कि और लोग भी सदक़ा देंगे तो इस के इज़्हार में कोई मुज़ाअक़ा नहीं बशर्त़ येह कि रिया और एह़सान जताने का इस में दख़्ल न हो जैसा कि फ़रमाने ख़ुदावन्दी है :

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى[3] *अपने सदक़ात को एह़सान और रिया से बात़िल न करो।*

सदक़ा दे कर एह़सान जताना बहुत बड़ी मुसीबत है, इसी लिये सदक़े के ख़ुफ़्या रखने को तरजीह़ दी गई है और अपनी नेकी को भूल जाने का कहा गया है जैसा कि उस शख़्स के लिये शुक्र और नेक जज़्बात के इज़्हार को ज़रूरी क़रार दिया गया है जिस पर किसी ने एह़सान और नेकी की हो जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है : لَا يَشْكُرُ اللّٰهَ مَنْ لَّا يَشْكُرُ النَّاسَ[4]

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

يد المعروف غنم حيث كانت ☆ تحملها كفور او شكور

ففى شكر الشكور لها جزاء ☆ وعند اللّٰه ماكفر الكفور

﴾1﴿......नेकी और सदक़ात का हाथ जहां भी हो ग़नीमत है ख़्वाह इसे बन्दए शाकिर उठाता है या कुफ़्राने ने'मत वाला उठाता है।

﴾2﴿......शुक्र गुज़ार के शुक्र में उस के लिये जज़ा है और **अल्लाह** तआ़ला के यहां काफ़िर के कुफ़्र का बदला है।

1......شعب الايمان، الثانى والعشرين...الخ، فصل فى الاختيار...الخ، ٣/٢٤٤، الحديث ٣٤٤٢

2......بخارى، كتاب الاذان، باب من جلس فى المسجد...الخ، ١/٢٣٦، الحديث ٦٦٠

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर। (پ٣، البقرة: ٢٦٤)

4......ابوداود، كتاب الادب، باب فى شكر المعروف، ٤/٣٣٥، الحديث ٤٨١١

बाब 89

हुक़ूक़े अवलाद व वालिदैन

येह बात ज़ेह्न नशीन रखनी चाहिये कि जहां अ़ज़ीज़ो अक़ारिब के हुक़ूक़ की ताकीद की गई है वहां ज़विल अरहाम को खुसूसिय्यत से ज़िक्र किया गया है।

फ़रमाने नबवी है कि कोई बेटा अपने बाप का हक़ अदा नहीं कर सकता यहां तक कि वोह बाप को ग़ुलाम पाए और फिर उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दे।[1]

फ़रमाने नबवी है कि वालिदैन से नेकी, नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, ह़ज, उ़मरह और राहे खुदा में जिहाद करने से अफ़्ज़ल है।[2]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस शख़्स ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि उस के वालिदैन उस से राज़ी हों उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जो इसी ह़ालत में शाम करता है उस के लिये भी इसी त़रह़ के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, अगर वालिदैन में से एक ज़िन्दा हो तो एक दरवाज़ा खोला जाता है अगर्चे वालिदैन ज़ियादती करें, अगर्चे वोह ज़ियादती करें और जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि उस के वालिदैन उस पर नाराज़ हों तो उस के लिये जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और जो शाम इसी ह़ालत में करता है उस के लिये भी जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं, अगर वालिदैन में से एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है अगर्चे वोह ज़ियादती करें, अगर्चे वोह ज़ियादती करें, अगर्चे वोह ज़ियादती करें।[3]

फ़रमाने नबवी है कि जन्नत की ख़ुश्बू पांच सो साल के सफ़र की दूरी से पाई जाती है मगर वालिदैन का ना फ़रमान और क़त़ए रेह़्मी करने वाला इस ख़ुश्बू को नहीं पाएगा।[4]

---

1 ......مسلم، کتاب العتق، باب فضل العتق، ص ۸۱۲، الحدیث۲۵ـ (۱۵۱۰)

2 ......تذکرۃ الموضوعات للفتنی، ص ۲۰۱ و مسند ابی یعلی، مسند أنس بن مالک، ۳/۶، الحدیث ۲۷۵۲

3 ......شعب الایمان، الخامس والخمسون...الخ، فصل فی حفظ حق...الخ، ۶/۲۰۶، الحدیث ۷۹۱۶ ماخوذاً

4 ......تذکرۃ الموضوعات للفتنی، ص۲۰۲ و روح البیان، سورۃ الأحقاف، تحت الآیۃ:۱۹، ۸/۴۷۸ و فردوس الاخبار، ۲/۲۷۱، الحدیث ۳۲۶۰، ۳۲۶۱

फ़रमाने नबवी है कि अपने मां, बाप, बहन और भाई से एह्सान कर, फिर क़रीबी पस क़रीबी (शख़्स इस का मुस्तह़िक़) है।[1]

मरवी है कि अल्लाह तआला ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : ऐ मूसा ! जिस ने वालिदैन की फ़रमां बरदारी की और मेरी ना फ़रमानी की, मैं ने उसे नेकों में लिखा है और जो वालिदैन की ना फ़रमानी करता है मगर मेरा फ़रमां बरदार होता है मैं ने उसे ना फ़रमानों में लिख दिया है।

रिवायत है कि जब ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के हां तशरीफ़ लाए तो वोह उन के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े न हुवे चुनान्चे, अल्लाह तआला ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य की, कि क्या तुम अपने वालिद के लिये खड़े होने को बहुत बड़ी बात समझते हो ? मुझे अपने इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हारे सुल्ब में से नबी पैदा नहीं करूंगा।[2]

फ़रमाने नबवी है कि जब कोई शख़्स अपने मुसलमान वालिदैन की त़रफ़ से सदक़ा करता है तो उस के वालिदैन को उस का अज्र मिलता है और उन के अज्र में कमी किये बिग़ैर उस आदमी को भी उन के बराबर अज्र मिलता है।[3]

ह़ज़रते मालिक बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बैठे हुवे थे कि बनू सलमह के एक आदमी ने आ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! कोई ऐसी नेकी है जो मैं अपने वालिदैन के लिये उन की वफ़ात के बा'द करूं ? आप ने फ़रमाया : हां ! उन के लिये दुआ़ करो, बख़्शिश त़लब करो, उन के किये हुवे वा'दों को पूरा करो, उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करो और उन के रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी करो।[4]

फ़रमाने नबवी है :

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلاة، باب بر امك ثم اباك...الخ، ٢٠٩/٥، الحديث ٧٣٢٧

2 .....दुर्रे मन्सूर की एक रिवायत में जो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है यूं है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात हुई तो इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से मुआ़नक़ा फ़रमाया। और एक रिवायत में जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है यूं है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के हां तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप से मुलाक़ात के लिये जल्दी फ़रमाई।
(الدر المنثور، ٥٩٠/٤ و اتحاف السادة المتقين، ٢٨٨/٧)

3 ......كنزالعمال، كتاب الزكاة، الباب الثانى...الخ، الفصل الثالث...الخ، ١٨٢/٣، الجزء السادس، الحديث ١٦٣٩٠

4 ......ابوداود، كتاب الادب، باب فى برالوالدين، ٤٣٤/٤، الحديث ٥١٤٢

सब से बड़ी नेकी येह है कि इन्सान अपने बाप की वफ़ात के बा'द उस के दोस्तों से हुस्ने सुलूक करे।(1)

मज़ीद इरशाद हुवा कि बेटे का मां से नेकी करना दोहरा अज्र रखता है।(2)

एक और इरशाद है कि मां की दुआ जल्द क़बूल होती है, पूछा गया : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) ऐसा क्यूं है ? आप ने फ़रमाया : इस लिये कि मां, बाप से ज़ियादा मेहरबान होती है और रहम की दुआ कभी ज़ाएअ नहीं होती।(3)

एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि मैं किस से नेकी करूं ? आप ने फ़रमाया : अपने वालिदैन से नेकी कर, उस ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे वालिदैन नहीं है, आप ने फ़रमाया : अपनी अवलाद से नेकी कर क्यूंकि जिस तरह वालिदैन का तुझ पर हक़ है इसी तरह अवलाद का भी तुझ पर हक़ है।(4)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि **अल्लाह** तआला उस बाप पर रहम फ़रमाए जिस ने अपने बेटे से नेकी में तआवुन किया (उसे नेक अमल पर उभारा) और अमले बद की सूरत में अदाएगिये हुक़ूक़ का बार इस पर नहीं है।(5)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अवलाद को अतिय्यात में बराबर का शरीक करो।(6)

और येह भी कहा गया है कि तेरे लिये तेरा बेटा गुले नाज़ बू है, सात बरस तक वोह तेरा ख़ादिम है, उस की खुश्बू सूंघ, फिर वोह तेरा शरीक है या तेरा दुश्मन है।(7)

---

1 ......مسلم ، کتاب البر...الخ ، باب فضل صلة اصدقاء...الخ ، ص ١٣٨٢ ، الحديث١٣ـ (٢٥٥٢)

2 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٣١٧/٦ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية ، ١٥٠/٤

3 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٣١٧/٦ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية ، ١٥٠/٤

4 ......كنزالعمال ، كتاب النكاح ، بر الاولاد، ٢٤٦/٨ ، الجزء السادس عسر، الحديث ٤٥٩٤٢

5 ......موسوعة ابن ابى الدنيا ، كتاب العيال، باب فى العطف...الخ ، ٤٤/٨، الحديث ١٥٠

6 ......ابن عساكر، ٣٣٣/٢١

7 ......المستطرف لشهاب الدين، الباب الخامس والأربعون...الخ،الفصل الثانى فى الأولاد وحقوقهم...الخ، ١٨/٢ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية ، ١٥٠/٤

बच्चे का अ़क़ीक़ा सातवें रोज़ किया जाना चाहिये

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सातवें दिन बच्चे का अ़क़ीक़ा किया जाए, उस का नाम रखा जाए और उस के बाल वग़ैरा दूर किये जाएं और जब वोह छे साल का हो तो बाप उसे अदब सिखाए, जब वोह नव साल का हो तो उस का बिछौना अ़लाहि़दा कर दे, जब तेरह बरस का हो तो उसे नमाज़ के लिये मारे और जब वोह सोलह साल का हो तो बाप उस की शादी कर दे, फिर आप ने हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि मैं ने तुझे अदब सिखाया, ता'लीम दी और तेरी शादी कर दी, मैं दुन्या के फ़ितने और आख़िरत के अ़ज़ाब से तेरे लिये **अल्लाह** की पनाह चाहता हूं।(1)

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि बाप पर अवलाद का येह ह़क़ है कि वोह उन्हें बेहतरीन अदब सिखाए और उन के उ़म्दा नाम रखे।(2)

एक और फ़रमान है कि हर लड़का और लड़की अ़क़ीक़े से गिरवी है, सातवें दिन इन के लिये कोई जानवर ज़ब्ह़ किया जाए और इस का सर मुन्डा जाए।(3)

हज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि जब अ़क़ीक़े का जानवर ज़ब्ह़ किया जाए तो उस जानवर की ऊन ले कर उसे जानवर की रगों के सामने कर दी जाए फिर उसे बच्चे के सर पर रख दिया जाए यहां तक कि धागे की मिस्ल ख़ून इस से बह निकले इस के बा'द उस के सर को धो दिया जाए और ह़ल्क़ कर दिया जाए।(4)

एक आदमी ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने अपने किसी लड़के की शिकायत की, आप ने फ़रमाया : क्या तुम ने उस पर बद दुआ़ की है ? उस ने कहा : हां ! आप ने फ़रमाया : तू ने उसे बरबाद कर दिया है, अवलाद के साथ नेक सुलूक और नर्मी करनी चाहिये।

---

1 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٦/٣١٨ و روح البيان، سورة النساء، تحت الاية:١١، ٢/١٧٣

2 ......مسند البزار، ١٥/١٧٦، الحديث ٨٥٤٠ و شعب الايمان، الستون من شعب الإيمان، باب فى حقوق الأولاد...الخ، ٦/١٠٤، الحديث ٨٦٦٧

3 ......ابو داود، كتاب الضحايا، باب العقيقة، ٣/١٤٢، الحديث ٢٨٣٨

4 .....येह ज़मानए जाहिलिय्यत में था रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे मन्सूख़ फ़रमा दिया और ख़ून के बजाए ज़ा'फ़रान लगाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : ज़मानए जाहिलिय्यत में जब हम में किसी के यहां बच्चा पैदा होता तो वोह बकरी ज़ब्ह़ करता और उस का ख़ून बच्चे के सर पर लिथेड़ देता फिर जब इस्लाम का ज़माना आया तो हम बकरी ज़ब्ह़ करते थे और बच्चे का सर मुन्डाते और सर पर ज़ा'फ़रान लगाते। (سنن ابى داود ،كتاب الضحايا، باب فى العقيقة، ٣/١٤٤، الحديث٢٨٤٣)

हज़रते अक़रअ़ बिन हाबिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने नवासे हज़रते हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को चूमते हुवे देखा तो कहा कि मेरे दस बेटे हैं मगर मैं ने कभी किसी को नहीं चूमा, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता ।(1)

हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि उसामा का मुंह धो डालो, मैं ने कराहत से उस का मुंह धोना शुरूअ़ किया तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे हाथ पर हाथ मारा और उसामा(2) को पकड़ कर उन का मुंह धोया फिर उसे चूमा ।(3)

हज़रते हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (कमसिनी में) लड़ खड़ाते हुवे मस्जिद में दाख़िल हुवे और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने मिम्बर से उतर कर उन्हें उठाया और येह आयए मुबारका तिलावत फ़रमाई :

إِنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ (4) *सिवाए उस के नहीं कि तुम्हारे माल और अवलाद फ़ितना हैं ।*

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे कि अचानक हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सजदे की हालत में आप की गर्दन पर सुवार हो गए, आप ने सजदा त़वील कर दिया, लोगों ने समझा शायद कोई बात हो गई है, जब आप ने नमाज़ पूरी कर ली तो सहाबा ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप ने बहुत त़वील सजदा किया, यहां तक कि हम समझे कोई बात वाक़ेअ़ हो गई है, आप ने फ़रमाया : मेरा बेटा मुझ पर सुवार हो गया तो मैं ने जल्दी करना मुनासिब न समझा ताकि वोह अपनी ख़ुशी (हाजत) पूरी कर ले ।(5)

इस ह़दीस में कई फ़वाइद हैं, एक येह कि जब तक आदमी सजदे में रहता है उसे **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब हासिल रहता है । इस ह़दीस से अवलाद से नर्मी और भलाई और उम्मत की ता'लीम, सब बातें साबित होती हैं ।

---

1 ......بخاری، کتاب الادب، باب رحمة الولد...الخ، ٤/١٠٠، الحدیث ٥٩٩٧

2 .....येह हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे थे ।

3 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب العیال، باب حمل الولدان...الخ، ٨/٦٠، الحدیث ٢٢٩

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं । (پ٢٨، التغابن: ١٥)

ابوداود، کتاب الصلاة، باب الامام یقطع...الخ، ١/٤١٠، الحدیث ١١٠٩

5 ......نسائی، کتاب التطبیق، باب هل یجوز ان تکون...الخ، ص ١٩٦، الحدیث ١١٣٨ ماخوذاً

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि अवलाद की ख़ुश्बू जन्नत की ख़ुश्बू है।[1]

हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे यज़ीद ने कहा कि मुझे मेरे बाप ने हज़रते अहनफ़ बिन कैस को बुलाने के लिये भेजा, जब वोह आ गए तो मेरे बाप ने कहा : ऐ अबू बहर ! अवलाद के बारे में क्या ख़याल है ? उन्हों ने कहा : अमीरल मोमिनीन ! येह हमारे दिलों के फल और पुश्त के सुतून हैं, हम इन के लिये नर्म ज़मीन और सायादार आस्मान हैं, हम इन्ही के सबब हर बुलन्द चीज़ तक पहुंचते हैं, अगर येह कुछ मांगें तो इन्हें दीजिये अगर येह नाराज़ हों तो इन्हें राज़ी कीजिये। इन पर इतने सक़ील न हों कि येह आप की ज़िन्दगी को ना पसन्द करने लगें और आप की मौत की आरज़ू करने लगें, आप के कुर्ब को बुरा समझने लगें, हज़रते मुआविय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह सुन कर फ़रमाया : ब ख़ुदा ! ऐ अहनफ़ ! जब तुम आए हो तो मैं यज़ीद पर ग़म व गुस्से से भरा बैठा था चुनान्चे, जब अहनफ़ चले गए तो हज़रते मुआविय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه यज़ीद से राज़ी हो गए और यज़ीद को दो हज़ार दिरहम और दो सो कपड़े भेजे। यज़ीद ने उन में से एक हज़ार दिरहम और एक सो कपड़े हज़रते अहनफ़ के हां भेज दिये, गोया उस ने उन्हें आधा आधा तक़्सीम कर लिया।

चार नसीहतें

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सोहबत में रहा। इन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीहत करना :

﴾1﴿.....जो पेट भर कर खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।

﴾2﴿.....जो ज़ियादा सोएगा उस की उम्र में बरकत न होगी।

﴾3﴿.....जो सिर्फ़ लोगों की ख़ुशनूदी चाहे वोह रज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो जाएगा।

﴾4﴿.....जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।

(منهاج العابدين، ص١٠٧)

1 ......المعجم الاوسط، ٤/٢٤٣، الحديث ٥٨٦٠

बाब 90

हुकूके हमसाया और मसाकीन पर एहसान

हमसाएगी उख़ुव्वते इस्लामी से ज़ियादा कुछ और हुकूक़ की भी मुक़्तज़ी है लिहाज़ा हर मुसलमान हमसाए के उख़ुव्वते इस्लामी के सुलूक के इलावा भी कुछ हुकूक़ हैं चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि हमसाए तीन हैं, एक हमसाए का एक हक़, दूसरे के दो हक़ और तीसरे के तीन हुकूक़ हैं, जिस हमसाए के तीन हुकूक़ हैं वोह रिश्तेदार मुसलमान हमसाया है, इस का हमसाएगी का हक़, इस्लाम का हक़ और रिश्तेदारी का हक़ है, जिस हमसाए के दो हक़ हैं वोह मुसलमान हमसाया है उस के लिये हमसाएगी का हक़ और इस्लाम का हक़ है और जिस हमसाए का एक हक़ है वोह मुशरिक हमसाया है, ग़ौर कीजिये कि इस्लाम ने मुशरिक हमसाए का भी हक़्क़े हमसाएगी रखा है।(1)

फ़रमाने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है कि अपने हमसाइयों के साथ अच्छा बरताव कर तब तू मुसलमान होगा।(2)

और फ़रमाया कि जिब्रील मुझे हमेशा हमसाए के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मैं समझा कि अ़न क़रीब हमसाए को भी वारिस बना दिया जाएगा।(3)

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जो शख़्स **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है वोह अपने हमसाए की इ़ज़्ज़त करे।(4)

मज़ीद फ़रमाया कि बन्दा उस वक़्त तक मुसलमान नहीं होता जब तक कि उस का हमसाया उस की आफ़तों से महफ़ूज़ न हो।(5)

एक और फ़रमान है कि क़ियामत के दिन सब से पहले झगड़ा करने वाले दो हमसाए होंगे।(6)

और इरशाद फ़रमाया कि जब तू ने हमसाए के कुत्ते को मारा तो गोया तू ने हमसाए को तक्लीफ़ दी।(7)

---

1 ......حلية الاولياء، ٥/٢٣٥، الحديث ٦٩٤٨، بالتقديم و التاخير

2 ......شعب الايمان ، التاسع و الثلاثون...الخ ، الفصل الثالث...الخ ، ٥/٥٣،الحديث ٥٧٥٠

3 ......بخارى، كتاب الأدب، باب الوصاة بالجار، ٤/١٠٤، الحديث ٦٠١٤

4 ......بخارى، كتاب الأدب، باب من كان يؤمن...الخ ، ٤/١٠٥، الحديث ٦٠١٩

5 ......المرجع السابق، باب اثم من لايأمن...الخ،ص١٠٤،الحديث٦٠١٦

6 ......المعجم الكبير،١٧/٣٠٣،الحديث٨٣٦

7 ......طبقات الشافية الكبرى للسبكى، ٦/٣١٨ و بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية، ٤/٤٦١

मरवी है कि एक आदमी ने हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से आ कर कहा : मेरा एक हमसाया है जो मुझे तक्लीफ़ देता है, गालियां देता है और तंग करता है, आप ने येह सुन कर फ़रमाया : जाओ ! अगर वोह तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** की ना फ़रमानी करता है तो तुम उस के बारे में **अल्लाह** की इताअ़त करो। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! फ़ुलां औ़रत दिन को रोज़ा रखती है, रात को इ़बादत करती है मगर अपने हमसाइयों को दुख देती है, आप ने येह सुन कर फ़रमाया : वोह जहन्नम में जाएगी।[1]

एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अपने हमसाए का शिक्वा किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : सब्र कर, तीसरी या चौथी बार आप ने फ़रमाया : अपना सामान रास्ते में फेंक दे। रावी कहते हैं कि लोगों ने जब उस के सामान को बाहर रास्ते पर पड़ा देखा तो पूछा : क्या बात है ? उस ने कहा : मुझे हमसाया सताता है, लोग वहां से गुज़रते रहे, पूछते रहे और कहते रहे **अल्लाह** तआ़ला इस हमसाए पर ला'नत करे, जब उस हमसाए ने येह बात सुनी तो आया, उसे कहा : अपना सामान वापस ले आओ, ब ख़ुदा ! मैं फिर तुम्हें कभी तक्लीफ़ नहीं दूंगा।[2]

ज़ोहरी ने रिवायत किया है कि एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हमसाए की शिकायत की। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो कर ए'लान कर दो कि साथ के चालीस घर हमसाएगी में दाख़िल हैं।[3]

ज़ोहरी ने कहा : चालीस इधर, चालीस उधर, चालीस इधर और चालीस उधर और चारों सम्तों की त़रफ़ इशारा किया।[4]

फ़रमाने नबवी है कि औ़रत, घर और घोड़े में बरकत और नुहूसत है।[5]

औ़रत की बरकत थोड़ा महर, आसान निकाह़ और उस का हुस्ने ख़ुल्क़ वाला होना है, उस की नुहूसत भारी महर मुश्किल निकाह़ और बद ख़ुल्क़ी है। घर की बरकत उस का कुशादा होना और उस के हमसाइयों का अच्छा होना है, उस की नुहूसत, उस का तंग होना और उस के हमसाइयों का बुरा होना है, घोड़े की बरकत उस की फ़रमां बरदारी और अच्छी आ़दतें हैं और उस की नुहूसत उस की बुरी आ़दतें और सुवार न होने देना है।

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب البر والصلة، باب ان الله لا يعطى...الخ، ٥/٢٣١، الحديث ٧٣٨٤

2 ......صحيح ابن حبان، كتاب البر و الاحسان، باب الجار، ١/٣٦٨، الحديث ٥٢١

3 ......المعجم الكبير، ١٩/٧٣، الحديث ١٤٣

4 ......كشف الخفاء، ١/٢٩٣، تحت الحديث ١٠٥٢

5 ......مسلم، كتاب السلام، باب الطيرة والفأل...الخ، ص ١٢٢٢، الحديث ١١٥ـ (٢٢٢٥)

हमसाए के हुकूक़

हमसाए का ह़क़ सिर्फ़ येह नहीं कि आप उस से उस की तक्लीफ़ें दूर करें बल्कि ऐसी चीज़ें भी उस से दूर करनी चाहियें कि जिन से उसे दुख पहुंचने का एह़तिमाल हो, हमसाए से दुख दूर करना, उसे दुख देने वाली चीज़ों से दूर रखने के इलावा कुछ और भी हुक़ूक़ हैं, उस से नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश आए, उस से नेकी और भलाई करता रहे इसी लिये कहा गया है कि क़ियामत के दिन फ़क़ीर हमसाया मालदार हमसाए को पकड़ कर अल्लाह से कहेगा : ऐ अल्लाह ! इस से पूछ, इस ने अपने अ़ताया मुझ से क्यूं रोके थे और अपना दरवाज़ा मुझ पर क्यूं बन्द किया था ?

इब्नुल मुक़फ़्फ़अ़ से किसी ने कहा कि तुम्हारा हमसाया सुवारी के क़र्ज़ की वज्ह से अपना घर बेच रहा है, इब्नुल मुक़फ़्फ़अ़ उस शख़्स की दीवार के साए में बैठता था, उस ने येह सुन कर कहा कि अगर उस ने तंगदस्ती की वज्ह से अपना घर बेच दिया तो गोया मैं ने उस की दीवार के साए की इ़ज़्ज़त नहीं की चुनान्चे, उस के पास रक़म भेजी और कहला भेजा घर को न बेचो ।

किसी शख़्स ने घर में चूहों की कसरत की शिकायत की तो सुनने वाले ने कहा कि तुम एक बिल्ली रख लो, तो उस शख़्स ने जवाब में कहा : मुझे इस बात का अन्देशा है कि चूहे बिल्ली की आवाज़ सुन कर हमसाइयों के घरों में भाग जाएंगे तो गोया मैं ऐसा आदमी बन जाऊंगा जो ख़ुद तो एक तक्लीफ़ पसन्द नहीं करता मगर दूसरों को वोही दुख पहुंचाना चाहता है ।

हमसाए के हुक़ूक़ में से येह भी है कि उसे देखते ही सलाम करे, उस से त़वील गुफ़्तगू न करे, उस से अक्सर मांगता न रहे, मरज़ में उस की इ़यादत करे, मुसीबत में उसे तसल्ली दे, अगर उस के यहां मौत हो जाए तो उस के साथ रहे, ख़ुशी में उसे मुबारक बाद कहे और उस की ख़ुशी में बराबर का शरीक रहे, उस की ग़लतियों से दर गुज़र करे, छत से उस के घर में न झांके, अपने घर की दीवार पर शहतीर वग़ैरा रखने से न रोके, उस के परनाले में पानी न उंडेले, उस के घर के सेहन में मिट्टी न फेंके, उस के घर के रास्ते को तंग न करे, वोह घर की त़रफ़ जो कुछ ले कर जा रहा हो उसे न घूरे, उस की अ़दमे मौजूदगी में उस के घर की देख भाल से ग़ाफ़िल न हो, उस की ग़ीबत न सुने, उस की इ़ज़्ज़त से आंख बन्द करे, उस की लौंडी को अक्सर न देखता रहे, उस की अवलाद से नर्मी से गुफ़्तगू करे, जिन दीनी और दुन्यावी उमूर से वोह ना वाक़िफ़ हो इन में उस की रहनुमाई करे, येह वोह हुक़ूक़ हैं जो आ़म व ख़ास हर मुसलमान के लिये ज़रूरी हैं ।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो हमसाए का क्या हक़ है ? जब वोह तुझ से मदद तलब करे उस की मदद कर, अगर वोह तेरी इमदाद का तालिब हो उस की इमदाद कर, अगर वोह तुझ से क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दे, अगर वोह मुफ़्लिस हो जाए तो उस की हाजत रवाई कर, अगर वोह बीमार हो जाए तो उस की इयादत कर, अगर मर जाए तो उस का जनाज़ा उठा, अगर उसे ख़ुशी हासिल हो तो मुबारक बाद कह, अगर उसे मुसीबत पेश आए तो उसे सब्र की तल्क़ीन कर, उस के मकान से अपना मकान ऊंचा न बना ताकि उस की हवा न रुके अगर वोह इजाज़त दे दे तो कोई हरज नहीं, उसे तक्लीफ़ न दे, जब मेवे ख़रीद कर लाए तो उस के घर बतौरे तोहफ़ा भेज वरना खुफ़्या ले कर आ, मेवे अपनी अवलाद के हाथ में दे कर बाहर न भेज ताकि उस के बच्चे नाराज़ न हों, हांडी की ख़ुश्बू से अपने हमसाए को ईज़ा न दे मगर येह कि एक चुल्लू शोरबा उसे भी भेज दे। फिर आप ने फ़रमाया : जानते हो हमसाए का हक़ क्या है ? ब ख़ुदा ! हमसाए के हुक़ूक़ को कोई पूरा नहीं कर सकता मगर जिस पर **अल्लाह** तआला ने रहमत की हो।(1)

इसी तरह अम्र बिन शोऐब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने बाप और दादा से और इन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की है।

हज़रते मुजाहिद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का कहना है : मैं हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास बैठा था और आप का गुलाम बकरी की खाल उतार रहा था। आप ने कहा : ऐ गुलाम ! जब बकरी की खाल उतार ले तो सब से पहले हमारे यहूदी हमसाए को गोश्त देना, आप ने येही बात मुतअद्दिद बार कही तो गुलाम ने कहा : अब और कितनी मरतबा कहेंगे ? तब आप ने फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें बराबर हमसाइयों के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत फ़रमाया करते थे यहां तक कि हमें अन्देशा हुवा कि कहीं हमसाइयों को वारिस न बना दिया जाए।(2)

हज़रते हिशाम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है कि हज़रते हसन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस बात में कोई हरज नहीं समझते थे कि तुम अपनी क़ुरबानी का गोश्त यहूदी या नस्रानी हमसाए को खिलाओ।

हज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : मुझे मेरे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वसिय्यत फ़रमाई कि जब तुम हांडी पकाओ तो उस में ज़ियादा पानी डाल दो, फिर अपने हमसाइयों के घरों पर निगाह दौड़ाओ और उन्हें चुल्लू भर शोरबा भेज दिया करो।(3)

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الصحبة، الباب الرابع...الخ، ٥/٢٦، الجزء التاسع، الحديث ٢٤٩٣٠

2 ......شعب الايمان، السابع والستون...الخ، ٧/٨٥، الحديث ٩٥٦٤ عن عبدالله بن عمرو

3 ......مسلم، كتاب البر...الخ، باب الوصية بالجار...الخ، ص ١٤١٣، الحديث ١٤٣ـ (٢٦٢٥)

बाब 91

शराबी पर अ़ज़ाब

अल्लाह तआ़ला ने शराब के बारे में जो आयात नाज़िल फ़रमाईं इन में से पहली येह है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِؕ قُلْ فِیْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ٘ (1)

आप से शराब और जूए के बारे में सुवाल करते हैं फ़रमा दीजिये इन दोनों में बड़ा गुनाह है और (ब ज़ाहिर) लोगों के वासिते़ फ़ाइदे हैं।

येह आयत सुन कर कुछ लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया और कुछ इसी त़रह़ पीते रहे यहां तक कि एक आदमी शराब पी कर नमाज़ पढ़ने लगा तो उस की ज़बान से ना मुनासिब कलिमात निकले, तब अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى (2)

ऐ मोमिनो नमाज़ के क़रीब मत जाओ इस ह़ाल में कि तुम नशे में हो।

पस येह आयत सुन कर जिस ने शराब पी उस ने पी और जिस ने उसे छोड़ दिया उस ने छोड़ दिया यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार शराब पी और ऊंट का जबड़ा उठा कर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर मारा और उन का सर फोड़ दिया, फिर बैठ कर बद्र के मक़्तूलों पर रोने लगे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब येह ख़बर मिली तो आप ने ग़ुस्से की ह़ालत में चादर घसीटते हुवे बाहर क़दम रन्जा फ़रमाया और अपने पास जो चीज़ थी उस से इन्हें मारा, तब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले कि मैं अल्लाह और उस के रसूल के ग़ज़ब से पनाह मांगता हूं और अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ (3)

सिवाए उस के नहीं कि शैत़ान इरादा करता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जूए की वज्ह से बुग़्ज़ व अ़दावत डाले।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी। (پ۲، البقرۃ: ۲۱۹)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ। (پ۵، النساء:۴۳)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में। (پ۷، المائدہ:۹۱)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयत सुन कर कहा : हम रुक गए, हम रुक गए।

शराब की हुरमत में मुत्तफ़िक़ अ़लैह अह़ादीस भी हैं चुनान्चे, फ़रमाने नबवी है कि आ़दी शराब ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।(1)

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बुतों की इ़बादत की मुमानअ़त के बा'द अल्लाह तआ़ला ने मुझे सब से पहले शराब पीने और लोगों पर ला'नतें भेजने से रोका है।(2)

फ़रमाने नबवी है कि कोई जमाअ़त ऐसी नहीं है जो दुन्या में किसी नशा आवर चीज़ पर जम्अ़ होते हैं मगर अल्लाह तआ़ला उन्हें जहन्नम में जम्अ़ करेगा और वोह एक दूसरे को मलामत करना शुरूअ़ करेंगे, एक दूसरे को कहेगा : ऐ फ़ुलां ! अल्लाह तआ़ला तुझे मेरी त़रफ़ से बुरी जज़ा दे तू ने ही मुझे इस मक़ाम तक पहुंचाया है और दूसरा इस से इसी त़रह़ कहेगा।(3)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने दुन्या में शराब पी, अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नमी सांपों का ज़हर पिलाएगा जिसे पीने से पहले ही उस के चेहरे का गोश्त गल कर बरतन में गिर जाएगा और जब वोह उसे पियेगा तो उस का गोश्त और खाल उधड़ जाएगी जिस से जहन्नमी अज़िय्यत पाएंगे।

शराब पीने वाले, कशीद करने वाले, निचोड़ने वाले, उठाने वाले, जिस के लिये लाई गई हो और इस की क़ीमत खाने वाले, सब के सब गुनाह में बराबर के शरीक हैं, अल्लाह तआ़ला उन में से किसी का नमाज़, रोज़ा और ह़ज क़बूल नहीं करता ता आंकि वोह तौबा करें, पस अगर वोह तौबा किये बिग़ैर मर गए तो अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि उन्हें शराब के हर घूंट के इवज़ जहन्नम की पीप पिलाए। याद रखिये हर नशा आवर चीज़ ह़राम है और हर शराब ह़राम है(4) (ख़्वाह वोह किसी क़िस्म की हो)।

इब्ने अबिद्दुन्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि उन की नशे में धुत एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई जो हाथ पर पेशाब कर रहा था और वुज़ू करने वाले की त़रह़ पेशाब से हाथ धो रहा था और कह रहा था :

---

1 ......ابن ماجہ، کتاب الأشربۃ ، باب مد من الخمر، ٤/٦٢، الحدیث٣٣٧٦

2 ......المعجم الکبیر، ٢٠/٨٣ ، الحدیث ١٥٧

3 ......الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ، ص ٩٥

4 ......الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ، ص ٩٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ الْاِسْلَامَ نُوْرًا وَّالْمَآءَ طَهُوْرًا۔

हम्द है **अल्लाह** तआला की जिस ने इस्लाम को नूर बख़्शा और पानी को पाक फ़रमाया।

अब्बास बिन मिरदास से ज़मानए जाहिलिय्यत में कहा गया कि तुम शराब क्यूं नहीं पीते, इस से तुम्हारे अन्दर तेज़ी बढ़ जाएगी, उस ने जवाब दिया : मैं अपने हाथों से जहालत को पकड़ कर खुद अपने पेट में दाखि़ल करने वाला नहीं हूं और न ही मैं इस बात पर राज़ी हूं कि मैं सुब्ह़ अपनी क़ौम के सरदार होने की है़सिय्यत से करूं और शाम उन में बे वुक़ूफ़ की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हो कर करूं।

बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शराब से बचो, तुम से पहले लोगों में एक इबादत गुज़ार शख़्स था जो लोगों से अ़लाहि़दा रहता था, एक औ़रत ने उस का पीछा किया और अपना एक ख़ादिम भेज कर उसे बुलाया और कहा कि हम तुझे गवाही के लिये बुलाने आए हैं चुनान्चे, आ़बिद उन के घर में दाखि़ल हो गया, वोह जूंही किसी दरवाज़े से आगे बढ़ता वोह औ़रत उस दरवाज़े को बन्द कर देती, यहां तक कि वोह औ़रत के पास पहुंचा, वोह बद किरदार औ़रत बैठी हुई थी, उस के पास एक लड़का था और एक बरतन था जिस में शराब रखी हुई थी। उस औ़रत ने कहा : मैं ने तुझे किसी गवाही के लिये नहीं बल्कि इस लड़के के क़त्ल और अपने साथ जिमाअ़ के लिये बुलाया है, या फिर शराब का येह प्याला पी ले, अगर तू ने इन्कार कर दिया तो मैं चिल्लाऊंगी और तुझे रुस्वा करूंगी।

जब उस आ़बिद ने कोई चारए कार न देखा तो कहा : अच्छा मुझे शराब पिला दे, चुनान्चे, उस ने शराब का प्याला पिला दिया। आ़बिद प्याला पी कर बोला : और दे दे, यहां तक कि शराब से बद मस्त हो कर उस ने औ़रत से ज़िना किया और लड़के को भी क़त्ल कर दिया। लिहाज़ा शराब से बचो, पस ब ख़ुदा ! ईमान और दाइमी शराब नोशी किसी शख़्स के सीने में कभी भी जम्अ़ नहीं हो सकते अलबत्ता इन में से एक, दूसरे को निकाल देता है।[1]

---

1 ......شعب الایمان، التاسع والثلاثون...الخ، ۵/ ۱۰، الحدیث ۵۵۸۶ عن عثمان رضی اللّٰہ عنہ

क़िस्सए हारूत व मारूत

अह़मद और इब्ने ह़ब्बान ने अपनी सह़ीह़ में ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत की है कि इन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जब आदम عَلَیْہِ السَّلَام को ज़मीन पर उतारा गया तो फ़िरिश्तों ने कहा :

"ऐ रब तू ज़मीन पर उस शख़्स को अपना ख़लीफ़ा बना कर भेज रहा है जो फ़साद करेगा और ख़ून बहाएगा और हम तेरी ह़म्द के साथ तस्बीह़ करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं (लिहाज़ा हम इस मन्सब के ज़ियादा मुस्तह़िक़ हैं) रब्बे जलील ने फ़रमाया : बेशक मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते।"(1)

उन्हों ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! हम तेरी बनी आदम से ज़ियादा इत़ाअ़त करते हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : तुम में से दो फ़िरिश्तें आएं ताकि हम देखें कि वोह कैसा अ़मल करते हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि हारूत व मारूत ह़ाज़िर हैं।

रब तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम ज़मीन पर जाओ और **अल्लाह** तआ़ला ने ज़ोहरा सितारे को उन के सामने ह़सीनो जमील औ़रत के रूप में भेजा, वोह दोनों उस के हां आए और उस से रफ़ाक़त का सुवाल किया : मगर उस ने इन्कार कर दिया और कहा : ब ख़ुदा ! उस वक़्त तक नहीं जब तक तुम दोनों येह कलिमए शिर्क न कहो, उन्हों ने कहा : ब ख़ुदा ! हम कभी भी **अल्लाह** तआ़ला का शरीक नहीं ठहराएंगे, चुनान्चे, वोह औ़रत उन के पास से उठ कर चली गई और जब वापस आई तो वोह एक बच्चा उठाए हुवे थी। उन्हों ने उस से फिर वोही सुवाल किया मगर उस ने कहा : ब ख़ुदा ! उस वक़्त तक नहीं जब तक तुम दोनों इस बच्चे को क़त्ल न करो। उन्हों ने कहा : ब ख़ुदा ! हम कभी भी इसे क़त्ल नहीं करेंगे। फिर वोह शराब का प्याला ले कर लौटी और उन दोनों ने उसे देख कर फिर वोही सुवाल दोहराया, औ़रत ने कहा : ब ख़ुदा ! उस वक़्त तक नहीं जब तक तुम येह शराब न पी लो।

चुनान्चे, उन्हों ने शराब पी और नशे की ह़ालत में उस से जिमाअ़ किया और बच्चे को क़त्ल कर दिया। जब उन का नशा उतरा तो औ़रत ने कहा : ब ख़ुदा ! तुम ने ऐसा कोई काम नहीं छोड़ा जिस के करने से तुम ने इन्कार कर दिया था, नशे की ह़ालत में तुम सब काम कर

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे और हम तुझे सराहते हुवे तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया : मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते। (پ۱، البقرۃ:۳۰)

गुज़रे। तब उन्हें दुन्यावी अ़ज़ाब और आख़िरत के अ़ज़ाब में से किसी एक को इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया और उन्हों ने दुन्यावी अ़ज़ाब को पसन्द कर लिया।(1)

हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरी बेटी बीमार हो गई तो मैं ने प्याले में नबीज़ बनाई, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे हां तशरीफ़ लाए तो वोह उबल रही थी। आप ने फ़रमाया : उम्मे सलमह येह क्या है ? मैं ने अ़र्ज़ की, कि मेरी बेटी बीमार है, उस की दवाई बना रही हूं। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम कर्दा अश्या में मेरी उम्मत के लिये शिफ़ा नहीं रखी।(2)

एक रिवायत में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने शराब को ह़राम फ़रमा दिया तो इस में जितने भी फ़वाइद थे, सब छीन लिये।

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वर्राक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बन्दों पर ज़ुल्म करना अक्सर सल्बे ईमान का सबब बन जाता है। हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम ह़कीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने पूछा : कोई ऐसा गुनाह भी है जो बन्दे को ईमान से मह़रूम कर देता है ? फ़रमाया : बरबादिये ईमान के तीन अस्बाब हैं : ﴾1﴿ ईमान की ने'मत पर शुक्र न करना ﴾2﴿ ईमान ज़ाएअ़ होने का ख़ौफ़ न रखना ﴾3﴿ मुसलमान पर ज़ुल्म करना। (تنبیہ الغافلین، ص٢٠٤)

1.....फ़िरिश्ते मा'सूम हैं इन से गुनाह नहीं होता। हारूत व मारूत عَلَیْہِمَا السَّلَام के बारे में इस त़रह़ के वाक़िआ़त की कोई ह़क़ीक़त नहीं चुनान्चे, मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 524 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सिरात़ुल जिनान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन"** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 177 पर है : हारूत, मारूत दो फ़िरिश्ते हैं जिन्हें बनी इस्राईल की आज़्माइश के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने भेजा था। इन के बारे में ग़लत़ क़िस्से बहुत मश्हूर हैं और वोह सब बात़िल हैं। (خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ١٠٢، ١/٧٥) आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने हारूत और मारूत के बारे में जो कलाम फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि हारूत और मारूत का वाक़िआ़ जिस त़रह़ अ़वाम में मश्हूर है आइम्मए किराम इस का शदीद और सख़्त इन्कार करते हैं। इस की तफ़्सील शिफ़ा शरीफ़ और इस की शुरूह़ात में मौजूद है, यहां तक कि इमामे अजल क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : हारूत और मारूत के बारे में येह ख़बरें यहूदियों की किताबों और इन की घड़ी हुई बातों में से हैं। और राजेह़ येही है कि हारूत और मारूत दो फ़िरिश्ते हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने मख़्लूक़ की आज़्माइश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया कि जो जादू सीखना चाहे उसे नसीह़त करें कि اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ हम तो आज़्माइश ही के लिये मुक़र्रर हुवे हैं तो कुफ़्र न कर। और जो इन की बात न माने वोह अपने पाउं पे चल के ख़ुद जहन्नम में जाए, येह फ़िरिश्ते अगर उसे जादू सिखाते हैं तो वोह फ़रमां बरदारी कर रहे हैं न कि ना फ़रमानी कर रहे हैं। (الشفاء، فصل فی القول فی عصمۃ الملائکۃ، ص١٧٥-١٧٦، الجزء الثانی، فتاوی رضویہ، کتاب الشتی، ٢٦/٣٩٧)

2......کتاب الکبائر لذہبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ، ص ٩٤

बाब 92

मे'राज शरीफ़

बुख़ारी ने क़तादा से, इन्हों ने अनस बिन मालिक (رضی اللہ تعالٰی عنہما) से, इन्हों ने मालिक बिन सा'सआ رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इन्हें मे'राज की रात का वाक़िआ़ सुनाया और फ़रमाया कि मैं ह़त़ीमे का'बा में था और येह भी फ़रमाया कि मैं मक़ामे ह़जर में लैटा हुवा था कि यकायक मेरे पास एक आने वाला आया और उस ने कुछ कहा, मैं ने सुना वोह कह रहा था फिर इस जगह और उस जगह के दरमियान चाक किया गया (रावी कहता है मैं ने जारूद رضی اللہ تعالٰی عنہ से पूछा, वोह मेरे क़रीब बैठे हुवे थे कि इस जगह और उस जगह से क्या मुराद है ? उन्हों ने कहा : ह़ल्क़ूम से नाफ़ तक) फिर उन्हों ने मेरा दिल निकाला और मेरे पास एक सोने का त़श्त लाया गया जो ईमान से लबरैज़ था, इस के बा'द मेरा दिल धोया गया फिर इसे इ़ल्म व ईमान से लबरैज़ कर के वापस रख दिया गया।

फिर मेरे पास एक सफ़ेद जानवर लाया गया जो ख़च्चर से पस्त और गधे से ऊंचा था (जारूद ने ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से पूछा कि ऐ अबू ह़म्ज़ा क्या वोह बुराक़ था ? ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जवाब दिया : हां ! वोह अपना क़दम मुन्तहाए नज़र पर रखता था) मैं उस पर सुवार हुवा और जिब्रील मुझे ले कर चले यहां तक कि आस्माने दुन्या तक पहुंचे, जिब्रील ने उस का दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया : कौन है ? उन्हों ने कहा : जिब्रील, कहा गया : और तुम्हारे साथ कौन है ? जिब्रील ने कहा : मुह़म्मद (صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) पूछा गया : वोह बुलाए गए हैं ? जिब्रील ने कहा : हां ! कहा गया : उन्हें ख़ुश आमदीद हो, उन का आना मुबारक हो, फिर दरवाज़ा खोल दिया गया।

जब मैं वहां पहुंचा तो वहां आदम علیہ السّلام मौजूद थे। जिब्रील ने कहा : येह आप के अब (बाप) आदम हैं, इन्हें सलाम कीजिये ! लिहाज़ा मैं ने सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह़ बेटे और सालेह़ नबी को ख़ुश आमदीद हो।

फिर जिब्रील मेरे साथ ऊपर चढ़े यहां तक कि दूसरे आस्मान पर पहुंचे और जिब्रील ने दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया : कौन है ? कहा : जिब्रील, पूछा गया : तुम्हारे हमराह कौन है ? उन्हों ने कहा : मुह़म्मद (صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) पूछा गया : क्या वोह बुलवाए गए हैं ? जिब्रील बोले : हां ! कहा गया : उन का आना मुबारक हो और दरवाज़ा खोल दिया।

जब मैं वहां पहुंचा तो मैं ने ह़ज़रते ईसा और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمَا السَّلَام को वहां पाया और वोह दोनों आपस में ख़ालाज़ाद भाई हैं, जिब्रील ने कहा कि येह यह़्या और ईसा عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं, इन्हें सलाम कीजिये ! मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद हो ।

फिर जिब्रील मुझे तीसरे आस्मान पर ले गए और दरवाज़ा खुलवाना चाहा, पूछा गया कौन ? कहा : जिब्रील, पूछा गया : तुम्हारे साथ और कौन है ? कहा : मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कहा गया : क्या वोह बुलाए गए हैं ? जिब्रील ने कहा : हां ! कहा गया : खुश आमदीद, इन का आना बहुत अच्छा और मुबारक है और दरवाज़ा खोल दिया गया ।

जब मैं वहां पहुंचा तो मुझे यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मिले, जिब्रील ने कहा : येह यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं, इन्हें सलाम कीजिये ! मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद हो ।

फिर जिब्रील मुझे चौथे आस्मान पर ले गए और दरवाज़ा खुलवाना चाहा, पूछा गया कि कौन है ? इन्हों ने कहा : जिब्रील ! पूछा गया : तुम्हारे साथ और कौन है ? जिब्रील बोले मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कहा गया : क्या उन्हें बुलाया गया है ? जिब्रील ने कहा : हां ! दरबान ने कहा : खुश आमदीद, उन का आना बहुत मुबारक है और दरवाज़ा खोल दिया गया ।

जब मैं वहां पहुंचा तो मैं ने ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को देखा, जिब्रील ने कहा : येह इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام हैं, इन्हें सलाम कीजिये ! मैं ने उन्हें सलाम किया उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद हो ।

फिर मुझे जिब्रील साथ ले कर ऊपर चढ़े यहां तक कि पांचवें आस्मान पर पहुंचे, उन्हों ने दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया : कौन है ? कहा : जिब्रील, पूछा गया : तुम्हारे साथ कौन है ? कहा : मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पूछा गया : क्या उन्हें बुलाया गया है ? जिब्रील ने कहा : हां ! कहा गया उन्हें खुश आमदीद हो, उन का आना मुबारक हो ।

जब मैं वहां पहुंचा तो ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिले, जिब्रील ने कहा : येह हारून عَلَيْهِ السَّلَام हैं, इन्हें सलाम कीजिये ! मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह़ भाई और सालेह़ नबी को खुश आमदीद हो ।

फिर जिब्रील मुझे ऊपर ले गए यहां तक कि हम छटे आस्मान पर पहुंचे, उन्हों ने दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया : कौन है ? कहा : जिब्रील, पूछा गया : तुम्हारे साथ और कौन है ? कहा : मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कहा गया : क्या वोह बुलाए गए हैं ? जिब्रील ने कहा : हां ! उस फ़िरिश्ते ने कहा : उन्हें खुश आमदीद हो, उन का आना मुबारक है।

जब मैं वहां पहुंचा तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई, जिब्रील ने कहा : येह मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं इन्हें सलाम कीजिये, मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह भाई और सालेह नबी को खुश आमदीद हो, फिर हम जब आगे बढ़े तो वोह रोए, उन से कहा गया : आप क्यूं रोते हैं ? तो उन्हों ने कहा : मैं इस लिये रोया हूं कि मेरे बा'द एक नौजवान मबऊस किया गया है जिस की उम्मत के लोग मेरी उम्मत से ज़ियादा जन्नत में जाएंगे।

फिर जिब्रील मुझे सातवें आस्मान पर चढ़ा ले गए और उस का दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया : कौन ? कहा : जिब्रील, पूछा गया : तुम्हारे साथ और कौन है ? कहा : मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पूछा गया : क्या वोह बुलाए गए हैं ? कहा : हां ! कहा गया : उन्हें खुश आमदीद हो, उन का आना मुबारक है।

जब मैं वहां पहुंचा तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام मिले, जिब्रील ने कहा : येह आप के वालिदे गिरामी इब्राहीम हैं, इन्हें सलाम कीजिये, मैं ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और कहा : सालेह बेटे और सालेह नबी को खुश आमदीद हो।

सिद्रतुल मुन्तहा की कैफ़िय्यत

फिर मुझे सिद्रतुल मुन्तहा तक ले जाया गया, उस के फल मक़ामे हजर के मटकों की तरह और उस के पत्ते हाथी के कानों जैसे थे, वहां चार नहरें थीं, दो ज़ाहिर और दो पोशीदा, मैं ने जिब्रील से पूछा : येह नहरें कैसी हैं ? उन्हों ने कहा : जो दो पोशीदा हैं वोह जन्नत की नहरें हैं और जो दो नहरें ज़ाहिर हैं वोह नील और फ़ुरात हैं।

फिर बैतुल मा'मूर मेरे सामने ज़ाहिर किया गया जिस में सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते हर रोज़ दाख़िल होते हैं। फिर मुझे एक शराब (शरबत) का बरतन, एक दूध का और एक शहद का बरतन दिया गया, मैं ने दूध का इन्तिख़ाब कर लिया, जिब्रील ने कहा : येही फ़ित्रत है। आप और आप की उम्मत इस पर क़ाइम रहेंगे, इस के बा'द मुझ पर हर रोज़ की पचास पचास नमाज़ें फ़र्ज़ क़रार दे दी गईं।

फिर जब मैं वापस हुवा तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : आप को किस बात का हुक्म दिया गया है ? मैं ने कहा : हर दिन में पचास नमाज़ों का, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : आप की उम्मत रोज़ाना पचास नमाज़ें नहीं पढ़ सकेगी, मैं आप से पहले लोगों को आज़्मा चुका हूं और मैं ने बनी इस्राईल से सख़्त बरताव किया है लिहाज़ा अपने रब के पास लौट जाइये और अपनी उम्मत के लिये तख़्फ़ीफ़ कराइये, चुनान्चे, मैं लौटा और (दो बारियों में) दस नमाज़े मुआफ़ कर दी गईं।

फिर मैं मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया, उन्हों ने पहले की तरह कहा, मैं फिर लौट गया और फिर दस नमाज़ें मुआफ़ कर दी गईं, । मैं फिर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया, उन्हों ने पहले की तरह कहा : मैं फिर लौट गया और फिर दस नमाज़ें मुआफ़ कर दी गईं। मैं फिर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया तो उन्हों ने इसी तरह कहा : मैं फिर वापस लौट गया और मुझे रोज़ाना दस नमाज़ों का हुक्म दिया गया मैं फिर मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया तो उन्हों ने इसी तरह कहा : मैं फिर वापस लौट गया और मुझे हर रोज़ पांच नमाज़ों का हुक्म दिया गया।

मैं जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास लौट कर आया तो उन्हों ने पूछा कि आप को क्या हुक्म मिला है ? मैं ने कहा : रोज़ाना पांच नमाज़ों का हुक्म मिला है, उन्हों ने कहा कि आप की उम्मत रोज़ाना पांच नमाज़ें भी नहीं पढ़ सकेगी, मैं ने आप से पहले लोगों का तजरिबा किया है और बनी इस्राईल पर सख़्त बरताव कर चुका हूं लिहाज़ा आप फिर अपने रब के हुज़ूर जाएं और अपनी उम्मत के लिये तख़्फ़ीफ़ की दरख़्वास्त करें।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं अपने रब से कई बार दरख़्वास्त कर चुका हूं, अब मुझे शर्म आती है लिहाज़ा अब मैं राज़ी हूं और रब के हुक्म को तस्लीम करता हूं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जब मैं आगे बढ़ा तो किसी पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि मैं ने अपना हुक्म जारी कर दिया और अपने बन्दों से तख़्फ़ीफ़ कर दी है।(1)

---

1 ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ٢/٥٨٤، الحديث ٣٨٨٧

बाब 93

फ़ज़ाइले जुमुआ

जुमुआ का दिन एक अ़ज़ीम दिन है, अल्लाह तआ़ला ने इस के साथ इस्लाम को अ़ज़मत दी और येह दिन मुसलमानों के लिये ख़ास कर दिया, फ़रमाने इलाही है :

اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ (1)

जब जुमुआ के दिन नमाज़ के लिये पुकारा जाए पस जल्दी करो अल्लाह के ज़िक्र की त़रफ़ और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो।

इस आयत से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने जुमुआ के वक़्त दुन्यावी शग़्ल ह़राम क़रार दिये हैं और हर वोह चीज़ जो जुमुआ के लिये रुकावट बने ममनूअ़ क़रार दे दी गई है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि तह़क़ीक़ अल्लाह तआ़ला ने तुम पर मेरे इस दिन और इस मक़ाम में जुमुआ को फ़र्ज़ क़रार दे दिया है।[2]

एक और इरशाद है कि जो शख़्स बिग़ैर किसी उ़ज़्र के तीन जुमुआ की नमाज़ें छोड़ देता है अल्लाह तआ़ला उस के दिल पर मोहर लगा देता है।[3]

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं कि "उस ने इस्लाम को पसे पुश्त डाल दिया।"[4]

एक शख़्स ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास मुतअ़द्दिद बार आता रहा और एक ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ पूछता रहा जो मर गया और नमाज़े जुमुआ और जमाअ़तों में शरीक नहीं होता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : वोह जहन्नम में है, वोह शख़्स पूरा एक महीना येही पूछता रहा और आप येही कहते रहे कि वोह जहन्नम में है।

ह़दीस शरीफ़ में है कि अहले किताब को जुमुआ का दिन दिया गया मगर उन्हों ने इस में इख़्तिलाफ़ किया लिहाज़ा येह दिन, उन से वापस ले लिया गया, अल्लाह तआ़ला ने हमें इस की

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो। (پ۲۸، الجمعة:۹)

2.....سنن الکبری للبیهقی، کتاب الجمعة، ۳/۲۴۴، الحدیث ۵۵۷۰

3.....مسند احمد، مسند جابر بن عبداللّٰه، ۵/۸۷، الحدیث ۱۴۶۵

4.....شعب الایمان، باب الحادی و العشرین...الخ، فضل الجمعة، ۳/۱۰۳، الحدیث ۳۰۰۶

हिदायत की, उसे इस उम्मत के लिये मुअख़्ख़र किया और इन के लिये इसे ईद का दिन बनाया लिहाज़ा येह लोग सब लोगों से सबक़त ले जाने वाले हैं और अहले किताब इन के ताबेअ़ हैं।[1]

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास जिब्रील आए, उन के हाथ में सफ़ेद आईना था, उन्हों ने कहा : येह जुमुआ़ है, **अल्लाह** तआ़ला इसे आप पर फ़र्ज़ करता है ताकि येह आप के और आप के बा'द आने वाले लोगों के लिये ईद हो, मैं ने पूछा : इस में हमारे लिये क्या है ? जिब्रील ने कहा : इस में एक उ़म्दा साअ़त है, जो शख़्स इस में भलाई की दुआ़ मांगता है अगर वोह चीज़ उस शख़्स के मुक़द्दर में हो तो **अल्लाह** तआ़ला उसे अ़ता फ़रमाता है वरना उस से बेहतर चीज़ उस के लिये ज़ख़ीरा कर दी जाती है या कोई शख़्स इस साअ़त में ऐसी मुसीबत से पनाह मांगता है जो इस का मुक़द्दर हो चुकी है तो **अल्लाह** तआ़ला इस मुसीबत से भी बड़ी मुसीबत को टाल देता है और वोह हमारे नज़्दीक सब दिनों का सरदार है और हम आख़िरत में एक यौम मज़ीद मांगते हैं, मैं ने कहा : वोह क्यूं ? जिब्रील ने अ़र्ज़ की : आप के रब ने जन्नत में एक ऐसी वादी बनाई है जो सफ़ेद है और मुश्क की ख़ुश्बू से लबरेज़ है, जब जुमुआ़ का दिन होता है तो **अल्लाह** तआ़ला इ़ल्लिय्यीन से कुरसी पर (अपनी शान के लाइक़) नुज़ूले इजलाल फ़रमाता है यहां तक कि सब उस के दीदार से मुशर्रफ़ होते हैं।[2]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि सब से उ़म्दा दिन जिस में सूरज तुलूअ़ होता है, जुमुआ़ का दिन है, इसी दिन आदम عَلَیْہِ السَّلَام की पैदाइश हुई, इसी दिन वोह जन्नत में दाख़िल किये गए, इसी दिन वोह जन्नत से ज़मीन की त़रफ़ उतारे गए, इसी दिन उन की तौबा क़बूल हुई, इसी दिन उन का विसाल हुवा।[3]

इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी और वोह **अल्लाह** के नज़्दीक यौमे मज़ीद है, आस्मानी फ़िरिश्तों में इस दिन का येही नाम है और येही जन्नत में **अल्लाह** तआ़ला के दीदार का दिन है।[4]

---

1 ......بخاری، کتاب الجمعة، باب فرض الجمعة، ١/٣٠٣، الحدیث ٨٧٦

2 ......المعجم الاوسط، ١/٥٦٦، الحدیث ٢٠٨٤

3 ......الجامع الصغیر، ص ٢٤٩، الحدیث ٤٠٩٥، ٤٠٩٦ ماخوذاً

4 ......مسند البزار، ١٤/٦٩، الحدیث ٧٥٢٧ و کنز العمال، کتاب الصلاة، قسم الاقوال، الباب السادس فی صلاة الجمعة، ٤/٢٩٣، الجزء السابع، الحدیث ٢١٠٥٩ ملتقطا و روح المعانی، سورة الجمعة، تحت الآیة:٩، ٢٨/٤١١

जुमुआ के दिन जहन्नम से आज़ादी नसीब होती है

हदीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआला हर जुमुआ के दिन छे लाख इन्सानों को जहन्नम से आज़ाद करता है।(1)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तू ने जुमुआ को सालिम कर लिया तो गोया तमाम दिनों को सालिम कर लिया।(2)

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जहन्नम हर रोज़ ज़हवए कुब्रा (निस्फ़ुन्नहार) में ज़वाल से पहले भड़काया जाता है या'नी सूरज जब ऐन आस्मान के दिल में होता है लिहाज़ा इस साअ़त में नमाज़ मत पढ़ो मगर जुमुआ के दिन येह क़ैद नहीं है क्यूंकि जुमुआ सारे का सारा नमाज़ है और इस दिन जहन्नम नहीं भड़काया जाता।(3)

हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है कि **अल्लाह** तआला ने सब शहरों से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को फ़ज़ीलत बख़्शी है, सब महीनों में रमज़ान को फ़ज़ीलत अ़ता की है, सब दिनों में जुमुआ के दिन को फ़ज़ीलत दी है और सब रातों में लैलतुल क़द्र को फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है।(4)

कहा गया है कि जुमुआ के दिन हशरातुल अर्ज़ और परन्दे एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं और कहते हैं कि इस नेक दिन में सलाम हो, सलाम हो।

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जो शख़्स जुमुआ के दिन और जुमुआ की रात को फ़ौत हुवा, **अल्लाह** तआला उस के लिये सो शहीदों का सवाब लिखता है और उसे क़ब्र के फ़ितने से बचा लेता है।(5)

---

1 ......شعب الایمان، باب الحادی والعشرین...الخ، فضل الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم...الخ ۳/۱۱٤، الحدیث ۳۰٤۲

2 ......شعب الایمان، الباب الثالث والعشرون...الخ، التماس لیلۃ القدر...الخ ۳/۳٤۰، الحدیث ۳۷۰۸ عن عائشۃ

3 ...... سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ یوم الجمعۃ قبل الزوال، ۱/٤۰۳، الحدیث ۱۰۸۳ وشرح سنن أبی داود للعینی، باب الصلاۃ یوم الجمعۃ قبل الزوال، ٤/٤۲۱، ٤۲۲، تحت الحدیث ۱۰٥٤

शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी **'अशिअ़तुल लम्आत'** में फ़रमाते हैं कि इस हदीस के दो रावियों, अबुल ख़लील और अबू क़तादा की मुलाक़ात साबित नहीं।

4 ......حلیۃ الاولیاء، تکملۃ کعب الاحبار، ٦/١٤، الحدیث ۷٦٥۰

5 ......حلیۃ الاولیاء، ۳/۱۸۱، الحدیث ۳٦۲۹

बाब 94

ख़ावन्द पर बीवी के हुक़ूक़

बीवियों के शोहरों पर बहुत से हुक़ूक़ हैं, इन में से एक येह भी है कि वोह उन से हुस्ने सुलूक से पेश आएं, उन की अ़क्ल की कमज़ोरी को मद्दे नज़र रखते हुवे उन से मेहरबानी का सुलूक करें और उन के दुख दर्द को दूर करें और **अल्लाह** तआ़ला ने उन के हुक़ूक़ की अ़ज़मत में फ़रमाया है :

وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾ (1)

और लिया है उन्हों ने तुम से क़ौले मुस्तह्कम ।

और मज़ीद फ़रमाया कि "और करवट के साथी पर" कहा गया है कि इस साथी से मुराद औ़रत है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तीन बातों की उस वक़्त वसिय्यत फ़रमाई जब कि आप की ज़बाने अक़्दस विसाल शरीफ़ के वक़्त लड़ खड़ा रही थी और कलामे अन्वर में हल्कापन पैदा हो चला था। आप ने फ़रमाया : नमाज़, नमाज़ और वोह तुम्हारे हाथ जिन के मालिक हुवे उन्हें वोह तक्लीफ़ न दो जिस के बरदाश्त करने की वोह ताक़त नहीं रखते, औ़रतों के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला से डरो, **अल्लाह** से डरो, वोह तुम्हारे हाथों में क़ैद हैं, या'नी वोह ऐसी क़ैदी हैं जिन्हें तुम ने **अल्लाह** तआ़ला की अमानत के तौर पर लिया है और **अल्लाह** के कलाम से उन की शर्मगाहें तुम पर ह़लाल कर दी गई हैं।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस शख़्स ने अपनी बीवी की बद ख़ुल्क़ी पर सब्र किया **अल्लाह** तआ़ला उसे मसाइब पर ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के सब्र के अज्र के बराबर अज्र देगा और जिस औ़रत ने ख़ावन्द की बद ख़ुल्क़ी पर सब्र किया **अल्लाह** तआ़ला उसे फ़िरऔ़न की बीवी आसिया के सवाब के मिस्ल सवाब अ़ता फ़रमाएगा।(3)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह तुम से गाढ़ा अ़हद ले चुकें। (پ٤، النساء: ٢١)

2.....قوت القلوب، ٢/٤٢٠ و مسند احمد، حديث ام سلمة، ١٠/٢٠٩، الحديث ٢٦٧١٩ و مصنف عبد الرزاق، باب ما ينال الرجل من مملوكة، ٩/٣١٢، الحديث (٣٩٩١) ـ ١٨٢٥٤ و مصنف ابن ابى شيبة، ٤/٤٢٥، الحديث ١٢ و مسند البزار، ١٢/٢٩٩، الحديث ٦١٣٥ ملتقطاً

3.....كتاب الكبائر للذهبى، الكبيرة السابعة والأربعون، نشوز المرأة على زوجها، ص٢٠٦ والزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثمانون بعد المائتين: نشوز المرأة...الخ، ٢/٩٨ و تذكرة الموضوعات للفتنى، ص ٢٠١

बीवी से हुस्ने सुलूक येह नहीं कि उस की तकालीफ़ को दूर किया जाए बल्कि हर ऐसी चीज़ को उस से दूर करना भी शामिल है जिस से तक्लीफ़ पहुंचने का ख़दशा हो और उस के गुस्से और नाराज़ी के वक़्त हिल्म का मुज़ाहरा करना और इस मुआमले में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना को मद्दे नज़र रखना।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बा'ज़ अज़्वाजे मुतह्हरात आप की बात को (ब तक़ाज़ाए कुदरत) (सूरतन) न भी मानतीं और उन में से कोई एक रात तक गुफ़्तगू न किया करती थी मगर आप उन से हुस्ने सुलूक ही से पेश आया करते थे।[1]

एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बीवी ने आप की बात को न माना तो आप ने फ़रमाया कि ऐ लौंडी ! तू मेरे सामने बढ़ कर बात करती है ! उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात उन्हें दे लिया करतीं हालांकि वोह आप से बेहतर थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ह़फ़्सा ख़ाइबो ख़ासिर हुई अगर उस ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बात रद्द कर दी फिर आप ने ह़ज़रते ह़फ़्सा से फ़रमाया : इब्ने अबी कुह़ाफ़ा (ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की बेटी पर ग़ैरत न करना क्यूंकि वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़बूबा हैं और फिर आप ने उन्हें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बात को रद्द करने से डराया।

मरवी है कि इन अज़्वाजे मुतह्हरात में से किसी ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीनए अन्वर पर हाथ रख कर आप को पीछे हटाया तो उन की वालिदा ने इन्हें तहदीद की। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की मां की बातें सुन कर फ़रमाया कि इन से दर गुज़र करो येह इस से भी ज़ियादा कुछ किया करती हैं।[2]

एक बार ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान कुछ बात हो गई यहां तक कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दाख़िल हुवे और उन्हें फ़ैसल बनाया गया जब उन्हों ने बात सुनना चाही तो हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आइशा से फ़रमाया : तुम बात करोगी या मैं, ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं कि बात आप ही करें मगर दुरुस्त, येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के मुंह पर ऐसा तमांचा मारा कि उन के मुंह से ख़ून

1 ......مسلم، کتاب الطلاق، باب فی الایلاء و اعتزال النساء...الخ، ص٧٨٨، الحدیث١٤٧٩

2 ......التاریخ الکبیر للبخاری، ١٦٧/٨

जारी हो गया और आप ने कहा : ऐ अपनी जान की दुश्मन क्या हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ना हक़ बात कहेंगे ? हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पनाह तलाश की और आप की पुश्ते मुबारक के पीछे बैठ गईं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि हम ने तुम्हें इस लिये नहीं बुलाया था और न ही हमारा येह इरादा था कि हम तुम से येह बात चाहें ।(1)

एक मरतबा हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا किसी बात में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़फ़ा हो गईं और कहा कि क्या आप वोही हैं जो समझते हैं कि मैं **अल्लाह** का नबी हूं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह बात सुन कर मुस्कुरा दिये और हिल्मो करम की बिना पर येह बात बरदाश्त कर गए ।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया करते कि मैं तुम्हारी नाराज़ी और ख़ुशी पहचानता हूं । हज़रते आइशा ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! वोह कैसे ? आप ने फ़रमाया : जब तुम राज़ी होती हो तो कहती हो रब्बे मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की क़सम ! हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) आप ने सच फ़रमाया, मैं सिर्फ़ आप का नाम ही छोड़ती हूं ।(3)

और येह भी कहा गया है कि इस्लाम में सब से पहली महब्बत हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से महब्बत थी ।(4)

और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते आइशा से फ़रमाया करते थे कि मैं तुम्हारे लिये ऐसा हूं जैसा अबू ज़ुरआ, उम्मे ज़ुरआ के लिये थे मगर मैं तुम को त़लाक़ नहीं दूंगा ।(5)

---

1 ......تاريخ بغداد، ٥٩٨٥ـعمر بن عبدالعزيز بن محمد بن دينار، ١١/٢٣٩و موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب العيال، باب ملاعبة الرجل اهله، الجزء الثانی، ٨/١٢٦، الحديث ٥٦٢

2 ......مسند ابی يعلٰی، مسند عائشة، ٤/١٨١، الحديث ٤٦٥١ دون حلمًا و كرمًا

3 ......بخاری، كتاب الادب، باب مايجوزمن الهجران...الخ، ٤/١٢٠، الحديث :٦٠٧٨

4 ......بخاری، كتاب فضائل اصحاب النبی صلى الله تعالٰی عليه وسلم، باب قول النبی: صلى الله تعالٰی عليه وآله وسلم لوكنت متخذاً خليلاً ٢/٥١٨، الحديث ٣٦٦٢ ماخوذاً

5 ......بخاری، كتاب النكاح، باب حسن المعاشرة مع الاهل، ٣/٤٥٩، الحديث ٥١٨٩ ليس فيه جزء الاخر

और आप अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से येह भी फ़रमाते कि मुझे आ़इशा के बारे में तक्लीफ़ न दो, ब ख़ुदा इस के सिवा तुम में से किसी के बिस्तर पर मुझ पर वह़्य नाज़िल नहीं होती।[1]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم औ़रतों और बच्चों पर सब लोगों से ज़ियादा मेहरबान थे।[2]

हर इन्सान के लिये मुनासिब येह है कि वोह ख़ुश त़बई, मिज़ाह़ और मुलाअ़बत से अपनी औ़रतों से उन की तकालीफ़ को रफ़्अ़ करे क्यूंकि इन चीज़ों से औ़रतों के दिल ख़ुश हुवा करते हैं।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से मिज़ाह़ भी फ़रमा लिया करते थे और उन से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ अक़्वाल व अफ़्आ़ल फ़रमाया करते यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दौड़ में मुक़ाबला करते, कभी ह़ज़रते आ़इशा आप से आगे निकल जातीं और कभी आप सबक़त ले जाते और फ़रमाते कि येह उस दिन का बदला है।[3]

ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से सब से ज़ियादा ख़ुश त़बई फ़रमाने वाले थे।[4]

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं मैं ने ह़बशी और दूसरे लोगों की आवाज़ें सुनीं जो आ़शूरा के दिन खेल रहे थे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! क्या तुम इन का खेल देखना चाहती हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां ! आप ने उन की त़रफ़ आदमी भेजा, जब वोह आ गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दो दरवाज़ों के दरमियान खड़े हो गए और अपना दस्ते अक़्दस दरवाज़े पर रख दिया और हाथ लम्बा कर लिया, मैं ने अपनी ठोड़ी आप के हाथ पर जमा दी, वोह लोग खेलते रहे और मैं देखती रही, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से पूछते :

---

1 ......بخاری، کتاب الھبة...الخ، باب من اھدی الی صاحبه...الخ، ٢/١٦٩، الحدیث ٢٥٨١

2 ......ابن عساکر، ٤/٨٨

3 ......ابو داود، کتاب الجھاد، باب فی السبق علی الرجل، ٣/٤٢، الحدیث ٢٥٧٨

4 ......مصنف ابن ابی شیبة، ٦/٨٩، الحدیث ١٥ و مسند البزار، ١٣/٨٧، الحدیث ٦٤٤١ فیه مع الصبی

बस काफ़ी है ? मैं अ़र्ज़ करती : ज़रा चुप रहिये, आप ने दो या तीन मरतबा पूछा फिर फ़रमाया : आ़इशा ! अब बस करो, मैं ने अ़र्ज़ की : ठीक है, तब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इशारा फ़रमाया तो वोह वापस चले गए।[1]

और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिनों में कामिल तरीन ईमान वाला वोह है जिस का ख़ुल्क़ उ़म्दा हो और जो अपने घर वालों पर निहायत मेहरबान हो।[2]

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि तुम में से बेहतर वोह है जो अपनी औ़रतों से बेहतर है और मैं अपनी अज़्वाज के साथ तुम सब से बेहतर सुलूक करने वाला हूं।[3]

ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ग़ुस्से के बा वुजूद इन्सान के लिये मुनासिब है कि वोह अपने घर वालों के साथ बच्चे जैसा हो और जब घर वाले उस से कुछ त़लब करें जो उस के पास मौजूद हो तो वोह उसे मर्द पाएं (या'नी वोह मत़लूबा शै में बुख़्ल न करे)।

ह़ज़रते लुक़्मान ने फ़रमाया : अ़क़्लमन्द के लिये मुनासिब है कि वोह अपने घर वालों से बच्चे की त़रह़ हो और जब क़ौम में हो तो जवानों की त़रह़ हो।

इस ह़दीस की तफ़्सीर में जिस में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला हर जा'ज़री जव्वाज़ से बुग़्ज़ रखता है।[4]

कहा गया है कि इस से मुराद अपने घर वालों से सख़्ती करने वाला और ख़ुद बीनी में मुब्तला है और येह इन्हीं मआ़नी में से एक मा'ना है जो फ़रमाने इलाही عُتُلٍّ की तफ़्सीर में कहा गया है कि इस से मुराद बद ख़ुल्क़, ज़बान दराज़, अपने घर वालों पर तशद्दुद करने वाला है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : तुम ने बाकिरा से शादी क्यूं न की वोह तुम से खेलती और तुम उस से ख़ुश त़बई करते।[5]

---

1 ......مؤطا امام محمد، ابواب السير، باب النظر الى اللعب، ص ٣٢١، الحديث ٩٠٦

2 ......ترمذى، كتاب الايمان، باب ماجاء فى استكمال الايمان...الخ، ٤/٢٧٨، الحديث ٢٦٢١

3 ......ابن ماجه، كتاب النكاح، باب حسن معاشرة النساء، ٢/٤٧٨، الحديث ١٩٧٧

4 ......صحيح ابن حبان، كتاب العلم، باب الزجر عن كتبة المرء...الخ، ١/١٤٥، الحديث ٧٢

5 ......بخارى، كتاب الجهاد والسير، باب استئذان الرجل الامام، ٢/٣٠٠، الحديث ٢٩٦٧

एक बदविय्या ने अपने मुर्दा ख़ावन्द की इन अल्फ़ाज़ में ता'रीफ़ की, ब ख़ुदा ! जब वोह घर में दाख़िल होता तो सदा हंसता रहता, जब वोह बाहर निकलता तो चुप रहता, जो कुछ मिलता खा लेता और जो कुछ मौजूद न होता उस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल न करता।

इन्सान के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह मुलाअ़बत, हुस्ने ख़ुल्क़ और इस की ख़्वाहिशात की मुवाफ़क़त में इस हृद तक न बढ़े कि उस की आ़दतें बिगड़ जाएं और उस के दिल से मर्द की हैबत बिल्कुल उठ जाए बल्कि हर मुआ़मले में ए'तिदाल को मल्हूज़ रखे और अपनी हैबत और दबदबा बिल्कुल्लिया ख़त्म न करे।

मर्द पर लाज़िम है कि उस से कोई ना मुनासिब बात न सुने और उसे बुरे कामों में दिलचस्पी न लेने दे बल्कि जब भी उसे शरीअ़त व मुरुव्वत के ख़िलाफ़ गामज़न पाए उस की सरज़निश करे और उसे राहे रास्त पर लाए।

हज़रते हसन رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम ! जो भी मर्द अपनी बीवी की नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे औंधा जहन्नम में डालेगा।

हज़रते उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया : औ़रतों की मुख़ालफ़त करो क्यूंकि इन की मुख़ालफ़त में बरकत है।

और येह भी कहा गया है कि इन से मश्वरा करो और इन की मुख़ालफ़त करो।

हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : औ़रत का ग़ुलाम हलाक हुवा।[1]

और आप ने येह इस लिये फ़रमाया क्यूंकि मर्द जब औ़रत की ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी करता है तो वोह उस का ग़ुलाम और बन्दा बन जाता है क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने उसे औ़रत का मालिक बनाया मगर उस ने औ़रत को अपना मालिक बना दिया, गोया उस ने बर अ़क्स काम किया और ख़ुदाई फ़ैसले के ख़िलाफ़ शैत़ान की इत़ाअ़त की जैसा कि उस ने कहा :

"और अलबत्ता हुक्म करूंगा उन को पस फेर डालेंगे ख़ुदा की पैदाइश को।"[2]

और मर्द का हक़ येह है कि वोह मतबूअ़ हो, ताबेअ़ मोहमल न बने चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने मर्दों को येह नाम दिया है कि

---

1 ...... كشف الخفاء، ٢/٤، تحت الحديث ١٥٢٧ و تذكرة الموضوعات للفتنى، ص١٢٨

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ बदल देंगे। (پ٥، النساء:١١٩)

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ [1] मर्द औरतों पर हुक्मरान हैं।

और शोहर को सरदार का नाम दिया गया है चुनान्चे, फ़रमाने इलाही है :

وَّ اَلْفَیَا سَیِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ [2] इन दोनों ने इस के सरदार (ख़ावन्द) को दरवाज़े के क़रीब पाया।

और जब सरदार ताबेए फ़रमान हो जाए तो गोया उस ने ने'मते इलाही का कुफ़्रान किया।

औरत का नफ़्स भी तेरे नफ़्स की तरह है अगर तू उसे मा'मूली सी ढील दे देगा तो वोह बहुत ज़ियादा सरकश हो जाता है, अगर तू उसे भरपूर ढील दे देगा तो वोह बिल्कुल तेरे हाथ से निकल जाएगा।

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि तीन हस्तियां ऐसी हैं कि अगर तू उन की इज़्ज़त करेगा तो वोह तुझे ज़लील करेंगे और अगर तू उन की इहानत करेगा तो वोह तेरी इज़्ज़त करेंगे, औरत, ख़ादिम और घोड़ा।

इन की मुराद येह है कि अगर तू ने इन से सिर्फ़ नर्मी का बरताव किया और नर्मी को सख़्ती से न मिलाया और मेहरबानी से सरज़निश को न मिलाया तो येह तुझे नुक़्सान देंगे।

रोटी के टुकड़े की हिकायत

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने ज़मीन पर रोटी का टुकड़ा पड़ा देखा तो गुलाम से फ़रमाया : इसे साफ़ कर के रख दो। जब गुलाम से शाम को इफ़्तार के वक़्त वोह टुकड़ा मांगा, उस ने अर्ज़ की : वोह तो मैं ने खा लिया, फ़रमाया : जा तू आज़ाद है क्यूंकि मैं ने ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है : जो रोटी का पड़ा हुवा टुकड़ा उठा कर खा लेता है तो उस के पेट में पहुंचने से पहले ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है। अब जो मग़फ़िरत का हक़दार हो गया मैं उस को गुलाम किस तरह बनाए रखूं ? (تنبيه الغافلين، ص۳٤۸، الحديث ٥١٤)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मर्द अफ़्सर हैं औरतों पर। (پ٥، النساء: ٣٤)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दोनों को औरत का मियां दरवाज़े के पास मिला। (پ١٢، يوسف:٢٥)

बाब 95

हुकूके शोहर ब ज़िम्मए ज़न

निकाह़ इत़ाअ़त की एक क़िस्म है लिहाज़ा बीवी ख़ावन्द की मुत़ीअ़ है और उस पर लाज़िम है कि ख़ावन्द उस से जो कुछ त़लब करे वोह उस की इत़ाअ़त करे ब शर्त़ येह कि वोह उसे **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी का हुक्म न दे। बीवी पर ख़ावन्द के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अह़ादीस वारिद हुई हैं, इरशादे नबवी है कि जो औ़रत इस ह़ालत में मरे कि उस का ख़ावन्द उस से राज़ी हो वोह जन्नत में जाएगी।(1)

एक शख़्स सफ़र पर रवाना हुवा और उस ने अपनी बीवी से अ़हद लिया कि वोह ऊपर से नीचे न उतरे, उस का बाप नीचे रहता था, वोह बीमार हो गया, उस औ़रत ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आदमी भेज कर बाप के पास जाने की इजाज़त त़लब की, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपने ख़ावन्द की इत़ाअ़त कर, फिर वोह मर गया और औ़रत ने फिर इजाज़त त़लब की तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने ख़ावन्द की इत़ाअ़त कर, उस के बाप को दफ़्न कर दिया गया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे ख़बर दी कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस के ख़ावन्द की इत़ाअ़त की वज्ह से उस के बाप को बख़्श दिया है।(2)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि जब औ़रत ने पांच नमाज़ें पढ़ीं, माहे रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी इ़स्मत की ह़िफ़ाज़त की और अपने शोहर की इत़ाअ़त की, वोह अपने रब की जन्नत में दाख़िल हुई।(3)

और सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शोहर की इत़ाअ़त को इस्लाम की मबादियात में से क़रार दिया।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में औ़रतों का तज़किरा हुवा तो आप ने फ़रमाया : ह़ामिला, बच्चा जनने और दूध पिलाने वाली, अपनी अवलादों पर मेहरबानी करने वाली औ़रतें, अगर अपने शोहर की ना फ़रमानी न करें तो इन में जो नमाज़ पढ़ने वाली हैं वोह जन्नत में दाख़िल होंगी।(4)

---

1 ......ترمذی، کتاب الرضاع، باب ما جاء فی حق زوج علی المراۃ، ۲/۳۸۶، الحدیث ۱۱۶۴

2 ......المعجم الاوسط، ۵/۳۷۲، الحدیث ۷۶۴۸

3 ......مسند احمد، حدیث عبدالرحمن بن عوف الزهری، ۱/۴۰۶، الحدیث ۱۶۶۱

4 ......المعجم الکبیر، ۸/۲۵۲، الحدیث ۷۹۸۵

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि मैं ने जहन्नम को देखा उस में रहने वाली अक्सर औ़रतें थीं तो ख़्वातीन में से बा'ज़ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) किस की वज्ह से ? आप ने फ़रमाया : कसरत से ला'नत करती हैं और ख़ावन्द की ना फ़रमानी करती हैं।[1] या'नी जो इन्हें ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद देता है, उस के शुक्रिय्ये की बजाए कुफ़्रान करती हैं।

दूसरी ह़दीस में आया है कि मैं ने जन्नत को देखा, उस में सब से कम औ़रतें थीं, मैं ने कहा : औ़रतें कहां हैं ? जिब्रील ने कहा : इन्हें दो सुर्ख़ चीज़ों ने मश्ग़ूल कर दिया है, सोने और ज़ा'फ़रान ने, या'नी ज़ेवरात और रंगीन कपड़ों ने।[2]

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक जवान औ़रत ने आ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं जवान औ़रत हूं मुझे निकाह़ के पैग़ाम आते हैं मगर मैं शादी को मकरूह समझती हूं, आप मुझे बताएं कि बीवी पर ख़ावन्द का क्या ह़क़ है ? आप ने फ़रमाया : अगर ख़ावन्द की चोटी से ऐड़ी तक पीप हो और वोह इसे चाटे तो ख़ावन्द का ह़क़ अदा नहीं कर पाएगी, उस ने पूछा : तो मैं शादी न करूं ? आप ने फ़रमाया कि तुम शादी करो क्यूंकि इस में भलाई है।[3]

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि बनू ख़सअ़म की एक औ़रत हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई और कहा : मैं ग़ैर शादी शुदा औ़रत हूं और शादी करना चाहती हूं, ख़ावन्द के क्या हु़क़ूक़ हैं ? आप ने फ़रमाया : बीवी पर ख़ावन्द का येह ह़क़ है कि जब वोह उस का इरादा करे, अगर उस के इरादे के वक़्त वोह ऊंट की पीठ पर हो तब भी उसे न रोके। ख़ावन्द का येह भी ह़क़ है कि बीवी उस के घर से उस की इजाज़त के बिग़ैर कोई चीज़ न दे, अगर उस ने बिला इजाज़त कुछ दे दिया तो गुनहगार होगी और ख़ावन्द को सवाब होगा, बीवी पर येह भी ह़क़ है कि ख़ावन्द की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़े न रखे, अगर उस ने ऐसा

---

1 ......سنن الکبری للنسائی، کتاب عشرۃ النساء، باب ما ذکر فی النساء، ٥/٣٩٨، الحدیث ٩٢٥٦

2 ......قوت القلوب، ٢/٤١٦ و المعجم الکبیر، ٨/٢٣٦، الحدیث ٧٩٢٣ وکشف الخفاء، ١/٣٥٥، تحت الحدیث ١٢٨٨

3 ......مستدرك للحاکم، کتاب النکاح، ٢/٥٤٧، الحدیث ٢٨٢١، ٢٨٢٢ ومصنف ابن ابی شیبۃ، ما حق الزوج علی امرأتہ، ٣/٣٩٧، الحدیث ١

किया तो वोह भूकी प्यासी रही और उस का रोज़ा क़बूल नहीं होगा और अगर घर से ख़ावन्द की इजाज़त के बिग़ैर बाहर निकली तो जब तक वोह वापस न हो जाए या तौबा न करे, फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते रहते हैं।[1]

शोहर का मर्तबा

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अगर मैं किसी को किसी के लिये सजदे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वोह अपने ख़ावन्द को सजदा करे।[2] क्यूंकि ख़ावन्द के बीवी पर बहुत हुक़ूक़ हैं।

फ़रमाने नबवी है : औरत उस वक़्त रब तआ़ला से ज़ियादा क़रीब होती है जब वोह घर के अन्दर हो।[3]

और औरत का घर के सह़न में नमाज़ पढ़ना मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[4]

और घर के अन्दर नमाज़ पढ़ना सह़न में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और घर के अन्दर वाले घर में उस की नमाज़ कमरे में नमाज़ से अफ़्ज़ल है।[5]

येह आप ने मज़ीद पर्दा नशीनी के लिये फ़रमाया, इसी लिये फ़रमाने नबवी है कि औरत सरासर बरहनगी है, जब वोह निकलती है तो शैतान उसे झांकता है।[6]

नीज़ फ़रमाया कि औरत के लिये दस बरहनगियां हैं जब वोह शादी करती है तो ख़ावन्द उस की एक बरहनगी ढांप लेता है और जब वोह मरती है तो क़ब्र उस की तमाम उ़रयानियां छुपा लेती है।[7]

औरत पर ख़ावन्द के बहुत से हुक़ूक़ हैं, इन में से दो बातें अहम हैं, इन में से एक निगहबानी और पर्दा है, दूसरा ह़ाजत के इ़लावा दीगर चीज़ों का मुत़ालबा न करना और मर्द की ह़राम की कमाई से ह़ासिल कर्दा रिज़्क़ से परहेज़, गुज़श्ता ज़माने में औरतों का येही किरदार था।

---

1 ......مسند ابی یعلی، ٢/٤٣٨، الحدیث ٢٤٤٩ دون ذکر الصوم

2 ......ابن ماجه، کتاب النکاح، باب حق الزوج...الخ، ٢/٤١١، الحدیث ١٨٥٢

3 ......مسند البزار، مسند عبداللّٰه بن مسعود، ٥/٤٢٧، الحدیث ٢٠٦١

4 ......مسند امام احمد، حدیث ام حمید، ١٠/٣١٠، الحدیث ٢٧١٥٨

5 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب التشدید فی ذالك...الخ، ١/٢٣٥، الحدیث ٥٧٠

6 ......ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی کراهیة الدخول...الخ، ٢/٣٩٢، الحدیث ١١٧٦

7 ......فردوس الاخبار، ٢/١٩٠، الحدیث ٥٠١٤

चुनान्चे, आदमी जब घर से बाहर निकलता तो उस की बीवी या बेटी उसे कहती कि ह़राम की कमाई से बचना क्यूंकि हम दुख दर्द और भूक बरदाश्त कर सकते हैं मगर जहन्नम की आग बरदाश्त नहीं कर सकते।

गुज़श्ता लोगों में से एक आदमी ने सफ़र का इरादा किया तो उस के हमसाइयों ने उस के सफ़र को अच्छा न समझा और उन्हों ने उस की बीवी से कहा : तू उस के सफ़र पर कैसे राज़ी हुई ह़ालांकि उस ने तेरे लिये ख़र्च वग़ैरा नहीं छोड़ा, औ़रत ने कहा : मेरा ख़ावन्द जब से मैं उसे जानती हूं मैं ने उसे बहुत खाने वाला पाया है, रिज़्क़ देने वाला नहीं पाया, मेरा रब रज़्ज़ाक़ है, खाने वाला चला जाएगा और रिज़्क़ देने वाला बाक़ी रहेगा।

ह़ज़रते राबिआ़ बिन्ते इस्माईल ने ह़ज़रते अह़मद बिन अबिल ह़वारी को निकाह़ का पैग़ाम दिया मगर उन्हों ने अपनी इ़बादत गुज़ारी की वज्ह से शादी को ना पसन्द किया और उन से जवाब में कहा ब ख़ुदा ! इ़बादत की मश्ग़ूलिय्यत की वज्ह से मुझे औ़रतों से मह़ब्बत और उन्स नहीं रहा। राबिआ़ ने कहा : मैं आप को अपने शग़्ल से मुन्ह़रिफ़ करने और ख़्वाहिशात की तक्मील के लिये निकाह़ का पैग़ाम नहीं दे रही हूं बल्कि मैं ने अपने साबिक़ ख़ावन्द के विरसा में से माले कसीर पाया है, मैं चाहती हूं कि येह माल आप के नेक भाइयों पर ख़र्च करूं और आप के सबब मुझे आप के भाइयों का पता चल जाएगा और मैं नेकों की ख़िदमत कर के अल्लाह तआ़ला का रास्ता पा लूंगी। ह़ज़रते अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : मैं अपने शैख़ से इजाज़त ले लूं चुनान्चे, आप अपने शैख़ ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में आए, कहते हैं कि ह़ज़रते अबू सुलैमान अपने मुरीदीन को शादी से मन्अ़ किया करते थे और कहते थे कि हमारे साथियों में से जिस ने भी शादी की है उस की ह़ालत दिगर गूं हुई है, जब उन्हों ने राबिआ़ की बातें सुनीं तो मुझ से फ़रमाया : उस से निकाह़ कर लो क्यूंकि येह वलिय्या है, ब ख़ुदा ! ऐसी बातें सिद्दीक़ीन की होती हैं, ह़ज़रते अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मैं ने राबिआ़ से निकाह़ कर लिया। हमारे घर में गच का सिर्फ़ एक कूंडा था जो खाना खाने के बा'द जल्दी से हाथ धो कर बाहर जाने वालों की वज्ह से टूट गया, इश्नान (एक बूटी जो साबुन का काम देती है) से हाथ धोने वाले इस के इ़लावा होते थे। ह़ज़रते अह़मद कहते हैं कि मैं ने उस के बा'द तीन और औ़रतों से निकाह़ किया, राबिआ़ मुझे ख़ूब खिलाती और ख़ुश्बूएं वग़ैरा लगाती और कहा करती कि अपनी ख़ुशी और क़ुव्वत के साथ अपनी बीवियों के पास जाओ और येह राबिआ़ शाम में ऐसी पहचानी जाती थी जैसे बसरा में राबिआ़ अ़दविय्या पहचानी जाती थीं।

बीवी पर येह भी लाज़िम है कि वोह ख़ावन्द के माल को ज़ाएअ़ न करे बल्कि उस की हिफ़ाज़त करे, फ़रमाने नबवी है : औ़रत के लिये ह़लाल नहीं कि ख़ावन्द के घर से उस की इजाज़त के बिग़ैर कुछ खाए।[1] हां ऐसा खाना खा सकती है जिस के ख़राब होने का अन्देशा हो, अगर बीवी, ख़ावन्द की रज़ामन्दी से खाएगी तो उसे ख़ावन्द के बराबर सवाब मिलेगा वरना ख़ावन्द की इजाज़त के बिग़ैर कुछ खाएगी तो ख़ावन्द को अज्र मिलेगा मगर बीवी पर गुनाह होगा।

वालिदैन पर ह़क़ है कि वोह लड़की की बेहतरीन तर्बिय्यत करें, उसे ऐसी ता'लीम दें जिस से वोह उ़म्दा रह्न सह्न और ख़ावन्द से बेहतर बरताव के आदाब सीख जाए जैसा कि मरवी है कि अस्मा बिन्ते ख़ारिजा फ़ज़ारी ने अपनी बेटी की शादी के वक़्त उस से कहा : अब तुम उस नशीमन से निकल रही हो जो तुम्हारा मल्जा व मामन था लेकिन अब तुम ऐसे फ़राश पर जा रही हो जिस से तुम्हारा कभी वासित़ा न पड़ा और ऐसे शोहर के पास जिस से तुम ने कभी भी उल्फ़त नहीं की तो तुम उस के लिये ज़मीन बन जाओ वोह तुम्हारा आस्मान होगा तुम उस का बिछौना बन जाओ वोह तुम्हारे लिये इ़मारत होगा तुम उस की बांदी बनना वोह तुम्हारा ख़ादिम होगा, उस से किनारा कश न रहना वरना वोह तुझ से दूर हो जाएगा, उस से दूर न होना वरना वोह तुझे भूल जाएगा, अगर वोह तेरा क़ुर्ब चाहे तो उस के क़रीब हो अगर वोह तुझ से दूर होना चाहे तो तू भी दूर हो जा, उस की नाक, कान और आंख की हि़फ़ाज़त करना ताकि वोह तुझ से उ़म्दा ख़ुश्बू के इ़लावा और कुछ न सूंघे, उ़म्दा बात के सिवा और कुछ न सुने और वोह तुझे हमेशा ख़ूब सूरत ही देखे। एक शख़्स ने अपनी बीवी से कहा :

خذی العفو منی تستدیمی مودتی ولا تنطقی فی سورتی حین اغضب
ولا تنقرینی نقرک الدف مرة فانک لاتدرین کیف اغیب
ولا تکثری الشکوی فتذهب بالهوی ویأباک قلبی والقلوب تلقب
فانی رایت الحب فی القلب والاذی اذا اجتمعا لم یلبث الحب یذهب

﴾1﴿......मुआ़फ़ करना इख़्तियार कर मेरी मह़ब्बत दाइम रहेगी और जब मुझे ग़ुस्सा आ जाए तो मेरी शान में न बोलना।

﴾2﴿......मुझे दफ़ की त़रह़ ठोकर न लगाना क्यूंकि तू नहीं जानती कि मैं कैसे ग़ाइब हो जाता हूं।

﴾3﴿......और शिकायात ज़ियादा न करना कि मह़ब्बत ख़त्म हो जाएगी और मेरा दिल तेरा इन्कार कर देगा और दिल तो बदलते रहते हैं।

﴾4﴿......मैं ने दिल में मह़ब्बत और अ़दावत देखी है और जब दोनों जम्अ़ हों तो मह़ब्बत नहीं रहती वोह चली जाती है।

---

1 ......قوت القلوب، ٢/٤١٥ و سنن الکبری للبیهقی، کتاب الزکاة، باب من حمل هذه الأخبار، ٤/٣٢٥، الحدیث ٧٨٥٧ و جامع الصغیر، ص٢٢٧، الحدیث ٣٧٣٧ و تاریخ مدینه دمشق، ٢٧/٣٩٨، الحدیث ٣٢٤٩

बाब 96

फ़ज़ीलते जिहाद

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ یَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ۠ (1)

*बेशक मोमिन वोही लोग हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए और अपने मालों और जानों के साथ **अल्लाह** की राह में जिहाद किया येही लोग सच्चे हैं ।*

हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कहना है : मैं मिम्बरे रसूल के क़रीब था कि एक आदमी को येह कहते हुवे सुना कि मुझे इस्लाम के बा'द और किसी अ़मल की तमन्ना नहीं मगर येह कि मैं हाजियों को पानी पिलाऊं, दूसरे ने कहा : मुझे इस्लाम के बा'द बैतुल्लाह की ख़िदमत के सिवा किसी और अ़मल की तमन्ना नहीं है, एक और बोला कि तुम्हारे इन कामों से जिहाद अफ़्ज़ल है । हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें झिड़क दिया और कहा कि मिम्बरे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब आवाज़ें बुलन्द न करो, वोह जुमुआ़ का दिन था । जब मैं ने जुमुआ़ की नमाज़ अदा कर ली तो मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और इस बात के मुतअ़ल्लिक़ पूछा : जिस में वोह इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, तब **अल्लाह** तआ़ला ने अपना येह फ़रमान नाज़िल फ़रमाया :

اَجَعَلْتُمْ سِقَایَةَ الْحَآجِّ وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ جٰهَدَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ لَا یَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَۘ (2)

*क्या हाजियों का पानी पिलाना और मस्जिदे ह़राम की ख़िदमत करना उस शख़्स के आ'माल की तरह है जो **अल्लाह** और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता है और उस की राहे ख़ुदा में जिहाद करता है येह लोग **अल्लाह** के नज़्दीक बराबर नहीं हो सकते और **अल्लाह** तआ़ला ज़ालिमों की क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता ।*

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोही सच्चे हैं । (پ۲٦، الحجرات:۱۵)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम ने हाजियों की सबील और मस्जिदे ह़राम की ख़िदमत उस के बराबर ठहरा ली जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाया और **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोह **अल्लाह** के नज़्दीक बराबर नहीं और **अल्लाह** ज़ालिमों को राह नहीं देता ।

(پ۱۰، التوبة:۱۹)......مسلم، کتاب الامارة، باب فضل الشهادة...الخ، ص ۱۰٤٤، الحديث ۱۱۱ - (۱۸۷۹)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम चन्द साथी इकठ्ठे बैठे थे। हम ने कहा अगर हम जानते कि कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है और **अल्लाह** तआ़ला को ज़ियादा महबूब है तो हम वोही अ़मल करते, इस पर येह आयाते मुबारका नाज़िल हुईं।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْیَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ (1)

अल्लाह की पाकी बयान करती है जो चीज़ भी आस्मानों और ज़मीनों में है और वोह ग़ालिब हिक्मत वाला है ऐ ईमान वालो वोह बात क्यूं कहते हो जो नहीं करते अल्लाह के नज़्दीक येह बात बहुत ना पसन्दीदा है कि तुम वोह कुछ कहो जो नहीं करते तह़क़ीक़ अल्लाह तआ़ला उन लोगों को मह़बूब रखता है जो उस की राह में सफ़ बांध कर लड़ते हैं जैसे वोह सीसा पिलाई हुई दीवार हों।

और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें येह आयात सुनाईं।(2)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसा अ़मल बतलाइये जो जिहाद के बराबर हो, आप ने फ़रमाया : मैं ऐसा कोई अ़मल नहीं पाता, फिर फ़रमाया : क्या तुम इस बात की ताब रखते हो कि जब मुजाहिद जिहाद के लिये रवाना हों तो तुम मस्जिद में दाख़िल हो जाओ और हमेशा इ़बादत में रहो, कभी वक़्फ़ा न करो, हमेशा रोज़े से रहो कभी इफ़्तार न करो, उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! कौन है जो इस की ताक़त रखता है।(3)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक सह़ाबी का ऐसी घाटी से गुज़र हुवा जिस में मीठे पानी का चश्मा था, उन्हों ने कहा : मैं लोगों से गोशा नशीनी इख़्तियार कर के इस घाटी में इ़बादत करूंगा और यहीं क़ियाम करूंगा लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त के बिग़ैर ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगा चुनान्चे, उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है। ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते। कितनी सख़्त ना पसन्द है **अल्लाह** को वोह बात कि वोह कहो जो न करो, बेशक **अल्लाह** दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इ़मारत हैं रांगा (सीसा) पिलाई। (پ۲۸، الصف:۱۔٤)

2......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ (الصف)، ۵/۲۰۳،الحدیث ۳۳۲۰

3......بخاری، کتاب الجھاد و السیر، باب فضل الجھاد والسیر، ۲/۲٤۹، الحدیث ۲۷۸۵

ख़िदमत में आ कर येह बात अ़र्ज़ की तो आप ने फ़रमाया : ऐसा न करो क्यूंकि तुम्हारा राहे खुदा में जिहाद के लिये खड़ा होना, घर में सत्तर साल की नमाज़ से अफ़्ज़ल है, क्या तुम इस बात को पसन्द नहीं करते कि **अल्लाह** तुम्हें बख़्श दे और तुम्हें जन्नत में दाख़िल करे, राहे खुदा में जिहाद करो जो शख़्स ऊंटनी का दूध दोहने के वक़्फ़े के बराबर भी जिहाद करता है उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है ।(1)

जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबी को इबादत के लिये उ़ज़्लत नशीनी की इजाज़त नहीं दी हालांकि उन का शौक़े इबादत मुसल्लम था और नेकियों में उन की मुवाफ़क़त शको शुबा से बाला थी, बल्कि उन्हें जिहाद की तरग़ीब दी, तो हम जब कि हमारी नेकियां कम हैं और गुनाह ज़ियादा, हम ह़राम और मुश्तबा गिज़ाएं खाते हैं और हमारे अ़ज़ाइम और निय्यतें फ़ासिद हैं, हमारे लिये जिहाद का तर्क करना किस त़रह़ मुनासिब हो सकता है ।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि राहे खुदा में जिहाद करने वाले की मिसाल रोज़ादार, खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से इबादत करने वाले, क़ियाम करने वाले, रुकूअ़ करने वाले और सुजूद करने वाले जैसी है और **अल्लाह** तआ़ला जानता है कि कौन उस की राह में जिहाद करने वाला है ।(2)

फ़रमाने नबवी है कि जो **अल्लाह** के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रसूल होने पर राज़ी हुवा उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई । ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को येह बात पसन्द आई, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! एक बार येह बात मुझ से फिर इरशाद फ़रमा दीजिये चुनान्चे, आप ने उसे मुकर्रर फ़रमाया फिर फ़रमाया : एक और अ़मल है जिस के सबब **अल्लाह** तआ़ला बन्दे के सो दरजात बुलन्द करता है और हर दो दरजात का दरमियानी फ़ासिला ज़मीनो आस्मान के फ़ासिले के बराबर होगा, अबू सईद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वोह कौन सा अ़मल है ? आप ने फ़रमाया : राहे खुदा में जिहाद करना ।(3)

---

1 ......ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل الغدو...الخ، ۳/۲۴۵، الحديث ۱۶۵۶

2 ......نسائی، کتاب الجهاد، باب مثل المجاهد...الخ، ص ۵۰۷، الحديث ۳۱۲۴ بالتقديم و التاخير

3 ......مسلم، کتاب الامارة، باب بيان ما اعده الله تعالٰی...الخ، ص ۱۰۴۵، الحديث۱۱۶ـ (۱۸۸۴)

बाब 97

फ़रेब कारिये शैतान

किसी शख़्स ने हज़रते हसन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अर्ज़ किया कि क्या शैतान सोता भी है ? वोह मुस्कुराए और कहा : अगर वोह सोता तो हम राहत पाते, मा'लूम हुवा कि मोमिन को शैतान से रिहाई पानी दुश्वार है, हां उसे अपने से दूर करने और उस की कुव्वत को कमज़ोर करने की राहें हैं।

फ़रमाने नबवी है कि मोमिन शैतान को दुबला कर देता है जैसे तुम में से कोई (तवील) सफ़र में ऊंट को दुबला कर देता है।[1]

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि मोमिन का शैतान लागिर होता है। हज़रते क़ैस बिन हज्जाज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि मुझ से मेरे शैतान ने कहा : जब मैं तेरे अन्दर दाख़िल हुवा तो ऊंट की तरह था और अब मैं चिड़या की तरह हूं, मैं ने कहा : वोह क्यूं ? शैतान ने कहा : तू ने मुझे ज़िक्रे ख़ुदा से लागिर कर दिया है।

लिहाज़ा मुत्तक़ी बन्दों पर शैतान के ज़ाहिरी दरवाज़ों का बन्द करना और उन रास्तों की निगहबानी करना जो गुनाहों की तरफ़ ले जाते हैं कुछ दुश्वार नहीं था, इन के लिये लग़्ज़िश का बाइस वोह ख़ुफ़्या शैतानी रास्ते बनते थे जिन की खिड़कियां दिल में खुलती हैं, वोह उन रास्तों की निगहबानी से मा'ज़ूर थे क्यूंकि दिल में शैतान के बहुत से रास्ते हैं और फ़िरिश्ते का सिर्फ़ एक दरवाज़ा है और येह एक दरवाज़ा भी उन बहुत सारे दरवाज़ों में ख़ल्त मल्त हो गया है।

और बन्दे की मिसाल ऐसी है जैसे कोई मुसाफ़िर ऐसे जंगल में भटक जाए जिस में बहुत से रास्ते हों और रात की तारीकी ने उन से रास्तों पर सियाह चादर तान दी हो तो वोह बसीरत वाली आंख और चमकदार सूरज के सिवा रास्ता नहीं पा सकता। यहां बसीरत वाली आंख और तक़्वा से शफ़्फ़ाफ़ दिल और चमकदार सूरज से वोह मुक़द्दस इल्म मुराद है जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हासिल किया गया हो, इन्हीं से इन्सान उन अन्धेरे रास्तों पर चल सकता है वरना रात अन्धेरी और रास्ते बे शुमार हैं।

1 ......مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۳۲۱، الحدیث ۸۹۴۹

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे सामने एक लकीर खींची और फ़रमाया : येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रास्ता है फिर उस लकीर के दाएं बाएं बहुत सी लकीरें खींचीं और फ़रमाया :

येह वोह रास्ते हैं कि जिन में से हर एक पर शैतान है जो अपनी तरफ़ बुलाता है, फिर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी :

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ (1)

तहक़ीक़ येह मेरी सीधी राह है पस इस की पैरवी करो और दीगर राहों की पैरवी न करो पस वोह तुम को उस की राह से जुदा कर देंगे।

और बिला शुबा हम मुख़्तलिफ़ रास्तों में जिस छुपे हुवे रास्ते की मिसाल ज़िक्र कर चुके हैं, येही वोह रास्ता है कि जिस पर उलमा और वोह बन्दे जो गुनाहों से रुकने वाले और अपनी ख़्वाहिशात की निगहबानी करने वाले हैं, धोका खा जाते हैं।

अब हम ऐसे वाज़ेह रास्ते की मिसाल बयान कर रहे हैं जिस पर चलने के लिये बा'ज़ अवक़ात आदमी मामूर हो जाता है और वोह मिसाल येह है जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाई कि

बनी इस्राईल में एक राहिब था, शैतान ने एक लड़की का क़स्द किया और उसे आसेब में मुब्तला कर दिया और उस के दिल में येह बात डाल दी कि इस का इलाज राहिब के पास है चुनान्चे, वोह लड़की को ले कर राहिब के पास आए मगर उस ने लड़की को साथ रखने से इन्कार कर दिया लेकिन उन्हों ने बहुत ज़ियादा इस्रार किया जिस की वज्ह से राहिब लड़की को साथ रखने पर रज़ामन्द हो गया, जब वोह लड़की इलाज के लिये राहिब के पास ठहरी तो शैतान राहिब के पास लड़की के कुर्ब को हसीन अन्दाज़ में पेश कर रहा था यहां तक कि राहिब ने लड़की से जिमाअ़ कर लिया और वोह हामिला हो गई, तब शैतान ने राहिब के दिल में वस्वसा डाला कि अब जब कि इस के घर वाले आएंगे तो तू बहुत शर्मिन्दा और रुस्वा होगा लिहाज़ा उस को क़त्ल कर दे, अगर वोह तुझ से पूछें तो कह देना कि वोह मर गई, चुनान्चे, उस ने लड़की को क़त्ल कर के दफ़्न कर दिया।

उधर शैतान ने लड़की के घर वालों के दिलों में येह वस्वसा डाला कि लड़की राहिब से हामिला हो गई है फिर राहिब ने उसे क़त्ल कर के दफ़्न कर दिया है लिहाज़ा वोह लोग राहिब के पास आए और उस से लड़की के मुतअ़ल्लिक़ पूछ गछ की, राहिब ने कहा : वोह मर गई है।

---

(1)...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो कि तुम्हें उस की राह से जुदा कर देंगी। (پ۸، الانعام: ۱۵۳)......مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود، ۲/۱۳۲، الحدیث ۴۱۴۲

चुनान्चे, उन्हों ने राहिब को पकड़ लिया ताकि वोह उसे लड़की के बदले में क़त्ल कर दें उस लम्हे शैतान ने राहिब के पास आ कर कहा : मैं ही वोह हूं जिस ने लड़की को आसेब ज़दा किया था और मैं ने ही लड़की के घर वालों के दिल में येह बात डाली है तू मेरी पैरवी कर ले, मैं तुझे इन से रिहाई और नजात दिला दूंगा, राहिब बोला : कैसे करूं ? शैतान ने कहा : मुझे दो सजदे कर ले चुनान्चे, राहिब ने उसे दो सजदे कर लिये, शैतान ने सजदे कराते ही कहा कि अब मैं तुझ से बरी हूं। येह वोही बात है जिस के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने इलाही है कि

"शैतान की तरह जिस वक़्त उस ने इन्सान से कहा कुफ़्र कर पस उस ने कुफ़्र किया तो शैतान ने कहा तह्क़ीक़ मैं तुझ से बरी हूं।"[1]

मरवी है कि शैतान ने इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा तुम्हारा उस ज़ात के बारे में क्या ख़याल है जिस ने मुझे अपनी पसन्द पर पैदा किया, जैसे चाहा मुझे इस्ति'माल किया और इस के बा'द अगर चाहे तो मुझे जन्नत में दाख़िल करे और चाहे तो जहन्नम में दाख़िल करे, क्या वोह अपने इस अ़मल में अ़द्ल करने वाला है या ज़ुल्म करने वाला है ? इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की बात में ग़ौर फ़रमाया और कहा : ऐ शख़्स ! अगर उस ने तुझे तेरी मन्शा पर पैदा किया है तो वाक़ेई तुझ पर ज़ुल्म किया है और अगर उस ने तुझे अपनी मन्शा पर पैदा किया है तो वोह उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछा जाता जो वोह करता है और न उस से सुवाल किये जा सकते हैं, येह सुनते ही शैतान बिखरने लगा यहां तक कि बिल्कुल मा'दूम हो गया फिर कहा : ब ख़ुदा ! ऐ शाफ़ेई ! मैं ने इसी सुवाल से सत्तर हज़ार आ़बिदों को उ़बूदिय्यत के दफ़्तर से निकाल कर बे दीनी की राहों पर धकेल दिया है।

येह भी मरवी है कि शैतान मलऊ़न हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के सामने आया और आप को कलिमए तय्यिबा पढ़ने को कहा, आप ने कहा : येह कलिमा बरहक़ है मगर मैं तेरे कहने से नहीं कहूंगा क्यूंकि बुराइयों की तरह नेकियों में भी शैतान ख़ल्त मल्त करता रहता है और इन्ही अफ़आ़ल से वोह आ़बिद, ज़ाहिद, ग़नी और तमाम क़िस्म के लोगों को हलाकत में डालता रहता है, उस की बुराइयों से वोही मह़फ़ूज़ रहता है जिसे **अल्लाह** तआ़ला मह़फ़ूज़ फ़रमा ले।

ऐ रब्बे ज़ुल जलाल ! हमें शैतान के मक्रों से मह़फ़ूज़ रख ताकि हम हिदायत याफ़्ता लोगों से मुलाक़ात करें। आमीन।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शैतान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं। (پ٢٨، الحشر:١٦)

बाब 98

समाअ़[1]

क़ाज़ी अबू तृय्यिब तृबरी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई, इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम मालिक, ह़ज़रते सुफ़्यान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) और उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त से ऐसे अल्फ़ाज़ नक़्ल किये हैं जो इस अम्र पर दलालत करते हैं कि येह ह़ज़रात समाअ़ के अ़दमे जवाज़ के क़ाइल थे।

इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अपनी किताब आदाबुल क़ज़ा में कहा है कि ग़ना एक ना मुनासिब और मकरूह चीज़ है जो एक लचर (बेहूदा) चीज़ की तृरह़ है, जो ब कसरत इस में मश्ग़ूल हो वोह बे समझ है और उस की गवाही रोक दी जाएगी।

क़ाज़ी अबू तृय्यिब رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने कहा है कि शवाफ़ेअ़ ह़ज़रात ने कहा है कि ग़ैर मह़रम औ़रत से कुछ सुनना ख़्वाह वोह पर्दे में हो या सामने, वोह आज़ाद हो या बांदी, हर सूरत में नाजाइज़ है।

क़ाज़ी साहि़ब ने इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ का येह क़ौल नक़्ल किया है कि बांदी का मालिक जब लोगों को उस से कुछ सुनने के लिये जम्अ़ करे तो वोह बे वुक़ूफ़ है, उस की गवाही मर्दूद है।

मज़ीद कहा कि इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ से नक़्ल किया गया है कि आप दो टहनियों को आपस में मार कर भी साज़ की सी आवाज़ निकालने को मकरूह जानते थे और फ़रमाते थे कि इसे बे दीनों ने ईजाद किया है ताकि इस की वज्ह से लोगों की तवज्जोह कुरआने मजीद से हट जाए।

इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ का क़ौल है कि ह़दीस शरीफ़ में नह्य वारिद होने के सबब में दीगर तमाम साज़हाए नग़्मा व तृरब से नर्द को ज़ियादा मकरूह समझता हूं, मैं शतृरन्ज खेलने को मकरूह समझता हूं और मैं हर खेल को मकरूह समझता हूं क्यूंकि येह खेल वग़ैरा दीनदार और साहि़बे तक़्वा लोगों का शैवा नहीं है।

1.....इस बाब में समाअ़ के जवाज़ व अ़दमे जवाज़, दोनों का बयान है जिस से ज़ेहन में इश्काल पैदा हो सकता है, लिहाज़ा जहां अ़दमे जवाज़ का बयान है वहां आलाते मूसीक़ी के साथ और जहां जवाज़ का बयान है वहां बिला साज़हाए नग़्मा व तृरब मुराद ली जाए। وَاللہُ تَعَالٰی اَعلم

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ना से मन्अ़ फ़रमाया है और इन का क़ौल है कि जब किसी ने लौंडी ख़रीदी और उसे पता चला कि वोह मुग़न्निया है तो उसे लौंडी वापस करने का हक़ हासिल है और इब्राहीम बिन सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इलावा तमाम अहले मदीना का येही मज़हब है।

इमाम अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ग़ना को मकरूह जानते थे और ग़ना का सुनना गुनाहों में शुमार करते थे और तमाम अहले कूफ़ा हज़रते सुफ़्यान सौरी, शैख़ हम्माद, इब्राहीम, शा'बी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) वग़ैरहुम का येही मस्लक है।

मज़्कूरए बाला तमाम रिवायात क़ाज़ी अबू तय्यिब तबरी ने नक़्ल की हैं।

जवाज़े समाअ़ के दलाइल

हज़रते अबू तालिब मक्की ने एक जमाअ़त से समाअ़ का जवाज़ नक़्ल किया है और उन का येह क़ौल भी है कि सहाबा से हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, मुग़ीरा बिन शो'बा और मुआ़विय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) से समाअ़ मन्क़ूल है।

अबू तालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह भी कहा है कि सलफ़े सालिहीन में से सहाबा और ताबेईन की कसीर जमाअ़त ने इसे अच्छा समझा है और हमारे यहां अहले हिजाज़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में साल के बेहतरीन अय्याम में समाअ़ सुनते थे।

बेहतरीन अय्याम से मुराद वोह अय्याम हैं जिन में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों को इबादत और ज़िक्र का हुक्म दिया है जैसे अय्यामे तशरीक़ वग़ैरा और हमारे ज़माने तक अहले मदीना भी अहले मक्का की तरह हमेशा पाबन्दी से समाअ़ सुना करते थे।

हम ने अबू मरवान क़ाज़ी को इस हालत में पाया कि उन के पास चन्द लड़कियां थीं जो लोगों को ख़ुश इल्हानी से गा कर सुनाती थीं, क़ाज़ी साहिब ने इन्हें सूफ़ियाए किराम के लिये तय्यार किया था।

मज़ीद फ़रमाया कि हज़रते अ़ता رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हां दो लड़कियां थीं और आप के भाई उन से समाअ़ किया करते थे।

हज़रते अबू तालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह क़ौल भी नक़्ल किया है कि अबुल हसन बिन सालिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा गया कि तुम समाअ़ का कैसे इन्कार करते हो ? हालांकि हज़रते जुनैद, सरी सक़ती और ज़ुन्नून (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) इसे सुना करते थे ? उन्हों ने कहा कि मैं समाअ़ का कैसे इन्कार करूंगा हालांकि मुझ से बेहतर शख़्स ने इसे सुना और इस की इजाज़त दी है चुनान्चे, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समाअ़ सुना करते थे इन्हों ने समाअ़ में सिर्फ़ लह्वो लइ़ब को मन्अ़ फ़रमाया है।

हज़रते यह्या बिन मुआज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है : इन्हों ने कहा कि हम ने तीन चीज़ों को गुम किया है, फिर हम ने उन्हें नहीं देखा और जूं जूं दिन गुज़रते जाते हैं, इन का फ़ुक़्दान फ़ुज़ूं होता जाता है, हसीन चेहरा जो पाकबाज़ हो, सच्ची बात जिस में दियानत की झलक नुमायां हो और बेहतरीन भाईचारा जिस में वफ़ा ही वफ़ा हो।

और मैं ने बा'ज़ किताबों में बि ऐनिही येह क़ौल हज़रते हारिसे मुहासबी से मन्कूल देखा है और इस में ऐसी बात पाई जाती है जो उन के ज़ोह्द, पाकबाज़ी और दीनी मुआमलात में उन की जिद्दो जहद और एहतिमाम के बा वुजूद इस अम्र पर दलालत करती है कि वोह जवाज़े समाअ़ के क़ाइल थे।

इब्ने मुजाहिद का समाअ़ पर ज़ोर

हज़रते इब्ने मुजाहिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का त़रीक़ा येह था कि आप कभी ऐसी दा'वत क़बूल नहीं फ़रमाते थे जिस में समाअ़ न हो और फिर एक से ज़ियादा लोगों ने येह बात बयान की है कि वोह किसी दा'वत में जम्अ़ हुवे और हमारे साथ अबुल क़ासिम इब्ने बिन्ते मनीअ़, अबू बक्र इब्ने दावूद और इब्ने मुजाहिद (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) अपने हम मशरबों के साथ मौजूद थे, तब मह़फ़िले समाअ़ मुन्अ़क़िद हुई, इब्ने मुजाहिद, इब्ने बिन्ते मनीअ़ को इस बात पर बर-अंगेख़्ता करने लगे कि वोह इब्ने दावूद को इस के सुनने पर आमादा करें, इब्ने दावूद बोले : मुझे मेरे बाप ने हज़रते अह़मद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का येह फ़रमान बतलाया है कि आप समाअ़ को मकरूह जानते थे, मेरे वालिद भी इसे मकरूह समझते थे और मैं भी अपने बाप के मज़्हब पर हूं और अबुल क़ासिम इब्ने बिन्ते मनीअ़ ने कहा : मेरे दादा अह़मद बिन बिन्ते मनीअ़ ने मुझे हज़रते सालेह़ बिन अह़मद के बारे में बतलाया कि इन के वालिद इब्ने ख़ुब्बाज़ा का क़ौल सुना करते थे। येह सुन कर इब्ने मुजाहिद ने इब्ने दावूद से कहा : मुझे छोड़ दो, तुम अपने बाप की बातें करते हो और इब्ने बिन्ते मनीअ़ से कहा : मुझे छोड़ दो, तुम अपने दादा की बातें मान लो ! ऐ अबू बक्र ! तुम मुझे इतनी सी बात बताओ कि अगर किसी ने शे'र पढ़ा या शे'र कहा तो क्या वोह नाजाइज़ है ? इब्ने दावूद बोले : नहीं ! इब्ने मुजाहिद बोले कि अगर शे'र कहने वाला हसीन आवाज़ वाला हो तो उस के लिये शे'र कहना ह़राम है ? वोह बोले : नहीं ! इब्ने मुजाहिद ने कहा : अच्छा अगर वोह इस त़ौर पर अश्आ़र पढ़ता है कि ममदूद ह़र्फ़ को मक़्सूर और मक़्सूर को ममदूद कर देता है तो क्या येह ह़राम है ? इब्ने दावूद ने कहा कि मैं तो एक शैत़ान पर क़ाबू नहीं पा सकता, दो शैत़ानों का मुक़ाबला कैसे करूंगा ?

हज़रते इमाम अस्क़लानी को समाअ़ का शौक़

हज़रते अबुल हसन अस्क़लानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो औलिया के सरदार थे, समाअ़ का शौक़ फ़रमाया करते थे और ब वक़्ते समाअ़ जज़्ब व शौक़ से आश्ना होते थे, इन्हों ने इस सिलसिले में एक किताब भी लिखी है जिस में इन्हों ने मुन्किरीने समाअ़ की तरदीद की है यूंही एक जमाअ़त ने समाअ़ के मुन्किरीन के रद्द में कुतुब लिखी हैं।

मशाइख़ में से किसी शैख़ से मरवी है कि इन्हों ने अबुल अ़ब्बास ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام को देखा और इन से पूछा कि आप का समाअ़ के मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़याल है ? जिस के बारे में हमारे साथियों में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : येह शीरीं और साफ़ ख़ुशगवार है, इस पर उ़लमा के सिवा किसी के क़दम नहीं जम सकते।

हज़रते मुमशाद दीनवरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि मैं ने ख़्वाब में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की और आप से पूछा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) क्या आप इस समाअ़ में से किसी चीज़ को ना पसन्द फ़रमाते हैं ? आप ने फ़रमाया कि मैं इस में से किसी चीज़ को ना पसन्द नहीं करता लेकिन इन्हें कह दो कि समाअ़ का इफ़्तिताह़ कुरआने मजीद से करें और इस का इख़्तिताम भी कुरआने मजीद ही पर करें।

हज़रते ताहिर बिन बिलाल सम्दानी वर्राक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है जो अकाबिर उ़लमा में से थे, कि मैं समन्दर के किनारे जद्दा की जामेअ़ मस्जिद में मो'तकिफ़ था कि एक दिन मैं ने ऐसी जमाअ़त को देखा जो मस्जिद में कुछ अश्आ़र पढ़ रहे थे और दूसरे लोग सुन रहे थे, मुझे येह बात सख़्त ना पसन्द हुई और मैं ने अपने दिल में कहा कि येह लोग **अल्लाह** के घरों में से एक घर में अश्आ़र पढ़ रहे हैं।

हज़रते ताहिर फ़रमाते हैं कि मैं ने उसी रात ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप उसी कोने में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप के पहलू में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, दफ़अ़तन हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ कहने लगे और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم समाअ़त फ़रमाने लगे और आप ने वज्द करने वाले की तरह अपना दस्ते मुबारक सीनए अन्वर पर रखा हुवा था।

मैं ने अपने दिल में कहा : मेरे लिये येह मुनासिब न था कि मैं उस जमाअ़त को ना पसन्द करता जो महफ़िले समाअ़ मुन्अ़क़िद किये हुवे थे हालांकि उसे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समाअ़त फ़रमा रहे हैं और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पढ़ रहे हैं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : येह ह़क़ के साथ ह़क़ है या येह ह़क़ से ह़क़ है, मैं येह भूल गया हूं कि आप ने इन दो बातों में से कोन सी बात इरशाद फ़रमाई थी।

ह़ज़रते जुनैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है कि इस गुरोह पर तीन मवाक़ेअ़ पर रह़मते इलाही का नुज़ूल होता है :

﴾1﴿......खाने के वक़्त क्यूंकि येह बिग़ैर फ़ाक़ा किये कुछ नहीं खाते।

﴾2﴿......गुफ़्त्गू के वक़्त क्यूंकि वोह सिद्दीक़ों के मक़ामात के इलावा और कोई गुफ़्त्गू नहीं करते।

﴾3﴿......समाअ़ के वक़्त क्यूंकि वोह जज़्ब व शौक़ से सुनते हैं और ह़क़ की गवाही देते हैं।

ह़ज़रते इब्ने जुरैज رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه समाअ़ की इजाज़त देते थे, इन से कहा गया कि येह फ़े'ल क़ियामत के दिन नेकियों में शुमार होगा या बुराइयों में ? इन्हों ने कहा : न नेकियों में और न ही गुनाहों में क्यूंकि येह लग़्व बात के मुशाबेह है और फ़रमाने इलाही है :

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ (1)

*नहीं मुआख़ज़ा करेगा **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा फ़ुज़ूल क़समों पर।*

ऊपर हम ने जो कुछ नक़्ल किया है येह मुख़्तलिफ़ अक़्वाल का मज्मूआ़ है, जो शख़्स तक़्लीद में रह कर ह़क़ को तलाश करेगा तो वोह इन अक़्वाल में तआ़रुज़ पाएगा जिस के सबब वोह मुतह़य्यर होगा, या अपनी ख़्वाहिशात के ज़ेरे असर किसी क़ौल को पसन्द कर लेगा हालांकि येह दोनों बातें ग़लत़ हैं, बल्कि ह़क़ को सह़ीह़ त़रीक़े से तलाश करे और येह ह़ज़्र व इबाह़त के अबवाब की तलाश करने से ही मा'लूम हो सकता है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए। (پ۲، البقرة: ۲۲۵)

बाब 99

इत्तिबाए ख़्वाहिशात व बिदअ़त

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि अपने आप को नए उमूर से बचाओ क्यूंकि हर नया काम बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही मूजिबे नार है।[1]

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने हमारे इस दीन में कोई ऐसी बात निकाली जो दीन में से नहीं है तो वोह बात मर्दूद है।[2]

एक और इरशाद में है कि तुम पर मेरे त़रीक़े और मेरे बा'द आने वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन के त़रीक़े की पैरवी लाज़िम है।[3]

इन अह़ादीस से येह बात मा'लूम हुई कि हर वोह बात जो किताब व सुन्नत और इजमाए़ अइम्मा के मुख़ालिफ़ हो, वोह क़ाबिले तरदीद बिदअ़त है (या'नी बिदअ़ते सय्यिआ)।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जिस ने उ़म्दा त़रीक़ा जारी किया उसे इस का अज्र मिलेगा और क़ियामत तक जो भी इस पर अ़मल करेगा, त़रीक़ा जारी करने वाले को इस का सवाब मिलेगा और जिस ने बुरा त़रीक़ा जारी किया, उस को इस का और क़ियामत तक इस पर अ़मल करने वालों का गुनाह होगा।[4]

ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस फ़रमाने इलाही :

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ[5]

और तह़क़ीक़ येह मेरा सीधा रास्ता है पस इस की इत्तिबाअ़ करो।

के बारे में कहा : जान लो रास्ता सिर्फ़ एक रास्ता है जिस की जड़ हिदायत और जिस पर फिरना जन्नत की त़रफ़ है और शैत़ान ने मुतफ़र्रिक़ रास्ते बनाए हैं जिन का अस्ल गुमराही और जिन पर फिरना जहन्नम की त़रफ़ है।

---

1 ......ابو داود، كتاب السنة، باب فى لزوم السنة، ٤/٢٦٧، الحديث ٤٦٠٧

2 ......بخارى، كتاب الصلح، باب اذا اصطلحوا على...الخ، ٢/٢١١، الحديث ٢٦٩٧

3 ......ابو داود، كتاب السنة، باب فى لزوم السنة، ٤/٢٦٧، الحديث ٤٦٠٧

4 ......مسلم، كتاب العلم، باب من سن سنة حسنة...الخ، ص ١٤٣٧، الحديث ١٥ـ (١٠١٧)

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो। (پ٨، الانعام: ١٥٣)

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से एक लकीर खींची और फ़रमाया : येह **अल्लाह** की सीधी राह है, फिर आप ने उस लकीर के दाएं बाएं और बहुत सी लकीरें खींचीं और फ़रमाया : येह रास्ते हैं, इन में कोई रास्ता नहीं है मगर हर रास्ते पर शैतान है जो अपनी तरफ़ बुलाता रहता है, फिर आप ने मज़्कूरए बाला आयत तिलावत फ़रमाई ।(1)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ौल है कि येह गुमराही के रास्ते हैं ।

हज़रते इब्ने अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है येही रास्ते जिन की हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निशान देही फ़रमाई है, इन में यहूदिय्यत, नसरानिय्यत, मजूसिय्यत और तमाम पैरुवाने मज़ाहिबे बातिला, बिदअ़ती, नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले गुमराह, अपनी अलग राहें मुतअ़य्यन करने वाले वग़ैरा सब शामिल हैं चाहे वोह झगड़ों और फ़ितना व फ़साद में दिलचस्पी लेने वाले हों या गुफ़्तगू में बाल की खाल उतारने वाले हों, येह तमाम लग़्ज़िश के मैदान और बद ए'तिक़ादी के मनाज़िर हैं ।

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने मेरी सुन्नत से ए'राज़ किया वोह मुझ से नहीं है ।(2)

नीज़ फ़रमाने नबवी है कि ऐसी कोई उम्मत नहीं है जो अपने नबी के दीन में बिदआ़त को फ़रोग़ देती है और इस बिदअ़त के बराबर उस की सुन्नत ज़ाएअ़ हो जाती है ।(3)

फ़रमाने नबवी है कि वोह ख़्वाहिशे नफ़्स कि जिस की पैरवी की जाए उस से बढ़ कर आस्मान के नीचे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ऐसा (झूटा) मा'बूद नहीं जिस की इबादत की जाती हो ।(4)

फ़रमाने नबवी है कि सब से उ़म्दा बात **अल्लाह** की किताब है और सब से उ़म्दा हिदायत मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हिदायत है और सब से बद तरीन उमूर बिदआ़त हैं और हर बिदअ़त ज़लालत है, मैं तुम पर तुम्हारी पुश्तों, शर्मगाहों और गुमराह कुन ख़्वाहिशात की शहवात से डरता हूं, तुम हर बिदअ़त से बचो क्यूंकि हर बिदअ़त गुमराही है ।(5)

---

1 ......مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود، ۲/۱۳۲، الحدیث ۴۱۴۲

2 ......بخاری، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النکاح، ۳/۴۲۱، الحدیث ۵۰۶۳

3 ......المعجم الکبیر، ۱۸/۹۹، الحدیث ۱۷۸

4 ......المعجم الکبیر، ۸/۱۰۳، الحدیث ۷۵۰۲

5 ......مسلم، کتاب الجمعۃ، باب تخفیف الصلاۃ والخطبۃ، ص ۴۳۰، الحدیث ۴۳ ـ (۸۶۷) و مسند احمد، مسند البصریین، ۷/۱۸۱، الحدیث ۱۹۷۹۴ و مسند البزار، ۹/۲۹۲، الحدیث ۳۸۴۴ و المعجم الکبیر، ۱۸/۲۴۸، الحدیث ۶۲۲

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला हर बिदअ़ती से तौबा को पोशीदा कर देता है[1] यहां तक कि वोह बिदअ़त को तर्क न कर दे।

फ़रमाने नबवी है कि **अल्लाह** तआ़ला किसी साहिबे बिदअ़त का रोज़ा, ह़ज, उ़मरह, जिहाद, ह़ीला और इन्साफ़ कुछ भी क़बूल नहीं करता वोह इस्लाम से ऐसे निकल जाता है जैसे आटे से बाल निकलता है, मैं तुम्हें सफ़ेद और वाज़ेह़ दीन पर छोड़ रहा हूं, इस का दिन और रात बराबर हैं, इस से वोही फिरेगा जो हलाक होगा, हर ज़िन्दगी के लिये एक हिम्मत है और हर हिम्मत के लिये एक कमज़ोरी है, जिस की हिम्मत मेरी सुन्नत की त़रफ़ है वोह हिदायत पा गया और जिस की हिम्मत दूसरी त़रफ़ राग़िब हुई वोह हलाक हुवा, मैं अपनी उम्मत पर तीन चीज़ों से डरता हूं, आ़लिम की लग़्ज़िश, क़ाबिले तक़्लीद ख़्वाहिशात और ज़ालिम ह़ाकिम,[2] (मेरी उम्मत के लिये येह तीन चीज़ें बहुत ख़त़रनाक होंगी)।

आलाते लह्वो लइ़ब की मज़म्मत

बुख़ारी शरीफ़ में मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने साथी से कहा कि आओ जूआ खेलें, उसे चाहिये कि सदक़ा करे।[3]

मुस्लिम, अबू दावूद और इब्ने माजा की रिवायत है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो नर्द या नर्द शीर से खेला, गोया उस ने ख़िन्ज़ीर के गोश्त और लहू में हाथ को डूबोया।[4]

अह़मद वग़ैरा की रिवायत है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ऐसे शख़्स की मिसाल जो नर्द खेलता है फिर नमाज़ के लिये खड़ा होता है, ऐसी है जैसे कोई शख़्स पीप और ख़िन्ज़ीर के ख़ून से वुज़ू करता है और फिर नमाज़ के लिये खड़ा होता है[5] या'नी उस की नमाज़ क़बूल नहीं होती जैसा कि दूसरी रिवायत में इस की तस्रीह़ मौजूद है।

1 ......المعجم الاوسط، ۳/۱٦٤، الحديث ٤٢٠٢

2 ......ابن ماجه، كتاب السنة، باب اجتناب البدع والجدل، ۱/۳۸، الحديث ٤٩ و المرجع السابق، باب اتباع سنة الخلفاء...الخ، ۱/۳۲، الحديث٤٣ و شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون...الخ، القصد فى العبادة، ۳/٤٠٠، الحديث ۳۸۷۸و مسند البزار، ۸/۳۱٤، الحديث ۳۳۸٤

3 ......بخارى، كتاب التفسير، باب افرايتم...الخ، ۳/۳۳۸، الحديث ٤٨٦٠

4 ......ابوداود، كتاب الادب، باب فى النهى عن اللعب بالنرد، ٤/۳۷۱، الحديث ٤٩۳۹

5 ......مسند احمد، احاديث رجال من اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم، ۹/٥٠، الحديث ۲۳۱۹۹

बैहक़ी ने यह्या बिन कसीर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का ऐसे लोगों के पास से गुज़र हुवा जो नर्द खेल रहे थे आप ने फ़रमाया : दिल ग़ाफ़िल है, हाथ करने वाले हैं और ज़बानें फ़ुज़ूल बकने वाली हैं।[1]

दैलमी ने रिवायत नक़्ल की है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : जब तुम ऐसे लोगों से गुज़रो जो इन फ़ाल के तीरों, शत्रन्ज, नर्द और इन से मुशाबेह हर उस चीज़ में जो हराम कर दिया गया है, लगे हों तो उन्हें सलाम न करो, अगर वोह तुम्हें सलाम करें तो उन के सलाम का जवाब न दो।[2]

फ़रमाने नबवी है कि तीन चीज़ें जूआ हैं, शर्तिया बाज़ियां छोटे छोटे तीरों को फेंक कर जूआ खेलना और सीटियां बजा बजा कर कबूतर उड़ाना।[3]

हज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ का ऐसे लोगों के पास से गुज़र हुवा जो शत्रन्ज खेल रहे थे, आप ने फ़रमाया : क्या येह वोह सूरतें हैं जिन के वासिते तुम ए'तिकाफ़ करने वाले हो ? तुम में से किसी एक के हाथों में अंगारे उठा लेना यहां तक कि वोह बुझ जाएं, इन्हें छूने से बेहतर है, फिर फ़रमाया : ब ख़ुदा ! तुम इस के इलावा किसी और काम के लिये पैदा किये गए हो।

मज़ीद इरशादे नबवी है कि शत्रन्ज खेलने वाले बहुत झूटे होते हैं, इन में से एक कहता है मैं ने क़त्ल कर दिया और मारा हालांकि उस ने किसी को क़त्ल किया होता है और न मारा होता है।[4]

हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि शत्रन्ज हमेशा ख़ताकार ही खेलता है। और येह बात ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि आलाते नग़्मा व त़रब या तो ह़राम हैं जैसे सारंगी, तम्बूरा, रबाब, त़बला, बांसरी और हर वोह साज़ जो इनफ़िरादी त़ौर पर गाने वाले की आवाज़ से हम आहंग हो या फिर मकरूह हैं और वोह ऐसे साज़ हैं जो ग़ना में त़रबिय्या कैफ़िय्यत को नुमायां करते हैं मगर इनफ़िरादी त़ौर पर इन से नग़्मात का काम न लिया जा सके जैसे नरकुल, चंग वग़ैरा, इन का ग़ना के साथ सुनना मकरूह है, बिग़ैर नग़्मात के नहीं और जो साज़ जाइज़ हैं वोह ऐसे हैं जो नग़्मा व त़रब के लिये नहीं बल्कि इत्तिलाअ़ के लिये बजाए जाते हैं, जैसे बिगिल, त़ब्ले जंग या मज्मअ़ इकठ्ठा करने का त़ब्ल या निकाह़ के ए'लान के लिये दफ़ बजाना वग़ैरा।

---

1 ......شعب الايمان ، الثانى والاربعون من شعب...الخ ، ٢٤١/٥، الحديث ٦٥١٦عن يحيىٰ بن ابى كثير

2 ......فردوس الاخبار، ١٦٠/١، الحديث ١٠٥١

3 ...... كنزالعمال،كتاب اللهو واللعب والتغنى من قسم الأقوال، ٩٤/٨، الجزء الخامس عشر، الحديث ٤٠٦٣٢

4 ......السنن الكبرى للبيهقى،كتاب الشهادات، جماع ابواب من تجوز...الخ ، باب الاختلاف...الخ ، ٣٥٨/١٠، الحديث ٢٠٩٣٠، ٢٠٩٣١، ٢٠٩٣٢ ليس بمرفوع

बाब 100

फ़ज़ाइले माहे रजब

रजब, तरजीब से मुश्तक़ है जिस के मा'ना ता'ज़ीम के हैं, इसे असब भी कहा गया है क्यूंकि इस में तौबा करने वालों पर रह्मत उंडेली जाती है और नेक अ़मल करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है। इसे असम्म भी कहा गया है क्यूंकि इस में जंग और क़िताल वगै़रा मह्सूस नहीं किया जाता। एक क़ौल येह है कि रजब जन्नत की एक नहर का नाम है जिस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा है, इस का पानी वोही पियेगा जो रजब में रोज़े रखता है।

फ़रमाने नबवी है कि रजब अल्लाह का महीना, शा'बान मेरा महीना और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है।(1)

रुमुज़ शनास लोगों का कहना है कि रजब के तीन हुरूफ़ हैं : रा, जीम, और बा, रा से रह्मते इलाही, जीम से बन्दे के जुर्म और ग़लतियां और बा से अल्लाह तआ़ला की मेहरबानियां मुराद हैं, गोया अल्लाह फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुनाहों को अपनी रह्मत और मेहरबानियों में समो लेता हूं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने रजब की सत्ताईसवीं का रोज़ा रखा उस के लिये साठ माह के रोज़ों का सवाब लिखा जाता है, येह पहला दिन है जिस में हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये पैग़ामे इलाही ले कर नाज़िल हुवे और इसी माह में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज शरीफ़ का शरफ़ हासिल हुवा।(2)

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، الباب الثامن...الخ، الفصل الثانى...الخ، ٦/١٣٩، الجزء الثانى عشر، الحديث ٣٥١٥٩

2 ......ابن عساكر، ٢٣٣/٤٢ دون ذكر معراج

फ़रमाने नबवी है कि बा ख़बर हो जाओ, रजब अल्लाह तआ़ला का माहे असम्म है, जिस ने रजब में एक दिन ईमान और त़लबे सवाब की निय्यत से रोज़ा रखा उस ने अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम रज़ामन्दी को अपने लिये वाजिब कर लिया।(1)

कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला ने महीनों में से चार महीनों को ज़ीनत बख़्शी है, ज़ीक़ा'दा, ज़िल हिज्जा, मुहर्रम और रजब। इसी लिये फ़रमाने इलाही है कि "इन में से चार महीने ह़राम हैं।"(2)

इन में से तीन मिले हुवे हैं और एक तन्हा है और वोह है माहे रजबुल मुरज्जब।

ह़िकायत

बैतुल मुक़द्दस में एक औरत रजब के हर दिन में बारह हज़ार मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ा करती थी और माहे रजबुल मुरज्जब में अदना लिबास पहनती थी, एक बार वोह बीमार हो गई और उस ने अपने बेटे को वसिय्यत की, कि उसे बकरी के पश्मीं लिबास समेत दफ़्न किया जाए। जब वोह मर गई तो उस के फ़रज़न्द ने उसे उ़म्दा कपड़ों का कफ़न पहनाया, रात को उस ने ख़्वाब में मां को देखा वोह कह रही थी, मैं तुझ से राज़ी नहीं हूं क्यूंकि तू ने मेरी वसिय्यत के ख़िलाफ़ किया है। वोह घबरा कर उठ बैठा, अपनी मां का वोह लिबास उठाया ताकि उसे भी क़ब्र में दफ़्न कर आए, उस ने जा कर मां की क़ब्र खोदी मगर उसे क़ब्र में कुछ न मिला, वोह बहुत ह़ैरान हुवा तब उस ने येह निदा सुनी कि क्या तुझे मा'लूम नहीं कि जिस ने रजब में हमारी इत़ाअ़त की, हम उसे तन्हा और अकेला नहीं छोड़ते।

रिवायत है कि जब रजब के अव्वलीन जुमुआ़ की एक तिहाई रात गुज़रती है तो कोई फ़िरिश्ता बाक़ी नहीं रहता मगर सब रजब के रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की दुआ़ करते हैं।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने माहे ह़राम (रजब) में तीन रोज़े रखे, उस के लिये नव सो साल की इ़बादत का सवाब लिखा जाता है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मेरे दोनों कान बहरे हों अगर मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह बात न सुनी हो।(3)

---

1 ......فردوس الاخبار، ۱/۴۱۵، الحدیث ۳۰۹۳

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इन में से चार हुरमत वाले हैं। (پ۱۰، التوبۃ: ۳۶)

3 ......اللآلیء المصنوعۃ للسیوطی، کتاب الصلاۃ، ۲/۴۷ ملتقطًا

नुक्ता

माहे ह़राम चार हैं, अफ़्ज़ल तरीन फ़िरिश्ते चार हैं, नाज़िल कर्दा किताबों में अफ़्ज़ल किताबें चार हैं, वुज़ू के आ'ज़ा चार हैं, अफ़्ज़ल तरीन कलिमाते तस्बीह़ चार हैं (या'नी سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر) हिसाब के अहम अरकान चार हैं : इकाइयां, दहाइयां, सेंकड़े और हज़ार, अवक़ात चार हैं : साअ़त, दिन, महीना और साल, साल के मोसिम चार हैं : सर्मा, गर्मा, बहार और ख़ज़ां, त़बाएअ़ चार हैं : ह़रारत, बरूदत, यबूसत और रत़ूबत, बदन के हुक्मरान चार हैं : सफ़रा, सौदा, ख़ून और बलग़म और ख़ुलफ़ाए राशिदीन भी चार हैं : ह़ज़रते अबू बक्र, ह़ज़रते उ़मर, ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते अ़ली (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

दैलमी ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से एक रिवायत नक़्ल की है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला चार रातों में ख़ैरो बरकत की बारिश करता है, ईदुल अज़्ह़ा की रात, ईदुल फ़ित्र की रात, पन्दरह शा'बान की रात और रजबुल मुरज्जब की पहली रात।(1)

दैलमी ने ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत भी नक़्ल की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पांच रातें ऐसी हैं जिन में कोई दुआ़ रद्द नहीं की जाती, रजब की पहली रात, पन्दरह शा'बान की रात, जुमुआ़ की रात और दो रातें ईदैन की।(2)

बाग़ या जहन्नम का गढ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ब्र को अक्सर याद करता है वोह मरने के बा'द अपनी क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाएगा और जो क़ब्र को भुला देगा, वोह अपनी क़ब्र को जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा पाएगा। (احیاء العلوم، ج٤، ص٢٣٨)

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، الباب الثامن... الخ، جامع الازمنه من الاكمال، ٦/١٤٤، الجزء الثانی عشر، الحديث ٣٥٢١٠ بذكر ليلة عرفة مكان اول ليلة من رجب

2 ......فردوس الاخبار، ١/٣٧٧، الحديث ٢٧٩٧

बाब 101

फ़ज़ाइले शा'बानुल मुबारक

शा'बान, शअ़ब से मुश्तक़ है जिस के मा'ना हैं घाटी वग़ैरा क्यूंकि इस माह में ख़ैरो बरकत का उ़मूमी वुरूद होता है इस लिये इसे शा'बान कहा जाता है, जिस त़रह़ घाटी पहाड़ का रास्ता होती है उसी त़रह़ येह महीना ख़ैरो बरकत की राह है।

ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि जब माहे शा'बान आ जाए तो अपने जिस्मों को पाकीज़ा रखो और इस माह में अपनी निय्यतें अच्छी रखो, इन्हें ह़सीन बनाओ।(1)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मा'मूल

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़े रखते यहां तक कि हम कहते अब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिग़ैर रोज़े के नहीं रहेंगे और फिर आप रोज़ा रखना छोड़ देते यहां तक कि हम कहते अब आप कभी रोज़े नहीं रखेंगे और आप शा'बान में अक्सर बहुत रोज़े रखा करते थे।(2)

निसाई की ह़दीस में ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि मैं ने आप को साल के किसी महीने में (रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़ों के सिवा) शा'बान से ज़ियादा रोज़े रखते नहीं देखा, आप ने फ़रमाया : लोग रजब और रमज़ान के इस दरमियानी महीने से ग़ाफ़िल होते हैं हालांकि येह ऐसा महीना है जिस में **अल्लाह** के हुज़ूर आ'माल लाए जाते हैं लिहाज़ा मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि जब मेरा अ़मल **अल्लाह** की बारगाह में लाया जाए तो मैं रोज़े से होऊं।(3)

---

1 ......

2 ......بخاری، کتاب الصوم، باب صوم شعبان، ١/٦٤٨، الحدیث ١٩٦٩

3 ......نسائی، کتاب الصیام، باب صوم النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم...الخ، ص٣٨٧، الحدیث ٢٣٥٤

सहीहैन में हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि मैं ने माहे रमज़ान के इलावा और किसी महीने के मुकम्मल रोज़े रखते हुवे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नहीं देखा और आप को शा'बान के इलावा किसी और महीने में बहुत ज़ियादा रोज़े रखते नहीं देखा।[(1)]

एक रिवायत में है कि आप शा'बान के पूरे रोज़े रखा करते थे।[(2)]

मुस्लिम की एक रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शा'बान के चन्द दिन छोड़ कर सारा माह रोज़े रखा करते थे।[(3)]

येह रिवायत पहली रिवायत की तफ़्सीर है, पूरे शा'बान से मुराद अक्सर शा'बान है।

कहा गया है कि आस्मान के फ़िरिश्तों के लिये दो रातें ईद और मसर्रत की हैं जैसे दुन्या में मुसलमानों के लिये दो ईद की रातें ईद व मसर्रत की हैं, फ़िरिश्तों की ईद रात, बराअत की रात या'नी पन्दरह शा'बान की रात और लैलतुल क़द्र हैं और मोमिनों की ईदें ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की रातें हैं, इसी लिये पन्दरह शा'बान की रात को फ़िरिश्तों की ईद रात का नाम दिया गया है।

अ़ल्लामा सुबकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस क़ौल की तफ़्सीर में कहा है कि येह रात साल भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती है, जुमा'रात हफ़्ते के गुनाहों का कफ़्फ़ारा और लैलतुल क़द्र उ़म्र भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है या'नी रातों में अल्लाह तआ़ला की इबादत करना और यादे इलाही में सारी रात जाग कर गुज़ार देना गुनाहों के कफ़्फ़ारे का सबब होता है इसी लिये इस रात को कफ़्फ़ारे की रात भी कहा जाता है और इसे ज़िन्दगी की रात भी कहा जाता है इस लिये कि मुन्ज़िरी ने मरफ़ूअ़न येह ह़दीस नक़्ल की है कि जिस ने दो ईद रातें और पन्दरह शा'बान की रात जाग कर गुज़ार दी तो ऐसे दिन में जब कि तमाम दिल मर जाएंगे, उस इन्सान का दिल नहीं मरेगा।[(4)]

इसे शफ़ाअ़त की रात भी कहते हैं क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है कि आप ने तेरहवीं की रात अल्लाह तआ़ला से अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त की दुआ़ मांगी, अल्लाह ने एक तिहाई उम्मत की शफ़ाअ़त मरह़मत फ़रमाई और आप ने चौदहवीं की रात फिर उम्मत की शफ़ाअ़त

---

1 ......بخاری، کتاب الصوم، باب صوم شعبان، ۱/۶۴۸، الحدیث ۱۹۶۹

2 ......بخاری، کتاب الصوم، باب صوم شعبان، ۱/۶۴۸، الحدیث ۱۹۷۰

3 ......مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم...الخ، ص۵۸۳، الحدیث ۱۷۶۔ (۱۱۵۶)

4 ......کنزالعمال، کتاب الصوم، الباب الاول...الخ، الفصل الثامن...۴/۲۵۱، الجزء الثامن، الحدیث ۲۴۱۰۲

की दुआ़ की तो **अल्लाह** तआ़ला ने दो तिहाई उम्मत की शफ़ाअ़त की इजाज़त मरह़मत फ़रमाई, फिर आप ने पन्द्रहवीं की रात अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त की तो **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम उम्मत की शफ़ाअ़त मन्ज़ूर फ़रमाई मगर वोह शख़्स जो रह़मते इलाही से ऊंट की त़रह़ दूर भाग गया और गुनाहों पर इसरार कर के ख़ुद ही दूर से दूर तर होता गया।(1) (इस शफ़ाअ़त से मह़रूम रहेगा)।

इसे बख़्शिश की रात भी कहते हैं। इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला पन्द्रह शा'बान की रात अपने बन्दों पर ज़ुहूर फ़रमाता है और दो शख़्सों के इ़लावा दुन्या में रहने वाले तमाम इन्सानों को बख़्श देता है, इन दो में से एक मुशरिक और दूसरा कीना परवर है।(2)

इसे आज़ादी की रात भी कहा जाता है जैसा कि इब्ने इस्ह़ाक़ ने ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत नक़्ल की है कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर किसी काम के लिये भेजा, मैं ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : जल्दी कीजिये मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस ह़ाल में छोड़ आया हूं कि आप पन्द्रह शा'बान की रात के सिलसिले में गुफ़्त्गू फ़रमा रहे थे।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अनस ! बैठ मैं तुझे शा'बान की पन्द्रहवीं रात की बात सुनाऊं, एक मरतबा येह रात मेरी बारी की रात थी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और मेरे साथ लिह़ाफ़ में लैट गए, रात को मैं बेदार हुई तो मैं ने आप को न पाया मैं ने अपने दिल में कहा शायद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी लौंडी क़िब्त़िय्या की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए हों, मैं अपने घर से बाहर निकली, जब मैं मस्जिद से गुज़री तो मेरा पाउं आप पर पड़ा, आप फ़रमा रहे थे कि "मेरे जिस्म और ख़याल ने तुझे सजदा किया, मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया और येह मेरा हाथ है, मैं ने इस हाथ से कभी अपने जिस्म को गुनाह से आलूदा नहीं किया ऐ रब्बे अ़ज़ीम ! तुझ से ही हर अ़ज़ीम काम की उम्मीद की जाती है, मेरे बड़े गुनाहों को बख़्श, मेरे इस चेहरे ने तुझे सजदा किया जिसे तू ने पैदा फ़रमाया, इसे सूरत बख़्शी, इस में कान और आंख पैदा की।"

---

1 ......

2 ......مسند احمد، مسند عبداللّٰه بن عمرو بن العاص، ۲/۵۸۹، الحديث ۶۶۵۳ بقاتل مكان مشرك

फिर आप ने सर उठा कर कहा : ऐ अल्लाह ! मुझे डरने वाला दिल अ़ता फ़रमा जो शिर्क से बरी और मुनज़्ज़ा हो, काफ़िर और बद बख़्त न हो, फिर आप सजदे में गिर गए और मैं ने सुना आप उस वक़्त फ़रमा रहे थे ऐ अल्लाह ! मैं तेरी रिज़ा के साथ तेरी नाराज़ी से पनाह चाहता हूं, तेरे अ़फ़्व के तुफ़ैल तेरे अ़ज़ाब से, और तेरे तुफ़ैल तेरी गिरिफ़्त से पनाह मांगता हूं, मैं तेरी मुकम्मल ता'रीफ़ नहीं कर सकता जैसा कि तू ने अपनी ता'रीफ़ की है, मैं वोही कुछ कहता हूं जो कुछ मेरे भाई दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : मैं अपना चेहरा अपने आक़ा के लिये ख़ाक आलूद करता हूं और मेरा आक़ा इस लाइक़ है कि उस के आगे चेहरा ख़ाक आलूद किया जाए।

फिर आप ने सर उठाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों आप यहां तशरीफ़ फ़रमा हैं और मैं वहां थी, आप ने फ़रमाया : ऐ हुमैरा ! क्या तुम नहीं जानती कि पन्दरह शा'बान की रात है, इस रात में अल्लाह तआ़ला बनू कल्ब के रेवड़ों के बालों के बराबर लोगों को आग से आज़ाद फ़रमाता है मगर छे आदमी इस रात भी महरूम रहते हैं, शराब ख़ोर, वालिदैन का ना फ़रमान, आ़दी ज़ानी, क़ातेए़ रेहूम, चंग व रबाब बजाने वाला और चुग़ल ख़ोर।[1]

एक रिवायत में रबाब बजाने वाले की जगह मसूर का लफ़्ज़ है।[2]

इसे क़िस्मत और तक़्दीर की रात का नाम भी दिया गया है क्यूंकि अ़ता बिन यसार से मरवी है कि

जब शा'बान की पन्दरहवीं शब आती है तो मलकुल मौत को हर उस शख़्स का नाम लिखवा दिया जाता है जो इस शा'बान से आयिन्दा शा'बान तक मरने वाला होता है, आदमी पौदे लगाता है, औ़रतों से निकाह़ करता है, इ़मारतें बनाता है ह़ालांकि उस का नाम मुर्दों में होता है और मलकुल मौत इस इन्तिज़ार में होता है कि उसे कब हुक्म मिले और वोह उस की रूह़ क़ब्ज़ करे।[3]

---

1 ...... شعب الايمان، الباب الثالث و العشرون، باب فی الصيام، ماجاء فی ليلة النصف من شعبان، ٣٨٥/٣، الحديث ٣٨٣٨ مختصرا و العلل المتناهية، حديث فی صوم شعبان، ٥٥٨/٢، الحديث ٩١٨ دون مضرب

2 ......العلل المتناهية، حديث فی صوم شعبان، ٥٥٨/٢، الحديث ٩١٨

3 ......لطائف المعارف لابن رجب، المجلس الثانی فی نصف شعبان، ١٤٠/١ و الدر المنثور، سورة الدخان، تحت آية :٤، ٤٠٢/٧ و كنزالعمال، كتاب الفضائل، باب فضل الازمنة الشتاء، ٧٩/٧، الجزء الرابع عشر، الحديث ٣٨٢٨٩ ، ٣٨٢٩٠

बाब 102

फ़ज़ाइले रमज़ानुल मुअज़्ज़म

इरशादे खुदावन्दी है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ (1)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं जैसे तुम से पहले वाले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे।

हज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि हम से पहले वाले लोगों पर इशा से ले कर दूसरी रात के आने तक रोज़ा होता था जैसा कि इब्तिदाए इस्लाम में भी येही दस्तूर था।

अहले इल्म की एक जमाअ़त का क़ौल है कि नसारा पर इसी त़रह़ रोज़ा फ़र्ज़ किया गया था, कभी तो रोज़ों का महीना शदीद गर्मी और कभी सख़्त सर्दी में आ जाता जिस की वज्ह से इन्हें सफ़र और अपने कारोबार में सख़्त दुश्वारी पेश आती चुनान्चे, इन के बड़े इकठ्ठे हुवे और बाहम मिल कर येह तै किया गया कि रोज़े सर्दियों और गर्मियों के इलावा साल के किसी और मोसिम में रखे जाएं चुनान्चे, इन्हों ने रोज़ों के लिये बहार का मोसिम मुक़र्रर किया और अपने इस हेर फेर के कफ़्फ़ारे के तौर पर दस रोज़ों का इज़ाफ़ा कर दिया।

फिर इन का एक बादशाह बीमार पड़ गया, उस ने नज़्र मानी कि अगर वोह इस बीमारी से तन्दुरुस्त हो गया तो एक हफ़्ते के रोज़ों का इज़ाफ़ा करेगा चुनान्चे, जूंही वोह तन्दुरुस्त हुवा उस ने लोगों के लिये एक हफ़्ते के रोज़े बढ़ा दिये।

जब येह बादशाह मरा और दूसरा बादशाह इन का हुक्मरान बना तो उस ने लोगों को हुक्म दिया कि तुम पूरे पचास रोज़े पूरे करो, फिर इन्हें दो मौतें पहुंचीं और वोह जानवरों की मौत थी तो उस बादशाह ने कहा अपने रोज़ों को ज़ियादा करो चुनान्चे, दस रोज़े इन रोज़ों से पहले और दस बा'द में बढ़ा दिये गए।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुवे थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। (پ۲، البقرۃ:۱۸۳)

नीज़ कहा गया कि कोई उम्मत ऐसी नहीं मगर **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये थे मगर वोह इस से बरगश्ता हो गए।

बग़वी का क़ौल है और सह़ीह़ भी येही है कि रमज़ान, महीने का नाम है और येह रमज़ा से मुश्तक़ है जिस के मा'ना गर्म पथ्थर के हैं क्यूंकि वोह शदीद गर्मी के मोसिम में रोज़े रखा करते थे। अ़रब क़बीलों ने जब महीनों के नाम रखना चाहे तो इन अय्याम में येह महीना इन्तिहाई गर्मी के मोसिम में आया चुनान्चे, इस का नाम रमज़ान रखा गया। कुछ ह़ज़रात का कहना है कि इस माह को रमज़ान इस लिये कहते हैं कि येह माहे मुक़द्दस गुनाहों को जला देता है।

फ़र्ज़िय्यते रोज़ा

रोज़े हिजरत के दूसरे साल फ़र्ज़ किये गए, येह दीन का एक अहम रुक्न है, इस के वुजूब के मुन्किर की तक्फ़ीर की जाएगी, अह़ादीसे मुक़द्दसा में इस माह के बहुत से फ़ज़ाइल मन्क़ूल हैं जिन में से एक ह़दीस येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात आती है तो जन्नत के तमाम दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और पूरा माहे रमज़ान इन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और **अल्लाह** तआ़ला पुकारने वाले को हुक्म देता है जो निदा करता है कि ऐ नेकी के त़लब करने वाले ! मुतवज्जेह हो और ऐ गुनाहों के त़लबगार रुक जा।(1)

फिर वोह कहता है : कोई बख़्शिश त़लब करने वाला है जिसे बख़्श दिया जाए ? कोई साइल है जिसे अ़त़ा किया जाए ? कोई तौबा करने वाला है जिस की तौबा क़बूल की जाए ? और सुब्ह़ होने तक येह निदा होती रहती है और **अल्लाह** तआ़ला हर ईदुल फ़ित्र की रात दस लाख ऐसे बन्दों को बख़्शता है जिन पर अ़ज़ाब वाजिब हो चुका होता है।(2)

ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें शा'बान के आख़िरी दिन ख़ुत़बा दिया और फ़रमाया :

ऐ लोगो ! तुम पर एक अ़ज़ीम महीना साया फ़िगन है जिस में लैलतुल क़द्र है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, **अल्लाह** तआ़ला ने इस के रोज़ों को फ़र्ज़ और इस की रातों में इ़बादत को

---

1 ......ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ماجاء في فضل شهر رمضان، ٢/٢٩٦، الحديث ١٦٤٢

2 ......شعب الايمان، الباب الثالث والعشرون من شعب الايمان...الخ ، التماس ليلة القدر في الوتر من العشر الاواخر...الخ، ٣/٣٣٥، الحديث ٣٦٩٥ بالتقديم والتاخير

सुन्नत क़रार दिया है, जो शख़्स इस माह में किसी नेकी से कुर्ब हासिल करता है उसे दीगर महीनों में फ़र्ज़ की अदाएगी का सवाब मिलता है और जिस ने फ़र्ज़ अदा किया वोह ऐसे है जैसे उस ने दूसरे महीनों में सत्तर फ़राइज़ अदा किये।

येह सब्र का महीना है और सब्र का अज्र जन्नत है, येह भाईचारे और हमदर्दी का महीना है, येह ऐसा महीना है कि जिस में मोमिन का रिज़्क़ ज़ियादा होता है, जिस शख़्स ने इस महीने में किसी रोज़ादार का रोज़ा इफ़्तार कराया उसे गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

हम ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم) हम में से हर शख़्स ऐसी चीज़ नहीं पाता जिस से वोह रोज़ादार का रोज़ा इफ़्तार कराए, आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला येह सवाब हर उस शख़्स को अता करता है जो किसी रोज़ादार का रोज़ा दूध के घूंट या पानी के घूंट या खजूर से इफ़्तार कराता है और जिस ने किसी रोज़ादार को सैर किया तो येह उस के गुनाहों की बख़्शिश होगी और **अल्लाह** तआला उसे मेरे हौज़ से ऐसा सैराब करेगा कि वोह इस के बा'द कभी प्यासा न होगा और उसे भी रोज़ादार के बराबर अज्र मिलेगा लेकिन रोज़ादार के अज्र से कुछ कम नहीं किया जाएगा और येह वोह महीना है जिस का अव्वल रहमत, दरमियान मग़फ़िरत और आख़िर जहन्नम से आज़ादी है।

जिस ने इस महीने में अपने ख़ादिम से तख़फ़ीफ़ की, **अल्लाह** तआला उसे जहन्नम से आज़ादी देगा। इस में चार काम बहुत ज़ियादा करो, दो कामों से तुम अपने रब को राज़ी करोगे और दो कामों से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं है, वोह दो काम जिन से तुम अपने रब को राज़ी करोगे वोह لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की शहादत और इस्तिग़फ़ार करना है और वोह दो काम जिन से तुम्हारे लिये मफ़र नहीं है वोह अपने रब से जन्नत का सुवाल और जहन्नम से पनाह मांगना है।(1)

इन अहादीसे फ़ज़ाइल में से एक हदीस येह भी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने ईमान और तलबे सवाब के लिये माहे रमज़ान के रोज़े रखे उस के अगले पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(2)

---

1 ......صحیح ابن خزیمہ، کتاب الصیام، باب فضائل شهر رمضان ، ۳/۱۹۱، الحدیث ۱۸۸۷ و شعب الایمان، الباب الثالث و العشرون ، باب فی الصیام، ما جاء فی لیلة النصف من شعبان، ۳/۳۰۵، الحدیث ۳۶۰۸

2 ......مسند احمد، مسند ابی هریرة، ۳/۳۳۳، الحدیث ۹۰۱۱

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रब तआ़ला फ़रमाता है कि इन्सान का हर अ़मल उसी के लिये है सिवाए रोज़े के पस तह़क़ीक़ रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा हूं और तुझे ऐसी इ़बादत काफ़ी है जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ात से मन्सूब किया है।[1]

रोज़ादार के मुंह की बू मुश्क से बरतर है

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि माहे रमज़ान में मेरी उम्मत को पांच चीज़ें दी गई हैं जो इस से पहले किसी उम्मत को नहीं दी गईं, रोज़ादार के मुंह की बू[2] अल्लाह के हां मुश्क से ज़ियादा उ़म्दा है, उन के इफ़्तार तक फ़िरिश्ते उन के लिये बख़्शिश त़लब करते हैं, कि इस माह में सरकश शैत़ान क़ैद कर दिये जाते हैं, अल्लाह तआ़ला हर दिन जन्नत को संवारता है और इरशाद फ़रमाता है कि अ़न क़रीब मेरे नेक बन्दे इस में दाख़िल होंगे, उन से तक्लीफ़ और अज़िय्यत दूर कर दी जाएगी।

और इस महीने की आख़िरी रात में उन्हें बख़्शा जाता है। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) क्या इस से मुराद लैलतुल क़द्र है ? आप ने फ़रमाया : नहीं ! लेकिन काम करने वाला काम पूरा कर के अपना अज्र पाता है।[3]

76 हज़ार नेकियां

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : जो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ेगा अल्लाह तबारक व तआ़ला हर ह़र्फ़ के बदले उस के नामए आ'माल में चार हज़ार नेकियां दर्ज फ़रमाएगा, चार हज़ार गुनाह बख़्श देगा और चार हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा। (فردوس الاخبار، ۲۶/۴، الحدیث ۵۵۷۳)

1 ......بخاری، کتاب الصوم، باب ھل یقول انی...الخ، ۶۲۸/۱، الحدیث ۱۹۰۴

2 .....इस से येह मत़लब हरगिज़ न लिया जाए कि मुंह और दांत साफ़ करने से सुस्ती बरती जाए बल्कि रमज़ान में मिस्वाक करना दीगर अय्याम से दस गुना ज़ियादा सवाब का मूजिब है।

3 ......مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۱۴۴/۳، الحدیث ۷۹۲۲ بالتقدیم و التاخیر

बाब 103

फ़ज़ाइले लैलतुल क़द्र

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में बनी इस्राईल के ऐसे शख़्स का तज़्किरा किया गया जिस ने हज़ार माह राहे खुदा में अपने कन्धे पर हथयार उठाए थे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर इज़्हारे तअ़ज्जुब फ़रमाया और अपनी उम्मत के लिये ऐसी नेकी की तमन्ना फ़रमाई और कहा : ऐ रब ! तू ने मेरी उम्मत को सब उम्मतों से कम उम्र वाला बनाया और आ'माल में सब उम्मतों से कम किया है, तब अल्लाह तआ़ला ने आप को लैलतुल क़द्र अ़ता फ़रमाई जो हज़ार महीनों की इबादत से अफ़्ज़ल है, जितनी मुद्दत बनी इस्राईल के उस आदमी ने राहे खुदा में हथयार उठाए थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को और आप की उम्मत को इस तवील मुद्दत के मुक़ाबले में एक रात बख़्शी गई येह ने'मते उ़ज़्मा (लैलतुल क़द्र) इस उम्मत के ख़साइस में से है ।(1)

एक रिवायत में है कि उस शख़्स का नाम शमऊ़न था, उस ने कामिल एक हज़ार माह दुश्मनों से जिहाद किया और कभी भी उस के घोड़े का नम्दा(2) (पसीने से) ख़ुश्क न हुवा, उसे अल्लाह तआ़ला ने जो क़ुव्वत और दिलेरी अ़ता फ़रमाई थी उस के बल बूते पर उस ने दुश्मनों को मग़्लूब किया ता आंकि उन के दिल बहुत तंग हुवे और उन्हों ने उस की औ़रत की त़रफ़ एक क़ासिद भेजा और वोह इस बात के ज़ामिन हुवे कि वोह औ़रत को सोने का भरा हुवा थाल पेश करेंगे, अगर वोह अपने शोहर को क़ैद कर ले ताकि वोह उस मर्दे मुजाहिद को अपने तय्यार कर्दा मकान में क़ैद कर दें और सब लोग राहत व सुकून पाएं चुनान्चे, जब वोह सो गया तो औ़रत ने उसे खजूर के छाल से बटे हुवे मज़बूत रस्सों से बांध दिया, जब वोह बेदार हुवा तो उस ने अपने जिस्म को हरकत दी जिस से उस ने रस्सियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और औ़रत से पूछा : तू ने ऐसा क्यूं किया ? औ़रत बोली : मैं तुम्हारी क़ुव्वत का अन्दाज़ा लगाना चाहती थी । जब काफ़िरों को इस की ख़बर मिली तो उन्हों ने औ़रत की त़रफ़ एक मोटी ज़न्जीर भेजी, औ़रत ने उसे फिर बांध दिया और उस मर्दे मुजाहिद ने पहले की त़रह उसे भी तोड़ दिया । तब इब्लीस काफ़िरों के पास आया और उन्हें येह बात समझाई कि वोह औ़रत से कहें कि वोह मर्द ही से पूछे कि कौन सी चीज़ ऐसी है

---

1 ......تفسیر بغوی، سورۃ القدر، تحت الآیۃ: ٣، ٤/٤٧٩

2 .....वोह ऊनी कपड़ा जो घोड़े पर ज़ीन के नीचे रखते हैं । इ़ल्मिय्या

जिस के तोड़ने की वोह ताक़त नहीं रखता, चुनान्चे, उन्हों ने औ़रत की त़रफ़ आदमी भेजा और उसे येही कहला भेजा चुनान्चे, औ़रत ने उस से सुवाल किया तो उस मर्दे मुजाहिद ने कहा : मेरे गेसू, उस के अठ्ठारह त़वील गैसू थे जो ज़मीन पर घिसटते रहते थे। जब वोह सो गया तो औ़रत ने चार गैसूओं से उस के पाउं और चार से उस के हाथ बांध दिये, फिर काफ़िर आ गए और उन्हों ने उसे पकड़ लिया और उसे अपनी क़ुरबानगाह की त़रफ़ ले गए, वोह चार सो हाथ बुलन्द थी मगर इतनी बुलन्दी और फ़राख़ी के बा वुजूद उस में सिर्फ़ एक सुतून था, काफ़िरों ने उस के कान और होंट काट दिये और वोह तमाम वहीं जम्अ़ थे, तब उस मर्दे मुजाहिद ने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि उसे उन बन्धनों को तोड़ने की क़ुव्वत बख़्शे और उन काफ़िरों पर येह सुतून मअ़ सक़्फ़ के गिरा दे और उसे उन के चुंगुल से नजात दे चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने उसे क़ुव्वत बख़्शी वोह हिला तो उस के तमाम बन्धन टूट गए, तब उस ने सुतून को हिलाया जिस की वज्ह से छत काफ़िरों पर आ गिरी और अल्लाह तआ़ला ने उन सब को हलाक कर दिया और उसे नजात बख़्शी।[1]

जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने येह बात सुनी तो उन्हों ने कहा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم) क्या हम भी उस जैसा सवाब पा सकते हैं ? आप ने फ़रमाया : मुझे इस का इ़ल्म नहीं, फिर आप ने अपने रब से सुवाल किया तो अल्लाह तआ़ला ने आप को लैलतुल क़द्र अ़त़ा की जैसा कि पहले मज़्कूर हुवा है।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब लैलतुल क़द्र आती है तो जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त के साथ नाज़िल होते हैं और हर उस बन्दे पर रह़मत भेजते हैं और बख़्शिश की दुआ़ करते हैं जो खड़े हो कर या बैठ कर अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल व मसरूफ़ होता है।[2]

लैलतुल क़द्र में बे शुमार रह़मतों का नुज़ूल

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि लैलतुल क़द्र में ज़मीन पर बे शुमार फ़िरिश्ते उतरते हैं[3] और उन के उतरने के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।

1 ......تاریخ الطبری، ارسال اللّٰه رسله الثلاثة ، ۲۲/۲

2 ......شعب الایمان، الباب الثالث والعشرون...الخ ، فی لیلة العید و یومهما، ۳۴۳/۳، الحدیث ۳۷۱۷

3 ......مسند البزار، ۲۶۱/۱۶، الحدیث ۹۴۴۷

जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा है, तब अन्वार चमकते हैं, अ़ज़ीम तजल्ली होती है जिस में मुल्के अ़ज़ीम मुन्कशिफ़ हो जाता है, लोग इस में मुख़्तलिफ़ दरजात पर फ़ाइज़ होते हैं, बा'ज़ ऐसे होते हैं जिन पर ज़मीनो आस्मान के मलकूत मुन्कशिफ़ होते हैं और जब उन पर आस्मानों के मलकूत मुन्कशिफ़ होते हैं तो वोह आस्मानों में फ़िरिश्तों को उन सूरतों में देखते हैं जिन में वोह मश्ग़ूले इबादत होते हैं, बा'ज़ क़ियाम में, बा'ज़ कुऊ़द में, बा'ज़ रुकूअ़ में, बा'ज़ ज़िक्र में, बा'ज़ शुक्र में और बा'ज़ तस्बीह़ व तहलील में मसरूफ़ हैं।

बा'ज़ लोगों पर जन्नत के अह़वाल मुन्कशिफ़ होते हैं और वोह जन्नत के मह़ल्लात, घर, हूरें, नहरें, दरख़्त और जन्नत के फल वग़ैरा देखते हैं और अ़र्शे आ'ज़म का नज़्ज़ारा करते हैं जो कि जन्नत की छत है, अम्बिया, औलिया, शुहदा और सिद्दीक़ीन के मक़ामात देखते हैं। बा'ज़ ऐसे लोग भी होते हैं जिन की आंखों से ह़िजाब उठ जाते हैं और वोह रब्बे ज़ुल जलाल के जमाल के इ़लावा और कुछ नहीं देख पाते।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने माहे रमज़ान की सत्ताईसवीं शब, सुब्ह़ होने तक इ़बादत में गुज़ारी वोह मुझे रमज़ान की तमाम रातों की इ़बादत से ज़ियादा पसन्द है। ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : ऐ अब्बाजान ! वोह ज़ईफ़ मर्द और औ़रतें क्या करें जो क़ियाम पर क़ुदरत नहीं रखते, आप ने फ़रमाया : क्या वोह तक्ये नहीं रख सकते जिन का सहारा लें और इस रात के लम्ह़ात में से कुछ लम्ह़ात बैठ कर गुज़ारें और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगें मगर येह बात अपनी उम्मत के तमाम माहे रमज़ान को क़ियाम में गुज़ारने से ज़ियादा मह़बूब है।(1)

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने लैलतुल क़द्र बेदार हो कर गुज़ारी और इस में दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश त़लब की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उसे बख़्श दिया, उसे अपनी रह़मत में जगह देता है और जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने उस पर अपने पर फेरे और जिस पर जिब्रील ने अपने पर फेरे वोह जन्नत में दाख़िल हुवा।(2)

❁…❁…❁…❁…❁

---

1 .....
2 .....

बाब 104

फ़ज़ाइले ईदुल फ़ित्र

ईद नाम है माहे शव्वाल के पहले दिन और ज़िल हिज्जा के दसवें दिन का, इन दोनों को ईद इस लिये कहते हैं कि इस में लोग इताअ़ते इलाही या'नी माहे रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़े और हज से फ़ारिग़ हुवे और इताअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ लौट आए या'नी इन्हों ने शव्वाल के छे रोज़े रखे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तय्यारी की, या इन्हें ईद इस लिये कहा जाता है कि येह दिन हर साल लौट आते हैं, या इस लिये कि इस में **अल्लाह** तआ़ला बार बार फ़ज़्लो करम करता है, या इस लिये कि इन के आने से खुशियां लौट आती हैं, बहर ह़ाल तमाम तौजीहात में औ़द का मा'ना पाया जाता है।

पहली नमाज़े ईद

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहली नमाज़े ईद सिने 2 हिजरी में नमाज़े ईदुल फ़ित्र अदा की और फिर इसे कभी तर्क नहीं फ़रमाया[1] लिहाज़ा येह सुन्नते मुअक्कदा है।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अपनी ईदों को तक्बीरों से ज़ीनत बख़्शो।[2]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने ईद के दिन तीन सो मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ा और मुसलमान मुर्दों की रूहों को इस का सवाब हदिय्या किया तो हर मुसलमान की क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल होते हैं और जब वोह मरेगा **अल्लाह** तआ़ला उस की क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल फ़रमाएगा।[3]

हज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का कहना है कि शैत़ान हर ईद पर नौहा व ज़ारी करता है और तमाम शैत़ान उस के इर्द गिर्द जम्अ़ हो कर पूछते हैं : ऐ आक़ा ! आप क्यूं ग़ज़बनाक और उदास हैं ? वोह कहता है : **अल्लाह** तआ़ला ने आज के दिन उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श दिया है लिहाज़ा तुम उन्हें लज़्ज़तों और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी में मश्ग़ूल करो।

---

1 ......التلخيص الحبير فی تخريج أحاديث الرافعی الكبير للعسقلانی، كتاب صلاة العيدين، ٢/١٨٩

2 ......المعجم الاوسط، ٣/٢١٥، الحديث ٤٣٧٣

3 ......نزهة المجالس ومنتخب النفائس، باب فضل عرفة و العيدين و التكبير و الأضحية، ١/٢٢٩

हज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رضی اللہ تعالٰی عنہ से येह भी मरवी है कि **अल्लाह** तआला ने ईदुल फ़ित्र के दिन जन्नत को पैदा फ़रमाया और दरख़्त तूबा ईदुल फ़ित्र के दिन बोया, जिब्रील का वह्य के लिये ईदुल फ़ित्र के दिन इन्तिख़ाब किया और फ़िरऔन के जादूगरों की तौबा भी **अल्लाह** तआला ने ईदुल फ़ित्र के दिन क़बूल फ़रमाई।

फ़रमाने नबवी है कि जिस ने ईद की रात तलबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा जिस दिन तमाम दिल मर जाएंगे।(1)

हिकायत

हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ईद के दिन अपने बेटे को पुरानी क़मीस पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने कहा : अब्बाजान ! आप किस लिये रोते हैं ? आप ने फ़रमाया : ऐ बेटे ! मुझे अन्देशा है कि आज ईद के दिन जब लड़के तुझे इस फटे पुराने क़मीस में देखेंगे तो तेरा दिल टूट जाएगा, बेटे ने जवाब दिया : दिल तो उस का टूटे जो रज़ाए इलाही को न पा सका या उस ने मां या बाप की ना फ़रमानी की हो और मुझे उम्मीद है कि आप की रज़ामन्दी के तुफ़ैल **अल्लाह** तआला भी मुझ से राज़ी होगा। येह सुन कर हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ रो पड़े, बेटे को गले लगाया और उस के लिये दुआ की।

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

قالوا غدا العيد ماذا انت لابسه　　قلت خلعة ساق عبده الجرعا

فقر وصبر ثوبان بينهما　　قلب يرى ربه الاعياد والجمعا

العيد لي مأتما ان غبت يا املي　　والعيد ان كنت لي مرأى و مستمعا

﴾1﴿......उन्हों ने कहा : कल ईद है तुम क्या पहनोगे ? मैं ने कहा ऐसी पोशाक जिस ने बन्दे को रफ़्ता रफ़्ता बहुत कुछ दिया।

﴾2﴿......फ़क्र और सब्र दो कपड़े हैं और इन के दरमियान दिल है जिस को इस का मालिक ईदों और जुमुओं में देखता है।

﴾3﴿......तब मेरी ईद नहीं होगी, ऐ उम्मीद अगर तू मुझ से गाइब हो जाए और अगर तू मेरे सामने और कानों के क़रीब हुई तो फिर मेरी ईद है।

---

(1)...... معرفة السنن والآثار للبيهقي، كتاب صلاة العيد ين، باب عبادة ليلة العيدين، ٦٧/٣، الحديث١٩٥٨

येह बात भी वारिद है कि जब ईद की सुब्ह होती है तो अल्लाह तआला फ़िरिश्तों को भेजता है जो ज़मीन पर उतरते हैं और वोह गली कूचों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और बुलन्द आवाज़ से कहते हैं जिसे जिन्न व इन्सान के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है, वोह कहते हैं : ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत ! अपने रब्बे करीम की तरफ़ आओ, वोह तुम्हें अ़ताए अ़ज़ीम देगा और तुम्हारे बहुत बड़े गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा और जब लोग ईदगाहों में आ जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : मज़दूरी का बदला क्या है जब वोह अपना काम मुकम्मल कर ले ? फ़िरिश्ते कहते हैं : उस का बदला येह है कि उसे पूरा अज्र दिया जाए, तब अल्लाह तआला फ़रमाता है : मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं, मैं ने उन लोगों के लिये अपनी बख़्शिश और रिज़ा को उन का अज्र बनाया है।[1]

इयादत का अ़ज़ीमुश्शान सवाब

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अपने किसी मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाइका के ज़रीए़ साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोत़ाज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक ह़ज और एक उ़मरे का सवाब लिखता है और जिस ने मरीज़ की इयादत की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाइका के ज़रीए़ साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी।" (الترغيب والترهيب، ١٦٥/٤ ، الحديث ١٣)

1 ......اخبار مكه، ذكر صوم شهر رمضان بمكة، ١/٣١٦، الجزء الثانى، الحديث ١٥٧٥

फ़ज़ाइले अशरए ज़िल हिज्जा

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : और अय्याम ऐसे नहीं हैं जिन में अ़मल **अल्लाह** तआ़ला को इन दिनों या'नी ज़िल हिज्जा के दस दिनों के अ़मल से ज़ियादा पसन्द हो। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : क्या राहे खुदा में जिहाद भी ऐसा नहीं ? आप ने फ़रमाया : हां ! राहे खुदा में जिहाद भी मगर येह कि आदमी अपना मालो जान ले कर राहे खुदा में निकला और इन में से कुछ भी सलामत न लाया।[1]

हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला को इन अय्याम से ज़ियादा महबूब और कोई दिन नहीं है और इन दस दिनों से अफ़्ज़ल **अल्लाह** तआ़ला के हां कोई दिन नहीं है, कहा गया कि राहे खुदा में जिहाद के दिन भी ऐसे नहीं हैं ? आप ने फ़रमाया कि राहे खुदा में जिहाद के दिन भी इन जैसे नहीं मगर जिस शख़्स ने राहे खुदा में अपने घोड़े को ज़ख़्मी कर दिया और खुद भी ज़ख़्मी हुवा।[2]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक जवान जो अहादीसे रसूल को सुना करता था, जब ज़िल हिज्जा का चांद नज़र आया तो उस ने रोज़ा रख लिया, जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह ख़बर मिली तो आप ने उसे बुलाया और पूछा : तुझे किस ने इस बात पर आमादा किया कि तू ने रोज़ा रख लिया ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْکَ وَسَلَّم) मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, येह हज व कुरबानी के दिन हैं, शायद कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे भी इन की दुआ़ओं में शामिल फ़रमा ले। आप ने फ़रमाया : तेरे हर दिन के रोज़े का अज्र सो गुलाम आज़ाद करने के बराबर, सो ऊंटों की कुरबानियों और राहे खुदा में दिये गए सो घोड़ों के अज्र के बराबर है। जब आठवीं ज़िल हिज्जा का दिन होगा तो तुझे उस दिन के रोज़े का सवाब हज़ार गुलाम आज़ाद करने, हज़ार ऊंट की कुरबानी करने और राहे खुदा में सुवारी के लिये हज़ार घोड़े देने के बराबर हासिल होगा। जब नवीं का दिन होगा तो तुझे उस दिन के रोज़े का सवाब दो हज़ार गुलाम आज़ाद करने,

---

1 ......صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، باب فضل العمل فی عشر ذی الحجۃ، ٤/٢٧٣، الحدیث ٢٨٦٥

2 ......شعب الایمان، الباب الثالث والعشرون من شعب الإیمان، باب فی الصیام، تخصیص ایام العشر من ذی الحجۃ...الخ، ٣/٣٥٣، الحدیث ٣٧٤٩ و کنز العمال، الباب الثامن فی فضائل الامکنۃ والأزمنۃ، ٦/١٤٢، الجز الثانی عشر، الحدیث ٣٥١٨٦

दो हज़ार ऊंटों की कुरबानी और राहे ख़ुदा में सुवारी के लिये दिये गए दो हज़ार घोड़ों के अज्र के बराबर होगा ।[1]

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि नवीं ज़िल हिज्जा का रोज़ा दो साल के रोज़ों के बराबर और आ़शूरे का रोज़ा एक साल के रोज़े के बराबर है ।[2]

मुफ़स्सिरीने किराम इस फ़रमाने इलाही :

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ (3) *और हम ने मूसा को तीस रातों का वा'दा दिया और उस को दस से पूरा किया ।*

की तफ़्सीर में लिखते हैं कि इन दस रातों से मुराद ज़िल हिज्जा की पहली दस रातें हैं ।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने दिनों में से चार दिन, महीनों में से चार महीने, औ़रतों में से चार औ़रतें पसन्द फ़रमाई हैं, चार आदमी जन्नत में सब से पहले जाएंगे और चार आदमियों की जन्नत मुश्ताक़ है, दिनों में से पहला जुमुआ़ का दिन है, इस में ऐसी साअ़त है कि जब कोई बन्दा इस साअ़त में अल्लाह तआ़ला से दुन्या या आख़िरत की किसी ने'मत का सुवाल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे अ़ता फ़रमाता है । दूसरा नवीं ज़िल हिज्जा (अ़रफ़ा) का दिन है, जब अ़रफ़ा का दिन होता है तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों में फ़ख़्र करता है और फ़रमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दों को देखो जो बिखरे बाल, ग़ुबार आलूद चेहरे लिये माल ख़र्च कर के और जिस्मों को मशक़्क़त में डाल कर हाज़िर हुवे हैं, तुम गवाह हो जाओ मैं ने उन्हें बख़्श दिया है । तीसरा कुरबानी का दिन है । जब कुरबानी का दिन होता है और बन्दा कुरबानी से कुर्बे इलाही त़लब करता है तो जूंही कुरबानी के ख़ून का पहला क़त़रा ज़मीन पर गिरता है वोह बन्दे के हर गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है । चौथा ईदुल फ़ित्र का दिन है, जब बन्दे माहे रमज़ान के रोज़े रख लेते हैं और ईद की नमाज़ पढ़ने बाहर निकलते हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है कि हर काम करने वाला उजरत त़लब करता है, मेरे बन्दों ने महीने भर रोज़े रखे और अब ईद के लिये आए हैं और अपना अज्र त़लब कर रहे हैं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने उन्हें बख़्श दिया है, और पुकारने वाला पुकार कर कहता है : ऐ उम्मते मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम लौट जाओ, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी बुराइयों को नेकियों में बदल दिया है ।

---

1 ......اللآلیء المصنوعة للسيوطی، كتاب الصلاة، ٢/ ٧١

2 ......مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابی قتادة الانصاری، ٨/ ٣٨١، الحديث ٢٢٦٧٩

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फ़रमाया और इन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं । (پ٩، الاعراف:١٤٢)

चार पसन्दीदा महीने

चार पसन्दीदा महीने येह हैं : रजबुल मुरज्जब, ज़ी क़ा'दा, ज़िल हिज्जा और मुहर्रमुल ह़राम। औ़रतें येह हैं : मरयम बिन्ते इमरान, ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (जो जहान की औ़रतों में सब से पहले अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाईं) फ़िरऔ़न की बीवी आसिया बिन्ते मुज़ाहिम और जन्नती औ़रतों की सरदार फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद। (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ورَضِىَ اللّٰه عَنهُنَّ)

सब से सबक़त ले जाने वाले

हर क़ौम में से एक सबक़त ले जाने वाला है, अ़रब में से सबक़त ले जाने वाले हमारे आक़ा व मौला मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, फ़ारिस से ह़ज़रते सलमान, रूम से ह़ज़रते सुहैब और ह़बशा से ह़ज़रते बिलाल (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) हैं।

और वोह चार जन्नत जिन की मुश्ताक़ है येह ह़ज़रते अ़ली बिन अबी ता़लिब, ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी, ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर और ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है : आप ने फ़रमाया कि जिस ने यौमुत्तरविय्या (आठवीं ज़िल हिज्जा) का रोज़ा रखा, अल्लाह तआ़ला उसे ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के मसाइब पर सब्र करने के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाता है और जिस ने यौमे अ़रफ़ा (ज़िल हिज्जा की नवीं) का रोज़ा रखा, अल्लाह तआ़ला उसे ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बराबर सवाब अ़ता फ़रमाता है।[1]

आप से येह भी मरवी है कि जब अ़रफ़ा का दिन होता है तो अल्लाह तआ़ला अपनी रह़मत को फैलाता है, इस दिन से ज़ियादा किसी दिन में भी लोग आग से आज़ाद नहीं हुवे और जिस ने अ़रफ़ा के दिन अल्लाह तआ़ला से दुन्या या आख़िरत की ह़ाजत त़लब की तो अल्लाह तआ़ला उस की ह़ाजत पूरी कर देता है[2] और अ़रफ़ा के दिन का रोज़ा एक साल गुज़श्ता और एक साल आयिन्दा के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है और इस में येह ह़िक्मत है وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم कि येह दिन दो ईदों के दरमियान है और ईदैन मोमिनों के लिये मसर्रत के दिन होते हैं और इस से बढ़ कर कोई मसर्रत नहीं कि उन लोगों के गुनाह बख़्श दिये जाएं।[3]

आ़शूरे का दिन ईदैन के बा'द होता है लिहाज़ा इस का रोज़ा एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, दूसरी वज्ह येह है कि यौमे आ़शूरा मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये था और यौमे अ़रफ़ा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये है और आप की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से अरफ़अ़ व आ'ला है।

---

1 ......تذكرة الموضوعات للفتنى ، ص١١٩

2 ......نزهة المجالس و منتخب النفائس، باب فضل عرفة والعيدين والتكبير و الأضحية، ١/٢٢٤

3 ......مسلم، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايّام، ص ٥٩٠، الحديث ١٩٧ ـ (١١٦٢)

बाब 106

फ़ज़ीलते आशूरा

हज़रते इब्ने अब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ने यहूद को आशूरा के दिन का रोज़ा रखते देख कर पूछा कि तुम इस दिन रोज़ा क्यूं रखते हो ? उन्हों ने कहा : येह ऐसा दिन है जिस में **अल्लाह** तआला ने मूसा عَلَیْہِ السَّلَام और बनी इस्राईल को फ़िरऔन और उन की क़ौम पर ग़लबा अता फ़रमाया था लिहाज़ा हम ता'ज़ीमन इस दिन का रोज़ा रखते हैं, इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हम मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से तुम्हारी निस्बत ज़ियादा क़रीब हैं चुनान्चे, आप ने भी इस दिन का रोज़ा रखने का हुक्म दिया।(1)

ख़ुसूसिय्याते यौमे आशूरा

आशूरा के दिन के साथ बहुत सी बातें मख़्सूस हैं, इन में से चन्द येह हैं :

- ......इस दिन हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की तौबा क़बूल की गई, इसी दिन इन्हें पैदा किया गया, इसी दिन इन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया।
- ......इसी दिन अर्श, कुरसी, आस्मान, ज़मीन, सूरज, चांद, सितारे और जन्नत पैदा किये गए।
- ......इसी दिन हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पैदा हुवे, इसी दिन इन्हें आग से नजात मिली।
- ......इसी दिन हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िरऔन अपनी क़ौम समेत ग़र्क़ हुवा।
- ......इसी दिन हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام पैदा किये गए, इसी दिन इन्हें आस्मानों की तरफ़ उठाया गया।
- ......इसी दिन हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام को मक़ामे बुलन्द की तरफ़ उठाया गया।
- ......इसी दिन हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام की किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी।
- ......इसी दिन हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام को मुल्के अज़ीम अता किया गया।

(1) ......مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ص ۵۷۱، الحدیث ۱۲۷ ـ (۱۱۳۰)

۞......इसी दिन ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام मछली के पेट से निकाले गए।

۞......इसी दिन ह़ज़रते या'कूब عَلَیْہِ السَّلَام की बीनाई लौटाई गई।

۞......इसी दिन ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام गहरे कूंएं से निकाले गए।

۞......इसी दिन ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की गई।

۞......आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और

۞......इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मशहूर था यहां तक कि येह भी कहा गया है कि इस दिन का रोज़ा माहे रमज़ान से पहले फ़र्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत से पहले इस दिन का रोज़ा रखा।

जब आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ने इस दिन की जुस्तजू की ताकीद की ता आंकि, आप ने आख़िर उ़म्र शरीफ़ में फ़रमाया कि अगर मैं आयिन्दा साल तक ज़िन्दा रहा तो आयिन्दा नवीं और दसवीं का रोज़ा रखूंगा मगर आप ने उसी साल विसाल फ़रमाया और दसवीं के इलावा रोज़ा न रख सके मगर आप ने इस दिन या'नी नवीं और दसवीं और ग्यारहवीं मुहर्रम के दिनों में रोज़ा रखने को पसन्द फ़रमाया।(1)

जैसा कि फ़रमाने नबवी है : इस दिन से एक दिन पहले और एक दिन बा'द रोज़ा रखो और यहूद के त़रीक़े की मुख़ालफ़त करो क्यूंकि वोह एक दिन ही का रोज़ा रखते थे।(2)

बैहक़ी ने शोअ़बुल ईमान में रिवायत नक़्ल की है कि जिस ने आ़शूरा के दिन अपने घर वालों और अहलो इयाल पर वुस्अ़त की, अल्लाह तआ़ला उस के सारे साल में वुस्अ़त और बरकत अ़ता फ़रमाता है।(3)

त़बरानी की एक मुन्कर रिवायत में है कि इस दिन में एक दिरहम का सदक़ा सात लाख दिरहम के बराबर है(4)

---

1 ......شرح معانی الآثار، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ۲/۱۳۵، الحدیث ۳۲۲۴۔ ۳۲۲۹ و فتح الباری لابن حجر، کتاب الصوم، باب صیام یوم عاشوراء، ۵/۲۱۳

2 ......مسند احمد، مسند عبداللّٰہ بن العباس...الخ، ۱/۵۱۸، الحدیث ۲۱۵۴

3 ......شعب الایمان، الباب الثالث و العشرون...الخ، صوم التاسع مع العاشر، ۳/۳۶۶، الحدیث ۳۷۹۵

4 ......

और वोह ह़दीस जिस में है कि जिस ने इस दिन सुर्मा लगाया वोह उस साल आंखें दुखने से मह़फ़ूज़ रहेगा और जिस ने इस दिन ग़ुस्ल किया वोह बीमार नहीं होगा, मौज़ूअ़ है।(1)

ह़ाकिम ने इस की तसरीह़ की है कि इस दिन सुर्मा लगाना बिदअ़त है।(2)

इब्ने क़य्यिम ने कहा है कि सुर्मा लगाने, दाने भूनने, तेल लगाने और आ़शूरा के दिन ख़ुश्बू वग़ैरा लगाने की ह़दीस झूटों की वज़्अ़ कर्दा है।

वाज़ेह़ हो कि आ़शूरा के दिन ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ जो कुछ बीती वोह इस दिन की अ़ज़मत, रफ़्अ़त, अल्लाह के नज़्दीक इस के दरजा और अहले बैते अत़्हार के मरातिब से इस दिन का तअ़ल्लुक़ इस दिन की रफ़्अ़त व अ़ज़मत की बय्यिन शहादत है लिहाज़ा जो शख़्स इस दिन आप के मसाइब का ज़िक्र करे उसे येह मुनासिब नहीं कि सिवाए اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ के और कुछ कहे क्यूंकि इसी में हुक्मे इलाही की मुताबअ़त और फ़रमाने इलाही की मुह़ाफ़ज़त होगी जिस में इरशाद होता है :

اُولٰٓىٕكَ عَلَیْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۫ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ (3)

येही हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से दुरूद और रह़मत है और येही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।

ख़ास त़ौर पर ख़याल करो कि कहीं रवाफ़िज़ की बिदअ़तों में मश्ग़ूल न हो जाओ जैसा कि वोह लोग और उन के हम मिस्ल रोना, पीटना और ग़म का इज़्हार करते हैं क्यूंकि येह काम मोमिनों के अख़्लाक़ से बईद हैं, अगर येह चीज़ें अच्छी होतीं तो इन के नाना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यौमे विसाल इन उमूर का ब त़रीक़े औला मुस्तह़िक़ होता और हमें अल्लाह काफ़ी है और वोही उ़म्दा मददगार है।

۞...۞...۞...۞...۞

1 ......واللآلیء المصنوعة للسیوطی، ۲/۹۳

2 ......الصواعق المحرقة، ص ۱۸٤

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह लोग हैं जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं। (پ۲، البقرة: ۱۵۷)

बाब 107

फ़ज़ीलते मेहमानिये फ़ुक़रा

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है मेहमान के लिये तकल्लुफ़ न करो,[1] तुम उसे दुश्मन समझोगे और जिस ने उसे दुश्मन समझा उस ने **अल्लाह** को दुश्मन समझा और जिस ने **अल्लाह** तआ़ला को दुश्मन समझा **अल्लाह** तआ़ला ने उसे दुश्मन समझा ।[2]

फ़रमाने नबवी है कि उस शख़्स के पास ख़ैरो बरकत नहीं जिस में मेहमान नवाज़ी नहीं ।[3]

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसे शख़्स से गुज़र हुवा जिस के पास बहुत से ऊंट और गाएं थीं मगर उस ने मेहमानी न की और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसी औ़रत से गुज़र हुवा जिस के पास छोटी छोटी बकरियां थीं उस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक बकरी ज़ब्ह़ की तब आप ने फ़रमाया : इन दो को देखो **अल्लाह** तआ़ला के हाथ में अख़्लाक़ हैं ।[4]

ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम थे, फ़रमाते हैं कि आप के हां एक मेहमान उतरा, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जाओ ! फ़ुलां यहूदी से कहो कि मेरा मेहमान आया है, मुझे रजब के महीने तक के लिये कुछ आटा भेज दो, यहूदी येह पैग़ाम सुन कर बोला : ब ख़ुदा ! मैं उन को कुछ नहीं दूंगा मगर येह कि कुछ रह्न रखा जाए, मैं ने जा कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर दी, आप ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मैं आस्मानों में अमीन हूं, ज़मीन में अमीन हूं, अगर वोह मुझे उधार देता तो मैं ज़रूर अदा कर देता, जाओ मेरी ज़िरह ले जाओ और उस के पास रह्न रख दो ।[5]

---

1 ......الجامع الصغیر ،ص٥٨٣، الحدیث ٩٨٦١ و تاریخ مدینہ دمشق،١٢٦/١٣

2 ......طبقات الشافیۃ الکبری للسبکی،٣٠٨/٦

3 ......مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث عقبۃ بن عامر الجھنی، ١٤٢/٦، الحدیث ١٧٤٢٤

4 ......شعب الایمان، الباب الثامن و الستون من شعب الإیمان، باب فی إکرام الضیف،٩٣/٧، الحدیث ٩٥٩٧

5 ......مسند البزار،٣١٥/٩، الحدیث ٣٨٦٣

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जब खाना खाने का इरादा फ़रमाते तो मील दो मील मेहमान की तलाश में निकल जाया करते थे। आप की कुन्यत अबुज़्ज़यफ़ान थी और आप की सिद्क़े निय्यत की वज्ह से आज तक इन की जारी कर्दा ज़ियाफ़त मौजूद है, कोई रात न गुज़रती मगर आप के हां तीन से ले कर दस और सो के दरमियान जमाअ़त खाना न खाती हो, इन के घर के निगहबान ने कहा कि इन की कोई रात मेहमान से ख़ाली नहीं रही।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया : ईमान क्या है ? आप ने फ़रमाया कि खाना खिलाना और सलाम करना।(1)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कफ़्फ़ारात और दरजात के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि खाना खिलाना और रात को नमाज़ पढ़ना दर आं ह़ाल येह कि लोग सोए हुवे हों।(2)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज्जे मबरूर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया : तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि खाना खिलाना और शीरीं गुफ़्तारी।(3)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिस घर में मेहमान दाख़िल नहीं होते उस घर में फ़िरिश्ते भी दाख़िल नहीं होते।

मेहमान की फ़ज़ीलत और खाना खिलाने की फ़ज़ीलत के बारे में बे शुमार ह़दीसें वारिद हुई हैं।

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

لم لا احب الضيف او — ارتاح من طرب اليه
والضيف ياكل رزقه — عندى ويشكرنى عليه

﴾1﴿......मैं मेहमान को क्यूं न महबूब समझूं और उस की ख़ुशी से राहत महसूस क्यूं न करूं !
﴾2﴿......वोह मेरे पास अपना रिज़्क़ खाता है और इस पर मेरा शुक्रिया अदा करता है।

हुकमा का क़ौल है कि कोई भलाई ख़ुशरूई, ख़ुश गुफ़्तारी और ख़न्दा पेशानी के बिग़ैर पायए तक्मील को नहीं पहुंचती।

---

(1) ......بخارى، كتاب الايمان، باب اطعام الطعام من الاسلام، ١/١٦، الحديث ١٢
(2) ......المستدرك للحاكم، كتاب الاطعمة، باب فضيلة اطعام الطعام، ٥/١٧٨، الحديث ٧٢٥٥
(3) ......المعجم الاوسط، ٥/٧٤، الحديث ٦٦١٨

एक और शाइर कहता है :

اضاحک ضیفی قبل انزال رحله ویخصب عندی والمحل جدیب

وما الخصب للاضیاف فی کثرۃ القری ولکنما وجہ الکریم خصیب

﴾1﴿......मैं अपने मेहमान का कजावा उतारने से पहले उसे हंसाता हूं, वोह मेरे पास शादाब होता है हालांकि क़ह्त़ साली होती है।

﴾2﴿......अक्सर मेहमानी में शादाबी नहीं होती लेकिन करीम का चेहरा फिर भी शादाब रहता है।

दा'वत करने वाले ! मुनासिब येह है कि तू अपने खाने में परहेज़गारों को बुलाए और फ़ासिक़ों से एह्तिराज़ करे चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जब तुम कुछ लोगों को खाने की दा'वत दो तो नेकों को अपने खाने में बुलाओ।[1]

फ़रमाने नबवी है कि नेक के खाने के इलावा किसी का खाना न खा और नेक परहेज़गार को खिलाने के इलावा किसी और को न खिला।[2]

दा'वत में मालदारों की बजाए फ़ुक़रा को बुलाओ चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि बद तरीन खाना वोह वलीमा है जिस में फ़क़ीरों की बजाए उमरा को बुलाया जाए।[3]

नीज़ दा'वत करने वाले के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह ज़ियाफ़त में अपने रिश्तेदारों को नज़र अन्दाज़ न करे क्यूंकि उन्हें नज़र अन्दाज़ करना वीरानी और क़त्ए रेह्मी है इसी त़रह़ अपने दोस्तों और जान पहचान वालों की तरतीब का भी ख़याल रखे क्यूंकि इस में बा'ज़ को मुख़्तस करना दूसरों के दिलों के लिये वह्शत होती है।

नीज़ येह भी ज़रूरी है कि दा'वत करने वाला अपनी दा'वत फ़ख़्र और ख़ुदबीनी जैसी बुराइयों के लिये न करे बल्कि इस से अपने भाइयों के दिलों का मैलान और खाना खिलाने और मोमिन भाइयों के दिलों में ख़ुशी व मसर्रत के दुख़ूल के लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

---

1 ......شعب الایمان،التاسع والثلاثون من شعب الإیمان،الدعاء لرب الطعام، ۱۲۵/۵، الحدیث:۶۰۴۸

2 ......طبقات الشافیۃ الکبری للسبکی،۲۹۸/۶ و ابوداود، کتاب الادب، باب من یؤمرأن یجالس، ۳۴۱/۴، الحدیث۴۸۳۲
و شعب الایمان، السادس و الستون من شعب الإیمان، باب فی مباعدۃ الکفار...الخ، ۴۲/۷، الحدیث ۹۳۸۳

3 ......بخاری،کتاب النکاح، باب من ترک الدعوۃ...الخ،۴۵۵/۳، الحدیث ۵۱۷۷

सुन्नत की पैरवी करे। ऐसे आदमी को दा'वत न दे जिस के मुतअ़ल्लिक़ उसे मा'लूम हो कि उस का आना बाइसे तक्लीफ़ होगा या उस का आना मदऊ़वीन के आने के लिये किसी सबब से बाइसे रन्ज होगा।

और येह भी मुनासिब है कि वोह उस शख़्स को दा'वत दे जिस के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हो कि वोह इसे क़बूल कर लेगा।

हज़रते सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि जिस ने किसी ऐसे शख़्स को दा'वत में बुलाया जो उसे ना पसन्द करता है तो उस ने ख़ता की और अगर मदऊ़ ने उस की दा'वत क़बूल कर ली तो उस ने दो ख़ताएं कीं क्यूंकि इस दा'वत करने वाले ने मदऊ़ को ना पसन्दीदगी के बा वुजूद ला घसीटा है, अगर उसे इस बात की ख़बर होती तो वोह कभी भी उसे खाना न खिलाता मुत्तक़ी को खाना खिलाना उस की इताअ़त में इआ़नत और बदकार को खिलाना उस की बदकारी को तक़्विय्यत देना है।

हज़रते इब्ने मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक दरज़ी ने कहा : मैं बादशाहों के कपड़े सीता हूं, क्या आप को मेरे मुतअ़ल्लिक़ अन्देशा है कि मैं ज़ुल्म व उ़दवान के मददगारों में गिना जाऊं ? आप ने फ़रमाया : नहीं ! ज़ुल्म के मददगार तो वोह हैं जो तेरे हाथ कपड़ा बेचते हैं और सूई वग़ैरा, बहर हाल तुम तौबा करो।

दा'वत क़बूल करना सुन्नते मुअक्कदा है

दा'वत को क़बूल करना सुन्नते मुअक्कदा है, बा'ज़ मवाक़ेअ़ पर तो इसे वाजिब भी कहा गया है।

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अगर मुझे गाए या बकरी की पतली सी पिन्डली की भी दा'वत दी जाए तो मैं उसे क़बूल कर लूंगा और अगर मुझे जानवर का दस्त हदिय्या किया जाएगा तो मैं क़बूल कर लूंगा।(1)

दा'वत क़बूल करने के लिये पांच आदाब हैं जो **'इह़याओ उ़लूमुद्दीन'** वग़ैरा में मज़्कूर हैं।

❁...❁...❁...❁...❁

---

1 ......بخاری، کتاب الهبة...الخ، باب القليل من الهبة، ٢/١٦٦، الحديث ٢٥٦٨

बाब 108

जनाज़ा और क़ब्र

जनाज़े, देखने वालों के लिये सामाने इब्रत होते हैं, इस में अक़्लमन्दों के लिये याद देहानी और तम्बीह होती है मगर ग़ाफ़िल इस से ग़ाफ़िल ही होते हैं, उन का मुशाहदा उन के दिलों की सख़्ती को ज़ियादा करता है क्यूंकि वोह येह समझते हैं कि हम हमेशा दूसरों के जनाज़े देखते रहेंगे और येह नहीं समझते कि उन्हें भी एक दिन ला महाला इसी त़रह़ उठाया जाएगा या वोह इस पर ग़ौरो फ़िक्र करें लेकिन वोह कुर्ब के बा वुजूद ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और न ही येह सोचते हैं कि आज जो लोग जनाज़ों पर उठाए जा रहे हैं येह भी उन की त़रह़ गिनती व शुमार में लगे रहते थे मगर उन के सब ह़िसाब बात़िल हो गए हैं और अ़न क़रीब उन की मीआ़द ख़त्म होगी लिहाज़ा कोई बन्दा जनाज़े को न देखे मगर ख़ुद को इसी ह़ालत में देखे क्यूंकि अ़न क़रीब वोह भी इसी त़रह़ उठा कर ले जाया जाएगा, वोह उठ गया, येह कल या परसों इस दुन्या से उठ जाएगा।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि आप जब जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : चलो ! हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।

ह़ज़रते मक्ह़ूल दिमश्क़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : तुम सुब्ह़ को जाओ और हम आयिन्दा शाम को आने वाले हैं, येह ज़बरदस्त नसीह़त और तेज़ ग़फ़्लत है, पहला चला जाता है और दूसरा इस ह़ाल में रहता है कि उस में अ़क़्ल नहीं होती।

ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कहना है कि मैं किसी जनाज़े में ह़ाज़िर नहीं हुवा मगर मेरे नफ़्स ने मुझे ऐसी बातों में लगाए रखा जो इस के अन्जामे कार और जो कुछ मेरे साथ होगा उस से इलावा थीं।

जब ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का भाई फ़ौत हुवा तो आप रोते हुवे उस के जनाज़े में निकले और फ़रमाया : ब ख़ुदा ! उस वक़्त तक मेरी आंखें ठन्डी नहीं होंगी जब तक कि मुझे मा'लूम न हो जाए कि मेरा ठिकाना कौन सा है ? और मैं ज़िन्दगी भर इसे जान नहीं सकूंगा !

हज़रते आ'मस رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि हम जनाज़ों में जाते और तमाम को देख कर येह न जानते कि हम किस से ता'ज़िय्यत करें।

हज़रते साबित बुनानी رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि हम जनाज़ों में जाते तो हर शख़्स को कपड़ा लपेटे रोता देखते, वाक़ेई वोह लोग मौत से इन्तिहाई ख़ौफ़ज़दा होते थे मगर आज हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो जनाज़ों में शामिल होते हैं मगर उन में से अक्सर हंसते रहते हैं, लह्वो लइब में मश्ग़ूल होते हैं और उस की मीरास की बातें करते और उस के वुरसा की बातें करते हैं और मरने वाले के अज़ीज़ो अक़ारिब ऐसी राहों की जुस्तजू में होते हैं जिस के ज़रीए वोह उस के छोड़े हुवे माल से कुछ हासिल कर सकें और उन में से कोई भी अपने जनाज़े के मुतअ़ल्लिक़ नहीं सोचता और जब वोह भी इसी तरह उठाया जाएगा इस बारे में वोह ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता।

इस ग़फ़्लत का सबब उन के दिलों की सख़्ती है जो गुनाहों और ना फ़रमानियों की कसरत से पैदा हुई है यहां तक कि हम **अल्लाह** तआ़ला, क़ियामत और उन वह्शत नाकियों को भी भूल गए हैं जो हमें पेश आने वाली हैं, हम लह्वो लइब में मश्ग़ूल हो गए जो हमारे लिये बेकार हैं।

पस हम **अल्लाह** से इस ग़फ़्लत से बेदारी का सुवाल करते हैं क्यूंकि जनाज़ों के हाज़िरीन की सब से उ़म्दा सिफ़त येह है कि वोह जनाज़ों में मय्यित पर रोएं हालांकि अगर उन्हें अ़क़्ल होती तो वोह मय्यित की बजाए अपनी हालत पर रोते।

हज़रते इब्राहीम ज़य्यात رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ऐसे लोगों को देखा जो मुर्दे पर इज़्हारे रह्म कर रहे थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : अगर तुम मय्यित की बजाए अपने आप पर रह्म करते तो तुम्हारे लिये बेहतर था क्यूंकि वोह तीन वह्शत नाकियों से नजात पा गया है, उस ने इ़ज़्राईल का चेहरा देख लिया है, मौत के ज़ाइक़े की तल्ख़ी चख चुका है और ख़ातिमे के ख़ौफ़ से बा अम्न हो गया है।

हज़रते अबू अ़म्र बिन अ़ला رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि मैं जरीर के हां बैठा हुवा था और वोह अपने कातिब से शे'र लिखवा रहे थे, तब एक जनाज़ा आया तो वोह रुक गए और कहा कि ब ख़ुदा ! मुझे इन जनाज़ों ने बूढ़ा कर दिया है और उन्हों ने येह शे'र पढ़े :

تروعنا الجنائز مقبلات ۔ و نلهو حين تذهب مدبرات

كروعة ثلة لمغار ذئب ۔ فلما غاب عادت راتعات

﴾1﴿......जनाज़े हमें आते हुवे ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं और जब चले जाते हैं तो हम इन के पीठ फेरते ही लह्वो लइ़ब में लग जाते हैं।

﴾2﴿......भेड़ों के गल्ले की त़रह़ जो भेड़िये के ग़ार में ख़ौफ़ज़दा होता है और जब भेड़िया ग़ाइब हो जाता है तो वोह चरने लगती है।

जनाज़े के आदाब

जनाज़े के आदाब में से तफ़क्कुर, तम्बीह, मुस्तइ़दी और मुतवाज़ेअ़ हो कर उस के आगे चलना है जैसा कि फ़िक़्ह में इस के आदाब और त़रीक़े मज़्कूर हैं।

उन आदाब में से येह भी है कि आदमी सब से हुस्ने ज़न रखे अगर्चे वोह फ़ासिक़ ही क्यूं न हो और बुरे ख़यालात को अपनी त़रफ़ से समझे क्यूंकि अगर्चे वोह ज़ाहिरी त़ौर पर अच्छा क्यूं न हो, ख़ातिमा ऐसी चीज़ है जिस का ख़त़रा जारी व सारी रहता है इसी लिये ह़ज़रते उ़मर बिन ज़र رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है कि इन का एक हमसाया फ़ौत हो गया जो बद किरदार था तो बहुत से लोग उस के जनाज़े से रुक गए, आप उस के जनाज़े में शरीक हुवे, उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, जब उसे क़ब्र में उतारा जाने लगा तो आप ने उस की क़ब्र पर खड़े हो कर कहा : ऐ पिदरे फ़ुलां ! अल्लाह तुझ पर रह़्म करे, यक़ीनन तू ने अपनी ज़िन्दगी तौह़ीद में बसर की और अपने चेहरे को सजदों से गुबार आलूद किया और अगर लोगों ने तुझे गुनहगार और बद किरदार कहा तो हम में से ऐसा कौन है जो गुनहगार और बद किरदार नहीं।

एक गुनहगार का अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़

एक आदमी जो गुनाहों में मुन्हमिक रहता था, मर गया, वोह बसरा के क़रीब रहता था मगर जब वोह मरा तो उस की औ़रत ने ऐसा कोई आदमी न पाया जो जनाज़ा उठाने में उस का हाथ बटाता क्यूंकि उस के हमसाए उस के कसरते गुनाह के सबब किनारा कश हो गए चुनान्चे, उस ने दो मज़दूर उजरत पर लिये और वोह उसे जनाज़ा गाह में ले गए मगर किसी ने उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी और वोह उसे सह़रा में दफ़्न करने के लिये ले गए।

उस अ़लाके़ के नज़्दीक पहाड़ में एक बहुत बड़ा ज़ाहिद रहता था, औ़रत जब अपने शोहर का जनाज़ा उठवा कर ले गई तो ज़ाहिद को मुन्तज़िर पाया चुनान्चे, ज़ाहिद ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने का इरादा किया तो शहर में येह ख़बर फैल गई कि ज़ाहिद पहाड़ से उतरा है ताकि फ़ुलां शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाए चुनान्चे, शहर के सब लोग वहां रवाना हो गए और उन्हों ने ज़ाहिद की इक़्तिदा में उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

लोगों को ज़ाहिद के इस फे़'ल से सख़्त हैरत हुई, ज़ाहिद ने कहा कि मुझ से ख़्वाब में कहा गया है कि फ़ुलां जगह जाओ, वहां तुम्हें एक जनाज़ा नज़र आएगा जिस के साथ सिर्फ़ एक औ़रत होगी, तुम उस शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो क्यूंकि वोह मग़फ़ूर है, येह बात सुन कर लोगों के तअ़ज्जुब में और इज़ाफ़ा हुवा।

ज़ाहिद ने औ़रत से उस मर्द के हालात दरयाफ़्त किये और उस की बख़्शिश के अस्बाब की तह़क़ीक़ करना चाही तो औ़रत ने कहा जैसा कि मश्हूर है उस का सारा दिन शराब ख़ाने में गुज़रता और शराब में मस्त रहते गुज़रता था।

ज़ाहिद ने कहा कि क्या तुम इस की किसी नेक आ़दत को भी जानती हो ? औ़रत ने कहा : हां ! तीन चीज़ें जानती हूं, जब वोह सुब्ह़ के वक़्त मदहोशी से इफ़ाक़ा पाता तो कपड़े तब्दील करता, वुज़ू करता और सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ा करता था फिर शराब ख़ाने में जाता और बदकारियों में मश्ग़ूल रहता।

दूसरे येह कि उस के घर में हमेशा एक या दो यतीम रहा करते थे, उन से वोह अवलाद से भी ज़ियादा मेहरबानी से पेश आया करता था।

तीसरे येह कि जब वोह रात की तारीकी में नशे की मदहोशी से इफ़ाक़ा पाता तो रोता और कहता : ऐ रब्बे करीम ! जहन्नम के कोनों में से कौन से कोने को मेरे इस ख़बीस नफ़्स से तू पुर करेगा ? ज़ाहिद येह सुनते ही लौट गया और उस की बख़्शिश का राज़ खुल गया।

ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक رضی اللہ تعالٰی عنہ का क़ौल है कि एक शख़्स ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से पूछा कि सब से बड़ा ज़ाहिद कौन है ? आप ने फ़रमाया : जो क़ब्र और मसाइब को न भूला, दुन्यावी ज़ेबो ज़ीनत की उ़म्दा चीज़ों को तर्क कर दिया, फ़ानी चीज़ों पर दाइमी चीज़ों को तरजीह़

दी, आयिन्दा कल को अपनी ज़िन्दगी में शुमार न किया और ख़ुद को अहले कुबूर में से शुमार किया।[1]

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से पूछा गया क्या वज्ह है कि आप क़ब्रिस्तान के क़रीब रहते हैं ? आप ने फ़रमाया : मैं ने इन्हें उ़म्दा हमसाया पाया है, सच्चे हमसाए जो ज़बानें बन्द रखते हैं और आख़िरत की याद दिलाते हैं।

हज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जब क़ब्रों पर खड़े होते तो रोया करते यहां तक कि आप की दाढ़ी आंसूओं से तर हो जाती आप से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया और कहा गया कि आप जन्नत और जहन्नम का तज़्किरा करते हैं और नहीं रोते लेकिन क़ब्रों पर क्यूं रोते हैं ? आप ने फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि क़ब्र आख़िरत के मनाज़िल में से पहली मन्ज़िल है, अगर साहिबे क़ब्र इस से नजात पा लेता है तो बा'द की मन्ज़िलें उस के लिये आसान हो जाती हैं और अगर इस से नजात नहीं पाता तो बा'द की मन्ज़िलें और ज़ियादा सख़्त होती हैं।[2]

कहा गया है कि हज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने क़ब्रिस्तान को देखा तो सुवारी से उतर पड़े और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की, फिर उन से कहा गया कि पहले तो आप ऐसा नहीं करते थे, आप ने फ़रमाया : मैं ने क़ब्रिस्तान वालों को और उस चीज़ को याद किया जो इन के और मेरे दरमियान हाइल की गई है तो मैं ने इस बात को पसन्द किया कि दो रक्अ़तें अदा कर के मैं रब का कुर्ब चाहूं।

हज़रते मुजाहिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि सब से पहले क़ब्र इन्सान से येह कलाम करती है कि मैं कीड़ों, तन्हाई, गुर्बत और अन्धेरे का घर हूं, मैं ने तेरे लिये येही कुछ तय्यार किया है, तू मेरे लिये क्या तय्यार कर के लाया है ?

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है कि क्या मैं तुम्हें अपने फ़क्र का दिन बताऊं ? येह वोह दिन होगा जब मुझे क़ब्र में रखा जाएगा।

❁...❁...❁...❁...❁

1 ......شعب الایمان، الحادی والسبعون...الخ، ۷/۳۵۵، الحدیث ۱۰٦٦٥

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ذکر الموت، ٤/١٣٨، الحدیث ٢٣١٥

बाब 109

अ़ज़ाबे जहन्नम का ख़ौफ़

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ फ़रमाया करते थे :[1]

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ(۲۰۱) [2]

ऐ हमारे रब हम को दुन्या में नेकी और आख़िरत में नेकी अ़ता फ़रमा और हम को आग के अ़ज़ाब से बचा ।

अबू या'ला की रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन ख़ुत़बा दिया और फ़रमाया : दो अ़ज़ीम चीज़ों जन्नत और जहन्नम को न भूलो । फिर आप रोए यहां तक कि आंसू जारी हो गए या आप के मुबारक आंसूओं ने आप की रीश मुबारक के दोनों पहलूओं को तर कर दिया और आप ने फ़रमाया : अगर तुम जानते जो कुछ आख़िरत के बारे में मैं जानता हूं तो तुम मिट्टी पर चलते और अपने सरों पर ख़ाक डालते ।[3]

त़बरानी ने अवसत़ में येह रिवायत नक़्ल की है कि जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ऐसे वक़्त में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए जिस वक़्त में वोह कभी नहीं आया करते थे चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिब्रील के लिये खड़े हुवे और पूछा : जिब्रील ! क्या बात है कि मैं तुम्हारा रंग मुतग़य्यर देखता हूं ? जिब्रील ने कहा : मैं आप के पास इस लिये आया हूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम को मज़ीद दहकाने का हुक्म दिया है । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! मुझे जहन्नम की ह़क़ीक़त बतलाओ या जहन्नम के अवसाफ़ बयान करो ।

जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम को दहकाने का हुक्म दिया और उसे एक हज़ार साल रोशन किया गया और भड़काया गया यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई फिर हुक्म हुवा और उसे फिर एक हज़ार साल तक भड़काया गया ह़त्ता कि वोह सुर्ख़ हो गई,

1 ......بخاری، کتاب الدعوات، باب قول النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ربنا اتنا...الخ، ۴/۲۱۴، الحدیث ۶۳۸۹

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा । (پ۲، البقرۃ:۲۰۱)

3 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الرقۃ والبکاء، ۳/۱۹۰، الحدیث ۱۰۲

फ़िर मज़ीद एक हज़ार साल उसे भड़काने का हुक्म मिला यहां तक कि वोह तारीक हो गई, अब वोह सियाह व तारीक है, उस में कोई चिंगारी भी रोशन नज़र नहीं आती और न ही कभी उस का भड़कना ख़त्म होता है।

क़सम है रब्बे ज़ुल जलाल की जिस ने आप को हक़ के साथ नबी बना कर मबऊ़स फ़रमाया है ! अगर जहन्नम को सूई के सूराख़ के बराबर खोल दिया जाए तो उस की गर्मी से दुन्या की तमाम मख़्लूक़ मर जाए, ब ख़ुदा ! जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है, अगर जहन्नम के निगहबान फ़िरिश्तों में से कोई फ़िरिश्ता दुन्या में ज़ाहिर हो जाए तो तमाम अहले दुन्या उस की बद सूरती देख कर और उस की बद बू सूंघ कर मर जाएं। ब ख़ुदा ! जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है अगर जहन्नम की ज़न्जीरों का एक ह़ल्क़ा जिन का **अल्लाह** तआला ने अपनी मुक़द्दस किताब में ज़िक्र किया है दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह पिघल जाएं और वोह ह़ल्क़ा सब से निचली ज़मीन पर जा ठहरे।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! मुझे इतना ही काफ़ी है मेरा जिगर टुकड़े टुकड़े न करो कि मैं इन्तिक़ाल कर जाऊं ! तब आप ने जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام को देखा वोह रो रहे थे, आप ने फ़रमाया : जिब्रील तुम रोते हो ? ह़ालांकि तुम्हारा **अल्लाह** के हां एक ख़ास मर्तबा है, जिब्रील ने कहा : मैं कैसे न रोऊं ह़ालांकि मैं रोने का ज़ियादा ह़क़दार हूं, शायद कि मैं **अल्लाह** तआला के इल्म में इस ह़ाल से किसी दूसरे ह़ाल में लिखा गया होऊं और मैं नहीं जानता कहीं मुझे भी आज़्माइश में न डाल दिया जाए जैसा कि इब्लीस को आज़्माइश में डाल कर ज़लीलो रुस्वा कर दिया गया है, वोह भी तो फ़िरिश्तों में था और मैं नहीं जानता कि मुझे भी कहीं हारूत व मारूत की त़रह़ मसाइब में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर रोने लगे और जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام भी रोने लगे दोनों ह़ज़रात बराबर रोते रहे ता आंकि निदा की गई : ऐ जिब्रील और ऐ मुह़म्मद ! **अल्लाह** तआला ने तुम्हें मामून कर दिया है तुम उस की ना फ़रमानी नहीं करोगे। जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام येह सुनते ही परवाज़ कर गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्सार के ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जो बज़्ला सन्जियों में[1] मसरूफ़ थे और हंस रहे थे। आप ने फ़रमाया : क्या तुम हंसते हो और तुम्हारे पीछे जहन्नम है, पस अगर तुम जान लेते जो मैं जान चुका हूं तो तुम कम हंसते और

[1].....मज़ाक़ मस्ख़रियों में। **इल्मिय्या**

ज़ियादा रोते, खाना पीना छोड़ देते और बुलन्द पहाड़ों की त़रफ़ निकल जाते ताकि **अल्लाह** की रज़ामन्दी के लिये ख़ुद पर रियाज़त व मेह़नत को मुसल्लत़ कर सको। तब निदा की गई कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे बन्दों को ना उम्मीद न करो, मैं ने आप को ख़ुश ख़बरी देने वाला बना कर भेजा है आप को मशक़्क़तों में डालने वाला बना कर नहीं भेजा, तब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने आ'माल दुरुस्त करो और कुर्बे इलाही ह़ासिल करो।(1)

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : क्या बात है मैं ने मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को कभी हंसते हुवे नहीं देखा ? जिब्रील ने अ़र्ज़ किया कि जब से आग को पैदा किया गया है, मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) कभी नहीं हंसे।(2)

इब्ने माजा और ह़ाकिम की ह़दीस है जिसे ह़ाकिम ने सह़ीह़ कहा है कि तुम्हारी येह आग जहन्नम की आग का सत्तरवां जुज़ है और अगर वोह दो मरतबा रह़मत के पानी से न बुझाई जाती तो तुम उस से फ़ाइदा ह़ासिल न कर सकते और येह आग **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगती है कि मुझे दोबारा जहन्नम में न भेजना।(3)

बैहक़ी ने रिवायत की है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह आयत पढ़ी :

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ (4)

जब गल जाएंगे उन के चमड़े तो हम बदल देंगे उन के लिये दूसरे चमड़े ताकि वोह अ़ज़ाब चखें।

और ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि मुझे इस की तफ़्सीर बतलाओ अगर आप ने सच कहा तो मैं आप की तस्दीक़ करूंगा वरना आप की बात रद्द कर दूंगा। ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बोले कि इन्सान का चमड़ा जलेगा और उसी लम्ह़ा नया हो जाएगा या हर दिन में छे हज़ार मरतबा नया होगा, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : वाक़ेई आप ने सच कहा।(5)

---

1 ......المعجم الاوسط، ٢/٧٨، الحديث ٢٥٨٣

2 ......مسند احمد، مسند انس بن مالك بن النضر، ٤/٤٤٧، الحديث ١٣٣٤٢

3 ......المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال، باب ما من مسلمين...الخ، ٥/٨١٥، الحديث ٨٧٩١

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें। (پ٥، النساء:٥٦)

5 ......البعث والنشور للبيهقى، ص٣١٨، الحديث ٥٧٧

बैहक़ी ने इस आयत के तहत हज़रते हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल नक़्ल किया है कि उन्हें हर दिन में सत्तर हज़ार मरतबा आग खाएगी और हर मरतबा जब कि उन्हें आग जलाएगी और फिर पहले की तरह हो जाएंगे।[1]

मुस्लिम शरीफ़ की एक ह़दीस में है कि दुन्या में सब से ज़ियादा दुन्यावी ने'मतें पाने वाले जहन्नमी को लाया जाएगा, उसे जहन्नम में एक ग़ोता दे कर पूछा जाएगा कि ऐ इन्सान ! तू ने कभी ऐश भी देखी है या तुझ पर कभी इन्आमात की बारिश भी हुई है ? वोह कहेगा : नहीं ! ब ख़ुदा ! ऐ **अल्लाह** कभी भी नहीं। फिर दुन्या में सब से ज़ियादा मसाइब बरदाश्त करने वाले जन्नती को लाया जाएगा और उसे जन्नत का चक्कर लगवा कर पूछा जाएगा : ऐ इन्सान ! तू ने कभी तंगदस्ती देखी है या तुझ पर कभी मसाइब भी आए थे ? वोह कहेगा : नहीं ! ब ख़ुदा ! ऐ **अल्लाह** कभी भी मैं ने तंगदस्ती और दुख तक्लीफ़ नहीं देखे।[2]

दोज़खियों पर रोना मुसल्लत कर दिया जाएगा

इब्ने माजा की रिवायत है कि जहन्नमियों पर रोना मुसल्लत किया जाएगा वोह रोएंगे यहां तक कि उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे, फिर वोह ख़ून रोएंगे यहां तक कि उन के चेहरों में गढ़ों जैसे गढ़े होंगे कि अगर उन में किश्तियां छोड़ दी जाएं तो वोह चलने लगें।[3]

अबू या'ला की ह़दीस है : ऐ लोगो ! रोओ, अगर तुम्हें रोना नहीं आता तो रोने की सी सूरत बनाओ, क्यूंकि जहन्नमी जहन्नम में रोएंगे यहां तक कि उन के आंसू उन के रुख़्सारों पर ऐसे बहेंगे जैसे उन के रुख़्सार नहरें हों, फिर आंसू ख़त्म हो जाएंगे और वोह ख़ून रोएंगे ता आंकि उन की आंखें ज़ख़्मों से लहू लुहान हो जाएंगी।[4]

---

1 ......شعب الایمان، التاسع من شعب الایمان...الخ ، فصل فی ان الجنة...الخ ، ۱/۳۵۲، الحدیث، ۳۹۲ملتقطاً

2 ......مسلم، کتاب صفة القیامة...الخ، باب صبغ انعم اهل الدنیا...الخ، ص۱۵۰۸، الحدیث۵۵ ـ (۲۸۰۷)

3 ......ابن ماجه، کتاب الزهد، باب صفة النار، ۴/۵۳۱، الحدیث ۴۳۲۴

4 ......مسند ابی یعلی، ۳/۴۰۶، الحدیث ۴۱۲۰

बाब 110

मीज़ान और सिरात़

अबू दावूद ने ह़ज़रते ह़सन से उन्हों ने ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से नक़्ल किया है कि वोह रोईं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : आइशा ! क्यूं रोती हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि मैं जहन्नम को याद कर के रोई हूं, क्या आप क़ियामत के दिन अपने घर वालों को याद रखेंगे ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन मक़ामात पर कोई किसी को याद नहीं करेगा, मीज़ाने अ़मल के वक़्त यहां तक कि वोह येह जान ले कि उस का मीज़ान हल्का हुवा या भारी, नामए आ'माल के उड़ने के वक़्त[1] यहां तक कि वोह येह जान ले कि उस का सह़ीफ़ए आ'माल दाएं हाथ में आता है या बाएं हाथ में या पीठ के पीछे, और जब पुल सिरात़ को जहन्नम पर रखा जाएगा यहां तक कि वोह येह न जान ले कि वोह उसे उ़बूर कर सकता है या नहीं ।[2]

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दस्तगीरिये उम्मत के लिये पुल सिरात़ पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि आप क़ियामत के दिन मेरी सिफ़ारिश फ़रमाएंगे ? आप ने फ़रमाया : मैं اِنْ شَآءَ اللّٰہ ऐसा करूंगा ! मैं ने अ़र्ज़ की : मैं आप को कहां तलाश करूं ? आप ने फ़रमाया : पहले मुझे पुल सिरात़ पर तलाश करना, मैं ने अ़र्ज़ की, कि अगर मैं पुल सिरात़ पर आप को न पा सकूं तो फिर कहां तलाश करूं ? आप ने फ़रमाया कि फिर मुझे मीज़ान के क़रीब तलाश करना, मैं ने अ़र्ज़ की, कि अगर मैं आप को मीज़ान के क़रीब भी न पा सकूं तो कहां तलाश करूं ? आप ने फ़रमाया : फिर मुझे ह़ौज़ के क़रीब तलाश करना क्यूंकि मैं इन तीन मक़ामात के इ़लावा कहीं नहीं होऊंगा ।[3]

ह़ाकिम की रिवायत है कि क़ियामत के दिन मीज़ान रखा जाएगा, अगर उस में वज़्न किया जाए या ज़मीनो आस्मान उस में रख दिये जाएं तो वोह रखे जा सकेंगे, तब फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे :

---

1 .....या'नी तक़्सीम होते वक़्त । **इ़ल्मिय्या**

2 ......ابو داود، کتاب السنة، باب فی ذکر المیزان، ٤/٣١٧، الحدیث ٤٧٥٥

3 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ماجاء فی شان الصراط، ٤/١٩٥، الحدیث ٢٤٤١

ऐ **अल्लाह** ! इस में किस के आ'माल का वज़्न किया जाएगा ? रब तआला फ़रमाएगा : अपनी मख़्लूक़ में से जिस के लिये चाहूंगा। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे :

سُبْحٰنَکَ مَا عَبَدْنٰکَ حَقَّ عِبَادَتِکَ पाक है तू, हम तेरी कमा-ह़क़्क़ुहू इबादत नहीं कर सके।

और पुल सिरात़ रखा जाएगा जो उस्तरे की धार जैसा होगा। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे इसे कौन उ़बूर करेगा ? रब तआला फ़रमाएगा कि मेरी मख़्लूक़ में से जिस को मैं चाहूंगा, फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे :

سُبْحٰنَکَ مَا عَبَدْنٰکَ حَقَّ عِبَادَتِکَ[1] पाक है तू, हम तेरी कमा-ह़क़्क़ुहू इबादत नहीं कर सके।

पुल सिरात़ जहन्नम के ऊपर रखा जाएगा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि पुल सिरात़ को जहन्नम के ऊपर रखा जाएगा जो पतली तल्वार की धार की त़रह़ होगी जो फ़िसलने की जगह होगी, उस पर आग के कांटे होंगे जिन से वोह लोगों को उचक लेगी, उस पर रुकने वाला उस में गिरेगा और कुछ तेज़ चलने वाले होंगे जिन में से बा'ज़ बिजली की त़रह़ गुज़रेंगे और वोह उस से गुज़र कर ही रुकेंगे, बा'ज़ उस से हवा की त़रह़ गुज़रेंगे यहां तक कि वोह नजात पा लेंगे, बा'ज़ घुड़ सुवार की त़रह़ जाएंगे, फिर बा'ज़ लोग दौड़ते हुवे आदमी की त़रह़, फिर इस से कुछ कम रफ़्तार में दौड़ते हुवे, फिर पैदल चलने वाले आदमी की त़रह़ लोग गुज़रेंगे, फिर इन में सब के आख़िर में ऐसा आदमी गुज़रेगा कि जिसे आग ने झुल्सा दिया होगा और तक्लीफ़ उठा कर आया होगा, तब **अल्लाह** तआला उसे अपनी रह़मत और फ़ज़्लो करम के तुफ़ैल जन्नत में दाख़िल करेगा और उसे कहा जाएगा कि आरज़ू कर और मांग, वोह शख़्स कहेगा कि तू रब्बुल इ़ज़्ज़त हो कर मुझ से मिज़ाह़ करता है ? फिर उसे कहा जाएगा कि तमन्ना कर और मांग, यहां तक कि उस की तमाम तमन्नाएं पूरी हो जाएंगी, रब तआला फ़रमाएगा : तेरे लिये वोह भी है जो तू ने मांगा और उस के बराबर और भी उस के साथ है।

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है : ह़ज़रते उम्मे मुबश्शिर अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना, आप फ़रमा रहे थे : ان شآء اللّٰہ تعالٰی उन लोगों में से, जिन्हों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी, कोई भी जहन्नम में नहीं जाएगा, ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : हां या रसूलल्लाह ! आप ने उन्हें चुप करवा दिया तो वोह बोलीं :

[1] ......المستدرك للحاكم، كتاب الاهوال، باب ذكر وسعة الميزان، ٥/٨٠٧، الحديث ٨٧٧٨

وَ اِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ (1) तुम में से कोई नहीं मगर उस पर वारिद होने वाला है।

इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّ نَذَرُ الظّٰلِمِیۡنَ فِیۡهَا جِثِیًّا ﴿۷۲﴾ (2) फिर नजात देंगे हम उन को जो परहेज़गारी करते हैं और छोड़ देंगे उस में ज़ालिमों को गिरा हुवा।

हज़रते अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक जमाअ़त ने जहन्नम में दाख़िल होने वाले लोगों के बारे में इख़्तिलाफ़ किया है। बा'ज़ का कहना है कि उस में मोमिन दाख़िल नहीं होंगे और बा'ज़ ने कहा है कि तमाम लोग उस में वारिद होंगे, फिर अल्लाह तआ़ला उन लोगों को नजात देगा जो तक़्वा रखते हैं।

बा'ज़ लोगों ने हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा तो उन्हों ने कहा कि तमाम लोग उस में वारिद होंगे। फिर उंगलियों को कानों के क़रीब ले जा कर कहा कि येह दो बहरे हों अगर मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे न सुना हो कि वुरूद से मुराद दुख़ूल है, कोई नेक और बुरा बाक़ी न रहेगा मगर सब उस में दाख़िल होंगे, तब वोह जहन्नम मोमिनों पर हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ ठन्डा और सलामती वाला हो जाएगा यहां तक कि उस आग या जहन्नम के लिये आप ने फ़रमाया : मोमिनों की सर्दी की वज्ह से फ़रयाद निकलेगी फिर अल्लाह तआ़ला उन लोगों को नजात देगा जो परहेज़गारी करते हैं और ज़ालिमों को जहन्नम में गिरा हुवा छोड़ देगा।(3)

ह़ाकिम की रिवायत है कि लोग जहन्नम में वारिद होंगे और अपने आ'माल की बदौलत उस से निकलेंगे, पहले बिजली की चमक की त़रह़, फिर घुड़ सुवार की त़रह़, फिर ऊंट सुवार की त़रह़, फिर दौड़ते हुवे आदमी की त़रह़ और फिर पैदल आदमी की त़रह़ निकलेंगे।(4)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो। (پ١٦، مریم:٧١)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे। (پ١٦، مریم:٧٢)

مسلم، کتاب فضائل الصحابة رضی اللّٰه عنهم، باب فضائل اصحاب الشجرة...الخ، ص١٣٥٦، الحدیث١٦٣۔ (٢٤٩٦)

3.....مسنداحمد، مسند جابر بن عبداللّٰه، ٥/٨٠، الحدیث ٤٥٢٧ عن ابی سمیة

4.....المستدرك للحاكم، كتاب التفسير، باب مرور الناس...الخ، ٣/١٢٨، الحدیث ٣٤٧٣ ملخصًا

बाब 111

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले मुबारक

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हम अपनी मां आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे जब जुदाई की घड़ी क़रीब थी, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें देखा, आप की आंखें नमनाक हो गईं, फिर फ़रमाया : तुम्हें खुश ख़बरी हो, तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ज़िन्दगी दी, **अल्लाह** ने तुम्हें पनाह दी **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी मदद फ़रमाई, मैं तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहने की वसिय्यत करता हूं और तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला से मुतअ़ल्लक़ करता हूं, बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से खुला हुवा नज़ीर हूं,[1] येह कि **अल्लाह** तआ़ला के शहरों और बन्दों में **अल्लाह** तआ़ला की सरकशी न करो, मौत क़रीब आई और **अल्लाह** तआ़ला, सिद्रतुल मुन्तहा, जन्नतुल मावा और लबरेज़ जामों की त़रफ़ पलटना है पस तुम अपने नफ़्सों पर और उस शख़्स पर जो मेरे बा'द तुम्हारे दीन में दाख़िल हो मेरी त़रफ़ से सलाम कहो ।[2]

हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام के विसाल के बा'द भी अल्लाह तआ़ला उम्मते ह़बीब का वाली है

मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाल के वक़्त जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया कि मेरे बा'द मेरी उम्मत का कौन है ? **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि मेरे ह़बीब (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को खुश ख़बरी दे दो कि मैं उन्हें उम्मत के बारे में शर्मिन्दा नहीं करूंगा और उन्हें इस बात की भी खुश ख़बरी दे दो कि जब लोग मह़शर के लिये उठाए जाएंगे तो वोह सब से जल्दी उठेंगे, जब वोह जम्अ़ होंगे तो मेरा ह़बीब उन का सरदार होगा और बेशक जन्नत दीगर उम्मतों पर उस वक़्त तक ह़राम होगी जब तक कि आप की उम्मत उस में दाख़िल न होगी । येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अब मेरी आंखें ठन्डी हुई हैं ।[3]

1.....डर सुनाने वाला । **इल्मिय्या**

2.....المعجم الاوسط، ۳/۱۰۲، الحدیث ۳۹۹۶

3.....المعجم الکبیر، ۳/۶۳، الحدیث۲۶۷۶ماخوذًا

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुक्म दिया कि मुझे सात कूंओं के सात पानियों से गुस्ल दो चुनान्चे, हम ने ऐसा ही किया तो आप ने राहत पाई, फिर बाहर तशरीफ़ ले गए, लोगों को नमाज़ पढ़ाई, शुहदाए उहुद के लिये बख़्शिश की दुआ की, अन्सार के लिये वसिय्यत की और फ़रमाया :

अम्मा बा'द ! ऐ गुरोहे मुहाजिरीन ! तुम बढ़ते जाते हो और अन्सार उस दिन वालिये हैअत पर बाक़ी हैं, वोह नहीं बढ़े हैं, अन्सार मेरे राज़दार हैं, जिन की तरफ़ मैं ने पनाह ली है लिहाज़ा उन के करीम या'नी नेक की इज़्ज़त करो, उन के बुरे से दर गुज़र करो। फिर फ़रमाया : बेशक बन्दे को दुन्या और **अल्लाह** तआला के कुर्ब के दरमियान इख़्तियार दिया गया तो उस ने उस चीज़ को पसन्द कर लिया जो **अल्लाह** के हां है।

हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रो दिये और समझ गए कि उस बन्दे से मुराद खुद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। तब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! तसल्ली रखो, अबू बक्र के दरवाज़े के सिवा मस्जिद की तरफ़ खुलने वाले तमाम घरों के दरवाज़े बन्द कर दो क्यूंकि मैं ऐसा कोई आदमी नहीं जानता जो दोस्ती में मेरे नज़्दीक अबू बक्र से अफ़्ज़ल हो।[(1)]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का फ़रमान है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे घर, मेरे दिन, मेरे दिल और मेरे हुल्क़ूम के दरमियान विसाल फ़रमाया और **अल्लाह** तआला ने मौत के वक़्त मेरे और आप के लुआबे दहन को जम्अ किया, मेरे घर मेरे भाई अब्दुर्रहमान आया इस के हाथ में मिस्वाक थी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिस्वाक की तरफ़ देखने लगे, मैं समझ गई कि आप मिस्वाक पसन्द फ़रमाते हैं लिहाज़ा मैं ने कहा : येह आप के लिये ले लूं ? आप ने सर से इशारा फ़रमाया : हां ! चुनान्चे, मैं ने अब्दुर्रहमान से मिस्वाक ले ली और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने अक़्दस में दे दी मगर वोह आप को सख़्त महसूस हुवा तो मैं ने कहा कि मैं इसे आप के लिये नर्म कर दूं ? आप ने सर के इशारे से हां फ़रमाया। चुनान्चे, मैं ने उसे नर्म किया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पानी का बरतन रखा था, आप उस में हाथ दाख़िल करते थे और फ़रमाते : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ अलबत्ता मौत के लिये सकरात हैं, फिर आप ने अपना हाथ बुलन्द फ़रमाया और फ़रमाने लगे فِی الرَّفِیۡقِ الۡاَعۡلٰی، فِی الرَّفِیۡقِ الۡاَعۡلٰی तब मैं ने अर्ज़ की : ब खुदा ! आप ने हमें तरजीह नहीं दी है।[(2)]

---

1 ......

2 ......بخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم ووفاتہ، ۳/۱۵۷، الحدیث ۴۴۴۹

अन्सार का इजतिमाअ़

हज़रते सईद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने वालिद से रिवायत की है कि जब अन्सार ने देखा कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तृबअ़ शरीफ़ में गिरानी बढ़ती जा रही है तो वोह मस्जिद के इर्द गिर्द आए, हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर हुवे और उन्हें अन्सार के इरादे और ख़ौफ़ के मुतअ़ल्लिक़ बताया फिर हज़रते फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप से वोही बात अ़र्ज़ की फिर हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर में दाख़िल हुवे और आप ने भी वोही बात अ़र्ज़ की जो पहले कर चुके थे चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक लम्बा किया और फ़रमाया : इसे पकड़ो, पस उन्हों ने आप को थाम लिया और आप ने पूछा : तुम क्या कहते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हमें डर है कि आप विसाल फ़रमा जाएंगे। उन की औ़रतें अपने जवानों को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जम्अ़ होने की वज्ह से एक दूसरे को बुलाने लगीं, चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे और हज़रते अ़ली और फ़ज़्ल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का सहारा ले कर चले, हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के आगे आगे थे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सरे अन्वर लपेटे हुवे निकले, आप के पैर मुबारक घिसटते जाते थे यहां तक कि आप मिम्बर शरीफ़ की सब से निचली सीढ़ी पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे, लोग आप की तृरफ़ उठ आए, आप ने **अल्लाह** की हम्दो सना के बा'द फ़रमाया :

ऐ लोगो ! मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम मेरी मौत से ख़ौफ़ज़दा हो, गोया तुम मौत को नहीं पहचानते और तुम अपने नबी की मौत को अच्छा नहीं समझते, क्या मैं ने और तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हें मौत की ख़बर नहीं दी ? क्या मुझ से पहले मबऊ़स होने वाले अम्बियाए किराम में से कोई नबी हमेशा रहा कि मैं भी हमेशा रहूं ? बा ख़बर हो जाओ, मैं अपने रब से मिलने वाला हूं और तुम भी उस से मिलने वाले हो, मैं तुम्हें मुहाजिरीने अव्वलीन के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की वसिय्यत करता हूं और मैं मुहाजिरीन को एक दूसरे की वसिय्यत करता हूं क्यूंकि फ़रमाने इलाही है : क़सम है ज़माने की तह्क़ीक़ इन्सान नुक़्सान में है मगर वोह लोग जो ईमान लाए। (अल आयत)[1]

और तमाम उमूर **अल्लाह** तआ़ला की मन्शा से पायए तक्मील को पहुंचते हैं, तुम्हें किसी काम की देर, उ़ज्लत पसन्दी पर आमादा न करे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला किसी की उ़ज्लत

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस ज़मानए महबूब की क़सम बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है मगर जो ईमान लाए। (پ۳۰، العصر:۱،۳)

से उ़ज्लत नहीं करता और जिस ने **अल्लाह** तआ़ला को ग़ालिब माना वोह ख़ुद ग़ालिब हुवा और जिस ने **अल्लाह** तआ़ला से फ़रेब किया उस ने ख़ुद से फ़रेब किया।

पस तुम इस बात के क़रीब हो कि अगर तुम्हें वाली बनाया जाए तो तुम ज़मीन में फ़साद करो और क़त़ए़ रेह़्मी करो।(1)

अन्सार के बारे में वसिय्यत

(रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार के बारे में फ़रमाया :) और मैं तुम्हें अन्सार से नेकी की वसिय्यत करता हूं क्यूंकि वोही हैं जिन्हों ने (मदीनए त़य्यिबा में) हिजरत के घर में ठिकाना बनाया है और तुम से पहले ईमान लाए हैं, तुम उन से एह़सान करो, क्या उन्हों ने तुम्हारे लिये फलों को दो हिस्से नहीं किया ? क्या उन्हों ने अपने घरों को तुम्हारे लिये वसीअ़ नहीं किया ? क्या उन्हों ने तुम्हें ख़ुद पर तरजीह़ नहीं दी ह़ालांकि वोह ख़ुद तंगदस्त थे ? बा ख़बर रहो जो शख़्स इस बात का वाली बनाया जाए कि वोह दो आदमियों में फ़ैसला करे पस चाहिये कि वोह उन के नेक को क़बूल करे और उन के बुरे से दर गुज़र करे बा ख़बर हो जाओ उन पर ख़ुद को तरजीह़ न दो ! बा ख़बर रहो मैं तुम्हारे लिये पहले जाने वाला हूं और तुम मुझे मिलने वाले हो, बा ख़बर रहो, तुम्हारे उतरने की जगह मेरा ह़ौज़ है, मेरा ह़ौज़ शाम के शहर बसरा और सन्आ़ए यमन के दरमियानी फ़ासिले के बराबर है, उस में कौसर के परनाले से ऐसा पानी उंडेला जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद, मख्खन से ज़ियादा नर्म और शहद से ज़ियादा मीठा है, जिस ने उस से पी लिया वोह कभी भी प्यासा नहीं होगा, उस की कंकरियां मोतियों की और उस की ज़मीन मुश्क की है, कल खड़े होने के दिन जो उस से मह़रूम रहा वोह हर भलाई से मह़रूम रहा।

बा ख़बर हो जाओ ! जो येह पसन्द करता है कि कल मेरे पास आए उसे चाहिये कि वोह नाजाइज़ बातों से अपनी ज़बान और हाथ को रोके।

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! क़ुरैश के लिये वसिय्यत कीजिये तो आप ने फ़रमाया : मैं इस बात के लिये क़ुरैश को वसिय्यत करता हूं लोग क़ुरैश के ताबेअ़ हैं, उन का भला उन के भले के लिये और उन का बुरा उन के बुरे के लिये है। ऐ आले क़ुरैश ! लोगों के साथ भलाई करो, ऐ लोगो ! गुनाह ने'मतों को तब्दील कर देते हैं और क़िस्मत को बदल देते हैं लिहाज़ा जब लोग नेक होते हैं तो उन के ह़ाकिम भी नेक होते

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें ह़ुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो। (پ۲٦، محمد:۲۲)

हैं और जब लोग ना फ़रमानियां करते हैं तो वोह ना फ़रमान क़रार पाते हैं[1] या'नी उन के हाकिम ज़ालिम होते हैं,

फ़रमाने इलाही है कि "और इसी त़रह़ हम बा'ज़ ज़ालिमों को बा'ज़ ज़ालिमों का वली बना देते हैं ब सबब उन के आ'माल के।"[2]

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : अबू बक्र पूछो ! ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वक़्त क़रीब आ गया है ? आप ने फ़रमाया : हां वक़्त क़रीब आ गया है और बहुत ही क़रीब आ गया है। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** के नबी ! जो कुछ **अल्लाह** के हां है आप को मुबारक हो, काश हम अपने ठिकाने को जानते, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** की त़रफ़, सिद्रतुल मुन्तहा की त़रफ़, फिर जन्नतुल मावा की त़रफ़, फिर फ़िरदौसे आ'ला की त़रफ़, शराबे त़हूर से भरे हुवे प्याले और रफ़ीक़े आ'ला की जानिब, मुबारक ज़िन्दगी और ह़िफ़्ज़े इलाही की अमान हैं।

ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ऐ **अल्लाह** के नबी ! आप के ग़ुस्ल के लिये इन्तिज़ाम किस का होगा ? फ़रमाया : मेरे क़रीबी, फिर उन के क़रीबी, उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम आप को किन कपड़ों का कफ़न दें ? आप ने फ़रमाया : मेरे इन कपड़ों, यमनी चादर और सफ़ेद मिस्री चादर में। फिर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : हम आप पर नमाज़ कैसे पढ़ें ? चुनान्चे, हम रो पड़े और वोह भी रो दिये। फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : छोड़ो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें बख़्शे और तुम्हारे नबी (की त़रफ़) से तुम्हें बेहतर जज़ा दे। जब तुम मुझे ग़ुस्ल दे लो, कफ़न पहना लो तो मुझे मेरे इसी घर में मेरी चारपाई पर मेरी क़ब्र के किनारे रख देना, फिर तुम कुछ देर के लिये मुझे तन्हा छोड़ कर बाहर निकल जाना, सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़मत भेजेगा, फिर फ़िरिश्तों को मुझ पर दुरूद की इजाज़त दी जाएगी और सब से पहले **अल्लाह** तआ़ला की मख़्लूक़ में से जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास आएंगे और वोह मुझ पर दुरूद पढ़ेंगे, फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील और फिर एक कसीर जमाअ़त के साथ इ़ज़राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) दुरूद पढ़ेंगे, फिर तमाम फ़िरिश्ते आएंगे और इस के बा'द तुम गुरौह दर गुरौह मुझ पर दाख़िल होना और गुरौहों

---

1 ......اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ٣٣/١٤

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का। (پ٨، الانعام:١٢٩)

की सूरत में मुझ पर सलात पढ़ना और ख़ूब सलाम भेजना और मुझे घर भर कर, आवाज़ें बुलन्द कर के, चीख़ो पुकार से तक्लीफ़ न देना और चाहिये कि तुम में से इमाम सब से पहले आए और मेरे क़रीबी घर वाले, फिर इन से क़रीब वाले, फिर औ़रतों की जमाअ़तें और फिर बच्चों की जमाअ़तें आएं।

हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि आप को क़ब्रे अन्वर में कौन उतारेगा ? फ़रमाया : मेरे इन्तिहाई क़रीबी घर वालों की जमाअ़त, फिर उन से क़रीबी, फ़िरिश्तों की कसीर ता'दाद के साथ, तुम उन्हें नहीं देखते हो मगर वोह तुम्हें देखते हैं, खड़े हो जाओ और मेरे बा'द आने वालों तक पहुंचा दो।[1]

हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि जिस दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाल फ़रमाया, लोगों ने दिन के इब्तिदाई हिस्से में आप की त़बीअ़त को हल्का पाया चुनान्चे, वोह ख़ुशी ख़ुशी अपने घरों और कामों के लिये लौट गए और आप को औ़रतों के दरमियान तन्हा छोड़ गए, हम इस त़रह़ ख़ुशी व मसर्रत में थे कि इतनी ख़ुशी हमें पहले कभी नहीं मिली थी, अचानक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम सब औ़रतें बाहर चली जाओ क्यूंकि येह फ़िरिश्ता मुझ से अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त मांग रहा है, चुनान्चे, घर से मेरे सिवा सब औ़रतें बाहर चली गईं और आप का सरे मुबारक मेरी गोद में था, आप बैठ गए और मैं घर के एक कोने में हो गई।

उस फ़िरिश्ते ने त़वील सरगोशी की, फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया और इसी त़रह़ सर मुबारक मेरी गोद में रख दिया और औ़रतों से फ़रमाया कि अन्दर आ जाओ, मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि मुझे येह आहट जिब्रील की नहीं लगी तो आप ने फ़रमाया : हां आ़इशा ! येह मलकुल मौत था जो मेरे पास आया था और उस ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे भेजा है और फ़रमाया है कि मैं आप की इजाज़त के बिग़ैर आप के पास न आऊं, अगर आप इजाज़त दें तो अन्दर आऊं और **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे येह भी हुक्म दिया है कि आप की इजाज़त के बिग़ैर रूहे मुक़द्दस को क़ब्ज़ न करूं। अब आप की क्या राए है ? चुनान्चे, मैं ने कहा : अभी ठहरो ता आंकि मेरे पास जिब्रील आ जाए, येह जिब्रील के आने का वक़्त है।[2]

1 ...... المعجم الاوسط، ١٠٢/٣، الحديث ٣٩٩٦ و الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر ما أوصى به رسول الله...الخ، ١٩٧/٢

2 ......اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ١٤٠/١٤ و المعجم الكبير، ١٢٩/٣، الحديث ٢٨٩٠

हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि हम पर ऐसा अम्र वारिद हुवा कि जिस के बारे में हमारे पास कोई जवाब न था और न ही उस बारे में कोई राए थी, हम सब ख़ौफ़ज़दा हो कर ख़ामोश थे, गोया अहले बैत में से कोई एक भी उस अ़ज़ीम अम्र की वज्ह से बोल नहीं सकता था, उस की हैबत ने हमारे जिस्मों को ख़ून से भर दिया था।[1]

हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि उस साअ़त में जिब्रीले अमीन हाज़िर हुवे, मैं ने उन की आहट को पहचान लिया, घर वाले बाहर निकल गए, जिब्रील अन्दर दाख़िल हुवे और अ़र्ज़ की : ऐ नबी ! अल्लाह आप पर सलाम फ़रमाता है और फ़रमाता है कि आप अपने आप को कैसा पाते हैं हालांकि वोह आप के मुतअ़ल्लिक़ आप से ज़ियादा जानता है लेकिन अल्लाह का इरादा येह है कि आप की इ़ज़्ज़त व वक़ार में इज़ाफ़ा फ़रमाए और मख़्लूक़ पर आप की इ़ज़्ज़त व वक़ार पायए तक्मील को पहुंच जाए और आप की उम्मत में मिसाल हो जाए।

आप ने फ़रमाया कि मैं रन्ज व दर्द पाता हूं, जिब्रील ने अ़र्ज़ की : आप को ख़ुश ख़बरी हो कि अल्लाह तआ़ला ने इरादा फ़रमाया है कि आप को उन इन्आ़मात में पहुंचाए जो उस ने आप के लिये तय्यार किये हैं। आप ने फ़रमाया : जिब्रील ! मलकुल मौत ने मुझ से इजाज़त चाही और मुझे बात बतला गया है। जिब्रील ने अ़र्ज़ की : ऐ मुह़म्मद ! आप का रब आप के दीदार का मुश्ताक़ है, क्या उस ने आप को नहीं बताया कि अल्लाह तआ़ला आप से किस चीज़ का इरादा फ़रमाता है, ब ख़ुदा ! मलकुल मौत ने हरगिज़ किसी से कभी भी इजाज़त त़लब नहीं की, और न ही वोह आयिन्दा किसी से इजाज़त त़लब करेगा, बा ख़बर हो जाइये ! अल्लाह तआ़ला आप के इ़ज़्ज़तो शरफ़ को पूरा फ़रमाने वाला है और वोह आप का मुश्ताक़ है।

आप ने फ़रमाया : तब तो मैं उस वक़्त तक चैन नहीं पाऊंगा जब तक कि अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर न पहुंच जाऊं, आप ने औ़रतों को अन्दर आने की इजाज़त दे दी और हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : मेरे क़रीब आओ चुनान्चे, वोह आप पर गिर गईं, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से सरगोशी फ़रमाई। जब उन्हों ने सर उठाया तो उन की आंखें नमनाक थीं और वोह शिद्दते ग़म से कलाम न कर सकती थीं, फिर फ़रमाया : अपना सर मेरे क़रीब करो चुनान्चे, हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फिर आप से लिपट गईं, आप ने उन से सरगोशी फ़रमाई और जब उन्हों ने सर उठाया तो हंस रही थीं और बात करने की ताब न थी।[2]

---

1 ......اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ١٤/١٤٠

2 ......الطبقات لابن سعد، ذكر وفاة رسول الله صلى الله عليه وسلم، ٢/١٩٩، ماخوذًا (عن انس)

हम ने जब येह अ़जीब बात देखी तो हम ने बा'द में ह़ज़रते फ़ात़िमा رضی اللہ تعالٰی عنہا से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो इन्हों ने बताया कि मुझे ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने जब येह ख़बर दी कि मैं आज विसाल करने वाला हूं तो मैं रो दी और फिर जब फ़रमाया : मैं ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ की, कि वोह तुझे मेरे घर वालों में से सब से पहले मुझ से मिलाएगा और तुम्हें मेरे साथ रखेगा तो मैं हंस पड़ी।[1]

फिर आप ने ह़ज़रते फ़ात़िमा رضی اللہ تعالٰی عنہا के दो बेटों को बुलाया और उन्हें प्यार किया, ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं फिर मलकुल मौत आए, उन्हों ने इजाज़त मांगी तो आप ने उसे इजाज़त दे दी। मलकुल मौत ने अ़र्ज़ की, कि मेरे लिये क्या हुक्म है? आप ने फ़रमाया कि मुझे अब मेरे रब के पास ले चलो। मलकुल मौत ने अ़र्ज़ की, कि आज (आप की इजाज़त से) ऐसा ही होगा और आप का रब आप का मुश्ताक़ है और मैं ने आप के सिवा किसी और के पास बार बार आमदो रफ़्त नहीं की और न आप के सिवा मुझे किसी के पास जाने के लिये इजाज़त लेने का हुक्म मिला लेकिन आप की साअ़त आप के सामने है और वोह निकल गए।[2]

ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं कि फिर जिब्रील علیہ السلام आए और अ़र्ज़ की : السلام علیك یارسول اللہ येह आख़िरी पैग़ामात थे जो ज़मीन पर भेजे गए, अब हमेशा के लिये सिलसिलए वह़्य मुन्क़त़ेअ़ कर दिया गया है और दुन्या लपेट दी जाएगी और ज़मीन में मेरे लिये आप के बिग़ैर और कोई ह़ाजत नहीं और ज़मीन में आप के पास आना ही मेरी ज़रूरत थी और अब मैं अपने मक़ाम पर रहूंगा और वहां से कहीं नहीं जाऊंगा, ब ख़ुदा! जिस ने मुह़म्मद صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है।

ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं : फिर मैं ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के पास गई और आप का सरे अन्वर अपने सीने पर रख कर उसे थाम लिया और आप पर ग़ुनूदगी सी त़ारी होने लगी और आप की पेशानी मुबारक से पसीना टपकने लगा। मैं ने ऐसा पसीना किसी इन्सान की पेशानी पर नहीं देखा, फिर येह पसीना मुबारक बहने लगा और मैं ने उस से ज़ियादा उ़म्दा ख़ुश्बू किसी चीज़ में नहीं पाई, पस मैं कहने लगी जूंही आप को इफ़ाक़ा हुवा मेरे मां-बाप और जान

1 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، ما ذکر عن نبینا...الخ، ۷/۵۲۷، الحدیث ۲ و المعجم الکبیر، ۲۲/۴۱۷-۴۲۱، الحدیث ۱۰۳۰-۱۰۳۹ ماخوذاً

2 ...... طبقات ابن سعد، ۲/۱۹۹

व घर आप पर कुरबान हों, आप की पेशानी मुबारक से पसीना क्यूं जारी है ? आप ने फ़रमाया : आ़इशा ! मोमिन का नफ़्स पसीने में निकलता है और काफ़िर की जान दोनों बाछों से गधे की त़रह़ निकलती है। फिर हम लोग घबरा गए और अपने घर वालों की त़रफ़ आदमी भेजे, पस सब से पहला आदमी जो हमारे पास आया और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न पाया, मेरा भाई था जिसे मेरे बाप ने मेरी त़रफ़ भेजा था, चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी के आने से क़ब्ल विसाल फ़रमाया।[1]

अल्लाह तआ़ला ने मर्दों को इस लिये रोक दिया था कि उस वक़्त जिब्रील व मीकाईल हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में थे, गोया आप को इख़्तियार दिया जा रहा था, और जब आप कलाम करते तो फ़रमाते नमाज़, नमाज़, तुम हमेशा एक दूसरे के मुआ़विन रहोगे जब तक तुम सब पढ़ते रहोगे नमाज़, नमाज़,[2] गोया हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह वसिय्यत करते हुवे जहान से तशरीफ़ ले गए कि नमाज़ नहीं छोड़ना।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का क़ौल है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सोमवार के दिन चाश्त और ऐन दोपहर के दरमियानी वक़्त में विसाल फ़रमाया।

ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का क़ौल है कि मैं ने सोमवार के दिन तन्हा मुसीबत नहीं देखी बल्कि ब ख़ुदा ! उस दिन उम्मत को बहुत मसाइब मिले हैं।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने विसाल फ़रमाया तो लोग टूट पड़े और उन के रोने की आवाज़ें बुलन्द होने लगीं और फ़िरिश्तों ने दो कपड़ों में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लपेट दिया। लोगों ने बहुत इख़्तिलाफ़ किया, बा'ज़ ने आप की मौत को झुटलाया और बा'ज़ लोग गूंगे बन कर रह गए और त़वील मुद्दत के बा'द बोलने लगे और बा'ज़ की ह़ालत ख़ल्त़ मल्त़ हो गई और उन्हों ने बिग़ैर किसी बयान के बातें करना शुरूअ़ कीं और बा'ज़ अपनी उ़क़ूल ले कर बैठ गए और दूसरों को भी बिठा दिया, ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उन लोगों में से थे जिन्हों ने आप की मौत का इन्कार किया और ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बैठने वालों में से थे और ह़ज़रते उ़स्मान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उन लोगों में से थे जो गूंगे हो कर रह गए।

मुसलमानों में से किसी एक का ह़ाल ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) जैसा नहीं था, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाई और गुफ़्तार व किरदार की रास्ती

---

1 ......المعجم الكبير، ٥٨/٣، الحديث ٢٦٧٦ و ١٢٩/٣، الحديث ٢٨٩٠ـ و ١٨٩/١٠، الحديث:١٠٤١٧

2 ......اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الشطر الاول، الباب الرابع، ١٤٢/١٤

बख़्शी और लोग ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ौल से बहुत घबरा गए यहां तक कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए और कहा : क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं अलबत्ता हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत का ज़ाइक़ा चख लिया है और आप ने तुम्हें अपनी मौजूदगी में कह दिया था :

اِنَّكَ مَیِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَّیِّتُوْنَ۫ ثُمَّ اِنَّكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ۠ (1)

तह़क़ीक़ तू भी फ़ौत होने वाला है और तह़क़ीक़ वोह भी मरने वाले हैं फिर तह़क़ीक़ तुम क़ियामत के दिन अपने रब के नज़दीक झगड़ोगे ।

और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह ख़बर मिली दर आं ह़ाल येह कि वोह बनू अल ह़ारिस बिन ख़ज़रज के हां थे, वोह आए और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास दाख़िल हुवे, आप की त़रफ़ देखा फिर आप की त़रफ़ देखा और आप पर झुक गए, चूमा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, अल्लाह तआ़ला आप को दो मरतबा मौत का ज़ाइक़ा नहीं चखाएगा पस अलबत्ता ब ख़ुदा, रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रिह़लत फ़रमा गए हैं फिर आप लोगों की त़रफ़ आए और कहा : ऐ लोगो ! जो शख़्स मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इबादत करता है पस बेशक मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रिह़लत फ़रमा गए हैं और जो शख़्स मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रब की इबादत करता है तो उन का रब ज़िन्दा है, वोह कभी नहीं मरेगा, फ़रमाने इलाही है :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ (2)

और नहीं मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मगर रसूल तह़क़ीक़ गुज़रे हैं इस से पहले बहुत पैग़म्बर पस अगर वोह फ़ौत हो जाए या क़त्ल किया जाए तो क्या तुम फिर जाओगे अपनी ऐड़ियों पर ।

गोया लोगों ने इस दिन से पहले येह आयत नहीं सुनी थी ।

एक रिवायत में है कि जब ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह ख़बर मिली तो वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर दाख़िल हुवे दर आं ह़ाल येह कि वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे । (پ۲۳، الزمر:۳۰،۳۱)

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं उन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे । (پ٤، اٰل عمران:١٤٤)

पर दुरूद भेज रहे थे और उन की आंखों से आंसू बह रहे थे, उन की हिचकी बन्धी हुई थी जैसे पानी से भरा हुवा घड़ा उछलता है और उन्हों ने इस के बा वुजूद क़ौलो फ़े'ल में सब्र का दामन न छोड़ा, पस वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झुक गए और आप के चेहरए अन्वर से कपड़ा हटाया, आप की पेशानी और रुख़्सारों को चूमा, आप के चेहरए अक़्दस पर हाथ फेरा और रोना शुरूअ़ हो गए और कहने लगे मेरे मां-बाप, जान और घर बार आप पर क़ुरबान हो, आप ज़िन्दगी और मौत दोनों में त़ाहिर व पाकीज़ा हैं, आप के विसाल से वोह सिलसिला मुन्क़त़ेअ़ हो गया है जो दीगर अम्बियाए किराम से मुन्क़त़ेअ़ नहीं हुवा था, आप हर वस्फ़ से बाला तर और रोने धोने से बरतर हैं, आप तसल्ली का बाइ़स हो गए, आप का जूदो करम सब को आ़म है, अगर आप का विसाल आप के अपने ईसार से न होता तो हम मर जाते और अगर हमारे रोने से कुछ हो सकता तो हम आप पर अपनी आंखों का पानी ख़ुश्क कर देते। बहर ह़ाल हम जिस चीज़ को अपने से अलग नहीं कर सकते वोह ग़म और आप की याद है जो हमेशा बर क़रार रहेंगे, ऐ **अल्लाह** ! हमारा येह पैग़ाम अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचा दे।

ऐ मुह़म्मद ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم आप अपने रब के पास हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाएं और अपने दिल में हमारा ख़याल रखें, आप अगर सुकून के अस्बाब मुहय्या न फ़रमाते तो वह़्शत की वज्ह से हम में से कोई अपनी जगह से न उठ सकता। ऐ **अल्लाह** ! तू अपने नबी की ख़िदमत में हमारे येह जज़्बात पहुंचा दे और उन का फ़ज़्लो करम हमारे शामिले ह़ाल फ़रमा। येह है वोह जो हमारी त़ाक़त में है और येह हैं हमारे जज़्बात व एह़सासात, ख़ुदा करे कि हम रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना पर अ़मल पैरा हों, हम **अल्लाह** से उम्मीद करते हैं कि वोह हमारी ख़त़ाओं को नेकियों में तब्दील फ़रमाएगा और ईमान के साथ बारगाहे नबुव्वत में शरफ़े बारयाबी अ़त़ा फ़रमाएगा।[1] ख़ालिक़े आ़लम की ज़ाते गिरामी ही बेहतरीन मसऊल और आ'ला तरीन उम्मीदों का मलजा व मावा है। والحمد للّٰه رب العٰلمين

اَلْحَمْدُ لِلّٰه कि किताबे मुस्तत़ाब "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" अज़ इफ़ादाते अ़ल्लामा फ़ह्हामा इमामे हुमाम ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का तर्जमा आज 2 रजबुल मुरज्जब सिने 1396 हिजरी को पायए तक्मील को पहुंचा **अल्लाह रब्बुल आ़लमीन** इस सई को क़बूल फ़रमाए, मुतर्जिम, नाशिर और मुह़र्रिक को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए। اٰمين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

1 ......بخارى، كتاب الجنائز، باب الدخول على الميت...الخ، ١/٤٢١، الحديث ١٢٤١ ملخصًا

ماخذومراجع

کتب	مصنفین	مطبوعات
التفسیر الکبیر	فخرالدین محمد بن عمر بن الحسین رازی شافعی متوفی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰
تفسیر قرطبی	علامہ ابوعبد اللہ بن احمد انصاری قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر ۱۴۲۰ھ
تفسیر البیضاوی	شیخ ناصر الدین عبد اللہ متوفی ۶۹۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر البغوی	ابو محمد حسین بن مسعود البغوی متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی بغدادی متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
در منثور	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۰۵ھ
تفسیر ابن ابی حاتم	امام الحافظ ابو محمد عبد الرحمن بن ابی حاتم الرازی متوفی ۳۲۷ھ	المکتبۃ العصریۃ
بحر المدید	احمد بن محمد بن المہدی بن عجیبہ متوفی ۱۲۲۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۳ھ
بحر العلوم	ابو اللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی متوفی ۳۷۳ھ	دارالفکر بیروت
نظم الدرر	برہان الدین ابی الحسن ابراہیم بن عمر البقاع متوفی ۸۸۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
المحرر الوجیز	ابو محمد عبد الحق بن غالب بن عطیۃ الاندلسی متوفی ۵۴۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۸ھ
خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری متوفی ۲۶۱	دارابن حزم ۱۴۱۹ھ
ترمذی	امام محمد بن عیسی ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
ابوداؤد	ابوداود سلیمان بن الاشعث السجستانی متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۶ھ

الکتاب	المؤلف	المطبوعہ
الموطأ	امام مالک بن انس متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
مسند الطیالسی	سلیمان بن داود بن الجارود متوفی ۲۰۴ھ	مکتبہ حسینیہ، قذافی روڈ، گوجرانوالہ
صحیح ابن حبان	محمد بن حبان بن احمد ابو حاتم التمیمی متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
صحیح ابن خزیمۃ	ابو بکر محمد بن اسحاق بن خزیمہ متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۲
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھ
مکارم الاخلاق	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
المسند	امام احمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند ابی یعلی	احمد بن علی بن المثنی ابو یعلی الموصلی متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الإیمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸	دار الکتب علمیہ ۱۴۲۱ھ
مسند البزار	ابو بکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق البزار متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف
مصنف عبد الرزاق	ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام الصنعانی متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	امام عبد اللہ بن محمد ابن ابی شیبہ کوفی متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
مشکل الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد بن سلامۃ طحاوی متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
کتاب الزھد	عبد اللہ بن المبارک متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
الزھد	ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	دار ابن کثیر بیروت ۱۴۲۰ھ
الزھد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الجنان بیروت ۱۴۰۸ھ
سنن الدارمی	عبد اللہ بن عبد الرحمن ابو محمد الدارمی متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ
سنن الدارقطنی	علی بن عمر ابو الحسن الدار قطنی البغدادی متوفی ۳۸۵ھ	مؤسسۃ الرسالۃ، بیروت
مجمع الزوائد	نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ

جامع الاصول فی احادیث الرسول	ابوالسعادات المبارک بن محمد جزری ابن الاثیر متوفی ۶۰۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
نوادر الاصول فی احادیث الرسول	محمد بن علی بن حسن ابوعبد اللہ الحکیم الترمذی متوفی ۳۶۰ھ	مکتبۃ الامام بخاری، قاہرہ
الترغیب و الترھیب	عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری متوفی ۶۵۶ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
البعث والنشور	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	مرکز الخدمات والابحاث الثقافیۃ، بیروت
سنن الکبری	امام احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۱ھ
السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ
شرح السنۃ	ابومحمد حسین بن مسعود البغوی متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
کنزالعمال	علامہ علاؤ الدین علی بن حسام الدین متقی ہندی متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
مشکاۃ	علامہ محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی متوفی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ
المسند الفردوس	حافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی متوفی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۰۶ھ
مسند الشامیین	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۰۵ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
جامع الاحادیث	امام عبدالرحمن جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
جامع الصغیر	امام عبدالرحمن جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ
قصر الامل	عبد اللہ بن محمد بن عبید بن سفیان ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	دار ابن حزم / المکتبۃ العصریہ ۱۴۲۶ھ
موسوعۃ ابن ابی الدنیا	عبد اللہ بن محمد بن عبید بن سفیان ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ ۱۴۲۶ھ
التواضع والخمول	عبد اللہ بن محمد بن عبید بن سفیان ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
ذکر الموت	عبد اللہ بن محمد بن عبید بن سفیان ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ ۱۴۲۶ھ
مکارم الاخلاق	عبد اللہ بن محمد بن عبید بن سفیان ابن ابی الدنیا متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
مکارم الاخلاق	ابی بکر محمد بن جعفر خرائطی متوفی ۳۲۷ھ	مکتبۃ الرشد القاہرہ مصر
الزھد وصفۃ الزاھدین	احمد بن محمد بن زیاد ابن الاعرابی متوفی ۳۴۰ھ	دار الصحابہ التراث ۱۴۰۸ھ

کتاب	مصنف	مطبوعہ
الزهد	ہناد بن السری الکوفی متوفی ۲۴۳ھ	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی ۱۴۰۶ھ
الاموال	ابو احمد حمید بن مخلد الخرسانی المعروف بابن زنجویہ متوفی ۲۵۱ھ	ریاض
الاحاديث المختارة	حافظ ابو عبد اللہ محمد بن عبد الواحد حنبلی مقدسی متوفی ۶۴۳ھ	دار خضر للطباعة والنشر والتوزیع ۱۴۲۱ھ
معرفة السنن والآثار	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
الورع	امام احمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
الكبائر	محمد بن احمد بن عثمان الذہبی متوفی ۷۴۸ھ	پشاور ۱۹۸۵ء
جامع العلوم والحكم	ابو الفرج عبد الرحمٰن بن احمد بن رجب حنبلی متوفی ۷۹۵ھ	مکتبہ فیصلیہ مکہ مکرمہ
مسند الشهاب	محمد بن سلامۃ بن جعفر ابو عبد اللہ القضاعی متوفی ۴۵۴ھ	مؤسسة الرسالة بیروت
اخبار مكة	ابو عبد اللہ محمد بن اسحاق بن العباس مکی فاکہی متوفی ۲۷۲ھ	دار خضر بیروت لبنان ۱۴۱۹ھ
كتاب العظمة	عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن حیان الاصبہانی متوفی ۳۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
بستان الواعظين	ابو الفرج عبد الرحمٰن ابن الجوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
رسالة قشيريه	امام ابو القاسم عبد الکریم ہوازن قشیری متوفی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
المقاصد الحسنة	امام شیخ شمس الدین محمد عبد الرحمٰن سخاوی متوفی ۹۰۲ھ	دار الکتب العلمیہ و کتاب العربی ۱۴۲۵ھ
الخصائص الكبرى	امام عبد الرحمٰن جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
السيرة النبويه	عبد الملک بن ہشام بن ایوب حمیری متوفی ۲۱۳ھ	دار الفجر قاہرہ ۱۴۲۵ھ
السيرة الحلبية	علی بن برہان الدین الحلبی متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
الاسماء والصفات	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	المکتبة الازہریة للتراث
الشفا	قاضی ابو الفضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض مالکی متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
الجوهر المنظم	محدث الجلیل احمد بن حجر ہیتمی مکی متوفی ۹۷۴ھ	مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور
المواهب اللدنية	شہاب الدین احمد قسطلانی متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
دلائل النبوة	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
المغني عن حمل الاسفار	ابو الفضل العراقی متوفی ۸۰۶ھ	مکتبہ طبریہ ۱۴۱۵ھ
نسيم الرياض	شہاب الدین احمد بن محمد متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت

أخبار الأخيار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	فاروق اکیڈمی ضلع خیر پور
الكواكب الدرية	زین الدین محمد عبد الرؤف مناوی ۱۰۲۱ھ	دار صادر بیروت
نزهة النظر	علامہ احمد بن علی العسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	مدینۃ الاولیاء، ملتان
مدارج النبوة	شاہ عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا
نسيم الرياض	شہاب الدین احمد بن محمد متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ
المقاصد الحسنة	علامہ شیخ عبد الرحمن سخاوی متوفی ۹۰۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
التوابين	امام عبد اللہ بن احمد بن محمد بن قدامہ مقدسی متوفی ۶۲۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۷ھ
الزواجرعن اقتراف الكبائر	علامہ ابن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
المستطرف	شہاب الدین محمد بن احمد ابی الفتح الابشیہی متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت لبنان ۱۹۹۸ء
قوت القلوب	محمد بن علی بن عطیہ ابی طالب المکی متوفی ۳۶۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
احياء علوم الدين	امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
اتحاف السادة المتقين	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
لطائف المعارف	ابو الفرج عبد الرحمن بن احمد بن رجب حنبلی متوفی ۷۹۵ھ	دار ابن حزم مکتبہ شاملہ
التخويف من النار	ابو الفرج عبد الرحمن بن احمد بن رجب حنبلی متوفی ۷۹۵ھ	مکتبہ دار البیان دمشق
الرياض النضرة	ابو العباس احمد بن عبد اللہ طبری شافعی متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
بحر الدموع	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الفجر دمشق ۱۴۲۳ھ
بريقة محمودية	ابو سعید خادمی محمد بن محمد بن مصطفیٰ بن عثمان متوفی ۱۱۷۶ھ	مطبعہ حلبی ۱۳۴۸ھ
طبقات الشافعيه	تاج الدین بن علی بن عبد کافی سبکی متوفی ۷۷۱ھ	النشر والتوزیع ۱۴۱۳ھ
الطبقات الكبرى	محمد بن سعد متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
الصواعق المحرقة	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	مدینۃ الاولیاء، ملتان
اليواقيت والجواهر	امام احمد بن علی الشعرانی متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
الاعلام	خیر الدین بن محمود الزرکلی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین بیروت
الكنى والاسماء	ابو بشر محمد بن احمد بن حماد الدولابی متوفی ۳۱۰ھ	دار ابن حزم

کتاب	مصنف	مطبوعہ
دليل الفالحين	محمد علی بن محمد بن علان متوفی ۱۰۵۷ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۳۱ھ
تعظيم قدر الصلاة	محمد بن نصر بن الحجاج مروزی متوفی ۲۹۴ھ	مکتبۃ الدار المدینۃ المنورۃ
تلخيص الحبير في تخريج	علامہ احمد بن علی العسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
تاريخ مدينه دمشق	ابن عساکر ابو القاسم علی بن حسن شافعی متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
تاريخ بغداد	حافظ ابو بکر علی بن خطیب بغدادی متوفی ۴۶۳ھ	دار الغرب الاسلامی ۱۴۲۲
تاريخ كبير	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
تاريخ طبرى	ابو جعفر محمد بن جریر طبری متوفی ۳۱۰ھ	دار المعارف مصر
اسد الغابة	امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری متوفی ۸۵۲ھ	دار احیاء التراث العربی
الإصابة	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۵
الكامل فى ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی متوفی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
الاستيعاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد قرطبی متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ
التذكره	علامہ ابو عبد اللہ بن احمد انصاری قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار السلام
معرفة الصحابة	ابو نعیم احمد بن عبد اللہ بن احمد الاصبہانی متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
كتاب الكسب	امام محمد بن حسن شیبانی متوفی ۱۸۹ھ	دار البشائر بیروت ۱۴۱۷ھ
فتح الباري	امام احمد بن علی عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
عمدة القاري	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
فيض القدير	عبد الرؤف المناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
أشعة اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
مرقاة المفاتيح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مرآة المناجيح	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
شرح المقاصد	علامہ سعد الدین تفتازانی متوفی ۷۹۱ھ	دار الکتب علمیہ بیروت
التمهيد	الحافظ یوسف بن عبد اللہ بن محمد متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
فتاوى الهندية	شیخ نظام و جماعۃ ۶۹۵/۵۹۶ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۱ھ

در مختار	علاؤالدین محمد بن علی حصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ بیروت
حاشية البجيرمي على الخطيب	سلیمان بن عمر بن محمد بجیرمی متوفی ۱۲۲۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
رد المحتار	سید محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت
فتاویٰ شارح بخاری	مفتی شریف الحق امجدی متوفی ۱۴۲۱ھ	مکتبہ برکات المدینہ
الفتاوی الرضوية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
الامن والعلى	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبہ جمال کرم لاہور
احکام شریعت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
الفتوحات المكية	شیخ ابو عبد اللہ محمد محی الدین ابن عربی متوفی ۶۳۸ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
البداية والنهاية	امام ابو الفداء اسماعیل بن عمر ابن کثیر ۷۷۴ھ	دارالفکر بیروت
فتاوی حدیثیه	احمد شہاب الدین ابن حجر ہیتمی مکی متوفی ۹۷۳ھ	داراحیاء التراث العربي
بوستان سعدی	شیخ شرف بن مصلح سعدی شیرازی متوفی ۶۹۳ھ	کتاب خانہ علمی ایران
نثر الدر	ابو سعد منصور بن الحسین الآبي	دارالکتب العلمیہ بیروت
تذكرة الموضوعات	طاہر بن علی ہندی پٹنی متوفی ۹۸۶ھ	ملتان پاکستان
عدة الصابرين	محمد بن ابي بکر ابن قیم جوزیہ متوفی ۷۵۱ھ	دار ابن کثیر بیروت
اللآلیء المصنوعة	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابي بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
الكشكول	بہاء الدین محمد بن حسین العاملی متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تنزيه الشريعة المرفوعة	ابو الحسن علی بن محمد بن العراق الکنانی متوفی ۹۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۱ھ
تنبيه الغافلين	ابو اللیث نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی متوفی ۳۸۳ھ	دارالکتاب العربي بیروت ۱۴۲۰ھ
نزهة المجالس	عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری شافعی متوفی ۸۹۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
الصواعق المحرقة	احمد بن محمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی ۹۷۴ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत

उर्दू कुतुब

01....राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ ब मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआफ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

17....ह़दाइके़ बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 37)

19....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 524)

20....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 495)

अ़रबी कुतुब

21.....جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (सात जिल्दें) (कुल सफ़हात : 4000)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (कुल सफ़हात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़हात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़हात : 62)

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़हात : 93)

26.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़हात : 46)

27.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़हात : 77)

28.....اَجْلَی الْاِعْلَام (कुल सफ़हात : 70)

29.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़हात : 60)

शो'बए तराजिमे कुतुब «अ़रबी से उर्दू तराजुम»

01.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़हात : 896)

02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द (कुल सफ़हात : 625)

03.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِی حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़हात : 112)

04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)

05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 142)

06.....नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़हात : 54)

07.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़हात : 743)

08.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَامِ اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़हात : 46)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 853)

10....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़हात : 98)

11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)

12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)

13.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)

14....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़हात : 649)

15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़हात : 641)

16....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़हात : 122)

17....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)

18....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)

19....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)

20....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़्हात : 63)
21....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِیْن) (कुल सफ़्हात : 36)
22....बेटे को नसीहत (اَیُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़्हात : 64)
23.....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِیْقَةُالنَّدِیَّة شَرْحُ طَرِیْقَةِ الْمُحَمَّدِیَّة) (कुल सफ़्हात : 866)
24.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 1012)
25....आशिक़ाने हदीस की हिकायात (اَلرِّحْلَة فِی طَلَبِ الْحَدِیْث) (कुल सफ़्हात : 105)
26....इह्याउल उ़लूम जिल्द (अव्वल) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1124)
27....इह्याउल उ़लूम जिल्द (दुवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1400)
28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (सिवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1286)
28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (चहारुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 912)
28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (पंजुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 818)
29.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम हिस्सए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)
30.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए दुवुम)(कुल सफ़्हात : 413)
31....اَلدَّعْوَة اِلَی الْفِكْر (कुल सफ़्हात : 148)
32..... क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) (कुल सफ़्हात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشيةضياء الاصباح (कुल सफ़्हात : 241)
02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़्हात : 155)
03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़्हात : 325)
04....اصول الشاشى مع احسن الحواشي (कुल सफ़्हात : 299)
05....نورالايضاح مع حاشيةالنورو الضياء (कुल सफ़्हात : 392)
06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़्हात : 384)
07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 158)
08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़्हात : 280)
09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़्हात : 55)
10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़्हात : 241)
11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़्हात : 119)

शो'बए तख़रीज

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा﴿

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात﴿

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

10....रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)
13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16....तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़हात : 160)
25....तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
28....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े (कुल सफ़हात : 696)
29....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
30....ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
34....ह़ज व उ़मरह का मुख़्तसर त़रीक़ा (कुल सफ़हात : 48)
35....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़हात : 168)
36....क़सीदा बुर्दा से रूह़ानी इलाज (कुल सफ़हात : 22)
37....तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल (कुल सफ़हात : 25)
38....सुन्नतें और आदाब (कुल सफ़हात : 125)
39....बुग़्ज़ो कीना (कुल सफ़हात : 83)
40....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात (कुल सफ़हात : 48)
41....फैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए अव्वल (कुल सफ़हात : 79)
42....फैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए दुवुम (कुल सफ़हात : 102)
43....महबूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात (कुल सफ़हात : 208)
44....बद शुगूनी (कुल सफ़हात : 128)
45....फ़ैज़ाने दाता गंज बख़्श (कुल सफ़हात : 20)
46....फैज़ाने पीर महर अ़ली शाह (कुल सफ़हात : 33)
47....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात (कुल सफ़हात : 590)
48....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 1 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए मदनी क़ाइदा)(कुल सफ़हात : 60)
49....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 2 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए नाज़िरा)(कुल सफ़हात : 104)
50....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 3 (कुल सफ़हात : 352)

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये,

इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उन्वान	सफ़हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारिये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ



ISBN 978-969-579-907-9
0101117

MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / Email : ilmia@dawateislami.net